هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ

अल्लाह का पैग़ाम इंसानों के नाम

رِيَاضُ الْقُرْآن

रियाज़ुल-क़ुरआन

यानी

रब्बानी दस्तरख़्वान

इस क़ुरआन में हर सूरत से पहले अलग-अलग क़िस्म के

रस्मुल-ख़त में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम जमा किए गए हैं

निहायत ही सादा और आसान ज़बान में क़ुरआन मजीद की तर्जुमानी

क़ुरआन पढ़ने वाले से अल्लाह बात करता है,
क़ुरआन पढ़ने वाला अल्लाह से बात करता है,
इस ध्यान से क़ुरआन को पढ़ें।

अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस
इब्ने हजरत मौलाना
मुहम्मद उमर साहब
पालनपुरी (रह०)

محمد یونس
ابن حضرت مولانا
محمد عمر صاحب
پالنپوری

क़ुरआन का पेज उलटने के लिए उंगली पर थूक मत लगाइए, बहुत बेअदबी है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ، اَمَّا بَعۡدُ!

जिस तरह हम अपनी ज़रूरत की कोई चीज़ जब ख़रीदते हैं तो उस चीज़ को दुरुस्त तौर पर इस्तेमाल करने के उसूल पर मुरत्तब कोई न कोई मुख़्तसर या मुफ़स्सल किताबचा ज़रूर दिया जाता है, ताकि उस चीज़ से इस्तिफ़ादा करने में सहूलत हो और किसी क़िस्म की परेशानी का सामना न करना पड़े।

इस काइनात में अरबों खरबों की तादाद में फ़ैली मख़्लूक़ात में सबसे ज़्यादा अहमियत वाली मख़्लूक़ इंसान है जिसे अशरफ़ुल-मख़्लूक़ात कहा जाता है, और उसके अहम होने की वजह से उसको अपनी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए भी अहम मक़सद दिया गया है कि तुम्हारी तख़्लीक़ का मक़सद रब्बे-करीम की इबादत के सिवा कुछ नहीं '' وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ '' और इस मक़सद को हासिल कैसे करना है, यह सिखाने के लिए एक ऐसी किताब दी गई जो इंसान के हर क़दम पर उसकी रहनुमाई करती है, एक ऐसी किताब जिसका हर हर्फ़ अपने अंदर एक नूर और जिसका हर लफ़्ज़ अपने अंदर एक मअ़ना लिए हुए है, इसकी तिलावत अफ़ज़लतरीन इबादत है, इसको पढ़ने पढ़ाने वाला दुनिया का बेहतरीन इंसान है, एक ऐसी किताब कि जो इसे याद करले वह न सिर्फ़ ख़ुद जन्नत का हक़दार हो जाए; बल्कि दूसरों की शफ़ाअ़त का रुत्बा हासिल करले, ऐसी किताब कि रोज़े-क़ियामत इसको याद करने वाले से कहा जाएगा कि पढ़ता जा और जन्नत के दरजात चढ़ता जा! वह बा-बरकत व बा-अज़्मत कलाम कोई और नहीं बल्कि यही क़ुरआन है।

इस क़ुरआन की क्या तारीफ़ की जाए कि यह क़ुरआन अल्लाह का कलाम है, दो जहाँ के ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के मालिक का शाही फ़रमान है, सारे फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्राईल (अलै०) जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अमीन के लक़ब से नवाज़ा है, उनके वास्ते दुनिया में आया है और तमाम नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद (सल०) जिन्हें उनके दुश्मनों और मुख़ालिफ़ों ने भी ''सादिक़'' और ''अमीन'' माना है, उनके ज़रिए हमने और सारे आलम ने पाया है। अल्लाह तआ़ला ने '' اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ '' का ऐलान फ़रमा कर ख़ुद इस क़ुरआन की हिफ़ाज़त करने का वादा फरमाया है।

इस क़ुरआन में किसके लिए रहबरी नहीं है? हर एक के लिए है, नबी और रसूल के लिए भी, सहाबा व सहाबियात के लिए भी, बादशाहों और हाकिमों के लिए भी, रिआया और महकूमों के लिए भी, आलिमों के लिए भी और अवाम के लिए भी, मालदारों के लिए भी और ग़रीबों के लिए भी, मर्दों के लिए भी और औरतों के लिए भी, जवानों के लिए भी और बूढ़ों के लिए भी, शहरियों के लिए भी और देहातियों के लिए भी, जो नेमतों में खेल रहे हैं उनके लिए भी और जो मुसीबतों को झेल रहे हैं उनके लिए भी, यहाँ तक कि बच्चों के लिए भी और जिन्न व इंस के लिए भी।

ख़िताब कहीं रसूलों से है, कहीं मोमिनीन से, कहीं आम इंसानों से, कहीं यहूद से, कहीं

कुफ़्फ़ार से, कहीं दीगर अहले-किताब से, कहीं उनसे जो गुनाहों में डूबे हुए हैं, कहीं उनसे जो उम्मीदें तक खो चुके हैं।

कैसे प्यारे अल्लाह हैं! सबका भला चाहने वाले, सबको अपनी आग़ोशे-रहमत में लेने को तैयार, फिर भी कोई कान न धरे तो किसका क़ुसूर है? ख़ुद ही क़ुसूरवार है और ख़ुद ही महरूम है।

अपने इस कलाम के ज़रिए अल्लाह तआला अपने बंदों से बातें करते हैं, उनकी मुसीबतों में उनकी ढारस बंधाते हैं, उनकी हैरानियों में उनकी रहबरी फ़रमाते हैं, उनको अपनी सीधी राह सुझाते हैं, उनको नफ़ा देने वाली बातों का पता बताते हैं, उनके नुक़सान की चीज़ों से उन्हें होशियार करते हैं, कहीं ग़ैब की बातों से परदा उठाते हैं, कहीं काइनात में फैली अपनी निशानियाँ दिखलाते हैं, कभी नाफ़रमानों के अंजाम से आगाह करते हैं, कभी फरमाँबरदारों के अहवाल सुनाते हैं, उख़रवी जिंदगी की कामयाबी के राज़ बताते हैं, दुनियावी जिंदगी की कामयाबी के गुर सिखाते हैं।

सुनने वाला बंदा है सुनाने वाले अल्लाह हैं, ख़ालिक़ हैं, मालिक हैं, राज़िक़ हैं, रब हैं, अलीम हैं, ख़बीर हैं, सब कुछ जानने वाले हैं, हर चीज़ की ख़बर रखने वाले हैं, कुछ है जो उनके इल्म से बाहर हो? कुछ है जो उनके बस में न हो? सब उनके इल्म में है, सब कुछ उनकी गिरफ़्त में है, ऐसे अ़लीम व ख़बीर रब, ऐसे क़वी व क़दीर अल्लाह, अपने ज़ईफ़ व नातवाँ बंदे से मुख़ातिब हैं, अल्लाहु-अकबर! किब्रियाई की शान है, अल्लाह मेहरबान है, सुना रहा है, सुनवा रहा है, रमज़ान की तरावीह में, रोज़ाना की नमाज़ों में, तफ़सीर के दरसों में, मदरसों की क्लासों में, तालीम के हलक़ों में, हर एक की ख़ुद की तिलावत में।

ध्यान हो, इस्तेहज़ार हो तो क्या कैफ़ियत बने, कैसी खुशी हासिल हो, कैसी अंधेरियाँ छटें, कितना नूर हासिल हो, कैसा सुरूर नसीब हो, मेरा अज़्मत वाला पाक अल्लाह मुझ जैसे हक़ीर और गंदे बंदे से मुख़ातिब है।

यह बात ना-मालूम कहाँ से मशहूर हो गई कि क़ुरआन का तर्जुमा ना पढ़ना वरना गुमराह हो जाओगे; हालाँकि तर्जुमा पढ़ कर तो कोई गुमराह नहीं होता, ख़ुद अपनी अ़क़्ल से बात का मतलब निकालने से हो सकता है; इस लिए जो बात समझ में न आए अपनी मस्जिद के इमाम या किसी मुस्तनद आलिम से पूछ कर समझी जाए या कोई मोतबर तफ़सीर देख लें।

अरबी के बाद दीनी उलूम का सबसे ज़्यादा ज़ख़ीरा उर्दू में है; इस लिए उर्दू से अच्छी वाक़फ़ीयत इस ज़माने में बहुत ज़रूरी है, हज़रत मौलाना असअ़दुल्लाह साहब (रह०) (जो हज़रत थानवी (रह०) के ख़लीफ़ा और मदरसा मज़ाहिरुल-उलूम सहारनपुर के नाज़िम थे), ने एक मौक़े पर फ़रमाया: ''उर्दू का सीखना भी इबादत है सिखाना भी इबादत है, पढ़ना भी इबादत है, लिखना भी इबादत है; क्योंकि हमारा दीनी सरमाया उर्दू में ही ज़्यादा है,'' लिहाज़ा उर्दू की तालीम इस ज़माने की बड़ी ज़रूरत है, क़ुरआन शरीफ़ के तर्जुमे बहुत हुए हैं और बड़े-बड़े उलमा ने किए हैं; लेकिन मौजूदा वक़्त में उर्दू की वाक़फ़ीयत इतनी कम हो गई है कि अवामुन्नास उन तर्जुमों से ख़ातिरख़्वाह फ़ायदा नहीं उठा पा रहे हैं, इस बात को सामने रख कर बंदे ने एक कोशिश की है, जो नया तर्जुमा नहीं है

बल्कि मुतक़द्दिमीन वा मुतअख़्ख़िरीन के मुख़्तलिफ़ तराजिम को सामने रख कर क़ुरआन पाक की आसान तर्जुमानी है।

इस तर्जुमानी के ज़रिए मौजूदा ज़माने के अवाम भी और स्कूलों और कालिजों के पढ़े हुए वे लोग भी जो अरबी व फ़ारसी से वाक़फ़ीयत नहीं रखते आसानी के साथ समझ सकें कि अपने कलाम के जरिए हमारा रब हम से क्या कहता है, कैसे हम उसकी रिज़ा व खुशनूदी हासिल कर सकते हैं, और क्योंकर हम दुनिया व आख़िरत में कामयाब हो सकते हैं।

अल्लाह को अपना कलाम महबूब है, बिला समझे भी पढ़ा जाए तो मूजिबे-तक़र्रुब है, फिर समझ कर पढ़ा जाए तो कितना क़ुर्ब दिलाएगा, ये मालिक का कलाम है, ''मलिकुल-कलाम'' है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजि॰) फ़रमाते हैं कि इस क़ुरआन को अपने ऊपर लाज़िम समझो; क्योंकि यह अल्लाह का दस्तरख़्वान है, अल्लाह तआला के दस्तरख्वान से हर एक को ज़रूर लेना चाहिए, और इल्म तो सीखने से ही हासिल होता है। [हयातुस-सहाबाः 3/259]

लेकिन इस क़ुरआन से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उसी वक़्त उठाया जा सकता है जबकि क़ुरआन के हुक़ूक को मलहूज़ रखा जाए, बहुत सारे मुफ़स्सिरीन ने अपनी तफ़ासीर के मुक़द्दमात में क़ुरआन के हुक़ूक़ और तिलावते-क़ुरआन के आदाब बहुत तफ़सील से बयान किए हैं, बंदा उन सबको नक़ल करने के बजाए चंद निहायत अहम उमूर की जानिब तवज्जोह दिलाना ज़रूरी समझता हैः

★ बग़ैर वुज़ू के मुसहफ़ को हाथ न लगाएं।

★ क़ुरआन पाक से फ़ायदे का हासिल होना उसकी अज़्मत से जुड़ा हुआ है, जितनी ज़्यादा अज़्मत होगी उतना ज़्यादा फ़ायदा हासिल होगा, बातिनी अज़्मत यह है कि दिल में बहुत ज़्यादा एहतराम हो और इज़्ज़त हो, जबकि ज़ाहिरी अज़्मत यह है कि उसे ऊँची जगह रखा जाए, उसकी तरफ़ पीठ न की जाए, उससे ज़्यादा ऊँची जगह ख़ुद न बैठा जाए, जिस तरह खुद के लिए नए कपड़े लाए जाते हैं इसी तरह क़ुरआन पाक के लिए जुज़्दान बनाने का एहतमाम हो, अल-ग़र्ज़ हर मुमकिन कोशिश की जाए कि क़ुरआन पाक की अज़्मत में कोई कमी न आने पाए।

★ तिलावत के दौरान आम तौर पर लोग उंगली पर थूक लगा कर वर्क़ पलटते हैं, यह निहायत ही बे-अदबी की बात और क़ुरआन की शान में बहुत बड़ी गुस्ताख़ी है, इससे परहेज़ करना चाहिए।

★ क़ुरआन पाक को साफ़-सुथरा रखने का एहतमाम करें; क्योंकि घरों में रखे क़ुरआन पर जमी हुई धूल दिल पर जमी हुई स्याही को ज़ाहिर करती है।

★ क़ुरआन को समझ कर उस पर अमल करने की कोशिश करें, और यह याद रखें कि दूसरों की जिंदगी को जहन्नम बना कर सज्दों में जन्नत मांगा नहीं करते।

अगरचे इब्तिदा ही से पूरे क़ुरआन मजीद की तर्जुमानी का इरादा था; लेकिन चूंकि आखिर के दो पारों की सूरतें नमाज़ों में ज़्यादा पढ़ी जाती हैं, उनमें अकसर शुरु ज़माने में नाज़िल हुई हैं,

ईमानियात और दावत से भरी हुई हैं, नीज़ चूंकि ये सूरतें छोटी होने की वजह से उनका तर्जुमा याद रखना आसान भी होता है और नमाज़ में मायने के ध्यान से जी लगने की उम्मीद भी ज़्यादा होती है, इस लिए शुरुआत में उन दो पारों का तर्जुमा किया गया जो اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ शाए हो चुके हैं, इसकी एक वजह यह भी थी कि मुझे याद है कि एक मर्तबा हज़रत मौलाना सईद अहमद खाँ साहब मक्की (रह०) ने बंदे के वालिद साहब (रह०) से फरमाया था कि मौलवी साहब! क़ुरआन पाक के आखिर के दो पारे जो समझ कर पढ़ ले, उसके लिए पूरे क़ुरआन का समझना आसान हो जाता है।

इस तर्जुमानी को अवाम के लिए बहुत ज़्यादा आसान और सहल बनाने के लिए हत्तल-इमकान बहुत आसान अलफ़ाज़ इस्तेमाल करने की कोशिश की गई है, इस मक़सद के लिए उसे मस्जिद में आस-पास बैठने वाले अवामुन-नास को सुनाया और सुनवाया, फिर उसे घर की ख़वातीन को जो कम तालीम-याफ्ता और घरेलू औरतें होती हैं उन्हें भी सुनाया, जो बात उनमें से किसी की समझ में ना आई उसे मज़ीद सहल कर दिया, अब हश्र के मैदान में यह मत कहना कि हमको किसी ने क़ुरआन का तर्जुमा आसान करके नहीं दिया था।

इस बात में कोई शुबह नहीं कि इस तर्जुमानी में जो कुछ ख़ूबी है वह उन उलमा व मुफ़स्सिरीन का फ़ैज़ है जिन्होंने अपने-अपने दौर में मशक़्क़तें उठाकर तर्जुमा और तफ़सीर पर बड़ी मेहनतें फ़रमाई हैं; अलबत्ता चंद उमूर ऐसे हैं जिन पर इस तर्जुमानी में ख़ासतौर पर तवज्जोह दी गई है, वे ये हैं:

★ हर सूरत के शुरू में उस सूरत की मुकम्मल तफ़सील नक़्ल करने का एहतमाम किया गया है, यानी इस सूरत में कितनी आयात व रुकूअ और अलफ़ाज़ व हुरूफ़ हैं, नाज़िल होने की जगह कौन सी है, तरतीबे-तिलावत व तरतीबे-नुज़ूल के ऐतबार से कौन से नम्बर पर है, इस सिलसिले में अलफ़ाज़ व हुरूफ़ के लिए फ़हीमुद्दीन साहब के तर्जुमे "अल-क़ुरआनुल-मुबीन" से और तरतीबे-तिलावत व तरतीबे-नुज़ूल के लिए हसनैन मख़्लूफ़ की "सफ़्वतुल-बयान" से इस्तिफ़ादा किया गया है।

इनके अलावा क़ुरआन शरीफ के मतन के लिए निहायत साफ़ सुथरा मतन इस्तेमाल किया गया, तर्जुमा भी साफ़ और खुले-खुले अलफ़ाज़ में लिखवाया गया ताकि पढ़ना आसान हो, उम्मीद है कि अवाम व ख़वास सब ही इसे मुफ़ीद पाएंगे, और दीन की मेहनत करने वालों को भी ऐसा मुस्तनद तर्जुमा हासिल हो जाएगा जिसकी मदद से उनके वअ्ज़ व बयान को आम से आम आदमी भी समझ सकेगा, इन्-शाअल्लाह तआला यही तर्जुमा हाफ़िज़ी क़ुरआन में भी लाया जाएगा; ताकि हाफ़िज़ों के लिए सहूलत हो।

यह चंद अहम बातें थीं जिनका ज़िक्र करना मुनासिब महसूस हो रहा था, नीज़ इस बात की वज़ाहत भी ज़रूरी है कि ज़ेवरे-तबअ से आरास्ता होने से क़ब्ल ख़ुद बंदा ने कम व बेश पाँच ता सात बार इसकी पुरूफ़ रीडिंग की, अपने बच्चों के साथ बैठ कर इज्तिमाई तौर पर तक़ाबुल किया, अल-ग़रज़ पूरी कौशिश की गई कि कोई ग़लती बाक़ी न रहे, लेकिन बशर बशर ही होता है, इस लिए अगर कोई ग़लती नज़र आए तो बराहे-करम इत्तिला फ़रमाएं; ताकि अगली तबाअ़त के मौक़े से उसे दुरुस्त किया जा सके।

बंदा ने इस तर्जुमानी का काम मैदाने-अरफ़ात में अरफ़ा के दिन सूरज ग़ुरूब होने से पौन घंटा क़ब्ल 9 ज़िलहिज्जा 1433 हि. बरोज़ बुध बमुताबिक़ 24 अक्तूबर 2012 ई. को शुरू किया था, और 2016 ई. में इसकी तबयीज़ से फ़ारिग़ हुआ, दरमियान में दावत व तबलीग़ की मुनासिबत से हिन्द व बैरूने-हिन्द के और ख़ासतौर से हरमैन-शरीफ़ैन के असफ़ार होते रहे और जहाँ जाना हुआ थोड़ा बहुत काम वहाँ भी किया गया, दुआ है कि अल्लाह तआला क़बूल फरमाए और जिन कामों के करने से वह खुश होता हो उनके करने की तौफ़ीक़ दे, और जिन कामों के करने से वह नाराज़ होता हो उनसे बचने की तौफ़ीक़ दे, आमीन या रब्बल-आलमीन!

एक अहम वज़ाहत: इल्मे-नबवी इस उम्मत की मुश्तरका मीरास है; लिहाज़ा उम्मते मुस्लिमा के हर फ़र्द को बग़ैर किसी कमी ज़्यादती के इस तर्जुमानी के तबअ करने की इजाज़त है, यहाँ तक कि बंदा की क़ियामत तक आने वाली औलाद में से भी कोई इस पर हक़ नहीं रखता है कि वह इसके हुक़ूक़े तबअ़ का मुतालबा करे।

अल्लाह से निहायत ही आजिज़ाना इल्तिजा

सिपुरदम बतु माया-ए-ख़ेश रा
तू दानी हिसाबे कम व बेश रा

ऐ प्यारे अल्लाह!
मैंने अपना सरमाया आपको सौंप दिया,
आप ख़ुद कमी-बेशी का हिसाब कर लें।

अल्लाह की रिज़ा का तालिब
मुहम्मद यूनुस बिन हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी (रह०)
9, 10 अप्रैल 2016 ई०
इज्तिमा औरंगाबाद

मंज़िल से आगे...

मंज़िल से आगे बढ़ कर मंज़िल तलाश कर
मिल जाए तुझको दरिया तो समुंदर तलाश कर

हर शीशा टूट जाता है पत्थर की चोट से
पत्थर ही टूट जाए वो शीशा तलाश कर

सज्दों से तेरे क्या हुआ सदियाँ गुज़र गईं
दुनिया तेरी बदल दे वो सज्दा तलाश कर

ईमान तेरा लुट गया रहज़न के हाथों से
ईमां तेरा बचा ले वो रहबर तलाश कर

हर शख़्स जल रहा है अदावत की आग में
इस आग को बुझा दे वो पानी तलाश कर

करे सवार ऊँट पे अपने ग़ुलाम को
पैदल ही ख़ुद चले जो वो आक़ा तलाश कर

सूरह फ़ातिहा

मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई।

इसमें (7) आयात और (1) रुकूअ है,
नाज़िल होने के ऐतबार से (5) नम्बर पर है
लेकिन तिलावत के ऐतबार से (1) नम्बर पर है
और सूरह मुद्दस्सिर के बाद नाज़िल हुई।

سُوْرَةُ الْفَاتِحَة

इसमें (25) कलिमात हैं	بسم الله الرحمن الرحيم अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।	इसमें (122) हुरूफ़ हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का मालिक है (1) बहुत मेहरबान

الرَّحِيْمِ ۙ ﴿٢﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ ﴿٣﴾ اِيَّاكَ

निहायत रहम करने वाला है (2) इंसाफ़ के दिन का मालिक है (3) हम तेरी ही

نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ ﴿٤﴾ اِهْدِنَا

इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं (4) हमको सीधा

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ ﴿٥﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ

रास्ता दिखा (5) उन लोगों का रास्ता

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ

जिन पर तूने फ़ज़्ल किया (6) उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ,

وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾ ع

और न उन लोगों का रास्ता जो तेरे रास्ते से भटक गए (7)

सूरह ब-क़रह

मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई,
लेकिन आयत (281) मिना में हज्जतुल-विदा के मौक़े पर नाज़िल हुई। इसमें (286) आयतें और (40) रुकूअ हैं, और यह पहली सूरत है जो मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, नाज़िल होने के ऐतबार से (87) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (2) नम्बर पर है और सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन के बाद नाज़िल हुई है।

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ

इसमें (6121) कलिमात हैं	بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है।	इसमें (25500) हुरूफ़ हैं

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ
अलिफ़-लाम-मीम (1) यह अल्लाह की किताब है इसमें कोई शक नहीं,

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
राह दिखाती है डर रखने वालों को (2) जो यक़ीन करते हैं

بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
बिन देखे, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से

يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ
ख़र्च करते हैं (3) और जो उस (वह्य) पर भी ईमान लाते हैं जो आप

اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
पर उतारी गई और उस पर भी जो आपसे पहले उतारी गई

وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾
और आख़िरत पर वे मुकम्मल यक़ीन रखते हैं (4)

أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

उन्हीं लोगों ने अपने रब की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं (5)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ

जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए बराबर है डराओ या

لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

न डराओ, वह मानने वाले नहीं हैं (6) अल्लाह ने उनके दिलों पर

وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز وَّلَهُمْ عَذَابٌ

और उनके कानों पर मुहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर परदा है, और उनके लिए बड़ा

عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ

अज़ाब है (7) और लोगों में से कुछ एसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत

الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ

के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं (8) वे अल्लाह को और मोमिनीन को धोखा देना

اٰمَنُوْا ج وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ؕ ﴿٩﴾

चाहते हैं मगर वे सिर्फ़ अपने आपको धोका दे रहे हैं और वे इसका एहसास नहीं रखते (9)

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ج وَلَهُمْ عَذَابٌ

उनके दिलों में (निफ़ाक़) की बीमारी है तो अल्लाह ने उनकी बीमारी को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक

اَلِيْمٌ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا

अज़ाब है, इस वजह से कि वे झूठ कहते थे (10) और जब उनसे कहा जाता है कि ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ

फ़साद न करो, तो वे जवाब देते हैं कि हम तो इसलाह करने वाले हैं (11) याद रखो! यही लोग

هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَاِذَا قِيْلَ

फ़साद फैलाने वाले हैं, लेकिन उन्हें इस बात का एहसास नहीं है (12) और जब उनसे कहा जाता है

لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ

कि तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जैसे दूसरे लोग ईमान लाए हैं तो वे कहते हैं कि क्या हम भी उसी तरह ईमान ले आएं

اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ

जैसे बेवक़ूफ़ लोग ईमान लाए हैं? ख़ूब अच्छी तरह सुन लो कि यही लोग बेवक़ूफ़ हैं लेकिन

ع ١٧ — وقف لازم — منزل ١

لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ

वे यह बात नहीं जानते (13) और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं,

وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ

और जब अपने शैतानों की मजलिस में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे

مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ

महज़ हंसी करते हैं (14) अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उनको उनकी सरकशी में ढील दे रहा है,

طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

वे भटकते फिर रहे हैं (15) यह वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले

بِالْهُدٰى ۠ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

गुमराही ख़रीद ली है; लिहाज़ा न उनकी तिजारत में नफ़ा हुआ और न ही उन्हें सही रास्ता नसीब हुआ (16)

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ

उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने आग जलाई, जब आग ने उसके आस-पास

مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ

को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी बीनाई छीन ली और उनको अंधेरे में छोड़ दिया;

لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾ ۙ

कि उनको कुछ नज़र नहीं आता (17) वे बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं अब वे लौटने वाले नहीं हैं (18)

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ

या फिर (उन मुनाफ़िक़ों की मिसाल ऐसी है) जैसे आसमान से बरसती एक बारिश हो, जिस में अंधेरियाँ भी हों और गरज भी और चमक भी,

يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ

वे कड़कों की आवाज़ पर मौत के ख़ौफ़ से अपनी उंगलियाँ अपने कानों में दे

الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ

लेते हैं, और अल्लाह ने काफ़िरों को घेरे में ले रखा है (19) क़रीब है कि बिजली

يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ

उनकी निगाहों को उचक ले, जब भी उन पर बिजली चमकती है उसमें वे चल पड़ते हैं, और जब

اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

उन पर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं, और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान

وَاَبۡصَارِهِمۡ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ‏﴿۲۰﴾‏ يٰۤاَيُّهَا

और उनकी आँखों को छीन ले, अल्लाह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है (20) ऐ लोगो!

النَّاسُ اعۡبُدُوۡا رَبَّكُمُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ وَالَّذِيۡنَ مِنۡ

अपने रब की इबादत करो जिसने तुमको पैदा किया, और उन लोगों को भी

قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَۙ ‏﴿۲۱﴾‏ الَّذِىۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ

जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं; ताकि तुम दोज़ख़ से बच जाओ (21) वह ज़ात जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए

فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخۡرَجَ

बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उस से पैदा किए

بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزۡقًا لَّكُمۡ‌ۚ فَلَا تَجۡعَلُوۡا لِلّٰهِ اَنۡدَادًا

फल तुम्हारी गिज़ा के लिए, पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ

وَّاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ‏﴿۲۲﴾‏ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰى

हालाँकि तुम जानते हो (22) अगर तुम इस कलाम के मुतअल्लिक़ शक में हो जो हमने अपने बंदे

عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ وَادۡعُوۡا شُهَدَآءَكُمۡ

के ऊपर उतारा है, तो लाओ उसके मानिंद एक सूरत और बुला लो अपने हिमायतियों को भी

مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ‏﴿۲۳﴾‏ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا

अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो (23) पस अगर तुम यह न कर सको

وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ

और हरगिज़ न कर सकोगे, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे इंसान

وَالۡحِجَارَةُ ‌ۖۚ اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ‏﴿۲۴﴾‏ وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

और पत्थर, वह तैयार की गई है काफ़िरों के लिए (24) और ख़ुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا

और जिन्होंने नेक काम किए इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ात होंगे जिनके नीचे से

الۡاَنۡهٰرُ‌ؕ كُلَّمَا رُزِقُوۡا مِنۡهَا مِنۡ ثَمَرَةٍ رِّزۡقًا ۙ قَالُوۡا هٰذَا

नहरें जारी होंगी, जब भी उनको उन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा तो वे कहेंगे: यह

الَّذِىۡ رُزِقۡنَا مِنۡ قَبۡلُ وَاُتُوۡا بِهٖ مُتَشَابِهًا ‌ؕ وَلَهُمۡ

वही है जो इससे पहले हमको दिया गया था, और मिलेगा उनको एक दूसरे से मिलता जुलता, और उनके लिए

فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ

वहाँ सुथरी औरतें होंगी और वे उसमें हमेशा रहेंगे (25) बेशक अल्लाह

لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ

इससे नहीं शरमाता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या उससे भी किसी छोटी चीज़ की,

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक़ है उनके रब की जानिब से,

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا

और जो मुनकिर हैं वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने

مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ

क्या चाहा है? अल्लाह इसके जरिए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को उससे राह दिखाता है, और वह गुमराह करता है

اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ۙ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ

उन लोगों को जो नाफ़रमानी करने वाले हैं (26) जो अल्लाह के अहद को उसके बांधने के

بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ

बाद तोड़ते हैं, और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसको अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है

وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ

और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, यही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं (27) तुम किस तरह

تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ

अल्लाह का इनकार करते हो हालाँकि तुम बेजान थे तो उसने तुमको ज़िंदगी अता की, फिर वह तुमको मौत देगा

ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ

फिर ज़िंदा करेगा, फिर उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे (28) वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब

مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۚق ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ

कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है, फिर आसमान की तरफ़ तवज्जोह की, पस सातों

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ ع وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

आसमान तैयार कर दिए, और वह हर चीज़ को जानने वाला है (29) और जब तुम्हारे रब ने

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ

फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ, फ़रिश्तों ने कहा: क्या आप ज़मीन में

فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

ऐसे लोगों को बसाओगे जो उसमें फ़साद मचाएंगे और ख़ून बहाएंगे, और हम आपकी हम्द

بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

करते हैं और आपकी पाकी बयान करते हैं, अल्लाह ने कहा: मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (30)

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ

और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम फिर उनको फ़रिश्तों के सामने पेश किया

فَقَالَ أَنبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَٰؤُلَاءِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣١﴾

और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ (31)

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ

फ़रिश्तों ने कहा कि आप पाक हैं, हम तो वही जानते हैं जो आपने हमको बताया, बेशक आप ही इल्म वाले

الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ يَا آدَمُ أَنبِئْهُم بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنبَأَهُم

और हिकमत वाले हैं (32) अल्लाह ने कहा: ऐ आदम! इनको बताओ उन चीज़ों के नाम, तो जब आदम ने बताए उनको

بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ

उन चीज़ों के नाम तो अल्लाह ने कहा: क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि आसमानों

وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾ وَإِذْ

और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूँ और मुझको मालूम है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो (33) और जब

قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ

हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस ने न किया, उसने इनकार किया

وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ

और घमंड किया और काफ़िरों में से हो गया (34) और हमने कहा, ऐ आदम! तुम

أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا

और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो, और उसमें से खाओ जी भर के जहाँ से चाहो

وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾ فَأَزَلَّهُمَا

और उस दरख़्त के क़रीब मत जाना वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे (35) फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रिए

الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا

दोनों को लग़्ज़िश में मुबतला कर दिया और उनको उस (ऐश) से निकाल दिया जिसमें वे थे, और हमने कहा: तुम सब उतरो यहाँ से

بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمۡ فِي الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ

तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है

اِلٰى حِيۡنٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيۡهِ ؕ

एक मुद्दत तक (36) फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से चंद बोल, तो अल्लाह उस पर मुतवज्जह हुआ,

اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿٣٧﴾ قُلۡنَا اهۡبِطُوۡا مِنۡهَا جَمِيۡعًا ۚ

बेशक वह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है (37) हमने कहाः तुम सब यहाँ से उतरो,

فَاِمَّا يَاۡتِيَنَّكُمۡ مِّنِّىۡ هُدًى فَمَنۡ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوۡفٌ

फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उनके लिए न कोई

عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَكَذَّبُوۡا

डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे (38) और जो लोग इनकार करेंगे और हमारी निशानियों को

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٣٩﴾ ع

झुटलाएंगे तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे (39)

يٰبَنِىۡٓ اِسۡرَآءِيۡلَ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتِىَ الَّتِىۡٓ اَنۡعَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ

ऐ बनी इस्राईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया,

وَاَوۡفُوۡا بِعَهۡدِىۡٓ اُوۡفِ بِعَهۡدِكُمۡ ۚ وَاِيَّاىَ فَارۡهَبُوۡنِ ﴿٤٠﴾

और मेरे अहद को पूरा करो मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा, और मेरा ही डर रखो (40)

وَاٰمِنُوۡا بِمَآ اَنۡزَلۡتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمۡ وَلَا تَكُوۡنُوۡٓا اَوَّلَ

और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है तसदीक़ करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है, और तुम सबसे पहले

كَافِرٍۢ بِهٖ ص وَلَا تَشۡتَرُوۡا بِاٰيٰتِىۡ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ۡ وَّاِيَّاىَ

उसका इनकार करने वाले न बनो, और न लो मेरी आयतों पर थोड़ी क़ीमत, और मुझ ही से

فَاتَّقُوۡنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلۡبِسُوا الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَتَكۡتُمُوا

डरो (41) और सही में ग़लत को न मिलाओ, और सच को

الۡحَقَّ وَاَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا

न छुपाओ; हालाँकि तुम जानते हो (42) और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात

الزَّكٰوةَ وَارۡكَعُوۡا مَعَ الرّٰكِعِيۡنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاۡمُرُوۡنَ النَّاسَ

अदा करो, और झुकने वालों के साथ झुक जाओ (43) क्या तुम लोगों से

بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ط

नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो; हालाँकि तुम किताब की तिलावत करते हो,

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط وَاِنَّهَا

क्या तुम समझते नहीं? (44) और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह

لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿۴۵﴾ لا الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं (45) जो गुमान रखते हैं

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ ع يٰبَنِيْٓ

कि उनको अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं (46) ऐ बनी

اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ

इस्राईल! मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने

فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ

तुमको दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी (47) और डरो उस दिन से कि कोई जान

عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ

किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी ना उसकी तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़बूल होगी और न उससे बदले में

مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ

कुछ लिया जाएगा, और न उनकी कोई मदद की जाएगी (48) और जब हमने तुमको फ़िरऔन के

اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ

लोगों से छुड़ाया, वे तुमको बुरी तकलीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को

اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ط وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

ज़बह करते और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा छोड़ देते, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से

رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ

भारी आज़माइश थी (49) और जब हमने दरिया को फाड़ कर तुम्हें (पार कराया) फिर बचाया तुमको

وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا

और डुबो दिया फ़िरऔन के लोगों को, और तुम देखते रहे (50) और जब हमने मूसा से

مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ

वादा किया चालीस रात का, फिर तुमने उसके बाद बछड़े को माबूद बना लिया

وَاَنۡتُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوۡنَا عَنۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ

और तुम ज़ालिम थे (51) फिर हमने उसके बाद तुमको माफ़ कर दिया;

لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۵۲﴾ وَاِذۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ

ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो (52) और जब हमने मूसा को किताब दी

وَالۡفُرۡقَانَ لَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ﴿۵۳﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى

और फ़ैसला करने वाली चीज़; ताकि तुम राह पाओ (53) और जब मूसा ने

لِقَوۡمِهٖ يٰقَوۡمِ اِنَّكُمۡ ظَلَمۡتُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ بِاتِّخَاذِكُمُ

अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है,

الۡعِجۡلَ فَتُوۡبُوۡٓا اِلٰى بَارِئِكُمۡ فَاقۡتُلُوۡٓا اَنۡفُسَكُمۡ ؕ ذٰلِكُمۡ

अब अपने पैदा करने वाले की तरफ मुतवज्जह हो और अपने (मुजरिमों) को अपने हाथों से क़त्ल करो, यह

خَيۡرٌ لَّكُمۡ عِنۡدَ بَارِئِكُمۡ ؕ فَتَابَ عَلَيۡكُمۡ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ

तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है, तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाई, बेशक वही तौबा

الرَّحِيۡمُ ﴿۵۴﴾ وَاِذۡ قُلۡتُمۡ يٰمُوۡسٰى لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى

क़बूल करने वाला रहम करने वाला है (54) और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा! हम तुम्हारा यक़ीन न करेंगे जब तक

اللّٰهَ جَهۡرَةً فَاَخَذَتۡكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنۡتُمۡ تَنۡظُرُوۡنَ ﴿۵۵﴾

हम अल्लाह को सामने ना देख लें, तो तुमको बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे (55)

ثُمَّ بَعَثۡنٰكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَوۡتِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۵۶﴾

फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुमको उठाया; ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो (56)

وَظَلَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡغَمَامَ وَاَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى ؕ

और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा,

كُلُوۡا مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ ؕ وَمَا ظَلَمُوۡنَا وَلٰكِنۡ كَانُوۡٓا

खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं, और उन्होंने हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया, वे अपना

اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذۡ قُلۡنَا ادۡخُلُوۡا هٰذِهِ الۡقَرۡيَةَ

ही नुक़सान करते रहे (57) और जब हमने कहा कि दाख़िल हो जाओ इस शहर में

فَكُلُوۡا مِنۡهَا حَيۡثُ شِئۡتُمۡ رَغَدًا وَّادۡخُلُوا الۡبَابَ سُجَّدًا

और खाओ उसमें से जहाँ से चाहो जी भर के, और दाख़िल हो दरवाज़े में सर झुकाए हुए

وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

और कहो कि ऐ रब! हमारी ख़ताओं को बख़्श दे, हम तुम्हारी ख़ताओं को बख़्श देंगे, और नेकी करने वालों को ज़्यादा भी देंगे (58)

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا

मगर हुआ यूँ कि उनसे जो बात कही गई थी ज़ालिमों ने उसे तब्दील करके कुछ और बात बनाली, नतीजा यह हुआ कि जो नाफ़रमानियाँ

عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

वे करते आ रहे थे हमने उनकी सज़ा में उन ज़ालिमों पर आसमान से अज़ाब

يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ

नाज़िल किया (59) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा तो हमने कहा: अपना असा

بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ

पत्थर पर मारो, तो उससे फूट निकले बारह चश्मे,

قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ

हर गिरोह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया, खाओ और पियो

اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ

अल्लाह के रिज़्क़ से और ना फिरो ज़मीन में फ़साद मचाने वाले बनकर (60) और जब तुमने कहा:

يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ

ऐ मूसा! हम एक ही क़िस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते, अपने रब को हमारे लिए पुकारो

يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا

कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से, साग और ककड़ी

وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ

और गेहूँ और मसूर और प्याज़, मूसा ने कहा: क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले

الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ

एक अदना चीज़ लेना चाहते हो? किसी शहर में उतरो तो तुमको मिलेगी वह चीज़ जो

لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ

तुम माँगते हो, और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी,

وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ

और वे ग़ज़बे-इलाही के मुस्तहिक़ हो गए, यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا

इनकार करते थे और नबियों का नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस वजह से कि

عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद पर न रहते थे (61) हक़ तो यह है कि जो लोग भी ख़्वाह वे मुसलमान हों

وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

या यहूदी या नसरानी या साबी, अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आएंगे

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ

और नेक अमल करेंगे, वह अपने अल्लाह के पास अपने अज्र के

رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ وَاِذْ

मुस्तहिक़ होंगे, और उनको ना कोई ख़ौफ़ होगा ना वे किसी ग़म में मुब्तला होंगे (62) और जब

اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ

हमने तुमसे अ़हद लिया और “तूर” पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया, पकड़ो उस चीज़ को

اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

जो हमने तुमको दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ उसमें है उसको याद रखो; ताकि तुम बचो (63)

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

उसके बाद तुम उससे फिर गए, अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत

وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

तुम पर न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते (64) और उन लोगों का हाल तुम जानते हो

الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا

जो “सब्त” (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए, तो हमने उनको कहा कि तुम लोग

قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا

ज़लील बंदर बन जाओ (65) फिर हमने इसको इबरत बना दिया उन लोगों के लिए जो उस दौर में थे

وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى

और उन लोगों के लिए जो उसके बाद आए, और उसमें हमने नसीहत रख दी डरने वालों के लिए (66) और जब मूसा ने

لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا

अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो, उन्होंने कहा कि

اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

क्या तुम हमसे मज़ाक़ कर रहे हो? मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ कि मैं

الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ

ऐसा नादान बनूँ (67) उन्होंने कहा: अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान करे कि वह गाय कैसी हो, मूसा ने कहा:

اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ

अल्लाह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्ची, इनके

بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا

बीच की हो, अब कर डालो जो हुक्म तुमको मिला है (68) उन्होंने कहा: अपने रब से दरख़्वास्त करो

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا

वह बयान करे कि उसका रंग क्या हो, मूसा ने कहा: अल्लाह फ़रमाता है कि वह

بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا

गहरे ज़र्द रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो (69) उन्होंने कहा कि

ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ

अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमसे बयान करदे कि वह कैसी हो; क्योंकि गाय में हमको शुबह पड़ गया है,

وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا

और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे (70) मूसा ने कहा: अल्लाह फ़रमाता है कि वह ऐसी

بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ

गाय हो कि मेहनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो,

مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ

वह सालिम हो उसमें कोई दाग़ न हो, उन्होंने कहा: अब तुम वाज़ेह बात लाए,

فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ؑ وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا

फिर उन्होंने उसको ज़बह किया और वे ज़बह करते नज़र न आते थे (71) और जब तुमने एक शख़्स को मार डाला,

فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ۚ

फिर एक दूसरे पर उसका इल्ज़ाम थोपने लगे; हालाँकि अल्लाह को ज़ाहिर करना मंजूर था जो कुछ तुम छुपाना चाहते थे (72)

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى

पस हमने हुक्म दिया कि मारो इस मुर्दे को उस गाय का एक टुकड़ा, इसी तरह अल्लाह ज़िंदा करेगा मुर्दों को

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ

और वह तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता है; ताकि तुम समझो (73) फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए

قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ

पस वे पत्थर के मानिंद हो गए या उससे भी ज़्यादा सख़्त,

قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ

पत्थरों में बअज़ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं,

وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا

बअज़ पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है, और बअज़ पत्थर ऐसे भी

لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो

تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ

तुम करते हो (74) क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये (यहूद) तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे; हालाँकि उनमें से

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ

कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसको समझने के बाद

مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ

बदल डालते थे, हालाँकि वे जानते हैं (75) जब वे मुसलमानों से मिलते हैं

اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا

तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं, और जब आपस में एक दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं:

اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ

क्या तुम उनको वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं, कि वे तुम्हारे रब के पास

بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَ لَا يَعْلَمُوْنَ

तुम से हुज्जत करें, क्या तुम समझते नहीं? (76) क्या वे नहीं जानते कि

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَمِنْهُمْ

अल्लाह को मालूम है जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं (77) और उनमें कुछ

اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

लोग अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को मगर आरज़ूएँ, उनके पास ख़्याली दुनिया के सिवा

النصف

يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ق

और कुछ नहीं (78) पस ख़राबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं

ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ط

फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है; ताकि उसके ज़रिए थोड़ी सी पूंजी हासिल करें,

فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا

पस ख़राबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी, और उनके लिए ख़राबी है

يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ط

अपनी इस कमाई से (79) और वे कहते हैं: हमको दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी मगर गिनती के चंद दिन,

قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ

कहो: क्या तुमने अल्लाह के पास से कोई अ़हद ले लिया है कि अल्लाह अपने अ़हद के ख़िलाफ़ नहीं करेगा,

اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ

या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते (80) हाँ जिसने कोई

سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ج

बुराई की और उसके गुनाह ने उसको अपने घेरे में ले लिया, तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं,

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वे उसमें हमेशा रहेंगे (81) और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع وَاِذْ

वे जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे (82) और जब

اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ قف

हमने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करोगे

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

और नेक सलूक करोगे माँ-बाप के साथ, क़राबतदारों के साथ, यतीमों और मिस्कीनों के साथ

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ط

और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो, और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो,

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

फिर तुम उससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के, और तुम इक़रार करके उससे हट जाने वाले लोग हो (83)

منزل ١

ع ٩

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ

और जब हमने तुमसे यह अहद लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे और अपने लोगों

اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

को अपनी बस्तियों से न निकालोगे, फिर तुमने इक़रार किया और तुम उसके गवाह हो (84)

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا

फिर तुम ही वे लोग हो कि अपनों को क़त्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को

مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ

उनकी बस्तियों से निकालते हो, तुम उनके मुक़ाबले में उनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह

وَالْعُدْوَانِ ط وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ

और ज़ुल्म के साथ, फिर अगर वे तुम्हारे पास क़ैद होकर आते हैं तो तुम फ़िदया देकर उनको छुड़ाते हो;

مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ط اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ

हालाँकि ख़ुद उनका निकालना तुम्हारे ऊपर हराम था, क्या तुम किताबे-इलाही के एक हिस्से को मानते हो

وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ج فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ

और एक हिस्से का इनकार करते हो, पस तुम में से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा

مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ

इसके सिवा क्या है कि उनको दुनिया की जिंदगी में रुसवाई मिले, और क़ियामत के दिन

يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

उनको सख़्त अज़ाब में डाल दिया जाए, और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ

जो तुम कर रहे हो (85) यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया

الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ

की ज़िंदगी ख़रीदी, पस न उनका अज़ाब हल्का किया जाएगा

وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

और न उनको मदद पहुँचेगी (86) और हमने मूसा को किताब दी

وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ

और उसके बाद पै-दर-पै रसूल भेजे और ईसा बिन मरयम को

مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا

खुली खुली निशानियाँ दीं और रूहुल-क़ुदुस से उसकी ताईद की, तो जब भी कोई रसूल

جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ

तुम्हारे पास वह चीज़ ले कर आया जिसको तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने तकब्बुर किया,

فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ز وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَقَالُوْا

फिर एक जमात को झुटलाया, और एक जमात को मार डाला (87) और ये लोग कहते हैं कि

قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا

हमारे दिल ग़िलाफ़ में (बंद) हैं, नहीं! बल्कि उनके कुफ़्र की वजह से अल्लाह ने उन पर फटकार डाल रखी है; इस लिए वे

مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ

कम ही ईमान लाते हैं (88) और जब आई उनकी तरफ़ से उनके पास एक किताब

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ

जो सच्चा करने वाली है उसको जो उनके पास है, और वे पहले से काफ़िरों पर

عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا

फ़तह माँगा करते थे, फिर जब आई उनके पास वह चीज़ जिसको उन्होंने पहचान रखा था तो उनहोंने उसका

بِهٖ ز فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ

इनकार कर दिया; पस अल्लाह की लानत है इनकार करने वालों पर (89) कैसी बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों का

اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ

सौदा किया कि वे इनकार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस ज़िद की बिना पर

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ

कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से अपने बन्दों में से जिस पर चाहे उतारे; पस वो ग़ुस्से पर

بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۹۰﴾

ग़ुस्सा कमा कर लाए, और इनकार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है (90)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ

और जब उनसे कहा जाता है कि उस कलाम पर ईमान ले आओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान

اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ

रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है, और वे उसका इनकार करते हैं जो उसके पीछे आया; हालाँकि वह हक़ है

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

और सच्चा करने वाला है उसका जो उनके पास है, कहोः अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैग़म्बरों को

مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى

उससे पहले क्यों क़त्ल करते रहे हो (91) और मूसा तुम्हारे पास खुली

بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ

निशानियाँ लेकर आए, फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को माबूद बना लिया और तुम

ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

ज़ुल्म करने वाले हो (92) और जब हमने तुमसे अहद लिया और कोहे-तूर को तुम्हारे ऊपर

الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا

खड़ा किया, जो हुक्म हमने तुमको दिया है उसको मज़बूती के साथ पकड़ो और सुनो, उन्होंने कहाः हमने सुना

وَعَصَيْنَا ۚ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ

और हमने नहीं माना, और उनके कुफ़्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया, कहोः

بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

अगर तुम ईमान रखने वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज़ जो तुम्हारा ईमान तुमको सिखाता है (93)

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً

कहिएः अगर अल्लाह के यहाँ आख़िरत का घर ख़ास तुम्हारे लिए है

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

दूसरों को छोड़ कर तो तुम मरने की आरज़ू करो अगर तुम सच्चे हो (94)

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

मगर वे कभी उसकी आरज़ू नहीं करेंगे ब-सबब उन (करतूतों) के जो वे अपने आगे भेज चुके हैं, और अल्लाह ख़ूब जानता है

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى

ज़ालिमों को (95) और तुम उनको ज़िंदगी का सबसे ज़्यादा लालची

حَيٰوةٍ ۚۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ

पाओगे, उन लोगों से भी ज़्यादा जो मुशरिक हैं, उन में से हर एक चाहता है

اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ

कि वह हज़ार बरस की उमर पाए; हालाँकि उतना जीना भी उसको अज़ाब से

يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيۡرٌۢ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلۡ مَنۡ كَانَ

बचा नहीं सकता, और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं (96) (प्यारे नबी) कहिये कि जो कोई

عَدُوًّا لِّجِبۡرِيۡلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلۡبِكَ بِاِذۡنِ اللّٰهِ

जिब्राईल का मुख़ालिफ़ है तो उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है,

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَهُدًى وَّبُشۡرٰى لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٩٧﴾

वह सच्चा करने वाला है उसका जो इसके आगे है, और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी है ईमान वालों के लिए (97)

مَنۡ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبۡرِيۡلَ

जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्राईल

وَمِيۡكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدۡ

व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है (98) और हमने

اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكۡفُرُ بِهَاۤ اِلَّا

तुम्हारे ऊपर वाज़ेह निशानियाँ उतारीं, और कोई उनका इनकार नहीं करता मगर वही लोग

الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿٩٩﴾ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوۡا عَهۡدًا نَّبَذَهٗ فَرِيۡقٌ

जो फ़ासिक़ हैं (99) क्या जब भी वे कोई अहद बांधेंगे तो उनका एक गिरोह उसको

مِّنۡهُمۡ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمۡ

तोड़ फेंकेगा; बल्कि उनमें से अकसर ईमान नहीं रखते (100) और जब उनके पास

رَسُوۡلٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمۡ نَبَذَ

अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज़ का जो उनके पास है तो उन लोगों ने

فَرِيۡقٌ مِّنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ

जिनको किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया,

ظُهُوۡرِهِمۡ كَاَنَّهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٠١﴾ ز وَاتَّبَعُوۡا مَا تَتۡلُوا

गोया वे उसे जानते ही नहीं (101) और वे उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसको शयातीन

الشَّيٰطِيۡنُ عَلٰى مُلۡكِ سُلَيۡمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيۡمٰنُ

सुलैमान के दौरे-हुकूमत में पढ़ते थे; हालाँकि सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया

وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيۡنَ كَفَرُوۡا يُعَلِّمُوۡنَ النَّاسَ السِّحۡرَ ۗ

बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ़्र किया, वे लोगों को जादू सिखाते थे,

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ

और वे उस चीज़ में पड़ गए जो "बाबिल" में दो फ़रिश्तों "हारूत" और "मारूत" पर उतारी गई,

وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ

जबकि उनका हाल यह था कि जब भी वे किसी को (जादू के) ये करतब सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आज़माइश

فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ

के लिए हैं पस तुम काफ़िर न बनो, मगर वे उनसे वे चीज़ें सीखते जिससे मर्द और उसकी बीवी

الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا

के दरमियान जुदाई डाल दें; हालाँकि वे अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर उससे किसी का कुछ

بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ

बिगाड़ नहीं सकते थे, और वे ऐसी चीज़ सीखते थे जो उनको नुक़सान पहुँचाए और नफ़ा न दे,

وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ

और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज़ का ख़रीदार हो आख़िरत में उसका

خَلَاقٍ ۛ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا

कोई हिस्सा नहीं, कैसी बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला, काश

يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ

वे इसको समझते (102) और अगर वे मोमिन बनते और तक़्वा इख़्तियार करते तो अल्लाह का बदला

عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

उनके लिए बेहतर था, काश वे इसको समझते (103) ऐ ईमान वालो!

اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ

तुम "राअ़िना" न कहो बल्कि "उन्ज़ुरना" कहो और सुनो,

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और कुफ़्र करने वालों के लिए दर्दनाक सज़ा है (104) जिन लोगों ने इनकार किया

مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ

ख़्वाह अहले-किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब

مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ

की तरफ़ से कोई भलाई उतारी जाए, और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी रहमत

يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٥﴾ مَا نَنْسَخْ مِنْ

के लिए ख़ास कर लेता है, अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है (105) हम जब भी कोई आयत मंसूख़

اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ۗ اَلَمْ تَعْلَمْ

करते हैं या उसे भुला देते हैं तो उससे बेहतर या उस जैसी (आयत) ले आते हैं, क्या तुम्हें मालूम नहीं

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (106) क्या तुम नहीं जानते कि अल्ला ह ही के लिए

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا

दोस्त है और न कोई मददगार (107) क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से

رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ

सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किये गए, और जो शख़्स ईमान के बदले

الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ

कुफ़्र इख़्तियार करे वह यक़ीनन सीधे रास्ते से भटक गया (108) बहुत से अहले-किताब

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ

दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुमको

كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

काफ़िर बना दें अपने हसद की वजह से बावजूद ये कि हक़ उनके सामने

تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ

वाज़ेह हो चुका है, पस माफ़ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला

بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

आ जाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (109) और नमाज़ क़ायम करो

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ

और ज़कात अदा करो, और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसको तुम अल्लाह के

عِنْدَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوْا

पास पाओगे, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यक़ीनन उसको देख रहा है (110) और वे कहते हैं कि

لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ

जन्नत में सिर्फ़ वही लोग जाएंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों

تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

यह तो सिर्फ़ उनकी ख़ुशफ़हमियाँ हैं, कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾ بَلٰى ۗ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ

सच्चे हो (111) क्यों नहीं जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह अच्छे काम करने वाला भी है

فَلَهٗٓ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

तो ऐसे शख़्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, उनके लिए न कोई डर है

يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى

और न कोई ग़म (112) और यहूद ने कहा कि नसारा किसी चीज़ पर

شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ

नहीं, और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज़ पर नहीं,

وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ

हालाँकि वे सब आसमानी कितबा पढ़ते हैं, इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं

مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

उन्हीं की सी बात, पस अल्लाह क़ियामत के दिन उनके दरमियान उस बात का फ़ैसला करेगा

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ

जिसमें वे झगड़ रहे थे (113) और उससे बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को

مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ

इससे रोके कि वहाँ अल्लाह के नाम की याद की जाए और उनको उजाड़ने की कोशिश करे,

اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ۬ لَهُمْ

उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए दाख़िल हों, उनके लिए

فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾

दुनिया में रुसवाई है और आख़िरत में उनके लिए भारी सज़ा है (114)

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۗ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ

और मशरिक़ और मग़रिब अल्लाह ही के लिए है, तुम जिधर रुख़ करो उसी तरफ़

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ

अल्लाह है, यक़ीनन अल्लाह वुसअ़त वाला है इल्म वाला है (115) और वे कहते हैं कि अल्लाह ने

وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

बेटा बनाया है, वह इससे पाक है; बल्कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है,

كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

उसी के (हुक्म के) ताबे हैं सारे (116) वह आसमानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है,

وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

वह जब किसी काम का करना ठहरा लेता है तो बस उसके लिए फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है (117)

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْ لَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ

और जो लोग इल्म नहीं रखते उन्होंने कहाः अल्लाह क्यों कलाम नहीं करता हमसे, या हमारे

تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह उनके अगले भी इन्हीं की सी बात

مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ

कह चुके हैं, उन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश करदी हैं निशानियाँ

لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا

उन लोगों के लिए जो यक़ीन करने वाले हैं (118) हमने तुमको हक़ के साथ भेजा है ख़ुशख़बरी सुनाने वाला

وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

और डराने वाला बनाकर, और तुमसे दोज़ख़ में जाने वालों के बारे में कोई पूछ नहीं होगी (119)

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ

और यहूद व नसारा हरगिज़ तुमसे राज़ी न होंगे जब तक कि तुम उनकी मिल्लत के पैरू

مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ

न बन जाओ, तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही असल राह है, और अगर

اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

बाद उस इल्म के जो तुमको पहुँच चुका है तुमने उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी की

مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ اَلَّذِيْنَ

तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार (120) जिन लोगों को

وقف منزل

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

हमने किताब दी है वे उसको वैसे ही पढ़ते हैं जैसा कि पढ़ने का हक़ है, यही लोग

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

ईमान लाते हैं उस पर, और जो उसका इनकार करें तो वही घाटे में

الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ

रहने वाले हैं (121) ऐ बनी इस्राईल! मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने

اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

तुम्हारे ऊपर किया, और इस बात को कि मैंने तुमको तमाम अक़वामे-आलम पर फ़ज़ीलत दी (122)

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا

और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आएगा

وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ

और न किसी की तरफ़ से कोई मुआवज़ा क़बूल किया जाएगा, और न किसी को कोई सिफ़ारिश फ़ायदा देगी और न कहीं

يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ

से उनको कोई मदद पहुँचेगी (123) और जब इब्राहीम (अलै०) को उसके रब ने कई बातों में आज़माया,

فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ

तो उसने पूरा कर दिखाया, अल्लाह ने कहा: मैं तुमको सब लोगों का इमाम बनाउंगा, इब्राहीम ने कहा: और मेरी औलाद

ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا

में से भी, अल्लाह ने कहा: मेरा अहद ज़ालिमों तक नहीं पहुँचता (124) और जब हमने काबा को

الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ

लोगों के इज्तिमा की जगह, और अमन का मक़ाम ठहराया, और (हुक्म दिया कि)

مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ

मक़ामे-इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बनालो, और इब्राहीम

وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ

और इस्माईल को ताकीद की कि मेरे घर को तवाफ़ करने वालों, एतिकाफ़ करने वालों

وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ

और रुकूअ व सुजूद करने वालों के लिए पाक रखो (125) और जब इब्राहीम (अलै०) ने कहा: ऐ मेरे रब! इस शहर को

ع ١٥ احتياط منزل ١

هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ

अमन का शहर बना दे, और इसके बाशिंदों को जो उनमें से अल्लाह और आख़िरत के दिन पर

اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ

ईमान रखें फ़लों की रोज़ी अता फ़रमा, अल्लाह ने कहा: जो इनकार करेगा मैं उसको भी

فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ

थोड़े दिनों का फ़ायदा दूंगा, फिर उसको आग के अज़ाब की तरफ़ धकेल दूंगा,

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ

और वह बहुत बुरा ठिकाना है (126) और जब इब्राहीम और इस्माईल (अलै०) बैतुल्लाह की दीवारें

مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ

उठा रहे थे और यह कहते जाते थे: ऐ हमारे रब! क़ुबूल कर हमसे, यक़ीनन तू ही

اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ

सुनने वाला जानने वाला है (127) ऐ हमारे रब! हमको अपना फ़रमाँबरदार बना,

لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا

और हमारी नस्ल में से अपनी एक फ़रमाँबरदार उम्मत उठा, और हमको हमारे इबादत के तरीक़े बता,

وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۸﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ

और हमको माफ़ फ़रमा, तू ही माफ़ करने वाला रहम करने वाला है (128) ऐ हमारे रब! और उनमें

فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ

उन्हीं में का एक रसूल उठा, जो उनको तेरी आयतें सुनाए, और उनको किताब

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

और हिकमत की तालीम दे, और उनका तज़किया करे, बेशक तू ज़बरदस्त है

الْحَكِيْمُ ﴿۱۲۹﴾ ع وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا

हिकमत वाला है (129) और कौन है जो इब्राहीम (अलै०) के दीन को पसंद न करे मगर वह

مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ

जिसने अपने आपको बेवक़ूफ़ बना लिया हो; हालाँकि हमने उसको दुनिया में चुन लिया था,

وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ

और आख़िरत में वह सालिहीन में से होगा (130) जब उसके रब ने कहा कि

منزل ١
ع ١٥ ٨ ١٥

رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَوَصّٰى

अपने आपको हवाले कर दो, तो उसने कहा: मैंने अपने आपको रब्बुल-आलमीन के हवाले किया (131) और उसी की नसीहत की

بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى

इब्राहीम (अलै०) ने अपनी औलाद को और इसी की नसीहत की याक़ूब (अलै०) ने अपनी औलाद को, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने

لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ؕ اَمْ

तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है, पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम को मौत न आए (132) क्या तुम

كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ

मौजूद थे जब याक़ूब (अलै०) की मौत का वक़्त आया, जब उसने अपने बेटों से कहा कि

لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ

मेरे मरने के बाद तुम किसकी इबादत करोगे? उन्होंने कहा: हम उसी की इबादत करेंगे

وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ

जिसकी इबादत आप और आपके बुज़ुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ (अलै०) करते आए हैं, वही एक माबूद है

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا

और हम उसी के फ़रमाँबरदार हैं (133) यह एक जमात थी जो गुज़र गई, उसको मिलेगा

كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا

जो उसने कमाया और तुमको मिलेगा जो तुमने कमाया, और तुमसे उनके किए हुए की

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾ وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ

पूछ न होगी (134) और कहते हैं कि यहूदी या नसरानी बन जाओ तो हिदायत पा जाओगे,

قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ

कहो कि नहीं बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम (अलै०) के दीन की जो अल्लाह की तरफ़ यकसू थे, और वह

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ

शिर्क करने वालों में से न थे (135) कहो: हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतारी गई है

اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और उस पर भी जो इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब (अलै०) और उसकी

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ

औलाद पर उतारी गई, और जो मिला मूसा और ईसा (अलै०) को और जो मिला

النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫

सब नबियों को उनके रब की तरफ़ से, हम उनमें से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते

وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ

और हम अल्लाह ही के फ़रमाँबरदार हैं (136) फिर अगर वे ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो

بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ

तो बेशक वे राह पा गए, और अगर वे फिर जाएं तो अब वे ज़िद पर हैं;

فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾ صِبْغَةَ

पस तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह उनके लिए काफ़ी है, और वह सुनने वाला जानने वाला है (137) कहो: हमने चढ़ा लिया

اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ

अल्लाह का रंग, और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की

عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا

इबादत करने वाले हैं (138) कहो: क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वह हमारा रब भी है

وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ

और तुम्हारा रब भी, हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं, और हमने तो अपनी बंदगी

مُخْلِصُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ

उसी के लिए ख़ालिस कर ली है (139) क्या तुम कहते हो इब्राहीम और इस्माईल

وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ

और इसहाक़ और याक़ूब (अलै०) और उसकी औलाद सब यहूदी या

نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

नसरानी थे, कहो कि तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह, और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा

كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

जो उस गवाही को छुपाए जो अल्लाह की तरफ़ से उसके पास आई हुई है, और जो कुछ तुम करते हो

تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ

अल्लाह उससे बेख़बर नहीं (140) यह एक जमात थी जो गुज़र गई, उसको मिलेगा जो उसने कमाया और तुमको मिलेगा

مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

जो तुमने कमाया, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी (141)

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ

अब ये बेवक़ूफ़ लोग कहेंगे कि आख़िर वह क्या चीज़ है जिसने इन (मुसलमानों) को उस क़िबले से रुख़

قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ

फेरने पर आमादा कर दिया, जिसकी तरफ़ वे मुँह करते चले आ रहे थे, आप कह दीजिए कि मशरिक़

وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾

और मग़रिब सब अल्लाह ही की हैं, वह जिसको चाहता है सीधी राह की हिदायत कर देता है (142)

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

और इस तरह हमने तुमको बीच की उम्मत बना दिया, ताकि तुम गवाह रहो

عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا

लोगों पर और रसूल रहे तुम पर गवाह, और जिस क़िबले पर

جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ

तुम थे हमने उसको सिर्फ़ इस लिए मुतअय्यन किया था ताकि हम जान लें कि कौन

يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ

रसूल की पैरवी करता है और कौन उससे उलटे पाँव फिर जाता है, और बेशक यह बात

لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

भारी है मगर उन लोगों पर जिनको अल्लाह ने हिदायत दी, और अल्लाह ऐसा नहीं

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾

कि तुम्हारे ईमान को ज़ाए करदे, बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफ़क़त करने वाला मेहरबान है (143)

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ

हम तुम्हारे चेहरे का बार बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं, पस हम तुमको

قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۖ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ

उसी क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसको तुम पसंद करते हो, अब अपना रुख़ मस्जिदे-हराम की तरफ़ फेर दो,

وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ

और तुम जहाँ कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी तरफ़ करो, और

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

अहले-किताब ख़ूब जानते हैं कि यह हक़ है और उनके रब की

رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾ وَلَئِنْ

जानिब से है, और अल्लाह बे ख़बर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं (144) और अगर तुम उन

اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا

अहले-किताब के सामने तमाम दलीलें पेश कर दो, तब भी वे तुम्हारे क़िबले को

قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ

न मानेंगे, और न तुम उनके क़िबले की पैरवी कर सकते हो, और न वे ख़ुद

بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ

एक दूसरे के क़िबले को मानते हैं, और उस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास

بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

आ चुका है अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यक़ीनन ज़ालिमों में से हो जाओगे (145)

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۗ

जिनको हमने किताब दी है वे उसको इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं,

وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

और उनमें से एक गिरोह हक़ को छुपा रहा है हालाँकि वह उसको जानता है (146)

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

हक़ वह है जो आपका रब कहे, पस आप हरगिज़ शक करने वालों में से न बनें (147)

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ

हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुँह करता है, पस तुम भलाई के कामों की तरफ़ दोड़ो,

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

तुम जहाँ कहीं होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा, बेशक अल्लाह

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ

सब कुछ कर सकता है (148) और तुम जहाँ से भी निकलो अपना रुख़

وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ

मस्जिदे-हराम की तरफ़ करो, बेशक यह हक़ है तुम्हारे रब

رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ

की तरफ़ से, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं (149) और तुम जहाँ से

وقف لازم

وقف منزل

ع ١٧

وقف النبي

منزل ١

خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ

जहाँ तुम और करो, की तरफ़ मस्जिदे-हराम रुख़ अपना निकलो भी

مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ

ऊपर तुम्हारे को लोगों ताकि रखो; तरफ़ उसी रुख़ अपने रहो भी

عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا

कोई हुज्जत बाक़ी न रहे, सिवाए उन लोगों के जो उन में बे-इंसाफ़ हैं, पस तुम

تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ

उनसे न डरो और मुझ से डरो, और ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूँ, और ताकि

تَهْتَدُوْنَ ۟ۙ ﴿١٥٠﴾ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ

तुम राह पा जाओ (150) जिस तरह हमने तुम्हारे दर्मियान एक रसूल तुम ही में से भेजा

يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ

जो तुमको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाता है, और तुमको पाक करता है और तुमको किताब की

وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۟ؕ ﴿١٥١﴾

और हिकमत की तालीम देता है, और तुमको वे चीज़ें सिखा रहा है जिनको तुम नहीं जानते थे (151)

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾ ع

पस तुम मुझको याद रखो मैं तुमको याद रखूँगा, और मेरा एहसान मानो मेरी नाशुक्री मत करो (152)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ

करो, हासिल मदद से नमाज़ और सब्र वालो! ईमान ऐ

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ

यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है (153) और जो लोग अल्लाह की राह में

سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

मारे जाएं उनको मुर्दा मत कहो; बल्कि वे ज़िंदा हैं मगर तुमको ख़बर नहीं (154)

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ

और हम ज़रूर तुमको आज़माएंगे कुछ डर और भूख से और मालों और जानों

الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۙ ﴿١٥٥﴾

और फलों में कमी के ज़रिए, और साबित क़दम रहने वालों को ख़ुशख़बरी देदो (155)

الَّذِيۡنَ اِذَاۤ اَصَابَتۡهُمۡ مُّصِيۡبَةٌ ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ

जिनका हाल यह है कि जब उनको कोई मुसीबत पहुँचती है तो वे कहते हैं: हम अल्लाह के हैं और हम

اِلَيۡهِ رٰجِعُوۡنَ ؕ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓـئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ

उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं (156) यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियाँ हैं

وَرَحۡمَةٌ ۚ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡمُهۡتَدُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾ اِنَّ الصَّفَا

और रहमत है, और यही लोग हैं जो राह पर हैं (157) बेशक “सफ़ा”

وَالۡمَرۡوَةَ مِنۡ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنۡ حَجَّ الۡبَيۡتَ اَوِ اعۡتَمَرَ

और “मरवा” अल्लाह की (यादगार) निशानियों में से हैं; पस जो शख़्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे

فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ اَنۡ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا ۙ

तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि वह उनका तवाफ़ करे, और जो कोई शौक़ से कुछ नेकी करे

فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيۡمٌ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَكۡتُمُوۡنَ مَاۤ

तो अल्लाह क़द्रदान है, जानने वाला है (158) बेशक जो लोग छुपाते हैं

اَنۡزَلۡنَا مِنَ الۡبَيِّنٰتِ وَالۡهُدٰى مِنۡۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنّٰهُ

हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम उसको

لِلنَّاسِ فِى الۡكِتٰبِ ۙ اُولٰٓـئِكَ يَلۡعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلۡعَنُهُمُ

लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं, तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और उन पर लानत करने वाले

اللّٰعِنُوۡنَ ۙ ﴿۱۵۹﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ تَابُوۡا وَاَصۡلَحُوۡا وَبَيَّنُوۡا

लानत करते हैं (159) अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इस्लाह कर ली और (हक़ का) इज़्हार किया

فَاُولٰٓـئِكَ اَتُوۡبُ عَلَيۡهِمۡ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۶۰﴾

तो उनको मैं मुआफ़ कर दूँगा, और मैं हूँ मुआफ़ करने वाला, मेहरबान (160)

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَمَاتُوۡا وَهُمۡ كُفَّارٌ اُولٰٓـئِكَ عَلَيۡهِمۡ

बेशक जिन लोगों ने इनकार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की

لَعۡنَةُ اللّٰهِ وَالۡمَلٰٓـئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجۡمَعِيۡنَ ۙ ﴿۱۶۱﴾ خٰلِدِيۡنَ

और फ़रिश्तों की और आदमियों की सब की लानत है (161) उसी हाल में वे

فِيۡهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ الۡعَذَابُ وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۱۶۲﴾

हमेशा रहेंगे, उन पर से अज़ाब हलका न किया जाएगा और न उनको ढील दी जाएगी (162)

وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ

और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़ा मेहरबान,

الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

निहायत रहम वाला है (163) बेशक आसमानों और ज़मीन की बनावट में

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ

और रात दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इनसानों के काम आने वाली

فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ

चीज़ें लेकर समुंदर में चलती हैं, और उस पानी में जिसको अल्लाह ने

السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा ज़मीन को

وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ

ज़िंदगी बख़्शी, और उस (ज़मीन) में सब क़िसम के जानवर फैला दिए, और हवाओं की गर्दिश में

وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ

और बादलों में जो आसमान व ज़मीन के दरमियान हुक्म के ताबे हैं, उन लोगों के लिए

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ

निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं (164) और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा

دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ

दूसरों को उसका बराबर ठहराते हैं, उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए, और जो

اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ

ईमान वाले हैं वे सब से ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं, और अगर ये ज़ालिम उस वक़्त को देख लें

الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

जबकि वे अज़ाब को देखेंगे कि ज़ोर सारा का सारा अल्लाह का है, और अल्लाह बड़ा सख़्त

الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا

अज़ाब देने वाला है (165) जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से अलग हो जाएंगे जो उनके

وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ

कहने पर चलते थे, अज़ाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ़ के रिश्ते टूट चुके होंगे (166) वे लोग

اَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا

जो पीछे चलते थे कहेंगे: काश! हमको दुनिया की तरफ़ दोबारा लौटना नसीब होता तो हम भी उनसे अलग हो जाते

تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ

जैसे वे हम से अलग हो गए, इस तरह अल्लाह उनके आमाल को उन्हें हसरत बना कर

عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ

दिखाएगा, और वे आग से न निकल सकेंगे (167) ऐ लोगो!

كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا

ज़मीन की चीज़ों में से हलाल और सुथरी चीज़ें खाओ और शैतान के

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا

क़दमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (168) वह तुमको सिर्फ़

يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى

बुरे काम और बे-हयाई की तलक़ीन करता है और इस बात की कि तुम अल्लाह की तरफ़ वे बातें

اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا

मंसूब करो जिनके बारे में तुमको कोई इल्म नहीं (169) और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ

जो अल्लाह ने उतारा है, तो वे कहते हैं कि हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا

अपने बाप दादा को पाया है, क्या इस सूरत में भी कि उनके बाप दादा न अक़्ल रखते हों

وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ

और न सीधी राह जानते हों (170) और उन मुनकिरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स

الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ

ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के सिवा और कुछ नहीं सुनता, ये बहरे हैं,

بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

गूंगे हैं, अंधे हैं वे कुछ नहीं समझते (171) ऐ ईमान वालो!

اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا

हमारी दी हुई पाक चीज़ों को खाओ, और अल्लाह का शुक्र अदा करो

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ

अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो (172) अल्लाह ने तुम पर हराम किया है

الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ

सिर्फ़ मुर्दार को, और ख़ून को, और सुअर के गोश्त को, और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया

اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ

गया हो, फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए, वह न उसकी चाहत रखता हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं,

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ

बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (173) बेशक जो लोग उस चीज़ को छुपाते हैं

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا

जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और उसके बदले में थोड़ी क़ीमत

قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ

लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ़ आग भर रहे हैं,

وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖۚ

क़ियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उनको पाक करेगा,

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (174) ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले

بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى

गुमराही और मग़फ़िरत के बदले अज़ाब की ख़रीदारी कर ली है; चुनाँचे (अंदाज़ा करो कि) ये दोज़ख़ की

النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ

आग सहने के लिए कितने तैयार हैं (175) यह इस लिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक ठीक उतारा, मगर

الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ ع

जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे ज़िद में दूर जा पड़े (176)

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरे पूरब

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

और पश्चिम की तरफ़ कर लो; बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर

وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى

और फ़रिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर, और माल दे अल्लाह की

حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ

मुहब्बत में रिश्तेदारों को, और मोहताजों को और मुसाफ़िरों

السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

को, और मांगने वालों को और ग़ुलामों को छुड़ाने में, और नमाज़ क़ायम करे

وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ

और ज़कात अदा करे, और जब अहद कर लें तो उसको पूरा करें,

وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ

और सब्र करने वाले सख़्ती और तकलीफ़ में और लड़ाई के वक़्त,

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

यही लोग हैं जो सच्चे निकले, और यही हैं डर रखने वाले (177)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى

ऐ ईमान वालो! तुम पर मक़्तूलों का क़िसास लेना फ़र्ज़ किया

الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى

जाता है, आज़ाद के बदले आज़ाद, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले

بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ

औरत, फिर जिसको उसके भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ी हो जाए तो उसे चाहिए कि मुनासिब तरीक़े

بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

का ख़्याल रखे, और ख़ुशदिली के साथ उसको अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

एक आसानी और मेहरबानी है, अब इसके बाद भी जो शख़्स ज़्यादती करे

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ

उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है (178) और ऐ अक़्ल वालो! क़िसास में

يّٰاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ

तुम्हारे लिए ज़िंदगी है; ताकि तुम बचो (179) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि

اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۚۖ الْوَصِيَّةُ

जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आजाए और वह अपने पीछे माल छोड़ रहा हो, तो वह दस्तूर के मुताबिक़

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى

वसीयत करे अपने माँ–बाप के लिए और रिश्तेदारों के लिए, यह ज़रूरी है

الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ

अल्लाह से डरने वालों के लिए (180) फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसको बदल डाले तो उसका

اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾

गुनाह उसी पर होगा जिसने उसको बदला; यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (181)

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ

अलबत्ता जिसको वसीयत करने वाले के मुताल्लिक़ यह अंदेशा हो कि उसने जानिबदारी या गुनाह किया है और वह आपस में

بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾ ع

सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं; अल्लाह मुआफ़ करने वाला, रहम करने वाला है (182)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा फ़र्ज किया गया जिस तरह तुमसे

كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾

अगलों पर फ़र्ज़ किया गया था; ताकि तुम परहेज़गार बनो (183)

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا

कुछ ही दिन तो रखने हैं ये रोज़े, फिर जो कोई तुम में बीमार हो

اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ

या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले, और जिन को ताक़त है

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

तो एक रोज़े के बदले एक मिसकीन को खाना खिलाना है, जो कोई मज़ीद नेकी करे

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तो वह उसके लिए बेहतर है; और तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है,

تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ

अगर तुम जानो (184) रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया,

هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ

हिदायत है लोगों के लिए और खुली निशानियाँ रास्ते की और हक़ व बातिल के बीच फ़ैसला करने वाला,

فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۭ وَمَنْ كَانَ

पस तुम में से जो कोई इस महीने को पाए वह उसके रोज़े रखे, और जो

مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ يُرِيْدُ

बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करले, अल्लाह तुम्हारे लिए

اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۡ وَلِتُكْمِلُوا

आसानी चाहता है वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता; और इस लिए कि तुम

الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ

गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर कि उसने तुमको राह बताई और ताकि तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۭ

उसके शुक्रगुज़ार बनो (185) और जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पूछें तो में तो नज़दीक हूँ,

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا

पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जबकि वह मुझे पुकारता है, तो चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें

لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾ اُحِلَّ لَكُمْ

और मुझ पर यक़ीन रखें; ताकि वह हिदायत पाएं (186) तुम्हारे लिए रोज़े की

لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَاۗىِٕكُمْ ۭ هُنَّ لِبَاسٌ

रात में अपनी बीवियों के पास जाना जायज़ किया गया है वे तुम्हारे लिए लिबास हैं

لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ

और तुम उनके लिए लिबास हो, अल्लाह ने देखा कि तुम अपने आप से

تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ

ख़्यानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम को मुआफ़ कर दिया,

فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا

तो अब तुम उनसे मिलो और वह तलाश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है, और खाओ

وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ

और पियो यहाँ तक कि सुबह की सफ़ेद धारी काली धारी से

الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى

अलग ज़ाहिर हो जाए, फिर पूरा करो रोज़ा रात तक

الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ

और जब तुम मस्जिद में ऐतिकाफ़ में हो तो बीवियों से ख़लवत न करो,

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ

ये अल्लाह की हदें हैं तुम उनके नज़दीक न जाओ, इस तरह अल्लाह अपनी आयतें

اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ

लोगों के लिए बयान करता है; ताकि वे बचें (187) और तुम आपस में एक दूसरे के माल को

بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا

नाहक़ तौर पर न खाओ और उनको हाकिमों तक न पहुँचाओ; ताकि दूसरों के माल का

فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾ ع

कोई हिस्सा ज़ालिमाना तरीक़े पर खाजाओ, हालाँकि तुम उसको जानते हो (188)

ع ٢٣ ٧

يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ

वे तुमसे (हर महीने के) चाँद के बारे में पूछते हैं, कह दो कि वह औक़ात मालूम करने का ज़रिया है लोगों के लिए

منزل ١

وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا

और हज के लिए, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में उनके पिछले हिस्से से आओ;

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪

बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेज़गारी करे, और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ

और अल्लाह से डरो; ताकि तुम कामयाब हो (189) और अल्लाह की राह में उन लोगों

سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ

से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे, और ज़्यादती न करो;

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ

अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता (190) और तुम क़त्ल करो उनको जिस जगह

ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

पाओ, और निकाल दो उनको जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है,

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ

और फ़ितना सख़्त तर है क़त्ल से, और उनसे मस्जिदे-हराम के

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ

पास न लड़ो जब तक कि वे तुमसे उसमें जंग न छेड़ें, पस अगर वे तुमसे जंग

فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا

छेड़ें तो उनको क़त्ल करो, यही सज़ा है मुनकिरों की (191) फिर अगर वे बाज़ आजाएं

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ

तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (192) और तुम उनसे जंग करो यहाँ तक कि फ़ितना

فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ

बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वे बाज़ आजाएं तो उसके बाद सख़्ती नहीं है

اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ

मगर ज़ालिमों पर (193) हुरमत वाला महीना हुरमत वाले महीने का

الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ

बदला है और हुरमतों का भी क़िसास है, पस जिसने तुम पर ज़्यादती की

فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۖ

तुम भी उस पर ज़्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज़्यादती की है,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है (194)

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى

और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने आप को हलाकत में

التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

न डालो, और काम अच्छी तरह करो, बेशक अल्लाह अच्छी तरह काम करने वालों को पसंद करता है (195)

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो क़ुरबानी का

اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

जानवर मयस्सर हो वह पेश कर दो, और तुम अपने सरों को न मुंडाओ जब तक

يَبْلُغَ	الْهَدْيُ	مَحِلَّهٗ ط	فَمَنْ	كَانَ	مِنْكُمْ	مَّرِيْضًا			

क़ुरबानी अपने ठिकाने पर न पहुँच जाए, तुम में से जो बीमार हो

اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ

या उसके सर में कोई तकलीफ़ हो तो वह फ़िदया दे रोज़े या

صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ج فَاِذَآ اَمِنْتُمْ وقفة فَمَنْ تَمَتَّعَ

सदक़े या क़ुरबानी की शक्ल में, फिर जब अमन की हालत हो, और कोई हज तक उमरे का फ़ायदा

بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ج

हासिल करना चाहे तो वह क़ुरबानी पेश करे जो उसको मयस्सर आए,

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ

फिर जिसको मयस्सर न आए तो वह हज के अय्याम में तीन दिन रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े

اِذَا رَجَعْتُمْ ط تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ط ذٰلِكَ لِمَنْ

जबकि तुम घरों को लोटो, ये पूरे दस हुए, यह उस शख़्स के लिए है

لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ط وَاتَّقُوا

जिस का ख़ानदान मस्जिदे-हराम के पास आबाद न हो, और अल्लाह से

اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ ع اَلْحَجُّ

डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है (196) हज के

اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ج فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

मुतअय्यन महीने हैं, पस जिसने उन महीनों में हज का इरादा कर लिया तो फिर उसको हज के दौरान न कोई

وَلَا فُسُوْقَ لا وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ط وَمَا تَفْعَلُوْا

गंदी बात करनी है और न गुनाह की, और न लड़ाई झगड़े की, और जो नेक काम

مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ط وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ

तुम करोगे अल्लाह उसको जान लेगा, और (हाँ) रास्ते का तौशा ले लिया करो, बेहतरीन तौशा

التَّقْوٰى ز وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ

तक़्वा है, और ऐ अक़्ल वालो! मुझ से डरो (197) इसमें कोई

جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ط فَاِذَآ اَفَضْتُمْ

गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल भी तलाश करो, फिर जब तुम लोग

ع ٢٤/٨

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ص

अरफ़ात से वापस हो तो अल्लाह को याद करो मशअरे-हराम के नज़दीक,

وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ج وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ

और उस (अल्लाह) को वैसे ही याद करो जिस तरह उसने तुम्हें बताया है, वरना तुम इससे पहले

لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ

यक़ीनन राह से भटके हुए लोगों में से थे (198) फिर तवाफ़ को चलो जहाँ से सब लोग

النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ط اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٩﴾

चलें, और अल्लाह से मुआफ़ी मांगो; यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है (199)

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ

फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम अपने बाप-दादा को

اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ط فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ

याद करते थे बल्कि उससे भी ज़्यादा, पस कुछ लोग तो वे हैं जो यूँ कहते हैं

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ

कि ऐ हमारे रब! हमें इस दुनिया में दे दे और आख़िरत में उसका

خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي

कुछ हिस्सा नहीं (200) और उनमें से कुछ वे भी हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे (प्यारे) रब! हमको दुनिया में

الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ

(भी) भलाई दीजिए और आख़िरत में भी भलाई दीजिए और हमें आग के अज़ाब

النَّارِ ﴿٢٠١﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ط

से बचाइए (201) उन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का,

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है (202) और अल्लाह को याद करो मुक़र्रर

مَّعْدُوْدٰتٍ ط فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ

दिनों में, फिर जो शख़्स जल्दी करके दो दिन में (मक्का वापस) आजाए उस पर कोई

عَلَيْهِ ج وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ لا لِمَنِ اتَّقٰى ط

गुनाह नहीं, और जो शख़्स ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं, यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

और तुम अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे (203)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ

और लोगों में से कोई है कि उसकी बात दुनिया की ज़िंदगी में तुमको प्यारी

الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ

लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है; हालाँकि वह सख़्त

الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ

झगड़ालू है (204) और जब वह पलट कर चला जाता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि ज़मीन में फ़साद

فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ

फैलाए और खेतों और जानों को हलाक करे; हालाँकि अल्लाह

الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ

फ़साद को पसंद नहीं करता (205) और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो तकब्बुर उसको गुनाह पर

بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾ وَمِنَ

और आमादा कर देता है, पस ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफ़ी है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है (206) और लोगों में

النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ

कोई है कि अल्लाह की ख़ुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है,

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا

और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत मेहरबान है (207) ऐ ईमान वालो! इस्लाम में

فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों पर मत चलो,

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (208) फिर अगर तुम फिसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाज़ेह दलीलें

جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (209)

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ

क्या लोग इस इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह उनके पास बादल के सायबानों

الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

में आए और फ़रिश्ते भी आ जाएं और सब मामले निमटा दिए जाएं, और सारे मुआ़मलात

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ

अल्लाह ही की तरफ़ फेरे जाते हैं (210) बनी इस्राईल से पूछो, हमने उनको कितनी

مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ

खुली निशानियाँ दीं, और जो शख़्स अल्लाह की नेअ़मत को बदल डाले जबकि

بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह यक़ीनन सख़्त सज़ा देने वाला है (211)

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ

ख़ुशनुमा कर दी गई है दुनिया की ज़िंदगी उन लोगों की नज़र में जो मुनकिर हैं और वे हंसते हैं

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ

ईमान वालों पर; हालाँकि जो परहेज़गार हैं वे क़ियामत के दिन उनके मुक़ाबले में

الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

ऊँचे होंगे, और अल्लाह जिसको चाहता है बे-हिसाब रोज़ी दे देता है (212)

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ

लोग एक उम्मत ही थे, (उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया) तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा

مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले बनाकर, और उनके साथ किताब उतारी

بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ

हक़ के साथ; ताकि वह फ़ैसला कर दे लोगों के दरमियान उन बातों का जिन में वे इख़्तिलाफ कर रहे हैं,

وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

और यह इख़्तिलाफ़ात उन्हीं लोगों ने किए जिनको हक़ दिया गया था, बाद इसके

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ

कि उनके पास खुली खुली हिदायात आ चुकी थीं, आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने अपनी तोफ़ीक़ से

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ

हक़ के मुआ़मले में ईमान वालों को राह दिखाई जिस में वे झगड़ रहे थे,

ع ٢٥

وقف لازم

منزل ١

وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

और अल्लाह जिसको चाहता है सीधी राह दिखा देता है (213)

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ

क्या तुमने समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे; हालाँकि तुम पर अभी वे हालात

الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ

गुज़रे ही नहीं जो तुम्हारे अगलों पर गुज़रे थे, उनको सख़्ती

وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ

और तक्लीफ़ पहुँची और वे हिला दिए गए; यहाँ तक कि रसूल और उनके साथ

اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ

ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी? याद रखो! अल्लाह की मदद

قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ

क़रीब है (214) लोग आपसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें? (ऐ नबी) कह दें कि जो माल तुम ख़र्च करो

مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

तो उसमें हक़ है तुम्हारे माँ-बाप का, और रिश्तेदारों का, और यतीमों का, और मोहताजों का

وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ

और मुसाफ़िरों का, और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को

عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ

मालूम है (215) तुम्हें लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम को नागवार मालूम होती है,

وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى

हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को न पसंद करो और वह तुम्हारे लिए भली हो, और यह भी हो सकता है कि

اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

तुम कोई जीज़ पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो; और अल्लाह जानता है जबकि

وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ

तुम नहीं जानते (216) लोग आपसे हुरमत वाले महीने के बारे में

الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ

पूछते हैं कि उसमें लड़ना कैसा है? (ऐ नबी) कह दीजिए कि उसमें लड़ना बहुत बुरा है, मगर अल्लाह के

منزل ١

ع ٢٦

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ

रास्ते से रोकना, और उसका इनकार करना, और मस्जिदे-हराम से रोकना

وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ

और उसके लोगों को वहाँ से निकालना अल्लाह के नज़दीक उससे भी ज़्यादा बुरा है, और फ़ितना

اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى

क़त्ल से भी ज़्यादा बड़ी बुराई है, और ये लोग तुमसे बराबर लड़ते रहेंगे यहाँ तक कि

يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ

तुमको तुम्हारे दीन से फेर दें अगर क़ाबू पाजाएं, और तुम में से

يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ

जो कोई अपने दीन से फिर जाए और कुफ़्र की हालत में मरे

فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ

तो ऐसे लोगों के अ़मल ज़ाए हो गए दुनिया में और आख़िरत में

وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे (217)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ

बेशक वे लोग जो ईमान लाए, और जिन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं, और अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (218) लोग आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं,

قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ

(ऐ नबी) कह दीजिए कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, और उनका गुनाह

اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ۥ

बहुत ज़्यादा है उनके फ़ायदे से, और वे आपसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें,

قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

कह दीजिए कि जो (अपनी) ज़रूरत से ज़्यादा हो, इस तरह अल्लाह तुम्हारे अहकाम को बयान करता है; ताकि तुम

تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ

ध्यान करो (219) दुनिया और आख़िरत के मुआमलात में, और वे आपसे यतीमों के मुताल्लिक़

الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ

पूछते हैं, आप कह दें कि उनकी भलाई चाहना तो नेक काम है, और अगर तुम उनको अपने साथ शामिल कर लो

فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ

तो वे तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह को मालूम है कि कौन ख़राबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला है,

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

और अगर अल्लाह चाहता तो तुमको मुश्किल में डाल देता; बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, तदबीर करने वाला है (220)

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक कि वे ईमान न लाएं, और कोई भी मोमिन बांदी

خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا

बेहतर है किसी भी मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुमको अच्छी मालूम हो, और अपनी औरतों को

الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ

मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक कि वे ईमान न लाएं, कोई भी मोमिन ग़ुलाम बेहतर है एक (आज़ाद)

مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ

मुशरिक से अगरचे वह तुमको भला लगे, वे लोग आग की तरफ़ बुलाते हैं

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ

जबकि अल्लाह जन्नत की तरफ़ और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है अपनी तौफ़ीक़ से,

وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾ ع

और अपने अहकाम लोगों के लिए खोल कर बयान करता है; ताकि वे नसीहत पकड़ें (221)

وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا

और वे आपसे हैज़ का हुक्म पूछते हैं, (ऐ नबी) कह दें कि वह एक गंदगी है; पस हैज़ की

النِّسَآءَ فِى الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى

हालत में औरतों से अलग रहो, और जब तक वे पाक न हो जाएं उनके

يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ

क़रीब न जाओ, फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएं तो उस तरीक़े से उनके पास जाओ जिसका हुक्म अल्लाह ने

منزل ١

ع ٢٧ ٥

اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

तुमको दिया है; अल्लाह महबूब रखता है तौबा करने वालों को और वह महबूब रखता है पाक रहने वालों को (222)

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं, पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ,

وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

और अपने लिए (नेक अ़मल) आगे भेजो, और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम ज़रूर

مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً

उससे मिलने वाले हो, और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी देदो (223) और अल्लाह (के नाम) को अपनी क़समों

لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ

में इस निय्यत से इस्तेमाल न करो कि उसके ज़रिए नेकी और तक़्वे के कामों और लोगों के दरमियान सुलह

النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

व सफ़ाई कराने से बच सको; और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है (224) अल्लाह तुम्हारी

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ

बे इरादा क़समों पर तुमको नहीं पकड़ता मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे

قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۲۵﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

दिल करते हैं; और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा बुर्दबार है (225) जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की

مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ

क़सम खा लें, उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है, फिर अगर वे रुजूअ़ कर लें

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲۶﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ

तो अल्लाह मुआ़फ़ कर देने वाला, मेहरबान है (226) और अगर वे तलाक़ का फ़ैसला कर लें

فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۷﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ

तो यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (227) और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आपको

بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ

तीन हैज़ तक रोकी रखें, और उनके लिए जायज़ नहीं कि वे

يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ

उस चीज़ को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में अगर वे

يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ
ईमान रखती हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, और इस दौरान उनके शोहर

بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ
उनको फिर लौटा लेने का हक़ ज़्यादा रखते हैं, अगर वे मामला दुरुस्त करना चाहें, और उन औरतों के लिए

مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
दस्तूर के मुताबिक़ उसी तरह के हुक़ूक़ हैं जिस तरह दस्तूर के मुताबिक़ उन पर ज़िम्मेदारियाँ हैं, और मर्दों का

دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ ع اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪
उनके मुक़ाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है, और अल्लाह ग़ालिब है, हिकमत वाला है (228) तलाक़ दो बार है,

فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ
फिर या तो क़ायदे के मुताबिक़ रख लेना है या अच्छे अंदाज़ पर रुख़्सत कर देना, और तुम्हारे लिए यह बात

لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ
जायज़ नहीं कि तुम ने जो कुछ उन औरतों को दिया है उसमें से कुछ लेलो, मगर यह कि दोनों को

يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا
डर हो कि वह अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे, फिर अगर तुमको यह डर हो कि वे दोनों

يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا
अल्लाह की हदों पर क़ायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में

افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ج
जिसको औरत फ़िदये में दे, यह अल्लाह की हदें हैं पस तुम उनसे बाहर न निकलो,

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾
और जो शख़्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो ऐसे लोग ही ज़ालिम हैं (229)

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ
फिर अगर मर्द उसको तलाक़ देदे तो उसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं जब तक

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ
वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न कर ले, फिर अगर वह मर्द उसको तलाक़ देदे तब गुनाह नहीं उन दोनों पर

اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ
कि फिर मिल जाएं, बशर्तेकि उन्हें उम्मीद हो अल्लाह की हदों पर क़ायम रहने की, और ये

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

अल्लाह के ज़ाब्ते हैं जिनको वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं (230) और जब तुम औरतों को

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

तलाक़ देदो फिर वे अपनी इद्दत को पहुँच जाएं तो उनको क़ायदे के मुताबिक़ रख लो,

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

या क़ायदे के मुताबिक़ रुख़सत कर दो, और तकलीफ़ पहुँचाने की ग़र्ज़ से न रोको

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

ताकि उन पर ज़्यादती करो, और जो ऐसा करेगा उसने दर हक़ीक़त अपना ही बुरा किया,

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ؗ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ

और अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ (का ज़रिया) न बनाओ, और याद करो अपने ऊपर

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ

अल्लाह की नेअ़मत को और उस किताब व हिकमत को जो उसने तुम्हारी

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ

नसीहत के लिए उतारी है, और अल्लाह से डरो और जान लो कि

اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ ع وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ

अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है (231) और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ देदो

فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ

और वे अपनी इद्दत पूरी करलें तो उनको न रोको कि वे अपने शोहरों से

اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ

निकाह करलें, जबकि वे दस्तूर के मुताबिक़ आपस में राज़ी हो जाएं, यह

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुम में से अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर

الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

यक़ीन रखता हो, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा और सुथरा तरीक़ा है; और अल्लाह जानता है

وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ

तुम नहीं जानते (232) और माँएं अपने बच्चों को पूरे

منزل ١

الربع ٢٩

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ

दो साल तक दूध पिलाएं उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों,

وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

और जिसका बच्चा है उसके ज़िम्मे है उन माँओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ

किसी को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बरदाश्त के मुवाफ़िक़, न किसी माँ को उसके

بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ

बच्चे के सबब से तकलीफ़ दी जाए, और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से, और यही ज़िम्मेदारी

مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

वारिस पर भी है, फिर अगर दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रिज़ामंदी से

وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ

और मश्वरा से, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चों को

تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ

किसी और से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, बशर्तेकि तुम क़ायदे के

مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ

मुताबिक़ वह अदा कर दो जो तुम ने उनको देना ठहराया है; और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ

اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ

तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (233) और तुम में से जो लोग

مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

मर जाएं और बीवियाँ छोड़ जाएं वे बीवियाँ अपने आप को

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ

चार महीने दस दिन तक इंतिज़ार में रखें, फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुँचें

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ

तो तुम पर कोई गुनाह नहीं इस बात का कि वे अपनी ज़ात के बारे में क़ायदे के

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾ وَلَا جُنَاحَ

मुवाफ़िक़ कुछ करें, और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बा-ख़बर है (234) और कोई गुनाह नहीं

عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ
तुम पर इस बात में कि उन औरतों को पैग़ाम देने में कोई बात इशारे में कह दो

اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ
या अपने दिल में छुपाए रखो, अल्लाह को मालूम है कि तुम उनका तज़्किरा ज़रूर करोगे,

وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا
मगर छुप कर उनसे कोई वादा न करो सिवाए इसके कि तुम उनसे कोई मुनासिब

مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ
बात कह दो, और निकाह के रिश्ते का इरादा उस वक़्त तक पक्का न करो जब तक

الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ
मुक़र्ररह मुद्दत अपनी इंतिहा को न पहुँच जाए, और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है,

فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع
पस उससे डरो और याद रखो कि अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा बुर्दबार है (235)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ
तुम पर कोई पकड़ नहीं अगर तुमने औरतों को ऐसी हालत में तलाक़ दी कि न उनको तुमने हाथ लगाया है

اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ
और न उनके लिए कुछ (महर) मुक़र्रर किया, (अलबत्ता) उनको कुछ सामान देदो, वुसअ़त वाले पर

قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًاۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
अपनी हैसियत के मुताबिक़ है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक़, ऐसा सामान जो मुनासिब हो,

حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾ وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ
यह लाज़िम है नेकी करने वालों पर (236) और अगर तुम उनको तलाक़ देदो

قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً
क़ब्ल इसके कि उनको हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुक़र्रर कर चुके थे

فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا
तो जितना महर तुमने मुक़र्रर किया है उसका आधा अदा करदो, (हाँ) यह बात और है कि वे मुआ़फ़ करदें या वह मर्द मुआ़फ़ करदे

الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا
जिसके हाथ में निकाह की ज़िम्मेदारी है, और यह कि तुम मुआ़फ़ कर दो

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ

तो ज़्यादा क़रीब है तक़्वे से, और आपस में अच्छा बरताव करने में ग़फ़लत मत करो,

اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾ حٰفِظُوْا عَلَى

जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (237) पाबंदी करो

الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

नमाज़ों की और बीच की नमाज़ की (तो ख़ुसूसी तौर पर), और खड़े रहो अल्लाह के सामने आजिज़ बने हुए (238)

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ

अगर तुमको (दुश्मन का) अंदेशा हो तो पैदल या सवारी पर (पढ़ लो), फिर जब मुतमइन हो जाओ

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

तो अल्लाह को उस तरीक़ा पर याद करो जो उसने तुमको सिखाया है, जिसको तुम नहीं जानते थे (239)

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ

और तुम में से जो लोग वफ़ात पा जाएं और बीवियाँ छोड़ रहे हों,

وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ

वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत करदें कि एक साल तक उनको ख़र्च दिया जाए उन्हें घर से

اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا

निकाले बग़ैर, फिर अगर वे ख़ुद से छोड़ दें तो उस बारे में जो कुछ

فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

वे अपनी ज़ात के मुआमले में दस्तूर के मुताबिक़ करें उसका तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह ज़बरदस्त है,

حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا

हिकमत वाला है (240) और तलाक़ दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ ख़र्च देना है, यह लाज़िम है

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ

परहेज़गारों के लिए (241) इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम खोल खोल कर बयान करता है;

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا

ताकि तुम समझो (242) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो भाग खड़े हुए

مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۖ

अपने घरों से मौत के डर से, हालाँकि वे हज़ारों की तादाद में थे,

منزل ١
ع ٣١ ١٥

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۗ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें ज़िंदा किया, बेशक अल्लाह

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

लोगों पर बड़ा ही फ़ज़्ल करने वाला है मगर बहुत सारे लोग

لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

शुक्र नहीं करते (243) और अल्लाह की राह में लड़ो, और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ

कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (244) कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ

अच्छे तरीक़े पर कि अल्लाह उसको बढ़ा कर उसके लिए कई गुना करदे,

وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾ اَلَمْ تَرَ

और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी, और तुम सब उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे (245) क्या तुमने

اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ

बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा मूसा (अलै०) के बाद

اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ

जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए; ताकि हम अल्लाह की

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ

राह में लड़ें, नबी ने जवाब दिया: कहीं ऐसा न हो कि तुमको हुक्म दे दिया जाए

عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا لَنَآ

लड़ाई का उस वक़्त तुम न लड़ो, उन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है

اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا

कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में हालाँकि हमको अपने घरों से निकाल दिया गया है

وَاَبْنَاۗىِٕنَا ۭ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا

और अपने बच्चों से जुदा कर दिया गया है, फिर जब उनको लड़ाई का हुक्म हुआ तो सब पीछे हट गए

اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾

सिवाए थोड़े लोगों के, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है (246)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

और उनके नबी ने उनसे कहा: अल्लाह ने “तालूत” को तुम्हारे लिए

مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ

बादशाह मुक़र्रर किया है, उन्होंने कहा कि उसको हमारे ऊपर बादशाही कैसे मिल सकती है हालाँकि हम

اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ

उसके मुक़ाबले में बादशाहत के ज़्यादा हक़दार हैं, और उसको तो ज़्यादा दौलत भी हासिल नहीं,

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً

नबी ने कहा: अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसको चुना है और इल्म और जिस्म में

فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ

उसको ज़्यादती दी है, और अल्लाह अपनी सलतनत जिसको चाहता है

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ

देता है, अल्लाह बड़ी वुसअ़त वाला, जानने वाला है (247) और उनके नबी ने उनसे कहा:

اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

उस तालूत के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जाएगा जिस में

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى

तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे लिए तस्कीन (का सामान) है और आले-मूसा और आले-हारून

وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

की छोड़ी हुई यादगारें हैं, उस सन्दूक़ को फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे, उसमें तुम्हारे

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ ع فَلَمَّا فَصَلَ

लिए बड़ी निशानी है अगर तुम यक़ीन रखने वाले हो (248) फिर जब निकले

طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ

तालूत फ़ौजों को लेकर तो उन्होंने कहा: अल्लाह तुमको एक नदी के ज़रिए

بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ

आज़माने वाला है, पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं रहेगा, और जिसने

لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ

उसको न चखा वह मेरा साथी होगा, मगर यह कि कोई एक आध चुल्लू भर ले ले

منزل ١

ع ٣٢ / ١٦

بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ

अपने हाथ से, तो उन्होंने उसमें से ख़ूब पी लिया सिवाए थोड़े आदमियों के, फिर जब तालूत

هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا

और जो उसके साथ ईमान पर क़ायम रहे थे दरिया पार कर चुके तो उन लोगों ने कहा कि

الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

आज हम को "जालूत" और उसकी फ़ौजों से लड़ने की ताक़त नहीं, जो लोग यह जानते थे

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ

कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा: कितनी ही बार छोटी जमातें अल्लाह के हुक्म से

فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٢٤٩﴾

बड़ी जमातों पर ग़ालिब आई हैं, और अल्लाह तो सब्र करने वालों के साथ है (249)

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ

और जब जालूत और उसकी फ़ौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा: ऐ हमारे (प्यारे) रब! हम पर

عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى

सब्र डाल दीजिए और हमारे क़दमों को जमा दीजिए और इन काफ़िरों के

الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٥٠﴾ ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ

मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमाइए (250) फिर (इस तरह उन्होंने) अल्लाह के हुक्म से उनको शिकस्त दी और दाऊद ने

دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ

जालूत को क़त्ल कर दिया, और अल्लाह ने दाऊद (अलै०) को बादशाहत और दानाई अता की

وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ

और जिन चीज़ों का चाहा इल्म बख़्शा, और अगर अल्लाह बअज़ लोगों को

بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ

बअज़ लोगों से दबाया न करे तो ज़मीन फ़साद से भर जाए, मगर

اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है (251) ये अल्लाह की आयतें हैं

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

जो हम आपको सुनाते हैं ठीक ठीक, और बेशक आप पैग़म्बरों में से हो (252)

منزل ١

احتياط

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ

उन पैग़म्बरों में से बअज़ को हमने बअज़ पर फ़ज़ीलत दी, उनमें से

مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا

बअज़ से अल्लाह ने कलाम किया और बअज़ के दरजात बुलंद किए, और हमने

عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ

ईसा बिन मरयम (अलै०) को खुली निशानियाँ दीं, और हमने उनकी मदद की रूहुल-क़ुदुस (जिब्राईल) से,

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ

अगर अल्लाह चाहता तो आपस में न लड़ते उनके बाद आने वाले

مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

बाद इसके कि उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकीं, मगर उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया,

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

फिर उन में से कोई ईमान लाया और किसी ने इनकार किया, और अगर अल्लाह चाहता

مَا اقْتَتَلُوْا ۛ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾

तो वे न लड़ते, मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है (253)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उन चीज़ों में से जो हमने तुमको दी है उस दिन के

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا

आने से पहले जिस में न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती काम आएगी और न ही

شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا

सिफ़ारिश, और जो मुनकिर हैं वही ज़ुल्म करने वाले हैं (254) अल्लाह वह है कि उसके सिवा

هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ

कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सबका थामने वाला है, उसे न ऊँघ आती है और न ही नींद,

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا

उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो

الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश करे, वह जानता है जो कुछ उनके

اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ

आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वे किसी चीज़ को जान नहीं सकते उसके

عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ

इल्म में से मगर जो वह चाहे, उसकी हकूमत छाई हुई है आसमानों

وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

औ ज़मीन पर, और उस पर भारी नहीं है ज़मीन व आसमान की हिफ़ाज़त करना, और वही है बुलन्द मर्तबे वाला,

الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙۗ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

अज़्मतों वाला (255) दीन के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं, हिदायत अलग हो चुकी है

مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

गुमराही से, पस जिस शख़्स ने शैतान का इनकार किया और अल्लाह पर ईमान लाया

فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ

उसने मज़बूत हल्क़ा पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं,

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (256) अल्लाह दोस्त है ईमान वालों का,

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

वह उनको अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ़ लाता है, और जिन लोगों ने इनकार किया

اَوْلِيٰٓـئُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

उनके दोस्त शैतान हैं जो उनको उजाले से निकाल कर

اِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं, ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ

हमेशा रहेंगे (257) क्या तुमने उसको नहीं देखा जिसने इब्राहीम (अलै०) से बहस की उनके रब के बारे

رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ

में इस वजह से कि अल्लाह ने उनको सलतनत दी थी, जब इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि मेरा रब

الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۗ

वह है जो ज़िंदा करता है और मारता है, उसने कहा कि मैं भी जिंदा करता हूँ और मारता हूँ,

قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ

इब्राहीम (अलै०) ने कहा: अल्लाह सूरज को मशरिक़ से निकालता है,

فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ

तू उसको मग़रिब से निकाल दे, तब वह मुनकिर ला जवाब हो गया, और अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ﴿۲۵۸﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ

ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता (258) या जैसे वह शख़्स जिसका गुज़र

عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى

एक ऐसी बस्ती पर से हुआ जो अपनी छतों के बल गिरी पड़ी थी, उसने कहा: अल्लाह किस तरह

يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ

इस बस्ती को हलाक हो जाने के बाद दुबारा ज़िंदा करेगा? पस अल्लाह ने सौ (100) बरस तक

عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ

के लिए उसे मौत दे दी फिर उसको ज़िंदा किया, अल्लाह ने पूछा: तुम कितनी देर इस हालत में रहे? उसने कहा:

يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ

एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, अल्लाह ने कहा: नहीं; बल्कि तुम सौ (100) बरस रहे हो,

فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ

अब तुम अपने खाने और पीने की चीज़ों को देखो कि वह सड़ी नहीं हैं और ज़रा देखो

اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى

अपने गधे को, और ताकि हम तुमको लोगों के लिए निशानी बनादें, और हड्डियों को भी

الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ

देखो कि किस तरह हम उनका ढाँचा खड़ा करते हैं फिर उनपर गोश्त चढ़ाते हैं,

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

पस जब उस पर वाज़ेह हो गया तो कहने लगा: मैं जानता हूँ कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर

قَدِيْرٌ ﴿۲۵۹﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ

क़ुदरत रखता है (259) और जब इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरे (प्यारे) रब! मुझको दिखाईए कि आप किस तरह

الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ

मुर्दों को जिंदा फ़रमाएंगे? अल्लाह ने कहा: क्या तुम यक़ीन नहीं रखते? इब्राहीम ने कहा: क्यों नहीं, मगर सिर्फ़

لِّيَطْمَىِٕنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ

इस लिए कि मेरे दिल को इतमीनान हो जाए, फ़रमाया कि तुम चार परिंदे लो

فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ

और उनको अपने से मानूस करलो, फिर उनमें से हर एक के कुछ हिस्से को अलग

مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ

अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उनको बुलाओ, वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे, और जान लो कि

اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾ ع مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है (260) जो लोग अपने माल

اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ

अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिससे

سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ

सात बालियाँ पैदा हों, हर बाली में सौ (100) दाने हों, और अल्लाह बढ़ाता है

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

जिसके लिए चाहता है, और अल्लाह वुसअ़त वाला है, जानने वाला है (261) जो लोग अपने माल

اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا

अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद

مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ

न एहसान रखते हैं और न तकलीफ़ पहुँचाते हैं, उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र है, और उनके लिए

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ

ना कोई डर है और ना वे ग़मगीन होंगे (262) मुनासिब बात कह देना

وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ وَاللّٰهُ

और दरगुज़र करना उस सदक़े से बेहतर है जिस के बाद सताना हो, और अल्लाह

غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

बे नियाज़ है, बुर्दबार है (263) ऐ ईमान वालो! एहसान रख कर और सता कर

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ

अपने सदक़े को ज़ाऐ ना करो, उस इंसान की तरह जो अपना माल

ع ٣٥ ٣

احتياط

منزل ١

مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

दिखावे के लिए ख़र्च करता है और अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता,

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ

पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उसपर

وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا

ज़ोर की बारिश पड़े और उसको बिल्कुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ

كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾ وَمَثَلُ

न लगेगी, और अल्लाह मुनकिर लोगों को राह नहीं दिखाता (264) और उन लोगों की मिसाल

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ

जो अपने मालों को अल्लाह की रिज़ा के लिए

وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا

और अपने आप में मज़बूती के लिए ख़र्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो कि उस पर ज़ोर की बारिश

وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا

पड़े तो वह दो गुना फल दे, और अगर बारिश ज़ोर की

وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾ اَيَوَدُّ

न पड़े तो हलकी फुवार भी काफ़ी है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (265)

اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ

क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो,

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ

उसके नीचे से नहरें बह रही हों, उसमें उसके लिए हर क़िस्म के

الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ

फल हों, और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमज़ोर हों,

فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ

तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो पस वह बाग़ जल जाए, इस तरह

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ ع

अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियाँ बयान करता है; ताकि तुम ग़ौर करो (266)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ

ऐ ईमान वालो! ख़र्च करो उम्दा चीज़ों को अपनी कमाई में से

وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا

और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा किया है, और ख़राब चीज़ का

الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ

इरादा न करो कि उस में ख़र्च करो; हालाँकि तुम कभी उसको लेने वाले नहीं मगर यह कि

تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾

तुम उससे आँखें फेर लो, और जान लो कि अल्लाह बे-नियाज़ है, ख़ूबियों वाला है (267)

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ

शैतान तुमको मोहताजी से डराता है और बुरी बात की तलक़ीन करता है

وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह तुमसे वादा करता है अपनी बख़्शिश का और फ़ज़्ल का, और अल्लाह

وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾ ۙۖ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ

वुसअ़त वाला है, जानने वाला है (268) वह जिसको चाहता है हिकमत दे देता है और जिसको

يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ

हिकमत मिली उसको यक़ीनन बहुत बड़ी दौलत मिल गई,

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾ وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ

और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं (269) और जो कुछ तुम ख़र्च

مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ

करते हो या जो मन्नत तुम मानते हो उसको अल्लाह

يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾ اِنْ تُبْدُوا

जानता है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (270) अगर तुम अपने

الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا

सदक़ात ज़ाहिर करके दो तब भी अच्छा है, और अगर तुम उन्हें छुपाकर

الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ

मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को

سَيِّاٰتِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

दूर कर देगा, और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाक़िफ़ है (271) उनको हिदायत पर लाना

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ

आप के ज़िम्मे नहीं; बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है उसको हिदायत देता है,

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْنَ

और जो माल तुम ख़र्च करोगे अपने ही लिए करोगे, और तुम न ख़र्च करो

اِلَّا ابْتِغَاۗءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ

मगर अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए, और तुम जो माल ख़र्च करोगे वह तुमको पूरा

اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَاۗءِ الَّذِيْنَ

दे दिया जाएगा, और तुम्हारे लिए उसमें कमी न की जाएगी (272) सदक़ात उन हाजतमंदों के लिए हैं

اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي

जो अल्लाह की राह में घिर गए हों, ज़मीन में दौड़ धूप नहीं

الْاَرْضِ ۡ يَحْسَبُھُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَاۗءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ

कर सकते, नावाक़िफ़ आदमी उनको मालदार ख़्याल करता है उनके न मांगने की वजह से,

تَعْرِفُھُمْ بِسِيْمٰھُمْ ۚ لَا يَسْــَٔــلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۭ

तुम उनको उनकी सूरत से पहचान सकते हो, वे लोगों से चिमट चिमट कर नहीं मांगते,

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾ ع

और जो कुछ माल तुम ख़र्च करोगे अल्लाह उसे ख़ूब जानने वाला है (273)

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَھُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا

जो लोग अपने मालों को रात और दिन में, छुप छुपा कर

وَّعَلَانِيَةً فَلَھُمْ اَجْرُھُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ

और खुलेआम ख़र्च करते हैं उनके लिए उनके रब के पास अज्र है, और उनपर

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾ اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ

न कोई ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे (274) जो लोग सूद खाते हैं

الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ

वे (क़ियामत में) न उठेंगे मगर उस शख़्स की मानिंद जिसको शैतान ने छूकर

منزل ١

ع ٣٧ الربع

وقف منزل

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا

पागल बना दिया हो, यह इस लिए कि उन्होंने कहा कि

الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ

तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना; हालाँकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हराम किया है,

فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا

फिर जिस शख़्स के पास उसके रब की तरफ़ से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया तो जो कुछ वह ले चुका

سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

वह उसके लिए है, और उसका मामला अल्लाह के हवाले है, और जो शख़्स फिर वही करे तो वही लोग

النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا

दोज़ख़ी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे (275) अल्लाह सूद को घटाता है

وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

और सदक़ात को बढ़ाता है, और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनहगारों को (276)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए और नमाज़ की पाबंदी की

وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ

और ज़कात अदा की, उनके लिए उनका अज्र है उनके रब के पास, उनके लिए

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे (277) ऐ ईमान वालो!

اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ

अल्लाह से डरो और जो सूद बाक़ी रह गया है उसको छोड़ दो, अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ

मोमिन हो (278) अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से

اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ

लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ, और अगर तुम तौबा कर लो तो असल रक़म के तुम हक़दार हो,

لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

न तुम किसी पर ज़ुल्म करो और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए (279) और अगर कोई शख़्स

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ

तंगी में है तो उसकी आसानी तक मोहलत दो, और अगर मुआफ़ कर दो तो यह तुम्हारे लिए

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ

ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम जानते हो (280) और उस दिन से डरो जिस दिन तुम

فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ

अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ पूरा पूरा मिल जाएगा,

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

और उन पर ज़ुल्म न होगा (281) ऐ ईमान वालो! जब तुम

تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ

किसी मुक़र्ररह मुद्दत के लिए उधार का लेन देन करो तो उसको लिख लिया करो,

وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ

और उसको लिखे तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला इंसाफ़ के साथ, और लिखने वाला लिखने से

اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ

इनकार न करे, जैसा अल्लाह ने उसको सिखाया उसी तरह उसको चाहिए कि लिख दे, और वह शख़्स लिखवाए

الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ

जिस पर हक़ आता है, और वह डरे अल्लाह से जो उसका रब है और उसमें

مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا

कोई कमी न करे, फिर अगर वह शख़्स जिस पर हक़ निकलता है ना समझ हो

اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

या कमज़ोर हो या ख़ुद लिखवाने की क़ुदरत न रखता हो तो चाहिए कि उसका ज़िम्मेदार

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ

इंसाफ़ के साथ लिखवा दे, और अपने मर्दों में से दो आदमियों को

رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ

गवाह कर लो, और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें हों

مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا

उन लोगों में से जिनको तुम पसंद करते हो गवाहों में से; ताकि अगर एक औरत भूल जाए

فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ

तो उनमें की एक औरत दूसरी को याद दिला दे, और गवाह इनकार न करे

اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ

जब वह बुलाए जाएं, और मामले की मुद्दत लिखने में सुस्ती न करो चाहे वह छोटा हो या

كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ

बड़ा, यह लिख लेना अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ़ का तरीक़ा है और गवाही को

لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً

ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है, और ज़्यादा क़रीब है इसके कि तुम शुब्हे में न पड़ जाओ, लेकिन अगर कोई सौदा

حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

हाथों हाथ हो जिसका तुम आपस में लेन देन किया करते हो तो तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं

اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْۤا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ

कि तुम उसको न लिखो, मगर जब यह सौदा करो तो गवाह बना लिया करो, और किसी लिखने वाले को

كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ۬ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ

या गवाह को तकलीफ़ न पहुँचाई जाए, और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की

بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ

बात होगी, और अल्लाह से डरो, अल्लाह तुमको सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का

شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا

जानने वाला है (282) और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला

كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ

न पाओ तो रहन रखने की चीज़ें क़ब्ज़े में दे दी जाऐं, और अगर एक दूसरे का

بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ

ऐतबार करते हो तो चाहिए कि जिस पर ऐतबार किया गया वह अमानत को अदा कर दे और अल्लाह से डरे

اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا

जो उसका रब है, और गवाही को न छुपाओ, और जो शख़्स गवाही छुपाएगा

فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ ع

उसका दिल गुनाहगार होगा, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको जानने वाला है (283)

منزل ١

ع ٣٩ / ٢ / ٧

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا

अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है, तुम अपने दिल की

مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ

बातों को ज़ाहिर करो या छुपाओ अल्लाह तुमसे उनका हिसाब लेगा,

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

फिर जिसको चाहेगा बख़्शेगा और जिसको चाहेगा सज़ा देगा, और अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ

हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है (284) रसूल ईमान लाए हैं उस पर जो उनके

اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

रब की तरफ़ से उन पर उतरा है और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं, सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में से

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ

किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और वह कहते हैं कि हमने सुना और फ़रमाँबरदारी की, हम आप की बख़्शिश चाहते हैं,

رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا

और ऐ हमारे (प्यारे) रब! लौटना तो आप ही की तरफ़ है (285) अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी नहीं डालता

وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ

मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़ ही, उसको मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया,

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

ऐ हमारे (प्यारे) परवरदिगार! हमें न पकड़ें अगर हम भूल जाएं या ग़लती कर जाएं, ऐ हमारे रब!

وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

हम पर बोझ न डालिए जिस तरह आपने बोझ डाला था हमसे अगले

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ

लोगों पर, ऐ हमारे (प्यारे) रब! हम से वह न उठवाइए जिस की ताक़त हमको नहीं है,

وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة اَنْتَ مَوْلٰىنَا

और दरगुज़र फ़रमाइए हमसे, और हमको बख़्शा दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए, आप ही हमारे कारसाज़ हैं,

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

पस इनकार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कीजिए (286)

सूरह आले-इमरान मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (200) आयतें और (20) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (89) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (3) नम्बर पर है और सूरह अनफ़ाल के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3480) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (14520) हुरूफ़ हैं

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ

अलिफ़-लाम-मीम (1) अल्लाह वह है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िंदा और सब का थामने वाला है (2) उसने तुम पर

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ

किताब उतारी हक़ के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज़ को जो उसके आगे है

وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى

और उसने तौरात और इनजील उतारी (3) इससे पहले लोगों की

لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۬ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ

हिदायत के लिए और अल्लाह ही ने यह फ़र्क़ करने वाली किताब उतारी, बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का

اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤﴾

इनकार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है (4)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي

बेशक अल्लाह से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, न ज़मीन में और न

السَّمَآءِ ﴿٥﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ

आसमान में (5) वही है जो तुम्हारी सूरत बनाता है माँ के पेट में जिस तरह

يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦﴾ هُوَ

चाहता है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (6) वही है

الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ

जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी, उसमें बअज़ आयतें साफ़-साफ़ हैं,

هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

वह किताब की असल हैं, और दूसरी आयतें "मु-तशाबेह" हैं, पस जिनके

فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ

दिलों में टेढ़ापन है वह मु-तशाबेह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं, फ़ितने की

الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا

ग़र्ज़ से और उसके मतलब की तलाश में; हालाँकि उनका मतलब कोई नहीं जानता

اللّٰهُ ؔ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ

अल्लाह के सिवा, और जो लोग पुख़्ता इल्म वाले हैं वह कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए,

كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٧

सब हमारे रब की तरफ़ से है, और नसीहत वही लोग क़ुबूल करते हैं जो अक़्ल वाले हैं (7)

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ

ऐ हमारे (प्यारे) रब! हमारे दिलों को न फेरिए जबकि आप हमको हिदायत दे चुके, और हमको

لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٨

अपने पास से रहमत दीजिए, बेशक आप ही सब कुछ देने वाले हैं (8)

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ

ऐ हमारे रब (प्यारे) परवरदिगार! आप जमा करने वाले हैं लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुब्हा नहीं,

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٩ ع اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता (9) बेशक जिन लोगों ने इनकार किया,

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ भी

شَيْـًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝١٠ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ

काम न आएंगे, और यही लोग आग का ईंधन होंगे (10) उनका अंजाम वैसा ही होगा

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

जैसा फ़िरऔन वालों का और उनसे पहले वालों का हुआ, उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया,

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝١١

उस पर अल्लाह ने उनके गुनाहों के बाइस उनको पकड़ लिया, और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है (11)

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى

इनकार करने वालों से कह दीजिए कि बहुत जल्द तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ़ जमा करके

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

وقف لازم

وقف منزل

منزل ١

ع ٩

جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ⑫ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ

ले जाए जाओगे, और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है (12) बेशक तुम्हारे लिए निशानी है

فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۭ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

उन दो गिरोहों में जिनका (बदर में) आमना सामना हुआ, एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था,

وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ۭ

और दूसरा मुनकिर था, ये मुनकिर खुली आँखों से उन ईमान वालों को दोगुना देख रहे थे,

وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी मदद के ज़रिए ताक़त दे देता है, बेशक उसमें

لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ⑬ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ

आँखों वालों के लिए बड़ा सबक़ है (13) लोगों के लिए ख़ुशनुमा करदी गई है

الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَاۗءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ

ख़्वाहिशों की महब्बत, औरतें और बेटे, सोने

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ

और चाँदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े,

وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۭ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

और जानवर और खेती, ये सब दुनियावी ज़िंदगी के सामान हैं,

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ⑭ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ

और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है (14) (ऐ नबी) कह दीजिए कि क्या में तुमको बताऊँ

بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۭ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ

उससे बेहतर चीज़, उन लोगों के लिए जो डरते हैं उनके रब के पास

جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे,

وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ

और साफ़ सुथरी बीवियाँ होंगी और अल्लाह की रिज़ामंदी होगी, और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ⑮ ۚ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا

अपने बंदों को ख़ूब देखने वाला है (15) जो कहते हैं: ऐ हमारे परवरदिगार! हम यक़ीनन ईमान ले आए,

منزل ١

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ

पस आप हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिए और हमें आग के अज़ाब से बचा लीजिए (16) वे सब्र करने वाले हैं

وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ

और सच्चे हैं, फ़रमाँबरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और रात के अख़ीर हिस्से में

بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

मग़्फ़िरत मांगने वाले हैं (17) अल्लाह की गवाही है और फ़रिश्तों की और अहले-इल्म की

وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह क़ायम रखने वाला है इंसाफ़ का, उसके सिवा कोई

هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

माबूद नहीं, वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (18) (क़ाबिले-क़ुबूल) दीन तो अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है,

وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

और अहले-किताब ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर बाद इसके कि

مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَّكْفُرْ

उनको सही इल्म पहुँच चुका था आपस की ज़िद की वजह से, और जो कोई इनकार करे

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ

अल्लाह की आयतों का तो अल्लाह यक़ीनन जल्द हिसाब लेने वाला है (19) फिर अगर

حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ

वे आपसे झगड़ें तो कह दें कि में तो अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ कर चुका और जो मेरे पैरू हैं वे भी,

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ

और अहले-किताब से और अनपढ़ों से पूछिए कि क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो,

فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

पस अगर वे इस्लाम ले आएं तो उन्होंने राह पाली, और अगर वे फिर जाएं तो आपके ज़िम्मे

عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ اِنَّ

सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह अपने बंदों को ख़ूब देखने वाला है (20) बेशक

الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

जो लोग अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हैं और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल

النصف

منزل ١

ع ٩

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ

करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसाफ़ की दावत

مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢١﴾ اُولٰٓئِكَ

लेकर उठते हैं, तो आप उनको एक दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी दे दें (21) यही वे लोग हैं

الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا

जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में ज़ाया हो गए और उनका

لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا

कोई मददगार नहीं (22) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को अल्लाह की किताब का

نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ

एक हिस्सा दिया गया था, उनको अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जा रहा है ताकि वे उनके दरमियान

بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

फ़ैसला करे, फिर उनमें का एक गिरोह मुहँ फेर लेता है बे-रुख़ी करते हुए (23)

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا

ये इस लिए है कि उनका कहना है कि हमको हरगिज़ आग न छुएगी मगर गिनती के

مَّعْدُوْدٰتٍ ۠ وَّغَرَّهُمْ فِىْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا

चंद दिन, और उनकी बनाई हुई बातों ने उनको उनके दीन के बारे में

يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ

धोके में डाल रखा है (24) फिर उस वक़्त क्या होगा जब हम उनको जमा करेंगे उस दिन जिसके आने में

فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ

कोई शक नहीं, और हर शख़्स को जो कुछ उसने किया है उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और उन पर

لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ

ज़ुल्म न किया जाएगा (25) (ऐ नबी) आप कहिए कि ऐ अल्लाह! आप सलतनत के मालिक हैं, आप जिसे चाहें सलतनत

مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۡ وَتُعِزُّ

से नवाज़ें और जिससे चाहें सलतनत छीन लें, और आप जिसे चाहें

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ

इज़्ज़त दें और जिसे चाहें ज़लील कर दें, आप ही के हाथ में हैं सब भलाई, बेशक आप

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ

हर चीज़ पर क़ादिर हैं (26) आप ही रात को दिन में दाख़िल करते हैं

وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ

और दिन को रात में दाख़िल करते हैं, और आप ही बे-जान से जानदार को पैदा करते हैं

وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ

और जानदार से बे-जान को निकालते हैं, और आप जिसे चाहते हैं

بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ

बे-हिसाब रिज़्क़ अता फ़रमाते हैं (27) मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर

اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ج وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

काफ़िरों को दोस्त न बनाएं, और जो शख़्स ऐसा करेगा

فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ

तो अल्लाह से उसका कोई ताल्लुक़ नहीं, मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव

تُقٰىةً ط وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾

करना चाहो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है (28)

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ

(ऐ नबी) कह दें कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसको छुपाए रखो या ज़ाहिर कर दो अल्लाह उसको

اللّٰهُ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط

जानता है, और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (29) जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई

مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ

नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी

سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًاۢ بَعِيْدًا ط

उसको भी, उस दिन हर शख़्स यह तमन्ना करेगा कि काश! अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता,

وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ ع

और अल्लाह तुमको डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत मेहरबान है (30)

منزل ١ معانقة ع ٣

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ

(ऐ नबी) कहिए कि अगर तुम अल्लाह से महब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह भी

اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

तुमसे महब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा मुआफ़ करने वाला है, बड़ा मेहरबान है (31)

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

कह दें कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की, फिर अगर वे मुहँ फेर लें तो अल्लाह भी

لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ

काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता (32) बेशक अल्लाह ने आदम (अलै०) को

وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ ۙ

और नूह को और आले-इब्राहीम (अलै०) को और आले-इमरान को पूरी दुनिया के ऊपर मुंतख़ब कर लिया है (33)

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ ۚ

ये सब एक दूसरे की औलाद हैं, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (34)

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ

जब इमरान की बीवी ने कहा: ऐ मेरे रब! मैंने मन्नत मानी आपके लिए

مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

कि जो औलाद मेरे पेट में है उसे आज़ाद रखा जाएगा, पस आप मेरी जानिब से क़ुबूल फ़रमालें, बेशक आप

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ

सुनने वाले, जानने वाले हैं (35) फिर जब उसने जना तो उसने कहा: ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ

मैंने तो लड़की को जन्म दिया है, और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्म दिया है,

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ

और यह कि लड़का नहीं होता है लड़की के मानिंद, और मैंने उसका नाम “मरयम” रखा है और मैं उसको

اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से आपकी पनाह में देती हूँ (36)

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا

पस उसके रब ने उसको अच्छी तरह से क़ुबूल किया और उसको उम्दा तरीक़े से

حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

परवान चढ़ाया और ज़करिया (अलै०) को उसका सरपरस्त बना दिया, जब कभी ज़करिया (अलै०)

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى

उसके पास इबादत गाह में आते तो उसके पास रिज़्क़ मौजूद पाते, उन्होंने पूछा कि ऐ मरयम! ये सब चीज़ें

لَكِ هٰذَا ۭ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ

तुम्हें कहाँ से मिलती है? मरयम ने कहाः ये अल्लाह के पास से आती हैं, बेशक अल्लाह जिसको चाहता है

مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۳۷ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا

बे-हिसाब रिज़्क़ दे देता है (37) उस वक़्त ज़करिया (अलै०) ने अपने

رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

परवरदिगार से दुआ मांगी, उन्होंने कहाः ऐ मेरे (प्यारे) रब! मुझे अपने पास से पाकीज़ा

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝۳۸ فَنَادَتْهُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ

औलाद अता फ़रमाइए, बेशक आप ही दुआओं को सुनने वाले हैं (38) फिर फ़रिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी

وَھُوَ قَاۗىِٕمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ

जबकि वह कमरे में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तुम्हें यह्या की ख़ुशख़बरी

بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا

देते हैं, जो अल्लाह के कलिमे की तस्दीक़ करने वाले होंगे और सरदार होंगे और अपने नफ़्स को रोकने वाले होंगे

وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝۳۹ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ

और नबी होंगे नेक लोगों में से (39) ज़करिया (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे लड़का

لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ

कैसे होगा हालाँकि मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी बीवी बाँझ है,

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۝۴۰ قَالَ رَبِّ

(अल्लाह ने) फ़रमाया कि इसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है (40) ज़करिया (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे रब!

اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमादें, (अल्लाह ने) फ़रमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक

ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا

लोगों से बात नहीं कर सकोगे मगर इशारे से, और अपने रब को कसरत से याद करते रहो

منزل ۱

وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ

और सुबह व शाम उसी की तस्बीह करो (41) और (उस वक़्त को याद करें) जब फ़रिश्तों ने कहा:

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ

ऐ मरयम! अल्लाह ने तुम्हें चुन लिया और तुमको पाक किया और तुमको दुनिया भर की औरतों के मुक़ाबले

عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ

मुन्तख़ब कर लिया है (42) ऐ मरयम! अपने रब की फ़रमाँबरदारी करो

وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ

और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो (43) यह ग़ैब की

اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ

बातें हैं जो हम तुमको वह्य के ज़रिए बता रहे हैं, और तुम उनके पास मौजूद न थे

اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪

जब वे अपने (नाम पेश करने के लिए) क़लम डाल रहे थे कि कौन मरयम की सरपरस्ती करेगा,

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ

और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जब वे आपस में बहस कर रहे थे (44) जब फ़रिश्तों ने

الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۙ

कहा: ऐ मरयम! अल्लाह तुम्हें ख़ुशख़बरी देते हैं अपनी तरफ़ से एक कलिमे की,

اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي

उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा, वह दुनिया और आख़िरत में

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ

मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के क़रीबी बंदों में से होगा (45) वह लोगों से

النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

बातें करेगा जब झूले में होगा और जब पूरी उमर का होगा, और वह नेक बंदों में से होगा (46)

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ

मरयम ने कहा: ऐ मेरे (प्यारे) रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जबकि किसी मर्द ने मुझे

بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰى

हाथ तक नहीं लगाया है, (अल्लाह ने फ़रमाया) इसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है, जब वह किसी काम का

ع ١٢ منزل ١

اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾ وَيُعَلِّمُهُ

फ़ैस्ला कर लेता है तो उसको कहता है होजा पस वह हो जाता है (47) और अल्लाह उसको

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا

किताब और हिकमत और तौरात और इन्जील सिखाएगा (48) और वे रसूल होंगे

اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ

बनी इस्राईल की तरफ़ कि मैं तुम्हारे पास निशानी लेकर

مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ

आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे जैसी

الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ

सूरत बनाता हूँ फिर उसमें फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से सचमुच का परिंदा बन जाता है,

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ

और मैं अल्लाह के हुक्म से पैदाइशी अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ और अल्लाह ही के हुक्म से मुर्दे को

اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ

ज़िंदा करता हूँ, और मैं तुमको बताता हूँ कि तुम क्या खाते और क्या जमा करके रखते हो

بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

अपने घरों में, बेशक इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ

ईमान रखते हो (49) और मैं तस्दीक़ करने वाला हूँ मुझसे पहले आने वाली किताब

التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

तौरात की, और ताकि उन बअज चीज़ों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊँ जो तुम पर हराम कर दी गई हैं,

وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ, पस तुम अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا

और मेरी इताअ़त करो (50) बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी, पस उसी की इबादत करो, यही

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ

सीधी राह है (51) फिर जब ईसा (अलै०) ने महसूस किया उनकी जानिब से

الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

कुफ़्र को तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता है अल्ला की राह में, हवारियों ने कहा:

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾

हम हैं अल्लाह के मददगार, हम ईमान लाए अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाँबरदार हैं (52)

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए उस पर जो आपने उतारा और हम ने रसूल की पैरवी की, पस आप हमें लिख दें

مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ

गवाही देने वालों में से (53) और उन लौगों ने ख़ुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ने भी (उनके जवाब में) ख़ुफ़िया तदबीर की,

الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ ع اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ

और अल्लाह सबसे बढ़ कर तदबीर करने वाला है (54) जब अल्लाह ने कहा कि ऐ ईसा! मैं तुमको वापस लेने वाला हूँ

الربع

وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और तुम्हें अपनी तरफ़ उठा लेने वाला हूँ और जिन लोगों ने इनकार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूँ

وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

और जो तुम्हारे पैरू हैं उनको क़ियामत तक उन लोगों पर ग़ालिब करने वाला हूँ

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ

जिन्होंने तुम्हारा इनकार किया, फिर मेरी तरफ़ ही होगी तुम सबकी वापसी, पस मैं तुम्हारे दरमियान

بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَاَمَّا

फ़ैसला करुंगा उन चीज़ों के बारे में जिन में तुम झगड़ते थे (55) फिर जो लोग

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى

मुनकिर हुए उनको मैं निहायत सख़्त अज़ाब दूंगा दुनिया में

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَاَمَّا

और आख़िरत में और उनका कोई मददगार ना होगा (56) और जो लोग

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

ईमान लाए और नेक काम किए अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र देगा,

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ

और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता (57) ये हम तुमको पढ़कर सुनाते हैं

مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿۵۸﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى

अपनी आयतें और हिकमत से भरी बातें (58) बेशक ईसा की मिसाल

عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ

अल्लाह के नज़दीक आदम की सी है, अल्लाह ने उनको मिट्टी से बनाया, फिर उनसे

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۵۹﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ

कहा कि हो जाओ तो वे हो गए (59) यह हक़ बात है आपके रब की जानिब से, पस आप न बनें

الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

शक करने वालों में से (60) फिर जो आपसे इस बारे में बहस करे बाद इसके कि आपके पास

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ

इल्म आ चुका है तो उनसे कह दीजिए कि आओ हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को,

وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ

और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को, और हम और तुम ख़ुद भी जमा हो जाएं फिर

نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۱﴾

हम सब रोएं धोएं, और जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत भेजें (61)

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا

बेशक यह सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई

اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۲﴾ فَاِنْ

माबूद नहीं, और अल्लाह ही ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (62) फिर अगर

تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۳﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ

वे मुँह फेर लें तो अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को जानने वाला है (63) (ऐ नबी) कह दीजिए कि

الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ

अहले-किताब आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर है,

اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ

वह यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं, और हम में से कोई

بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا

किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए, फिर अगर वे उससे मुँह मोड़ लें

فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

तो कह दो कि तुम गवाह रहना कि हम फ़रमाँबरदार हैं (64) ऐ अहले-किताब!

لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

तुम इब्राहीम (अलै॰) के बारे में क्यों झगड़ते हो! हालाँकि तौरात

وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾

और इंजील तो उसके बाद ही उतरी हैं, क्या तुम इसको नहीं समझते? (65)

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ

तुम ही वे लोग हो कि तुम उस बात के बारे में झगड़ चुके जिसका तुम्हें कुछ इल्म था,

فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ

पस अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हे कोइ इल्म नहीं,और अल्लाह

يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ

जानता है जबकि तुम नहीं जानते (66) इब्राहीम (अलै॰) न ही यहूदी थे और न ही

يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ

नसरानी; बल्कि वह तो सीधे रास्ते पर चलने वाले, फ़रमाँबरदार थे,

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ

और वह शिर्क करने वालों में से न थे (67) बेशक लोगों में ज़्यादा मुनासिबत इब्राहीम (अलै॰) से

بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ

उन लोगों को है जिन्होंने उनकी पैरवी की और यह पैग़म्बर और जो (उन पर)

اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ

ईमान लाए, और अल्लाह ईमान वालों का साथी है (68) अहले-किताब में से

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ

एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम को गुमराह कर दे; हालाँकि वे नहीं गुमराह करते मगर ख़ुद

اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ

अपने आपको, मगर वे इसका एहसास नहीं करते (69) ऐ अहले-किताब! तुम अल्लाह की निशानियों का

تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ

क्यों इनकार करते हो; हालाँकि तुम गवाह हो (70) ऐ अहले-किताब!

الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ

को हक़ और हो मिलाते को ग़लत में सही क्यों तुम

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ

ने गिरोह एक के किताब अहले और (71) हो जानते तुम हालाँकि हो; छुपाते

الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ

सवेरे सुबह पर उस है गई उतारी चीज़ जो पर मुसलमानों कि कहा

النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا

ईमान ले आओ और शाम को उसका इनकार कर दो, शायद कि मुसलमान भी उससे फिर जाएं (72) और यक़ीन न करो

اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ

मगर सिर्फ़ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर, कह दीजिए कि हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे,

اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ

और यह उसी की दैन है कि किसको वही कुछ दे दिया जाए जो तुम को दिया गया था, या वह तुमसे

عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ

तुम्हारे रब के यहाँ हुज्जत करे, कह दें कि बड़ाई अल्लाह के हाथ में है, वह जिसको चाहता है

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ

देता है, और अल्लाह बड़ा वुसअत वाला है, इल्म वाला है (73) वह जिसको चाहता है अपनी रहमत के लिए

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है (74) और अहले-किताब में

مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ

कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसको तुम्हें अदा कर दे, और उनमें कोई

اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ

ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुम को अदा न करे, मगर यह कि तुम

عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي

उसके सर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वह कहते हैं कि ग़ैर अहले-किताब के

الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

बारे में हम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और वह अल्लाह के ऊपर झूट लगाते हैं; हालाँकि वे

ع ٧/٨ ١٥ منزل ١

يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

जानते हैं (75) पकड़ क्यों न हो, जो शख़्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह

يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

ऐसे परहेज़गारों को दोस्त रखता है (76) जो लोग अल्लाह के अहद को

وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى

और अपनी क़स्मों को थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं उनके लिए आख़िरत में

الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ

कोई हिस्सा नहीं, और अल्लाह न उनसे बात करेगा न ही उनकी जानिब देखेगा क़ियामत के

الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَاِنَّ

दिन और न उनको पाक करेगा, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (77) और उनमें

مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी ज़ुबानों को किताब पढ़ते वक़्त मोड़ते हैं ताकि तुम उसको किताब

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ

में से समझो; हालाँकि वह किताब में से नहीं, और वे कहते है कि यह भी

عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह की जानिब से है; हालाँकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं, और वे जान बूझ कर

الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ

अल्लाह पर झूठ बोलते हैं (78) किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसको

اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ

किताब और हिकमत और नुबुव्वत दे, फिर वह लोगों से यह कहे कि तुम

كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ

अल्लाह को छोड़ कर मेरे बंदे बन जाओ; बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो,

بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ ۙ

इस वास्ते कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और ख़ुद भी उसको पढ़ते हो। (79)

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ

और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को रब बनाओ,

اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَاِذْ

क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो (80) और जब

اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ

अल्लाह ने पैग़म्बरों से अहद लिया कि जो कुछ मैंने तुमको किताब

وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ

और हिकमत दी, फिर तुम्हारे पास पैग़म्बर आए जो सच्चा साबित करे उन (पेशीन गोइयों) को जो तुम्हारे पास हैं

لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ

तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे, अल्लाह ने कहा: क्या तुमने इक़रार किया और उस पर

عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِىْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا

मेरा अहद क़ुबूल किया? उन्होंने कहा: हम इक़रार करते हैं, फ़रमाया: अब गवाह रहो

وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ

और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ (81) पस जो शख़्स उसके बाद

ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ

फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं (82) क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा

يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

कोई और दीन चाहते हैं; हालाँकि उसी के हुक्म में है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है,

طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ

ख़ुशी से या नाख़ुशी से, और सब उसी की तरफ़ लौटाए जाएंगे (83) (ऐ नबी) आप कह दें कि हम अल्लाह पर ईमान लाए

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ

और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया, और जो उतारा गया इब्राहीम और इसमाईल (अलै॰) पर,

وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى

और इसहाक़ व याक़ूब पर और औलादे-याक़ूब (अलै॰) पर, और जो दिया गया मूसा

وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

और ईसा (अलै॰) और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ़ से, हम उनके दरमियान

اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ

फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी के फ़रमाँबरदार हैं (84) और जो शख़्स

غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي
इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा, और वह
الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا
आख़िरत में नामुरादों में से होगा (85) अल्लाह क्योंकर ऐसे लोगों को हिदायत देगा
كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ
जो ईमान लाने के बाद मुनकिर हो गए; हालाँकि वह गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक़ है
وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾
और उनके पास रोशन निशानियाँ आ चुकी हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता (86)
اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُھُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ
ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उन पर अल्लाह की और उसके फ़रिश्तों की
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْھُمُ
और सारे इंसानों की लानत होगी (87) वह उसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अज़ाब
الْعَذَابُ وَلَا ھُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ
हल्का किया जाएगा और ना ही उनको मोहलत दी जाएगी (88) अलबत्ता जो लोग उसके
بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ
बाद करलें और अपनी इस्लाह करलें तौबा तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (89) बेशक
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا
जो लोग ईमान लाने के बाद मुनकिर हो गए फिर कुफ़्र में बढ़ते रहे
لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُھُمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الضَّاۗلُّوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّ
उनकी तौबा हरगिज़ क़ुबूल न की जाएगी, और यही लोग गुमराह हैं (90) बेशक
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَھُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ
जिन लोगों ने इनकार किया और इनकार की हालत में मर गए, अगर वे ज़मीन भर कर
اَحَدِھِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ
सोना भी फ़िदया में दें तो क़ुबूल न किया जाएगा,
اُولٰۗىِٕكَ لَھُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَھُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع
और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है, और उनका कोई मददगार न होगा (91)

منزل ١

ع ٩ / ١٧

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ

तुम हरगिज़ नेकी के मर्तबे को नहीं पहुँच सकते जब तक तुम उन चीज़ों में से ख़र्च न करो जिनको तुम महबूब रखते हो,

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ

और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे उससे अल्लाह बाख़बर है (92) सब खाने की

الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ

चीज़ें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए इसके जो इस्राईल ने

اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ

अपने ऊपर हराम कर लिया था क़ब्ल उसके कि तौरात उतरे,

قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾

(ऐ नबी) आप कह दें कि तौरात लाओ और उसको पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो (93)

فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

पस उसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधें

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۗ

वही ज़ालिम हैं (94) आप कह दीजिए: अल्लाह ने तो सच कहा,

فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ

अब इब्राहीम (अलै०) के दीन की पैरवी करो जो सीधे रास्ते पर चलने वाले थे और वह

الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ

शिर्क करने वालों में से न थे (95) बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया था वह वही है

بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ۚ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ

जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हिदायत का मरकज़ है (96) उसमें खुली हुई

بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ

निशानियाँ हैं, मक़ामे-इब्राहीम है, जो उसमें दाख़िल हो जाए वह अमन पा लेगा,

وَلِلّٰهِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ

और लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो उस घर तक पहुँचने की ताक़त रखता हो वह उसका

سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾

हज करे, और जो मुनकिर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज़ है (97)

وقف جبریل علیه السلام

منزل ١

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ

(ऐ नबी) आप कह दीजिए कि ऐ अहले-किताब! तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हो;

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ

हालाँकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो (98) आप कहिए कि ऐ

الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ

अहले-किताब! तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो,

تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

तुम उसमें ऐब ढूँडते हो; हालाँकि तुम गवाह बनाए गए हो, और अल्लाह तुम्हारे कामों से

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا

बेख़बर नहीं (99) ऐ ईमान वालो! अगर तुम

فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ

अहले-किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वह तुमको ईमान लाने के बाद

اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ

फिर मुनकिर बनादेंगे (100) और तुम किस तरह इनकार करोगे; हालाँकि तुम को

تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۭ وَمَنْ

अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दरमियान उसका रसूल मोजूद है, और जो शख़्स

يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع

अल्लाह को मज़बूती से पकड़ेगा तो वह पहुँच गया सीधी राह पर (101)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए,

وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا

और तुमको मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो (102) और सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को

بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ

मज़बूत पकड़ लो और फूट न डालो, और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

याद रखो कि तुम एक दूसरे के दुश्मन थे फिर उसने तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाल दी,

فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ

पस तुम उसके फ़ज़्ल से भाई-भाई बन गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे

مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ

खड़े थे तो अल्लाह ने तुम को उससे बचा लिया, इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए

لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ

अपनी निशानियाँ बयान करता है; ताकि तुम राह पा जाओ (103) और ज़रूरी है कि तुम में से

اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

एक गिरोह ऐसा हो जो नेकी की तरफ़ बुलाए, भलाई का हुक्म दे

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

और बुराई से रोके, और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे (104)

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िरक़ों में बट गए और आपस में इख़्तिलाफ़ कर लिया बाद इसके

مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

कि उनके पास वाज़ेह अहकाम आ चुके थे, और उनके लिए

عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ لا يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ

बड़ा अज़ाब है (105) जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे,

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ

तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा कि क्या तुम अपने ईमान के बाद

اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾

काफ़िर हो गए, तो अब चखो अज़ाब अपने कुफ़्र की वजह से (106)

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ

और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे,

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

वे उसमें हमेशा रहेंगे (107) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको हक़ के साथ

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

सुना रहे हैं, और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता (108)

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही के लिए है, और सारे मामलात

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ

अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे (109) अब तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसको

لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

लोगों की भलाई के वास्ते निकाला गया है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो

وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا

और अल्लाह पर ईमान रखते हो, और अगर अहले-किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए

لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾

बेहतर होता, उनमें से कुछ ईमान वाले हैं और अक्सर नाफ़रमान हैं (110)

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ

वे तुम्हारे कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर कुछ सताना, और अगर वे तुमसे मुक़ाबला करेंगे तो तुमको

الْاَدْبَارَ ۙ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ

पीठ दिखाएंगें, फिर उनको मदद भी न पहुँचेगी (111) वे जहाँ भी पाए जाएं

الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ

उन पर ज़िल्लत का ठप्पा लगा दिया गया है, सिवाए इसके कि अल्लाह की तरफ़ से कोई सबब पैदा हो जाए या इंसानों

مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ

की तरफ़ से कोई ज़रिया निकल आए (जो उनको सहारा दे), अंजामकार वह अल्लाह का ग़ज़ब लेकर लौटे हैं, और उन पर

عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ

मोहताजी मुसल्लत कर दी गई है, उसकी वजह यह है कि वे अल्लाह की आयतों का

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ

इनकार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करते थे, (नीज़) उसकी वजह यह भी है

بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ

कि वे नाफ़रमानी करते थे और सारी हदें फलांग जाया करते थे (112) सब अहले-किताब एक जैसे नहीं,

اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ

उनमें एक गिरोह अहद पर क़ायम है, वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं

ع ۱۲

منزل ۱

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

और सज्दा करते हैं (113) वे अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर

الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

ईमान रखते हैं और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं

وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾

और नेक कामों की तरफ़ लपकते हैं, ये नेक लोग हैं (114)

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

और जो नेकी भी वे करेंगे उसकी नाक़दरी नहीं की जाएगी, और अल्लाह परहेज़गारों को

بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

ख़ूब जानता है (115) बेशक जिन लोगों ने इनकार किया तो अल्लाह के मुक़ाबले में उनके माल

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ

और औलाद उनके कुछ काम न आएंगे, और वे लोग

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا

दोज़ख़ वाले हैं वे उसमें हमेशा रहेंगे (116) वे इस दुनिया की ज़िंदगी में

يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ

जो कुछ ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस तूफ़ानी हवा की सी है

فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

जिसमें सख़्त सरदी हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है,

فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ

फिर वह उसको बरबाद करदे, अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया; बल्कि वह ख़ुद अपनी जानों पर

يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا

ज़ुल्म करते हैं (117) ऐ ईमान वालो! अपने ग़ैर को

بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا

अपना राज़दार न बनाओ, वे तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते, उनको ख़ुशी होती है

مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚۖ

तुम जिस क़दर तकलीफ़ पाओ, उनकी अदावत उनकी ज़ुबानों से निकली पड़ती है,

وَمَا	تُخْفِيْ	صُدُوْرُهُمْ	اَكْبَرُ ط	قَدْ	بَيَّنَّا	لَكُمُ

और जो उनके दिलों में छुपा है वह इससे भी सख़्त है, हमने तुम्हारे लिए

الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾ هٰاَنْتُمْ اُولَاۤءِ

निशानियाँ खोल कर ज़ाहिर कर दी हैं, अगर तुम अक़्ल रखते हो (118) तुम उनसे

تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ

मुहब्बत रखते हो मगर वे तुम से मुहब्बत नहीं रखते; हालाँकि तुम सब आसमानी किताबों को

كُلِّهٖ ج وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا

मानते हो, और जब वे तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए, और जब आपस में मिलते हैं तो तुम पर

عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ط قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ط

ग़ुस्से से उंगलियाँ काटते हैं, आप कह दीजिए कि तुम अपने ग़ुस्से में मर जाओ,

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ

बेशक अल्लाह दिलों की बात को जानता है (119) अगर तुम को कोई

حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ز وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا

अच्छी हालत पेश आती है तो उनको रंज होता है, और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे उससे

بِهَا ط وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ

ख़ुश होते हैं, अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई तदबीर तुम को नुक़सान

شَيْـًٔا ط اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾ ع وَاِذْ غَدَوْتَ

नहीं पहुँचा सकेगी, जो कुछ ये कर रहे हैं वह सब अल्लाह के इहाते में है (120) वह वक़्त याद करें जब आप सुबह

مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ط

के वक़्त अपने घर से निकल कर मुसलमानों को जंग के ठिकानों पर जमा रहे थे,

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾ لا اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ

और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है (121) जब तुम में से दो जमातों ने इरादा किया

اَنْ تَفْشَلَا لا وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ط وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

कि हिम्मत हार दें; हालाँकि अल्ला उन दोनों जमातों का मददगार था, और मुसलमानों को अल्लाह ही पर

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ

भरोसा करना चाहिए (122) और अल्लाह (इससे पहले) तुम्हारी मदद कर चुका है बदर में

وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

जबकि तुम कमज़ोर थे, पस अल्लाह से डरो; ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो (123)

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ

(वह वक़्त भी याद करें) जब आप मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं

رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ ط

कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे (124)

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ

क्यों नहीं, अगर तुम सब्र से काम लो और अल्लाह से डरो, और दुश्मन अचानक तुम पर आ पहुँचे

هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ

तो तुम्हारा परवरदिगार पाँच हज़ार निशान किए हुए फ़रिश्तों के ज़रिए

مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ

तुम्हारी मदद करेगा (125) और यह अल्लाह ने इस लिए किया ताकि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो

وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ

और तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएं, और मदद तो सिर्फ़ अल्लाह ही की

عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ ۙ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ

तरफ़ से है जो ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (126) ताकि अल्लाह काफ़िरों के एक हिस्से को

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾

काट दे या उनको ज़लील कर दे, इस तरह कि वह नाकाम लौट जाएं (127)

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ

तुम्हारा इस बात में कोई दख़ल नहीं कि अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल करे या उनको

يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

अज़ाब दे; क्योंकि वह ज़ालिम हैं (128) और अल्लाह ही के इख़्तियार में है जो कुछ आसमानों में है

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ

और जो कुछ ज़मीन में है, वह जिसको चाहे बख़्श दे और जिसको चाहे

مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

अज़ाब दे, और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (129) ऐ ईमान वालो!

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا

सूद कई गुना बढ़ा चढ़ा कर न खाओ और अल्लाह से

اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ

डरो; ताकि तुम कामयाब हो (130) और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ

तैयार की गई है (131) और अल्लाह और रसूल की इताअत करो; ताकि तुम पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ

रहम किया जाए (132) और दोड़ो अपने रब की बख़्शिश की तरफ़

وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ

और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी वुसअत आसमान और ज़मीन जैसी है, वह तैयार की गई है

لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ

अल्लाह से डरने वालों के लिए (133) जो लोग ख़र्च करते हैं ख़ुशहाली में

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ

और तंगी में, और जो ग़ुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों को मुआफ़ करने

النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِيْنَ

वाले हैं, और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (134) और ऐसे लोग

اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا

कि जब वह कोई खुली बुराई कर बैठें या अपनी जान पर कोई ज़ुल्म कर डालें तो वे अल्लाह को

اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۖ وَمَنْ يَّغْفِرُ

याद करके अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांगें, और अल्लाह के सिवा कौन है

الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا

जो गुनाहों को मुआफ़ करे, और वे जानते बूझते अपने किए पर

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ

इसरार नहीं करते (135) ये लोग हैं कि उनका बदला उनके रब की तरफ़ से

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

मग़्फ़िरत है, और ऐसे बाग़ात हैं जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ

उनमें वे हमेशा रहेंगे, कैसा अच्छा बदला है (नेक) काम करने वालों का (136) तुमसे पहले

خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

बहुत सी मिसालें गुज़र चुकी हैं तो ज़मीन में चल फिर कर

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾ هٰذَا

देखो कि क्या अंजाम हुआ है झुटलाने वालों का (137) यह

بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

बयान है लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है डरने वालों के लिए (138)

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ

हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ

मोमिन हो (139) अगर तुमको कोई ज़ख़्म पहुँचे तो दुश्मन को भी

قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ

वैसा ही ज़ख़्म पहुँचा है, और हम इन दिनों को लोगों के दरमियान बदलते रहते हैं;

وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ

ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुम में से कुछ लोगों को गवाह बनाए,

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ ۙ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता (140) और ताकि अल्लाह ईमान वालों को छांट

اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا

ले और इनकार करने वालों को मिटा दे (141) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि तुम जन्नत में

الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ

दाख़िल हो जाओगे; हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना नहीं जिन्होंने जिहाद किया

وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ

और न उनको जो साबित क़दम रहने वाले हैं (142) और तुम मौत की तमन्ना कर रहे थे

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

उससे मिलने से पहले ही, पस अब तो तुमने उसको खुली आँखों से

تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ

देख ही लिया (143) (प्यारे) मुहम्मद (सल्ल०) तो बस एक रसूल हैं, उनसे पहले भी

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ

रसूल गुज़र चुके हैं, फिर क्या अगर वह वफ़ात पा जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम उलटे पाँव

عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ

फिर जाओगे, और जो शख़्स उलटे पाँव फिर जाए वह अल्लाह का

يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾

कुछ नहीं बिगाड़ेगा, और अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा (144)

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا

और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के, अल्लाह का लिखा हुआ

مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

वायदा है, और जो शख़्स दुनिया का फ़ायदा चाहता है उसको हम दुनिया में से दे देते हैं,

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى

और जो आख़िरत का फ़ायदा चाहता है उसको हम आख़िरत में से देते हैं, और शुक्र करने वालों को हम

الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ

उनका बदला ज़रूर अता करेंगे (145) और कितने नबी हैं जिनके साथ हो कर

رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ

बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की, अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ें

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ

उनसे वे न पस्त हिम्मत हुए और न उन्होंने कमज़ोरी दिखाई और न ही वे दबे, और अल्लाह

يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ

सब्र करने वालों को दोस्त रखता है (146) उनकी ज़ुबान से इसके सिवा कुछ और न निकला

قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ

कि ऐ हमारे (प्यारे) रब! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारे काम में हम से

اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

जो ज़्यादती हुई उसको मुआफ़ फ़रमा दीजिए, और हमें साबित क़दम रखिए और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में

الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ

हमारी मदद फ़रमाइए (147) पस अल्लाह ने उनको दुनिया का बदला भी दिया और आख़िरत का

ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾

अच्छा बदला भी, और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (148)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ऐ ईमान वालो! अगर तुम मुनकिरों की बात मानोगे

يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ

तो वे तुमको उलटे पाँव फैर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे (149) बल्कि

اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾ سَنُلْقِيْ فِيْ

अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है (150) हम मुनकिरों के

قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ

दिलों में (तुम्हारा) रौब डाल देंगे; क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराया

مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

जिसके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी, उनका ठिकाना जहन्नम है,

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ

और वह बहुत बुरी जगह है ज़ालिमों के लिए (151) और अल्लाह न तुमसे अपने वायदे को

وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ

सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उनको अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ख़ुद कमज़ोर पड़ गए

وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ

और तुमने हुक्म को मानने में इख़्तिलाफ़ किया और तुम कहने पर न चले बाद इसके कि अल्लाह ने तुमको

اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا

वह चीज़ दिखा दी थी जो तुम चाहते थे, तुम में से बअज़ दुनिया चाहते थे

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ

और तुम में से बअज़ आख़िरत चाहते थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख़ उनसे फेर दिया

لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ

ताकि तुम्हारी आज़माइश करे, और अल्लाह ने तुमको मुआफ़ कर दिया, और अल्लाह ईमान वालों के हक में

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ

बड़ा फ़ज़्ल वाला है (152) जब तुम चढ़े जा रहे थे और पलट कर भी

عَلٰٓى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ

किसी को न देखते थे और रसूल तुमको तुम्हारे पीछे से पुकार रहे थे,

فَاَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ

फिर अल्लाह ने तुम को ग़म पर ग़म दिया; ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल गई

وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾ ثُمَّ

और न उस मसीबत पर जो तुम पर पड़ी, और अल्लाह बाख़बर है उससे जो कुछ तुम करते हो (153) फिर अल्लाह ने

اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا

तुम्हारे ऊपर ग़म के बाद इतमीनान उतारा यानी ऐसी ऊँघ

يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ

कि उसका तुम में से एक जमात पर ग़लबा हो रहा था और एक जमात वह थी कि उसको अपनी जानों की

اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ

फ़िक्र पड़ी हुई थी, वह अल्लाह के बारे में ख़िलाफ़े-हक़ीक़त ख़्यालात, जाहिलिय्यत के ख़्यालात क़ायम कर रहे थे,

يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ

वे कहते थे: क्या हमारा भी कुछ इख़्तियार है? आप कह दीजिए कि

الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ

सारा मामला अल्लाह के इख़्तियार में है, वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर

لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ

ज़ाहिर नहीं करते, वे कहते हैं कि अगर इस मामले में हमारा भी कुछ दख़ल होता

مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

तो हम यहाँ न मारे जाते, आप कह दीजिए: अगर तुम अपने घरों में होते तब भी

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ

जिन का क़त्ल होना लिखा जा चुका वे अपनी क़त्ल की जगहों की तरफ़ निकल पड़ते,

وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا

यह इस लिए हुआ कि अल्लाह को आज़माना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾

तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानता है सीनों में छुपी हुई बातों को (154)

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

तुम में से जो लोग फिर गए थे उस दिन कि दोनों गिरोहों में मुडभेड़ हुई

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ

उनको शैतान ने उनके बअज़ आमाल के सबब से फिस्ला दिया था,

وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾

अल्लाह ने उनको मुआफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, बड़ा बुर्दबार है (155)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की मानिंद ना हो जाना जिन्होंने इनकार किया,

وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا

वे अपने भाईयों के बारे में कहते हैं जबकि वे सफ़र पर जाते हैं

غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ

या जिहाद में निकलते हैं (और उनको मौत आजाती है) कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते,

لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

ताकि अल्लाह इसको उनके दिलों में हसरत का सबब बनादे, और अल्लाह ही

يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِنْ

ज़िंदगी बख़्शता है और मौत देता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (156) और अगर तुम

قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फ़िरत

وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ

और रहमत उससे बेहतर है जिसको वे जमा कर रहे हैं (157) और अगर तुम मर गए

قُتِلْتُمْ لَاِ۠لَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ

या मारे गए बेहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे (158) यह अल्लाह की बड़ी

اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ

रहमत है कि आप उनके लिए नर्म हैं, अगर आप सख़्त मिज़ाज और सख़्त दिल होते

لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ

तो ये लोग आपके पास से भाग जाते, पस उनको मुआ़फ़ करदें और उनके लिए मग़फ़िरत

لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

माँगें और मामलात में उनसे मशवरा लें, फिर जब फ़ैसला करलें तो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾ اِنْ

भरोसा करें, बेशक अल्लाह उनसे महब्बत करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं (159) अगर

يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ

अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता, और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे

فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे, और अल्लाह ही पर

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ

भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को (160) नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ ख़्यानत करे,

وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى

और जो कोई ख़्यानत करेगा वह अपनी ख़्यानत की हुई चीज़ को क़ियामत के दिन हाज़िर करेगा, फिर हर जान को

كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ

उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ ज़ुल्म न होगा (161) क्या वह शख़्स जो

اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह की मर्ज़ी का ताबे है वह उस शख़्स के मानिंद हो जाएगा जो अल्लाह का ग़ज़ब लेकर लौटा

وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ

और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है (162) अल्लाह के यहाँ उनके दर्जे अलग अलग

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ

होंगे, और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं (163) अल्लाह ने ईमान वालों पर

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

एहसान किया कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा,

يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

जो उनको अल्लाह की आयतें सुनाता है और उनको पाक करता है और उनको किताब

وَالۡحِكۡمَةَ ۚ وَاِنۡ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱۶۴﴾

और हिकमत की तालीम देता है, वरना बेशक वे इससे पहले खुली गुमराही में थे (164)

اَوَ لَمَّاۤ اَصَابَتۡكُمۡ مُّصِيۡبَةٌ قَدۡ اَصَبۡتُمۡ مِّثۡلَيۡهَا ۙ

और जब तुम को ऐसी मुसीबत पहुँचे जिसकी दोगुनी मुसीबत तुम पहुँचा चुके थे

قُلۡتُمۡ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلۡ هُوَ مِنۡ عِنۡدِ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ اِنَّ

तो तुमने कहा कि यह कहाँ से आ गई? आप कह दीजिए कि यह तुम्हारे अपने ही पास से है, बेशक

اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۱۶۵﴾ وَمَاۤ اَصَابَكُمۡ يَوۡمَ

अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (165) और दोनों जमाअ़तों की मुडभेड़ के दिन

الۡتَقَى الۡجَمۡعٰنِ فَبِاِذۡنِ اللّٰهِ وَلِيَعۡلَمَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۶۶﴾ ۙ

तुम को जो मुसीबत पहुँची वह अल्लाह के हुक्म से पहुँची, और इस वास्ते कि अल्लाह ईमान वालों

وَلِيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ نَافَقُوۡا ۖۚ وَقِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا

को जान ले (166) और उनको भी जान ले जो मुनाफ़िक़ थे, जिन से कहा गया कि आओ

قَاتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَوِ ادۡفَعُوۡا ؕ قَالُوۡا لَوۡ نَعۡلَمُ

अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को दफ़ा करो, उन्होंने कहा: अगर हम जानते कि

قِتَالًا لَّاتَّبَعۡنٰكُمۡ ؕ هُمۡ لِلۡكُفۡرِ يَوۡمَئِذٍ اَقۡرَبُ

जंग होनी है तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते, ये लोग उस दिन ईमान के मुक़ाबले कुफ़्र के

مِنۡهُمۡ لِلۡاِيۡمَانِ ۚ يَقُوۡلُوۡنَ بِاَفۡوَاهِهِمۡ مَّا لَيۡسَ

ज़्यादा क़रीब थे, वे अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उनके

فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يَكۡتُمُوۡنَ ﴿۱۶۷﴾ ۚ اَلَّذِيۡنَ

दिलों में नहीं है, और अल्लाह ख़ूब जानता है जिसको वे छुपाते हैं (167) ये लोग जो ख़ुद बैठे रहे

قَالُوۡا لِاِخۡوَانِهِمۡ وَقَعَدُوۡا لَوۡ اَطَاعُوۡنَا مَا قُتِلُوۡا ؕ

अपने भाईयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो मारे न जाते,

قُلۡ فَادۡرَءُوۡا عَنۡ اَنۡفُسِكُمُ الۡمَوۡتَ اِنۡ كُنۡتُمۡ

(ऐ नबी) आप कह दीजिए कि तुम अपने ऊपर ही से मौत को हटा दो अगर तुम

صٰدِقِيۡنَ ﴿۱۶۸﴾ وَلَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ قُتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ

सच्चे हो (168) और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं

اللّٰهِ اَمْوَاتًا ط بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ لا

उनको मुर्दा न समझो; बल्कि वे ज़िंदा हैं अपने रब के पास, जहाँ उनको रोज़ी मिल रही है (169)

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ لا وَيَسْتَبْشِرُوْنَ

वे ख़ुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उनको दिया है, और ख़ुशख़बरी ले रहे हैं

بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ لا اَلَّا خَوْفٌ

कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहाँ नहीं पहुँचे हैं उनके लिए भी

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾ م يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ

न कोई ख़ौफ़ है और न वे ग़मगीन होंगे (170) वे ख़ुश हो रहे हैं अल्लाह के इनाम

مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لا وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ

और फ़ज़्ल पर, और इसपर कि अल्लाह ईमान वालों का अज्र

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾ ج ع اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

ज़ाए नहीं करता (171) जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के हुक्म को माना

مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا

बाद इसके कि उनको ज़ख़्म लग चुका था, उन में से जो नेक

مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾ ج اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ

और परहेज़गार हैं उनके लिए बड़ा अज्र है (172) जिन से लोगों ने

النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

कहा कि दुश्मनों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ बड़ी ताक़त जमा कर ली है पस उनसे डरो, लेकिन इस चीज़ ने

فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

उनके ईमान में और इज़ाफ़ा कर दिया और उन्होंने कहा: अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है (173)

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फ़ज़्ल के साथ वापस आए, उन लोगों के साथ

سُوْٓءٌ لا وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾

कोई बुराई पेश न आई, और वे अल्लाह की रिज़ामंदी पर चले, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है (174)

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ص فَلَا تَخَافُوْهُمْ

यह शैतान है जो तुमको अपने दोस्तों से डराता है, तुम उनसे न डरो

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ

बल्कि मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो (175) और वे लोग तुम्हारे लिए

الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا

ग़म का सबब न बनें जो इंकार करने में आगे बढ़ रहे हैं, वे अल्लाह को हरगिज़ कोई नुक़सान

اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي

नहीं पहुँचा सकेंगे, अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा

الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا

न रखे, और उनके लिए बड़ा अज़ाब है (176) जिन लोगों ने ईमान के

الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ

बदले कुफ़्र को ख़रीदा है वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते, और उनके लिए

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا

दर्दनाक अज़ाब है (177) और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं यह ख़्याल न करें कि हम जो उनको

نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ۗ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ

मोहलत दे रहे हैं यह उनके हक़ में बेहतर है, हम तो बस इस लिए मोहलत दे रहे हैं

لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ

कि वह जुर्म में और बढ़ जाएं, और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है (178) अल्लाह वह नहीं कि

اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

मुसलमानों को उस हालत पर छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो, जब तक कि वह

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ

नापाक को पाक से अलग न करले, और अल्लाह यूँ नहीं कि तुमको ग़ैब से

عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ

बाख़बर करदे; बल्कि अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसको

يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا

चाहता है, पस तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों पर, और अगर तुम ईमान लाओ

وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अज्र है (179) और जो लोग कंजूसी करते हैं उस चीज़ में

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ

जो अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़्ल में से दिया है वे हरगिज़ यह न समझें कि यह उनके हक़ में अच्छा है;

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ

बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है, जिस चीज़ में वे कंजूसी कर रहे हैं उसका क़ियामत के दिन

الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ

उनको तौक़ पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही की है मीरास ज़मीन व आसमान की, और जो कुछ

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ ع لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ

तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (180) अल्लाह ने उन लोगों की बात

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

सुन ली जिन्होंने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम मालदार हैं,

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

हम लिख लेंगे उनकी इस बात को और उनके पैग़म्बरों को नाहक़ मार डालने को भी,

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

और हम कहेंगे कि अब आग का अज़ाब चखो (181) यह तुम्हारे अपने हाथों

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ج

की कमाई है, और अल्लाह अपने बंदों के साथ ज़ुल्म करने वाला नहीं (182)

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ

जो लोग कहते हैं कि अल्लाह हमसे यह वादा ले चुका है कि हम किसी रसूल को

لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ

तसलीम न करें जब तक वह हमारे सामने ऐसी क़ुरबानी पेश न करे जिसको आग खाले, उनसे कहिए कि

قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِىْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِىْ

मुझसे पहले तुम्हारे पास कई रसूल आए खुली निशानियाँ लेकर और वे चीज़ लेकर

قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

जिसको तुम कह रहे हो, फिर तुमने क्यों उनको मार डाला, अगर तुम सच्चे हो (183)

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

पस अगर यह आपको झुटलाते हैं तो आपसे पहले भी बहुत से रसूल झुटलाए जा चुके हैं जो

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ

खुली हुई निशानियाँ और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर आए थे (184) हर शख़्स को

ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

मौत का मज़ा चखना है, और तुमको पूरा पूरा अज्र तो बस क़ियामत के दिन मिलेगा,

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ

पस जो शख़्स आग से बचा लिया जाए और जन्नत में दाख़िल किया जाए वही कामयाब रहा,

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ لَتُبْلَوُنَّ

और दुनिया की ज़िंदगी तो बस धोखे का सौदा है (185) यक़ीनन तुम अपनी जान

فِيْۤ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۟ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ

और माल में आज़माए जाओगे, और तुम बहुत सी तक्लीफ़ देने वाली बातें सुनोगे

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا

उनसे जिनको तुम से पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने

اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ

शिर्क किया, और अगर तुम सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो तो यह बड़े

مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ

होसले का काम है (186) और जब अल्लाह ने अहले-किताब से अहद लिया कि तुम

اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫

अल्लाह की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए ज़ाहिर करोगे और उसको नहीं छुपाओगे,

فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا

मगर उन्होंने उसको पीठ पीछे डाल दिया और उसको थोड़ी क़ीमत पर

قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

बेच डाला, कैसी बुरी है वह चीज़ जिसको वे ख़रीद रहे हैं (187) जो लोग

يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا

अपने करतूतों पर ख़ुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए

لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ

उसपर उनकी तारीफ़ की जाए, उनको अज़ाब से बरी न समझो,

وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾	وَلِلّٰهِ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ
उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (188) और अल्लाह ही के लिए है आसमानों					

وَالْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَیْءٍ	قَدِیْرٌ ﴿١٨٩﴾ ع	اِنَّ	فِیْ
और ज़मीनों की बादशाहत, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (189) आसमानों							

خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَاخْتِلَافِ	الَّیْلِ	وَالنَّهَارِ
और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन के बारी बारी आने में					

لَاٰیٰتٍ	لِّاُولِی	الْاَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾	الَّذِیْنَ	یَذْكُرُوْنَ	اللّٰهَ
अक़्ल वालों के लिए बहुत निशानियाँ हैं (190) जो अल्लाह को याद करते हैं					

قِیٰمًا	وَّقُعُوْدًا	وَّعَلٰى	جُنُوْبِهِمْ	وَیَتَفَكَّرُوْنَ	فِیْ
खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर, और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में					

خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ۚ	رَبَّنَا	مَا	خَلَقْتَ	هٰذَا
ग़ौर करते रहते हैं, (वे कह उठते हैं कि) ऐ हमारे रब! आपने ये सब बिला वजह						

بَاطِلًا ۚ	سُبْحٰنَكَ	فَقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ ﴿١٩١﴾	رَبَّنَاۤ	اِنَّكَ
नहीं बनाया, आप पाक हैं, पस हम को आग के अज़ाब से बचा लीजिए (191) ऐ हमारे परवरदिगार! आपने						

مَنْ	تُدْخِلِ	النَّارَ	فَقَدْ	اَخْزَیْتَهٗ ؕ	وَمَا	لِلظّٰلِمِیْنَ
जिसको आग में डाला उसको आपने वाक़ई रुसवा कर दिया, और ज़ालिमों का						

مِنْ	اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾	رَبَّنَاۤ	اِنَّنَا	سَمِعْنَا	مُنَادِیًا	یُّنَادِیْ
कोई मददगार नहीं (192) ऐ हमारे (प्यारे) रब! हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़						

لِلْاِیْمَانِ	اَنْ	اٰمِنُوْا	بِرَبِّكُمْ	فَاٰمَنَّا ۖ ق	رَبَّنَا
बुला रहा था कि अपने रब पर ईमान ले आओ पस हम ईमान ले आए, ए हमारे रब!					

فَاغْفِرْ لَنَا	ذُنُوْبَنَا	وَكَفِّرْ	عَنَّا	سَیِّاٰتِنَا	وَتَوَفَّنَا
हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिए और हमारी बुराईयों को हम से दूर कर दीजिए और हमारा ख़ातमा नेक लोगों के साथ					

مَعَ	الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾	رَبَّنَا	وَاٰتِنَا	مَا	وَعَدْتَّنَا	عَلٰى	رُسُلِكَ
फ़रमाइए (193) ऐ हमारे रब! आपने जो वादे अपने रसूलों के ज़रिए हमसे किए हैं उनको हमारे साथ पूरा							

وَلَا	تُخْزِنَا	یَوْمَ	الْقِیٰمَةِ ؕ	اِنَّكَ	لَا	تُخْلِفُ	الْمِیْعَادَ ﴿١٩٤﴾
फ़रमाइए और क़ियामत के दिन हमें रुसवाइ में न डालिए, बेशक आप वादे के ख़िलाफ़ करने वाले नहीं हैं (194)							

ع ١٠/١٩

منزل ١

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ

पस उनके रब ने उनकी दुआ कुबूल फ़रमाई कि में तुम में से किसी का अमल ज़ाए

عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ

करने वाला नहीं हुँ, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक दूसरे

بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ

से हो, पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए

وَاُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ

और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए मैं उनकी ख़ताएं ज़रूर

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ

उनसे दूर कर दूँगा और उनको ऐसे बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे से नहरें

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ

बहती होंगी, यह उनका बदला है अल्लाह के यहाँ, और बेहतरीन बदला

حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

अल्लाह ही के पास है (195) और मुल्क के अन्दर मुनकिरों की सरगरमियाँ तुमको

فِى الْبِلَادِ ؕ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۗ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

धोखे में न डालें (196) यह थोड़ा सा फ़ायदा है, फिर उनका ठिकाना जहन्नम है

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ

और वह कैसा बुरा ठिकाना है (197) अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए

جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

ऐसे बाग़ात होंगे जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे,

نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ

यह अल्लाह की तरफ़ से मेज़बानी होगी, और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए

لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ

वही सबसे बेहतर है (198) और अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं

وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

और उस किताब को मानते हैं जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई और उस किताब को भी जो ख़ुद उनकी तरफ़ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं,

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

और वे अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेच नहीं देते, यही वे लोग हैं कि उनका

اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾

अज्र उनके रब के पास है, और बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है (199)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۫

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और मुक़ाबले में मज़बूत रहो और लगे रहो,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओगे (200)

ع ٢٠

सूरह निसा मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई और इसमें (176) आयात और (24) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (92) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (4) नम्बर पर है और सूरह मुम्तहिना के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (16030) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (3045) कलिमात हैं

منزل ١

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुमको

نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا

एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से

رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ

बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं, और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल

بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿١﴾

करते हो, और ख़बरदार रहो क़ुराबतदारों के बारे में, बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है (1)

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ

और यतीमों का माल उनके हवाले कर दो, और बुरे माल को अच्छे माल से

بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ

न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिला कर न खाओ,

اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿٢﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا

यक़ीनन यह बहुत बड़ा गुनाह है (2) और अगर तुमको अंदेशा हो कि तुम इंसाफ़ न कर सकोगे

فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى

यतीमों के मामले में तो औरतों में से जो तुमको पसंद हों उनमें से दो दो,

وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً

तीन तीन, चार चार, तक निकाह कर लो, और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम इंसाफ़ न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣ۭ

या जो बांदी तुम्हारी मिल्कियत में हो, इसमें उम्मीद है कि तुम इंसाफ़ से न हटोगे (3)

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۭ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ

और औरतों को उनका महर ख़ुशदिली के साथ अदा करो, फिर अगर वह उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें

شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْۗــــًٔا مَّرِيْۗـــــًٔا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا

अपनी ख़ुशी से तो तुम उसको हंसी ख़ुशी खाओ (4) और नादानों को

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا

अपना वह माल न दो जिसको अल्लाह ने तुम्हारे लिए क़ियाम का ज़रिया बनाया है,

وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا

और उस माल में से उनको खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की

مَّعْرُوْفًا ۝٥ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓي اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ

बात कहो (5) और यतीमों को जांचते रहो यहाँ तक कि वे निकाह की उमर को पहुँच जाएं

فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ

तो अगर उनमें होशियारी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो,

وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ

और उनका माल फुजूल और इस ख़्याल से कि वे बड़े हो जाएं न खाजाओ, और जो

غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ

मालदार हो वह (यतीम के माल से) परहेज़ करे, और जो शख़्स मोहताज हो वह मुनासिब तरीक़े पर

بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ

उसमें से खाए, फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले कर दो

فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ

तो उनपर गवाह ठहरालो, और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है (6) मर्दों का भी

نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ ۖ وَلِلنِّسَآءِ

हिस्सा है माँ-बाप और रिश्तेदारों के तर्के में से, और औरतों का भी

نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ مِمَّا قَلَّ

माँ-बाप और रिश्तेदारों के तर्के में से हिस्सा है, थोड़ा हो

مِنۡهُ اَوۡ كَثُرَ ؕ نَصِيۡبًا مَّفۡرُوۡضًا ۝٧ وَاِذَا حَضَرَ

या ज़्यादा हो, एक मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा (7) और अगर (मीरास की)

الۡقِسۡمَةَ اُولُوا الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنُ فَارۡزُقُوۡهُمۡ

तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मोहताज मोजूद हों तो उसमें से उनको भी

مِّنۡهُ وَقُوۡلُوۡا لَهُمۡ قَوۡلًا مَّعۡرُوۡفًا ۝٨ وَلۡيَخۡشَ

कुछ दे दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो (8) और ऐसे लोगों को

الَّذِيۡنَ لَوۡ تَرَكُوۡا مِنۡ خَلۡفِهِمۡ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوۡا

डरना चाहिए अगर वे अपने पीछे कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी

عَلَيۡهِمۡ ۖ فَلۡيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡيَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ۝٩

बहुत फ़िक्र रहती, पस उनको चाहिए कि अल्लाह से डरें और पक्की बात कहें (9)

اِنَّ الَّذِيۡنَ يَاۡكُلُوۡنَ اَمۡوَالَ الۡيَتٰمٰى ظُلۡمًا اِنَّمَا

जो लोग यतीमों का माल नाहक़ तरीक़े पर खाते हैं वे लोग

يَاۡكُلُوۡنَ فِىۡ بُطُوۡنِهِمۡ نَارًا ؕ وَسَيَصۡلَوۡنَ سَعِيۡرًا ۝١٠ ع

अपने पेट में आग भर रहे हैं, और वे बहुत जल्द भड़कती हुई आग में पहुँच जाएंगे (10)

يُوۡصِيۡكُمُ اللّٰهُ فِىۡۤ اَوۡلَادِكُمۡ ۖ لِلذَّكَرِ مِثۡلُ حَظِّ

अल्लाह तुमको तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों

الۡاُنۡثَيَيۡنِ ۚ فَاِنۡ كُنَّ نِسَآءً فَوۡقَ اثۡنَتَيۡنِ فَلَهُنَّ

के बराबर है, फिर अगर औरतें दो से ज़ायद हैं तो उनके लिए

ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنۡ كَانَتۡ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصۡفُ ؕ

दो तिहाई है उस माल से जो मय्यत छोड़ गया है, और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है,

وَلِاَبَوَيۡهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنۡهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

और मय्यत के माँ-बाप को दोनों में से हर एक के लिए छटा हिस्सा है उस माल का जो वह छोड़ गया है

إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ وَلَدٌ وَّوَرِثَهُ

उस वक़्त जबकि मय्यत की औलाद भी हो, और अगर मय्यत की औलाद न हो और उसके माँ-बाप

أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ

उसके वारिस हों तो उसकी माँ का (हिस्सा) तिहाई है, और अगर उसके भाई हों तो उसकी माँ के लिए

السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ

छटा हिस्सा है, यह हिस्से वसीयत पूरी करने या क़र्ज़ अदा करने के बाद हैं जो मय्यत कर जाता है,

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ ۚ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें कौन तुम्हारे लिए ज़्यादा

نَفْعًا ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا

फ़ायदेमंद है, ये अल्लाह की जानिब से ठहराए हुए हिस्से हैं, बेशक अल्लाह इल्म वाला,

حَكِيْمًا ﴿١١﴾ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ

हिकमत वाला है (11) और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ें उस वक़्त

لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ

जबकि उनकी औलाद न हों, और अगर उनकी औलाद हो तो तुम्हारे लिए

الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

बीवियों के तर्के का चौथाई हिस्सा है वसीयत पूरी करने के बाद जिस की वह वसीयत कर जाएं

اَوْ دَيْنٍ ۗ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ

या क़र्ज़ अदा करने के बाद, और उन बीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तर्के का अगर तुम्हारी

لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا

औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारी औलाद है तो उनके लिए आठवाँ हिस्सा है तुम्हारे तर्के का

تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ

उस वसीयत के पूरा करने के बाद जिसे तुम कर जाओ या क़र्ज़ अदा करने के बाद,

وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗٓ اَخٌ

और अगर कोई मय्यत मर्द या औरत ऐसा हो कि उसके न ऊपर वाले रिश्तेदार हों न नीचे वाले और उसका एक भाई

اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا

या एक बहन हो तो दोनों में से हर एक के लिए छटा हिस्सा है, और अगर वे

أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ

उससे ज़ायद हों तो वे एक तिहाई में शरीक होंगे वसीयत पूरी करने के बाद

وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً

जिसकी वसीयत की गई हो या क़र्ज अदा करने के बाद, बग़ैर किसी को नुक़सान पहुँचाए, यह हुक्म

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह जानने वाला, बुर्दबार है (12) यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदें हैं,

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा अल्लाह उसको ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेगा जिनके

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ

नीचे से नहरें बहती होंगी, उनमें वह हमेशा रहेंगे, और यही बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ

कामयाबी है (13) और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसके मुक़र्रर किए हुए ज़ाब्तों से बाहर निकल

يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾ ع

जाएगा, वह उसको आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा, और उसके लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है (14)

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا

और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उनपर अपनों में से

عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ

चार मर्द गवाह करो, फिर अगर वे गवाही देदें तो उन औरतों को घरों के अंदर

فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ

बंद रखो यहाँ तक कि उनको मौत आ जाए या अल्लाह उनके लिए

لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ

कोई राह निकाल दे (15) और तुम में से जो दो मर्द वही बदकारी करें तो उनको अज़ीयत पहुँचाओ,

فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इस्लाह कर ले तो उनका ख़याल छोड़ दो, बेशक अल्लाह

كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾ اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ

तौबा क़ुबूल करने वाला, मेहरबान है (16) तौबा जिन की क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है वह उन लोगों की है

يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ

जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं,

فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا

वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह क़ुबूल करता है, और अल्लाह जानने वाला,

حَكِيْمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

हिकमत वाला है (17) और ऐसे लोगों की तौबा क़ुबूल नहीं है जो बराबर गुनाह

السَّيِّاٰتِ ج حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ

करते रहें, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत का वक़्त आजाए तब वह कहे:

اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ط

अब मैं तौबा करता हुँ, और न उन लोगों की तौबा (क़ाबिले-क़ुबूल है) जो इस हाल में मरते हैं कि वह काफ़िर हैं,

اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾ يٰٓاَيُّهَا

उनके लिए तो हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (18) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ

ईमान वालो! तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि तुम औरतों को ज़बरदस्ती अपनी मीरास

كَرْهًا ط وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ

में लेलो, और न उनको इस ग़र्ज़ से रोके रखो कि तुम ने जो कुछ उनको दिया है उसका

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ج

कुछ हिस्सा उनसे लेलो मगर इस सूरत में कि वह खुली हुई बे-हयाई करें,

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ج فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى

और उनके साथ अच्छी तरह गुज़र बसर करो, अगर वे तुमको नापसंद हों तो हो सकता है कि

اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾

एक चीज़ तुमको पसंद न हो मगर अल्लाह ने उसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो (19)

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ لا

और अगर तुम एक बीवी की जगह बदल कर दूसरी बीवी लाना चाहो

وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْئًا ط

और तुम उनमें से किसी एक को बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो,

اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ

क्या तुम उस पर झूटा इल्ज़ाम लगा कर और खुला ज़ुल्म करके वापस लोगे (20) और तुम किस तरह

تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ

उसको लोगे जबकि तुम में से हर एक दूसरे से तनहाई में मिल चुका है

وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا

और वे तुमसे पक्का वादा ले चुकी हैं (21) और उन औरतों से निकाह मत करो

مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ

जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं मगर जो पहले हो चुका,

اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ ع

बेशक यह बे-हयाई और नफ़रत की बात है और बहुत बुरा तरीक़ा है (22)

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ

तुम्हारे ऊपर हराम की गई हैं तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें,

وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ

तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी ख़ालाएँ, तुम्हारी भतीजियाँ और भांजियाँ

وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

और तुम्हारी वे माएँ जिन्होंने तुमको दूध पिलाया, तुम्हारी दूध शरीक बहनें,

وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ

तुम्हारी बीवियों की माएँ और उनकी बेटियाँ जो तुम्हारी परवरिश में हैं

مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا

जो तुम्हारी उन बीवियों से हों जिन से तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ

सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे हक़ीक़ी बेटों

الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

की बीवियाँ, और यह कि तुम इकट्ठा करो दो बहनों को,

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾ ۙ

मगर जो पहले हो चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (23)

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी और के निकाह में हों मगर यह कि वे जंग में तुम्हारे हाथ आएं,

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ

यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर, उनके अलावा जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं

اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ

बशर्ते कि तुम अपने माल के ज़रिए उनके तालिब बनो उनसे निकाह करके न कि बदकारी की नीयत से,

فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

फिर उन औरतों में से जिन से तुम ने फायदा उठाया उनको उनका तय शुदा

فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ

महर देदो, और महर के ठहराने के बाद जिस पर तुम आपस में राज़ी हो गए हो तो उसमें

مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾

कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (24)

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ

और तुम में से जो शख़्स ताक़त न रखता हो कि (आज़ाद) मुसलमान

الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

औरतों से निकाह कर सके तो उसको चाहिए कि वह निकाह कर ले तुम्हारी उन बांदियों में से किसी के साथ जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ

और मोमिना हों, अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है, तुम आपस में

بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ

एक हो, पस उनके मालिकों की इजाज़त से उनसे निकाह कर लो और मुनासिब तरीक़े पर

اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ

उनके महर अदा करदो, इस तरह कि उनसे निकाह किया जाए न कि बदकारी करें

وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ

और न चोरी छुपे दोस्ती करें, फिर जब वे रिश्ता-ए-निकाह में आजाएं और उसके बाद वे

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ

कोई बदकारी करें तो आज़ाद औरतों के लिए जो सज़ा है उसकी आधी

الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ
सज़ा उन पर है, यह उसके लिए है जो तुम में से बदकारी का अंदेशा रखता हो, और अगर तुम
تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۲۵ يُرِيْدُ
सब्र से काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (25) अल्लाह चाहता है कि
اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ
तुम्हारे लिए बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों की हिदायत दे जो तुम से पहले
قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۲۶ وَاللّٰهُ
गुज़र चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (26) और अल्लाह
يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ
चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे, और जो लोग अपनी ख़्वाहिशात
الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۲۷ يُرِيْدُ اللّٰهُ
की पैरवी कर रहे हैं वे चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से बहुत दूर निकल जाओ (27) अल्लाह चाहता है कि
اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۲۸
तुम से बोझ को हल्का कर दे, और इंसान कमज़ोर बनाया गया है (28)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का माल
بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ
नाहक़ तौर पर न खाओ, मगर यह कि तिजारत हो आपस की ख़ुशी से,
وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۲۹
और ख़ून न करो आपस में, बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा मेहरबान है (29)
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ
और जो शख़्स नाफ़रमानी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा उसको हम ज़रूर आग में
نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۳۰ اِنْ تَجْتَنِبُوْا
डालेंगे, और यह अल्लाह के लिए आसान है (30) अगर तुम उन बड़े गुनाहों से
كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ
बचते रहे जिनसे तुम्हें रोका गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराईयों को मुआफ़ कर देंगे और तुमको

ع ٤

منزل ١

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ

इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे (31) और तुम उस चीज़ की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने

بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

तुम में से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है, मर्दों के लिए एक हिस्सा है अपनी

اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا

कमाई का और औरतों के लिए एक हिस्सा है अपनी कमाई का, और अल्लाह से

اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾

उसका फ़ज़्ल मांगो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है (32)

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ

और हमने वालिदैन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए माल में हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं,

وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ

और जिन से तुमने अहद बांध रखा हो तो उनको उनका हिस्सा देदो,

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ اَلرِّجَالُ

बेशक अल्लाह के सामने है हर चीज़ (33) मर्द

قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى

औरतों पर निगराँ हैं, इस बिना पर कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर

بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ

बड़ाई दी है और इस वजह से कि मर्द ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेक औरतें हैं

قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ

वे फ़रमाँबरदारी करने वाली, पीठ पीछे (शौहर के हुक़ूक़ का) ख़्याल रखती हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से, और जिन औरतों की

تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی

नाफरमानी का तुमको अंदेशा हो तो तुम उनको समझाओ और उनको उनके

الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا

बिस्तरों में तनहा छोड़ दो और उनको हल्की सज़ा दो, फिर अगर वे तुम्हारी फरमाँबरदारी करें तो उनके ख़िलाफ़

عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

इल्ज़ाम की तलाश न करो, बेशक अल्लाह सबसे बुलंद है, बहुत बड़ा है (34)

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ

और अगर तुम्हें मियाँ-बीवी के दरमियान ताल्लुक़ात के बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक फ़ैसला करने वाला

اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا

मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक फ़ैसला करने वाला औरत के रिश्तेदारों में से, अगर दोनों मुआमलात

يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾

दुरुस्त करना चाहेंगे तो अल्लाह उनके दरमियान मुवाफ़िक़त पैदा कर देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बा-ख़बर है (35)

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाओ, और माँ-बाप के साथ

اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

अच्छा सुलूक करो और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मोहताजों

وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ

और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी और साथ उठने बैठने

بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ

वाले और मुसाफ़िर के साथ और जिनके तुम मालिक हो (उनके साथ),

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۨ ﴿۳۶﴾

बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले, बड़ाई जताने वाले को (36)

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ

जो कि ख़ुद कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी का हुक्म देते हैं

وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا

और जो कुछ अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़्ल से दे रखा है उसको छुपाते हैं, और हमने मुनकिरों के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۳۷﴾ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (37) और जो लोग अपना माल

اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं

وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا

और न आख़िरत के दिन पर, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह

منزل ۱

فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

बहुत बुरा साथी है (38) उनका क्या नुक़सान था अगर वे अल्लाह पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ

और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करते, और अल्लाह

اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ

उनसे अच्छी तरह बाख़बर है (39) बेशक अल्लाह किसी पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म नहीं करेगा,

وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ

अगर नेकी हो तो वह उसको दोगुना बढ़ा देता है और अपने पास से

اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ

बहुत बड़ा सवाब देता है (40) फिर उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे

وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ؕ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ

और आपको उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे (41) उस रोज़ तमन्ना करेंगे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ

वे लोग जिन्होंने इनकार किया और पैग़म्बरों की नाफ़रमानी की कि काश! ज़मीन उन पर बराबर कर दी जाए,

وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ؑ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और वे अल्लाह से कोई बात छुपा न सकेंगे (42) ऐ ईमान वालो! जब तुम

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا

नशे की हालत में हो तो उस वक़्त तक नमाज़ के क़रीब भी न जाना जब तक तुम जो कुछ कह रहे हो उसे

مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى

समझने न लगो, और न ही जनाबत की हालत में जब तक कि ग़ुस्ल न कर लो सिवाए इसके कि

تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ

तुम मुसाफ़िर हो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र पर हो या तुम में से कोई

اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ

इस्तिंजा करके आया हो या तुम ने औरतों को छुआ हो,

فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

फिर तुम को पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरों

بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾

और हाथों का (उस मिट्टी से) मसह कर लो, बेशक अल्लाह बड़ा मुआफ़ करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला है (43)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब से एक हिस्सा मिला था,

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۴۴﴾ ؕ

वे गुमराही को ख़रीद रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी सीधे रास्ते से भटक जाओ (44)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۟ۙ وَّكَفٰى

अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है, और अल्लाह काफ़ी है हिमायत के लिए, और अल्लाह काफ़ी है

بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿۴۵﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ

मदद के लिए (45) यहूद में से एक गिरोह बात को

الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا

उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना लेकिन उसे नहीं माना,

وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّاۢ بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا

और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए, वह अपनी जबान को मोड़ कर कहते हैं "رَاعِنَا" (राअ़िना) दीन में

فِي الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

ऐब लगाने के लिए, हालाँकि अगर वे कहते कि हमने सुना और हमने मान लिया

وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ

और सुनो और हम पर नज़र करो तो यह उनके हक़ में ज़्यादा बेहतर और दुरुस्त होता,

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا

मगर अल्लाह ने उनके इनकार की वजह से उनपर लानत कर दी, पस वे ईमान न लाएंगे मगर

قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا

बहुत कम (46) ऐ वे लोगो जिनको किताब दी गई! उस पर ईमान लाओ

نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ

जो हमने उतारा है, तस्दीक़ करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को

وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

मिटा दें फिर उनको उलट दें पीठ की तरफ़ या उन पर लानत करें जैसे हमने

لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

लानत की सनीचर वालों पर, और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहता है (47)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ

बेशक अल्लाह उसको नहीं बख़्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाए, लेकिन इसके अलावा जो

ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى

कुछ है उसको जिसके लिए चाहेगा बख़्श देगा, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क ठहराया उसने

اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ

बड़ा ज़बरदस्त गुनाह किया (48) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने आपको पाकीज़ा कहते हैं,

بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾

बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसको चाहता है, और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा (49)

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى

ज़रा देखिए कि ये कैसे अल्लाह पर झूठ बाँध रहे हैं, और खुला गुनाह होने के लिए तो

بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا

यही बात काफ़ी है (50) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब (यानी तौरात के इल्म) का

نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ

एक हिस्सा दिया गया था कि वे (किस तरह) बुतों और शैतान की तस्दीक़ कर रहे हैं

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ

और काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ईमान वालों के मुक़ाबले

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ

ये ज़्यादा रास्ते पर हैं (51) यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत

اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ ؕ

की है, और जिस पर अल्लाह लानत करे आप उसका कोई मददगार न पाओगे (52)

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ

क्या अल्लाह की हुकूमत में उनका भी कुछ हिस्सा है? फिर (अगर ऐसा होता) तो ये लोगों को

النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ ۙ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى

एक तिल के दाने के बराबर भी न दें (53) क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं

مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ

इस बिना पर जो अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़्ल से दिया है, पस हमने इब्राहीम की औलाद को

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾

किताब और हिकमत दी, और हमने उनको एक बड़ी सल्तनत भी दे दी (54)

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ

उनमें से किसी ने इसको माना और कोई इससे रुका रहा,

وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا

और ऐसे लोगों के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग काफ़ी है (55) बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इनकार किया

سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ

उनको हम सख़्त आग में डालेंगे, जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी

بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ

तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी खाल लगा देंगे; ताकि वह अज़ाब चखते रहें, बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (56) और जो लोग ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

किए उनको हम ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे से नहरें

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ

बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहाँ उनके लिए पाकीज़ा

مُّطَهَّرَةٌ ز وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ

बीवियाँ होंगी और उनको हम घनी छाँऊ में रखेंगे (57) अल्लाह तुमको

يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا

हुक्म देता है कि अमानतें उनके हक़दारों तक पहुँचा दो, और जब

حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ

तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो,

اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا

अल्लाह क्या ही अच्छी नसीहत करता है तुमको, बेशक अल्लाह सुनने वाला,

بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ

देखने वाला है (58) ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ

और रसूल की इताअत करो और अपने में से ज़िम्मेदारों की, फिर अगर तुम्हारे दरमियान

تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

किसी चीज़ में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसको अल्लाह और रसूल के हवाले कर दो,

اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ

अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो,

خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

यह बात अच्छी है और इसका अंजाम बेहतर है (59) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा

يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ

जो दावा करते हैं कि वे ईमान लाए उस पर जो उतारा गया है आप पर और जो उतारा गया है

مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ

आपसे पहले, वे चाहते हैं कि मामला फ़ैसले के लिए ले जाएं शैतान के पास;

وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ

हालाँकि उनको हुक्म हो चुका है कि उसको न मानें, और शैतान चाहता है कि उनको बहका कर

اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۶۰﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ

निचले दर्जे की गुमराही में डाल दे (60) और जब उनसे कहा जाता है कि

تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ

आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की तरफ़ और रसूल की तरफ़ तो आप देखोगे कि

الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿۶۱﴾ ۚ فَكَيْفَ اِذَاۤ

मुनाफ़िक़ीन आपसे कतरा जाते हैं (61) फिर उस वक़्त क्या होगा जब उनके

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ

अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उनपर पहुँचेगी, उस वक़्त ये

جَاۗءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ڰ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا

आपके पास क़स्में खाते हुए आएंगे अल्लाह की क़सम! हमने तो सिर्फ़ भलाई और मिलाप

ع ۸/۹ ۵

منزل ۱

وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ

ही का सोचा था (62) उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे ख़ूब

قُلُوْبِهِمْ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ

वाक़िफ़ है, पस आप उनको नज़र अंदाज़ करें और उनको नसीहत करें और उनसे ऐसी बात कहें

اَنْفُسِهِمْ قَوْلًاۢ بَلِيْغًا ﴿٦٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا

जो उनके दिलों में उतर जाए (63) और हमने जो रसूल भेजा इसी लिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से

لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

उसकी इताअत की जाए, और अगर वे जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था

جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

आपके पास आते और अल्लाह से मांगते और रसूल भी उनके लिए मुआफ़ी चाहते

لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

तो यक़ीनन वे अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पाते (64) पस आपके रब की क़सम! वे लोग कभी ईमान लाने वाले नहीं हो सकते जब

حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ

तक वे अपने आपस के झगड़े में आपको फ़ैसला करने वाला न मान लें, फिर जो फ़ैसला आप करें

اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसको ख़ुशी से क़ुबूल कर लें (65)

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا

और अगर हम उनको हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से

مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ

निकलो, तो उनमें से थोड़े ही इस पर अमल करते, और अगर ये लोग

فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ

वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर ज़्यादा

تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾

साबित रखने वाली होती (66) और उस वक़्त हम उनको अपने पास से बड़ा अज्र देते (67)

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

और हम उनको सीधा रास्ता दिखाते (68) और जो अल्लाह

وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ

और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम किया है,

مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ

यानी पैग़म्बरों और सच्चों और शहीदों और नेक लोगों के साथ,

وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۗ

और कितना ही अच्छा है उनके साथ रहना (69) यह फ़ज़्ल है अल्लाह की तरफ़ से,

وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا

और अल्लाह का इल्म काफ़ी है (70) ऐ ईमान वालो! अपनी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम

ع ١١

حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ

कर लो फिर निकलो जुदा जुदा या इकट्ठे हो कर (71) और यक़ीनन

مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ

तुम में कोई ऐसा भी है जो सुस्ती से काम लेता है, फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहता है कि

قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾

अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ नहीं था (72)

منزل ١

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ

और अगर तुमको अल्लाह का कोई फ़ज़्ल हासिल हो तो कहता है गोया

لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ

तुम्हारे और उसके दरमियान कोई ताल्लुक़ ही न हो कि काश! मैं भी उनके साथ होता

فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

तो बड़ी कामयाबी हासिल कर लेता (73) पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में

الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۗ وَمَنْ

वे लोग जो आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेच देते हैं, और जो शख़्स

يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ

अल्लाह की राह में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम उसको

نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ

बड़ा अज्र देंगे (74) और तुम को क्या हो गया है कि तुम लड़ते नहीं अल्लाह की

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
राह में और उन कमज़ोर मर्दों और

وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ
औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमको

هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ
उस बस्ती से निकालिए जिसके रहने वाले ज़ालिम हैं, और हमारे लिए

لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ ؕ
अपने पास से कोई हिमायती पैदा कीजिए और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार खड़ा कर दीजिए (75)

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ
जो लोग ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और जो

كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا
मुनकिर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं, पस तुम शैतान के

اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ ع
साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है (76)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ
क्या आपने उन लोगें को नहीं देखा जिन से कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो, फिर जब उनको लड़ाई का हुक्म

الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
दिया गया तो उन में से एक गिरोह इंसानों से ऐसे डरने लगा जैसे अल्लाह से

اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
डरना चाहिए या उससे भी ज़्यादा, वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब! तूने हम पर

عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ
लड़ाई क्यों फ़र्ज़ कर दी, क्यों न छोड़े रखा हमको थोड़ी मुद्दत तक, (ऐ नबी) आप कह दीजिए कि

مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۛ
दुनिया का फ़ायदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है उसके लिए जो परहेज़गारी करे,

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ

और तुम्हारे साथ ज़रा भी ज़ुल्म न होगा (77) और तुम जहाँ भी रहोगे मौत तुम्हें

الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

आ पकड़ेगी; अगरचे तुम मज़बूत क़िले में रहो, अगर उनको कोई भलाई

حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

पहुँचती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उनको

سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ

कोई बुराई पहुँचती है तो कहते हैं कि सब तुम्हारी वजह से है, आप कह दीजिए कि सब कुछ अल्लाह की तरफ़

اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ

से है, पस उन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात ही नहीं

حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَآ

समझते (78) तुमको जो भी भलाई पहुँचती है अल्लाह की तरफ़ से पहुँचती है, और तुमको

اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ

जो बुराई पहुँचती है वह तुम्हारी अपनी ही वजह से है, और हमने आपको

لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُّطِعِ

इंसानों की तरफ़ पैग़म्बर बना कर भेजा है, और अल्लाह की गवाही काफ़ी है (79) जिसने

الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ

रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की, और जिसने मुँह मोड़ लिया तो हमने आपको उन पर

عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾ ؕ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا

निगराँ बना कर नहीं भेजा है (80) और ये लोग कहते हैं कि हमको क़ुबूल है, फिर जब आपके

مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ

पास से निकलते हैं तो उन में से एक गिरोह उसके ख़िलाफ़ मश्वरा करता है जो वह कह चुका था,

وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ

और अल्लाह उनकी सरगोशियों को लिख रहा है, पस आप उनसे दूर रहें और अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

भरोसा रखें, और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है (81) क्या ये लोग ग़ौर नहीं करते

منزل ١

الْقُرْاٰنَ ۭ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ

क़ुरआन में कि अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो वे उसके अन्दर

اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿۸۲﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ

बड़ा इख़्तिलाफ़ पाते (82) और जब उनको कोई बात अमन की

اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۭ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ

या ख़ौफ़ की पहुँचती है तो वे उसको फैला देते हैं; हालाँकि अगर वे उसको रसूल तक

وَاِلٰٓى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ

या अपने ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचाते तो उनमें से जो लोग तहक़ीक़ करने वालें हैं वे उसकी

مِنْهُمْ ۭ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ

हक़ीक़त को जान लेते, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा

الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۸۳﴾ فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

तुम सब शैतान की राह पर चल पड़ते (83) पस लड़िए अल्लाह की राह में,

لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ

आप पर अपनी जान के सिवा किसी की ज़िम्मेदारी नहीं है, और मुसलमानों को भी उभारिए, क़रीब हैं कि अल्लाह

اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا

मुनकिरों का ज़ोर तोड़ दे, और अल्लाह बड़ा ज़ोर वाला और बहुत सख़्त

وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿۸۴﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ

सज़ा देने वाला है (84) जो शख़्स (किसी के हक़ में) अच्छी सिफ़ारिश करेगा उसके लिए उसमें से

نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ

हिस्सा है, और जो शख़्स बुरी सिफ़ारिश करेगा उसके लिए उसमें से

كِفْلٌ مِّنْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿۸۵﴾

हिस्सा है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है (85)

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ۭ

और जब तुमको सलाम किया जाए तो तुम भी सलाम का जवाब दो उससे बेहतर अंदाज़ में या जवाब में वही कह दो,

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿۸۶﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है (86) अल्लाह वह (माबूद) है जिसके सिवा

اِلَّا هُوَ ط لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ط

कोई माबूद नहीं, वह ज़रूर तुम सबको क़ियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबह नहीं,

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾ فَمَا لَكُمْ فِي

और अल्लाह की बात से बढ़ कर सच्ची बात और किस की हो सकती है (87) फिर तुमको क्या हुआ है कि तुम

الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ط

मुनाफ़िक़ों के मामले में दो गिरोह हो रहे हो; हालाँकि अल्लाह ने उनके आमाल की वजह से उनको उल्टा फैर दिया है,

اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ

क्या तुम चाहते हो कि उनको राह पर लाओ जिनको अल्लाह ने गुमराह कर दिया है, और जिसको अल्लाह

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا

गुमराह कर दे तुम हरगिज़ उनके लिए कोई राह नहीं पा सकते (88) वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इनकार किया है तो तुम भी

كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ

इनकार करो; ताकि तुम सब बराबर हो जाओ, पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ

حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ

जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें, फिर अगर वे इसको क़ुबूल न करें तो उनको पकड़ो

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ص وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ

और जहाँ कहीं उनको पाओ उन्हें क़त्ल करो, और उनमें से किसी को

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾ لا اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى

साथी और मददगार न बनाओ (89) मगर वे लोग जिनका ताल्लुक़ ऐसी

قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ

क़ौम से हो जिनके साथ तुम्हारा मुआहिदा हुआ है या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आएं कि

حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا

उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी क़ौम की

قَوْمَهُمْ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ج

लड़ाई से, और अगर अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर ज़ोर दे देता तो वे ज़रूर तुमसे लड़ते,

فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ

पस अगर वे तुमको छोड़े रहें और तुमसे जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का

اَلسَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾
रवय्या रखें तो अल्लाह तुमको भी उनके ख़िलाफ़ इक़दाम की इजाज़त नहीं देता (90)

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ
दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुम से भी अमन में रहें

وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا
और अपनी कौम से भी अमन में रहें, जब कभी वे फ़ितने का मौक़ा पाएं वे उसमें कूद पड़ते

فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ
हैं, ऐसे लोग अगर तुमसे दूर न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का रवय्या न रखें

وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
और अपने हाथ न रोकें तो तुम उनको पकड़ो और उनको क़त्ल करो जहाँ कहीं

ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ
उन्हें पाओ, ये वे लोग हैं जिनके ख़िलाफ़ हमने तुमको

سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ ع وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا
ख़ुली हुज्जत दी है (91) और किसी मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को क़त्ल करे मगर यह कि

اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ
ग़लती से ऐसा हो जाए, और जो शख़्स किसी मुसलमान को ग़लती से क़त्ल कर दे तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को

رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ
आज़ाद करे और मक़्तूल के वारिसों को ख़ून बहा दे मगर यह कि वे

اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ
मुआ़फ़ कर दें, फिर अगर (वह मक़्तूल) ऐसी क़ौम से था जो तुम्हारी दुश्मन है

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ
और वह ख़ुद मुसलमान था तो वह एक मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद करे, और अगर वह

مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
ऐसी क़ौम में से था कि तुम्हारे और उसके दरमियान मुआहिदा है तो वह उसके वारिसों को

مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ
ख़ून बहा दे और एक मुसलमान (ग़ुलाम) को आज़ाद करे,

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ز تَوْبَةً
फिर जिस शख़्स को मयस्सर न हो तो वह लगातार दो महीने तक रोज़े रखे, यह तौबा (की शक्ल) है

مِّنَ اللّٰهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ
अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (92) और जो शख़्स

يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا
किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उसकी सज़ा जहन्नम है जिस में वह हमेशा

فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا
रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अज़ाब

عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ
तैयार कर रखा है (93) ऐ ईमान वालो! जब तुम सफ़र करो

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى
अल्लाह की राह में तो खूब तहक़ीक़ कर लिया करो, और जो शख़्स तुमको

اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ج تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
सलाम करे उसको यह न कहो कि तुम मुसलमान नहीं हो, तुम दुनयवी ज़िंदगी का

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ز فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ط كَذٰلِكَ
सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास बहुत सा माले-ग़नीमत है, तुम भी

كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ط
पहले ऐसे ही थे फिर अल्लाह ने तुम पर फ़ज़्ल किया तो तहक़ीक़ कर लिया करो,

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾ لَا يَسْتَوِى
जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (94) बराबर नहीं हो सकते

الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ
बैठे रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज़्र नहीं है

وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ط
और वह मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से,

فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निसबत

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ط وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ط

बड़ा रखा है, और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है,

وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا

और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज्रे अज़ीम के ज़रिए

عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ط

बरतरी दी है (95) उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़े दर्जे हैं और मग़फ़िरत और रहमत है,

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ

और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (96) यक़ीनन जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं

الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ط

जब उनकी जान फ़रिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे,

قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ط قَالُوْٓا

वे कहेंगे कि हम ज़मीन में बेबस थे, फ़रिश्ते कहेंगे:

اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ط

क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़ कर वहाँ चले जाते,

فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ط وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है (97)

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ

मगर वे बेबस मर्द और औरतें

وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ

और बच्चे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई राह पा

سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ط

रहे हैं (98) ये लोग उम्मीद में है कि अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा,

وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ

और अल्लाह मुआफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है (99) और जो कोई अल्लाह की राह

سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا

में वतन छोड़ेगा वह ज़मीन में बड़े ठिकाने और बड़ी

وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى

वुसअत पाएगा, और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके

اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ

रसूल की तरफ़ हिजरत करके निकले फिर उसको मौत आजाए तो उसका अज्र

اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾ ع

अल्लाह के यहाँ मुक़र्रर हो चुका है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (100)

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम

اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ

नमाज़ में क़स्र करो अगर तुमको डर हो कि काफ़िर

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا

तुमको सताएंगे, बेशक काफ़िर लोग तुम्हारे खुले हुए

مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾ وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ

दुश्मन हैं (101) और जब आप मुसलमानों के दरमियान हों और उनके लिए नमाज़ खड़ी करो

فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ ۣ

तो चाहिए कि उनकी एक जमाअ़त आपके साथ खड़ी हो और वे अपने हथियार लिए हुए हों,

فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۠ وَلْتَاْتِ

पस जब वे सज्दा कर चुकें तो वे तुम्हारे पास से हट जाएं और दूसरी

طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ

जमाअत आए जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है और वे तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें

وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ

और वे भी अपने बचाव का सामान और हथियार लिए रहें, काफ़िर लोग

كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ

चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ

فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ

तो वे तुम पर अचानक टूट पड़ें, और तुम्हारे ऊपर कोई

عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ

गुनाह नहीं अगर तुमको बारिश के सबब से तकलीफ़ हो या तुम

مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۭ

बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो, और अपने बचाव का सामान लिए रहो,

اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾ فَاِذَا

बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (102) पस जब तुम

قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى

नमाज़ अदा कर लो तो अल्लाह को याद करो खड़े खड़े और बैठे बैठे और

جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ

लेटे लेटे, फिर जब इतमीनान हो जाए तो नमाज़ ख़ड़ी करो,

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾

बेशक नमाज़ अहले-ईमान पर मुक़र्रर वक़्तों के साथ फ़र्ज़ है (103)

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ

और क़ौम का पीछा करने से हिम्मत न हारो, अगर तुम दुख उठाते हो

فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ

तो वे भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह उम्मीद रखते हो

مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾ ع اِنَّآ

जो उम्मीद वे नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (104) बेशक हमने

اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ

यह किताब आपकी तरफ़ हक़ के साथ उतारी; ताकि आप लोगों के दरमियान उसके मुताबिक़

بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾ لا

फ़ैसला करें जो अल्लाह ने आपको दिखाया है, और आप ख़ियानत करने वालों की तरफ़ से झगड़ने वाले न बनें (105)

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾ ج

और अल्लाह से बख़्शिश मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (106)

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ اِنَّ

और आप उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ें जो अपने आप से ख़ियानत कर रहे हैं, बेशक

اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝١٠٧ يَّسْتَخْفُوْنَ

अल्लाह ऐसे शख़्स को पसंद नहीं करता जो ख़ियानत करने वाला, गुनहगार हो (107) वे इंसानों से तो

مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ

शरमाते हैं और अल्लाह से नहीं शरमाते; हालाँकि वह उनके साथ होता है

اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

जबकि वे सरगोशियाँ करते हैं उस बात की जिससे अल्लाह राज़ी नहीं, और जो कुछ वे करते हैं

بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝١٠٨ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ

अल्लाह उसका इहाता किए हुए है (108) तुम लोगों ने दुनिया की ज़िंदगी में तो

عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ

उनकी तरफ़ से झगड़ा कर लिया मगर क़ियामत के दिन कौन उनकी जानिब से

عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝١٠٩

अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका काम बनाने वाला (109)

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ

और जो शख़्स बुराई करे या अपने आप पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से बख़्शिश मांगे

اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١١٠ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا

तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पाएगा (110) और जो शख़्स कोई गुनाह करता है

فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا

तो वह अपने ही हक़ में (बुरा) करता है, और अल्लाह जानने वाला,

حَكِيْمًا ۝١١١ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ

हिकमत वाला है (111) और जो शख़्स कोई ग़लती या गुनाह करे फिर उसकी तोहमत किसी

بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝١١٢ ع

बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया (112)

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ

और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो

مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ

यह ठान ही लिया था कि तुमको बहका कर रहेगा; हालाँकि वे अपने आपको बहका रहे हैं,

منزل ۱

وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ

वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने तुम पर

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ

किताब और हिकमत उतारी है और तुमको वह चीज़ सिखाई है जिसको तुम नहीं जानते थे,

وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾ لَا خَيْرَ فِيْ

और अल्लाह का फ़ज़्ल तुम पर बहुत बड़ा है (113) उनकी अकसर सरगोशियों में

كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ

कोई भलाई नहीं है, भलाई वाली सरगोशी सिर्फ़ उसकी है जो सदक़ा करने को कहे या किसी

مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ

नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे, और जो शख़्स अल्लाह की

ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا

ख़ुशनूदी के लिए ऐसा करे तो हम उसको बड़ा अज्र

عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا

अता करेंगे (114) मगर जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफ़त करेगा; हालाँकि उस पर

تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ

राह वाज़ेह हो चुकी है और ईमान वालों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा

نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾ ع

तो हम उसको उसी तरफ़ चलाएंगे जिधर वह ख़ुद फिर गया और उसको जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है (115)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ

बेशक अल्लह इस बात को नहीं बख़्शेगा कि उसको शरीक ठहराया जाए और उसके सिवा गुनाहों को

ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ

बख़्श देगा जिसके लिए चाहेगा, और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया वह बहक कर

ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ

बहुत दूर जा पड़ा (116) वे अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हैं देवियों को

وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿۱۱۷﴾ لا لَّعَنَهُ اللّٰهُ م

और वे पुकारते हैं सरकश शैतान को (117) उस पर अल्लाह ने लानत की है,

الثلثة

منزل ١

ركوع ١٧

وقف لازم

وَّقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾ لا

और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बंदों में से एक मुक़र्रर हिस्सा लेकर रहूँगा (118)

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ

मैं उनको बहकाऊँगा और उनको उम्मीदें दिलाऊँगा और उनको समझाऊँगा तो वे चौपायों के

اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ

कान काटेंगे और उनको समझाउँगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे,

وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ

और जो शख़्स अल्लाह के सिवा शैतान को अपना दोस्त बनाए तो वह

خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ ؕ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا

खुले हुए नुक़सान में पड़ गया (119) वह उनसे वादे करता है और उनको उम्मीदें दिलाता है, और शैतान के

يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ

तमाम वादे धोखे के सिवा और कुछ नहीं (120) ऐसे लोगों का ठिकाना

جَهَنَّمُ ز وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِيْنَ

जहन्नम है और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे (121) और जो लोग

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनको हम ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ

नहरें बहती होंगी उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा

حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ

सच्चा है और अल्लाह से बढ़ कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा (122) न तुम्हारी

بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ

आर्ज़ुओं पर है और न अहले-किताब की आर्ज़ुओं पर, जो कोई भी

سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ لا وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا

बुरा करेगा उसका बदला पाएगा, और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती

وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ

और न मददगार (123) और जो शख़्स कोई नेक काम करेगा ख़्वाह वह मर्द हो

اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
या औरत बशर्तेकि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे

وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ
और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा (124) और उससे बेहतर किस का दीन है

اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ
जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ़ झुकादे इस हाल में कि वह नेकी करने वाला हो और वह चले दीने

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾
इब्राहीम पर जो सीधी राह पर चलने वाले थे, और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था (125)

وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह हर

بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِى النِّسَآءِ ؕ
चीज़ का इहाता किए हुए है (126) और लोग आपसे औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं,

قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
आप कह दीजिए कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म बताता है और वे आयात भी जो तुम्हें

فِى الْكِتٰبِ فِىْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِىْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ
किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़ कर सुनाई जाती हैं जिनको तुम वे नहीं देते

مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ
जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उनको निकाह में ले आओ,

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
और जो आयात कमज़ोर बच्चों के बारे में हैं और यह कि तुम यतीमों के साथ

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
इंसाफ़ करो, और जो भलाई तुम करोगे अल्लाह उसको ख़ूब

بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا
जानने वाला है (127) और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से

نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا
बदसलूकी या बेरुख़ी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में

بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ

कोई सुलह कर लें, और सुलह बेहतर चीज़ है, और लालच इंसान की तबीयत में

الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا

बसी हुई है, और अगर तुम अच्छा सुलूक करो और तक़्वे से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ

अल्लाह उससे बाख़बर है (128) और तुम हरगिज़ ताक़त नहीं रख़ते कि तुम बराबरी करो औरतों के

النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

दरमियान अगर्चे तुम ऐसा करना चाहो, पस बिल्कुल एक ही तरफ़ न झुक जाओ कि दूसरी को लटकी हुई की तरह

كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

छोड़ दो, और अगर तुम इस्लाह कर लो और तक़्वा इख़्तियार करो तो बेशक अल्लाह

كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا

बख़्शने वाला, मेहरबान है (129) और अगर वे दोनों जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी

مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا

वुसअत से बेनियाज़ कर देगा, और अल्लाह बड़ी वुसअत वाला, हिकमत वाला है (130) और अल्लाह का है जो कुछ

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ

आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और हमने हुक्म दिया है उन लोगों को

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुमको भी कि अल्लाह से डरो,

وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

और अगर तुम न मानो तब भी अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,

وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह बेनियाज़ है, सब ख़ूबियों वाला है (131) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है,

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ

और जो कुछ ज़मीन में है, और भरोसे के लिए अल्लाह ही काफ़ी है (132) अगर वह चाहे

يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ

तो तुम सब को ले जाए ऐ लोगो और दूसरों को ले आए, और अल्लाह

اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ

इस पर क़ादिर है (133) जो शख़्स दुनिया का सवाब

الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ

चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आख़िरत का सवाब भी, और अल्लाह

اللّٰهُ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا

सुनने वाला, देखने वाला है (134) ऐ ईमान वालो! इंसाफ़ पर ख़ूब

قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ

क़ायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो चाहे वे ख़ुद तुम्हारे

اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا

या तुम्हारे माँ-बाप या रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही हो, अगर कोई मालदार है या मोहताज है

فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۗ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ

तो अल्लाह तुमसे ज़्यादा उन दोनों का ख़ैरख़्वाह है, पस तुम ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि हक़ से हट जाओ,

وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

और अगर तुम बातें बनाओगे या मुँह फेर लोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उस से

خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

बाख़बर है (135) ऐ ईमान वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर

وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ

और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने

اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

पहले नाज़िल की, और जो शख़्स इनकार करे अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का

وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ

और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आख़िरत के दिन का तो वह बहक कर

بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ

दूर जा पड़ा (136) बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इनकार किया फिर ईमान लाए

كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ

फिर इनकार किया और फिर इनकार में बढ़ते गए तो अल्लाह उनको हरगिज़ नहीं बख़्शेगा

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ

और न उनको राह दिखाएगा। (137) मुनाफ़िक़ों को ख़ुशख़बरी देदो कि उनके लिए एक

عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣٨﴾ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ

दर्दनाक अज़ाब है (138) वे लोग जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को

مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ

दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज़्ज़त तलाश कर रहे हैं,

فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ

तो इज़्ज़त सारी अल्लाह के लिए है (139) और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है

فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا

कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इनकार किया जा रहा है

وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ

और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहाँ तक कि वे दूसरी बात में

حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ

मशगूल हो जाएं वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए, अल्लाह मुनाफ़िक़ों को

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ﴿١٤٠﴾ الَّذِيْنَ

और काफ़िरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है (140) वे मुनाफ़िक़

يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا

तुम्हारे बारे में इन्तिज़ार में रहते हैं, अगर तुमको अल्लाह की तरफ़ से कोई फ़तह हासिल होती है तो कहते हैं कि

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ

क्या हम तुम्हारे साथ न थे, और अगर काफ़िरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि

قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ

क्या हम तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ने पर क़ादिर न थे और फिर भी हमने तुमको मुसलमानों से बचाया,

فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ

तो अल्लाह ही तुम लोगों के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा, और अल्लाह हरगिज़

لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

काफ़िरों को मोमिनों पर कोई राह न देगा (141) बेशक मुनाफ़िक़ीन

منزل ١

ع ٢٠ / ١٧

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ

अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं; हालाँकि अल्लाह ही ने उनको धोखे में डाल रखा है, और जब वे नमाज़ के लिए खड़े

قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ

होते हैं तो सुस्ती के साथ खड़े होते हैं महज़ लोगों को दिखाने के लिए, औ वे अल्लाह को

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ

कम ही याद करते हैं (142) वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं

وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ

और न उधर हैं, और जिसको अल्लाह भटकादे आप उसके लिए कोई राह

سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا

नहीं पा सकते (143) ऐ ईमान वालो! मोमिनों को छोड़ कर

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ اَتُرِيْدُوْنَ

काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाओ, क्या तुम यह चाहते हो कि

اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾ اِنَّ

अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत क़ायम कर लो (144) बेशक

الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ

मुनाफ़िक़ीन दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे, और तुम उनका

لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا

कोई मददगार न पाओगे (145) अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इस्लाह करलें

وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ

और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करलें तो ये लोग

مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ

ईमान वालों के साथ होंगे, और अल्लाह ईमान वालों को

اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ

बड़ा सवाब देगा (146) अल्लाह तुमको अज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम

شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

शुक्रगुज़ारी करो और ईमान लाओ, अल्लाह बड़ा क़द्रदान है, सब कुछ जानने वाला है (147)

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ

अल्लाह खुल्लम खुल्ला बुरी बात कहने को पसंद नहीं करता मगर यह कि किसी पर ज़ुल्म

ظُلِمَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا

हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (148) अगर तुम भलाई को ज़ाहिर करो

اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا

या उसको छुपाओ या किसी बुराई से दर गुज़र करो तो अल्लाह मुआफ़ करने वाला,

قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

क़ुदरत रखने वाला है (149) जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इनकार कर रहे हैं

وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ

वे चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दरमियान तफ़रीक़ करें और कहते हैं कि

نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ

हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे, और वे चाहते हैं

يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ

कि उसके बीच में एक राह निकालें (150) ऐसे लोग पक्के

حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ

काफ़िर हैं, और हमने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (151) और जो लोग

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ

अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी को जुदा न किया

اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ

उनको अल्लाह उनका अज्र देगा, और अल्लाह

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ ع يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ

बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (152) अहले-किताब आपसे मुतालबा करते हैं कि आप उन पर

عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ

आसमान से एक किताब उतार लाएं, पस मूसा (अलै०) से वे इससे भी बड़ी

مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ

चीज़ का मुतालबा कर चुके हैं जबकि उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखादो, पस उनकी ज़्यादती के

الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ

सबब उन पर बिजली आ पड़ी, फिर खुली निशानियाँ आजाने के बाद उन्होंने

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا

बछड़े को माबूद बना लिया, फिर हमने उससे दर गुज़र किया, और मूसा (अलै०) को

مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ

हमने खुली हुज्जत अता की (153) और हमने ऊपर कोहे-तूर को उठाया

بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا

उनसे अहद लेने के वास्ते और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े में से दाख़िल हो सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि

لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا

सनीचर के मामले में ज़्यादती न करना, और हमने उनसे मज़बूत

غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ

अहद लिया (154) उनको जो सज़ा मिली वह इस पर कि उन्होंने अपने अहद को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की

اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا

निशानियों का इनकार किया और इस पर कि उन्होंने पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल किया, और इस बात के कहने पर कि हमारे दिल

غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ

तो बंद हैं; बलिक अल्लाह ने उनके इनकार की वजह से उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो वे कम ही

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ

ईमान लाते हैं (155) और उनके इनकार पर और मरयम (अलै०) पर

بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ

बड़ा इल्ज़ाम लगाने की वजह से (156) और उनके यह कहने पर कि हमने मसीह

عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا

ईसा बिन मरयम (अलै०) अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया गया, हालाँकि उन्होंने न उनको क़त्ल किया और न

صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

उनको सूली दी बल्कि मामला उनके लिए मुश्तबह कर दिया गया, और जो लोग इसमें इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا

वे उनके बारे में शक में पड़े हुए हैं, उनको इसका कोई इल्म नहीं सिवाए इसके कि

اِتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿١٥٧﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ

वे सिर्फ़ अंदाज़ों पर चल रहे हैं, और बेशक उन्होंने उनको क़त्ल नहीं किया (157) बल्कि अल्लाह ने

اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٥٨﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ

उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (158) और अहले-किताब में से

الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ

कोई ऐसा नहीं जो अपनी मौत से पहले उनपर ईमान न ले आए, और क़ियामत के दिन वे उन पर

يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿١٥٩﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا

गवाह होंगे (159) पस यहूद के ज़ुल्म की वजह से

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ

हमने वे पाक चीज़े उनपर हराम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं, और इस वजह से कि वे

سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿١٦٠﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا

अल्लाह की राह से रोकते थे (160) और इस वजह से कि वे सूद लेते थे; हालाँकि उससे उन्हें

عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا

मना किया गया था, और इस वजह से कि वे लोगों का माल नाहक़ खाते थे, और हमने उनमें से

لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦١﴾ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ

काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (161) मगर उनमें जो लोग इल्म में

فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ

पक्के हैं और ईमान वाले हैं वे ईमान लाए हैं उस चीज़ पर जो आप पर

اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ

उतारी गई और जो आपसे पहले उतारी गई और वे नमाज़ के पाबंद हैं

وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ

और ज़कात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं,

اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾ اِنَّآ اَوْحَيْنَآ

ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अज्र देंगे (162) हमने आप की तरफ़

اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ

वह्य भेजी है जिस तरह हमने नूह (अलै०) और उनके बाद के नबियों की तरफ़ वह्य भेजी थी,

وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰۤى اِبۡرٰهِيۡمَ وَاِسۡمٰعِيۡلَ وَاِسۡحٰقَ وَيَعۡقُوۡبَ

और हमने वह्य भेजी थी इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब

وَالۡاَسۡبَاطِ وَعِيۡسٰى وَاَيُّوۡبَ وَيُوۡنُسَ وَهٰرُوۡنَ

और औलादे-याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून

وَسُلَيۡمٰنَ ۚ وَاٰتَيۡنَا دَاوٗدَ زَبُوۡرًا ۚ ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدۡ

और सुलेमान (अलै०) की तरफ़, और हमने दाऊद (अलै०) को ज़बूर अता की (163) और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल

قَصَصۡنٰهُمۡ عَلَيۡكَ مِنۡ قَبۡلُ وَرُسُلًا لَّمۡ نَقۡصُصۡهُمۡ

हम आपको पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने आपको

عَلَيۡكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوۡسٰى تَكۡلِيۡمًا ۚ ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِيۡنَ

नहीं सुनाया, और मूसा (अलै०) से तो अल्लाह ने गुफ़्तगु की (164) (अल्लाह ने) रसूलों को ख़ुशख़बरी देने वाला

وَمُنۡذِرِيۡنَ لِئَلَّا يَكُوۡنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ

और डराने वाला बना कर भेजा; ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में

بَعۡدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا ﴿١٦٥﴾ لٰكِنِ

कोई हुज्जत बाक़ी न रहे, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (165) मगर अल्लाह

اللّٰهُ يَشۡهَدُ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اِلَيۡكَ اَنۡزَلَهٗ بِعِلۡمِهٖ ۚ

गवाह है उस पर जो उसने आप पर उतारा है कि उसने उसे अपने इल्म के साथ उतारा है,

وَالۡمَلٰۤٮِٕكَةُ يَشۡهَدُوۡنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا ؕ ﴿١٦٦﴾ اِنَّ

और फरिश्ते भी गवाही देते हैं, और अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है (166) बेशक

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ قَدۡ ضَلُّوۡا

जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका वे बहक कर

ضَلٰلًاۢ بَعِيۡدًا ﴿١٦٧﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَظَلَمُوۡا

बहुत दूर निकल गए (167) जिन लोगों ने कुफ़्र को अपनाया है (और दूसरों को अल्लाह के रास्ते से रोक कर उन पर) ज़ुल्म किया है

لَمۡ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغۡفِرَ لَهُمۡ وَلَا لِيَهۡدِيَهُمۡ طَرِيۡقًا ۙ ﴿١٦٨﴾

अल्लाह उनको बख़्शने वाला नहीं है और ना उनको कोई और रास्ता दिखाने वाला है (168)

اِلَّا طَرِيۡقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ وَكَانَ

सिवाए दोज़ख के रास्ते के जिसमें वे हमेशा हमेश रहेंगे, और यह बात

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ

अल्लाह के लिए बहुत मामूली है (169) ऐ लोगो! तुम्हारे पास

جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا

रसूल आ चुका है तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ बात लेकर, पस (उसको) मान लो ताकि

لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

तुम्हारा भला हो, और अगर न मानोगे तब भी अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में

وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

और ज़मीन में है, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (170) ऐ अहले-किताब!

لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ

अपने दीन में हद से आगे न बढ़ो और अल्लाह के बारे में कोई बात हक़ के सिवा न कहो,

اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

मसीह ईसा बिन मरयम (अलै०) तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका

وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ز فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

एक कलिमा हैं जिसको उसने मरयम (अलै०) की तरफ़ डाला था और उसकी जानिब से एक रूह हैं, पस अल्लाह पर

وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا

और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि (ख़ुदा) तीन हैं, (ऐसी बातें कहने से) बाज़ आजाओ यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है,

اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا

माबूद तो बस एक अल्लाह ही है, वह पाक है कि उसकी औलाद हो, उसी का है जो कुछ

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ ع

आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह ही का कारसाज़ होना काफ़ी है (171)

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ

मसीह को हरगिज़ अल्लाह का बंदा बनने से आर (नागवारी) न होगी

وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ

और न मुक़र्रब फ़रिश्तों को होगी, और जो अल्लाह की बंदगी से

عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

आर (नागवारी) करेगा और तकब्बुर करेगा तो अल्लाह ज़रूर सबको अपने पास जमा करेगा (172)

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيۡهِمۡ

फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उनको वह पूरा पूरा

اُجُوۡرَهُمۡ وَيَزِيۡدُهُمۡ مِّنۡ فَضۡلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ اسۡتَنۡكَفُوۡا

अज्र देगा और अपने फ़ज़्ल से उनको मज़ीद देगा, और जिन लोगों ने आर

وَاسۡتَكۡبَرُوۡا فَيُعَذِّبُهُمۡ عَذَابًا اَلِيۡمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوۡنَ

और तकब्बुर किया होगा उनको दर्दनाक अज़ाब देगा और वे अल्लाह के

لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ﴿۱۷۳﴾ يٰۤاَيُّهَا

मुक़ाबले में न किसी को अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार (173) ऐ लोगो!

النَّاسُ قَدۡ جَآءَكُمۡ بُرۡهَانٌ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَاَنۡزَلۡنَاۤ

तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलील आ चुकी है और हमने

اِلَيۡكُمۡ نُوۡرًا مُّبِيۡنًا ﴿۱۷۴﴾ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰهِ وَاعۡتَصَمُوۡا

तुम्हारे ऊपर एक वाज़ेह रोशनी उतार दी (174) पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसको उन्होंने मज़बूत

بِهٖ فَسَيُدۡخِلُهُمۡ فِىۡ رَحۡمَةٍ مِّنۡهُ وَفَضۡلٍ ۙ وَّيَهۡدِيۡهِمۡ

पकड़ लिया उनको ज़रूर अल्लाह अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और उनको अपनी तरफ़

اِلَيۡهِ صِرَاطًا مُّسۡتَقِيۡمًا ﴿۱۷۵﴾ يَسۡتَفۡتُوۡنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ

सीधा रास्ता दिखाएगा (175) लोग आपसे हुक्म पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह

يُفۡتِيۡكُمۡ فِى الۡكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امۡرُؤٌا هَلَكَ لَيۡسَ لَهٗ

तुमको "कलाला" के बारे में हुक्म बताता है, अगर कोई शख़्स मर जाए और उसकी

وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخۡتٌ فَلَهَا نِصۡفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

कोई औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो उसके लिए उसके तरके का आधा हिस्सा है, और वह मर्द उस बहन का वारिस होगा

اِنۡ لَّمۡ يَكُنۡ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنۡ كَانَتَا اثۡنَتَيۡنِ فَلَهُمَا

अगर उस बहन की कोई औलाद न हो, और अगर दो बहनें हों तो उनके लिए उसके

الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنۡ كَانُوۡۤا اِخۡوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً

तरके का दो तिहाई होगा, और अगर कई भाई बहन मर्द औरतें हों

فَلِلذَّكَرِ مِثۡلُ حَظِّ الۡاُنۡثَيَيۡنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمۡ

तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है, अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है

اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۷۶﴾

ताकि तुम गुमराह न हो, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है (176)

सूरह मायदा मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई सिवाए आयत नम्बर (3) के जो अरफ़ात के दिन हज्जतुल-विदा के मौक़े पर नाज़िल हुई, इसमें (120) आयतें और (16) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (112) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (5) नम्बर पर है और सूरह फ़तह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2842) कलिमात हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

इसमें (12464) हुरूफ़ हैं

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ

ऐ ईमान वालो! अहद व पैमान को पूरा करो, तुम्हारे लिए मवेशी की क़िस्म के

بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى

सब जानवर हलाल किए गए सिवाए उनके जिनका ज़िक्र आगे किया जा रहा है, मगर एहराम की हालत में

الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿۱﴾

शिकार को हलाल न जानो, बेशक अल्लाह फ़ैसला करता है जो चाहता है (1)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ

ऐ ईमान वालो! बे हुर्मती न करो अल्लाह की निशानियों की और न हुरमत वाले

الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْیَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰۤمِّیْنَ

महीनों की और न हरम में क़ुर्बानी वाले जानवरों की और न पट्टे बंधे हुए नियाज़ के जानवरों की और न हुरमत वाले

الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ

घर की तरफ़ आने वालों की जो अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी ख़ुशनूदी ढूंडने निकले हैं,

وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ

और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो, और किसी क़ौम की दुश्मनी कि उस ने तुम को

قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ

मस्जिदे-हराम से रोका है तुमको इस पर न उभारे कि तुम ज़्यादती करने लगो,

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۠ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى

तुम नेकी और तक़्वे में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह

الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

और ज़्यादती में एक दूसरे की मदद न करो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त

الْعِقَابِ ﴿٢﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ

अज़ाब देने वाला है (2) तुम पर हराम किया गया मुर्दार और ख़ून और सुअर का

الْخِنْزِيْرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ

गोश्त और वह जानवर जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम पर ज़बह किया गया हो और जो मर गया हो गला घोंटने से

وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ أَكَلَ

या चोट लगने से या ऊँचाई से गिर कर या सींग मारे जाने से और वह जिसको दरिंदे ने

السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ

खाया हो मगर जिसको तुमने ज़बह कर लिया हो, और वह जो बुतों की ख़ास जगहों पर ज़बह किया गया हो और यह कि

تَسْتَقْسِمُوْا بِالْأَزْلَامِ ط ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط اَلْيَوْمَ يَئِسَ

तुम तक़सीम करो जुए के तीरों से, ये सब गुनाह के काम हैं, आज

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ط

काफ़िर तुम्हारे दीन की तरफ़ से मायूस होगए पस तुम उनसे न डरो बल्कि सिर्फ़ मुझ से डरो,

اَلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी

وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِيْنًا ط فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ

और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया, पस जो भूख से मजबूर हो जाए

غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمٍ لا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣﴾

लेकिन गुनाह पर माइल न हो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (3)

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمْ ط قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ لا

वे आपसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ हलाल की गई है, कह दीजिए कि तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल हैं,

وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا

और शिकारी जानवरों में से जिनको तुमने सधाया है तुम उनको सिखाते हो उसमें से

عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ز فَكُلُوْا مِمَّآ أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ

जो अल्लाह ने तुमको सिखाया है, पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ कर रखें और उनपर अल्लाह का

اللّٰهِ عَلَيْهِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط إِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾

नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है (4)

اَلۡيَوۡمَ اُحِلَّ لَـكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا

आज तुम्हारे लिए सब पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गई, और अहले किताब का खाना

الۡكِتٰبَ حِلٌّ لَّـكُمۡ وَطَعَامُكُمۡ حِلٌّ لَّهُمۡ‌ ۚ وَالۡمُحۡصَنٰتُ

तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलालह है, (और हलाल हैं तुम्हारे लिए) पाक दामन औरतें

مِنَ الۡمُؤۡمِنٰتِ وَالۡمُحۡصَنٰتُ مِنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ

मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिनको तुमसे पहले

مِنۡ قَبۡلِكُمۡ اِذَاۤ اٰتَيۡتُمُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ مُحۡصِنِيۡنَ

किताब दी गई जब तुम उन्हें उनका महर देदो इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो

غَيۡرَ مُسٰفِحِيۡنَ وَلَا مُتَّخِذِىۡۤ اَخۡدَانٍ‌ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ

न कि बदकारी करने वाले हो और न ही चोरी छुपे दोस्ती करने वाले, और जो शख़्स ईमान के साथ

بِالۡاِيۡمَانِ فَقَدۡ حَبِطَ عَمَلُهٗ‌ ۚ وَهُوَ فِى الۡاٰخِرَةِ مِنَ

कुफ़्र करेगा तो उसका अमल ज़ाए हो जाएगा और वह आख़िरत में से नुक़सान

الۡخٰسِرِيۡنَ ۝٥ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا قُمۡتُمۡ اِلَى

उठाने वालों में से होगा (5) ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए

الصَّلٰوةِ فَاغۡسِلُوۡا وُجُوۡهَكُمۡ وَاَيۡدِيَكُمۡ اِلَى الۡمَرَافِقِ

उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कोहनियों तक धोलो

وَامۡسَحُوۡا بِرُءُوۡسِكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ اِلَى الۡـكَعۡبَيۡنِ‌ ؕ وَاِنۡ

और अपने सरों का मसह करो और अपने पाँव को टख़नों तक धो डालो, और अगर

كُنۡتُمۡ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوۡا‌ ؕ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَوۡ عَلٰى

तुम जनाबत की हालत में हो तो गुस्ल करो, और अगर तुम मरीज़ हो या

سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ اَحَدٌ مِّنۡكُمۡ مِّنَ الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ

तुम सफ़र में हो या तुम में से कोई इस्तिंजा से आए या तुमने औरत से

النِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَيَمَّمُوۡا صَعِيۡدًا طَيِّبًا

सोहबत की हो फिर तुमको पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो

فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡهِكُمۡ وَاَيۡدِيۡكُمۡ مِّنۡهُ‌ ؕ مَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ

और अपने चेहरों और हाथों पर उससे मसह कर लो, अल्लाह नहीं चाहता कि

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ

तुम पर कोई तंगी डाले; बल्कि वह चाहता है कि तुमको पाक करे

وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ٦ وَاذْكُرُوْا

और तुम पर अपनी नेमत पूरी करे; ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो (6) और अपने ऊपर

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ

अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके अहद को याद करो जो उसने तुमसे लिया है,

اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

जब तुमने कहा कि हम ने सुना और हमने माना, और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا

दिलों की बात तक को जानता है (7) ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए

قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

क़ायम रहने वाले, इंसाफ़ के साथ गवाही देने वाले बनो, और किसी गिरोह की दुश्मनी

شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ

तुमको इसपर न उभारे कि तुम इंसाफ़ न करो (बल्कि तुम) इंसाफ़ करो यही तक़्वे से

لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ٨

ज़्यादा क़रीब है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह को ख़बर है जो कुछ तुम करते हो (8)

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए

مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

बख़्शिश और बड़ा अज्र है (9) और जिन्होंने इनकार किया और हमारी निशानियों को

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

झुठलाया ऐसे लोग दोज़ख़ वाले हैं (10) ऐ ईमान वालो!

اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ

अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब एक क़ौम ने इरादा किया कि

اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ

तुम्हारी जानिब हाथ बढ़ाए तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪
और अल्लाह से डरो, और ईमान वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए (11)

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا
और अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद लिया और हमने उनमें से

مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ
बारह सरदार मुक़र्रर किए, और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ,

لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ
अगर तुम नमाज़ क़ायम करोगे और ज़कात अदा करोगे और मेरे पैग़म्बरों पर

بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को क़र्ज़े हसन दोगे

لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ
तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर कर दूँगा और तुमको ज़रूर ऐसे बाग़ों में

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ
दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, पस तुम में से जो शख़्स इसके बाद इनकार

مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ⑫ فَبِمَا نَقْضِهِمْ
करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया (12) पस उनके वादे

مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ
तोड़ देने की वजह से हमने उन पर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया,

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا
वे गुफ़्तगू को उसकी (सही) जगह से बदल देते हैं और जो कुछ उनको नसीहत की गई थी

ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ
उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे, और आप बराबर उनकी किसी न किसी ख़्यानत से आगाह होते रहते हो

اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
सिवाए थोड़े लोगों के, पस उनको मुआफ़ कर दें और उनसे दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह

يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ⑬ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى
नेकी करने वालों को पसंद करता है (13) और कुछ लोग कहते हैं कि हम नसरानी हैं,

اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ فَاَغْرَيْنَا

उनसे हमने अहद लिया था जो कुछ नसीहत उनको की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे, फिर हमने

بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَسَوْفَ

क़ियामत तक के लिए उनके दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया, और आख़िर में

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

अल्लाह उनको आगाह करदेगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे (14) ऐ अहले किताब!

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ

तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह किताबे-इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने

تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۥ قَدْ جَآءَكُمْ

खोल रहा है जिनको तुम छुपाते थे और वह दरगुज़र करता है बहुत सी चीज़ों से, बेशक तुम्हारे पास

مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ۙ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ

अल्लाह की तरफ़ से एक रोशनी और एक ज़ाहिर करने वाली किताब आ चुकी है (15) उसके ज़रिए से अल्लाह

مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ

उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रिज़ा के तालिब हैं और अपनी तौफ़ीक़ से

مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى

उनको अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ़

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ

उनकी रहनुमाई करता है (16) बेशक उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही तो

اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ

मसीह बिन मरयम है, आप कह दीजिए कि फिर कौन इख़्तियार रखता है

مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ

अल्लाह के आगे किसी भी चीज़ का अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह बिन

مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ وَلِلّٰهِ

मरयम को और उनकी माँ को और जितने लोग ज़मीन में हैं सब को, और अल्लाह ही के लिए है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ

बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है, वह पैदा करता है

مَا يَشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَقَالَتِ

जो कुछ चाहता है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (17) और

الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۭ قُلْ

यहूद व नसारा कहते हैं कि हम ही अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं, आप कह दीजिए कि

فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ

फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुमको सज़ा क्यों देता है, नहीं बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई

خَلَقَ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۭ

मख़लूक़ में से एक आदमी हो, वह जिसको चाहेगा बख़्शेगा और जिसको चाहेगा अज़ाब देगा,

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۡ وَاِلَيْهِ

और अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आसमानों की और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है, और उसी की तरफ़

الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا

लौट कर जाना है (18) ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल आचुका है

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا

वह तुमको साफ़ साफ़ बता रहा है रसूलों के एक वक़्फ़े के बाद; ताकि तुम यह न कहो कि

جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۡ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ

हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला नहीं आया, पस अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाला

وَّنَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾ ع وَاِذْ قَالَ

और डराने वाला आ गया है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (19) और जब

مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

मूसा (अलै०) ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो

اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ

कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए और तुमको बादशाह बनाया और तुमको वह सब दिया

مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا

जो दुनिया में किसी और को नहीं दिया था (20) ऐ मेरी क़ौम! दाख़िल हो जाओ

الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا

उस पाक ज़मीन में जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख़ दी है और अपनी पीठ की तरफ़

عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾ قَالُوْا

कहाः उन्होंने (21) जाओगे पड़ में नुक़सान वरना लौटो न

يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا

ऐ मूसा! वहाँ एक सख़्त मिज़ाज क़ौम आबाद है, हम हरगिज़ वहाँ न जाएंगे

حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا

जब तक वह वहाँ से न निकल जाए, हाँ अगर वह वहाँ से निकल जाए तो हम

دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ

दाख़िल हो जाएंगे (22) (उनमें से) दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर

اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ

अल्लाह ने इनाम किया था उन्होंने कहा कि तुम उनपर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ, जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे

فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۬ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ

तो तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا

मोमिन हो (23) उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! हम कभी वहाँ दाख़िल न होंगे

مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا

जब तक वे लोग वहाँ हैं, पस तुम और तुम्हारा अल्लाह दोनों जाकर लड़ो, हम

هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ

यहाँ बैठे हैं (24) मूसा (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे परवरदिगार! अपने और अपने भाई के

وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

सिवा किसी पर मेरा इख़्तियार नहीं, पस आप हमारे और इस नाफ़रमान क़ौम के दरमियान जुदाई पैदा फ़रमा दीजिए (25)

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ

अल्लाह ने कहाः वह मुल्क उन पर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया है,

يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ

ये लोग ज़मीन में भटकते फिरेंगे, पस आप इस नाफ़रमान क़ौम पर

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ع وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ

अफ़सोस न करें (26) और उनको आदम (अलै०) के दोनों बेटों का क़िस्सा हक़ के साथ सुनाइए,

اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ

जबकि उन दोनों ने क़ुर्बानी पेश की तो उनमें से एक की कुर्बानी कुबूल हुई और दूसरे की क़ुर्बानी

مِنَ الْاٰخَرِ ط قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ط قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ

क़ुबूल न हुई, उसने कहाः मैं तुझको मार डालूँगा, उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ़ परहेज़गारों

اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ

ही से क़ुबूल करता है (27) अगर तुम मुझे क़त्ल करने के लिए हाथ

لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ج

उठाओगे तो मैं तुमको क़त्ल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊँगा,

اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ

मैं डरता हूँ उस अल्लाह से जो सारे जहानों का रब है (28) मैं चाहता हूँ कि

تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ج

मेरा और अपना गुनाह तुम ही लेलो फिर तुम आग वालों में शामिल हो जाओ,

وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ج فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ

और यही सज़ा है ज़ुल्म करने वालों की (29) फिर उसके नफ़्स ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर

قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

राज़ी कर लिया और उसने उसे क़त्ल कर डाला, फिर वह नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया (30)

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ

फिर अल्लाह ने एक कौए को भेजा जो ज़मीन में कुरेदता था; ताकि वह उसको दिखाए

كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ط قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ

कि वह अपने भाई की लाश को किस तरह छुपाए, उसने कहाः अफ़सोस मेरी हालत पर कि मैं

اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ

इस कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को

اَخِيْ ج فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ج مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ج

छुपा देता, पस वह शरमिंदगी उठाने वालों में से हो गया (31) इसी सबब से

كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख़्स किसी को क़त्ल करे

بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

बग़ैर इसके कि उसने किसी को क़त्ल किया हो या ज़मीन में फ़साद बरपा किया हो तो गोया उसने सारे

النَّاسَ جَمِيْعًا ط وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا

इंसानों को क़त्ल कर डाला, और जिसने एक शख़्स को बचाया तो गोया उसने सारे

النَّاسَ جَمِيْعًا ط وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ز

इंसानों को बचा लिया, और हमारे पैग़म्बर उनके पास खुले हुए अहकाम लेकर आए

ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ

उसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग ज़मीन में

لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ

ज़्यादतियाँ करते हैं (32) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और ज़मीन में

وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا

फ़साद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सज़ा यही है कि उनको क़त्ल कर दिया जाए

اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ

या वह सूली पर चढ़ाए जाएं या उनके हाथ और पाँव मुख़ालिफ़ सिम्त से

خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ط ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ

काटे जाएं या उनको मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए, यह उनकी रुसवाई है

فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾ لا

दुनिया में और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है (33)

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ج

मगर जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे उनपर क़ाबू पा लेने से पहले

فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ ع يٰٓاَيُّهَا

तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (34) ऐ ईमान वालो!

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ

अल्लाह से डरो और उसका क़ुर्ब तलाश करो

وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ

और उसकी राह में जद्दो-जहद करो; ताकि तुम कामयाब हो जाओ (35) बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا

जिन लौगों ने कुफ़्र किया है अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है

وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

और उतना ही और हो; ताकि वे उसको फ़िदया में देकर क़ियामत के दिन अज़ाब से छूट जाएं

مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيْدُوْنَ

तब भी वह उनसे क़ुबूल न किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (36) वे चाहेंगे कि

اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫

आग से निकल जाएं हालाँकि वे उससे निकल न सकेंगे,

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ

और उनके लिए एक मुस्तक़िल अज़ाब है (37) और चोर मर्द और चोर औरत

فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ

दोनों के हाथ काट दो, यह उनके करतूत का बदला है और अल्लाह की तरफ़ से इबरतनाक

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ

सज़ा, और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (38) फिर जिसने अपने ज़ुल्म के बाद

ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तौबा की और इस्लाह कर ली तो अल्लाह बेशक उसपर तवज्जोह करेगा, और अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (39) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह आसमानों और ज़मीन की

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ

सलतनत का मालिक है, वह जिसको चाहे सज़ा दे और जिसको चाहे माफ़ कर दे,

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (40) ऐ (प्यारे)

الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ

नबी! आपको वे लोग रंज में न डालें जो कुफ़्र की राह में बड़ी तेज़ी दिखा रहे हैं

مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ

चाहे वह उन लोगों में से हों जो अपने मुँह से कहते हों कि हम ईमान लाए; हालाँकि उनके दिल

مع

قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ

ईमान नहीं लाए या उनमें से हों जो यहूदी हैं, झूठ के बड़े

لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ

सुनने वाले, सुनने वाले दूसरे लोगों की ख़ातिर जो आपके पास नहीं आए,

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ

वे गुफ़्तगू को उसकी जगह से हटा देते हैं, वे लोगों से कहते हैं

اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ

कि अगर तुमको यह हुक्म मिले तो क़ुबूल कर लेना और अगर यह हुक्म न मिले तो उससे

فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ

बच कर रहना, और जिसको अल्लाह फ़ितने में डालना चाहे तो आप अल्लाह के मुक़ाबले में

لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ

उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते, यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने

اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۙ

नहीं चाहा कि उनके दिलों को पाक करे, उनके लिए दुनिया में रुसवाई है

وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾ سَمّٰعُوْنَ

और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है (41) वे झूठ के

لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ

बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं, अगर वे आपके पास आएं तो चाहें तो आप उनके दरमियान

بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ

फ़ैसला कर दें या चाहें तो उनको टाल दें, और अगर आप उनको टाल दें तो वे

فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ

आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते, और अगर आप फ़ैसला करें तो उनके दरमियान इंसाफ के मुताबिक़

بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ

फ़ैसला करें, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है (42) और वे कैसे

يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ

आपको फ़ैसला करने वाला बना सकते हैं हालाँकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मोजूद है और फिर

منزل ٢

يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾

वे उससे मुँह मोड़ रहे हैं, और ये लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हैं (43)

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ

बेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है, उसी के मुताबिक़

بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا

अल्लाह के फ़रमाँबरदार अम्बिया यहूदी लोगों के दरमियान फ़ैसला किया करते थे और उनके

وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ

अल्लाह वाले लोग और उलमा भी; इस लिए कि वह अल्लाह की किताब पर निगहबान ठहराए

اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ

गए थे और वे उसके गवाह थे, पस तुम इंसानों से न डरो

وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ

(बल्कि) मुझ से डरो और मेरी आयतों को मामूली क़ीमत के बदले न बेचो,

وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

और जो कोई उसके मुआफ़िक फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ

काफ़िर हैं (44) और हमने इस किताब में लिख दिया है कि जान के बदले

بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ

जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक

وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ

और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और जख्मों का बदला

قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ

उनके बराबर होगा, फिर जिसने उसको मुआफ़ कर दिया तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा है,

وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

और जो शख़्स उसके मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ

ज़ालिम हैं (45) और हमने उनके पीछे ईसा बिन

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ص

मरयम को भेजा तस्दीक़ करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की

وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ لا وَّمُصَدِّقًا

और हमने उनको इंजील दी जिसमें हिदायत और रोशनी है और वह तस्दीक़ करने वाली थी

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً

अपने से पहली किताब तौरात की और हिदायत और नसीहत डरने वालों

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ

के लिए (46) और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुताबिक़ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उसमें

اللّٰهُ فِيْهِ ط وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

उतारा है, और जो कोई उसके मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ

तो वही लोग नाफ़रमान हैं (47) और हमने आपकी तरफ़ किताब उतारी

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

हक़ के साथ, तस्दीक़ करने वाली पिछली किताब की

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

और उसके मज़ामीन पर निगहबान, पस आप फ़ैसला करें उसके मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा है,

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ط لِكُلٍّ

और जो हक़ आपके पास आ चुका है उसको छोड़ कर उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करें, हमने तुम

جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

में से हर ऐक के लिए एक शरीअ़त और एक तरीक़ा ठहराया है, और अगर अल्लाह चाहता

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ

तो तुमको एक ही उम्मत बना देता मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी

اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ط اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا

आज़माइश करे पस तुम भलाइयों की तरफ़ दोड़ो, आख़िरकार तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ لا وَاَنِ احْكُمْ

फिर वह तुमको आगाह कर देगा उस चीज़ से जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे थे (48) और उनके दरमियान उसके मुताबिक़

بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

फ़ैसला कीजिए जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न कीजिए

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

और उन लोगों से बचिए कि कहीं वे आपको फिस्ला न दें आपके ऊपर अल्लाह के उतारे हुए

اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

किसी हुक्म से, पस अगर वे फिर जाएं तो जान लीजिए कि अल्लाह उनको उनके

اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ

बअज़ गुनाहों की सज़ा देना चाहता है, और यक़ीनन लोगों में से ज़्यादा

النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ

इंसान नाफ़रमान हैं (49) क्या ये लोग जाहिलियत का फ़ैसला चाहते हैं?

وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع

और अल्लाह से बढ़ कर किसका फ़ैसला हो सकता है उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं (50)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त

اَوْلِيَآءَ ؕۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ

न बनाओ, वह एक दूसरे के दोस्त हैं, और तुम में से जो शख़्स उनको

مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्ही में से होगा, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

राह नहीं दिखाता (51) पस आप देखोगे कि जिन लोगों के दिलों में रोग है

يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا

वे उन्हीं की तरफ़ दोड़ रहे हैं, वे कहते हैं कि हमको यह अंदेशा है कि हम किसी मुसीबत में

دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ

ना फंस जाएं, तो मुमकिन है कि अल्लाह फ़तह देदे या अपनी तरफ़ से कोई ख़ास बात

مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ

ज़ाहिर कर दे तो ये लोग उस चीज़ पर जिसको यह अपने दिलों में छुपाए हुए हैं

وقف غفران وقف منزل عند البعض ١٢ وقف لازم

نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ

शरमिंदा होंगे (52) और उस वक़्त अहले ईमान कहेंगे कि क्या ये वही लोग हैं जो

الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ

ज़ोर शोर से अल्लाह की क़समें खाकर यक़ीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे

لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

साथ हैं, उनके सारे आमाल ज़ाए हो गए और वे घाटे में रहे (53)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो शख़्स अपने दीन से फिर जाए

فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ

तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को लाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उनको महबूब होगा,

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ز

वे मुसलमानों के लिए नर्म और काफ़िरों के ऊपर सख़्त होंगे,

يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ

वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से

لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

न डरेंगे, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिसको चाहता है अता करता है,

وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और अल्लाह वुसअत वाला, इल्म वाला है (54) तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

और वे ईमान वाले हैं जो नमाज़ क़ायम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

और ज़कात अदा करते हैं और वे (अल्लाह के आगे) झुकने वाले हैं (55) और जो शख़्स अल्लाह

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ

और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की

اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जमाअत ही ग़ालिब रहने वाली है (56) ऐ ईमान वालो!

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا

उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और खेल बना लिया है

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ

उन लोगों में से जिनको तुमसे पहले किताब दी गई और न

اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

काफ़िरों को, और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो (57)

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا

और जब तुम नमाज़ के लिए बुलाते हो तो वे लोग उसको मज़ाक

وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ

और खेल बना लेते हैं, इसकी वजह यह है कि वे अक़्ल नहीं रखते (58) (ऐ नबी) आप कह दीजिए

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا

कि ऐ अहले किताब! तुम हमसे सिर्फ़ इस लिए ज़िद रखते हो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और

بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ

उस पर जो हमारी तरफ़ उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतरा,

وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ

और तुम में से अकसर लोग नाफ़रमान हैं (59) आप कह दीजिए कि क्या मैं तुमको बताऊँ वह

بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ

जो अल्लाह के यहाँ अंजाम के ऐतबार से उससे भी ज़्यादा बुरी है, वह जिसपर अल्लाह ने

اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ

लानत की और जिस पर उसका ग़ज़ब हुआ और जिनमें से बंदर

وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ

और सुअर बना दिए और उन्होंने शैतान की इबादत की, ऐसे लोग ठिकाने के ऐतबार से

مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾ وَاِذَا

बद तर और राहे-रास्त से बहुत दूर हैं (60) और जब वे

جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ

तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए; हालाँकि वे काफ़िर आए थे

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا

और काफ़िर ही चले गए, और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज़ को जिसको वे

يَكْتُمُوْنَ ۝٦١ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ

छुपा रहे हैं (61) और आप उनमें से अकसर को देखोगे कि वे गुनाह

وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا

और ज़ुल्म और हराम खाने पर दोड़ते हैं, कैसे बुरे काम हैं जो वे

يَعْمَلُوْنَ ۝٦٢ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ

कर रहे हैं (62) क्यों नहीं रोकते उनके बड़े बुज़ुर्ग और उलमा

عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا

उनको बुरी बात कहने से और हराम खाने से, कैसे बुरे काम हैं

كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝٦٣ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ

जो वे कर रहे हैं (63) और यहूद कहते हैं कि अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं,

غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ

उन्हीं के हाथ बंध जाएं और लानत हो उनपर ऐसी बात कहने पर; बल्कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं,

يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ

वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है, और आपके ऊपर आपके परवरदिगार की तरफ़ से जो कुछ उतरा है

اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا

वह उनमें से अकसर लोगों की सरकशी और इनकार को बढ़ा रहा है, और हमने उनके दरमियान

بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ

दुश्मनी और कीना क़ियामत तक के लिए डाल दिया है,

كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ

जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसको बुझा देता है, और वे ज़मीन में

فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٦٤

फ़साद फैलाने में मसरूफ़ हैं; हालाँकि अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसंद नहीं करता (64)

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ

और अगर अहले-किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम ज़रूर उनकी बुराईयाँ

سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ

उनसे दूर कर देते और उनको नेमतों के बाग़ात में दाख़िल करते (65) और अगर वे

اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ

तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी जो उनपर उनके रब की तरफ़ से

مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ

उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने क़दमों के नीचे से,

مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا

कुछ लोग उनमें से सीधी राह पर हैं लेकिन ज़्यादा लोग उनमें से ऐसे हैं जो बहुत

يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

बुरा कर रहे हैं (66) ऐ (प्यारे) नबी! जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से उतारा है

مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ

उसको पहुँचा दीजिए, और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो आपने अल्लाह के पैग़ाम को नहीं पहुँचाया,

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى

और अल्लाह आपको लोगों से बचाएगा, अल्लाह यक़ीनन मुनकिर लोगों को

الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى

राह नहीं दिखाता (67) आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम किसी चीज़

شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ

पर नहीं जब तक कि तुम क़ायम न करो तौरात और इंजील को और उसको जो तुम्हारे ऊपर

اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ

उतरा है तुम्हारे रब की तरफ़ से, और जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा गया है वह यक़ीनन

اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ

उनमें से अकसर की सरकशी और इनकार को बढ़ाएगा, पस आप इनकार करने वालों पर

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अफ़सोस न करें (68) बेशक जो लोग ईमान लाए

وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ

और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी (उनमें से) जो शख़्स भी ईमान लाए

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ

अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ

अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे (69) हमने बनी इस्राईल से

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا

अहद लिया और उनकी तरफ़ बहुत से रसूल भेजे, जब जब

جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا

कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसको उनका जी न चाहता था तो बअज़ रसूलों को

كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ

उन्होंने झुठलाया और बअज़ को क़त्ल कर दिया (70) और ख़्याल किया कि कोई ख़राबी

فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ

न होगी पस वे अंधे और बहरे बन गए, फिर अल्लाह ने उनपर तवज्जोह की फिर

عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

उनमें से बहुत से अंधे और बहरे बन गए, और अल्लाह देखता है जो कुछ

يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ

वे कर रहे हैं (71) यक़ीनन उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही तो

هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ

मसीह बिन मरयम है; हालाँकि मसीह ने कहा था कि

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ

ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, जो शख़्स

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ

अल्लाह के साथ शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उसपर जन्नत

وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

और उसका ठिकाना आग है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (72)

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ

यक़ीनन उन लोगों ने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में का तीसरा है;

وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا

हालाँकि कोई माबूद नहीं सिवाए एक माबूद के, और अगर वे बाज़ न आए

عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ़्र पर क़ायम रहने वालों को एक दर्दनाक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ

अज़ाब पकड़ेगा (73) ये लोग अल्लाह के सामने तौबा क्यों नहीं करते

وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا

और उससे मुआफ़ी क्यों नहीं मांगते, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (74) मसीह बिन मरयम

الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ

तो सिर्फ़ एक रसूल हैं, उनसे पहले भी बहुत से

قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ

रसूल गुज़र चुके हैं, और उनकी वालिदा बहुत सच्ची थीं, दोनों खाना खाते

الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ

थे, देखिए कि हम किस तरह उनके सामने दलीलें बयान कर रहे हैं फिर देखिए कि

انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ

वे किधर उल्टे चले जा रहे हैं (75) आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर

دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ

ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का इख़्तियार रखती है और न फायदे का,

وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ

और सुनने वाला, जानने वाला सिर्फ़ अल्लाह ही है (76) आप कह दीजिए कि ऐ अहले

الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ

किताब! अपने दीन में हक़ को छोड़ कर हद से आगे न निकलो

وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

और उन लोगों के ख़्यालात की पैरवी न करो जो उससे पहले गुमराह हुए

وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ ع

और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया और वे सीधी राह से भटक गए (77)

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन पर लानत की गई

دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا

दाऊद और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान से; इस लिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वे हद से आगे

يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ

बढ़ जाते थे (78) वे एक दूसरे को मना नहीं करते थे (उस) बुराई से

فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَرٰى كَثِيْرًا

जो वे करते थे, निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे थे (79) आप उनमें से बहुत लोगों को

مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ

देखोगे कि कुफ़्र करने वालों से दोस्ती रखते हैं, कैसी बुरी चीज़ है जो उन्होंने

لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ

अपने लिए आगे भेजी है कि अल्लाह का ग़ज़ब हुआ उन पर और वे हमेशा

هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ

अज़ाब में पड़े रहेंगे (80) अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर

وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ

और उसपर जो उसकी तरफ़ उतरा है तो वे काफ़िरों को दोस्त न बनाते, मगर

كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ

उनमें से अकसर नाफ़रमान हैं (81) ईमान वालों के साथ

عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ

दुश्मनी में आप सबसे बढ़कर यहूद और मुशिरकीन को पाओगे,

وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

और ईमान वालों के साथ दोस्ती में आप सबसे ज़्यादा उन लोगों को पाओगे

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ

जो अपने आपको नसारा कहते हैं, यह इस लिए कि उन में

قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

आलिम और राहिब हैं और इस लिए कि वे तकब्बुर नहीं करते (82)

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो आप देखोगे कि उनकी आँखों से

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ

आँसू जारी हैं इस वजह से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया, वे पुकार उठते हैं कि

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए पस आप हमको गवाही देने वालों में लिख दीजिए (83) और हम क्यों न

لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ

ईमान लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हम को पहुँचा है जबकि हम यह आरज़ू रखते हैं कि

يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَاَثَابَهُمُ

हमारा रब हमको नेक लोगों के साथ शामिल करेगा (84) पस अल्लाह उनको इस क़ौल के

اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

बदले में ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِيْنَ

वे उनमें हमेशा रहेंगे, और यही बदला है नेक अमल करने वालों का (85) और जिन्होंने

كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾ ع

इनकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं (86)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ

ऐ ईमान वालो! उन पाकीज़ा चीज़ों को हराम न ठहराओ जो

اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ

अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और हद से न बढ़ो, अल्लाह हद से बढ़ने वालों को

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠

पसंद नहीं करता (87) और अल्लाह ने तुमको जो हलाल पाकीज़ा चीज़ें दी हैं उनमें से खाओ,

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ

और उस अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो (88) अल्लाह तुम्हारी

اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا

बेमान क़समों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करता मगर उन क़समों पर वह ज़रूर तुम्हारी पकड़ करेगा जिनको

عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ
तुमने मज़बूत बांधा, ऐसी क़सम का कफ़्फ़ारा है दस मिसकीनों को
مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ
दरमियानी दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़ा पहना देना
اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ
या एक गुलाम आज़ाद करना, और जिसको मयस्सर न हो वह तीन दिन के रोज़े रखे,
ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا
यह कफ़्फ़ारा है तुम्हारी क़समों का जबकि तुम क़सम खा बैठो, और अपनी क़समों की
اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
हिफ़ाज़त करो, इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि
تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ
तुम शुक्र अदा करो (89) ऐ ईमान वालो! बेशक शराब
وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ
और जुआ और बुतों के स्थान और पांसे सब गंदे काम हैं
الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ
शैतान के पस तुम उनसे बचो; ताकि तुम कामयाब हो जाओ (90) शैतान तो यही
الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي
चाहता है कि तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग्ज़ डाल दे
الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ
शराब औ जुए के ज़रिए से और तुमको अल्लाह की याद से
الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम इनसे बाज़ आ जाओगे? (91) और इताअत करो अल्लाह की
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
और इताअत करो रसूल की और बचो, फिर अगर तुम मुँह फेर लोगे
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ
तो जान लो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ वज़ाहत के साथ पहुँचा देना है (92) जो लोग

عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيمَا
ईमान लाए और नेक काम किए उन पर उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं

طَعِمُوٓا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَّآمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
जो वे खा चुके जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किए

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّأَحْسَنُوا ط وَاللّٰهُ
फिर डरे और ईमान लाए फिर डरे और नेक काम किए, और अल्लाह

يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾ ع يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ
नेक काम करने वालों के साथ महब्बत रखता है (93) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें शिकार के

اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
कुछ जानवरों के ज़रिए आज़माएगा जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और नेज़ों की ज़द में होंगे;

لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ج فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ
ताकि अल्लाह देख ले कि कौन शख़्स उससे बिन देखे डरता है, फिर जिसने इसके बाद ज़्यादती की

ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا
तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है (94) ऐ ईमान वालो! शिकार को न

الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ ط وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
मारो जबकि तुम हालते-एहराम में हो और तुम में से जो शख़्स उसको जान बूझ कर मारे

فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ
तो उसका बदला उसी तरह का जानवर है जेसा कि उसने मारा है, इसका फ़ैसला तुम में से दो इंसाफ़ करने वाले

مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِينَ
आदमी करेंगे और यह नज़राना काबा पहुँचाया जाए, या उसके कफ़्फ़ारे में चंद मोहताजों को खाना खिलाना होगा

أَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهٖ ط عَفَا
या उसके बराबर रोज़े रखने होंगे; ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने

اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ط وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ط
मुआफ़ किया जो कुछ हो चुका, और जो शख़्स फिरेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा,

وَاللّٰهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾ أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ
और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है (95) तुम्हारे लिए दरया का शिकार और उसका खाना

وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ

जाइज़ किया गया तुम्हारे फ़ायदे के लिए और क़ाफ़िलों के लिए, और जब तक तुम हालते-एहराम में हो

صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ

ख़ुशकी का जानवर तुम्हारे ऊपर हराम किया गया, और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम

اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ

हाज़िर किए जाओगे (96) अल्लाह ने हुरमत वाले घर

الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ

काबा को लोगों के लिए क़ियाम का ज़रिया बनाया और हुरमत वाले महीनों को क़ुर्बानी के जानवरों को

وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي

और गले में पट्टे पड़े हुए जानवरों को भी, यह इस लिए कि जान लो अल्लाह को मालूम है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और यह कि अल्लाह हर चीज़ को

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ

जानने वाला है (97) जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है और बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ؕ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (98) रसूल पर सिर्फ़ पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है, अल्लाह

يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي

जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो (99) (ऐ नबी) कह दीजिए कि नापाक

الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا

और पाक बराबर नहीं हो सकते अगर्चे नापाक की कसरत तुमको भली लगे, पस अल्लाह से

اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰٓاَيُّهَا

डरो ऐ अक़्ल वालो; ताकि तुम कामयाब हो जाओ (100) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ

ईमान वालो! ऐसी बातों के बारे में सवाल न करो कि अगर वह तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएं

تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

तो तुम पर भारी गुज़रे, और अगर तुम उनके बारे में पूछोगे ऐसे वक़्त में जबकि क़ुरआन उतर रहा है

منزل ٢ ع ١٣/٤

تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾

तो वे तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी, अल्लाह ने उनसे दरगुज़र किया, और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दबार है (101)

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا

ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक जमात ने पूछीं फिर वे उनके

كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ

मुनकिर हो कर रह गए (102) अल्लाह ने बहीरा और साइबा और वसीला और हाम (बुतों के नाम पर

وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ

छोड़े हुए जानवर) मुक़र्रर नहीं किए, मगर जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِذَا

झूठ बांधते हैं, और उनमें से अकसर अक़्ल से काम नहीं लेते (103) और जब

قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ

उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ़ आओ

قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ

तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफ़ी है जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, क्या अगर्चे

اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ يٰٓاَيُّهَا

उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों (104) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ

ईमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र रखो, कोई गुमराह हो तो उससे तुम्हारा

ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا

नुक़सान नहीं अगर तुम हिदायत पर रहो, तुम सबको अल्लाह के पास लौट कर जाना है

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फिर वह तुमको बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे (105) ऐ ईमान वालो!

شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ

तुम्हारे दरमियान गवाही का तरीक़ा वसीयत के वक़्त जबकि तुम में से किसी की मौत का

الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

वक़्त आ जाए इस तरह है कि दो मोतबर आदमी तुम में से गवाह हों, या अगर तुम

اِنۡ اَنۡتُمۡ ضَرَبۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ فَاَصَابَتۡكُمۡ مُّصِيۡبَةُ

सफ़र की हालत में हो और वहाँ मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे अलावा दूसरे लोगों

الۡمَوۡتِ‌ؕ تَحۡبِسُوۡنَهُمَا مِنۡۢ بَعۡدِ الصَّلٰوةِ فَيُقۡسِمٰنِ بِاللّٰهِ

में से दो गवाह ले लिए जाएं, फिर अगर तुमको शुब्हा हो जाए तो दोनो गवाहों को नमाज़ के बाद रोक लो

اِنِ ارۡتَبۡتُمۡ لَا نَشۡتَرِىۡ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبٰى‌ۙ

और वे दोनों अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हम किसी क़ीमत के बदले इसको न बेचेंगे चाहे कोई रिश्तेदार ही क्यों न हो

وَلَا نَكۡتُمُ شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الۡاٰثِمِيۡنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاِنۡ

और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे, अगर हम ऐसा करेंगे तो बेशक हम गुनहगार होंगे (106) फिर अगर

عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسۡتَحَقَّاۤ اِثۡمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوۡمٰنِ مَقَامَهُمَا

पता चले कि उन दोनों ने कोई हक़ तलफ़ी की है तो उनकी जगह दूसरे दो शख़्स उन लोगों में से खड़े हों

مِنَ الَّذِيۡنَ اسۡتَحَقَّ عَلَيۡهِمُ الۡاَوۡلَيٰنِ فَيُقۡسِمٰنِ بِاللّٰهِ

जिनका हक़ पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था, वे अल्लाह की क़सम खाएं कि

لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنۡ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعۡتَدَيۡنَاۤ ‌ۖ اِنَّاۤ

हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़्यादा सच्ची है और हमने ज़्यादती नहीं की, अगर हम ऐसा करें

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۱۰۷﴾ ذٰلِكَ اَدۡنٰۤى اَنۡ يَّاۡتُوۡا بِالشَّهَادَةِ

तो हम ज़ालिमों में से होंगे (107) यह क़रीब तरीन तरीक़ा है कि लोग गवाही

عَلٰى وَجۡهِهَاۤ اَوۡ يَخَافُوۡۤا اَنۡ تُرَدَّ اَيۡمَانٌۢ بَعۡدَ اَيۡمَانِهِمۡ‌ؕ

ठीक तरीक़े पर दें या इससे डरें कि हमारी क़सम उनकी क़सम के बाद लौटा दी जाएगी,

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسۡمَعُوۡا‌ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ

और अल्लाह से डरो और सुनो, अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह

الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿۱۰۸﴾ يَوۡمَ يَجۡمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوۡلُ مَاذَاۤ

नहीं चलाता (108) जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा कि तुमको

اُجِبۡتُمۡ‌ؕ قَالُوۡا لَا عِلۡمَ لَنَا‌ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ ﴿۱۰۹﴾

क्या जवाब मिला था, वे कहेंगे: हमें कुछ इल्म नहीं, ग़ैब की बातों का तमाम इल्म तो आप ही के पास है (109)

اِذۡ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيۡسَى ابۡنَ مَرۡيَمَ اذۡكُرۡ نِعۡمَتِىۡ

जब अल्लाह कहेगा: ऐ ईसा बिन मरयम! मेरी उस नेअ़मत को याद करो

عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ
जो मैंने तुम पर और तुम्हारी माँ पर की, जबकि मैंने रूहुल-क़ुदुस से तुम्हारी मदद की,

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ
तुम लोगों से बात करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी, और जब मैंने तुमको

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ
किताब और हिकमत और तौरात व इंजील की तालीम दी, और जब तुम बनाते थे

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا
मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से फिर उसमें फूँक मारते थे

فَتَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ
तो वे मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी, और तुम अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ
अच्छा कर देते थे, और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैंने बनी इस्राईल को तुम से

اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ
रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए तो उनमें से

كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾ وَاِذْ
काफ़िरों ने कहा कि यह तो बस एक खुला हुआ जादू है (110) और जब

اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا
मैंने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
हम ईमान लाए और आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाँबरदार हैं (111) जब हवारियों ने कहा कि

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ
ऐ ईसा बिन मरयम! क्या आपका रब यह कर सकता है कि हम पर आसमान से

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۭ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ
एक दस्तरख़्वान उतारे, ईसा (अलै०) ने फ़रमायाः अल्लाह से डरो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ
ईमान वाले हो (112) उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिल

وقف لازم
منزل ٢

قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ

मुतमइन हों और हम यह जान लें कि आपने हमसे सच कहा और हम उसपर

الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ

गवाही देने वाले बन जाएं (113) ईसा बिन मरयम ने दुआ की: ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब!

اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا

आप आसमान से हम पर एक दस्तरख़्वान उतारिए जो हमारे लिए एक ईद बन जाए

لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ج وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ

हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए और आप की तरफ़ से एक निशानी हो, और हमें अता करिए आप ही बेहतरीन

الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ج فَمَنْ

अता फ़रमाने वाले हैं (114) अल्लाह ने कहा: मैं यह दस्तरख़्वान ज़रूर तुम पर उतारूँगा, फिर उसके बाद

يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ

तुम में से जो शख़्स कुफ़्र करेगा उसको मैं ऐसी सज़ा दूँगा कि जो दुनिया में

اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾ ع وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى

किसी को न दी होगी (115) और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा

ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ

बिन मरयम! क्या तुमने लोगों को कहा था कि मुझको और मेरी माँ को

اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ

अल्लाह के सिवा माबूद बना लो? वे जवाब देंगे कि (ऐ रब) आप तो पाक हैं, मेरा यह काम न था कि

اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ق بِحَقٍّ ط اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ

मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मैंने यह कहा होगा तो आपको

عَلِمْتَهٗ ط تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ط

ज़रूर मालूम होगा, आप जानते हैं जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो आपके जी में है,

اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ

बेशक आप ही तो छुपी बातों को जानने वाले हैं (116) मैंने तो उनसे वही बात कही

اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ج وَكُنْتُ

जिसका आपने मुझे हुक्म दिया था, यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, और मैं

الربع
منزل ٢
ع ١٥ / ٧ / ٥
وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم [illegible]

عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ

उन पर गवाह था जब उनके दरमियान था, फिर जब आपने मुझको उठा लिया तो आप ही

اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۭ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾

उनपर निगराँ थे, और आप तो हर चीज़ पर गवाह हैं (117)

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ

अगर आप उनको सज़ा दें तो वे आप ही के बंदे हैं, और अगर आप उन्हें मुआफ़ फ़रमा दें तो आप ही

اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

ज़बरदस्त हैं, हिकमत वाले हैं (118) अल्लाह कहेगाः आज वह दिन है कि

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

सच्चों को उनका सच काम आएगा, उनके लिए बाग़ात हैं जिनके नीचे

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

नहरें बह रही हैं, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी

عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

हुए, यही बड़ी कामयाबी है (119) आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनमें है

وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾ ع

सबकी बादशाहत अल्लाह ही के लिए है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (120)

सूरह अनआम मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर चंद आयात (20, 23, 91, 93, 114, 141, 151 ता 153) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुईं, इसमें (165) आयात और (20) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (55) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (6) नम्बर पर है और सूरह हिज्र के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (12935) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (3100) कलिमात हैं

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरों

الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ڛ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾

और रोशनी को बनाया, फिर भी मुनकिर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते हैं (1)

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ۭ

वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक मुद्दत मुक़र्रर की

منزل ٢

وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنۡدَهٗ ثُمَّ اَنۡتُمۡ تَمۡتَرُوۡنَ ۝۲ وَهُوَ اللّٰهُ

और (वह) मुक़र्रर मुद्दत उसी के इल्म में है, फिर भी तुम शक करते हो (2) और वही अल्लाह

فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الۡاَرۡضِ ؕ يَعۡلَمُ سِرَّكُمۡ وَجَهۡرَكُمۡ

आसमानों में है और ज़मीन में है, वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है

وَيَعۡلَمُ مَا تَكۡسِبُوۡنَ ۝۳ وَمَا تَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ اٰيَةٍ مِّنۡ

और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो (3) और उनके रब की निशानियों में से

اٰيٰتِ رَبِّهِمۡ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ۝۴ فَقَدۡ

जो भी निशानी उनके पास आती है तो वे उससे मुँह मोड़ लेते हैं (4) चुनाँचे

كَذَّبُوۡا بِالۡحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمۡ ؕ فَسَوۡفَ يَاۡتِيۡهِمۡ

जो हक़ उनके पास आया है उसको भी उन्होंने झुठला दिया, पस जल्द ही उनके पास

اَنۡۢبٰٓؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝۵ اَلَمۡ يَرَوۡا كَمۡ

उस चीज़ की ख़बरें आएंगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे (5) क्या उन्होंने नहीं देखा कि

اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ مَّكَّنّٰهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ

हमने उनसे पहले कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया, उनको हमने ज़मीन में उतनी ताक़त दी थी

مَا لَمۡ نُمَكِّنۡ لَّكُمۡ وَاَرۡسَلۡنَا السَّمَآءَ عَلَيۡهِمۡ مِّدۡرَارًا ۖ

जितनी तुमको नहीं दी और हम ने उनपर आसमान से ख़ूब बारिश बरसाई,

وَّجَعَلۡنَا الۡاَنۡهٰرَ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهِمۡ فَاَهۡلَكۡنٰهُمۡ

और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने उनको उनके गुनाहों की वजह से

بِذُنُوۡبِهِمۡ وَاَنۡشَاۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ قَرۡنًا اٰخَرِيۡنَ ۝۶

हलाक कर डाला और उनके बाद हमने दूसरी क़ौमों को उठाया (6)

وَلَوۡ نَزَّلۡنَا عَلَيۡكَ كِتٰبًا فِىۡ قِرۡطَاسٍ فَلَمَسُوۡهُ

और अगर हम आप पर ऐसी किताब उतारते जो काग़ज़ में लिखी हुई होती और वे उसको अपने हाथों से

بِاَيۡدِيۡهِمۡ لَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ

छू भी लेते तब भी इनकार करने वाले यह कहते कि यह तो एक खुला हुआ

مُّبِيۡنٌ ۝۷ وَقَالُوۡا لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوۡ

जादू है (7) और वे कहते हैं कि उसपर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया, और अगर

اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ (٨) وَلَوْ جَعَلْنٰهُ

हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो मामले का फ़ैसला हो जाता फिर उन्हें कोई मोहलत न मिलती (8) और अगर हम किसी फ़रिश्ते को

مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ (٩)

रसूल बनाकर भेजते तो उसको भी आदमी बनाते और उसको उसी शुबहे में डाल देते जिसमें वह अब पड़े हुए हैं (9)

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ

और आपसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो उनमें से जिन लोगों ने मज़ाक़ उड़ाया

سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ (١٠) ع قُلْ

उनको उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे (10) (ऐ नबी) आप कह दीजिए कि

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

ज़मीन में चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम

الْمُكَذِّبِيْنَ (١١) قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

क्या हुआ (11) (उनसे) पूछिए कि किसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है,

قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى

आप कह दीजिए कि सब कुछ अल्लाह का है, उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है, वह ज़रूर तुमको जमा करेगा

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

क़ियामत के दिन जिसमें कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٢) وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ

वही हैं जो उसपर ईमान नहीं लाते (12) और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और दिन में,

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (١٣) قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا

और वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है (13) कह दीजिए कि क्या में अल्लाह के सिवा किसी

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ

और को मददगार बनाऊँ जो बनाने वाला है आसमानों का और ज़मीन का और वह सबको खिलाता है और उसको नहीं खिलाया जा सकता,

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

कहिए कि मुझको हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूँ

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٤) قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ

और तुम हरगिज़ मुशरिकों में से न बनो (14) कहिए कि अगर मैंने अपने रब की

عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ

नाफ़रमानी की तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (15) जिस शख़्स से वह

عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

उस दिन हटा लिया गया उसपर अल्लाह ने बड़ा रहम फ़रमाया, और यही खुली कामयाबी है (16)

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ

और अगर अल्लाह तुमको कोई नुक़सान पहुँचाए तो उसके सिवा कोई उसका दूर करने वाला नहीं,

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

और अगर अल्लाह तुमको कोई भलाई पहुँचाए तो वह हर चीज़ पर क़ादिर है (17)

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

और उसी का ज़ोर है अपने बंदों पर, और वह हिकमत वाला, सबकी ख़बर रखने वाला है (18)

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ

पूछिए कि सबसे बड़ा गवाह कौन है, कह दीजिए कि अल्लाह है जो मेरे

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ

और तुम्हारे दरमियान गवाह है और मुझ पर यह क़ुरआन उतारा गया ताकि मैं तुमको उसके ज़रिए से ख़बरदार

بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ

करता रहूँ और उसको जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ

اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ

कुछ और माबूद भी हैं? कह दें कि मैं इसकी गवाही नहीं देता, नीज़ कह दें कि वह तो बस एक ही

وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

माबूद है और मैं बरी हूँ तुम्हारे शिर्क से (19) जिन लोगों को हमने किताब

الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ

दी है वे मुहम्मद (सल्ल॰) को ऐसे को ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं, जिन लोगों ने

خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

अपने आपको घाटे में रखा वे उसको नहीं मानते (20) और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ

कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुठलाए, यक़ीनन

منزل ٢

وقف لازم

وقف لازم

ع ٨

لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ

ज़ालिमों को कामयाबी नहीं मिलती (21) और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर

نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

हम कहेंगे उन मुशिरकों से कि तुम्हारे वे शरीक कहाँ हैं जिनका तुमको

تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ

दावा था (22) फिर उनके पास कोई फ़रेब नहीं रहेगा सिवाए इसके कि वे कहेंगे कि हमारे रब

رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى

अल्लाह की क़सम! हम तो शिर्क करने वाले न थे (23) देखिए किस तरह उन्होंने अपने आप पर

اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ

झूठ बोला और खो गईं उनसे वे बातें जो वे बनाया करते थे (24) और उनमें से बअज़ लोग

مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ

ऐसे हैं जो आपकी तरफ़ कान लगाते है; हालाँकि हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि

يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

वे उसको न समझें और उनके कानों में बोझ है, अगर वे तमाम निशानियाँ भी देख लें तब भी

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ

उनपर ईमान न लाएंगे, यहाँ तक कि जब वे आपके पास आपसे झगड़ने आते हैं तो वे मुनकिर

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ

कहते हैं कि ये तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं (25) वे लोगों को

يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ

उससे रोकते हैं और ख़ुद भी उससे अलग रहते हैं, वे ख़ुद अपने आपको

اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى

हलाक कर रहे हैं मगर वे नहीं समझते (26) और अगर आप उनको उस वक़्त देखो जब वे

النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا

आग पर खड़े किए जाएंगे और कहेंगे कि काश! हम दोबारा लौटा दिए जाएं तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाएंगे

وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا

और हम ईमान वालों में से हो जाएंगे (27) अब उनपर वह चीज़ खुल गई जिसको वे

يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ

इस से पहले छुपाते थे, और अगर वे वापस भेज दिए जाएं तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे,

وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا

और बेशक वे झूठे हैं (28) और कहते हैं कि जिंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की जिंदगी है

وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ

और हम फिर उठाए जाने वाले नहीं हैं (29) और अगर आप वह वक़्त देखते जब वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे,

قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا

वह उनसे पूछेगा कि क्या यह हक़ीक़त नहीं है, वे जवाब देंगे कि हाँ हमारे रब की क़सम! यह हक़ीक़त है, अल्लाह फ़रमाएगाः अच्छा

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

तो अज़ाब चखो उस इनकार के बदले जो तुम करते थे (30) यक़ीनन वे लोग घाटे में रहे

كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً

जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह घड़ी उनपर अचानक आएगी

قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ

तो वे कहेंगे कि हाय अफ़सोस! इस बारे में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ

اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا

अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे, कितना ही बुरा है वह बोझ जिसको वह उठाएंगे (31) और दुनिया

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

की ज़िंदगी तो बस एक खेल तमाशा है, और आख़िरत का घर बेहतर है

لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ

उन लोगों के लिए जो तक़्वा रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते (32) हमको मालूम है कि

لَيَحْزُنُكَ الَّذِىْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ

वे जो कुछ कहते हैं उससे आपको रंज होता है, ये लोग आपको नहीं झुठलाते बल्कि

الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ

ये ज़ालिम दरअसल अल्लाह की निशानियों का इनकार कर रहे हैं (33) और आपसे पहले भी रसूलों को

مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى

झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ़ दिए जाने पर सब्र किया यहाँ तक कि

اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ

उनको हमारी मदद पहुँच गई, और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और पैग़म्बरों की कुछ ख़बरें

مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ

तो आपको पहुँच ही चुकी हैं (34) और अगर उनकी बेरुख़ी आप पर

اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ

गिराँ गुज़र रही है तो अगर आप में कुछ ज़ोर है तो या तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूँडो

اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ, और अगर अल्लाह चाहता

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾

तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता, पस आप नादानों में से न बनें (35)

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕؔ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ

क़ुबूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह

اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ

उठाएगा फिर वे उसी की तरफ़ लौटाए जाएंगे (36) और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً

उसके रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतरी? आप कहिए कि बेशक अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ

मगर अकसर लोग नहीं जानते (37) और जो जानवर ज़मीन पर चलता है

وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي

और जो भी परिंदा अपने दोनों परों से उड़ता है वे सब तुम्हारी ही तरह की उम्मतें हैं, हमने लिखने में

الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ

कोई चीज़ नहीं छोड़ी है फिर सब अपने रब के पास इकट्ठे किए जाएंगे (38) और जिन्होंने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ

हमारी निशानियों को झुठलाया वे बहरे और गूंगे हैं जो अंधेरों में पड़े हुए हैं, अल्लाह जिसको चाहता है

يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

भटका देता है और जिसको चाहता है सीधी राह पर लगा देता है (39)

النّصف

وقف غفران

وقف منزل

منزل ٢

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ

आप कहिए कि यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ जाए या क़ियामत आ जाए

اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾ بَلْ اِيَّاهُ

तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? ज़रा बताओ अगर तुम सच्चे हो (40) बल्कि तुम उसी को

تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ

पुकारोगे, फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए तुम उसको पुकारते हो अगर वह चाहता है

وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ

और तुम भूल जाते हो उनको जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो (41) और तुमसे पहले बहुत सी

مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ

क़ौमों की तरफ़ हमने रसूल भेजे फिर हमने उनको पकड़ा सख़्ती में और तकलीफ़ में; ताकि वे

يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

गिड़गिड़ाएं (42) पस जब हमारी तरफ से उनपर सख़्ती आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाए;

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا

बल्कि उनके दिल सख़्त हो गए और शैतान उनके अमल को उनकी नज़र में ख़ुशनुमा करके

يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ

दिखाता रहा (43) फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उनको की गई थी तो हमने उनपर हर चीज़ के

اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ

दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब वे उस चीज़ पर ख़ुश हो गए जो उन्हें दी गई थीं तो हमने अचानक उनको

بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ

पकड़ लिया, उस वक़्त वे ना उम्मीद हो कर रह गए (44) पस उन लोगों की जड़ काट दी गई

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ

जिन्होंने ज़ुल्म किया था, और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है (45) आप कह दीजिए कि

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

यह बताओ कि अगर अल्लाह छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे दिलों पर

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ

मुहर लगा दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो उनको वापस लाए, देखो कि

ع ١٠

منزل ٢

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ

हम कैसे तरह तरह की निशानियाँ बयान करते हैं फिर भी वे मुँह मोड़ लेते हैं (46) कह दीजिए कि

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً

यह बताओ कि अगर अल्लाह का अज़ाब तुम्हारे ऊपर अचानक या खुले तौर पर आ जाए

هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ

तो ज़ालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा (47) और रसूलों को हम सिर्फ़

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ

ख़ुशख़बरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं, फिर जो ईमान लाया

وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

और अपनी इस्लाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे (48)

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا

और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उनको अज़ाब पकड़ लेगा इस वजह से कि वे नाफ़रमानी

يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ

करते थे (49) आप कह दें कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं

وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ

और न मैं ग़ैब को जानता हूँ और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो बस

اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى

उस वह्य की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आती है, आप कहिए कि क्या अंधा और आँखों वाला

وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ

दोनो बराबर हो सकते हैं, क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50) और आप इस वह्य के ज़रिए से डराइए

يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ

उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएंगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा

دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَا

न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें (51) और आप

تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

उन लोगों को अपने से दूर न करें जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ

उसकी ख़ुशनूदी चाहते हुए, उनके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ आप पर

شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ

नहीं और न आपके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ उनपर है कि आप उनको अपने से दूर करके

فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ

नाइंसाफ़ी करने वालों में से हो जाएं (52) और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे

بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ

से आज़माया है ताकि वे कहें कि क्या यही वे लोग हैं जिनपर हमारे दरमियान अल्लाह का

بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذَا جَآءَكَ

फ़ज़्ल हुआ है, क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों से ख़ूब वाक़िफ़ नहीं? (53) और जब आपके पास

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

वे लोग आएं जो हमारी आयात पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहिए कि तुम पर सलामती हो, तुम्हारे रब ने

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ

अपने ऊपर रहमत लिख ली है, बेशक तुम में जो कोई नादानी से

سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ

कोई बुराई कर बैठे फिर उसके बाद वे तौबा करे और इस्लाह करले तो वह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (54) और इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोल कर बयान करते हैं और ताकि मुजरिमों का तरीक़ा

سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ ع قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ

ज़ाहिर हो जाए (55) (ऐ नबी) आप कह दीजिए कि मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ

जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, आप कह दें कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता,

قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ قُلْ

अगर मैं ऐसा करूँ तो मैं राह से भटक जाऊँगा और में राह पाने वालों में से न रहूँगा (56) कह दीजिए कि

اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूँ और तुमने उसको झुठलाया है, वह चीज़ मेरे पास

منزل ٢

ع ٦/١٢

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ

नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो, फ़ैसले का इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह ही को है, वही हक़ को

الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ۝٥٧ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِىْ

बयान करता है और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है (57) कह दीजिए कि अगर वह चीज़ मेरे पास होती

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِىَ الْاَمْرُ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ؕ

जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान मामले का फ़ैसला हो चुका होता,

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٥٨ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

और अल्लाह ख़ूब जानता है ज़ालिमों को (58) और उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं

لَا يَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

जिसे उसके सिवा कोई नहीं जानता, अल्लाह जानता है जो कुछ ख़ुशकी में और समुंदर में है,

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ

और दरख़्त से गिरने वाला कोई पत्ता ऐसा नहीं जिसका उसे इल्म न हो और ज़मीन की

فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا

तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई तर और ख़ुश्क चीज़ मगर सब

فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٥٩ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ

एक खुली किताब में दर्ज है (59) और वही है जो रात में तुमको वफ़ात देता है

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ

और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसको जानता है फिर तुमको उठा देता है उसमें

لِيُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ

ताकि मुक़र्ररह मुद्दत पूरी हो जाए, फिर उसी की तरफ़ तुम्हारी वापसी है फिर वह

يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٦٠ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ

तुमको बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो (60) और वह ग़ालिब है अपने

عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ

बंदों पर और वे तुम्हारे ऊपर निगराँ भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में से

اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ۝٦١

किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह को क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते (61)

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۟

फिर सब अपने हक़ीक़ी मालिक की तरफ़ वापस लाए जाएंगे, सुन लो! हुक्म उसी का है और वह

وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿۶۲﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ

बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (62) आप कह दीजिए कि कौन तुमको निजात देता है ख़ुश्की और

ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ

समुंदर की तारीकियों से जब कि तुम उसको पुकारते हो आजिज़ी से और चुपके चुपके

لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۶۳﴾

कि अगर अल्लाह ने हमको निजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुज़ार बंदों में से हो जाएंगे (63)

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ

कह दीजिए कि अल्लाह ही तुमको निजात देता है इससे और हर तकलीफ़ से फिर भी तुम

تُشْرِكُوْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ

शिर्क करने लगते हो (64) कह दें कि अल्लाह क़ादिर है इस पर कि तुम पर कोई अज़ाब

عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ

भेज दे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुमको गिरोहों में

شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ

तक़सीम करके आपस में भिड़ा दे और एक को दूसरे की ताक़त का मज़ा चखा दे, देखो हम किस तरह

نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ

दलीलों को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं ताकि वे समझें (65) और आपकी क़ौम ने उसको

قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶۶﴾ ؕ

झुठला दिया है हालाँकि वह हक़ है, आप कह दें कि में तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूँ (66)

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ز وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ

हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और तुम जल्द ही जान लोगे (67) और जब आप उन लोगों को

الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى

देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाइए

يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ

यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएं, और अगर कभी शैतान आपको

الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٨

भुलादे तो याद आने के बाद ऐसे नाइंसाफ़ लोगों के पास न बैठिए (68)

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उनपर उनके हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी नहीं,

وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٦٩ وَذَرِ الَّذِيْنَ

अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें (69) और उन लोगों को छोड़ दीजिए जिन्होंने

اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिनको दुनिया की ज़िंदगी ने

الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ

धोखे में डाल रखा है, और क़ुरआन के ज़रिए नसीहत करते रहिए ताकि कोई शख़्स अपने किए में गिरफ़्तार न हो जाए;

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ

इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सिफ़ारिशी उसके लिए न हो, और अगर वह

تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

दुनिया भर का मुआवज़ा भी देदे तब भी उससे क़ुबूल न किया जाए, यही लोग हैं जो अपने किए में

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

गिरफ़्तार हो गए, उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी होगा और दर्दनाक

اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٧٠ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ

सज़ा होगी इस लिए कि वे कुफ़्र करते थे (70) (ऐ नबी) आप कहिए कि क्या हम अल्लाह को छोड़

اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا

कर उनको पुकारें जो हमको न नफ़ा दे सकते हैं और न हमको नुक़सान पहुँचा सकते हैं और क्या हम उल्टे पाँव फिर जाएं

بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ

बाद इसके कि अल्लाह हमको सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख़्स के मानिंद जिसको शैतानों ने

فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۠ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى

बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसको सीधे रास्ते की तरफ़

الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ

बुला रहे हों कि हमारे पास आजाओ, आप कह दीजिए कि रहनुमाई तो सिर्फ़ अल्लाह की रहनुमाई है

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا

और हमको हुक्म मिला है कि हम अपने आपको तमाम जहानों के परवरदिगार के हवाले कर दें (71) और यह कि नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

क़ायम करो और अल्लाह से डरो, और वही है जिसकी तरफ़ तुम समेटे जाओगे (72)

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ

और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है

وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۬ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ

और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगा, उसकी बात हक़ है और उसी की

الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ

हुकूमत होगी उस रोज़ जब सूर फूँका जाएगा, वह छुपी हुई और खुली हुई बातों का जानने वाला

وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ

और हिकमत वाला, ख़बर रखने वाला है (73) और जब इब्राहीम (अलै०) ने अपने बाप

اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ

आज़र से कहा कि क्या तुम बुतों को ख़ुदा मानते हो? मैं तुमको और तुम्हारी क़ौम को

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۴﴾ وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ

खुली हुई गुमराही में देखता हुँ (74) और इसी तरह हमने इब्राहीम (अलै०) को दिखा दी

مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ

आसमानों और ज़मीन की हुकूमत और ताकि वे यक़ीन करने वालों में से

الْمُوْقِنِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ

बन जाएं (75) फिर जब रात ने उन पर अंधेरा कर दिया तो उन्होंने एक तारे को देखा,

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ

कहा कि यह मेरा रब है, फिर जब वह डूब गया तो उन्होंने कहा कि मैं डूब जाने वालों को

الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ

दोस्त नहीं रखता (76) फिर जब उन्होंने चाँद को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है,

فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ

फिर जब वह डूब गया तो कहने लगे कि अगर मेरा रब मुझे हिदायत न दे तो मैं ज़रूर

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً
गुमराह लोगों में से हो जाऊँगा (77) फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ
तो कहा कि यह मेरा रब है यह सबसे बड़ा है, फिर जब वह भी डूब गया तो उन्होंने कहा कि

يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ
ऐ मेरी क़ौम! मैं उस शिर्क से दूर हूँ जो तुम करते हो (78) मैंने तो अपना रुख़

وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا
यक्सू होकर उसकी तरफ़ कर लिया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है

وَّمَآ اَنَاْ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ
और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ (79) और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी, उन्होंने कहा:

اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ مَا
क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो हालाँकि उसने मुझे राह दिखा दी, और मैं उनसे नहीं डरता जिनको

تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْئًا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ
तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो मगर यह कि कोई बात मेरा रब ही चाहे, मेरे रब का इल्म

كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَكَيْفَ
हर चीज़ पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते (80) और मैं क्योंकर

اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ
डरूँ तुम्हारे शरीकों से जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीज़ों को ख़ुदाई में

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ
शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई दलील नहीं उतारी, अब दोनों

الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۱﴾
गिरोहों में से अमन का ज़्यादा मुस्तहिक़ कौन है (बताओ) अगर तुम सच्चे हो (81)

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ
जो लोग ईमान लाए और नहीं मिलाया अपने ईमान में कोई नुक़सान उन्हीं के लिए

لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ
अमन है और वही सीधी राह पर हैं (82) यह है हमारी दलील

منزل ۲ — وقف لازم — ع ۹ / ۱۵

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ

जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुक़ाबले में दी, हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलंद कर देते हैं,

اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ

बेशक आप का रब हिकमत वाला, इल्म वाला है (83) और हमने इब्राहीम को इसहाक़ और याक़ूब अता किए,

كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ

हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी उससे पहले, और उसकी नस्ल में से दाऊद

وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ

और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून (अलै०) को भी, और हम नेकूकारों को

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ

इसी तरह बदला देते हैं (84) और ज़करिया और यह्या और ईसा और इलयास (अलै०) को भी,

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ

उनमें से हर एक नेक था (85) और इसमाईल और अल-यसअ और यूनुस

وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ

और लूत (अलै०) को भी, और उनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत अता की (86)

وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى

और उनके बाप दादों और उनकी औलाद और उनके भाईयों में से भी, और उनको हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ़

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ

उनकी रहनुमाई की (87) यह अल्लाह की हिदायत है जिससे वह रहनुमाई करता है अपने बंदों में से

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

जिसकी चाहता है, और अगर वे शिर्क करते तो ज़ाए हो जाता जो कुछ उन्होंने

يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ

किया था (88) ये वे लोग हैं जिनको हमने किताब और हिकमत

وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا

और नुबुव्वत अता की, पस अगर ये (मक्का वाले) इसका इनकार करदें तो हमने उसके लिए ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं

لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ

जो उसके मुनकिर नहीं हैं (89) यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह नेक हिदायत बख़्शी पस आप भी उनके तरीक़े पर

اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى

चलें, कह दीजिए कि मैं इस पर तुमसे कोई मुआवज़ा नहीं मांगता, यह तो बस एक नसीहत है

لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٩٠ ع وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ

दुनिया वालों के लिए (90) और उन्होंने अल्लाह के बारे में बहुत ग़लत अंदाज़ा लगाया जब उन्होंने कहा कि

اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ

अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप कह दीजिए कि वह किताब किसने उतारी थी

الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ

जिसको लेकर मूसा आए थे जो रोशन थी और रहनुमाई (का ज़रिया) थी लोगों के वास्ते, जिसको तुमने

قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا

वर्क़ वर्क़ कर रखा है उनमें से कुछ को ज़ाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा जाते हो, और तुमको वे बातें सिखाई गईं

لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ

जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, कह दीजिए कि अल्लाह ने उतारी, फिर उनको उनके हाल पर छोड़ दीजिए

خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٩١ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ

कि वे अपनी बेहूदा गुफ़्तगू में मशग़ूल रह कर दिल लगी करते हैं (91) और यह एक किताब है जो हमने उतारी है बरकत वाली,

الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ

तस्दीक़ करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं और ताकि आप डराएं मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को,

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

और जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं वही उस पर ईमान लाएंगे और वे अपनी नमाज़ की

يُحَافِظُوْنَ ۝٩٢ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

पाबंदी करने वाले हैं (92) और उससे बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठी तोहमत बांधे

اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ

या कहे कि मुझ पर वह्य उतरी है; हालाँकि उस पर कोई वह्य नाज़िल न की गई हो, और कहे कि जैसा कलाम

مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ

अल्लाह ने उतारा है मैं भी उतारूँगा, और अगर आप वह वक़्त देखो जबकि ये ज़ालिम मौत की सख़्तियों

الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ

में होंगे और फ़रिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो,

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى

आज तुमको ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा इस वजह से कि तुम अल्लाह के बारे में

اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ

झूठी बातें कहते थे और तुम अल्लाह की निशानियों से तकब्बुर किया करते थे (93) और तुम

جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا

हमारे पास अकेले अकेले आ गए जैसा कि हमने तुमको पहली मर्तबा पैदा किया था और जो कुछ

خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

असबाब हमने तुमको दिए थे सब कुछ तुम पीछे छोड़ आए, और हम तुम्हारे साथ सिफ़ारिश करने वालों को भी नहीं देखते

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ

जिनके मुताल्लिक़ तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है, यक़ीनन (उनसे) तुम्हारा रिश्ता टूट गया है

وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ

और तुम से जाते रहे वे दावे जो तुम किया करते थे (94) बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने

وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ

वाला है, वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से

الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

निकालने वाला है, वही तुम्हारा अल्लाह है फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो? (95) वही निकालने वाला है सुबह का

وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

और उसने रात को सुकून का वक़्त बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब से रखा है,

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ

यह मुक़र्रर किया हुआ है बड़े ग़ल्बे वाले, बड़े इल्म वाले की तरफ़ से (96) और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे

لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ

बनाए; ताकि तुम उनके ज़रिए से खुश्की और तरी के अंधेरों में राह पाओ, बेशक हमने दलीलों को खोल कर बयान कर दिया है

لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

उन लोगों के लिए जो जानना चाहते हैं (97) और वही है जिसने तुमको पैदा किया एक

وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

जान से फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सोंपे जाने की जगह है, हमने दलीलों को खोल

يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا

कर बयान कर दिया है उन लोगों के लिए जो समझते हैं (98) और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हमने उससे

بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ

निकाली उगने वाली हर चीज़ फिर हमने उससे सरसब्ज़ शाख़ निकाली जिससे हम तह-ब-तह दाने पैदा

حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ ۙ

कर देते हैं, और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا

और बाग़ अंगूर के और ज़ैतून के और अनार के आपस में मिलते जुलते

وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ

और जुदा जुदा भी, हर एक फल को देखो जब वह फलता है और उसके पकने को देखो जब वह पकता है,

اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

बेशक इनके अंदर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं (99) और उन्होंने जिन्नात को

شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ

अल्लाह का शरीक क़रार दिया हालाँकि उसी ने उनको पैदा किया है, और बग़ैर सोचे समझे उसके लिए बेटे और बेटियाँ

عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ

तराशीं, पाक और बरतर है वह ज़ात उन बातों से जो ये बयान करते हैं (100) वह आसमानों और ज़मीन का

وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۭ

बनाने वाला है, उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं,

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ

और उसने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ से बाख़बर है (101) यह है अल्लाह

رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ

तुम्हारा रब उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही हर चीज़ का ख़ालिक़ है पस तुम उसी की इबादत करो, और वह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ

हर चीज़ का कारसाज़ है (102) उसको निगाहें नहीं पातीं मगर वह निगाहों को

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

पालेता है और वह बड़ा बारीकबीं, बड़ा बाख़बर है (103) अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत भरे दलाइल

منزل ٢

ع ١٢/١٨

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۭ

आ चुके हैं, पस जो बीनाई से काम लेगा वह अपने ही लिए (फ़ायदा उठाएगा) और जो अंधा बनेगा वह ख़ुद नुक़सान उठाएगा,

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ

और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगराँ नहीं हूँ (104) और इस तरह हम अपनी दलीलें मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बयान करते हैं

وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ

और ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम वाज़ेह करदें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें (105) आप बस उस चीज़ की पैरवी

اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ

करें जो आपके रब की तरफ़ से आपकी जानिब वह्य की जा रही है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुशरिकों से

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۭ وَمَا جَعَلْنٰكَ

ऐराज़ कीजिए (106) और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते, और हमने आपको

عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا

उनके ऊपर निगराँ नहीं बनाया है और न आप उन पर मुख़्तार हो (107) और अल्लाह के सिवा

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ

जिनको ये लोग पुकारते हैं उनको गाली न दो वरना ये लोग हद से गुज़र कर जिहालत की वजह से

عِلْمٍ ۭ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

अल्लाह को गालियाँ देने लगेंगे, इसी तरह हमने हर गिरोह की नज़र में उसके अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है, फिर उन सबको

مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا

अपने रब की तरफ़ लौटना है, उस वक़्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे (108) और ये लोग अल्लाह की क़सम बड़े ज़ोर शोर से

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ

खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आजाए तो वे ज़रूर उस पर ईमान ले आएंगे,

قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

आप कह दीजिए कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास बहुत हैं, और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियाँ आ भी जाएं

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

तब भी ये ईमान नहीं लाएंगे (109) और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे जैसाकि ये लोग उसके ऊपर

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उनको उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे (110)

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَاۤ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى
और अगर हम उन पर फ़रिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बातें करते

وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَیْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْۤا
और हम सारी चीज़ें उनके सामने इकट्ठा कर देते तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे

اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾
सिवाए इसके कि अल्लाह चाहे, मगर उनमें से अक्सर लोग नादानी की बातें करते हैं (111)

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ
और इसी तरह हमने शरीर इंसानों और शरीर जिन्नात को हर नबी का दुश्मन

وَالْجِنِّ يُوْحِیْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
बना दिया, वे एक दूसरे को पुर-फ़रेब बातें सिखाते हैं धोखा देने

غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ
के लिए, और अगर आपका रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते, पस आप उन्हें छोड़ दें कि

وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ
वे झूठ बांधते हैं (112) और ऐसा इस लिए है उसकी तरफ़ उन लोगों के दिल माइल हों

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ
जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते और ताकि वे उसको पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है

مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِیْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِیْۤ
वे करलें (113) क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को फ़ैसला करने वाला बनाऊँ; हालाँकि उसने

اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
तुम्हारी तरफ़ वाज़ेह किताब उतारी है, और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी

الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
वे जानते हैं कि यह आपके रब की तरफ़ से उतारी गई है हक़ के साथ, पस आप

تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
शक करने वालों में से न बनें (114) और आपके रब की बात पूरी सच्ची है

صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ
और इंसाफ़ की, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात को और वह सुनने वाला,

الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ

जानने वाला है (115) और अगर आप लोगों की अकसरियत के कहने पर चलो जो ज़मीन में हैं

يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ

तो वे आपको अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वे महज़ गुमान की पैरवी करते हैं

وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

और अंदाज़े लगाया करते हैं (116) बेशक आपका रब ख़ूब जानता है

مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

उनको जो अपने रास्ते से भटके हुए हैं और वही ख़ूब जानता है उनको जो राह पाए हुए हैं (117)

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ

पस तुम खाओ उस जानवर में से जिसपर अल्लाह का नाम लिया जाए अगर तुम उसकी आयात पर

مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

ईमान रखते हो (118) और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम

اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا

लिया गया; हालाँकि अल्लाह ने तफ़सील से बयान कर दी है वे चीजें जिनको उसने तुम पर हराम किया है, सिवाए इसके

مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ

कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ, और यक़ीनन बहुत से लोग अपनी ख़्वाहिशात की वजह से (दूसरों को) गुमराह करते हैं

بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾

बग़ैर किसी इल्म के, बेशक आपका रब ख़ूब जानता है हद से निकल जाने वालों को (119)

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ

और तुम गुनाह के ज़ाहिर को भी छोड़ दो और उसके बातिन को भी, जो लोग गुनाह

الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا

कमा रहे हैं उनको जल्द बदला मिल जाएगा उसका जो वे कर रहे थे (120) और तुम उस जानवर

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ

में से न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, यक़ीनन यह गुनाह की बात है, और

الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ

शयातीन अपने साथियों के दिलों में (वसवसे) डाल रहे हैं ताकि वे तुम से झगड़ें, और अगर तुम

اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا

उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुशरिक हो जाओगे (121) क्या वह शख़्स जो मुर्दा था

فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِىْ بِهٖ فِى النَّاسِ

फिर हमने उसको जिंदगी दी और हमने उसको एक रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है

كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ

वह उस शख़्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में पड़ा है जिनसे वह निकलने वाला नहीं, इस तरह

زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

काफ़िरों की नज़र में उनके करतूत ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं (122) और इस तरह

جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ

हर बस्ती में हमने गुनहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहाँ हीले बहाने करें;

وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا

हालाँकि वे जो हीले करते हैं अपने ही ख़िलाफ़ करते हैं मगर वे इसको नहीं समझते (123) और जब

جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ

उनके पास कोई निशानी आती है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक कि हमको भी वही न दिया जाए

اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ

जो अल्लाह के पैग़म्बरों को दिया गया, अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह अपनी पैग़म्बरी किसको बख़्शे,

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ

जो लोग मुजरिम हैं उनको ज़रूर अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत नसीब होगी और सख़्त

شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ

अज़ाब भी इस वजह से कि वे मक्र करते थे (124) अल्लाह जिसको चाहता है कि

يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ

हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसको चाहता है कि

يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ

गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसको आसमान में चढ़ना

فِى السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

पड़ रहा हो, इस तरह अल्लाह गंदगी डाल देता है उन लोगों पर

ع

منزل ٢

وقف منزل
وقف لازم

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ

जो ईमान नहीं लाते (125) और यही आपके रब का सीधा रास्ता है, हमने

فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ

वाज़ेह कर दी हैं निशानियाँ ग़ौर करने वालों के लिए (126) उन्हीं के लिए सलामती का घर है

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ

उनके रब के पास और वह उनका मददगार है उस अमल की वजह से जो वे ख़ुद करते रहे (127) और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ

अल्लाह उन सबको जमा करेगा, ऐ जिन्नात के गिरोह! तुम बहुत से इंसानों को

مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا

गुमराह कर चुके, और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे कि ऐ हमारे रब!

اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ

हमने एक दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुँच गए अपनी उस मुद्दत को जो आपने

اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا

हमारे लिए मुक़र्रर की थी, अल्लाह कहेगा कि अब तुम्हारा ठिकाना आग है हमेशा उसमें रहोगे मगर जो

مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ

अल्लाह चाहे, बेशक आपका रब हिकमत वाला, इल्म वाला है (128) और इसी तरह

نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع

हम साथ मिला देंगे गुनहगारों को एक दूसरे से उन आमाल की वजह से जो वे करते थे (129)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

ऐ जिन्नात और इंसानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आए थे

يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

जो तुमको मेरी आयतें सुनाते और तुमको इस दिन के पेश आने से

هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ

डराते थे, वे कहेंगे कि हम ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं और उनको दुनिया की

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

ज़िंदगी ने धोखे में रखा और वे अपने ख़िलाफ़ ख़ुद गवाही देंगे कि बेशक

منزل ٢

ع ١٥ ٨

كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى

हम मुनकिर थे (130) यह इस वजह से आपका रब बस्तियों को उनके ज़ुल्म की वजह से इस हाल में

بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا

हलाक करने वाला नहीं कि वहाँ के लोग बेख़बर हों (131) और हर शख़्स का दर्जा है उसके

عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ

अमल के लिहाज़ से, और आपका रब लोगों के आमाल से बेख़बर नहीं (132) और आपका रब

الْغَنِيُّ ذُوالرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ

बेनियाज़ रहमत वाला है, अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसको चाहे

مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ

तुम्हारी जगह ले आए जिस तरह उसने तुमको पैदा किया

قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ

दूसरों की नस्ल से (133) जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह आकर रहेगी और तुम (अल्लाह को) आजिज़ नहीं

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ

कर सकते (134) आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर मैं भी

عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ

अमल कर रहा हूँ, तुम जल्द ही जान लोगे कि आख़िरत का अंजाम किसके हक़ में

الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا

बेहतर होता है, यक़ीनन ज़ालिम कभी फ़लाह नहीं पा सकते (135) और अल्लाह ने जो खेती और चोपाए पैदा किए

ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ

उसमें से उन्होंने अल्लाह का कुछ हिस्सा मुक़र्रर किया है, पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है

بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ

उनके गुमान के मुताबिक़ और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है, फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है

فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى

वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह उनके शरीकों को

شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ

पहुँच जाता है, कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये लोग करते हैं (136) और इस तरह बहुत से मुशरिकों की नज़र में

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ

उनके शरीकों ने अपनी औलाद के क़त्ल को ख़ुशनुमा बना दिया; ताकि उनको बरबाद करदें

وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ

और उनपर उनके दीन को मुश्तबह बना दें, और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते,

فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ

पस उनको छोड़ दीजिए कि अपनी मन घड़त बातों में लगे रहें (137) और कहते हैं कि यह जानवर

وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖۗ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ

और खेती ममनूअ है उन्हें कोई नहीं खा सकता सिवाए उसके जिसको हम चाहें उनके अपने गुमान के मुताबिक़,

وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ

और फ़लाँ चौपाए हैं कि उनकी पीठ (पर सवारी) हराम कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिनपर वे

اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا

अल्लाह का नाम नहीं लेते, यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ बांधा है, अल्लाह जल्द उनको इस झूठ

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ

बाँधने का बदला देगा (138) और कहते हैं कि फलाँ क़िस्म के जानवरों के पेट में

الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ

जो है वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है,

وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ

और अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं, अल्लाह जल्द उनको इस कहने की सज़ा

وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ

देगा, बेशक अल्लाह हिकमत वाला, इल्म वाला है (139) वे लोग घाटे में पड़ गए

قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا

जिन्होंने अपनी औलाद को क़त्ल किया नादानी से बग़ैर किसी इल्म के और उन्होंने उस रिज़्क़ को

رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا

हराम कर लिया जो अल्लाह ने उनको दिया था अल्लाह पर बोहतान बाँधते हुए, वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले

مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ ع وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ

न बने (140) और वह अल्लाह ही है जिसने ऐसे बाग़ात पैदा किए (जिनमें से) कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं

منزل ۲

الربع

وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ

और कुछ नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर के दरख़्त और खेती कि उसके खाने की चीज़ें मुख़्तलिफ़ होती हैं

وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ

और ज़ैतून और अनार बाहम मिलते जुलते भी और एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ भी,

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ

खाओ उनकी पैदावार जबकि वे फलें और अल्लाह का हक़ अदा करो उस के काटने के दिन,

وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ

और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो बेशक अल्लाह फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसंद नहीं करता (141) और चौपायों

الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

में से अल्लाह ने वे जानवर भी पैदा किए जो बोझ उठाते हैं और वे भी जो ज़मीन से लगे हुए होते हैं, अल्लाह ने जो रिज़्क़

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾

तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के नक़्शे क़दम पर न चलो, यक़ीन जानो कि वे तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है (142)

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ

(अल्लाह ने) आठ जोड़े पैदा किए, दो भेड़ की क़िस्म से और दो बकरी की

اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا

क़िस्म से, आप पूछिए कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा या वे बच्चे

اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ

जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों, मुझे दलील के साथ बताओ

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ

अगर तुम सच्चे हो (143) और इसी तरह दो ऊँट की क़िस्म से हैं और दो

الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

गाय की क़िस्म से, आप पूछिए कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किए हैं या दोनों मादा

اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ

या वे बच्चे जो ऊँटनी और गाय के पेट में हों, क्या तुम उस वक़्त

شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुमको इसका हुक्म दिया था? फिर उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ

जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे ताकि वे लोगों को बहका दे बग़ैर इल्म के, बेशक

اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ

अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता (144) आप कह दीजिए कि मुझपर वह्य आई है

اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ

उसमें तो मैं कोई चीज़ नहीं पाता जो हराम हो किसी खाने वाले पर जो उसको खाए सिवाए इसके कि

يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ

वे मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह

رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

नापाक है या नाजाइज़ ज़बीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, लेकिन जो शख़्स भूख से बेइख़्तियार हो जाए न नाफ़रमानी

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ

करे और न ज़्यादती करे तो आपका रब बख़्शने वाला, मेहरबान है (145) और यहूद पर

هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ

हमने सारे नाख़ुन वाले जानवर हराम किए थे और गाय

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ

और बकरी की चर्बी हराम की सिवाए उसके जो उनकी पीठ

اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۭ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ

या आँतों से लगी हो या किसी हड्डी से लगी हुई हो, यह सज़ा दी थी हमने उनको

بِبَغْيِهِمْ ۡ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ

उनकी सरकशी पर, और यक़ीनन हम सच्चे हैं (146) पस अगर वे आपको झुठलाएं तो आप कह दें कि

رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ

तुम्हारा रब तो बड़ी वसीअ रहमत वाला है, और उसका अज़ाब मुजरिम लोगों से

الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٧﴾ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ

फेरा नहीं जा सकता (147) जिन्होंने शिर्क किया वे कहेंगे कि अगर अल्लाह

اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۭ

चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप दादा करते और न हम किसी चीज़ को हराम कर लेते,

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने भी जो इससे पहले हुए थे यहाँ तक कि उन्होंने हमारा अज़ाब

بَأْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ

चखा, आप पूछिए कि क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है जिसको तुम हमारे सामने पेश करो,

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٨﴾

तुम तो सिर्फ़ गुमान के पीछे चल रहे हो और महज़ अंदाज़ों से काम ले रहे हो (148)

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ

आप कह दीजिए कि पूरी हुज्जत तो अल्लाह की है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको

اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ

हिदायत दे देता (149) कह दीजिए कि अपने गवाहों को लाओ जो इस पर गवाही दें कि

اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ

अल्लाह ने उन चीज़ों को हराम ठहराया है, अगर वे झूठी गवाही दे भी दें तो आप उनके साथ गवाही

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ

न देना, और आप उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न करें जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٠﴾ ع قُلْ

आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते हैं (150) आप कहिए कि

تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ

आओ मैं सुनाऊँ वे चीज़ें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं, यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को

شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ

शरीक न करो, और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक करो और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से

مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا

क़त्ल न करो, हम तुमको भी रोज़ी देते हैं और उनको भी, और बेहयाई के कामों के

الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا

पास न जाओ चाहे वे खुले आम हों या छुपे हुए, और जिस जान को अल्लाह ने

النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ

हराम ठहराया उसको नाहक़ क़त्ल न करो, ये बातें हैं जिनकी अल्लाह ने तुम्हें हिदायत

بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا

फ़रमाई है ताकि तुम अक़्ल से काम लो (151) और यतीम के माल के पास न जाओ मगर

بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا

ऐसे तरीक़े पर जो बेहतर हो यहाँ तक कि वे अपनी जवानी को पहुँच जाए, और नाप

الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا

तोल में पूरा इंसाफ़ करो, हम किसी के ज़िम्मे वही चीज़ लाज़िम करते हैं जिसकी उसे

وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

ताक़त हो, और जब बोलो तो इंसाफ़ की बात बोलो चाहे मुआमला अपनी रिश्तेदारी ही का हो,

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ

और अल्लाह के अहद को पूरा करो, ये चीज़ें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है; ताकि तुम

تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا

नसीहत पकड़ो (152) और (अल्लाह ने हुक्म दिया कि) यही मेरा सीधा रास्ता है

فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ

पस उसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुमको अल्लाह के रास्ते से जुदा

سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾ ثُمَّ

करदेंगे, यह अल्लाह ने तुमको हुक्म दिया है; ताकि तुम बचते रहो (153) फिर हमने

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ

मूसा (अलै०) को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमत पूरी करने के लिए

وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ

और हर बात की तफ़्सील और हिदायत और रहमत; ताकि वे अपने रब से

رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ

मुलाक़ात का यक़ीन करें (154) और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है एक बरकत वाली किताब

فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا

पस उस पर चलो और अल्लाह से डरो; ताकि तुमपर रहम किया जाए (155) इस लिए कि तुम यह न

اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠

कहने लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी

وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ ۙ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ

और हम उनके पढ़ने पढ़ाने से बे ख़बर थे (156) या यह कहो कि

اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ

अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते,

فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ

पस आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक रोशन दलील और हिदायत और रहमत,

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ

तो उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और उनसे मुँह

عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا

मोड़े, जो लोग हमारी निशानियों से मुँह मोड़ते हैं हम उनको

سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ

उनके मुँह फेर लेने की वजह से बहुत बुरा अज़ाब देंगे (157) क्या ये लोग इसके मुंतज़िर हैं कि

اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ

उनके पास फ़रिश्ते आएं या आपका रब आए या आपके रब की

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ

निशानियों में से कोई निशानी ज़ाहिर हो? जिस दिन आपके रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुँचेगी

لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ

तो किसी शख़्स को उसका ईमान लाना नफ़ा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो

اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا

या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो, कह दीजिए कि तुम भी इन्तिज़ार करो हम भी

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا

इन्तिज़ार कर रहे हैं (158) जिन्होंने अपने दीन में राहें निकाल लीं और गिरोहों में

شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ

बट गए आपका उनसे कुछ भी ताल्लुक़ नहीं, उनका मुआमला अल्लाह के हवाले है

ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ

फिर वही उनको बता देगा जो वे करते थे (159) जो शख़्स नेकी लेकर आएगा

فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى

तो उसके लिए उसका दस गुना है, और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो उसको बस

اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِىْ هَدٰىنِىْ

उसके बराबर मिलेगा और उनपर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा (160) आप कह दीजिए कि मेरे रब ने

رَبِّىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ

मुझको तो सीधा रास्ता बता दिया है दुरुस्त दीन इब्राहीम (अलै०) की मिल्लत की

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾

शक्ल में जो सीधी राह पर चलने वाले थे और शिर्क करने वालों में से न थे (161)

قُلْ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ

कह दीजिए कि मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के ख़ातिर है

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ

जो सारे जहानों का रब है (162) कोई उसका शरीक नहीं, और मुझे इसी का हुक्म मिला है और में

وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِىْ رَبًّا

सबसे पहला फ़रमाँबरदार हूँ (163) कहिए कि क्या में अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूँ

وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا

जबकि वही हर चीज़ का रब है, और जो शख़्स भी कोई कमाई करता है वह

عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

उसी पर रहती है और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा, फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़

مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾

तुम्हारा लौटना है पस वह तुम्हें बता देगा वह चीज़ जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते थे (164)

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ

और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का जानशीन बनाया और तुम में से

فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ

एक का रुतबा दूसरे पर बुलंद किया; ताकि वह आज़माए तुमको अपने दिए हुए में,

رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾ ع

आपका रब जल्द सज़ा देने वाला और बेशक वह बख़्शने वाला, मेहरबान है (165)

منزل ٢

सूरह आराफ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर आयत (163 से 170) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (206) आयतें और (24) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (39) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (7) नम्बर पर है और सूरह सॉद के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (14010) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (3325) कलिमात हैं

الٓمٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ

अलिफ़-लाम-मीम-साद (1) यह किताब है जो आपकी तरफ़ उतारी गई है पस आपका दिल

حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

उसके बाइस तंग न हो; ताकि आप उसके ज़रिए से लोगों को डराओ, और वह ईमान वालों के लिए याद दहानी है (2)

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ

जो उतरा है तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ़ से उसकी पैरवी करो और उसके सिवा

دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ

दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो, तुम बहुत कम नसीहत मानते हो (3) और कितनी ही बस्तियाँ हैं

قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾

जिनको हमने हलाक कर दिया, उनपर हमारा अज़ाब रात को आ पहुँचा या दोपहर को जबकि वे आराम कर रहे थे (4)

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا

फिर जब हमारा अज़ाब उनपर आया तो वे इसके सिवा कुछ न कह सके कि

اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

वाक़ई हम ज़ालिम थे (5) पस हमको ज़रूर पूछना है उन लोगों से जिनके पास रसूल भेजे गए

وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا

और हमको ज़रूर पूछना है रसूलों से (6) फिर हम उनके सामने सब बयान कर देंगे इल्म के साथ और हम

كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ

कहीं ग़ायब न थे (7) उस दिन वज़न दार सिर्फ़ हक़ होगा, पस जिनकी (नेकियों की)

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

तोलें भारी होंगी वही लोग कामयाब ठहरेंगे (8) और जिनकी तोलें

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا

हलकी होंगी वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, क्योंकि वे

بِاٰيٰتِنَا يَظۡلِمُوۡنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدۡ مَكَّنّٰكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ

हमारी निशानियों के साथ नाइंसाफ़ी करते थे (9) और हमने तुमको ज़मीन में जगह दी

وَجَعَلۡنَا لَـكُمۡ فِيۡهَا مَعَايِشَ‌ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ﴿١٠﴾

और हमने तुम्हारे लिए उसमें ज़िंदगी का सामान फ़राहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो (10)

وَلَقَدۡ خَلَقۡنٰكُمۡ ثُمَّ صَوَّرۡنٰكُمۡ ثُمَّ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓـئِكَةِ

और हमने तुमको पैदा किया फिर हमने तुम्हारी सूरतें बनाई फिर फ़रिश्तों से कहा कि

اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ ‌ۖ فَسَجَدُوۡۤا اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَؕ لَمۡ يَكُنۡ

आदम को सज्दा करो पस उन्होंने सज्दा किया मगर इबलीस सज्दा करने वालों में

مِّنَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسۡجُدَ اِذۡ

शामिल न हुआ (11) अल्लाह ने कहाः तुझे किस चीज़ ने सज्दा करने से रोका जबकि

اَمَرۡتُكَ‌ؕ قَالَ اَنَا خَيۡرٌ مِّنۡهُ‌ ۚ خَلَقۡتَنِىۡ مِنۡ نَّارٍ

मैंने तुझको हुक्म दिया था, इबलीस ने कहा कि मैं उससे बेहतर हूँ कि तूने मुझे आग से बनाया है

وَّخَلَقۡتَهٗ مِنۡ طِيۡنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهۡبِطۡ مِنۡهَا فَمَا يَكُوۡنُ

और आदम को मिट्टी से (12) अल्लाह ने कहाः तू उतर जा यहाँ से, तुझे यह हक़ नहीं

لَكَ اَنۡ تَتَكَبَّرَ فِيۡهَا فَاخۡرُجۡ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيۡنَ ﴿١٣﴾

कि तू उसमें घमंड करे, पस निकल जा यक़ीनन तू ज़लील है (13)

قَالَ اَنۡظِرۡنِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ

इबलीस ने कहा कि तू मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे जबकि सब लोग उठाए जाएंगे (14) अल्लाह ने कहा कि तुझे मोहलत

مِنَ الۡمُنۡظَرِيۡنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَاۤ اَغۡوَيۡتَنِىۡ لَاَقۡعُدَنَّ

दी गई (15) इबलीस ने कहा कि चूँकि मुझे तूने गुमराह किया है मैं भी लोगों के लिए

لَهُمۡ صِرَاطَكَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ﴿١٦﴾ۙ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمۡ مِّنۡۢ

तेरी सीधी राह पर बैठूंगा (16) फिर उनपर आऊँगा उनके

بَيۡنِ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمِنۡ خَلۡفِهِمۡ وَعَنۡ اَيۡمَانِهِمۡ وَعَنۡ

आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके

شَمَآئِلِهِمۡ‌ؕ وَلَا تَجِدُ اَكۡثَرَهُمۡ شٰكِرِيۡنَ ﴿١٧﴾ قَالَ

बाएं से, और तू उनमें से अकसर को शुक्रगुज़ार न पाएगा (17) अल्लाह ने कहा कि

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ط لَمَنْ تَبِعَكَ

निकल जा यहाँ से ज़लील और ठुकराया हुआ, जो कोई उनमें से तेरी राह पर

مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰۤاٰدَمُ

चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा (18) और ऐ आदम!

اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا

तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहाँ से चाहो,

وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

मगर उस दरख़्त के पास न जाना वरना तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो जाओगे (19)

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَاوٗرِيَ

फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि वह खोल दे उनकी शर्मगाहें

عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا

जो उनसे छुपाई गई थीं, उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब ने तुमको उस दरख़्त से

عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ

सिर्फ़ इस लिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फ़रिश्ते न बन जाओ या तुमको

تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ

हमेशा की ज़िंदगी हासिल हो जाए (20) और उसने क़सम खा कर कहा कि मैं तुम दोनों का

النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ لا فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ج فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

ख़ैरख़्वाह हूँ (21) पस माइल कर लिया उनको धोखे से, फिर जब दोनों ने दरख़्त का फल चखा

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ

तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं और वे अपने को बाग़ के पत्तों से

وَّرَقِ الْجَنَّةِ ط وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ

ढाँकने लगे, और उनके रब ने उनको पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें

تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا

उस दरख़्त से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा

عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا سكتة وَاِنْ

खुला हुआ दुश्मन है (22) उन्होंने कहा: ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, और अगर आप

لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

हमको मुआ़फ़ न करें और हम पर रहम न करें तो हम नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे (23)

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ

अल्लाह ने कहा: उतरो तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे और तुम्हारे लिए ज़मीन में

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ

एक ख़ास मुद्दत तक ठहरना और नफ़ा उठाना है (24) अल्लाह ने कहा: उसी में तुम जियोगे

وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ ع يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ

और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे (25) ऐ आदम की औलाद!

قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ

हमने तुमपर लिबास उतारा जो तुम्हारी शर्मगाहों को ढाँके और ज़ीनत भी,

وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ

और तक़्वे का लिबास उससे भी बेहतर है, यह अल्लाह की निशानियों में से है

لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ

ताकि लोग ग़ौर करें (26) ऐ आदम की औलाद! शैतान तुमको बहका न दे

كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا

जिस तरह उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके लिबास

لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ

उतरवाए ताकि उनको उनके सामने बेपर्दा करदे, वह और उसके साथी तुमको

وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ

ऐसी जगह से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते, हमने शैतानों को उन लोगों का

اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً

दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते (27) और जब वे कोई फ़हश (खुली बुराई) करते हैं

قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ

तो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और अल्लाह ने हमको इसी का हुक्म दिया है, कह दें कि

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देते, क्या तुम अल्लाह के ज़िम्मे वे बात लगाते हो

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا

जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं (28) कह दीजिए कि मेरे रब ने इंसाफ़ का हुक्म दिया है और यह कि

وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ

हर नमाज़ के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखो और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को ख़ालिस

لَهُ الدِّيْنَ ۚ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَرِيْقًا هَدٰى

करते हुए जिस तरह उसने तुमको पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे (29) एक गिरोह को उसने राह दिखा

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا

दी और एक गिरोह है कि उस पर गुमराही साबित हो चुकी, उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर

الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ

शैतानों को अपना दोस्त बनाया और गुमान यह रखते हैं कि

اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ

वे हिदायत पर हैं (30) ऐ आदम की औलाद! हर नमाज़ के वक़्त

كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ

अपना लिबास पहनो और खाओ पियो और हद से तजावुज़ न करो, बेशक अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ

हद से तजावुज़ करने वालों को पसंद नहीं करता (31) (ऐ नबी) आप पूछिए कि अल्लाह की ज़ीनत को किसने हराम किया

الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ

जो उसने अपने बंदों के लिए निकाला था और खाने की पाक चीज़ों को, कह दीजिए कि

هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ

वे दुनिया की ज़िंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आख़िरत में तो वे ख़ास उन्हीं के लिए

الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

होंगी, इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें (32)

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا

कह दीजिए कि मेरे रब ने तो बस फ़हश बातों को हराम ठहराया है वे खुली हों

بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا

या छुपी और गुनाह को और नाहक़ की ज़्यादती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى

किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे

اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते (33) और हर क़ौम के लिए एक मुक़र्ररह मुद्दत है, फिर जब उनकी मुद्दत

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

आ जाएगी तो वह न एक लमहा भर पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे (34)

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ

ऐ आदम की औलाद! अगर तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल आएं जो तुमको मेरी आयात

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

सुनाएं तो जो शख़्स डरा और जिसने इस्लाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ़ होगा

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

और न वे ग़मगीन होंगे (35) और जो लोग मेरी आयात को झुठलाएं

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

और उनसे तकब्बुर करें वही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें

خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

हमेशा रहेंगे (36) फिर उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ

या उसकी निशानियों को झुठलाएं, उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वह उन्हें

مِّنَ الْكِتٰبِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ

मिल कर रहेगा, यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उनकी जान लेने के लिए उनके पास पहुँचेंगे

قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا

तो उनसे पूछेंगे कि अल्लाह के सिवा जिनको तुम पुकारते थे कहाँ हैं, वे कहेंगे कि

ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

वे सब हमसे खो गए और वे अपने ऊपर इक़रार करेंगे कि बेशक वे

كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ

इनकार करने वाले थे (37) अल्लाह कहेगा: दाख़िल हो जाओ आग में जिन्नात और इंसानों के

قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ

उन गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, जब भी कोई गिरोह (जहन्नम में)

اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ

दाख़िल होगा वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा, यहाँ तक कि जब वे सब उसमें जमा हो जाएंगे

قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا

तो उनके पिछले अपने अगलों के बारे में कहेंगे कि ऐ हमारे रब! यही लोग हैं जिन्होंने हमको गुमराह किया

فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۬ؕ قَالَ لِكُلٍّ

पस आप उनको आग का दोहरा अज़ाब दीजिए, अल्लाह कहेगा कि सबके लिए

ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ

दोहरा है मगर तुम नहीं जानते (38) और उनके अगले अपने

لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

पिछलों से कहेंगे कि तुमको हमपर कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं,

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع اِنَّ

पस अपनी कमाई के नतीजे में अज़ाब का मज़ा चखो (39) बेशक

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ

जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे तकब्बुर किया उनके लिए आसमान के दरवाज़े

لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى

नहीं खोले जाएंगे और वे जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक कि

يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي

ऊँट सूई के नाके में न घुस जाए, और हम मुजरिमों को ऐसी ही

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ

सज़ा देते हैं (40) उनके लिए दोज़ख़ का बिछोना होगा और उनके ऊपर उसी का

غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ओढ़ना होगा, और हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं (41) और जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۫

और उन्होंने नेक काम किए हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त के मुताबिक़ ही बोझ डालते हैं,

أُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾

यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे (42)

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ

और उनके सीने की हर रंजिश को हम निकाल देंगे, उनके नीचे नहरें

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا

बह रही होंगी, और वे कहेंगे कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमको यहाँ तक

لِهٰذَا ۗ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ

पहुँचाया और हम राह पाने वाले न थे अगर अल्लाह हमको हिदायत न देता,

لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْٓا اَنْ

हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे, और आवाज़ आएगी कि

تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए हो अपने आमाल के बदले (43)

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا

हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसको सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के

وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ

वादे को सच्चा पाया, वे कहेंगे: हाँ, फिर एक पुकारने वाला दोनों के

بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ۙ الَّذِيْنَ

दरमियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो ज़ालिमों पर (44) जो

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ

अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़ापन) ढूँडते थे

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ۘ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ

और वे आख़िरत के मुनकिर थे (45) और दोनों के दरमियान एक आड़ होगी,

وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ

और आराफ़ के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामतों से पहचानेंगे

وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۣ لَمْ

और वह जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुमपर सलामती हो, वे अभी

يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ

जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे मगर वे उम्मीदवार होंगे (46) और जब दोज़ख़ वालों की तरफ़

تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ

उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ए हमारे रब! हमको शामिल न कीजिए

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ

इन ज़ालिम लोगों के साथ (47) और आराफ़ वाले उन लोगों को

رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ

पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे, वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आई

جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ

तुम्हारी जमाअ़त और तुम्हारा अपने आपको बड़ा समझना (48) क्या यही वे लोग हैं

الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا

जिनके बारे में तुम क़सम खाकर कहते थे कि उनको कभी अल्लाह की रहमत न मिलेगी, जन्नत में

الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

दाख़िल हो जाओ, अब तुम पर न कोई डर है और न तुम कभी ग़मगीन होगे (49)

وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا

और दोज़ख़ के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी

عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْٓا اِنَّ

हम पर भी डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है, वे कहेंगे कि

اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ ۙ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

अल्लाह ने उन दोनों चीज़ों को काफ़िरों के लिए हराम कर दिया है (50) वे जिन्होंने

دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ

अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया था और जिनको दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा था,

فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا

पस आज हम उनको भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और जैसाकि

كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ

वे हमारी निशानियों का इनकार करते रहे (51) और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं

فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

जिसको हमने इल्म की बुनियाद पर वाज़ेह कर दिया है हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं (52)

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ

क्या अब भी वे इसी के मुंतज़िर हैं कि उसका मज़मून ज़ाहिर हो जाए, जिस दिन उसका मज़मून ज़ाहिर हो जाएगा

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

तो वे लोग जो उसको पहले से भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا

पैग़म्बर हक़ लेकर आए थे, पस अब क्या कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी

لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ

सिफ़ारिश करें या हम को दोबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि हम उस अमल के सिवा दूसरे अमल करें जो हम पहले करते रहे थे,

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع

उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया जो वह घड़ते थे (53)

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۫ يُغْشِي

छः दिनों में पैदा किया फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ, वह उढ़ाता है

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

रात को दिन पर इस तरह कि दिन उसके पीछे लगा आता है दोड़ता हुआ, और (उसने पैदा किए) सूरज और चाँद

وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ

और सितारे जो ताबेदार हैं उसके हुक्म के, याद रखो! उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना,

تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ

बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहानों का (54) अपने रब को पुकारो

تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾

गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके, यक़ीनन वह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता (55)

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا

और ज़मीन में फ़साद न करो उसकी इस्लाह के बाद और उसी को पुकारो ख़ौफ़

وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

और उम्मीद के साथ, यक़ीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से क़रीब है (56)

وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ

और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बना कर

رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ

भेजता है, फिर जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसको किसी ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़

لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ

हाँक देते हैं फिर हम उसके ज़रिए पानी उतारते हैं, फिर हम उसके ज़रिए से

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ

हर क़िस्म के फल निकालते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे; ताकि तुम

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ

ग़ौर करो (57) और जो ज़मीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है

بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ

उसके रब के हुक्म से, और जो ज़मीन ख़राब है उसकी पैदावार कम ही होती है,

كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾ ع لَقَدْ

इसी तरह हम अपनी निशानियाँ मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं (58) हमने

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا

नूह (अलै॰) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, नूह ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ

इबादत करो कि उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, मैं तुम पर एक बड़े

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ الْمَلَاُ

दिन के अज़ाब से डरता हूँ (59) उसकी क़ौम के

مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾

बड़ों ने कहा कि हमको तो यह नज़र आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुबतला हो (60)

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ

नूह (अलै०) ने फ़रमायाः ऐ मेरी क़ौम! मुझमें कोई गुमराही नहीं है बल्कि मैं भेजा हुआ हूँ

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ

सारे जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से (61) तुमको अपने रब के पैग़ामात पहुँचा रहा हूँ

وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

और तुम्हारी भलाई चाह रहा हूँ, और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (62)

اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى

क्या तुमको इस पर ताज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से

رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ

एक शख़्स के ज़रिए आई; ताकि वह तुमको डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ

रहम किया जाए (63) पस उन्होंने उनको झुठला दिया, फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ

فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ

कश्ती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था,

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع وَاِلٰى عَادٍ

बेशक वे लोग अंधे थे (64) और आद की तरफ़ हमने

اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

उनके भाई हूद (अलै०) को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الْمَلَاُ

तुम्हारा कोई माबूद नहीं, पस क्या तुम डरते क्यों नहीं (65) उसकी क़ौम के बड़े

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ

जो इनकार कर रहे थे बोलेः हम तो तुमको नादानी में

سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ

मुबतला देखते हैं और हमको गुमान है कि तुम झूठे हो (66) हूद (अलै०) ने कहाः

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ

ऐ मेरी क़ौम! मुझे कोई नादानी नहीं है बल्कि मैं सारे जहानों के परवरदिगार का

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا

रसूल हूँ (67) तुमको अपने रब के पैग़ामात पहुँचा रहा हूँ और मैं तुम्हारे हक़ में

لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ

ख़ैरख़्वाह, अमानत दार हूँ (68) क्या तुमको इसपर ताज्जुब है कि तुम्हारे पास

ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ

तुम्हीं में से एक शख़्स के ज़रिए तुम्हारे रब की नसीहत आई ताकि वह तुमको डराए,

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ

और याद करो जबकि उसने क़ौमे नूह के बाद तुमको उसका

نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا

जानशीन बनाया और डील-डोल में तुमको फैलाव भी ज़्यादा दिया, पस अल्लाह की

اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا

नेमतों को याद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ (69) हूद (अलै०) की क़ौम ने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि

لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उनको छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ

करते आए हैं, पस तुम जिस अज़ाब की धमकी हमको देते हो उसको ले आओ अगर तुम

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ

सच्चे हो (70) हूद (अलै०) ने कहा: तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से

رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ

अज़ाब और ग़ुस्सा वाक़े हो चुका है, क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो

سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ

जो तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने रख लिए हैं, जिनकी अल्लाह ने कोई

بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

दलील नहीं उतारी, पस इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों

الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

में से हूँ (71) फिर हमने बचा लिया उसको और जो उसके साथ थे अपनी

مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

रहमत से और हमने उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे

وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ

और मानने वाले न थे (72) और समूद की तरफ़ हमने उनके भाई

صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ

सालेह (अलै०) को भेजा, उन्होंने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा

اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ

कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक खुली हुई निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह

نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ

की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी के तौर पर है पस उसको छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की

اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

ज़मीन में और उसे किसी बुराई के इरादे से छुना भी नहीं वरना तुमको उनका एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा (73)

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ

और याद करो जबकि अल्लाह ने आद के बाद तुमको जानशीन बनाया

وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا

और तुमको ज़मीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में

قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا

महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो, पस अल्लाह की

اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾

नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते न फिरो (74)

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

उनकी क़ौम के बड़ों ने जिन्होंने घमंड किया उन ईमान वालों से कहा

اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ

जो कमज़ोर समझे जाते थे: क्या तुमको यक़ीन है कि

صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ

सालेह अपने रब का भेजा हुआ है, उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ

उस पर ईमान रखते हैं (75) वे मुतकब्बिर लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज़ के

اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا

मुनकिर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो (76) फिर उन्होंने ऊँटनी को काट डाला और अपने रब के

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ

हुक्म से फिर गए और उन्होंने कहा: ऐ सालेह: अगर तू पैग़म्बर है तो वह अज़ाब ले आ

اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

जिससे तू हमको डराता है (77) फिर उन्हें ज़लज़ले ने आ पकड़ा

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ

और वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गए (78) और सालेह (अलै॰) यह कहते हुए (उनकी बस्तियों से)

وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ

निकल गए कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुमको अपने रब का पैग़ाम दिया और मैंने तुम्हारी

لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَلُوْطًا

ख़ैरख़्वाही की मगर तुम ख़ैरख़्वाहों को पसंद नहीं करते (79) और हमने लूत (अलै॰) को भेजा,

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम खुली बेहयाई का काम करते हो जो

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

तुमसे पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया? (80) तुम औरतों को छोड़ कर

الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

मर्दों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो; बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले

مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا

लोग हो (81) मगर उनकी क़ौम का जवाब इस बात के सिवा कुछ न था कि

اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग बड़े पाकबाज़ बनते हैं (82)

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڮ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

फिर हमने बचा लिया लूत को और उनके घर वालों को सिवाए उनकी बीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी (83)

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

और हमने उनपर बारिश बरसाई (पत्थरों की) फिर देखो कि कैसा अंजाम हुआ

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ

मुजरिमों का (84) और मैदान की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा, उन्होंने कहा कि

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ

ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो जिसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं,

جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ

तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलील पहुँच चुकी है पस नाप तोल पूरा करो

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا

और मत घटाकर दो लोगों को उनकी चीज़ें, और फ़साद न मचाओ

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

ज़मीन में उसकी इस्लाह के बाद, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ

मोमिन हो (85) और रास्तों पर मत बैठो कि

تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ

डराओ और अल्लाह की राह से उन लोगों को रोको जो उस पर ईमान ला चुके हैं

بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ

और उसकी राह में कजी (टेढ़ापन) तलाश करो, और याद करो जबकि तुम

قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

बहुत थोड़े थे फिर उसने तुमको बढ़ा दिया, और देखो फ़साद मचाने वालों का

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا

क्या अंजाम हुआ (86) और अगर तुम में से एक गिरोह उस पर ईमान लाया है

بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا

जो देकर मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इन्तिज़ार करो

حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

यहाँ तक कि अल्लाह हमारे दरमियान फ़ैसला कर दे, और वह बेहतर फ़ैसला करने वाला है (87)

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

क़ौम के बड़े लोग जो मुतकब्बिर थे उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब! हम तुमको

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ

और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे

اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾

या तुम वापस हमारी मिल्लत में आजाओ, शुऐब (अलै०) ने कहाः क्या हम बेज़ार हों तब भी (88)

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ

हम अल्लाह पर झूठ घड़ने वाले होंगे अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लोट आएं

بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ

बाद इसके कि अल्लाह ने हमको उससे निजात दी, और हमसे यह मुमकिन नहीं कि हम उस मिल्लत में

فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ

लौट आएं मगर यह कि हमारा रब अल्लाह ही ऐसा चाहे, हमारा रब हर चीज़ को अपने इल्म से

شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا

घेरे हुए है, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी क़ौम के

وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ

दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए, आप ही बेहतरीन फ़ैसला करने वाले हैं (89) और उन बड़ों ने

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا

जिन्होंने उसकी क़ौम में से इनकार किया था कहा कि अगर तुम शुऐब की पैरवी करोगे

اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

तो तुम बरबाद हो जाओगे (90) फिर उनको ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا

पस वे अपने घर में औंधे मुँह पड़े रह गए (91) जिन्होंने शुऐब (अलै०) को झुठलाया था

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا

गोया वे उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही

هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ

नुक़सान में रहे (92) उस वक़्त शुऐब (अलै०) उनसे मुँह मोड़ कर चले और कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमको

اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى

अपने रब के पैग़ामात पहुँचा चुका और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही कर चुका, अब मैं क्या अफ़सोस करूँ

عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ

मुनकिरों पर (93) और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा

ع ١١

نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ

उसके रहने वालों को हमने सख़्ती और तकलीफ़ में मुबतला किया; ताकि वे

يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى

गिड़गिड़ाएं (94) फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया यहाँ तक कि

عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ

उन्हें ख़ूब तरक़्क़ी हुई और वे कहने लगे कि तकलीफ़ और ख़ुशी तो हमारे बाप दादाओं को भी पहुँचती रही है,

فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ اَنَّ

फिर हमने उनको अचानक पकड़ लिया और वे उसका गुमान भी न रखते थे (95) और अगर

اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उनपर आसमान और ज़मीन की

منزل ٢

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا

नेमतें खोल देते, मगर उन्होंने झुठलाया तो हमने उनको पकड़ लिया उनके

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

आमाल के बदले (96) फिर क्या बस्ती वाले उससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि उनपर हमारा अज़ाब

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ ط اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى

रात के वक़्त आ पड़े जबकि वे सोते हों (97) या क्या बस्ती वाले इससे बेख़ौफ़ हो गए हैं कि

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا

उन पर हमारा अज़ाब आ पहुँचे दिन चढ़े जब वे खेलते हों (98) क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों से

مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ ع

बेख़ौफ़ हो गए हैं पस अल्लाह की तदबीरों से वही लोग बेख़ौफ़ होते हैं जो तबाह होने वाले हों (99)

ع ١٢

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ

क्या सबक़ नहीं मिला उनको जो ज़मीन के वारिस हुए हैं उसके अगले रहने वालों के

اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ

बाद कि अगर हम चाहें तो उनको पकड़ लें उनके गुनाहों पर, और हमने उनके

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ

दिलों पर मुहर लगा दी है पस वे नहीं सुनते (100) ये वे बस्तियाँ हैं जिनके

عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

कुछ हालात हम तुमको सुना रहे हैं, उनके पास उनके रसूल निशानियाँ

بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ

लेकर आए तो हरगिज़ ऐसा न हुआ कि वे ईमान लाएं उस बात पर जिसको वे पहले झुठला चुके थे,

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا

इस तरह अल्लाह मुनकिरीन के दिलों पर मुहर लगा देता है (101) और हमने

وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ

उनके अकसर लोगों में अहद की पाबंदी न पाई और हमने उनमें से अकसर को

لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى

नाफ़रमान पाया (102) फिर उसके बाद हमने मूसा (अलै॰) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन

فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

और उसकी क़ौम के सरदारों के पास मगर उन्होंने हमारी निशानियों के साथ ज़ुल्म किया, पस देखो कि फ़साद

عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّىْ

मचाने वालों का क्या अंजाम हुआ (103) और मूसा (अलै॰) ने कहा: ऐ फ़िरऔन! मैं तमाम जहानों के

رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ

परवरदिगार की तरफ़ से भेजा हुआ रसूल हूँ (104) पाबंद हूँ इस बात का कि अल्लाह के नाम पर

عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ

कोई बात हक़ के सिवा ना कहूँ, मैं तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली हुई निशानी लेकर आया हूँ

فَاَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ؕ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ

पस तुम बनी इसराईल को मेरे साथ जाने दो (105) फ़िरऔन ने कहा: अगर तुम कोई निशानी

بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى

लेकर आए हो तो उसको पेश करो अगर तुम सच्चे हो (106) तब मूसा (अलै॰) ने

عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا

अपना असा डाल दिया तो वह अचानक एक साफ़ अज़्दहा बन गया (107) और मूसा (अलै०) ने हाथ

هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ

निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था (108) फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने

فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ

कहा कि यह शख़्स बड़ा माहिर जादूगर है (109) जो चाहता है कि तुमको तुम्हारी ज़मीन से

مِّنْ اَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ

निकाल दे, अब तुम्हारी क्या राए है (110) उन्होंने कहाः मूसा को और उनके भाई को मोहलत दो

وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ

और शहरों में जमा करने वाले भेज दो (111) कि वह तुम्हारे पास सारे माहिर जादूगर

عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا

ले आएं (112) और जादूगर फ़िरऔन के पास आए, उन्होंने कहाः हमको इनाम तो ज़रूर मिलेगा

اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ

अगर हम ग़ालिब रहे (113) फ़िरऔन ने कहाः हाँ, और यक़ीनन तुम हमारे क़रीबी लोगों में से

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ

बन जाओगे (114) जादूगरों ने कहाः मूसा! या तो तुम (असा) डालो या हम

نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾ قَالَ اَلْقُوْا فَلَمَّآ اَلْقَوْا

डालने वाले बनते हैं (115) मूसा (अलै०) ने कहाः तुम ही डालो, फिर जब उन्होंने डाला

سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ

तो उन्होंने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उनपर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा जादू

عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ

दिखाया (116) और हमने मूसा की तरफ़ हुक्म भेजा कि अपना असा डाल दो

فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ

तो वह अचानक निगलने लगा उसको जो उन्होंने घड़ा था (117) पस हक़ ज़ाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا

बातिल होकर रह गया (118) पस वे लोग वहीं हार गए और ज़लील हो कर

طٰغِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ قَالُوْٓا

रह गए (119) और जादूगर सज्दे में गिर पड़े (120) उन्होंने कहा:

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾

हम ईमान लाए तमाम जहानों के परवरदिगार पर (121) जो रब है मूसा (अलै०) और हारून (अलै०) का (122)

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ

फ़िरऔन ने कहा: तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ यक़ीनन

هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

यह एक साज़िश है जो तुम लोगों ने शहर में इस ग़र्ज़ से की है कि तुम उसमें रहने वालों को

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ

वहाँ से निकाल दो, तो तुम जल्द जान लोगे (123) मैं तुम्हारे हाथ और पाँव

وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۲۴﴾

मुख़ालिफ़ सिमतों से काटूँगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा (124)

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ

उन्होंने कहा: हमको अपने रब ही की तरफ़ लोटना है (125) तुम हमको सिर्फ़ इस बात की सज़ा देना चाहते हो कि

اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ

हमारे रब की निशानियाँ जब हमारे सामने आ गईं तो हम उनपर ईमान ले आए, ऐ हमारे रब! हम पर

عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ

सब्र उंडेल दीजिए और हमको इस्लाम पर वफ़ात दीजिए (126) फ़िरऔन की क़ौम के

قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي

सरदारों ने कहा: क्या तुम मूसा को और उसकी क़ौम को छोड़ दोगे कि वह मुल्क में

الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

फ़साद फैलाएं और तुमको और तुम्हारे माबूदों को छोड़ दें? फ़िरऔन ने कहा: हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ قَالَ

और उनकी औरतों को ज़िंदा रखेंगे, और हम उनपर पूरी तरह ग़ालिब हैं (127) मूसा (अलै०) ने

مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ

अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो, बेशक

اَلْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ

ज़मीन अल्लाह की है वह अपने बंदों में से जिसको चाहता है उसका वारिस बना देता है,

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ

और आख़िरी कामयाबी तो अल्लाह से डरने वालों ही के लिए है (128) मूसा की क़ौम ने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी

اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۭ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ

सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी, मूसा (अलै०) ने कहा: क़रीब है कि तुम्हारा रब

اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ

तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और उनकी जगह तुमको इस सरज़मीन का मालिक बना दे

فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ

फिर देखे कि तुम कैसा अमल करते हो (129) और हमने फ़िरऔन के लोगों को

فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ

कहत और पैदावार की कमी में मुबतला किया; ताकि उनको

يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا

नसीहत हो (130) लेकिन जब उन पर ख़ुशहाली आती तो कहते कि यह हमारे

هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ

लिए है, और अगर उनपर कोई आफ़त आती तो उसको मूसा और उसके साथियों की

مَّعَهٗ ۭ اَلَآ اِنَّمَا طٰۗىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

नहूसत बताते, सुन लो! उनकी बदबख़्ती तो अल्लाह के पास है मगर उनमें से अकसर

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ

नहीं जानते (131) और वे (मूसा से) कहते थे कि तुम हम पर अपना जादू चलाने के लिए

لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ فَاَرْسَلْنَا

कैसी भी निशानी लेकर आजाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं (132) फिर हमने उनके ऊपर

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

तूफ़ान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक

وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۣ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

और ख़ून, ये सब निशानियाँ अलग अलग दिखाई फिर भी उन्होंने तकब्बुर किया और वे

مُّجۡرِمِيۡنَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيۡهِمُ الرِّجۡزُ قَالُوۡا يٰمُوۡسَى

मुजरिम लोग थे (133) और जब उन पर कोई अज़ाब पड़ता तो कहते: ऐ मूसा!

ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنۡدَكَ ۚ لَئِنۡ كَشَفۡتَ

अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है, अगर तुम हम पर से

عَنَّا الرِّجۡزَ لَنُؤۡمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرۡسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيۡۤ

इस अज़ाब को हटा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ

اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿١٣٤﴾ ۚ فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُمُ الرِّجۡزَ اِلٰۤى اَجَلٍ

जाने देंगे (134) फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफ़त को कुछ मुद्दत के लिए

هُمۡ بٰلِغُوۡهُ اِذَا هُمۡ يَنۡكُثُوۡنَ ﴿١٣٥﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ

जहाँ बेहरहाल उन्हें पहुँचना था तो उसी वक़्त वे अहद को तोड़ देते (135) फिर हमने उनको सज़ा दी

فَاَغۡرَقۡنٰهُمۡ فِى الۡيَمِّ بِاَنَّهُمۡ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوۡا

और उनको समुंदर में डुबो दिया; क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे

عَنۡهَا غٰفِلِيۡنَ ﴿١٣٦﴾ وَاَوۡرَثۡنَا الۡقَوۡمَ الَّذِيۡنَ كَانُوۡا

बेपरवा हो गए (136) और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उनको हमने

يُسۡتَضۡعَفُوۡنَ مَشَارِقَ الۡاَرۡضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىۡ

ज़मीन के मश्रिक़ और मग़्रिब का वारिस बना दिया जिसमें हमने

بٰرَكۡنَا فِيۡهَا ؕ وَتَمَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ الۡحُسۡنٰى عَلٰى بَنِيۡۤ

बरकत रखी थी, और बनी इस्राईल पर आपके रब का नेक वादा

اِسۡرَآءِيۡلَ ۙ بِمَا صَبَرُوۡا ؕ وَدَمَّرۡنَا مَا كَانَ يَصۡنَعُ

पूरा हो गया इस वजह से कि उन्होंने सब्र किया, और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम का

فِرۡعَوۡنُ وَقَوۡمُهٗ وَمَا كَانُوۡا يَعۡرِشُوۡنَ ﴿١٣٧﴾ وَجٰوَزۡنَا

वह सब कुछ बरबाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे (137) और हमने बनी इस्राईल को

بِبَنِيۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ الۡبَحۡرَ فَاَتَوۡا عَلٰى قَوۡمٍ يَّعۡكُفُوۡنَ

समुंदर के पार उतार दिया फिर उनका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जो अपने बुतों (की इबादत) पर

عَلٰۤى اَصۡنَامٍ لَّهُمۡ ۚ قَالُوۡا يٰمُوۡسَى اجۡعَلۡ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا

जमी हुई थी, उन्होंने कहा: ऐ मूसा! हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बनादो जैसे

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ

इनके बुत हैं, मूसा (अलै०) ने कहा: तुम तो बड़े जाहिल लोग हो (138) ये लोग जिस काम में

مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾

लगे हुए हैं वह बरबाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं सब झूठा है (139)

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ

मूसा (अलै०) ने कहा: क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तलाश करूँ; हालाँकि उसने तुमको

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

तमाम जहानों पर फ़ज़ीलत दी है (140) और जब हमने फ़िरऔन के लोगों से तुमको निजात दी

يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

जो तुमको सख़्त अज़ाब में डाले हुए थे कि तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते

وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रहने देते, और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से

رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۱۴۱﴾ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً

बड़ी अज़माइश थी (141) और हमने मूसा (अलै०) से तीस रातों का वादा किया

وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ

और उसको पूरा किया मज़ीद दस रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में

لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ

पूरी हुई, और मूसा (अलै०) ने अपने भाई हारून (अलै०) से कहा: मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में

قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾

जानशीनी करना, इस्लाह करते रहना और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीक़े पर ना चलना (142)

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

और जब मूसा (अलै०) हमारे वक़्त पर आगए तो उसके रब ने उससे कलाम किया, उसने कहा:

رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ

ऐ मेरे रब! मुझे अपने को दिखा दीजिए कि मैं आपको देखूँ, (अल्लाह ने) कहा: तुम मुझको हरगिज़ नहीं देख सकते अलबत्ता

انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ

पहाड़ की तरफ़ देखो अगर वह अपनी जगह क़ायम रह जाए तो तुम भी

منزل ٢

تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ

मुझको देख सकोगे, फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली डाली तो उसको टुकड़े टुकड़े कर दिया और मूसा (अलै०)

مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ

बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब उसको होश आया तो कहा कि आप पाक हैं, मैंने आपकी तरफ़

اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّيْ

रुजूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ (143) अल्लाह ने कहाः ऐ मूसा! मैंने तुमको

اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ

लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और अपने कलाम के ज़रिए मुन्तख़ब किया, पस अब थाम लो

مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ

जो कुछ मैंने तुमको अता किया है और शुक्रगुज़ारों में से बनो (144) और हमने उसके लिए

فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا

तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील

لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا

लिख दी, पस उसको मज़बूती से पकड़ो और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि उनके सही मतलब की

بِاَحْسَنِهَا ۭ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ

पैरवी करें, मैं बहुत जल्द तुमको नाफ़रमानों का ठिकाना दिखाऊँगा (145) मैं अपनी निशानियों से

عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ

उन लोगों को फेर दूँगा जो ज़मीन में नाहक़ घमंड करते हैं,

وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ

और अगर वे हर क़िस्म की निशानियाँ देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं, और अगर वे हिदायत का रास्ता

الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ

देखें तो उसको न अपनाएंगे, और अगर गुमराही का रास्ता देखें

يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا

तो उसको अपना लेंगे, यह इस वजह से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और वे उनकी

عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۗءِ

तरफ़ से ग़ाफ़िल रहे (146) और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आख़िरत की मुलाक़ात को

الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

झुठलाया उनके आमाल ग़ारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ

जो वे करते थे (147) और मूसा (अलै०) की क़ौम ने उस (के जाने) के बाद

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ

अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ जिससे बैल की सी आवाज़ निकलती थी, क्या उन्होंने नहीं देखा कि

لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا

वह न उनसे बोलता और न उन्हें कोई राह दिखाता है, उसको उन्होंने माबूद बना लिया और वह

ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ

बड़े ज़ालिम थे (148) और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि

قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا

वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा कि अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हम को न बख़्शा

لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى

तो यक़ीनन हम बरबाद हो जाएंगे (149) और जब मूसा (अलै०) रंज और ग़ुस्से में भरे हुए

قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ

अपनी क़ौम की तरफ़ लौटे तो उन्होंने कहा: तुमने मेरे बाद मेरी बहुत

مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ

बुरी जानशीनी की, क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली? और उसने तख़्तियाँ डाल दीं

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ

और वे अपने भाई का सर पकड़ कर उसको अपनी तरफ़ ख़ींचने लगे, हारून (अलै०) ने कहा: ऐ मेरी माँ के बेटे!

اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۫ۖ

लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा था और क़रीब था कि वे मुझको मार डालें,

فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ

पस आप दुश्मनों को मेरे ऊपर हंसने का मोक़ा न दें और मुझको ज़ालिमों के साथ

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا

शामिल न करें (150) मूसा (अलै०) ने कहा: ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को मुआफ़ कर दीजिए और हमको

وقف لازم

فِىْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाइए, और आप ही सबसे ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले हैं (151) बेशक जिन लोगों ने

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ

बछड़े को माबूद बनाया उनको उनके रब का ग़ज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾

दुनिया की ज़िंदगी में, और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ बांधने वालों को (152)

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْۤا ؗ

और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा की और ईमान लाए

اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾ وَلَمَّا سَكَتَ

तो बेशक उसके बाद आपका रब बख़्शने वाला, मेहरबान है (153) और जब मूसा (अलै०) का ग़ुस्सा

عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِىْ نُسْخَتِهَا

ठंडा हुआ तो उन्होंने तख़्तियाँ उठाई, और जो उनमें लिखा हुआ था

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

उसमें हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं (154)

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ

और मूसा (अलै०) ने अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी चुने हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त के लिए,

فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ

फिर जब उनको ज़लज़ले ने पकड़ा तो मूसा (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे रब! अगर आप चाहते

اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّاىَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो पहले ही इनको हलाक कर देते और मुझको भी, क्या आप हमको ऐसे काम की वजह से हलाक करेंगे

السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا

जो हम में से बेवक़ूफ़ों ने किया, यह सब आपकी जानिब से आज़माइश है आप इससे जिसको चाहें

مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِىْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ

गुमराह कर दें और जिसको चाहें हिदायत दें, आप ही हमारे थामने वाले हैं पस हमको बख़्श दीजिए

لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ وَاكْتُبْ لَنَا

और हम पर रहम फ़रमाइए, आप सबसे बेहतर बख़्शने वाले हैं (155) और आप हमारे लिए

منزل ٢

فِيۡ هٰذِهِ الدُّنۡيَا حَسَنَةً وَّفِي الۡاٰخِرَةِ اِنَّا هُدۡنَاۤ

इस दुनिया में भी भलाई लिख दीजिए और आख़िरत में भी, हमने आपकी तरफ़

اِلَيۡكَ ؕ قَالَ عَذَابِيۡۤ اُصِيۡبُ بِهٖ مَنۡ اَشَآءُ ۚ

रुजूअ किया, अल्लाह ने कहाः मैं अपने अज़ाब में मुबतला करता हूँ जिसको चाहता हूँ

وَرَحۡمَتِيۡ وَسِعَتۡ كُلَّ شَيۡءٍ ؕ فَسَاَكۡتُبُهَا لِلَّذِيۡنَ

और मेरी रहमत शामिल है हर चीज़ को, पस में उसको लिख दूंगा उनके लिए

يَتَّقُوۡنَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ بِاٰيٰتِنَا

जो डर रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और जो हमारी निशानियों पर

يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۵۶﴾ۚ اَلَّذِيۡنَ يَتَّبِعُوۡنَ الرَّسُوۡلَ النَّبِيَّ

ईमान लाते हैं (156) जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी

الۡاُمِّيَّ الَّذِيۡ يَجِدُوۡنَهٗ مَكۡتُوۡبًا عِنۡدَهُمۡ فِي

उम्मी है, जिसको वे लिखा हुआ पाते हैं अपने यहाँ

التَّوۡرٰٮةِ وَالۡاِنۡجِيۡلِ ۡ يَاۡمُرُهُمۡ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهٰٮهُمۡ

तौरात और इंजील में, वह उनको नेकी का हुक्म देता है और उनको बुराई से

عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ

रोकता है और उनके लिए पाकीज़ा चीजें जायज़ ठहराता है और नापाक चीजें उनपर

الۡخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنۡهُمۡ اِصۡرَهُمۡ وَالۡاَغۡلٰلَ الَّتِيۡ كَانَتۡ

हराम करता है और उनपर से वह बोझ और तौक़ उतारता है जो उनपर

عَلَيۡهِمۡ ؕ فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِهٖ وَعَزَّرُوۡهُ وَنَصَرُوۡهُ

थीं, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज़्ज़त की और उसकी मदद की

وَاتَّبَعُوا النُّوۡرَ الَّذِيۡۤ اُنۡزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ

और उस नूर (क़ुरआन) की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग

الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾ۧ قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ

कामयाबी पाने वाले हैं (157) (ऐ नबी) कह दीजिए कि ऐ लोगो! बेशक मैं उस अल्लाह का रसूल हूँ

اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعَا الَّذِيۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ

तुम सब की तरफ़ जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में,

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ص فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िंदगी देता है और वही मारता है, पस ईमान लाओ अल्लाह पर

وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ

और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलिमात पर

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى

और उसकी पैरवी करो; ताकि तुम हिदायत पाओ (158) और मूसा (अलै०) की क़ौम में

اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ

एक गिरोह ऐसा भी है जो हक़ के मुताबिक़ रहनुमाई करता है और उसी के मुताबिक़ इंसाफ़ करता है (159) और हमने उनको

اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى

बारह घरानों में तक़सीम करके उन्हें अलग अलग गिरोह बना दिया, और हमने मूसा को हुक्म भेजा

اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

उस वक़्त जब उसकी क़ौम ने पानी मांगा कि फ़लाँ पत्थर पर अपनी लाठी मारो

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ

तो उससे बारह चश्मे फूट पड़े, हर गिरोह ने अपना

كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ

पानी पीने का ठिकाना मालूम कर लिया, और हम ने उनपर बदलियों का साया किया

وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

और हमने उनपर मन व सलवा उतारा, खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से

مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

जो हमने तुमको दी हैं, और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि वे ख़ुद अपना ही नुक़सान

يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ

करते रहे (160) और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ

وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ

और उसमें से जहाँ से चाहो खाओ और कहो कि हमको बख़्श दीजिए और दरवाज़े में से झुके हुए

سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓئٰتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۶۱﴾

दाख़िल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं मुआफ़ कर देंगे, हम नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे (161)

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ

फिर उनमें से ज़ालिमों ने बदल डाला दूसरा लफ़्ज़ उसके सिवा जो उनसे

لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا

कहा गया था, फिर हमने उनपर आसमान से अज़ाब भेजा इस लिए कि वे

كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ

जुल्म करते थे (162) और आप उनसे उस बस्ती का हाल पूछिए जो दरिया के किनारे थी,

كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ اِذْ يَعْدُوْنَ فِى السَّبْتِ اِذْ

जब वे सब्त (सनीचर) के बारे में हद से निकल जाते थे कि जब

تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ

उनके सनीचर के दिन उनकी मछलियाँ पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन

لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا

सनीचर न होता तो न आतीं, इस तरह हमने उनकी आज़माइश की इस लिए कि

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ

वे नाफ़रमानी कर रहे थे (163) और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम

تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ

ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उनको सख़्त अज़ाब

عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ

देने वाला है, उन्होंने कहाः तुम्हारे रब के सामने इल्ज़ाम उतारने के लिए और इस लिए कि

يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ

शायद वे डरें (164) फिर जब ये लोग वह बात भुला बैठे जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी तो बुराई से

يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

रोकने वालों को तो हमने बचा लिया और जिन्होंने ज़्यादती की थी उनकी

بِعَذَابٍۢ بَئِيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا

मुसलसल नाफ़रमानी की वजह से हमने उन्हें एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया (165) फिर जब वे

عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً

बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि ज़लील बंदर

خٰسِئِيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ

बन जाओ (166) और जब आपके रब ने ऐलान कर दिया कि वे उन (यहूद) पर

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ط

क़ियामत के दिन तक ज़रूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उनको निहायत बुरा अज़ाब देंगे,

اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

बेशक आप का रब जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला, मेहरबान है (167)

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ

और हमने उनको गिरोह गिरोह करके ज़मीन में फैला दिया, उनमें से कुछ नेक हैं

وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ز وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ

और उनमें से कुछ उससे मुख़्तलिफ़, और हमने उनको आज़माया अच्छे हालात से और बुरे हालात से

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

ताकि वे बाज़ आएं (168) फिर उनके पीछे ना-अहल लोग आए

وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى

जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया के सामान लेते हैं

وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ

और कहते हैं कि हम यक़ीनन बख़्श दिए जाएंगे, और अगर ऐसा ही सामान उनके सामने फिर आए

يَاْخُذُوْهُ ط اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ

तो वे उसको लेलेंगे, क्या उनसे किताब में इसका अहद नहीं लिया गया है कि

اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا

अल्लाह के नाम पर हक़ के सिवा कोई और बात न कहें, और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें

فِيْهِ ط وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط

लिखा है, और आख़िरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए,

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ

क्या तुम समझते नहीं? (169) और जो लोग अल्लाह की किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं

وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ط اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾

और नमाज़ क़ायम करते हैं, बेशक हम ऐसे नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करेंगे (170)

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ

और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान है, और उन्होंने गुमान किया कि

وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا

वह उन पर आ पड़ेगा, पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुमको दी है मज़बूती से, और याद रखो

مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ

जो उसमें है ताकि तुम बचो (171) और जब आपके रब ने

بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى

आदम की औलाद की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उनको गवाह ठहराया

اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۚۛ شَهِدْنَا ۚۛ

ख़ुद उनके ऊपर, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने कहाः हाँ क्यों नहीं! हम इक़रार करते हैं,

اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾

यह इस लिए हुआ कि कहीं तुम क़ियामत के दिन कहने लगो कि हमको तो इसकी ख़बर न थी (172)

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا

या कहो कि हमारे बाप दादा ने पहले से शिर्क किया था और हम उनके बाद

ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

उनकी नसल में हुए, तो क्या तू हमको हलाक करेगा उस काम पर जो ग़लत कार

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

लोगों ने किया (173) और इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोल कर बयान करते हैं ताकि वे

يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ

लौट जाएं (174) और उनको उस शख़्स का हाल सुनाइए जिसको हमने अपनी आयतें

اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ

दी थीं तो वह उनसे निकल भागा, पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों

مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ

में से हो गया (175) और अगर हम चाहते तो उसको उन आयतों के ज़रिए से बुलंदी अता करते मगर वह तो

اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

ज़मीन का हो रहा और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगा, पस उसकी मिसाल

ع ٢١ معانقة ٧ منزل ٢

الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ
कुत्ते की सी है कि अगर तुम उस पर बोझ लाद दो तब भी हाँपे और अगर छोड़ दो

يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
तब भी हाँपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया,

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ
पस आप ये वाक़िआत उन को सुनाओ ताकि वे सोचें (176) कितनी बुरी

مَثَلَا ِۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो जानों पर

كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىْ ۚ
ज़ुल्म करते हैं (177) अल्लाह जिसको राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है,

وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾ وَلَقَدْ
और जिसको वह बे-राह करदे तो वही घाटा उठाने वाले हैं (178) और हमने

ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ ز
जिन्नात और इंसान में से बहुतों को जहन्नम के लिए पैदा किया है,

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ز وَلَهُمْ اَعْيُنٌ
उनके दिल हैं जिन से वे समझते नहीं, उनकी आँखें हैं

لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ز وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ
जिनसे वे देखते नहीं और उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं,

اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
वे ऐसे हैं जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी ज़्यादा बेराह, यही लोग

الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ
ग़ाफ़िल हैं (179) और अस्मा-ए-हुस्ना (अच्छे अच्छे नाम) अल्लाह ही के हैं लिहाज़ा उसको उन्हीं नामों

بِهَا ص وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ
से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों में टेढ़ा रास्ता इख़्तियार करते हैं,

سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ
वे जो कुछ कर रहे हैं उसका बदला उन्हें दिया जाएगा (180) और हमारी मख़्लूक़ में

أُمَّةٌ يَّهۡدُوۡنَ بِالۡحَقِّ وَبِهٖ يَعۡدِلُوۡنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالَّذِيۡنَ

एक जमात ऐसी भी है जो लोगों को हक़ का रास्ता दिखाती है और उसी हक़ के मुताबिक़ इंसाफ़ से काम लेती है (181) और जिन लोगों

كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا سَنَسۡتَدۡرِجُهُمۡ مِّنۡ حَيۡثُ

ने हमारी निशानियों को झुठलाया हम उनको आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहाँ से

لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۸۲﴾ وَاُمۡلِىۡ لَهُمۡ ؕ اِنَّ كَيۡدِىۡ مَتِيۡنٌ ﴿۱۸۳﴾

उनको ख़बर भी नहीं होगी (182) और में उनको ढील देता हूँ, यक़ीन जानो कि मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बड़ी मज़बूत है (183)

اَوَلَمۡ يَتَفَكَّرُوۡا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمۡ مِّنۡ جِنَّةٍ ؕ اِنۡ

क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई पाग़लपन नहीं है, वह तो

هُوَ اِلَّا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۱۸۴﴾ اَوَلَمۡ يَنۡظُرُوۡا فِىۡ مَلَكُوۡتِ

एक साफ़ डराने वाला है (184) क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन के

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنۡ شَىۡءٍ ۙ

निज़ाम पर नज़र नहीं की और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज़ से

وَّاَنۡ عَسٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ قَدِ اقۡتَرَبَ اَجَلُهُمۡ ۚ فَبِاَىِّ

और इस बात पर कि शायद उनकी मुद्दत क़रीब आ गई हो, पस इसके बाद

حَدِيۡثٍۢ بَعۡدَهٗ يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۸۵﴾ مَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ

वे किस बात पर ईमान लाएंगे (185) अल्लाह जिसको गुमराह कर दे

فَلَا هَادِىَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمۡ فِىۡ طُغۡيَانِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ﴿۱۸۶﴾

उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं, और वह उन को उन की सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है (186)

يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرۡسٰٮهَا ؕ قُلۡ

वे आपसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वे कब वाक़े होगी, आप कह दीजिए कि

اِنَّمَا عِلۡمُهَا عِنۡدَ رَبِّىۡ ۚ لَا يُجَلِّيۡهَا لِوَقۡتِهَاۤ اِلَّا

उसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है, वही उसके वक़्त पर उसको

هُوَ ؔۘ ثَقُلَتۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ لَا تَاۡتِيۡكُمۡ

ज़ाहिर करेगा, वह भारी हो रही है आसमानों और ज़मीन में, वह जब तुम पर आएगी

اِلَّا بَغۡتَةً ؕ يَسۡـَٔلُوۡنَكَ كَاَنَّكَ حَفِىٌّ عَنۡهَا ؕ

तो अचानक आ जाएगी, वे आपसे (इस तरह) पूछते हैं गोया आप उसकी तहक़ीक़ कर चुके हों,

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

कह दीजिए उसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है लेकिन अकसर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا

नहीं जानते (187) (ऐ नबी) आप कह दीजिए कि मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर जो

مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ

अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब को जानता तो बहुत से फ़ायदे अपने लिए

مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ

हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक़सान न पहुँचता, मैं ते महज़ एक डराने वाला

وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें (188) वही है जिसने तुमको पैदा किया

نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ

एक जान से और उसी से बनाया उसका जोड़ा ताकि उसके पास

اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ

सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने औरत को ढाँक लिया तो उसको एक हल्का सा हमल रह गया फिर वह उसको लिए

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا

फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिल कर अपने रब से दुआ की कि अगर आप ने हमें

صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا

तंदुरुस्त औलाद दी तो हम आपके शुक्रगुज़ार रहेंगे (189) मगर जब अल्लाह ने उनको

صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى

तंदुरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़्शी हुई चीज़ में दूसरों को उसका शरीक ठहराने लगे, अल्लाह बरतर है

اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا

उन मुशरिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं (190) क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते

وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا

बल्कि वे ख़ुद मख़लूक़ हैं (191) और वे न उनकी किसी क़िस्म की मदद कर सकते हैं

وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى

और न ही अपनी मदद कर सकते हैं (192) और अगर तुम उनको रहनुमाई के लिए

الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलें, बराबर है चाहे तुम उनको पुकारो

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

या तुम ख़ामोश रहो (193) जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो

اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا

वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं, पस तुम उनको पुकारो फिर वे तुम्हें

لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ

जवाब दें अगर तुम सच्चे हो (194) क्या उनके पाँव हैं कि उनसे

بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ

चलें, क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें, क्या उनकी आँखें हैं कि

يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ

उनसे देखें, क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें, कह दीजिए कि

ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

तुम अपने शरीकों को बुलाओ फिर तुम लोग मेरे ख़िलाफ़ तदबीरें करो और मुझे मोहलत न दो (195)

اِنَّ وَلِيِّ َۦ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ز ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى

यक़ीनन मेरा कारसाज़ तो अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वही कारसाज़ी करता है,

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

नेक बंदों की (196) और जिनको तुम पुकारते हो उसके सिवा

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٧﴾

वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं (197)

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ

और अगर तुम उनको हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वे तुम्हारी बात न सुनेंग, और आपको नज़र आता है कि

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ

वे आपकी तरफ़ देख रहे हैं मगर वे कुछ नहीं देखते (198) दरगुज़र कीजिए

وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿١٩٩﴾ وَاِمَّا

और नेकी का हुक्म दीजिए और जाहिलों से न उलझिए (199) और अगर आपको

يَنۡزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيۡطٰنِ نَزۡغٌ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ

कोई वसवसा शैतान की तरफ़ से आए तो अल्लाह की पनाह माँगिए, बेशक वह

سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۰۰﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا اِذَا مَسَّهُمۡ

सुनने वाला, जानने वाला है (200) जो लोग डर रखते हैं जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल

طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيۡطٰنِ تَذَكَّرُوۡا فَاِذَا هُمۡ مُّبۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۱﴾ۚ

उन्हें छू जाता है तो वे फ़ौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक़्त उनको सूझ आ जाती है (201)

وَاِخۡوَانُهُمۡ يَمُدُّوۡنَهُمۡ فِى الۡغَىِّ ثُمَّ لَا يُقۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۲﴾

और जो शैतान के भाई हैं वे उनको गुमराही में खींचे चले जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते (202)

وَاِذَا لَمۡ تَاۡتِهِمۡ بِاٰيَةٍ قَالُوۡا لَوۡلَا اجۡتَبَيۡتَهَا ؕ

और जब आप उनके सामने (मुँह माँगा) मोजिज़ह पेश नहीं करते तो ये कहते हैं कि तुमने यह मोजिज़ह ख़ुद अपनी पसंद से क्यों पेश न किया?

قُلۡ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا يُوۡحٰٓى اِلَىَّ مِنۡ رَّبِّىۡ ۚ هٰذَا

कह दें कि मैं तो उसी बात की इत्तिबा करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से वह्य के ज़रिए मुझ तक पहुँचाई जाती है, यह

بَصَآئِرُ مِنۡ رَّبِّكُمۡ وَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ

(क़ुरआन) तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरतों का मजमुआ है, और जो लोग ईमान लाएं उनके लिए हिदायत

يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۲۰۳﴾ وَاِذَا قُرِئَ الۡقُرۡاٰنُ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ

और रहमत है (203) और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसको तवज्जोह से सुनो

وَاَنۡصِتُوۡا لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۲۰۴﴾ وَاذۡكُرۡ رَّبَّكَ فِىۡ

और ख़ामोश रहो; ताकि तुम पर रहमत की जाए (204) और अपने रब को सुबह व शाम

نَفۡسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيۡفَةً وَّدُوۡنَ الۡجَهۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ

याद करें अपने दिल में आजिज़ी और ख़ौफ़ के साथ

بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ وَلَا تَكُنۡ مِّنَ الۡغٰفِلِيۡنَ ﴿۲۰۵﴾

और पस्त आवाज़ से, और ग़ाफ़िलों में से न बनें (205)

اِنَّ الَّذِيۡنَ عِنۡدَ رَبِّكَ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ

जो (फ़रिश्ते) आपके रब के पास हैं वह उसकी इबादत से

عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوۡنَهٗ وَلَهٗ يَسۡجُدُوۡنَ ۩ ﴿۲۰۶﴾ ع

तकब्बुर नहीं करते और वे उसकी पाक ज़ात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं (206)

सूरह अनफ़ाल मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई मगर आयत (30 से 36) मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (75) आयतें और (10) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (88) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (8) नम्बर पर है और सूरह ब-क़रह के बाद नाज़िल हुई।

इसमें (5080) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1075) कलिमात हैं

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ۭ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ

वे आपसे अनफ़ाल (माले-ग़नीमत) के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए कि अनफ़ाल अल्लाह और उसके रसूल के लिए हैं,

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۠ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के ताल्लुक़ात की इस्लाह करो और अल्लाह और उसके रसूल की

وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ① اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ

इताअत करो, अगर तुम ईमान रखते हो (1) ईमान वाले तो वे हैं कि

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ

जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल डर जाएं और जब अल्लाह की आयतें

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ

उनके सामने पढ़ी जाएं तो वे उनका ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने रब पर

يَتَوَكَّلُوْنَ ② الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

भरोसा रखते हैं (2) वे नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से

يُنْفِقُوْنَ ③ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ

ख़र्च करते हैं (3) यही लोग हक़ीक़ी मोमिन हैं, उनके लिए

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ كَمَآ

उनके रब के पास दर्जे और मग़्फ़िरत हैं और (उनके लिए) इज़्ज़त की रोज़ी है (4) जैसा कि

اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۠ وَاِنَّ فَرِيْقًا

आपके रब ने आपको हक़ के साथ आपके घर से निकाला, और मुसलमानों में से

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ⑤ يُجَادِلُوْنَكَ فِي

एक गिरोह को यह पसंद नहीं था (5) वे इस हक़ के मामले में आपसे

الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ

झगड़ रहे थे बाद इसके कि वे ज़ाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ़ हाँके जा रहे हैं

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى

आँखों देखते (6) और जब अल्लाह तुमसे वादा कर रहा था कि दो जमाअतों में से

الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ

एक तुमको मिल जाएगी और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा

الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ

ना लगे वह तुमको मिले, और अल्लाह चाहता था कि वह हक़ का हक़ होना

الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧﴾ لِيُحِقَّ

साबित कर दे अपने कलिमात से और मुनकिरों की जड़ काट दे (7) ताकि हक़

الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨﴾

हक़ होकर रहे और बातिल बातिल होकर रह जाए चाहे मुजरिमों को कितना ही नापसंद हो (8)

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ

जब तुम अपने रब से फ़रयाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फ़रयाद सुनी कि मैं

مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَمَا

तुम्हारी मदद के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते लगातार भेज रहा हूँ (9) और यह

جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ

अल्लाह ने इसलिए किया कि तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएं,

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है, यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त है,

حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ

हिकमत वाला है (10) जब अल्लाह ने तुम पर ऊँघ डाल दी अपनी तरफ़ से तुम्हारी तस्कीन के लिए

وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ

और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके ज़रिए से तुम्हें पाक करे

وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى

और तुमसे शैतान की निजासत को दूर करदे और तुम्हारे दिलों को

قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾ اِذْ يُوْحِيْ

मज़बूत करदे और उससे क़दमों को जमा दे (11) जब आपके रब ने

رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّىْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ

फ़रिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ पस तुम ईमान वालों को

اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا

जमाए रखो, मैं काफ़िरों के दिलों में रौब डाल

الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا

दूँगा पस तुम गर्दनों के ऊपर मारो और उनकी उंगलियों के हर हर जोड़ पर

مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ؕ ﴿۱۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ

ज़रब लगाओ (12) यह इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की

وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ

मुख़ालिफ़त की और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है तो

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۳﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ

अल्लाह सज़ा देने में सख़्त है (13) तो अब यह चखो और जान लो कि

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

मुनकिरों के लिए आग का अज़ाब है (14) ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا

वालो! जब तुम्हारा मुक़ाबला मुनकिरीन से मैदाने-जंग में हो तो उनसे

تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۚ ﴿۱۵﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ

पीठ मत फेरो (15) और जिसने ऐसे मोक़े पर पीठ

دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

फेरी सिवाए इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फ़ोज से जा मिलने के लिए हो

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

तो वह अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हो जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है,

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है (16) पस उनको तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें

قَتَلَهُمْ ۠ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

क़त्ल किया, और जब आपने उनपर ख़ाक फैंकी तो आप ने नहीं फैंकी बल्कि अल्लाह ने

رَمٰی ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ

फैंकी ताकि अल्लाह अपनी तरफ़ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे, बेशक

اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ

अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (17) यह तो हो चुका, और बेशक अल्लाह मुनकिरीन की तमाम तदबीरें

كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۸﴾ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ

बेकार करके रहेगा (18) अगर तुम फ़ैसला चाहते थे तो फ़ैसला तुम्हारे सामने

الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ

आ गया, और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और अगर

تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا

तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम न आएगा

وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹﴾ يٰۤاَيُّهَا

चाहे वह कितना ही ज़्यादा हो, और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है (19) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا

ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह

عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

न मोड़ो हालाँकि तुम सुन रहे हो (20) और उन लोगों की तरह न हो जाओ

قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۱﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ

जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालाँकि वे नहीं सुनते (21) यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक

عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۲۲﴾

बदतर जानवर वे बेहरे गूँगे लोग हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते (22)

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ

और अगर अल्लाह उनमें किसी भलाई को देखता तो वह ज़रूर उनको सुनने की तौफ़ीक़ देता, और अगर अब

اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾ يٰۤاَيُّهَا

वह उन्हें सुनवादे तो वे ज़रूर मुँह फेर लेंगे बेरूख़ी करते हुए (23) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ

ईमान वालो! अल्लाह और रसूल पर लब्बैक कहो जबकि रसूल तुमको उस चीज़ की तरफ़ बुला रहा है

ع ٩/١٦

منزل ٢

لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ

जो तुमको ज़िंदगी देने वाली है, और जान लो कि अल्लाह इंसानों और उसके दिल के दरमियान

وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً

हाइल हो जाता है और यह कि उसी के पास तुम इकट्ठा किए जाओगे (24) और डरो उस फ़ितने से

لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ

जो ख़ास उन्हीं लोगों पर वाक़े न होगा जिन्होंने तुम में से ज़ुल्म किया,

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوْٓا

और जान लो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है (25) और याद करो

اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ

जबकि तुम थोड़े थे और ज़मीन में कमज़ोर समझे जाते थे, डरते थे कि

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ

लोग अचानक तुमको उचक न लें, फिर अल्लाह ने तुमको रहने की जगह दी और अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की

وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

और तुमको पाकीज़ा रोज़ी दी; ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो (26)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

ऐ ईमान वालो! ख़्यानत न करो अल्लाह और रसूल के साथ

وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ

और ख़्यानत न करो अपनी अमानतों में हालाँकि तुम जानते हो (27) और जान लो कि तुम्हारे

اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

माल और तुम्हारी औलाद एक आज़माइश है, और यह कि अल्लाह ही के पास

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا

बड़ा अज्र है (28) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते

اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ

रहोगे तो अल्लाह तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा और तुमसे तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ

और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है (29) और जब

منزل ٢

ع ٣ ٩ ١٧

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ

काफ़िर आपके बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि आपको क़ैद करदें या क़त्ल कर डालें

اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ

या वतन से निकाल दें, वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था, और अल्लाह बेहतरीन

الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ

तदबीर करने वाला है (30) और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने

سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें, यह तो बस

اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ

अगलों की कहानियाँ हैं (31) और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यही

كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا

हक़ है तेरे पास से तो हम पर आसमान से

حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾

पत्थर बरसा दे या कोई और दर्दनाक अज़ाब हम पर ले आ (32)

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ

और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उनको अज़ाब दे इस हाल में कि आप उनमें मोजूद हों, और अल्लाह उन पर

اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا لَهُمْ

अज़ाब लाने वाला नहीं जबकि वे इस्तिग़फ़ार कर रहे हों (33) और अल्लाह उनको

اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ

क्यों अज़ाब नहीं देगा हालाँकि वे मस्जिदे-हराम से

الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا

रोकते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली नहीं, उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़

الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ

अल्लाह से डरने वाले ही हो सकते हैं, मगर उनमें से अकसर इसको नहीं जानते (34) और बैतुल्लाह के पास

صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ

उनकी नमाज़ सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं,

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ

पस अब चखो अज़ाब अपने कुफ़्र की वजह से (35) बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا

जिन लोगों ने इनकार किया वे अपने माल को इस लिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ

अल्लाह की राह से रोकें और वे उसको ख़र्च करते रहेंगे फिर यह

عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۵ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

उनके लिए हसरत (का सबब) बनेगा फिर वे मग़लूब किए जाएंगे, और जिन्होंने इनकार किया

إِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ

उनको जहन्नम की तरफ़ इकट्ठा किया जाएगा (36) ताकि अल्लाह नापाक को अलग करदे

الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ

पाक से और नापाक को एक पर एक रखे

فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ط أُولٰٓئِكَ هُمُ

फिर उस ढेर को जहन्नम में डाल देगा, यही लोग ख़सारे में

الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ

पड़ने वाले हैं (37) इनकार करने वालों से कह दीजिए कि अगर वे बाज़ आजाएं तो जो कुछ हो चुका है

لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ج وَإِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ

वह उन से मुआफ़ कर दिया जाएगा, और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला अगलों के साथ

سُنَّتُ الْأَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ

गुज़र चुका है (38) और उनसे लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ितना

فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ج فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ

बाक़ी न रहे और दीन सारा का सारा अल्लाह ही के लिए हो जाए, फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो अल्लाह

اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا

उनके कामों को देखने वाला है (39) और अगर उन्होंने मुँह फेर लिया तो जान लो कि

أَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ط نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

अल्लाह ही तुम्हारा मौला है, और क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार है (40)

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

और जान लो कि जो कुछ माले-ग़नीमत तुम्हें हासिल हो उसका पाँचवा हिस्सा अल्लाह

وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

और रसूल के लिए और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है अगर तुम

وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا

ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमने अपने बंदे (मुहम्मद) पर

عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ

उतारी फ़ैसले के दिन जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुडभेड़ हुई,

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (41) और जब तुम वादी के क़रीबी

الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ

किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर और क़ाफ़िला तुम से नीचे की

مِنْكُمْ ۭ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ

तरफ़ था और अगर तुम और वे वक़्त-मुक़र्रर करते तो ज़रूर उस मुक़र्ररह मुद्दत के बारे में तुम में इख़्तिलाफ़ हो जाता,

وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ لِّيَهْلِكَ

लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस अमर का फ़ैसला कर दे जिसको होकर रहना था; ताकि जिसको हलाक होना है

مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ

वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसको ज़िंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ

بَيِّنَةٍ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ ۙ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ

ज़िंदा रहे, यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (42) जब अल्लाह आपके ख़्वाब में

فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ۭ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ

उनको थोड़े दिखाता रहा, अगर वह तुम्हें उनको ज़्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते

وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۭ اِنَّهٗ

और आपस में झगड़ने लगते उस मामले में लेकिन अल्लाह ने तुमको बचा लिया, यक़ीनन वह दिलों

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ

तक का हाल जानता है (43) और वह वक़्त याद करो जब तुम एक दूसरे के मद्दे-मुक़ाबिल आए थे

الْتَقَيْتُمْ فِيٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيٓ اَعْيُنِهِمْ

तो अल्लाह तुम्हारी निगाहों में उनकी तादाद कम दिखा रहा था और उनकी निगाहों में तुम्हें कम करके दिखा रहा था;

لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

ताकि जो काम होकर रहना था अल्लाह उसे पूरा कर दिखाए, और तमाम मामलात अल्लाह ही की तरफ़

الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً

लौटाए जाते हैं (44) ऐ ईमान वालो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۴۵﴾

तो तुम साबित क़दम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो; ताकि तुम कामयाब हो (45)

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا

और इताअत करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम्हारे अंदर कमज़ोरी आजाएगी

وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ

और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी, और सब्र करो बेशक अल्लाह सब्र करने वालों

الصّٰبِرِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ

के साथ है (46) और उन लोगों की तरह मत बनो जो अपने घरों से

دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ

अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और अल्लाह की राह से

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۴۷﴾ وَاِذْ

रोकते हैं; हालाँकि वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उनका इहाता किए हुए है (47) और जब

زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

शैतान ने उन्हें उनके आमाल ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि आज लोगों में से कोई

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ

तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूँ, मगर जब दोनों गिरोह

الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ

आमने सामने हुए तो वह उलटे पाँव भागा और कहा कि मैं तुम

مِّنْكُمْ اِنِّيْۤ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ

से बरी हूँ, मैं वह सब देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ,

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ

और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है (48) जब मुनाफ़िक़ और जिनके दिलों में रोग है

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ

कहते थे कि इन लोगों को उनके दीन ने धोखे में डाल दिया है,

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾

और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (49)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ

और अगर आप देखते जबकि फ़रिश्ते उन मुनकिरीन की जान क़ब्ज़ करते हैं

يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا

मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर और यह कहते हुए कि

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ

अब जलने का अज़ाब चखो (50) यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था

وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾ كَدَاْبِ اٰلِ

और अल्लाह हरगिज़ बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं (51) फ़िरऔन के लोगों

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

की तरह और जो उनसे पहले थे, कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इनकार किया

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ

पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उनको पकड़ लिया, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला, सख़्त सज़ा

الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً

देने वाला है (52) यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी क़ौम पर करता है उस वक़्त तक

اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ

नहीं बदलता जब तक कि उसको न बदल दें जो उनके दिलों में है,

وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

और बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (53) फिरऔन के लोगों की तरह

وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों को झुठलाया

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ
फिर हमने उनके गुनाहों की वजह से उनको हलाक कर दिया और हमने फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया

وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ
और ये सब लोग ज़ालिम थे (54) बेशक सब जानदारों में बदतरीन

اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَلَّذِيْنَ
अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया और वे ईमान नहीं लाते (55) जिनसे

عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ
आपने अहद लिया फिर वे अपना अहद हर बार

كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي
तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं (56) पस अगर आप उनको लड़ाई में

الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾
पाओ तो उनको ऐसी सज़ा दो कि जो उनके पीछे हैं वे भी देख कर भाग जाएं; ताकि उन्हें इबरत हो (57)

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى
और अगर आपको किसी क़ौम से बद-अहदी का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ़ फेंक दो इस तरह कि तुम और वे

سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ
बराबर हो जाएं, बेशक अल्लाह बद अहदों को पसंद नहीं करता (58) और इनकार करने वाले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾
यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज़ अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते (59)

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ
और उनके लिए जिस क़दर तुमसे हो सके तैयार रखो क़ुव्वत और पले हुए

رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ
घोड़े कि उससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर

وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ
और उनके अलावा दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते, अल्लाह उनको

يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
जानता है, और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे

منزل ۲

ركوع ۷

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا

वह तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की जाएगी (60) और अगर वह सुलह की तरफ़

لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

झुकें तो आप भी उसके लिए झुक जाइए और अल्लाह पर भरोसा रखिए, बेशक वह

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ

सुनने वाला, जानने वाला है (61) और अगर वे आपको धोखा देना चाहेंगे

فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ

तो अल्लाह आपके लिए काफ़ी है, वही है जिसने अपनी मदद से और मोमिनीन के ज़रिए

وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ ۙ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ

आपको कुव्वत दी (62) और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, अगर आप ज़मीन में

مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۙ

जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾

लेकिन अल्लाह ने उनमें इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (63)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ

ऐ (प्यारे) नबी! आपके लिए अल्लाह काफ़ी है और वे मोमिनीन जिन्होंने

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ

आपका साथ दिया (64) ऐ (प्यारे) नबी! मोमिनीन को लड़ाई पर

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ

उभारिए, अगर तुम में बीस आदमी साबित क़दम होंगे

يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ

तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में सौ होंगे

يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

तो हज़ार मुनकिरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

समझ नहीं रखते (65) अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हलका कर दिया और उसने देख लिया कि

اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
तुम में कुछ कमज़ोरी है, पस अगर तुम में सौ साबित क़दम होंगे

يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا
तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में हज़ार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से

اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ
दो हज़ार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबित क़दम रहने वालों के साथ है (66) किसी नबी के लिए

لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى
लायक़ नहीं कि उसके पास क़ैदी हों जब तक वह ज़मीन में अच्छी तरह

الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖۗ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ
ख़ून रेज़ी न कर ले, तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत को

الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ
चाहता है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (67) और अगर अल्लाह का लिखा हुआ पहले से

سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا
मोजूद न होता तो जो तरीक़ा तुमने इख़्तियार किया है उसकी वजह से तुमको सख़्त अज़ाब पहुँच जाता (68) पस जो माल

مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖؗ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
तुमने लिया है उसको खाओ (वह) तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ ع يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّمَنْ فِىْٓ اَيْدِيْكُمْ
बख़्शने वाला, मेहरबान है (69) ऐ (प्यारे) नबी! आपके क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं उनसे

مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا
कह दीजिए कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा

يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ
तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें देदेगा और तुमको बख़्श देगा,

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ
और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (70) और अगर ये आपसे बद-अहदी करेंगे

فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ
तो इससे पहले उन्होंने अल्लाह से बद अहदी की तो अल्लाह ने (तुमको) उन पर क़ाबू दे दिया,

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا

और अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है (71) जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की

وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद किया

وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ

और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग आपस में एक दूसरे के

بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ

दोस्त हैं, और जो लोग ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा दोस्ती का

مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

कोई ताल्लुक़ नहीं जब तक कि वे हिजरत करके न आजाएं,

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ

और वे तुमसे दीन के मामले में मदद माँगें तो तुमपर उनकी मदद करना वाजिब है

اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ

सिवाए उसके कि यह मदद ऐसी क़ौम के ख़िलाफ़ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहदा है, और जो कुछ

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ

तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (72) और जो लोग मुनकिर हैं वे एक दूसरे के

اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي

दोस्त हैं अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना

الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फैलेगा और बड़ा फ़साद होगा (73) और जो लोग ईमान लाए

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ

और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने

اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

पनाह दी और मदद की यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उनके लिए

مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ

बख़शिश है और बेहतरीन रिज़्क़ है (74) और जो लोग बाद में ईमान लाए

وَهَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا مَعَكُمۡ فَاُولٰٓـئِكَ مِنۡكُمۡ ؕ وَاُولُوا
और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद किया वे भी तुम में से हैं, और ख़ून के

الۡاَرۡحَامِ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلٰى بِبَعۡضٍ فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ
रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं अल्लाह की किताब में,

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۷۵﴾
बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है (75)

इसमें (4078) कलिमात हैं	सूरह तौबा मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई मगर अख़ीर की दो आयतें मक्की हैं, इसमें (129) आयतें और (16) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (113) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (9) नम्बर पर है और सूरह मायदा के बाद नाज़िल हुई है।	इसमें (10488) हुरूफ़ हैं

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖۤ اِلَى الَّذِيۡنَ عٰهَدۡتُّمۡ
ऐलाने-बराअत है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से उन मुशरिकीन को जिनसे तुमने

مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ؕ ﴿۱﴾ فَسِيۡحُوۡا فِى الۡاَرۡضِ اَرۡبَعَةَ
मुआहदे किए थे (1) पस तुम लोग मुल्क में चार महीने

اَشۡهُرٍ وَّاعۡلَمُوۡۤا اَنَّكُمۡ غَيۡرُ مُعۡجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ
चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते, और यह कि

اللّٰهَ مُخۡزِى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۲﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ
अल्लाह मुनकिरों को रुसवा करने वाला है (2) और ऐलान है अल्लाह

وَرَسُوۡلِهٖۤ اِلَى النَّاسِ يَوۡمَ الۡحَجِّ الۡاَكۡبَرِ اَنَّ اللّٰهَ
और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल

بَرِىۡٓءٌ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۙ وَرَسُوۡلُهٗ ؕ فَاِنۡ تُبۡتُمۡ
मुशरिकों से बरी है, अब अगर तुम लोग तौबा करो

فَهُوَ خَيۡرٌ لَّكُمۡ ۚ وَاِنۡ تَوَلَّيۡتُمۡ فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّكُمۡ غَيۡرُ
तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और अगर तुम मुँह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को

مُعۡجِزِى اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِعَذَابٍ
आजिज़ करने वाले नहीं हो, और इनकार करने वालों को सख़्त अज़ाब की ख़ुशख़बरी

اَلِيۡمٍ ۙ ﴿۳﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ عٰهَدۡتُّمۡ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ
दे दो (3) मगर जिन मुशरिकों से तुम ने मुआहदा किया था

ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ

फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की

اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ

मदद की तो उनका मुआहदा उनकी मुददत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह

اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ

परहेज़गारों को पसंद करता है (4) फिर जब हुरमत वाले महीने

الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ

गुज़र जाएं तो मुशरिकीन को क़त्ल करो जहाँ तुम उनको पाओ

وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ

और उनको पकड़ो और उनको घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में,

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا

फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उन्हें

سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ اَحَدٌ

छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (5) और अगर

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ

मुशरिकीन में से कोई शख़्स आपसे पनाह माँगे तो उसको पनाह दे दो; ताकि वह अल्लाह

كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

का कलाम सुने फिर उसको उसकी अमान की जगह पहुँचा दो, यह इसलिए कि

قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝ ع كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ

वे लोग इल्म नहीं रखते (6) उन मुशरिकीन के लिए

عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ

अल्लाह और उसके रसूल के ज़िम्मे कोई अहद कैसे रह सकता है मगर जिन लोगों से

عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا

तुमने अहद किया था मस्जिदे-हराम के पास, पस जब तक वे तुमसे

لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝

सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को पसंद करता है (7)

منزل ۲ ع ۷

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ

कैसे अहद रहेगा जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर क़ाबू पा जाएं तो तुम्हारे बारे में

اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى

न क़राबत का लिहाज़ करें और न अहद का, वे तुमको अपने मुँह की बात से राज़ी करना चाहते हैं मगर उनके दिल

قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۚ ﴿٨﴾ اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ

इनकार करते हैं, और उनमें अकसर बद अहद हैं (8) उन्होंने अल्लाह की आयतों को

اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ

थोड़ी क़ीमत पर बेच दिया फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका, बहुत बुरा है

سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ

जो वे कर रहे हैं (9) किसी मोमिन के मामले में वे न क़राबत का

اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾

लिहाज़ करते हैं और न अहद का, और यही लोग हैं ज़्यादती करने वाले (10)

فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

पस अगर वे तौबा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें

فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं, और हम खोल कर बयान करते हैं आयात को

يَّعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

जानने वालों के लिए (11) और अगर ये अपनी क़समों को तोड़ डालें अहद के

عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ

बाद और तुम्हारे दीन में ऐब लगाएं तो कुफ़्र के इन सरदारों से

الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿١٢﴾

लड़ो, बेशक उनकी क़समें कुछ नहीं; ताकि वे बाज़ आजाएं (12)

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا

क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को

بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ

निकालने की जसारत की और वही हैं जिन्होंने तुम से जंग में पहल की,

أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ

क्या तुम उनसे डरोगे जबकि अल्लाह ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उससे डरो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِأَيْدِيْكُمْ

मोमिन हो (13) उनसे लड़ो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उनको सज़ा देगा

وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ

और उनको रुसवा करेगा और तुमको उनपर ग़लबा देगा और मुसलमान लोगों के सीनों को

قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ لا وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۗ

ठंडा करेगा (14) और उनके दिलों की जलन को दूर करेगा,

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

और अल्लाह तौबा नसीब करेगा जिसको चाहेगा, और अल्लाह जानने वाला,

حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ

हिकमत वाला है (15) क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालाँकि अभी अल्लाह ने

اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ

तुम में से उन लोगों को देखा ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने

دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۗ

अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया,

وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ ع مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ

और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो (16) मुशरिकों का काम नहीं कि

أَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ

वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें हालाँकि वे ख़ुद अपने ऊपर कुफ़्र के

بِالْكُفْرِ ۗ أُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِي النَّارِ

गवाह हैं, उन लोगों के तो आमाल ही ग़ारत हो चुके हैं, और दोज़ख़ ही में

هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ

हमेशा उनको रहना है (17) अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह पर

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ

और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात अदा करे

وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا
और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे, ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने

مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ
वालों में से बनें (18) क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने

وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
और मस्जिदे-हराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख़्स के जो अल्लाह पर और आख़िरत पर

الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ
ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक ये दोनों बराबर

اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ
नहीं हो सकते, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता (19) जो लोग

اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ
माल व जान से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहाँ बड़ा है

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
और यही लोग कामयाब हैं (20) उनका रब उनको ख़ुशख़बरी देता है

بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
अपनी रहमत और ख़ुशनूदी की और ऐसे बाग़ात की जिनमें उनके लिए हमेशा रहने वाली

مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
नेअ़मत होगी (21) उनमें वे हमेशा रहेंगे, बेशक अल्लाह ही के पास

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
बड़ा अज्र है (22) ऐ ईमान वालो! अपने बापों

اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
और भाईयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़ाबले में

عَلَى الْاِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
कुफ़्र को अज़ीज़ रखें, और तुम में से जो उनको अपना दोस्त बनाएंगे तो ऐसे ही

وقف لازم

منزل ٢

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ

लोग ज़ालिम हैं (23) कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के

وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ

और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा ख़ांदान और वह माल

اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ

जो तुमने कमाए हैं और वे तिजारत जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वह घर

تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ

जिनको तुम पसंद करते हो, ये सब तुमको अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से

فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ط

ज़्यादा मेहबूब हैं तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे,

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ ع لَقَدْ نَصَرَكُمُ

और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता (24) बेशक अल्लाह ने बहुत से

اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ لا وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ لا

मोक़ों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी

اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ

जब तुम्हारी कसरत ने तुमको नाज़ में मुबतला कर दिया था फिर वह तुम्हारे कुछ काम

شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ

न आई और ज़मीन अपनी वुसअत के बावजूद तुम पर तंग हो गई,

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ج ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

फिर तुम पीठ फेर कर भागे (25) उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ

और मोमिनीन पर अपनी सकीनत उतारी और ऐसे लशकर उतारे जिनको तुमने

تَرَوْهَا ج وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط وَذٰلِكَ جَزَآءُ

नहीं देखा और अल्लाह ने काफ़िरों को सज़ा दी, और यही काफ़िरों का

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى

बदला है (26) फिर उसके बाद अल्लाह जिसको चाहे तौबा

مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٢٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ						

मन यशाउ – नसीब कर दे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (27) ऐ ईमान

مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٢٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

नसीब कर दे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (27) ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ

वालो! मुशरिकीन बिल्कुल नापाक हैं पस वे इस साल के बाद

الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ج وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً

मस्जिदे-हराम के पास न आएं, और अगर तुमको मुफ़लिसी का अंदेशा हो

فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ط اِنَّ

तो अगर अल्लाह चाहेगा तो अपने फ़ज़्ल से तुमको बेनियाज़ करदेगा, बेशक

اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ٢٨ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (28) उन अहले किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर

بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ

ईमान रखते हैं और न आख़िरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ

रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते हैं और न दीने-हक़ को

اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ

अपना दीन बनाते हैं, यहाँ तक कि वे अपने हाथ से जिज़्या दें और छोटे

صٰغِرُوْنَ ٢٩ ع وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ

बनकर रहें (29) और यहूद ने कहा कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं

وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ط ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ

और नसारा ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं, ये उनके अपने मुँह की

بِاَفْوَاهِهِمْ ج يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ

बातें हैं, वे उन लोगों की बात नक़ल कर रहे हैं, जिन्होंने उनसे पहले

قَبْلُ ط قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ج اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ٣٠ اِتَّخَذُوْۤا

कुफ़्र किया, अल्लाह उनको हलाक करे वे किधर बहके जा रहे हैं (30) उन्होंने

اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा अपने उलमा और मशाइख़ को रब बना डाला

منزل ٢

ع ٥

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوٓا

और मसीह बिन मरयम को भी; हालाँकि उनको सिर्फ़ यह हुक्म था कि वे एक माबूद की

اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

इबादत करें, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह पाक है उस शिर्क से जो वे करते हैं (31)

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुँह से बुझा दें और अल्लाह

اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾ هُوَ

अपनी रोशनी को पूरा किए बग़ैर मानने वाला नहीं, चाहे काफ़िरों को यह कितना ही नागवार हो (32) उसी ने

الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ

अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दीने-हक़ के साथ;

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

ताकि उसको सारे दीन पर ग़ालिब कर दे, चाहे यह मुशरिकों को कितना ही नागवार हो (33)

النصف

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ

ऐ ईमान वालो! बेशक अहले किताब के अकसर उलमा

منزل ٢

وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ

और मशाइख़ लोगों के माल बातिल तरीक़ों से खाते हैं

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ

और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और जो लोग सोना और चाँदी

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ ۙ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

उनको एक दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दीजिए (34) उस दिन उस माल पर

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ

दोज़ख़ की आग दहकाई जाएगी फिर उससे उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू

وَظُهُوْرُهُمْ ۗ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

और उनकी पीठें दाग़ी जाएंगी, यही है वह जिसको तुमने अपने वास्ते जमा किया था, पस अब चखो

مَا كُنۡتُمۡ تَكۡنِزُوۡنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوۡرِ عِنۡدَ

के अल्लाह गिनती की महीनों बेशक (35) रहे करते जमा तुम जो

اللّٰهِ اثۡنَا عَشَرَ شَهۡرًا فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوۡمَ خَلَقَ

उसने दिन जिस में किताब की अल्लाह हैं महीने बारह नज़्दीक

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ مِنۡهَاۤ اَرۡبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ

है यही हैं, वाले हुरमत चार से उनमें किया, पैदा को ज़मीन और आसमानों

الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظۡلِمُوۡا فِيۡهِنَّ اَنۡفُسَكُمۡ

करो, न ज़ुल्म ऊपर अपने तुम उनमें पस दीन सीधा

وَقَاتِلُوا الۡمُشۡرِكِيۡنَ كَاۤفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ

तुमसे मिलकर सब वे तरह जिस लड़ो मिलकर सब से मुशरिकों और

كَاۤفَّةً ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٣٦﴾ اِنَّمَا

को महीनों (36) है साथ के परहेज़गारों अल्लाह कि लो जान और हैं, लड़ते

النَّسِىۡٓءُ زِيَادَةٌ فِى الۡكُفۡرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا

हैं, पड़ते में गुमराही वाले करने कुफ़्र उससे है इज़ाफ़ा एक में कुफ़्र करना पीछे आगे

يُحِلُّوۡنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوۡنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوۡا عِدَّةَ مَا

की हुए किए हराम के अल्लाह ताकि हैं; देते कर हराम उसको साल किसी और हैं लेते कर हलाल को महीने हराम साल किसी वे

حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمۡ سُوۡۤءُ

लिए उनके आमाल बुरे उनके करलें, हलाल को हुए किए हराम उसके करके पूरी गिनती

اَعۡمَالِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٣٧﴾

(37) दिखाता नहीं रास्ता को वालों करने इनकार अल्लाह और हैं, गए दिए बना ख़ुशनुमा

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَكُمۡ اِذَا قِيۡلَ لَكُمُ

कि है जाता कहा तुमसे जब कि है गया हो क्या तुमको वालो! ईमान ऐ

انۡفِرُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اثَّاقَلۡتُمۡ اِلَى الۡاَرۡضِ ؕ

हो, जाते लगे से ज़मीन तुम तो निकलो में राह की अल्लाह

اَرَضِيۡتُمۡ بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا مِنَ الۡاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

में मुक़ाबले के आख़िरत गए, हो राज़ी पर ज़िंदगी की दुनिया में मुक़ाबले के आख़िरत तुम क्या

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا

दुनिया की ज़िंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है (38) अगर तुम ना निकलोगे

يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

तो अल्लाह तुमको दर्दनाक सज़ा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले अएगा

وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (39)

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ

अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह ख़ुद उसकी मदद कर चुका है जबकि काफ़िरों ने

كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ

उसको निकाल दिया था, वह सिर्फ़ दो में का दूसरा था जब वे दोनों ग़ार में थे, जब वह अपने साथी से

لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ

कह रहा था कि ग़म न करो बेशक अल्लाह हमारे साथ है, पस अल्लाह ने उसपर

سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا

अपनी सकीनत नाज़िल फ़रमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुमको नज़र ना आते थे

وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ

और अल्लाह ने काफ़िरों की बात नीची कर दी, और अल्लाह की

اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنْفِرُوْا

बात तो ऊँची है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (40) (जिहाद के लिए) निकल खड़े हो

خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ

चाहे तुम हलके हो या बोझल और अपने माल और जान से अल्लाह के रास्ते में

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

जिहाद करो, अगर तुम समझ रखते हो तो यही तुम्हारे हक़ में

تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا

बेहतर है (41) अगर नफ़ा क़रीब होता और सफ़र हलका होता तो वे ज़रूर

لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ

आपके पीछे हो लेते मगर यह मंज़िल उनपर कठिन हो गई,

وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ

अब वे अल्लाह की क़समें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते,

يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ ع

वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं (42)

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ

अल्लाह आपको मुआ़फ़ करे, आपने क्यों उन्हें इजाज़त देदी यहाँ तक कि आप पर

لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी आप जान लेते (43)

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपने माल और जान से

اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

जिहाद न करने के लिए आपसे इजाज़त नहीं माँगते, और अल्लाह परहेज़गारों को

بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ख़ूब जानता है (44) आपसे इजाज़त तो वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह पर

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ

और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं, पस वे

فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

अपने शक में भटक रहे हैं (45) और अगर वे निकलना चाहते

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

तो ज़रूर उसका कुछ सामान कर लेते मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद न किया

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَوْ

इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो (46) अगर

خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاۡاَوْضَعُوْا

ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दरमियान

خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ

फ़ितना फैलाने के लिए दौड़-धूप करते, और तुम में उनकी

لَهُمۡ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِالظّٰلِمِيۡنَ ﴿٤٧﴾ لَقَدِ ابۡتَغَوُا

सुनने वाले हैं, और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है (47) ये पहले भी फ़ितने की

الۡفِتۡنَةَ مِنۡ قَبۡلُ وَقَلَّبُوۡا لَكَ الۡاُمُوۡرَ حَتّٰى جَآءَ

कोशिश कर चुके हैं और वे आपके लिए कामों का उलट-फेर करते रहे हैं यहाँ तक कि हक़

الۡحَقُّ وَظَهَرَ اَمۡرُ اللّٰهِ وَهُمۡ كٰرِهُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنۡهُمۡ

आ गया और अल्लाह का हुक्म ज़ाहिर हो गया और वे नाख़ुश ही रहे (48) और उनमें वे भी हैं

مَّنۡ يَّقُوۡلُ ائۡذَنۡ لِّىۡ وَلَا تَفۡتِنِّىۡ ؕ اَلَا فِى الۡفِتۡنَةِ

जो कहते हैं कि मुझे रुख़सत दे दीजिए और मुझको फ़ितने में न डालिए, सुन लो! वे तो फ़ितने में

سَقَطُوۡا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيۡطَةٌۢ بِالۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٤٩﴾ اِنۡ

पड़ चुके, और बेशक जहन्नम मुनकिरों को घेरे हुए है (49) अगर

تُصِبۡكَ حَسَنَةٌ تَسُؤۡهُمۡ ۚ وَاِنۡ تُصِبۡكَ مُصِيۡبَةٌ

आपको कोई अच्छाई पेश आती है तो उनको दुख होता है, और अगर आपको कोई मुसीबत पहुँचती है

يَّقُوۡلُوۡا قَدۡ اَخَذۡنَاۤ اَمۡرَنَا مِنۡ قَبۡلُ وَيَتَوَلَّوۡا

तो कहते हैं कि हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे ख़ुश होकर

وَّهُمۡ فَرِحُوۡنَ ﴿٥٠﴾ قُلۡ لَّنۡ يُّصِيۡبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ

लौटते हैं (50) कह दीजिए कि हमें सिर्फ़ वही चीज़ पहुँचेगी जो अल्लाह ने

اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوۡلٰٮنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ

हमारे लिए लिख दी है, वह हमारा कारसाज़ है और अहले ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा

الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٥١﴾ قُلۡ هَلۡ تَرَبَّصُوۡنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحۡدَى

करना चाहिए (51) कह दें कि तुम हमारे लिए सिर्फ़ दो भलाईयों में से एक भलाई के

الۡحُسۡنَيَيۡنِ ؕ وَنَحۡنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمۡ اَنۡ يُّصِيۡبَكُمُ

मुंतज़िर हो, मगर हम तुम्हारे हक़ में इसके मुंतज़िर हैं कि अल्लाह तुम पर

اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنۡ عِنۡدِهٖۤ اَوۡ بِاَيۡدِيۡنَا ۖ فَتَرَبَّصُوۡۤا

अज़ाब भेजे अपनी तरफ़ से या हमारे हाथों से, बस अब इंतिज़ार करो

اِنَّا مَعَكُمۡ مُّتَرَبِّصُوۡنَ ﴿٥٢﴾ قُلۡ اَنۡفِقُوۡا طَوۡعًا

हम भी तुम्हारे साथ मुंतज़िर हैं (52) कह दीजिए कि तुम ख़ुशी से ख़र्च करो

اَوۡ كَرۡهًا لَّنۡ يُّتَقَبَّلَ مِنۡكُمۡ ؕ اِنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا

या नाख़ुशी से तुमसे हरगिज़ क़ुबूल न किया जाएगा, बेशक तुम नाफ़रमान

فٰسِقِيۡنَ ۞٥٣ وَمَا مَنَعَهُمۡ اَنۡ تُقۡبَلَ مِنۡهُمۡ نَفَقٰتُهُمۡ

लोग हो (53) और वे अपने ख़र्च की क़ुबूलियत से सिर्फ़ इसलिए मेहरूम हुए कि

اِلَّاۤ اَنَّهُمۡ كَفَرُوۡا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوۡلِهٖ وَلَا يَاۡتُوۡنَ

उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया और ये लोग नमाज़ के लिए

الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمۡ كُسَالٰى وَلَا يُنۡفِقُوۡنَ اِلَّا وَهُمۡ

आते हैं तो सुस्ती के साथ आते हैं और ख़र्च करते हैं तो नागवारी

كٰرِهُوۡنَ ۞٥٤ فَلَا تُعۡجِبۡكَ اَمۡوَالُهُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُهُمۡ ؕ

के साथ (54) पस आप उनके माल और औलाद को कुछ वक़्अत न दीजिए,

اِنَّمَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمۡ بِهَا فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا

अल्लाह तो यह चाहता है कि इनके ज़रिए से उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में अज़ाब दे

وَتَزۡهَقَ اَنۡفُسُهُمۡ وَهُمۡ كٰفِرُوۡنَ ۞٥٥ وَيَحۡلِفُوۡنَ

और उनकी जानें इस हालत में निकलें कि वे काफ़िर हों (55) वे अल्लाह की क़सम

بِاللّٰهِ اِنَّهُمۡ لَمِنۡكُمۡ ؕ وَمَا هُمۡ مِّنۡكُمۡ وَلٰكِنَّهُمۡ

खा कर कहते हैं वे तुम में से हैं; हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं बल्कि वे

قَوۡمٌ يَّفۡرَقُوۡنَ ۞٥٦ لَوۡ يَجِدُوۡنَ مَلۡجَاً اَوۡ مَغٰرٰتٍ

डरपोक लोग हैं (56) अगर वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई खोह

اَوۡ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوۡا اِلَيۡهِ وَهُمۡ يَجۡمَحُوۡنَ ۞٥٧ وَمِنۡهُمۡ

या घुस बैठने की जगह तो वे भाग कर उसमें जा छुपें (57) और उनमें

مَّنۡ يَّلۡمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنۡ اُعۡطُوۡا مِنۡهَا

ऐसे भी हैं जो आप पर सदक़ात के बारे में ऐब लगाते हैं, अगर उसमें से उन्हें दिया जाए

رَضُوۡا وَاِنۡ لَّمۡ يُعۡطَوۡا مِنۡهَاۤ اِذَا هُمۡ يَسۡخَطُوۡنَ ۞٥٨

तो राज़ी रहते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं (58)

وَلَوۡ اَنَّهُمۡ رَضُوۡا مَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗ ۙ

क्या अच्छा होता कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें जो कुछ दिया था उस पर वे राज़ी रहते

وَقَالُوۡا حَسۡبُنَا اللّٰهُ سَيُؤۡتِيۡنَا اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ

और कहते कि हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, अल्लाह अपने फ़ज़्ल से हमको और भी देगा

وَرَسُوۡلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوۡنَ ۵۹ ع اِنَّمَا

और उसका रसूल भी, हमको तो अल्लाह ही चाहिए (59) सदक़ात

الصَّدَقٰتُ لِلۡفُقَرَآءِ وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَالۡعٰمِلِيۡنَ عَلَيۡهَا

(ज़कात) तो दरअसल फ़क़ीरों और मिस्कीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदक़ात के काम पर मुक़र्रर हैं

وَالۡمُؤَلَّفَةِ قُلُوۡبُهُمۡ وَفِى الرِّقَابِ وَالۡغٰرِمِيۡنَ

और उनके लिए जिनका दिल रखना मतलूब है, नीज़ गरदनों को छुड़ाने में और जो तावान भरें

وَفِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ؕ فَرِيۡضَةً مِّنَ

और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफ़िर की इमदाद में, यह एक फ़रीज़ा है अल्लाह की

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ۶۰ وَمِنۡهُمُ الَّذِيۡنَ

तरफ़ से, और अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है (60) और उनमें वे लोग भी हैं

يُؤۡذُوۡنَ النَّبِىَّ وَيَقُوۡلُوۡنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلۡ اُذُنُ

जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स तो कान का कच्चा है, कह दीजिए कि वह तुम्हारी

خَيۡرٍ لَّكُمۡ يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤۡمِنُ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ

भलाई के लिए कान है, वे अल्लाह पर ईमान रखते हैं और अहले ईमान पर ऐतिमाद करते हैं

وَرَحۡمَةٌ لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ

और वे रहमत हैं उनके लिए जो तुम में अहले ईमान हैं, और जो लोग

يُؤۡذُوۡنَ رَسُوۡلَ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۶۱

अल्लाह और उसके रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा है (61)

يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ لَكُمۡ لِيُرۡضُوۡكُمۡ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗۤ

वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुमको राज़ी करलें; हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल

اَحَقُّ اَنۡ يُّرۡضُوۡهُ اِنۡ كَانُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ۶۲ اَلَمۡ

ज़्यादा हक़दार है कि वे उसको राज़ी करें अगर वे मोमिन हैं (62) क्या उनको

يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّهٗ مَنۡ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاَنَّ

मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करे

ع ١٧/١٣

منزل ٢

الثلثة

لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ

उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा, यह बहुत बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ

रुसवाई है (63) मुनाफ़िक़ीन डरते हैं कि कहीं उन (मुसलमानों) पर ऐसी सूरत

سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ

नाज़िल न हो जाए जो उनको उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे, कह दीजिए कि तुम मज़ाक़ उड़ा लो,

اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

अल्लाह यक़ीनन ज़ाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो (64) और अगर आप उनसे पूछो

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ

तो वे कहेंगे कि हम तो बस हंसी और दिल्लगी कर रहे थे, कह दीजिए: क्या तुम अल्लाह से

وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا

और उसकी आयात से और उसके रसूल से हंसी दिल्लगी कर रहे थे? (65) बहाने मत बनाओ,

قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ

तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया है, अगर हम मुआफ़ कर दें

طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا

तुम में से एक गिरोह को तो दूसरे गिरोह को तो ज़रूर सज़ा देंगे क्योंकि वे

مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ ع اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ

मुजरिम हैं (66) मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक

مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ

तरह के हैं, वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से

عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ

मना करते हैं और अपने हाथों को बंद रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को भुला दिया

فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾

तो अल्लाह ने भी उनको भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ीन बहुत नाफ़रमान हैं (67)

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से अल्लाह ने जहन्नम की

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ

आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे, यही उनके लिए बस है, उनपर अल्लाह की

اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ

लानत है और उनके लिए क़ायम रहने वाला अज़ाब है (68) जिस तरह तुमसे

قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا

अगले लोग वे तुमसे ज़ोर में ज़्यादा थे और माल और औलाद की कसरत में

وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ

बढ़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फ़ायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से

بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

फ़ायदा उठाया जैसा कि तुम्हारे अगलों ने अपने हिस्से से

بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ

फ़ायदा उठाया था और तुमने भी वही बहसें कीं जैसी बहसें उन्होंने की थीं, यही लोग हैं

حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ

जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में ज़ाए हो गए और यही लोग घाटे में

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ

पड़ने वाले हैं (69) क्या उन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची

قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ۬ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

जो उनसे पहले गुज़रे क़ौमे-नूह और आद और समूद और क़ौमे-इब्राहीम

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

और असहाबे-मदयन और उलटी हुई बस्तियों की, उनके पास उनके रसूल

بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

दलीलों के साथ आए तो ऐसा न था कि अल्लाह पर ज़ुल्म करता मगर वे ख़ुद

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ

अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे (70) और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

एक दूसरे के मददगार हैं, वे भलाई का हुक्म देते हैं

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ
और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते हैं,

اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है,

حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
हिकमत वाला है (71) मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है ऐसे बाग़ात का कि

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
उनके नीचे से नहरें जारी होंगी उनमें वे हमेशा रहेंगे,

وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ
और वादा है पाकीज़ा मकानों का हमेशा रहने वाले बाग़ात में, और अल्लाह की

مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾ ع
रिज़ामंदी का जो सबसे बढ़ कर है, यही बड़ी कामयाबी है (72)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
ऐ प्यारे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए

وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
और उन पर कड़े बन जाइए, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा

الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ
ठिकाना है (73) वे अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा; हालाँकि उन्होंने

قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ
कुफ़्र की बात कही और वे इसलाम लाने के बाद काफ़िर हो गए

وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ
और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें हासिल न हो सका, और यह सिर्फ़ उसका बदला था कि उनको अल्लाह

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ
और उसके रसूल ने अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया, अगर वे तौबा करें तो यह

خَيْرًا	لَّهُمْ ج	وَاِنْ	يَّتَوَلَّوْا	يُعَذِّبْهُمُ	اللّٰهُ

उनके हक़ में बेहतर है और अगर वे मुँह फेर लें तो अल्लाह उनको दर्दनाक

عَذَابًا اَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج وَمَا لَهُمْ

अज़ाब देगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और ज़मीन में उनका

فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ

न कोई हिमायती होगा और न मददगार (74) और उनमें वे भी हैं

مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ

जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमको अपने फ़ज़्ल से अता किया

لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّآ

तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और हम नेक बनकर रहेंगे (75) फिर जब

اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़्ल से अता किया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और बरगश्ता होकर

مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ

मुँह फेर लिया (76) पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ बिठा दिया

اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا

उस दिन तक के लिए जबकि वे उससे मिलेंगे इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह से किए हुए

وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की और इस वजह से कि वे झूठ बोलते रहे (77) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ

अल्लाह उनके राज़ और उनकी सरगोशी को जानता है और यह कि अल्लाह

عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ

तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है (78) वे लोग जो तअन करते हैं उन मुसलमानों पर जो दिल खोलकर

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ

सदक़ात देते हैं और उनपर जो सिर्फ़ अपनी मेहनत मज़दूरी से

اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ط سَخِرَ اللّٰهُ

ख़र्च करते हैं उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं, अल्लाह उन (मज़ाक़ उड़ाने वालों) का मज़ाक़

مِنۡهُمۡ ۡ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٧٩﴾ اِسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ

उड़ाता है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (79) आप उनके लिए मुआफ़ी की

اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ اِنۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ سَبۡعِيۡنَ

दरख़ास्त करें या न करें, अगर आप सत्तर मर्तबा भी उन्हें मुआफ़ करने की

مَرَّةً فَلَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَفَرُوۡا

दरख़्वास्त करोगे तो अल्लाह उनको हरगिज़ मुआफ़ करने वाला नहीं, यह इस लिए कि उन्होंने

بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ

अल्लाह और उसके रसूल का इनकार किया, और अल्लाह नाफ़रमानों को राह नहीं

الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿٨٠﴾ ع فَرِحَ الۡمُخَلَّفُوۡنَ بِمَقۡعَدِهِمۡ خِلٰفَ

दिखाता (80) पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर

رَسُوۡلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوۡۤا اَنۡ يُّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِهِمۡ

बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने नापसंद किया कि वे अपने माल और जान से

وَاَنۡفُسِهِمۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَقَالُوۡا لَا تَنۡفِرُوۡا

अल्लाह की राह में जिहाद करें और उन्होंने कहा कि गर्मी में

فِى الۡحَرِّ ؕ قُلۡ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوۡ كَانُوۡا

ना निकलो, आप कह दीजिए कि दोज़ख़ की आग इससे ज़्यादा गरम है, काश उन्हें

يَفۡقَهُوۡنَ ﴿٨١﴾ فَلۡيَضۡحَكُوۡا قَلِيۡلًا وَّلۡيَبۡكُوۡا كَثِيۡرًا ۚ

समझ होती (81) पस वे कम हंसें और ज़्यादा रोएं

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنۡ رَّجَعَكَ اللّٰهُ

उसके बदले में जो वे करते थे (82) पस अगर अल्लाह आपको उनमें से

اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنۡهُمۡ فَاسۡتَاۡذَنُوۡكَ لِلۡخُرُوۡجِ فَقُلۡ

किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए और वे आपसे जिहाद के लिए निकलने की इजाज़त माँगें तो कह दीजिए कि

لَّنۡ تَخۡرُجُوۡا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنۡ تُقَاتِلُوۡا مَعِىَ عَدُوًّا ؕ

तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे,

اِنَّكُمۡ رَضِيۡتُمۡ بِالۡقُعُوۡدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقۡعُدُوۡا مَعَ

तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था पस पीछे रहने वालों के साथ

الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

बैठे रहो (83) और उनमें से जो कोई मर जाए उसपर आप कभी

اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ

नमाज़ न पढ़ें और न उसकी क़ब्र पर खड़े रहें, बेशक उन्होंने अल्लाह

وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ

और उसके रसूल का इनकार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफ़रमान थे (84) और उनके माल

اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ

और उनकी औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इनके ज़रिए से

بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

उनको दुनिया में अज़ाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे मुनकिर हों (85)

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ

और जब कोई सूरत उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ

رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا

जिहाद करो तो उनके ख़ुशहाल लोग आपसे रुख़सत माँगते हैं और कहते हैं कि

ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ

हमको छोड़ दीजिए कि हम यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएं (86) उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली

الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾

औरतों के साथ रह जाएं, और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई पस वे कुछ नहीं समझते (87)

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا

लेकिन रसूल और जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं उन्होंने अपने माल

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ز

और जान से जिहाद किया, और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियाँ

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ

और वही फ़लाह पाने वाले हैं (88) उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ

जिनके नीचे नहरें बहती हैं, उनमें वे हमेशा रहेंगे,

ع ١٢/٩

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ ع وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ

यही बड़ी कामयाबी है (89) और देहातियों में से भी

الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا

बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाज़त मिल जाए और जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

झूठ बोला वे बैठे रहे, उनमें से जिन्होंने इनकार किया उनको एक दर्दनाक अज़ाब

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى

पकड़ेगा (90) कोई गुनाह नहीं है कमज़ोरों पर और न बीमारों पर

وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا

और न उनपर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते जबकि वे

نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ

अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ैरख़्वाही करें, नेकी करने वालों पर कोई

سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ لا وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ

इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (91) और न उन लोगों पर कोई इल्ज़ाम है कि

اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ

जब आपके पास आए कि आप उनको सवारी देदें, आपने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं कि

اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ

तुम को उसपर सवार करूँ तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आँखों से आँसू

الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ ؕ اِنَّمَا

जारी थे इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे ख़र्च करें (92) इल्ज़ाम तो बस

السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ

उन लोगों पर है जो आपसे इजाज़त माँगते हैं; हालाँकि वे

اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ

मालदार हैं, वे इस पर राज़ी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं,

وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी पस वे नहीं जानते (93)

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا

तुम जब उनकी तरफ़ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने आज़ार पेश करेंगे, कह दीजिए कि

تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ

बहाने न बनाओ, हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे, बेशक अल्लाह ने हमको तुम्हारे हालात बता दिए हैं,

وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى

अब अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे फिर तुम उसकी तरफ़

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

लोटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, पस वह तुमको बता देगा जो कुछ

تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ

तुम कर रहे थे (94) ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें

اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ

खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो, पस तुम उनसे दरगुज़र करो, बेशक वे

رِجْسٌ ؗ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है बदले में उसके जो वे करते रहे हैं (95)

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ

वे तुम्हारे सामने क़समें खाएंगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ

तो अल्लाह नाफ़रमान लोगों से राज़ी होने वाला नहीं (96) देहात वाले

اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ

कुफ़्र व निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त हैं और इसी लायक़ हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है

اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ

उसके हुदूद से बेख़बर रहें, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है (97) और उन

الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ

देहातियों में से बअज़ ऐसे हैं कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको जुर्माना समझते हैं और तुम मुसलमानों के वास्ते

بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ

बुरे वक़्त के मुंतज़िर रहते हैं, बुरा वक़्त उन्हीं पर पड़ने वाला है और अल्लाह सुनने वाला,

عَلِيۡمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الۡاَعۡرَابِ مَنۡ يُّؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ

जानने वाला है (98) और देहातियों में से कुछ वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के

الۡاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنۡفِقُ قُرُبٰتٍ عِنۡدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ

दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के यहाँ क़ुर्ब का और रसूल की दुआएं लेने का

الرَّسُوۡلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرۡبَةٌ لَّهُمۡ ؕ سَيُدۡخِلُهُمُ اللّٰهُ

ज़रिया बनाते हैं, हाँ बेशक वह उनके लिए क़ुर्ब का ज़रिया है। अल्लाह उनको अपनी रहमत में

فِىۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٩٩﴾ ع وَالسّٰبِقُوۡنَ

दाख़िल करेगा, यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (99) और जो लोग पहल करने वाले

الۡاَوَّلُوۡنَ مِنَ الۡمُهٰجِرِيۡنَ وَالۡاَنۡصَارِ وَالَّذِيۡنَ

और मुक़ददम हैं मुहाजिरीन और अंसार में से और जिन्होंने ख़ूबी के साथ उनकी

اتَّبَعُوۡهُمۡ بِاِحۡسَانٍ ۙ رَّضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا

पैरवी की अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए

عَنۡهُ وَاَعَدَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ تَحۡتَهَا الۡاَنۡهٰرُ

और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बेहती होंगी,

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰ لِكَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنۡ

वे उनमें हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामयाबी है (100) और तुम्हारे आसपास

حَوۡلَـكُمۡ مِّنَ الۡاَعۡرَابِ مُنٰفِقُوۡنَ ؕ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡمَدِيۡنَةِ ؔ

जो देहाती हैं उनमें मुनाफ़िक़ हैं, और मदीना वालों में भी (मुनाफ़िक़ हैं),

مَرَدُوۡا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعۡلَمُهُمۡ ؕ نَحۡنُ نَعۡلَمُهُمۡ ؕ

वे निफ़ाक़ पर जम गए हैं, तुम उनको नहीं जानते लेकिन हम उनको जानते हैं,

سَنُعَذِّبُهُمۡ مَّرَّتَيۡنِ ثُمَّ يُرَدُّوۡنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيۡمٍ ﴿١٠١﴾

हम उनको दोहरा अज़ाब देंगे फिर वे एक बड़े अज़ाब की तरफ़ भेजे जाएंगे (101)

وَاٰخَرُوۡنَ اعۡتَرَفُوۡا بِذُنُوۡبِهِمۡ خَلَطُوۡا عَمَلًا صَالِحًا

कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने क़ुसूरों का ऐतराफ़ कर लिया है, उन्होंने मिले जुले अमल किए थे, कुछ भले

وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنۡ يَّتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और कुछ बुरे, उम्मीद है कि अल्लाह उनपर तवज्जोह करे, बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (102) आप उनके मालों में से सदक़ा लीजिए जिससे आप उनको पाक करोगे

وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ

और उसके ज़रिए उनका तज़किया करोगे, और आप उनके लिए दुआ कीजिए बेशक आपकी दुआ उनके लिए

لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

तस्कीन का सबब होगी, और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है (103) क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही

هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और वही सदक़ात को क़ुबूल करता है,

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى

और अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला, मेहरबान है (104) कह दीजिए कि अमल करो, अल्लाह और उसके रसूल

اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ

और अहले ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे, और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे

اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

जो तमाम खुले और छुपे को जानता है पस वह तुमको बता देगा जो कुछ तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ ۚ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا

कर रहे थे (105) कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी अल्लाह का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वे उनको

يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

सज़ा देगा या उनकी तौबा क़ुबूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला,

حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا

हिकमत वाला है (106) और कुछ लोग वे हैं जिन्होंने एक मस्जिद इस काम के लिए बनाई है कि (मुसलमानों को) नुक़सान पहुँचाएं

وَّتَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ

और काफ़िराना बातें करें, मोमिनों में फूट डालें और उस शख़्स को एक अडडा फ़राहम करें जिसकी पहले से

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا

अल्लाह और उसके रसूल के साथ जंग है, और ये क़समें ज़रूर खा लेंगे कि भलाई के सिवा हमारी कोई और

الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ

नीयत नहीं है, लेकिन अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि वे पक्के झूठे हैं (107) आप उस इमारत में

فِيْهِ اَبَدًا ط لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ

कभी खड़े न होना, अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद पहले दिन से तक़्वे पर

يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ط فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ

पड़ी है वह इस लायक़ है कि आप उसमें खड़े हों, उसमें ऐसे लोग हैं जो ख़ूब पाक रहने को

يَّتَطَهَّرُوْا ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ١٠٨ اَفَمَنْ اَسَّسَ

पसंद करते हैं और अल्लाह ख़ूब पाक रहने वालों को पसंद करता है (108) क्या वह शख़्स बेहतर है जिसने

بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ

अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह के डर और अल्लाह की ख़ुश्नूदी पर रखी या वह शख़्स बेहतर है जिसने

اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ

अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है फिर वह इमारत उसको लेकर

نَارِ جَهَنَّمَ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ١٠٩

जहन्नम की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता (109)

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّاۤ

और यह इमारत जो उन्होंने बनाई हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी सिवाए इसके कि

اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ١١٠ ع اِنَّ اللّٰهَ

उनके दिल ही टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (110) बेशक अल्लाह ने

اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ

मोमिनों से उनकी जान और उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत

لَهُمُ الْجَنَّةَ ط يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

के बदले, वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं फिर मारते हैं

وَيُقْتَلُوْنَ قف وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

और मारे जाते हैं, यह अल्लाह के ज़िम्मे एक सच्चा वादा है तौरात में और इंजील में

وَالْقُرْاٰنِ ط وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

और क़ुरआन में, और अल्लाह से बढ़ कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है, पस तुम ख़ुशियाँ मनाओ

بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ط وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

उस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है, और यही सबसे बड़ी

منزل ٢

ع ١١

الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾ اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ

कामयाबी है (111) वे तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, हम्द करने वाले हैं,

السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ

अल्लाह की राह में फिरने वाले हैं, रुकूअ करने वाले हैं, सज्दा करने वाले हैं, भलाई का हुक्म

بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ

करने वाले हैं, बुराई से रोकने वाले हैं, अल्लाह की हदों का ख़्याल

لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ

रखने वाले हैं, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए (112) नबी के लिए

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا

और उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं मुनासिब नहीं कि मुशरिकों के लिए मग़फ़िरत की दुआ करें, चाहे वे

اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ

उनके रिश्तेदार ही हों जबकि उनपर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले

الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا

लोग हैं (113) और इब्राहीम (अलै०) का अपने वालिद के लिए मग़फ़िरत की दुआ मांगना सिर्फ़

عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ

उस वादे की वजह से था जो उन्होंने उससे कर लिया था, फिर जब उनपर खुल गया कि वह

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

अल्लाह का दुश्मन है तो वे उससे बेताल्लुक़ हो गए, बेशक इब्राहीम बड़े नर्म दिल, बुर्दबार थे (114)

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى

और अल्लाह किसी क़ौम को उसको हिदायत देने के बाद गुमराह नहीं करता जब तक उनको

يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

साफ़ साफ़ वे चीज़ें न बता दे जिन से उन्हें बचना है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है (115)

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

बेशक अल्लाह ही की सलतनत है आसमानों में और ज़मीन में, वही ज़िंदा करता है और वही मारता है,

وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ

और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न कोई मददगार (116) बेशक

تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِىِّ وَالۡمُهٰجِرِيۡنَ وَالۡاَنۡصَارِ الَّذِيۡنَ
अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अंसार पर तवज्जोह फ़रमाई जिन्होंने

اتَّبَعُوۡهُ فِىۡ سَاعَةِ الۡعُسۡرَةِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا كَادَ يَزِيۡغُ
तंगी के वक़्त में नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल

قُلُوۡبُ فَرِيۡقٍ مِّنۡهُمۡ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ‌ؕ اِنَّهٗ بِهِمۡ رَءُوۡفٌ
कजी की तरफ़ माइल हो चुके थे, फिर अल्लाह ने उनपर तवज्जोह फ़रमाई, बेशक अल्लाह उनपर मेहरबान है,

رَّحِيۡمٌ ۙ‏ ﴿۱۱۷﴾ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيۡنَ خُلِّفُوۡا ؕ حَتّٰٓى
रहम करने वाला है (117) और उन तीन शख़्सों के हाल पर भी जिनका मामला मुलतवी छोड़ दिया गया था, यहाँ तक कि

اِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ
जब ज़मीन बावजूद अपनी वुस्अत के उनपर तंग होने लगी और वे ख़ुद अपनी जान से

عَلَيۡهِمۡ اَنۡفُسُهُمۡ وَظَنُّوۡۤا اَنۡ لَّا مَلۡجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ
तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाए इसके कि उसी की तरफ़

اِلَيۡهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ لِيَتُوۡبُوۡا‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
रुजूअ किया जाए, फिर अल्लाह ने उनके हाल पर तवज्जोह फ़रमाई ताकि वे आइंदा भी तौबा कर सकें, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला

الرَّحِيۡمُ ﴿۱۱۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوۡنُوۡا
बड़ा रहम करने वाला है (118) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों

مَعَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۱۱۹﴾ مَا كَانَ لِاَهۡلِ الۡمَدِيۡنَةِ وَمَنۡ
के साथ रहो (119) मुनासिब नहीं था मदीना वालों और अतराफ़ के

حَوۡلَهُمۡ مِّنَ الۡاَعۡرَابِ اَنۡ يَّتَخَلَّفُوۡا عَنۡ رَّسُوۡلِ اللّٰهِ
देहातियों के लिए कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़ कर पीछे बैठे रहें

وَلَا يَرۡغَبُوۡا بِاَنۡفُسِهِمۡ عَنۡ نَّفۡسِهٖ‌ ؕ ذٰ لِكَ بِاَنَّهُمۡ
और न यह कि अपनी जानों को उनकी जान से अज़ीज़ रखें, यह इस लिए कि

لَا يُصِيۡبُهُمۡ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخۡمَصَةٌ فِىۡ سَبِيۡلِ
जो प्यास और थकान और भूख भी उनको अल्लाह की राह में लाहिक़ होती है

اللّٰهِ وَلَا يَطَئُوۡنَ مَوۡطِئًا يَّغِيۡظُ الۡكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوۡنَ
और जो क़दम भी वे काफ़िरों को रंज पहुँचाने वाला उठाते हैं और जो चीज़ भी वे

مِنۡ عَدُوٍّ نَّيۡلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمۡ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ

दुश्मन से छीनते हैं उनके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है,

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۙ‏ ﴿۱۲۰﴾ وَلَا يُنۡفِقُوۡنَ

बेशक अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाए नहीं करता (120) और जो

نَفَقَةً صَغِيۡرَةً وَّلَا كَبِيۡرَةً وَّلَا يَقۡطَعُوۡنَ وَادِيًا اِلَّا

छोटा या बड़ा ख़र्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तय किए वे सब उनके लिए

كُتِبَ لَهُمۡ لِيَجۡزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحۡسَنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۱﴾

लिखा गया; ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे (121)

وَمَا كَانَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ لِيَنۡفِرُوۡا كَآفَّةً ؕ فَلَوۡلَا نَفَرَ مِنۡ

और यह मुमकिन न था कि अहले ईमान सबके सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न हुआ कि

كُلِّ فِرۡقَةٍ مِّنۡهُمۡ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوۡا فِى الدِّيۡنِ

उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता; ताकि वे दीन में समझ पैदा करता

وَلِيُنۡذِرُوۡا قَوۡمَهُمۡ اِذَا رَجَعُوۡۤا اِلَيۡهِمۡ لَعَلَّهُمۡ

और वापस जाकर अपनी क़ौम के लोगों को आगाह करता; ताकि वे भी परहेज़ करने वाले

يَحۡذَرُوۡنَ ﴿۱۲۲﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا قَاتِلُوا الَّذِيۡنَ

बनते (122) ऐ ईमान वालो! उन काफ़िरों से जंग करो

يَلُوۡنَكُمۡ مِّنَ الۡكُفَّارِ وَلۡيَجِدُوۡا فِيۡكُمۡ غِلۡظَةً ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا

जो तुम्हारे आस पास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख़्ती पाएं, और जान लो कि

اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنۡزِلَتۡ سُوۡرَةٌ

अल्लाह डरने वालों के साथ है (123) और जब कोई सूरत उतरती है

فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّقُوۡلُ اَيُّكُمۡ زَادَتۡهُ هٰذِهٖۤ اِيۡمَانًا ۚ فَاَمَّا

तो उनमें से बअज़ कहते हैं कि इसने तुम में से किस का ईमान बढ़ा दिया है पस जो

الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فَزَادَتۡهُمۡ اِيۡمَانًا وَّهُمۡ يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ﴿۱۲۴﴾

ईमान वाले हैं उनका इसने ईमान बढ़ा दिया है और वे ख़ुश हो रहे हैं (124)

وَاَمَّا الَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ فَزَادَتۡهُمۡ رِجۡسًا اِلٰى

और जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर

رِجۡسِهِمۡ وَمَاتُوۡا وَهُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوۡنَ اَنَّهُمۡ

गंदगी और वे मरने तक काफ़िर ही रहे (125) क्या ये लोग देखते नहीं कि वे

يُفۡتَنُوۡنَ فِىۡ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوۡ مَرَّتَيۡنِ ثُمَّ لَا يَتُوۡبُوۡنَ

हर साल एक बार या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं फिर भी न तौबा करते हैं

وَلَا هُمۡ يَذَّكَّرُوۡنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنۡزِلَتۡ سُوۡرَةٌ نَّظَرَ

और न सबक़ हासिल करते हैं (126) और जब कोई सूरत उतारी जाती है तो ये लोग

بَعۡضُهُمۡ اِلٰى بَعۡضٍ ؕ هَلۡ يَرٰٮكُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ ثُمَّ

आपस में एक दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर

انْصَرَفُوۡا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوۡبَهُمۡ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَفۡقَهُوۡنَ ﴿١٢٧﴾

चल देते हैं, अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस वजह से कि यह समझ से काम लेने वाले लौग नहीं हैं (127)

لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ

तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो ख़ुद तुम्ही में से है, तुम्हारा नुक़सान में पड़ना

مَا عَنِتُّمۡ حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١٢٨﴾

उसपर भारी है, वह तुम्हारी भलाई का हरीस है, ईमान वालों पर निहायत शफ़क़त करने वाला, मेहरबान है (128)

فَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَقُلۡ حَسۡبِىَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيۡهِ

फिर भी अगर वे मुँह फेर लें तो कह दीजिए कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी पर

تَوَكَّلۡتُ وَهُوَ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِيۡمِ ﴿١٢٩﴾ ع

मैंने भरोसा किया है और वही अर्शे-अज़ीम का मालिक है (129)

सूरह यूनुस मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर चंद आयतें (40,94,96) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई है, इसमें (109) आयतें और (11) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (51) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (10) नम्बर पर है और सूरह इस्त्रा के बाद नाज़िल हुई।

इसमें (9099) हुरूफ़ हैं	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ	इसमें (1832) कलिमात हैं

الٓرٰ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡحَكِيۡمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ

अलिफ़-लाम-रा, यह हिकमत से भरी किताब की आयतें हैं (1) क्या लोगों को इसपर

عَجَبًا اَنۡ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى رَجُلٍ مِّنۡهُمۡ اَنۡ اَنۡذِرِ النَّاسَ

हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख़्स पर वह्य की कि लोगों को डराओ

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ

और जो ईमान लाएं उनको ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के पास

رَبِّهِمْ ؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

सच्चा मर्तबा है, मुनकिरों ने कहा कि यह शख़्स तो खुला जादूगर है (2)

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को

سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا

छः दिनों (अदवार) में पैदा किया फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ, वही मामलात का इंतिज़ाम करता है, उसकी

مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

इजाज़त के बग़ैर कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं, वही अल्लाह तुम्हारा रब है

فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ

पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं (3) उसी की तरफ़ तुम सबको लौट कर जाना है,

وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ

यह अल्लाह का पक्का वादा है, बेशक वह पैदाइश की इब्तिदा करता है फिर वह दोबारा पैदा करेगा; ताकि जो लोग

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ

ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनको इंसाफ़ के साथ बदला दे, और जिन्होंने

كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا

इनकार किया उनके इनकार के बदले उनके लिए खौलता हुआ पानी और दर्दनाक

يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ

अज़ाब है (4) और अल्लाह वही है जिसने सूरज को सरापा रोशनी बनाया और चाँद को सरापा

نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

नूर और उसके (सफ़र के) लिए मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं; ताकि तुम बरसों की गिनती

وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ

और (महीनों का) हिसाब मालूम कर सको, अल्लाह ने यह सब कुछ बग़ैर किसी सही मक़सद के पैदा नहीं कर दिया, वह ये निशानियाँ

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ

खोल खोल कर बयान करता है उनके लिए जो कुछ समझ रखते हैं (5) यक़ीनन रात और दिन के

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم ١٢

منزل ٣

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ

उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उनमें उन लोगों के लिए

لِّقَوۡمٍ يَّتَّقُوۡنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوۡا

निशानियाँ हैं जो डरते हैं (6) बेशक जो लोग हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते

بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَاطۡمَاَنُّوۡا بِهَا وَالَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ اٰيٰتِنَا

और दुनिया की ज़िंदगी पर राज़ी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से

غٰفِلُوۡنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ مَاۡوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ۝٨

बेपरवा हैं (7) उनका ठिकाना जहन्नम होगा उस वजह से जो वे करते थे (8)

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهۡدِيۡهِمۡ رَبُّهُمۡ

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उनको

بِاِيۡمَانِهِمۡ ۚ تَجۡرِيۡ مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ فِيۡ جَنّٰتِ

उनके मक़सद तक पहुँचा देगा, उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के

النَّعِيۡمِ ۝٩ دَعۡوٰىهُمۡ فِيۡهَا سُبۡحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمۡ

बाग़ों में (9) उनके मुँह से यह बात निकलेगी: “सुब्हानल्लाह” और उनका आपस में सलाम

فِيۡهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعۡوٰىهُمۡ اَنِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ

यह होगा: “अस्सलामु अलैकुम” और उनकी अख़ीर बात यह होगी कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का

الۡعٰلَمِيۡنَ ۝١٠ وَلَوۡ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسۡتِعۡجَالَهُمۡ

रब है (10) और अगर अल्लाह लोगों के लिए अज़ाब उसी तरह जल्द पहुँचा दे

بِالۡخَيۡرِ لَقُضِيَ اِلَيۡهِمۡ اَجَلُهُمۡ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيۡنَ لَا

जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुददत ख़तम कर दी गई होती, लेकिन हम उन लोगों को

يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا فِيۡ طُغۡيَانِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ۝١١ وَاِذَا مَسَّ

जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं (11) और इंसान को जब

الۡاِنۡسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنۡۢبِهٖۤ اَوۡ قَاعِدًا اَوۡ قَآئِمًا ۚ

कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे खड़े और बैठे और लेटे हमको पुकारता है,

فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنۡ لَّمۡ يَدۡعُنَاۤ اِلٰى

फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ़ दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक़्त पर

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلۡمُسۡرِفِيۡنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٢﴾

हमको पुकारा ही न था, इस तरह हद से गुज़र जाने वालों के लिए उनके आमाल खुशनुमा बना दिए गए हैं (12)

وَلَقَدۡ اَهۡلَكۡنَا الۡقُرُوۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا ۙ

और हमने तुमसे पहले क़ौमों को हलाक किया जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया,

وَجَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوۡا لِيُؤۡمِنُوۡا ؕ

और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने,

كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡقَوۡمَ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰكُمۡ

हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को (13) फिर हमने उनके बाद तुमको

خَلٰٓئِفَ فِى الۡاَرۡضِ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ لِنَنۡظُرَ كَيۡفَ

मुल्क में जानशीन बनाया; ताकि हम देखें कि तुम कैसा

تَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٤﴾ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ

अमल करते हो (14) और जब उनको हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को

الَّذِيۡنَ لَا يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا ائۡتِ بِقُرۡاٰنٍ غَيۡرِ هٰذَآ

हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और क़ुरआन लाओ

اَوۡ بَدِّلۡهُ ؕ قُلۡ مَا يَكُوۡنُ لِىۡۤ اَنۡ اُبَدِّلَهٗ مِنۡ تِلۡقَآئِ

या इसको बदल दो, आप कह दीजिए कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से उसको

نَفۡسِىۡ ۚ اِنۡ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوۡحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىۡۤ اَخَافُ اِنۡ

बदल दूँ, मैं तो सिर्फ़ उस वह्य की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आती है, अगर मैं अपने रब की

عَصَيۡتُ رَبِّىۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿١٥﴾ قُلۡ لَّوۡ شَآءَ

नाफ़रमानी करूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (15) कह दीजिए कि अगर अल्लाह

اللّٰهُ مَا تَلَوۡتُهٗ عَلَيۡكُمۡ وَلَآ اَدۡرٰكُمۡ بِهٖ ۖ فَقَدۡ

चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता, मैं

لَبِثۡتُ فِيۡكُمۡ عُمُرًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿١٦﴾ فَمَنۡ

इससे पहले तुम्हारे दरमियान एक उमर बसर कर चुका हूँ फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते (16) इससे बढ़कर

اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ

ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ

यक़ीनन मुजरिमों को कामयाबी हासिल नहीं होती (17) और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की

دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ

इबादत करते हैं जो उनको न नुक़सान पहुँचा सकें और ना नफ़ा पहुँचा सकें, और वे कहते हैं कि

هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا

ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं, कह दीजिए क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो

لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى

जो उसको आसमानों और ज़मीन में मालूम नहीं, वे पाक और बरतर है उससे

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً

जिसको वे शरीक करते हैं (18) और लोग एक ही उम्मत थे

فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

फ़िर उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया, और अगर आपके रब की तरफ़ से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके दरमियान

بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ

उस बात का फ़ैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं (19) और वे कहते हैं कि नबी पर

اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ

उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई, कह दें कि ग़ैब की ख़बर तो

لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَآ

अल्लाह ही को है, पस तुम लोग इंतिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वालों में से हूँ (20) और जब

اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا

कोई तकलीफ़ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे फ़ौरन

لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ

हमारी निशानियों के मामले में बहाने बनाने लगते हैं, कह दीजिए कि अल्लाह अपनी तदबीरों में उनसे भी ज़्यादा तेज़ है,

اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ

यक़ीनन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी बहाने बाज़ियों को लिख रहे हैं (21) वह अल्लाह ही है

يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي

जो तुमको ख़ुश्की और तरी में चलाता है; चुनाँचे जब तुम कश्ती में

الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا

होते हो और कश्तियाँ लोगों को लेकर मुवाफ़िक़ हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे ख़ुश होते हैं कि

جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ

यकायक एक तेज़ हवा आती है और उनपर हर जानिब से मौजें

مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए, उस वक़्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए

لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

ख़ालिस करके उसको पुकारने लगते हैं कि अगर आपने हमें इससे निजात दे दी तो यक़ीनन हम शुक्रगुज़ार

الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ

बंदे बनेंगे (22) फिर जब वह उनको निजात दे देता है तो वे फ़ौरन ही ज़मीन में

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ

नाहक़ सरकशी करने लगते हैं, ऐ लोगो! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है,

مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ

दुनिया की ज़िंदगी का नफ़ा उठा लो फिर तुमको हमारी तरफ़ लौट कर आना है फिर हम तुमको बता देंगे

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

जो कुछ तुम कर रहे थे (23) दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है

كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ

जैसे पानी कि हमने उसको आसमान से बरसाया तो ज़मीन का सब्ज़ा

الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ

ख़ूब निकला जिसको आदमी खाते हैं और जिसको जानवर खाते हैं, यहाँ तक कि जब ज़मीन

اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ

पूरी रोनक़ पर आ गई और संवर उठी और ज़मीन वालों ने गुमान कर लिया कि

اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا

अब यह हमारे क़ाबू में है तो अचानक उसपर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया

فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ

फिर हमने उसको काट कर ढेर कर दिया गोया कल यहाँ कुछ था ही नहीं, इस तरह

نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٢٤ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى

हम निशानियाँ खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं (24) और अल्लाह सलामती के

دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٢٥

घर की तरफ़ बुलाता है और वह जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है (25)

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ

जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उस पर मज़ीद भी, और उनके चेहरों पर न सियाही

قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

छाएगी और न ज़िल्लत, यही जन्नत वाले लोग हैं वे उसमें हमेशा

خٰلِدُوْنَ ۝٢٦ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ

रहेंगे (26) और जिन्होंने बुराईयाँ कमाई तो बुराई का बदला उसके

بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ

बराबर है और उनपर रुसवाई छाई हुई होगी, कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला

عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ

न होगा, गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढाँक दिए

مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٧

गए हैं, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे उसमें हमेशा रहेंगे (27)

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि

مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ

ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी, फिर हम उनके दरमियान तफ़रीक़ कर देंगे और उनके शरीक

شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢٨ فَكَفٰى بِاللّٰهِ

कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे (28) पस अल्लाह हमारे

شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफ़ी है, हम तुम्हारी इबादत से बिलकुल

لَغٰفِلِيْنَ ۝٢٩ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ

बेख़बर थे (29) उस वक़्त हर शख़्स अपने उस अमल से दो चार होगा जो उसने किया था

وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

और लोग अपने हक़ीक़ी मालिक अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे और जो झूठ उन्होंने घड़े थे वे सब

يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

उनसे जाते रहेंगे (30) कह दीजिए कि कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है

اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ

या कौन है जो कान पर और आँखों पर इख़्तियार रखता है और कौन बेजान में से जानदार को

الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ

और जानदार में से बेजान को निकालता है और कौन मामलात का

يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾

इंतिज़ाम कर रहा है, वे कहेंगे कि अल्लाह, कह दीजिए कि फिर क्या तुम डरते नहीं (31)

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا

पस वही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी परवरदिगार है, हक़ के बाद भटकने के सिवा

الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ

और क्या है? तुम किधर फिरे जाते हो (32) इसी तरह आपके रब की

رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

बात सरकशी करने वालों के हक़ में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान न लाएंगे (33)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ

कह दें कि क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर वह दोबारा भी

يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى

पैदा करे? कह दें कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा फिर तुम कहाँ

تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى

भटके जाते हो (34) कह दें कि क्या तुम्हारे शुरका में कोई है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई

الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى

करता हो, कह दें कि अल्लाह ही हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है, फिर जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है

الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ

वह पैरवी किए जाने का ज़्यादा मुस्तहिक़ है या वह जिसको ख़ुद ही रास्ता न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाए,

فَمَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝٣٥ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا

तुमको क्या हो गया है कि तुम कैसा फ़ैसला करते हो (35) उनमें से अकसर सिर्फ़ गुमान की पैरवी

ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कर रहे हैं, और गुमान हक़ बात में कुछ भी काम नहीं देता, बेशक अल्लाह को

عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝٣٦ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ

ख़ूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं (36) और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि

يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ

अल्लाह के सिवा कोई उसको बना ले; बल्कि यह तस्दीक़ है उन पेशीनगोईयों की जो इससे पहले

يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ

मोजूद हैं और किताब की तफ़सील है, इसमें कोई शक नहीं कि वह तमाम जहानों के परवरदिगार की

الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٧ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ

तरफ़ से है (37) क्या लोग कहते हैं कि इस शख़्स ने उसको घड़ा है, कह दीजिए कि तुम उसके मानिंद

مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ

कोई एक ही सूरत ले आओ और अल्लाह के सिवा तुम जिसको बुला सको बुलालो, अगर तुम

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣٨ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ

सच्चे हो (38) बल्कि ये लोग उस चीज़ को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहाते में नहीं आई

وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ

और जिसकी हक़ीक़त अभी उनपर नहीं खुली, इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो उनसे

قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٩

पहले गुज़रे हैं, पस देखो कि ज़ालिमों का अंजाम क्या हुआ (39)

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ

और उनमें से वे भी हैं जो क़ुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उसपर ईमान नहीं लाएंगे,

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝٤٠ ع وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ

और आपका रब फ़साद मचाने वालों को ख़ूब जानता है (40) और अगर वे आपको झुठलाते हैं तो कह दीजिए कि

لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ

मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए, तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूँ

وَاَنَاۡ بَرِیۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۴۱﴾ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ یَّسۡتَمِعُوۡنَ

और मैं भी उससे बरी हूँ जो तुम कर रहे हो (41) और उनमें बअज़ ऐसे भी हैं जो आपकी तरफ़

اِلَیۡكَ ؕ اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ وَلَوۡ كَانُوۡا لَا یَعۡقِلُوۡنَ ﴿۴۲﴾

कान लगाते हैं, तो क्या आप बेहरों को सुनाओगे जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों? (42)

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ یَّنۡظُرُ اِلَیۡكَ ؕ اَفَاَنۡتَ تَهۡدِی الۡعُمۡیَ

और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो आपकी तरफ़ देखते हैं, तो क्या आप अंधों को रास्ता दिखाओगे

وَلَوۡ كَانُوۡا لَا یُبۡصِرُوۡنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظۡلِمُ النَّاسَ

अगरचे वे देख न रहे हों (43) अल्लाह लोगों पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं

شَیۡـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنۡفُسَهُمۡ یَظۡلِمُوۡنَ ﴿۴۴﴾ وَیَوۡمَ

करता मगर लोग ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं (44) और जिस दिन

یَحۡشُرُهُمۡ كَاَنۡ لَّمۡ یَلۡبَثُوۡۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ

अल्लाह उनको जमा करेगा, गोया कि वे बस दिन की घड़ी दुनिया में थे,

یَتَعَارَفُوۡنَ بَیۡنَهُمۡ ؕ قَدۡ خَسِرَ الَّذِیۡنَ كَذَّبُوۡا بِلِقَآءِ

वे एक दूसरे को पहचानेंगे, बेशक सख़्त घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को

اللّٰهِ وَمَا كَانُوۡا مُهۡتَدِیۡنَ ﴿۴۵﴾ وَاِمَّا نُرِیَنَّكَ بَعۡضَ

झुठलाया और वे राहे रास्त पर न आए (45) हम तुमको उसका कोई हिस्सा

الَّذِیۡ نَعِدُهُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّیَنَّكَ فَاِلَیۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ ثُمَّ

दिखादें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफ़ात दे दें बहरहाल उनको हमारी ही तरफ़ लौटना है, फिर

اللّٰهُ شَهِیۡدٌ عَلٰی مَا یَفۡعَلُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ

अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वे कर रहे हैं (46) और हर उम्मत के लिए

رَّسُوۡلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوۡلُهُمۡ قُضِیَ بَیۡنَهُمۡ بِالۡقِسۡطِ

एक रसूल है, फिर जब उनका रसूल आजाता है तो उनके दरमियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है

وَهُمۡ لَا یُظۡلَمُوۡنَ ﴿۴۷﴾ وَیَقُوۡلُوۡنَ مَتٰی هٰذَا الۡوَعۡدُ

और उनपर कोई ज़ुल्म नही होता (47) और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा

اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿۴۸﴾ قُلۡ لَّاۤ اَمۡلِكُ لِنَفۡسِیۡ ضَرًّا

अगर तुम सच्चे हो (48) कह दीजिए कि मैं अपने वास्ते भी बुरे

وَلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ

और भले का मालिक नहीं मगर जो अल्लाह चाहे, हर उम्मत के लिए एक वक़्त है, जब उनका वक़्त

اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾

आ जाता है तो फिर न वह एक घड़ी पीछे होते हैं और न आगे (49)

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا

कह दें कि बताओ अगर अल्लाह का अज़ाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए तो मुजरिम लोग उससे पहले

يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ

क्या कर लेंगे (50) क्या जब वह अज़ाब आ ही पड़ेगा तब उसे मानोगे?

اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۵۱﴾

(उस वक़्त तो तुमसे यह कहा जाएगा कि) अब माने? हालाँकि तुम ही (इसका इनकार करके) उस की जल्दी मचाया करते थे (51)

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ

फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अज़ाब चखो, यह उसी का

تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ

बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे (52) और वे आपसे पूछते हैं कि

اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِىْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَآ اَنْتُمْ

क्या यह बात सच है, कह दीजिए कि हाँ मेरे रब की क़सम! यह सच है और तुम उसको

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۳﴾ ع وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا

थका न सकोगे (53) और अगर हर ज़ालिम के पास वे सब कुछ हो जो

فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

ज़मीन में है तो वह उसको फ़िदये में दे देना चाहेगा, और जब वे अज़ाब को देखेंगे

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

तो अपने दिल में पछताएंगे, और उनके दरमियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

और उनपर ज़ुल्म न होगा (54) याद रखो! जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है

وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

सब अल्लाह का है, याद रखो! अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अकसर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

नहीं जानते (55) वही ज़िंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे (56)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई

وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ

और उसके लिए शिफ़ा जो सीनों में होती है, और अहले ईमान के लिए हिदायत

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ

और रहमत (57) आप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के इस इनाम और रहमत पर

فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

ख़ुश होना चाहिए, वह उससे बहुत ज़्यादा बेहतर है जिसको वे जमा कर रहे हैं (58) कह दें कि यह बताओ कि

مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ

अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज़्क़ उतारा फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम ठहराया

حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى

और कुछ को हलाल, कह दें कि क्या अल्लाह ने तुमको इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर

اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى

झूठ लगा रहे हो? (59) और क़ियामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख़्याल है

اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ

जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है मगर अकसर लोग शुक्र अदा नहीं करते (60)

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ

और तुम जिस हाल में भी हो और क़ुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो

قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

और तुम लोग जो काम भी करते हो हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं

شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

जिस वक़्त तुम उसमें मशग़ूल रहते हो, और आपके रब से

منزل ٣

ع ٦/٧

رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي

ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ ग़ायब नहीं, न ज़मीन में और न आसमान

السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ

में और न उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक वाज़ेह किताब में

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ

(महफ़ूज़) है (61) सुन लो! अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ़

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا

होगा और न वे ग़मगीन होंगे (62) ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते

يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

रहे (63) उनके लिए ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िंदगी में

وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

और आख़िरत में भी, अल्लाह की बातों में कोई तबदीली नहीं, यही

هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ

बड़ी कामयाबी है (64) और आपको उनकी बात ग़म में न डाले,

اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

बेशक सारा ज़ोर अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है (65)

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ

सुन लो! जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है सब अल्लाह के हैं,

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं वे किस चीज़ की पैरवी

شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

कर रहे हैं, वे सिर्फ़ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज़ अंदाज़े

يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا

लगा रहे हैं (66) वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें सुकून

فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

हासिल करो और दिन को रोशन बनाया, बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए

منزل ٣

وقف لازم

لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ط

जो सुनते हैं (67) कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है, वह तो पाक है,

هُوَ الْغَنِيُّ ط لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط

बेनियाज़ है, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,

اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ط اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى

तुम्हारे पास उसकी कोई दलील नहीं, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात

اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ

घड़ते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते (68) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ ط مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا

झूठ बांधते हैं वे कामयाबी नहीं पाएंगे (69) उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फ़ायदा उठा लेना है

ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ

फिर हमारी ही तरफ़ उनका लौटना है, फिर हम उनको इस इनकार के बदले सख़्त अज़ाब का

بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ م

मज़ा चखाएंगे (70) और उनको नूह (अलै०) का हाल सुनाइए

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ

जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों के ज़रिए

وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا

नसीहत करना तुम पर भारी हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, तुम सब मिल कर अपना

اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ

फ़ैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ लेलो, फिर तुमको अपने फ़ैसले में कोई शुबह बाक़ी

غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ

न रहे फिर तुम लोग मेरे साथ जो करना चाहते हो कर गुज़रो और मुझ को मोहलत न दो (71) फिर अगर

تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ط اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى

तुम मुँह मोड़ लोगे तो मैंने तुमसे कोई मज़दूरी नहीं मांगी है, मेरा अज्र तो अल्लाह ही के

اللّٰهِ لا وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ

ज़िम्मे है और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फ़रमाँबरदारों में से रहूँ (72) फिर उन्होंने उसको झुठला दिया

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ

तो हमने नूह (अलै॰) को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे निजात दी और उनको जानशीन बनाया,

وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

और उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था, देखिए कि क्या अंजाम हुआ उनका

عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا

जिनको डराया गया था (73) उसके बाद हमने मुख़्तलिफ़ पैग़म्बर उनकी अपनी अपनी

اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا

क़ौमों के पास भेजे जो उनके पास खुले खुले दलाइल लेकर आए लेकिन उन लोगों ने

بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ

जिस बात को पहले झुठला दिया था उसे बिलकुल न माना, जो लोग हद से गुज़र जाते हैं उनके दिलों पर हम इसी तरह

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ

मुहर लगा देते हैं (74) फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून (अलै॰) को

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا

फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियाँ देकर भेजा मगर उन्होंने घमंड किया और वे

قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا

मुजरिम लोग थे (75) फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से सच्ची बात पहुँची

قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ

तो उन्होंने कहा कि यह तो खुला हुआ जादू है (76) मूसा (अलै॰)ने कहा कि क्या तुम हक़ को

لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है, क्या यह जादू है; हालाँकि जादू वाले तो कभी

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا

कामयाब नहीं होते (77) उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हम को उस रास्ते से फेर दो जिसपर

عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ

हमने अपने बाप दादा को पाया है और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई क़ायम हो जाए,

وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ

और हम तुम दोनों की बात कभी मानने वाले नहीं हैं (78) और फ़िरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ

मेरे पास ले आओ (79) जब जादूगर आए तो मूसा (अलै०) ने

لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا

उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डाल दो (80) फिर जब जादूगरों ने डाला

قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तो मूसा (अलै०) ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह तो जादू है, बेशक अल्लाह

سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾

उसको बातिल कर देगा, अल्लाह यक़ीनन मुफ़सिदों के काम को सुधरने नहीं देता (81)

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع

और अल्लाह अपने हुक्म से हक़ को हक़ कर दिखाता है चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो (82)

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ

फिर मूसा (अलै०) को उसकी क़ौम में से चंद नौजवानों के सिवा किसी ने न माना फ़िरऔन के

مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ

डर से और ख़ुद अपनी क़ौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वह उनको किसी फ़ितने में न डाल दें, बेशक फ़िरऔन

لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ

ज़मीन में ग़लबा रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुज़र जाते हैं (83) और मूसा (अलै०) ने

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا

कहा: ए मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो

اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

अगर तुम वाक़ई फ़रमाँबरदार हो (84) उन्होंने कहा: हमने अल्लाह पर भरोसा किया,

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۙ وَنَجِّنَا

ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ितना न बनाइए (85) और अपनी रहमत से

بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ

हमको काफ़िर लोगों से निजात दीजिए (86) और हमने मूसा (अलै०) और उसके भाई

اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ

की तरफ़ वह्य की कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुक़र्रर

بُيُوۡتًا وَّاجۡعَلُوۡا بُيُوۡتَكُمۡ قِبۡلَةً وَّاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ ؕ

कर लो और अपने उन घरों को क़िबला बनाओ और नमाज़ क़ायम करो,

وَبَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوۡسٰى رَبَّنَاۤ اِنَّكَ

और अहले ईमान को ख़ुशख़बरी दे दो (87) और मूसा (अलै०) ने कहा : ऐ हमारे रब! आपने

اٰتَيۡتَ فِرۡعَوۡنَ وَمَلَاَهٗ زِيۡنَةً وَّاَمۡوَالًا فِى الۡحَيٰوةِ

फिरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में रौनक़ और माल

الدُّنۡيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِكَ ۚ رَبَّنَا

दिया है, ए हमारे रब! इस लिए कि वे आपकी राह से लोगों को भटकाएं, ऐ हमारे रब!

اطۡمِسۡ عَلٰٓى اَمۡوَالِهِمۡ وَاشۡدُدۡ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ

उनके माल को ग़ारत कर दीजिए और उनके दिलों को सख़्त कर दीजिए कि

فَلَا يُؤۡمِنُوۡا حَتّٰى يَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِيۡمَ ﴿٨٨﴾

वे ईमान न लाएं यहाँ तक कि दर्दनाक अज़ाब को देख लें (88)

قَالَ قَدۡ اُجِيۡبَتۡ دَّعۡوَتُكُمَا فَاسۡتَقِيۡمَا وَلَا

(अल्लाह ने) कहाः तुम दोनों की दुआ क़ुबूल की गई, अब तुम दोनों जमे रहो और उन

تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيۡلَ الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزۡنَا

लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते (89) और हमने बनी इस्राईल को

بِبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ الۡبَحۡرَ فَاَتۡبَعَهُمۡ فِرۡعَوۡنُ

समुंदर पार करा दिया तो फिरऔन और उसके लशकर ने उनका

وَجُنُوۡدُهٗ بَغۡيًا وَّعَدۡوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَاۤ اَدۡرَكَهُ الۡغَرَقُ

पीछा किया सरकशी और ज़्यादती की ग़र्ज से, यहाँ तक कि जब फिरऔन डूबने लगा

قَالَ اٰمَنۡتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِىۡۤ اٰمَنَتۡ بِهٖ

तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद नहीं मगर वह जिसपर

بَنُوۡۤا اِسۡرَآءِيۡلَ وَاَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿٩٠﴾ آٰلۡـٰٔنَ

बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ (90) (उसे जवाब दिया गया) अब ईमान लाता है

وَقَدۡ عَصَيۡتَ قَبۡلُ وَكُنۡتَ مِنَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿٩١﴾

हालाँकि इससे पहले तू नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था (91)

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ

पस आज हम तेरी लाश को बचाएंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए

اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا

निशानी बने, और बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल

لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ

रहते हैं (92) और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना

صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا

दिया और उनको पाकीज़ा चीज़ें खाने के लिए दीं, फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ नहीं किया

حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ

मगर उस वक़्त जबकि उनके पास इल्म आ चुका था, यक़ीनन आपका रब क़ियामत के दिन उनके दरमियान

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ

उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में वे इख़्तिलाफ़ करते रहे (93) पस अगर आपको

كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِيْنَ

उस चीज़ के बारे में शक है जो हमने आपकी तरफ़ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लीजिए

يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ

जो आपसे पहले किताब पढ़ रहे हैं, बेशक यह आप पर हक़

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ

आया है आपके रब की तरफ़ से पस आप शक करने वालों में से न बनें (94)

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

और आप उन लोगों में शामिल न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है

فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ

वरना आप नुक़सान उठाने वालों में से हो जाओगे (95) बेशक जिन लोगों पर

عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ ۙ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ

आपके रब की बात पूरी हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएंगे (96) चाहे उनके पास सारी निशानियाँ

كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْلَا

आजाएं जब तक कि वे दर्दनाक अज़ाब को सामने आता न देख लें (97) पस क्यों न हुआ कि

ع ١٠/١٤

منزل ٣

كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ

कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान लाना उसको नफ़ा देता यूनुस (अलै०) की

يُوْنُسَ ۭ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ

क़ौम के सिवा, जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की ज़िंदगी में

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝٩٨ وَلَوْ

रुसवाई का अज़ाब टाल दिया और उनको एक मुद्दत तक ज़िंदगी का लुत्फ़ उठाने दिया (98) और अगर

شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۭ

आपका रब चाहता तो ज़मीन पर जितने लोग हैं सबके सब ईमान ले आते,

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٩٩

फिर क्या आप लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएं (99)

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ

और किसी शख़्स के लिए मुमकिन नहीं कि वे अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर ईमान ला सके,

وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝١٠٠

और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते (100)

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَا

कह दीजिए कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसे देखो, और निशानियाँ

تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠١

और डरावे उन लोगों को फ़ायदा नहीं पहुँचाते जो ईमान नहीं लाते (101)

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ

वे तो बस उस तरह के दिन का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुज़रे हुए

قَبْلِهِمْ ۭ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝١٠٢

लोगों को पेश आए, कह दीजिए कि इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ (102)

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا

फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उनको जो ईमान लाए, इसी तरह हमारा ज़िम्मे है कि

عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣ ع قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ

हम ईमान वालों को बचा लेंगे (103) कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम

كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ

मेरे दीन के मुताल्लिक़ शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ

इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा; बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ

يَتَوَفّٰىكُمْ ۚۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ۙ

जो तुमको वफ़ात देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से रहूँ (104)

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

और यह कि अपना रुख़ यकसू होकर (उस) दीन की तरफ़ कर लेना, और कभी मुशरिकों

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

में से न होना (105) और अल्लाह के अलावा उनको न पुकारो जो तुमको

لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا

न नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान, फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यक़ीनन ज़ालिमों

مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

में से हो जाओगे (106) और अगर अल्लाह तुमको किसी तकलीफ़ में पकड़ ले

فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ

तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसको दूर कर सके, और अगर वे तुमको कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई

لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ

रोकने वाला नहीं, वह अपना फ़ज़्ल अपने बंदों में से जिसको चाहता है देता है, और वह

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (107) कह दीजिए कि ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ़ से

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ

तुम्हारे पास हक़ आ गया है, पस जो हिदायत क़ुबूल कर लेगा और वह अपने ही लिए

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَمَآ

करेगा और जो भटकेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा, और मैं

اَنَاْ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ؕ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ

तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हूँ (108) और आप उसकी पैरवी करें जो आप पर वह्य की जाती है

ع ١٢

وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝١٠٩ ع

और सब्र कीजिए, यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है (109)

सूरह हूद मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर चंद आयतें (12,17 और 114) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (123) आयतें और (10) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (52) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (11) नम्बर पर है और सूरह यूनुस के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (9567) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1100) कलिमात हैं

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ

अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है जिसकी आयतें पहले मुहकम की गईं फिर एक दाना और ख़बीर हस्ती की

حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝١ۙ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ

तरफ़ से उनकी तफ़सील की गई (1) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो, मैं तुम्हारी जानिब

مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۝٢ۙ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ

उसकी तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ (2) और यह कि तुम अपने रब से मुआफ़ी चाहो

تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ

और उसकी तरफ़ पलट आओ, वह तुमको एक मुद्दत तक अच्छा लुत्फ़ उठाने का मौक़ा

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ

देगा, और हर ज़्यादा के मुस्तहिक़ को अपनी तरफ़ से ज़्यादा अता करेगा, और अगर

تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝٣

तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (3)

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤

तुम सबको अल्लाह की तरफ़ पलटना है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (4)

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا

देखो ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छुप जाएं, ख़बरदार!

حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

जब वे कपड़ों से अपने आपको ढाँपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٥

और जो वे ज़ाहिर करते हैं, वह दिलों की बात तक जानने वाला है (5)

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ

और ज़मीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो, और वह जानता है

مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾

जहाँ कोई ठहरता है और जहाँ वह सोंपा जाता है, सब कुछ एक खुली किताब में मोजूद है (6)

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ

और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छ: दिनों में

اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ

पैदा किया और उसका अर्श पानी पर था; ताकि तुमको आज़माए कि कौन तुम में से

اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْ

अच्छा काम करता है, और अगर आप कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए

بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

जाओगे तो मुनकिरीन कहते हैं कि यह तो एक खुला हुआ

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى

जादू है (7) और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सज़ा को

اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ

रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज़ उसको रोके हुए है, सुन लो! जिस दिन

يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا

वह उनपर आ पड़ेगा तो उनसे फेरा न जाएगा और उनको घेर लेगी वह चीज़ जिसका वे

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

मज़ाक़ उड़ा रहे थे (8) और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाज़ते हैं

ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾ وَلَئِنْ

फिर उससे उसको महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्रा बन जाता है (9) और अगर

اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

किसी तकलीफ़ के बाद जो उसको पहुँची थी, उसको हम नेमत से नवाज़ते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें

السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ

मुझ से दूर हो गईं (और) वह इतराने वाला, अकड़ने वाला बन जाता है (10) मगर जो लोग

صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

सब्र करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं, उनके लिए बख़्शिश है

وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى

और बड़ा अज्र है (11) कहीं ऐसा न हो कि आप उस चीज़ का कुछ हिस्सा छोड़ दें जो आपकी तरफ़ वह्य

اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

की गई है और आप इस बात पर तंग दिल हों कि वे कहते हैं कि इसपर कोई ख़ज़ाना

عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ

क्यों नहीं उतारा गया या इसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया, आप तो सिर्फ़ एक डराने वाले हो

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿۱۲﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ

और अल्लाह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है (12) क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को घड़ लिया है,

قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ

कह दीजिए कि तुम भी ऐसी ही दस मनघड़त सूरतें बनाकर ले आओ और अल्लाह के

اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۳﴾

सिवा जिसको बुला सको बुला लो अगर तुम सच्चे हो (13)

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ

पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से

اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम हुक्म को मानते हो (14)

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ

जो लोग दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत चाहते है हम उनके आमाल का बदला

اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾

दुनिया ही में दे देते हैं और उसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती (15)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا

यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ

النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

नहीं है, उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था वह बरबाद हुआ और ख़राब हो गया जो कुछ उन्होंने

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ

कमाया था (16) भला एक शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से एक दलील पर है उसके बाद अल्लाह की तरफ़ से

شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ط

उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और उससे पहले मूसा (अलै०) की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी,

اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ط وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ

ऐसे ही लोग उसपर ईमान लाते हैं, और जमाअ़तों में से जो कोई उसका इनकार करे

فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ج فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ق اِنَّهُ الْحَقُّ

तो उसके वादे की जगह आग है, पस आप उसके बारे में शक में ना पड़ें, यह हक़ है

مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

आपके रब की तरफ़ से मगर अकसर लोग नहीं मानते (17)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ط اُولٰٓئِكَ

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ घड़े, ऐसे लोग

يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ

अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं

الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ج اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى

जिन्होंने अपने रब पर झूठ घड़ा था, सुन लो! अल्लाह की लानत है

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ لا الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

ज़ालिमों के ऊपर (18) उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ط وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

और उसमें कजी (टेढ़ापन) ढूँडते हैं, और यही लोग आख़िरत के मुनकिर हैं (19)

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا

वे लोग ज़मीन में अल्लाह को बेबस करने वाले नहीं और ना

كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ م يُضٰعَفُ

अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उनपर दोगुना

لَهُمُ الْعَذَابُ ط مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا

अज़ाब होगा, वे न सुन सकते हैं और न

منزل ٣

وقف لازم

كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ

देखते हैं (20) ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ

और वह सब कुछ उनसे खो गया जो उन्होंने घड़ रखा था (21) इसमें शक नहीं कि यही लोग

فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

आख़िरत में सबसे ज़्यादा घाटे में रहेंगे (22) जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَأَخْبَتُوْٓا إِلٰى رَبِّهِمْ ۙ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ

और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिज़ी की वही लोग जन्नत

الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ

वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे (23) उन दोनों गिरोहों की मिसाल ऐसी है

كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने वाला और सुनने वाला, क्या ये दोनों बराबर

مَثَلًا ؕ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى

हो जाएंगे, क्या तुम ग़ौर नहीं करते (24) और हमने नूह (अलै०) को उसकी क़ौम की तरफ़

قَوْمِهٖٓ ۫ إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾ ۙ أَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا

भेजा कि मैं तुमको खुला हुआ डराने वाला हूँ (25) यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत

اللّٰهَ ؕ إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ

न करो, मैं तुमपर एक दर्दनाक अज़ाब के दिन का अंदेशा रखता हूँ (26) उसकी क़ौम के

الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ إِلَّا

सरदारों ने जिन्होंने इनकार किया था कहा कि हम तो तुमको बस अपने जैसा एक आदमी

بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ

देखते हैं और हम नहीं देखते कि किसी ने तुम्हारे ताबेदारी की हो सिवाए उनके जो हम में

أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ

बेहैसियत और ना समझ लोग हैं, और हम नहीं देखते कि तुमको हमारे ऊपर कोई बड़ाई

فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ

हासिल हो; बल्कि हम तो तुमको झूठा ख़्याल करते हैं (27) नूह (अलै०) ने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम! बताओ

إِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰنِىْ رَحْمَةً

अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूँ और उसने मुझपर अपने पास से

مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ

रहमत भेजी है मगर वह तुमको नज़र ना आई तो क्या हम उसको तुमपर चिपका सकते हैं जबकि तुम

لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ

उससे बेज़ार हो (28) और ऐ मेरी क़ौम! मैं इसपर तुमसे कुछ माल नहीं मांगता,

إِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا۠ بِطَارِدِ الَّذِيْنَ

मेरा अज्र तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है और मैं हरगिज़ उनको अपने से दूर करने वाला नहीं जो

اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

ईमान लाए हैं, उन लोगों को अपने रब से मिलना है, मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग जिहालत में

تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ

मुबतला हो (29) और ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद करेगा अगर मैं उन लोगों को

طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ

धुत्कार दूँ, क्या तुम ग़ौर नहीं करते (30) और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास

خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ

अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब की ख़बर रखता हूँ और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ,

وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ

और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हक़ीर हैं उनको अल्लाह कोई भलाई

اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّىْۤ

नहीं देगा, अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है, अगर मैं ऐसा कहूँ

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا

तो मैं ही ज़ालिम हूँगा (31) उन्होंने कहा: ऐ नूह! तुमने हमसे झगड़ा किया

فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ

और बहुत झगड़ा कर लिया पस अब वह चीज़ ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो अगर तुम

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ

सच्चे हो (32) नूह (अलै०) ने फ़रमाया: उसको तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर

منزل ٣

شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ
वह चाहेगा और तुम उसके क़ाबू से बाहर न जा सकोगे (33) और मेरी नसीहत तुमको फ़ायदा नहीं देगी
اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ
अगर मैं तुमको नसीहत करना चाहूँ जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुमको
اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۟ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ؕ اَمْ
गुमराह कर दे, वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ तुमको लोटकर जाना है (34) क्या वे
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ
कहते हैं कि पैग़म्बर ने इसको घड़ लिया है? कह दीजिए कि अगर मैंने इसको घड़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है
وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ؑ وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ
और जो जुर्म तुम कर रहे हो उससे मैं बरी हूँ (35) और नूह (अलै॰) की तरफ़ वह्य की गई कि
اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ
अब आपकी क़ौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवाए उसके जो ईमान ला चुका,
فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ۚ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ
पस आप उन कामों पर ग़मगीन न हों जो वे कर रहे हैं (36) और हमारे रूबरू
بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ
और हमारे हुक्म से आप कश्ती बनाइए और ज़ालिमों के हक़ में मुझ से बात
ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۟ وَكُلَّمَا
न कीजिए, बेशक ये लोग डूबने वाले हैं (37) और नूह (अलै॰) कश्ती बनाने लगे, और जब कभी
مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ
उनकी क़ौम के कोई सरदार उनके पास से गुज़रते वे उनका मज़ाक़ उड़ाते, नूह (अलै॰) कहते :
اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا
अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम पर एक दिन हंसेंगे जैसे तुम हम पर
تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ؕ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ
हंसते हो (38) तुम जल्द ही जान लोगे कि वे कौन हैं जिन पर वह अज़ाब आता है
يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا
जो उसको रुसवा करदे और उसपर वह अज़ाब उतरता है जो हमेशा रहेगा (39) यहाँ तक कि जब

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ

हमारा हुक्म आ पहुँचा और तूफ़ान उबल पड़ा तो हमने (नूह से) कहा कि हर क़िस्म के जानवरों का

كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ

एक एक जोड़ा कश्ती में रख लो और अपने घर वालों को भी सिवाए उन लोगों के जिनके बारे में पहले

الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾

कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी, और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे (40)

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ

और नूह (अलै०) ने कहा कि कश्ती में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी,

اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ

बेशक मेरा रब बख़्शने वाला, मेहरबान है (41) और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दरमियान उनको लेकर

كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ

चलने लगी, और नूह (अलै०) ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था कि

يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾

ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत रह (42)

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ

उसने कहा: मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा, नूह (अलै०) ने कहा कि

لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ

आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिसपर अल्लाह रहम करे, और दोनों के दरमियान

بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ

मौज हाइल हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया (43) और कहा गया कि ऐ ज़मीन!

ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ

अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! थम जा, और पानी सुखा दिया गया और मामले का फ़ैसला

الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ

हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया गया कि दूर हो

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

ज़ालिमों की क़ौम (44) और नूह (अलै०) ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब! मेरा बेटा

٥ امام حفص کے نزدیک میم کے زبر اور را کا امالہ کے ساتھ پڑھا جائے گا۔

الربع

مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ

मेरे घर वालों में से है, और बेशक आपका वादा सच्चा है और आप सबसे बड़े

الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ

हाकिम हैं (45) अल्लाह ने कहाः ऐ नूह! वह तुम्हारे घरवालों में से नहीं, उसके

عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ

काम ख़राब हैं, पस मुझसे उस चीज़ के लिए सवाल न करो जिसका तुम्हें इल्म नहीं,

اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ

मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि तुम नादानों में से न बनो (46) नूह (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे रब!

اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ

मैं आपकी पनाह चाहता हूँ कि आपसे वह चीज़ माँगूं जिसका मुझे इल्म नहीं,

وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

और अगर आप मुझे मुआफ़ न करें और मुझ पर रहम न फ़रमाएं तो मैं बरबाद हो जाऊँगा (47)

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ

कहा गया कि ऐ नूह! उतरो हमारी तरफ़ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ तुम पर

وَعَلٰٓي اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۭ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ

और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं, और (उनसे ज़ुहूर में आने वाले) गिरोह कि हम उनको फ़ायदा देंगे फिर

يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ

उनको हमारी तरफ़ से एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा (48) ये ग़ैब की ख़बरें

الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ

हैं जिनको हम आपकी तरफ़ वह्य कर रहे हैं, इससे पहले ना आप उनको जानते थे

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ

और न आपकी क़ौम, पस सब्र करें बेशक नेक अंजाम डरने वालों

لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ ع وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ

के लिए है (49) और आद की तरफ़ हमने उनके भाई हूद (अलै०) को भेजा, उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम!

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुमने महज़ झूठ

مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ

घड़ रखे हैं (50) ऐ मेरी क़ौम! मैं इसपर तुमसे कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र तो

اِلَّا عَلَى الَّذِىْ فَطَرَنِىْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾ وَيٰقَوْمِ

उसी पर है जिसने मुझे पैदा किया है, क्या तुम समझते नहीं (51) और ऐ मेरी क़ौम!

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ

अपने रब से माफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ पलटो, वह तुम्हारे ऊपर ख़ूब बारिशें

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

बरसाएगा और तुम्हारी क़ुव्वत पर मज़ीद क़ुव्वत का इज़ाफ़ा करेगा, और तुम मुजरिम हो कर मुँह न

مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا

फेर लो (52) उन्होंने कहा कि ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम

نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ

तुम्हारे कहने से अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं हैं, और हम हरगिज़ तुमको मानने वाले

بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا

नहीं हैं (53) हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार

بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ

पड़ गई है, हूद (अलै०) ने कहा: मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ

مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ لا مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ

उनसे जिनको तुम शरीक करते हो (54) उसके सिवा, पस तुम सब मिल कर मेरे ख़िलाफ़ तदबीर करो फिर

لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ

मुझको मोहलत न दो (55) मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है,

مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى

कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो, बेशक मेरा रब

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ

सीधी राह पर है (56) अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो मैंने तुमको वह पैग़ाम पहुँचा दिया जिसको देकर

اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ

मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था, और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (ख़लीफ़ा) बनाएगा

وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾

और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है (57)

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने अपनी रहमत से बचा लिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ

بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾

ईमान लाए थे और हमने उनको एक सख़्त अज़ाब से बचा लिया (58)

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ

और ये आद थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों का इनकार किया और उसके रसूलों को न माना

وَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ

और सरकश और मुख़ालिफ़ की बात की इत्तिबा की (59) और उनके पीछे लानत लगा दी गई

الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا

इस दुनिया में और क़ियामत के दिन, सुन लो! आद ने अपने रब का

رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿٦٠﴾ ع وَاِلٰى ثَمُوْدَ

इनकार किया, सुन लो! दूरी है आद के लिए जो हूद की क़ौम थी (60) और समूद की तरफ़

اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

हमने उनके भाई सालेह (अलै॰) को भेजा, उसने कहा: ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

कोई तुम्हारा माबूद नहीं, उसी ने तुमको ज़मीन से बनाया

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ

और उसमें तुमको आबाद किया, पस उससे मुआफ़ी चाहो फिर उसकी तरफ़ रुजूअ करो,

اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ

बेशक मेरा रब क़रीब है, क़ुबूल करने वाला है (61) उन्होंने कहा कि ऐ सालेह! इससे पहले हमको

فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ

तुमसे उम्मीद थी, क्या तुम हमको उनकी इबादत से रोकते हो

مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ

जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो उसके बारे में

اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ

हमको सख़्त शुब्हा है, और हम बड़े शक में हैं (62) उसने कहा ऐ मेरी क़ौम! बताओ अगर मैं

عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ

अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील पर हूँ और उसने मुझको अपने पास से रहमत दी है तो मुझको

يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ

अल्लाह से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ, पस तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा

غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ

सिवाए नुक़सान के (63) और ऐ मेरी क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक

اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا

निशानी है, पस उसको छोड़ दो कि वह अल्लाह की ज़मीन में खाए और उसको कोई तकलीफ़

بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا

न पहुँचाओ वरना बहुत जल्द तुमको अज़ाब पकड़ लेगा (64) फिर उन्होंने उसके पांव काट डाले,

فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ط ذٰلِكَ

तब सालेह (अलै०) ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फ़ायदा उठालो, यह एक

وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا

वादा है जो झूठा न होगा (65) फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से

صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ

सालेह को औ उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की

خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ط اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

रुसवाई से (महफ़ूज़ रखा), बेशक आपका रब ही ताक़तवर, ज़बरदस्त है (66)

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ

और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक हौलनाक आवाज़ ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे

دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ط اَلَآ

अपने घरों में औंधे पड़े रह गए (67) जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं, सुनो!

اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ط اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ ع

समूद ने अपने रब का इनकार किया, सुनो! फटकार है समूद के लिए (68)

منزل ٣

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا

और इब्राहीम (अलै॰) के पास हमारे फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी लेकर आए (और) कहा कि

سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

तुम पर सलामती हो, इब्राहीम (अलै॰) ने कहा: तुम पर भी सलामती हो, फिर देर न गुज़री कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आए (69)

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ

फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो खटक गए और दिल ही दिल में

مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى

उनसे डरे, उन्होंने कहा कि डरो नहीं हम लूत (अलै॰) की क़ौम की तरफ़

قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ؕ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

भेजे गए हैं (70) और इब्राहीम (अलै॰) की बीवी खड़ी थी वह हंस पड़ी, पस हमने उसको इसहाक़ की

بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ

ख़ुशख़बरी दी और इसहाक़ के आगे याक़ूब की (71) उसने कहा:

يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا۠ عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ

ऐ ख़राबी! क्या मुझे बच्चा होगा हालाँकि मैं तो बुढ़िया हूँ और यह मेरे शौहर भी बूढ़े हैं,

اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ

यह तो एक अजीब बात है (72) फ़रिश्तों ने कहा: क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर

اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ

ताज्जुब करती हो, इब्राहीम के घर वालो! तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हैं,

اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ

बेशक अल्लाह निहायत क़ाबिले तारीफ़, बड़ी शान वाला है (73) फिर जब इब्राहीम (अलै॰) का ख़ौफ़

الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ

दूर हुआ और उनको ख़ुशख़बरी मिली तो वे हमसे क़ौमे लूत के बारे में बहस

لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

करने लगे (74) बेशक इब्राहीम बड़े बुर्दबार, नर्म दिल और रुजूअ करने वाले थे (75)

يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ

ऐ इब्राहीम! उसको छोड़ो, बेशक तुम्हारे रब का हुक्म

رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾

आ चुका है और उन पर ऐसा अज़ाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाता (76)

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ

और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अलै०) के पास पहुँचे तो वे घबराए और उनके आने से

بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَآءَهٗ

दिल तंग हुआ, उसने कहाः आजका दिन बड़ा सख़्त है (77) और उसकी क़ौम के लोग

قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

दोड़ते हुए उसके पास आए, और वे पहले से बुरे काम

السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىْ هُنَّ اَطْهَرُ

कर रहे थे, लूत (अलै०) ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी बेटियाँ हैं वे तुम्हारे लिए ज़्यादा

لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِىْ ضَيْفِىْ ؕ اَلَيْسَ

पाकीज़ा हैं, पस तुम अल्लाह से डरो और मुझको मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो, क्या तुम में

مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا

कोई भला आदमी नहीं है (78) उन्होंने कहाः तुम जानते हो कि हमको तुम्हारी बेटियों से

فِىْ بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾

कुछ ग़र्ज़ नहीं और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं (79)

قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِىْٓ اِلٰى رُكْنٍ

लूत (अलै०) ने कहाः काश! मेरे पास तुमसे मुक़ाबले की क़ुव्वत होती या मैं किसी मज़बूत सहारे की

شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا

पनाह लेता (80) फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ लूत! हम आपके रब के भेजे हुए हैं, वे हरगिज़ आप तक

اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

पहुँच न सकेंगे, पस आप अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहे निकल जाइए और तुम में से कोई

مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ

मुड़कर न देखेगा, मगर आपकी बीवी कि उसपर वही कुछ गुज़रने वाला है जो उन लोगों पर

اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ

गुज़रेगा, उनके लिए सुबह का वक़्त मुक़र्रर है, क्या सुबह

بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

क़रीब नहीं (81) फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उस बस्ती को उलट पलट कर दिया

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾

और उसपर कंकरीले पत्थर बरसाए जो तह ब तह थे (82)

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۗ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

आपके रब के पास से निशान लगाए हुए, और वह बस्ती उन ज़ालिमों से कुछ

بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ

दूर नहीं (83) और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब (अलै०) को भेजा, उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम!

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ وَلَا تَنْقُصُوا

अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और नाप तोल में

الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ

और वज़न करने में कमी न करो, मैं तुमको अच्छे हाल में देख रहा हूँ और में तुमपर एक घेर लेने वाले

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا

दिन के अज़ाब से डरता हूँ (84) और ऐ मेरी क़ौम! नाप तौल को

الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

और वज़न को पूरा करो इंसाफ़ के साथ, और लोगों को उनकी चीज़ें

اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

घटाकर न दो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो (85)

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ

जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो,

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ

और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान नहीं हूँ (86) उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़

تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ

तुमको यह सिखाती है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा किया करते थे या अपने माल में

اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ۗ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾

अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तसर्रुफ़ करना छोड़ दें बस तुम ही तो एक अक़्लमंद और नेक चलन आदमी हो (87)

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ

शुऐब (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील पर हूँ

وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ

और उसने अपनी जानिब से मुझको अच्छा रिज़्क़ भी दिया, और में नहीं चाहता कि मैं ख़ुद वही काम करूँ

اِلٰى مَآ اَنْهٰكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا

जिससे मैं तुमको रोक रहा हूँ, मैं तो सिर्फ़ इस्लाह चाहता हूँ जहाँ तक

اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

हो सके, और मुझे तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही से मिलेगी, उसी पर मैंने भरोसा किया है

وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۸﴾ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ

और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूँ (88) और ऐ मेरी क़ौम ऐसा न हो कि मेरी ज़िद करके तुमपर

يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ

वह आफ़त आ पड़े जो क़ौमे नूह या क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह पर

قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿۸۹﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا

आई थी, और लूत की क़ौम तो तुमसे दूर भी नहीं (89) और अपने रब से

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا

मुआफ़ी मांगो फिर उसकी तरफ़ पलट आओ, बेशक मेरा रब मेहरबान है, मुहब्बत वाला है (90) उन्होंने कहा कि

يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ

ऐ शुऐब! जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता और हम तो देखते हैं कि तुम

فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ

हम में कमज़ोर हो, और अगर तुम्हारी बिरादरी न होती तो हम तुमको पत्थर मार मार कर हलाक कर देते और तुम हम पर

عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿۹۱﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ

कुछ भारी नहीं हो (91) शुऐब (अलै०) ने कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज़्यादा

اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا

भारी है और अल्लाह को तुमने पीठ पीछे डाल दिया है, बेशक मेरे रब के

تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۹۲﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

क़ाबू में है जो कुछ तुम करते हो (92) और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपने तरीक़े पर काम किए जाओ

اِنِّىْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ

और मैं अपने तरीक़े पर काम करता रहूँगा, जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा कि किस के ऊपर रुसवा करने वाला अज़ाब

يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ

आता है और कौन झूठा है, और इंतिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वालों

رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ

में हूँ (93) और जब हमारा हुक्म आया हमने शुऐब (अलै०) और जो उसके साथ ईमान

اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا

लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको कड़क ने

الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ كَاَنْ

पकड़ लिया पस वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए (94) गोया कि

لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ

कभी उनमें बसे ही न थे, सुन लो! फटकार है मदयन को जैसे फटकार हुई थी

ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ

समूद को (95) और हमने मूसा (अलै०) को अपनी निशानियों और वाज़ेह सनद के साथ

مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ

भेजा (96) फिरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, फिर वे फ़िरऔन के हुक्म पर चले;

وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ

हालाँकि फ़िरऔन का कोई हुक्म दुरुस्त न था (97) क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के

الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾

आगे होगा और उनको आग पर पहुँचाएगा, और कैसा बुरा घाट है जिसपर वे पहुँचेंगे (98)

وَاُتْبِعُوْا فِىْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ

और इस दुनिया में उनके पीछे लानत होगी और क़ियामत के दिन भी, कैसा बुरा इनाम है जो

الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ

उनको मिला (99) ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम आपको सुना रहे हैं,

مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ

उनमें से बअज़ अब तक क़ायम हैं और बअज़ मिट गईं (100) और हमने उनपर ज़ुल्म किया बल्कि

ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ

उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया, फिर जब आपके रब का हुक्म आ गया

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ

तो उनके वे माबूद उनके कुछ काम न आए जिनको वे अल्लाह के सिवा

رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ

पुकारते थे, और उन्होंने उनके हक़ में बरबादी के सिवा कुछ नहीं बढ़ाया (101) और आपके रब की पकड़

رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ

ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता है, बेशक उसकी पकड़

اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ

बड़ी दर्दनाक और सख़्त है (102) इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो आख़िरत के

عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ

अज़ाब से डरें, वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे

وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ

और वह हाज़िरी का दिन होगा (103) और हम उसको एक मुद्दत तक के लिए टाल रहे हैं

مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾ ؕ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ

जो मुक़र्रर है (104) जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाज़त के बग़ैर गुफ़्तगू न कर सकेगी,

فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي

पस उनमें कुछ बद नसीब होंगे और कुछ ख़ुशनसीब (105) पस जो लोग बदनसीब हैं वे

النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا

आग में होंगे, उनको वहाँ चीख़ना है और दहाड़ना (106) वे उसमें रहेंगे जब तक

دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ

आसमान और ज़मीन क़ायम हैं मगर जो आपका रब चाहे, बेशक

رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا

आपका रब कर डालता है जो चाहता है (107) और जो लोग ख़ुशनसीब हैं

فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन

وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿۱۰۸﴾

क़ायम हैं मगर जो आपका रब चाहे, बख़्शिश है बे इंतिहा (108)

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ

पस आप उन चीज़ों से शक में न रहें जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं, ये तो बस उसी तरह

اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ

इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप दादा इबादत कर रहे थे, और हम उनका हिस्सा

نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

पूरा पूरा देंगे बग़ैर किसी कमी के (109) और हमने मूसा (अलै०) को

الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

किताब दी फिर उसमें फूट पड़ गई, और अगर आपके रब की तरफ़ से पहले ही एक बात

مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ

न आ चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और ये लोग उसके बारे में (अभी तक) सख़्त क़िस्म के

مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ

शक में पड़े हुए हैं (110) और यक़ीनन आपका रब हर एक को उसके आमाल का

اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾ فَاسْتَقِمْ

पूरा बदला देगा, वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं (111) पस आप जमे रहिए

كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ

जैसा कि आपको हुक्म हुआ है और वे भी जिन्होंने आपके साथ तौबा की है और हद से न बढ़ो, बेशक

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ

वह देख रहा है जो तुम करते हो (112) और उनकी तरफ़ न झुको जिन्होंने

ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

ज़ुल्म किया वरना तुमको आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा

مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ

कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे (113) और नमाज़ क़ायम कीजिए दिन के दोनों

النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ

हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में, बेशक नेकियाँ दूर करती हैं

ع ۹

منزل ۳

السَّيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَاصْبِرْ فَاِنَّ

बुराईयों को, यह एक नसीहत है उन लोगों के लिए जो नसीहत मानें (114) और सब्र करें, बेशक

اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ

अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाए नहीं करता (115) पस क्यों न ऐसा हुआ कि

الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ

तुमसे पहले की क़ौमों में ऐसे अहले ख़ैर होते जो लोगों को ज़मीन में

الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ

फ़साद करने से रोकते, ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया,

وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا

और ज़ालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे

مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ

मुजरिम थे (116) और आपका रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक़ तबाह कर दे;

وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ

हालाँकि उसके रहने वाले इस्लाह करने वाले हों (117) और अगर आपका रब चाहता तो लोगों को

النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾

एक ही उम्मत बना देता मगर वे हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे (118)

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ

सिवाए उनके जिन पर आपका रब रहम फ़रमाए, और उसने इसी लिए उनको पैदा किया है, और आपके

كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इंसानों से इकटठे

اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ

भर दूँगा (119) और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज़ें आपको

الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاۗءَكَ فِيْ هٰذِهِ

सुना रहे हैं जिससे आपके दिल को मज़बूत करें और उसमें तुम्हारे पास

الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ

हक़ आया है और मोमिनों के लिए नसीहत और याद्दहानी (120) और जो लोग

لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ ۖ إِنَّا

ईमान नहीं लाए उनसे कह दीजिए कि तुम अपने तरीक़े पर अमल करते रहो और हम (अपने तरीक़े पर)

عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوا ۚ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلَّهِ غَيْبُ

अमल कर रहे हैं (121) और इंतिज़ार करो हम भी मुंतज़िर हैं (122) और आसमानों और ज़मीन की

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ

छुपी बात अल्लाह के पास है और तमाम उमूर उसी की तरफ़ लौटाए जाते हैं, पस आप उसी की इबादत करें

وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾ ع

और उसी पर भरोसा रखें, और आपका रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो (123)

ع ١٤

सूरह यूसुफ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर चंद आयतें (1, 2, 3 और 7) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (111) आयतें और (12) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (53) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (12) नम्बर पर है और सूरह हूद के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (7166) हुरूफ़ हैं — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ — इसमें (1600) कलिमात हैं

الٓرٰ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ

अलिफ़-लाम-रा, ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं (1) हमने उसको अरबी

قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ

क़ुरआन बनाकर उतारा है; ताकि तुम समझो (2) हम आपको बेहतरीन

عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا

वाक़िआ सुनाते हैं उस क़ुरआन की बदौलत जो हमने आपकी तरफ़

الْقُرْآنَ ۖ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٣﴾

वह्य किया, वरना इससे पहले बेशक आप बेख़बरों में से थे (3)

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ

जब यूसुफ़ (अलै०) ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा जान! मैंने ख़्वाब में ग्यारह

كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ﴿٤﴾

सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, मैंने उनको देखा कि वे मुझको सज्दा कर रहे हैं (4)

قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ

उसके वालिद ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! तुम अपना यह ख़्वाब अपने भाईयों को न सुनाना

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ

कि वे तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करने लगें, बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ

مُّبِيْنٌ ۝٥ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ

दुश्मन है (5) और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको मुंतख़ब करेगा और तुमको बातों की

تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى

हक़ीक़त तक पहुँचना सिखाएगा और तुम पर और आले याक़ूब पर अपनी नेमत

اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ

पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ (अलै॰) पर

اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦ ع لَقَدْ

अपनी नेमत पूरी कर चुका है, यक़ीनन तुम्हारा रब जानने वाला, हिकमत वाला है (6) हक़ीक़त यह है कि

كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝٧ اِذْ

यूसुफ़ (अलै॰) और उसके भाईयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं (7) जब

قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ

उसके भाईयों ने आपस में कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे वालिद को हमसे ज़्यादा मेहबूब हैं; हालाँकि हम

عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۨ ۝٨ اقْتُلُوْا

एक पूरी जमात हैं, यक़ीनन हमारे वालिद एक खुली हुई ग़लती में मुब्तला हैं (8) यूसुफ़ को

يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ

क़त्ल कर दो या उसको किसी जगह फैंक दो; ताकि तुम्हारे वालिद की तवज्जोह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाए

وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ

और उसके बाद तुम बिलकुल ठीक हो जाना (9) उनमें से एक कहने वाले ने

مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ

कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल न करो, अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसको किसी

يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠

अंधे कुएं मैं डाल दो, कोई राह चलता क़ाफ़िला उसको निकाल ले जाएगा (10)

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا

उन्होंने वालिद से कहा: ऐ हमारे अब्बा जान! क्या बात है कि आप यूसुफ़ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते;

ع ٢

منزل ٣

لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ

हालाँकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं (11) कल उसको हमारे साथ भेज दीजिए,ख़ूब खाए और खेले

وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۱۲﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا

और हम उसके निगेहबान हैं (12) वालिद ने कहाः मैं इससे ग़मगीन होता हूँ कि तुम उसको

بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳﴾

ले जाओ और मुझको अंदेशा है कि उसको कोई भेड़िया खा जाए जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो (13)

قَالُوْا لَىِٕنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا

उन्होंने कहा कि अगर उसको भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरी जमात हैं तो हम बड़े ख़सारे वाले

لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ

साबित होंगे (14) फिर जब वे उसको ले गए और यह तय कर लिया कि उसको एक अंधे

فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ

कुएं में डाल दें, और हमने यूसुफ़ (अलै०) को वह्य की कि तुम उनको उनका यह काम

هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً

जताओगे और वे (तुमको) न जानेंगे (15) और वे शाम को वालिद के पास

يَّبْكُوْنَ ﴿۱۶﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا

रोते हुए आए (16) उन्होंने कहाः ऐ हमारे अब्बा! हम दोड़ का मुक़ाबला करने लगे और यूसुफ़ को हमने

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ

अपने सामाने के पास छोड़ दिया फिर उसको भेड़िया खा गया, और आप हमारी बात का यक़ीन न

لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ

करेंगे चाहे हम सच्चे हों (17) और वे यूसुफ़ की क़मीज़ पर झूठा ख़ून

كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ

लगा कर ले आए, वालिद ने कहाः नहीं; बल्कि तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है, अब सब्र ही

جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَجَآءَتْ

बेहतर है, और जो बात तुम ज़ाहिर कर रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूँ (18) और एक क़ाफ़िला

سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى

आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा, उसने अपना डोल लटकाया, उसने कहाः ख़ुशख़बरी हो!

هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا

यह तो एक लड़का है और उसको तिजारत का माल समझ कर महफ़ूज़ कर लिया, और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वे

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ

कर रहे थे (19) और उन्होंने उसको थोड़ी सी क़ीमत (यानी) चंद दिरहम के बदले बेच दिया,

وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ

और वे उससे बे रग़बत थे (20) और अहले मिस्र में से जिस शख़्स ने

مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ

उसको ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा कि उसको अच्छी तरह रखो, उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफ़ीद हो

اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۫

या हम उसको बेटा बना लें, और इस तरह हमने यूसुफ़ (अलै०) को उस मुल्क में जगह दी

وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى

और ताकि हम उसको बातों की तावील सिखाएं, और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब

اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ

रहता है लेकिन अकसर लोग नहीं जानत (21) और जब वे अपनी भरपूर जवानी को पहुँचा

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

तो हमने उसको हुक्म और इल्म अता किया, और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं (22)

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ

और यूसुफ़ (अलै०) जिस औरत के घर में थे, वह उसको फुसलाने लगी और एक रोज़ दरवाज़े

الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ

बंद कर दिए और बोली कि आजा, यूसुफ़ ने कहाः अल्लाह की पनाह! वह मेरा

رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

आक़ा है उसने मुझे अच्छी तरह रखा है, बेशक ज़ालिम लोग कभी कामयाबी नहीं पाते (23)

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ

और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता अगर वह अपने रब की दलील न देख लेता,

كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْۤءَ وَالْفَحْشَاۤءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ

ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें, बेशक वह

عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ

हमारे चुने हुए बंदों में से था (24) और दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे और औरत ने यूसुफ़ का कुर्ता

مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ

पीछे से फाड़ दिया, और दोनों ने उसके शौहर को दरवाज़े पर पाया, औरत बोली कि जो तेरी घर वाली के साथ

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ

बुराई का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उसे क़ैद किया जाए या उसे सख़्त अज़ाब

اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ

दिया जाए (25) यूसुफ़ (अलै॰) ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की, और औरत के कुनबे वालों में से

مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ

एक गवाही देने वाले ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है

وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ

और वह झूठा है (26) और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हो

دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ

तो औरत झूठी है और वह सच्चा हैं (27) फिर जब अज़ीज़ ने देखा कि उसका कुर्ता

قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ

पीछे से फटा है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है, और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी

عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ

होती हैं (28) यूसुफ़! इससे दरगुज़र करो, और ऐ औरत! तू अपनी ग़लती की

لِذَنْۢبِكِ ۚۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِئِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ

मुआफ़ी माँग, बेशक तू ही ख़ताकार थी (29) और शहर की औरतों में चर्चा

فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ

होने लगा कि अज़ीज़ की बीवी अपने (जवान) ग़ुलाम को अपना मतलब निकालने के लिए बहलाने फुसलाने में लगी रहती है,

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

उसके दिल में यूसुफ़ की मुहब्बत बैठ गई है, हमारे ख़्याल में तो वह खुली गुमराही में है (30)

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ

फिर जब उसने उनका फ़रेब सुना तो उसने उनको बुला भेजा और उनके लिए

منزل ٣
ع ١٣ ٣

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا

एक मजलिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक एक छुरी दी

وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ

और यूसुफ़ से कहा कि तुम इनके सामने आओ, फिर जब औरतों ने उसको देखा तो वे दंग रह गईं और उन्होंने अपने हाथ

اَيْدِيَهُنَّ ز وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ

काट डाले और उन्होंने कहाः हाशा लिल्लाह (अल्लाह की पनाह) यह आदमी नहीं यह तो कोई

اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ

बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है (31) उस वक़्त अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने कहाः यही है वह जिसके बारे में तुम मुझे तअने दे रही थीं,

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ

मैंने हर चंद उससे अपने मतलब निकालना चाहा लेकिन यह बाल बाल बचा रहा, और जो कुछ मैं उससे

يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

कह रही हूँ अगर ना करेगा तो यक़ीनन क़ैद कर दिया जाएगा और बेशक यह बहुत ही बेइज़्ज़त होगा (32)

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ

यूसुफ़ (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे रब! क़ैदख़ाना मुझको उस चीज़ से ज़्यादा पसंद है जिसकी तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं,

وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ

और अगर आपने उनके फ़रेब को मुझसे दूर ना किया तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा और नादानों में से

الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ

हो जाऊँगा (33) पस उसके रब ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उनके फ़रेब को उससे दूर कर दिया,

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا

बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है (34) फिर निशानियाँ देख लेने के बाद उन लोगों की समझ में आया

الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ع وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ

कि एक मुद्दत के लिए उसको क़ैद करदें (35) और क़ैदखाने में उसके साथ दो और नौजवान

فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ

दाख़िल हुए, उनमें से एक ने (एक रोज़) कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ,

وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ

और दूसरे ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ जिसमें से

منزل ٣

ع ٤

الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

चिड़ियाँ खा रही हैं, हमको इसकी ताबीर बताओ, हम देखते हैं कि तुम नेक लोगों में से हो (36)

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ

यूसुफ़ (अलै०) ने कहा: जो खाना तुमको मिलता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन ख़्वाबों की

قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ

ताबीर बता दूँगा, यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, मैंने

تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

उन लोगों के मज़हब को छोड़ा जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वे लोग आख़िरत के

كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ

मुनकिर हैं (37) और मैंने अपने बुज़ुर्गों इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब (अलै०) के मज़हब की

وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

पैरवी की, हमको यह हक़ नहीं कि हम किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहराएं,

ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है हमारे ऊपर और सब लोगों के ऊपर मगर अकसर

النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ

लोग शुक्र नहीं करते (38) ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या जुदा जुदा

مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ؕ مَا تَعْبُدُوْنَ

कई माबूद बेहतर हैं या अकेला ज़बरदस्त अल्लाह? (39) तुम उसके सिवा नहीं पूजते

مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ

मगर कुछ नामों को जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने

اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ

उसकी कोई सनद नहीं उतारी, इक़्तिदार सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है, उसने हुक्म दिया है कि

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

उसके सिवा किसी की इबादत न करो, यही सीधा दीन है मगर बहुत से

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا

लोग नहीं जानते (40) ऐ मेरे क़ैदख़ाने के साथियो! तुम में से एक

فَيَسۡقِىۡ رَبَّهٗ خَمۡرًا‌ ۚ وَاَمَّا الۡاٰخَرُ فَيُصۡلَبُ فَتَاۡكُلُ الطَّيۡرُ

अपने आक़ा को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है उसको सूली दी जाएगी फिर परिंदे उसके सर में से

مِنۡ رَّاۡسِهٖ‌ ؕ قُضِىَ الۡاَمۡرُ الَّذِىۡ فِيۡهِ تَسۡتَفۡتِيٰنِ ؕ ﴿۴۱﴾

खाएंगे, उस मामले का फ़ैसला हो गया जिसके बारे में तुम पूछ रहे थे (41)

وَقَالَ لِلَّذِىۡ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنۡهُمَا اذۡكُرۡنِىۡ عِنۡدَ رَبِّكَ ۖ

और यूसुफ़ ने उस शख़्स से कहा जिसके बारे में उसका गुमान था कि वह बच जाएगा कि अपने आक़ा के पास मेरा ज़िक्र करना,

فَاَنۡسٰٮهُ الشَّيۡطٰنُ ذِكۡرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِى السِّجۡنِ بِضۡعَ

फिर शैतान ने उसको अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया, पस वह क़ैदख़ाने में कई

سِنِيۡنَ ﴿۴۲﴾ وَقَالَ الۡمَلِكُ اِنِّىۡۤ اَرٰى سَبۡعَ بَقَرٰتٍ

साल ठहरा रहा (42) और बादशाह ने कहा कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि सात मोटी

سِمَانٍ يَّاۡكُلُهُنَّ سَبۡعٌ عِجَافٌ وَّسَبۡعَ سُنۡۢبُلٰتٍ خُضۡرٍ

गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं, और सात हरी बालियाँ हैं

وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ‌ ؕ يٰۤاَيُّهَا الۡمَلَاُ اَفۡتُوۡنِىۡ فِىۡ رُءۡيَاىَ اِنۡ

और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो! मेरे ख़्वाब की ताबीर मुझे बताओ अगर तुम

كُنۡتُمۡ لِلرُّءۡيَا تَعۡبُرُوۡنَ ﴿۴۳﴾ قَالُوۡۤا اَضۡغَاثُ اَحۡلَامٍ‌ ۚ وَمَا

ख़्वाब की ताबीर देते हो (43) वे बोले: ये ख़्याली ख़्वाब हैं, और हमको

نَحۡنُ بِتَاۡوِيۡلِ الۡاَحۡلَامِ بِعٰلِمِيۡنَ ﴿۴۴﴾ وَقَالَ الَّذِىۡ نَجَا

ऐसे ख़्वाबों की ताबीर मालूम नहीं (44) उन दो क़ैदियों में से जो शख़्स

مِنۡهُمَا وَادَّكَرَ بَعۡدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمۡ بِتَاۡوِيۡلِهٖ

बच गया था और उसको एक मुददत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊँगा

فَاَرۡسِلُوۡنِ ﴿۴۵﴾ يُوۡسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيۡقُ اَفۡتِنَا فِىۡ

पस मुझको (यूसुफ़ के पास) जाने दो (45) ऐ सच्चे यूसुफ़! मुझे इस ख़्वाब का मतलब बताइए कि

سَبۡعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاۡكُلُهُنَّ سَبۡعٌ عِجَافٌ وَّسَبۡعِ

सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं, और सात बालियाँ

سُنۡۢبُلٰتٍ خُضۡرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّىۡۤ اَرۡجِعُ اِلَى النَّاسِ

हरी हैं और दूसरी सात सूखी; ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊँ

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ

ताकि वे जान लें (46) यूसुफ़ (अलै०) ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे,

فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا

पस जो फ़सल तुम काटो उसको उसकी बालियों में रहने दो मगर थोड़ा सा

تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ

जो तुम खाओ (47) फिर उसके बाद सात सख़्त साल आएंगे,

يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾

उस ज़माने में वह ग़ल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक़्त के लिए जमा करोगे, सिवाए थोड़ा सा जो तुम महफ़ूज़ कर लोगे (48)

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ

फिर उसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर बारिश बरसेगी

وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ ع وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا

और वे उसमें रस निचोड़ेंगे (49) और बादशाह ने कहा कि उसको मेरे पास लाओ, फिर जब

جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ

क़ासिद उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ

मामला क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे, मेरा रब तो उन औरतों के फ़रेब से

عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ

ख़ूब वाक़िफ़ है (50) बादशाह ने पूछाः तुम्हारा क्या माजरा है जब तुमने यूसुफ़ को फुसलाने की

نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ قَالَتِ

कोशिश की थी, उन्होंने कहाः हाशा लिल्लाह! (अल्लाह की पनाह) हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई, अज़ीज़ की

امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْــٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ

बीवी ने कहा कि अब हक़ खुल गया, मैंने ही उसको फुसलाने की

نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ

कोशिश की थी और वह यक़ीनन सच्चा है (51) यह इस लिए कि (अज़ीज़े मिस्र) जान ले कि मैंने उसके पीठ पीछे

لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَاۗىِٕنِيْنَ ﴿٥٢﴾

उसकी ख़्यानत नहीं की, और बेशक अल्लाह ख़्यानत करने वालों की चाल को चलने नहीं देता (52)

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِىۡ‌ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوۡٓءِ

और मैं अपने नफ़्स की बराअत नहीं करता, नफ़्स तो बुराई ही सिखाता है

اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىۡ‌ؕ اِنَّ رَبِّىۡ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ

मगर यह कि मेरा रब रहम फ़रमाए, बेशक मेरा रब बख़्शने वाला, मेहरबान है (53) और बादशाह ने

الۡمَلِكُ ائۡتُوۡنِىۡ بِهٖۤ اَسۡتَخۡلِصۡهُ لِنَفۡسِىۡ‌ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ

कहा कि उसको मेरे पास लाओ मैं उसको ख़ास अपने लिए रखूँगा, फिर जब यूसुफ़ (अलै०) ने उससे बात की

قَالَ اِنَّكَ الۡيَوۡمَ لَدَيۡنَا مَكِيۡنٌ اَمِيۡنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ

तो बादशाह ने कहा: आज से हमारे पास तुम्हारा बड़ा मर्तबा होगा और तुमपर पूरा भरोसा किया जाएगा (54) यूसुफ़ (अलै०) ने कहा कि

اجۡعَلۡنِىۡ عَلٰى خَزَآٮِٕنِ الۡاَرۡضِ‌ۚ اِنِّىۡ حَفِيۡظٌ عَلِيۡمٌ ﴿۵۵﴾

मुझको मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दो, मैं निगेहबान हूँ और जानने वाला हूँ (55)

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوۡسُفَ فِى الۡاَرۡضِ‌ۚ يَتَبَوَّاُ مِنۡهَا

और इस तरह हमने यूसुफ़ (अलै०) को मुल्क में बा-इख़्तियार बना दिया, वे उसमें जहाँ चाहे

حَيۡثُ يَشَآءُ‌ؕ نُصِيۡبُ بِرَحۡمَتِنَا مَنۡ نَّشَآءُ‌ وَلَا نُضِيۡعُ

जगह बनाए, हम जिस पर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और हम नेकी

اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ

करने वालों का अज्र ज़ाए नहीं करते (56) और आख़िरत का अज्र कहीं ज़्यादा बढ़ कर है

اٰمَنُوۡا وَكَانُوۡا يَتَّقُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَجَآءَ اِخۡوَةُ يُوۡسُفَ

ईमान और तक़्वे वालों के लिए (57) और यूसुफ़ (अलै०) के भाई (मिस्र) आए

فَدَخَلُوۡا عَلَيۡهِ فَعَرَفَهُمۡ وَهُمۡ لَهٗ مُنۡكِرُوۡنَ ﴿۵۸﴾

फिर उसके पास पहुँचे, पस यूसुफ़ (अलै०) ने उनको पहचान लिया और उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहचाना (58)

وَلَمَّا جَهَّزَهُمۡ بِجَهَازِهِمۡ قَالَ ائۡتُوۡنِىۡ بِاَخٍ لَّكُمۡ

और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास

مِّنۡ اَبِيۡكُمۡ‌ۚ اَلَا تَرَوۡنَ اَنِّىۡۤ اُوۡفِى الۡكَيۡلَ وَاَنَا۠ خَيۡرُ

ले आना, तुम देखते नहीं हो कि मैं ग़ल्ला भी पूरा नाप कर देता हूँ और मैं बेहतरीन मेज़बानी

الۡمُنۡزِلِيۡنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنۡ لَّمۡ تَاۡتُوۡنِىۡ بِهٖ فَلَا كَيۡلَ لَكُمۡ

करने वाला भी हूँ (59) और अगर तुम उसको मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए

عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ

ग़ल्ला है और न तुम मेरे पास आना (60) उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके वालिद को

اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا

राज़ी करने की कोशिश करेंगे, और हमको यह काम करना है (61) और उसने अपने नोकरों से कहा कि उनका माल

بِضَاعَتَهُمْ فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا

उनकी बोरियों में रख दो; ताकि जब वे अपने घर को पहुँचें तो उसको

اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا

पहचान लें, शायद वे फिर वापस आएं (62) फिर जब वे अपने वालिद के पास

اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ

लौटे तो उन्होंने कहा कि ऐ हमारे अब्बा जान! हम से ग़ल्ला रोक दिया गया पस हमारे भाई (बिनयामीन) को

مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ

हमारे साथ जाने दीजिए कि हम ग़ल्ला लाएं और हम उसके निगहबान हैं (63) याकूब (अलै०) ने कहाः क्या मैं

اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ

उसके बारे में तुम्हारा वेसा ही ऐतबार करूँ जैसा इससे पहले उसके भाई के बारे में तुम्हारा ऐतबार कर चुका हूँ,

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا

पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है (64) और जब

فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ

उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उनको लौटा दी गई है,

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِىْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ

उन्होंने कहाः ऐ हमारे अब्बा जान! हम को और क्या चाहिए, यह हमारी पूंजी भी हमको लौटा दी गई है,

وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ

अब हम जाएंगे और अपने अहलो अयाल के लिए और ग़ल्ला लाएंगे और अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे और एक ऊँट का

ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى

बोझ ग़ल्ला और ज़्यादा लाएंगे, यह ग़ल्ला तो थोड़ा है (65) याकूब (अलै०) ने कहाः मैं उसको तुम्हारे साथ हरगिज़ न भेजूंगा जब तक

تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِىْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ

तुम मुझसे अल्लाह के नाम पर यह अहद न करो कि तुम उसको ज़रूर मेरे पास ले आओगे सिवाए इसके

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى

कि तुम सब घर जाओ, फिर जब उन्होंने उसको अपना पक्का क़ौल दे दिया तो उसने कहा कि जो कुछ हम कह रहे हैं

مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ

उसपर अल्लाह निगेहबान है (66) और याकूब (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरे बेटो! तुम सब एक ही दरवाज़े से

بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ

दाख़िल न होना बल्कि अलग अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना, और मैं

اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ

तुमको अल्लाह की किसी बात से बचा नहीं सकता, हुक्म तो बस अल्लाह ही का है,

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾

मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए (67)

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

और जब वे दाख़िल हुए जहाँ से उनके वालिद ने उनको हिदायत की थी, वह उनको

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ

बचा नहीं सकता था अल्लाह की किसी बात से, वह बस याकूब (अलै०) के दिल में एक ख़्याल था

نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ

जो उसने पूरा किया, बेशक वह हमारी दी हुई तालीम की वजह से साहिबे-इल्म था

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ ع وَلَمَّا دَخَلُوْا

मगर अकसर लोग नहीं जानते (68) और जब वे यूसुफ़ (अलै०)

عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا

के पास पहुँचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा, कहा कि मैं तुम्हारा

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا

भाई यूसुफ़ हूँ पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं (69) फिर जब

جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ

उनका सामान तैयार करवा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के सामान में

اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ

रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ए क़ाफ़िले वालो! तुम लोग

لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

चोर हो (70) उन्होंने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहाः तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है (71)

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ

उन्होंने कहाः हम बादशाह का प्याला नहीं पा रहे हैं, और जो उसको लाएगा उसके लिए एक ऊँट भर ग़ल्ला है

وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا

और मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ (72) उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! तुमको मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में

لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا

फ़साद करने के लिए नहीं आए और न हम कभी चोर थे (73) उन्होंने कहाः

فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ

अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सज़ा क्या है? (74) उन्होंने कहाः उसकी सज़ा यह है

مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

कि जिस शख़्स के सामान में मिले पस वही शख़्स अपनी सज़ा है, हम लोग ज़ालिमों को ऐसी ही

نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ

सज़ा दिया करते है (75) फिर उसने तलाशी लेना शुरू किया उनके सामान की उसके (छोटे) भाई के

اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ

सामान से पहले फिर उसके भाई के थेले से उस (प्याले) को निकाला, इस तरह

كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ

हमने यूसुफ़ (अलै०) के लिए तदबीर की, वह बादशाह के क़ानून की रो से अपने भाई को

الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ

नहीं ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे, हम जिसके दरजात चाहते हैं बुलंद कर देते हैं

وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ

और हर इल्म वाले से बढ़ कर एक इल्म वाला है (76) उन्होंने कहाः अगर यह चोरी करे

فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ

तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है, पस यूसुफ़ (अलै०) ने इस बात को

فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ

अपने दिल में रखा और उसको उनपर ज़ाहिर नहीं किया, उसने अपने दिल में कहा कि तुम ख़ुद ही बुरे

مَكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا

लोग हो और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसको ख़ूब जानता हैं (77) उन्होंने कहा कि ऐ

الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا

अज़ीज़! इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है तो आप इसकी जगह हम में से किसी

مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ

और को रख लें, हम आपको बहुत नेक देखते हैं (78) उसने कहा: अल्लाह की

اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ

पनाह कि हम किसी को पकड़ें सिवाए उसके जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है,

اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْــَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا

इस सूरत मैं हम ज़रूर ज़ालिम ठहरेंगे (79) जब वे उससे ना उम्मीद हो गए तो अलग होकर आपस में

نَجِيًّا ۭ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ

मशवरा करने लगे, उनके बड़े ने कहा: क्या तुमको मालूम नहीं कि तुम्हारे वालिद ने तुमसे

قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ

अल्लाह के नाम पर पक्का इक़रार लिया और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में जो ज़्यादती

مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ

तुम कर चुके हो वह भी तुमको मालूम है, पस मैं इस ज़मीन से हरगिज़ नहीं टलूँगा

حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ

जब तक कि मेरे वालिद मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह मेरे लिए कोई फ़ैसला न फ़रमादे, और वह सबसे बेहतर

الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ

फ़ैसला करने वाला है (80) तुम लोग अपने वालिद के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे अब्बा जान!

اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا

आपके बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमको मालूम हुई,

وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْــَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ

हम कुछ ग़ैब की हिफ़ाज़त करने वाले न थे (81) और आप उस बस्ती के लोगों से पूछ लीजिए

كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا

जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िले से भी पूछ लीजिए जिसके साथ हम आए हैं, और हम

ع ١١

منزل ٣

لَصٰدِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ

बिलकुल सच्चे हैं (82) वालिद ने कहा: बल्कि तुमने अपने दिल में एक बात बना ली है,

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِىْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ

पस मैं सब्र करूँगा, उम्मीद है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा,

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۸۳﴾ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ

बेशक वही जानने वाला, हिकमत वाला है (83) और उसने उनसे रुख़ फेर लिया और कहा:

يٰاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

हाय यूसुफ़! और ग़म से उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं और वह

فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۸۴﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ

ग़म को दबाए हुए था (84) उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ़ ही की याद में

حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿۸۵﴾

रहोगे यहाँ तक कि घुल जाओगे या हलाक हो जाओगे (85)

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّىْ وَحُزْنِىْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ

उसने कहा: मैं अपनी परेशानी और अपने ग़म का शिकवा सिर्फ़ अल्लाह से करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बातें

اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ يٰبَنِىَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ

जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (86) ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की

يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَاْيْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ

तलाश करो और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो, बेशक

لَا يَاْيْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ فَلَمَّا

अल्लाह की रहमत से सिर्फ़ मुनकिर ही ना उम्मीद होते हैं (87) फिर जब

دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا

वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा: ऐ अज़ीज़! हमको और हमारे घर वालों को बड़ी तकलीफ़

الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

पहुँच रही है और हम थोड़ी पूंजी लेकर आए हैं तो आप हमको पूरा ग़ल्ला दे दीजिए

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾

और हमको सदक़ा भी दे दीजिए, बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को उसका बदला देता है (88)

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ

उसने कहाः क्या तुमको ख़बर है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया जबकि तुमको

جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا

समझ न थी? (89) उन्होंने कहाः क्या सच मुच तुम ही यूसुफ़ हो? उसने कहाः हाँ मैं

يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ

यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हमपर फ़ज़्ल फ़रमाया, जो शख़्स डरता है

وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

और सब्र करता है तो अल्लाह नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाए नहीं करता (90)

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِــِٕيْنَ ﴿٩١﴾

भाईयों ने कहाः अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आपको हमारे ऊपर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ग़लती पर थे (91)

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۭ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۡ

यूसुफ़ (अलै॰) ने कहाः आज तुमपर कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तुमको मुआफ़ करे

وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا

और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है (92) तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ

فَاَلْقُوْهُ عَلٰي وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ

और इसको मेरे वालिद के चेहरे पर डाल दो उनकी आँखों की रोशनी लौट आएगी, और तुम अपने घर वालों के साथ

اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ

मेरे पास आ जाओ (93) और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) चला तो उनके वालिद ने (कनआन) में कहा कि

اِنِّىْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾

अगर तुम मुझको बुढ़ापे में बेहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू मेहसूस कर रहा हूँ (94)

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّآ اَنْ

लोगों ने कहाः अल्लाह की क़सम! तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़्याल में मुबतला हो (95) पस जब

جَاۗءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰي وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ

ख़ुशख़बरी देने वाला आया तो उसने कुर्ता याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया पस उसकी आँखों की रोशनी वापस आ गई,

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا

उसने कहाः क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिब से वे बातें जानता हूँ

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا

जो तुम नहीं जानत (96) यूसुफ़ के भाईयों ने कहा: ऐ हमारे अब्बा जान! हमारे गुनाहों की मुआफ़ी की दुआ कीजिए, बेशक

كُنَّا خٰطِئِيْنَ ﴿۹۷﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ

हम ख़तावार थे (97) याकूब (अलै०) ने कहा: मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की दुआ करूँगा, बेशक

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۹۸﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى

वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (98) पस जब वे सब यूसुफ़ (अलै०) के पास पहुँचे तो उसने

اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

अपने वालिदेन को अपने पास बिठाया और कहा कि मिस्र में इंशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा तो)

اٰمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾ ؕ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ

अमन चैन से रहा (99) और उसने अपने वालिदेन को तख़्त पर बैठाया और सब उसके लिए सज्दे में

سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ

झुक गए, और यूसुफ़ (अलै०) ने कहा: ऐ अब्बा जान! यह है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले

قَبْلُ ز قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ

देखा था, मेरे रब ने उस को सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि

اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ

उसने मुझे क़ैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहाँ लाया बाद में इसके

بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ

कि शैतान ने मेरे और मेरे भाईयों के दरमियान फ़साद डाल दिया था, बेशक

رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۰۰﴾

मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, यक़ीनन वही जानने वाला, हिकमत वाला है (100)

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ

ऐ मेरे रब! आपने मुझको हुकूमत में से हिस्सा दिया और मुझको ख़्वाबों की

تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قف

ताबीर करना सिखाया, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले!

اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا

आप ही मेरा काम बनाने वाले हैं दुनिया में भी और आख़िरत में भी मुझको फ़रमाँबरदारी की हालत में वफ़ात दीजिए

وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ

और मुझको नेक बंदों में शामिल फ़रमाईए (101) यह ग़ैब की ख़बरों में से है

نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ

जो आप पर वह्य कर रहे हैं, और आप उस वक़्त उनके पास मोजूद न थे जब यूसुफ़ के भाईयों ने अपना इरादा पक्का किया और वे

وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ

तदबीरें कर रहे थे (102) और आप ख़्वाह कितना ही चाहो लेकिन अकसर लोग ईमान लाने वाले

بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ

नहीं हैं (103) और आप इसपर उनसे कोई मुआवज़ा नहीं मांगते, यह तो सिर्फ़

هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ ع وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي

एक नसीहत है तमाम जहान वालों के लिए (104) और आसमानों और ज़मीन में

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا

कितनी ही निशानियाँ हैं जिनपर से उनका गुज़र होता रहता है और वे उनपर ध्यान

مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ

नहीं करते (105) और अकसर लोग जो अल्लाह को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी

مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ

ठहराते हैं (106) क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उनपर अज़ाबे इलाही की

عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ

कोई आफ़त आ पड़े या अचानक उनपर क़ियामत आ जाए और वे उससे

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ

बेख़बर हो (107) कह दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ

عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ

समझ बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है और मैं

اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا

मुशरिकों में से नहीं हूँ (108) और हमने आपसे पहले मुख़तलिफ़ बस्ती वालों में से

رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे, हम उनकी तरफ़ वह्य करते थे, क्या ये लोग ज़मीन में

ع ١١ ٥

منزل ٣

وقف النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ١٢

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे

مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ

पहले थे, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं,

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا

क्या तुम समझते नहीं (109) यहाँ तक कि जब पैग़म्बर मायूस हो गए और वह ख़्याल करने लगे कि

أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ

उनसे झूठ कहा गया था तो उनको हमारी मदद आ पहुँची, पस निजात मिली जिसको

نَشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾

हमने चाहा, और मुजरिम लोगों से हमारा अज़ाब टाला नहीं जा सकता (110)

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ

उनके क़िस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत है,

مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي

यह कोई घड़ी हुई बात नहीं बल्कि तसदीक़ है उस चीज़ की जो इससे पहले

بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً

मोजूद है और तफ़सील है हर चीज़ की और हिदायत और रहमत है

لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾ ع

ईमान वालों के लिए (111)

منزل ٣ — ع ٢

सूरह रअ़्द मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (43) आयात और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (96) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (13) नम्बर पर है और सूरह मुहम्मद के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3506) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ	इसमें (855) कलिमात हैं

الٓمٓرٰ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ ۗ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ

अलिफ़-लाम-मीम-रा, ये किताबे इलाही की आयतें हैं, और जो कुछ आपके ऊपर आपके रब की

مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾

तरफ़ उतरा है वह हक़ है मगर अकसर लोग नहीं मानते (1)

اَللّٰهُ الَّذِیۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَهَا ثُمَّ

अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलंद किया बग़ैर ऐसे सतून के जो तुम्हें नज़र आएं, फिर वह

اسۡتَوٰی عَلَی الۡعَرۡشِ وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ

अपने अर्श पर क़ायम हुआ और उसने सूरज और चाँद को एक क़ानून का पाबंद बनाया,

كُلٌّ یَّجۡرِیۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ یُفَصِّلُ

हर एक एक मुक़र्रर वक़्त पर चलता है, अल्लाह ही हर काम का इंतिज़ाम करता है, वह निशानियों को

الۡاٰیٰتِ لَعَلَّكُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّكُمۡ تُوۡقِنُوۡنَ ﴿۲﴾ وَهُوَ الَّذِیۡ

खोल खोल कर बयान करता है; ताकि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन करो (2) और वही है जिसने

مَدَّ الۡاَرۡضَ وَجَعَلَ فِیۡهَا رَوَاسِیَ وَاَنۡهٰرًا ؕ وَمِنۡ

ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और नदियाँ रख दीं और हर क़िस्म के

كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیۡهَا زَوۡجَیۡنِ اثۡنَیۡنِ یُغۡشِی

फलों के जोड़े उसमें पैदा किए, वह रात को दिन से

الَّیۡلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۳﴾

छुपा देता है, बेशक इन चीज़ों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करें (3)

وَفِی الۡاَرۡضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنۡ اَعۡنَابٍ

और ज़मीन में मुख़्तलिफ़ टुकड़े एक दूसरे से लगते लगाते हैं और अंगूरों के बाग़ात हैं

وَّزَرۡعٌ وَّنَخِیۡلٌ صِنۡوَانٌ وَّغَیۡرُ صِنۡوَانٍ یُّسۡقٰی بِمَآءٍ

और खेत हैं और खजूरों के दरख़्त हैं टहनी वाले हैं और बअज़ ऐसे हैं जो बग़ैर टहनी के हैं, सब एक ही पानी

وَّاحِدٍ ۟ وَنُفَضِّلُ بَعۡضَهَا عَلٰی بَعۡضٍ فِی الۡاُكُلِ ؕ

पिलाए जाते हैं फिर भी हम एक को एक पर फलों में बरतरी देते हैं,

اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۴﴾ وَاِنۡ تَعۡجَبۡ

इसमें अक़्लमंदों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (4) और अगर आप ताज्जुब करो

فَعَجَبٌ قَوۡلُهُمۡ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیۡ خَلۡقٍ

तो ताज्जुब के क़ाबिल उनकी यह बात है कि जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से

جَدِیۡدٍ ؕ۬ اُولٰٓئِكَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ ۚ وَاُولٰٓئِكَ

पैदा किए जाएंगे, ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इनकार किया और ये वे लोग हैं

الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

जिनकी गरदनों में तौक़ पड़े हुए हैं, वे आग वाले लोग हैं,

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٥ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ

वे उसमें हमेशा रहेंगे (5) वे भलाई से पहले बुराई के लिए

قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۭ

जल्दी कर रहे हैं; हालाँकि उनसे पहले मिसालें गुज़र चुकी हैं,

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ

और आपका रब लोगों के ज़ुल्म के बावजूद उनको मुआफ़ करने वाला है

وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٦ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ

और बेशक आपका रब सख़्त सज़ा देने वाला है (6) और जिन लोगों ने इनकार किया

كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ اِنَّمَآ

वे कहते हैं कि इस शख़्स पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, आप तो सिर्फ़

اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧ ع اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا

ख़बरदार कर देने वाले हो, और हर क़ौम के लिए एक राह बताने वाला है (7) अल्लाह जानता है हर मादा के

تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ

हमल को और जो कुछ रिहमों में घटता और बढ़ता है उसको भी,

وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨ عٰلِمُ الْغَيْبِ

और हर चीज़ का उसके यहाँ एक अंदाज़ा है (8) वह पोशीदा और ज़ाहिर को

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩ سَوَاۗءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ

जानने वाला है, सबसे बड़ा और (सबसे) बुलंद व बाला है (9) तुम में से कोई शख़्स चुपके से

الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ

बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छुपा हुआ हो और जो दिन में चल रहा हो

وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝١٠ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ

अल्लाह के लिए सब बराबर हैं (10) हर शख़्स के आगे और पीछे उसके

وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

निगराँ हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देख भाल कर रहे हैं, बेशक अल्लाह

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوۡمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوۡا مَا بِاَنۡفُسِهِمۡ ؕ وَاِذَاۤ

किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वे उसको न बदल डालें जो उनके जी में है, और जब

اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوۡمٍ سُوۡٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ

अल्लाह किसी क़ौम पर कोई आफ़त लाना चाहता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उसके मुक़ाबले में

دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ الَّذِىۡ يُرِيۡكُمُ الۡبَرۡقَ خَوۡفًا

कोई उनका मददगार नहीं (11) वही है जो तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है

وَّطَمَعًا وَّيُنۡشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۚ ﴿۱۲﴾ وَيُسَبِّحُ

और उम्मीद भी और वही है जो पानी से लदे हुए बादल को उठाता है (12) और बिजली की गर्ज़

الرَّعۡدُ بِحَمۡدِهٖ وَالۡمَلٰۤئِكَةُ مِنۡ خِيۡفَتِهٖ ۚ وَيُرۡسِلُ

उसकी हम्द के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से, और वह बिजलियाँ

الصَّوَاعِقَ فَيُصِيۡبُ بِهَا مَنۡ يَّشَآءُ وَهُمۡ يُجَادِلُوۡنَ

भेजता है फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग अल्लाह के बारे में

فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيۡدُ الۡمِحَالِ ؕ ﴿۱۳﴾ لَهٗ دَعۡوَةُ الۡحَقِّ ؕ

झगड़ते हैं; हालाँकि वह ज़बरदस्त है कुव्वत वाला है (13) उसी को पुकारना हक़ है,

وَالَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا يَسۡتَجِيۡبُوۡنَ لَهُمۡ

जो लोग औरों को उसके सिवा पुकारते हैं वे उन (की पुकार) का कुछ भी जवाब

بِشَىۡءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيۡهِ اِلَى الۡمَآءِ لِيَبۡلُغَ فَاهُ وَمَا

नहीं देते मगर जैसे कोई शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाए हुए हो कि वह उसके मुँह में पड़ जाए; हालाँकि

هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الۡكٰفِرِيۡنَ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾

वह पानी कभी उसके मुँह में पहुँचने वाला नहीं, उन मुनकिरों की जितनी पुकार है सब गुमराही में है (14)

وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا

और आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब अल्लाह ही को सज्दा करते हैं ख़ुशी से या मजबूरी से

وَّظِلٰلُهُمۡ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ۩ ﴿۱۵﴾ السجدة قُلۡ مَنۡ رَّبُّ

और उनके साए भी सुबह और शाम (15) कह दीजिए कि आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلۡ اَفَاتَّخَذۡتُمۡ مِّنۡ

और ज़मीन का रब कौन है? कह दीजिए कि अल्लाह है, कहिए कि क्या फिर भी तुमने उसके सिवा

دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ

ऐसे मददगार बना रखे हैं जो ख़ुद अपनी ज़ात के नफ़ा और नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते,

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى

कहिए कि क्या अंधा और आँखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं, या क्या अंधेरा और उजाला

الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا

दोनों बराबर हो जाएंगे, क्या उन्होंने अल्लाह के साथ ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने भी पैदा किया

كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ

जैसा कि अल्लह ने पैदा किया फिर पैदाइश उनकी नज़र मैं मुश्तबह हो गई, कह दीजिए कि अल्लाह हर चीज़ का

كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

पैदा करने वाला है और वही है अकेला, ज़बरदस्त (16) अल्लाह ने आसमान से पानी

مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ

उतारा फिर नाले अपनी मिक़दार के मुवाफ़िक़ बह निकले, फिर सैलाब ने उभरते

زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ

झाग को उठा लिया और उसी तरह का झाग उन चीज़ों में भी उभर आता है जिनको लोग ज़ेवर

حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ

या सामान बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं, इस तरह अल्लाह हक़

الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۙ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ

और बातिल की मिसाल बयान करता है, पस झाग तो सूख कर रह जाता है

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ

और जो चीज़ इंसानों को नफ़ा पहुँचाने वाली है वह ज़मीन में ठहर जाती है, अल्लाह इस तरह

يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿۱۷﴾ؕ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ

मिसालें बयान करता है (17) जिन लोगों ने अपने रब की पुकार पर लब्बैक कहा उनके लिए

الْحُسْنٰى ؕؔ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا

भलाई है, और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना अगर उनके पास वह सब कुछ हो

فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ

जो ज़मीन में है और उसके बराबर और भी तो वे सब अपनी निजात के लिए दे डालें,

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

उन लोगों का हिसाब सख़्त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा,

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

और वह कैसा बुरा ठिकाना है (18) जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ आपके रब की तरफ़ से

مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا

आप पर उतारा गया है वह हक़ है क्या वह उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है, नसीहत तो अक़्ल वाले लोग ही

الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ

क़बूल करते हैं (19) वे लोग जो अल्लाह के अहद को पूरा करते हैं और उसके अहद को

الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ

नहीं तोड़ते (20) और जो उसको जोड़ते हैं जिसको अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म

يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

दिया है और वे अपने रब से डरते हैं और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं (21)

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

और जिन्होंने अपने रब की रिज़ा के लिए सब्र किया और नमाज़ क़ायम की

وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

और हमारे दिए हुए में से छुप कर और खुले आम ख़र्च किया और जो बुराई को

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

भलाई से दफ़ा करते हैं, आख़िरत का घर उन्हीं लोगों के लिए है (22)

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ

हमेशा रहने वाले बाग़ात जिन में वे दाख़िल होंगे और वे भी जो उसके अहल बनेंगे उनके बाप दादा

وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ

और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से, और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके

مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

पास आएंगे (23) (कहेंगे कि) तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया, पस क्या ही

عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ

ख़ूब है यह आख़िरत का घर (24) और जो लोग अल्लाह के अहद को मज़बूत करने के बाद

مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ

तोड़ते हैं और उसको काटते हैं जिसको अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है

وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ

और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, ऐसे लोगों पर अल्लाह की लानत है और उनके लिए

سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

बुरा घर है (25) अल्लाह जिसको चाहता है रोज़ी ज़्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है

وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ

तंग कर देता है, और वह दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हैं; हालाँकि आख़िरत के

الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

मुक़ाबले में दुनिया निहायत (हक़ीर) पूंजी है (26) और जिन्होंने इनकार किया वे कहते हैं कि

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ

इस शख़्स पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई, कह दीजिए कि बेशक अल्लाह जिसको चाहता है

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ

गुमराह कर देता है और वह अपना रास्ता उसी को दिखाता है जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो (27) वे लोग जो

اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ

ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं, सुन लो! अल्लाह की याद

اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

ही से दिलों को इतमीनान हासिल होता है (28) जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने

الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ

अच्छे काम किए उनके लिए ख़ुशख़बरी है और अच्छा ठिकाना है (29) इसी तरह हमने आपको भेजा है

فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ

एक उम्मत में जिससे पहले भी बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं; ताकि आप लोगों को वह पैग़ाम सुना दें

الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ۭ قُلْ

जो हमने आपकी तरफ़ भेजा है, और वह मेहरबान अल्लाह का इनकार कर रहे हैं, कह दीजिए कि

هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ

वही मेरा रब है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़

مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ

मुझे लौटना है (30) और अगर ऐसा क़ुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे

قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ

ज़मीन टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते (तब भी वे ईमान न लाते); बल्कि सारा इख़्तियार

الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ

अल्लाह ही के लिए है, क्या ईमान लाने वालों को इससे इतमीनान नहीं कि अगर

يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ

अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता, और इनकार करने वालों पर

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ

कोई न कोई आफ़त आती रहती है उनके आमाल की वजह से या उनकी बस्ती के क़रीब

قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कहीं नाज़िल होती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आजाए, यक़ीनन अल्लाह

لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ

वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता (31) और आपसे पहले भी रसूलों का

قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ

मज़ाक़ उड़ाया गया तो मैंने इनकार करने वालों को ढील दी फिर मैंने उनको पकड़ लिया, तो देखो

كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا

कैसी थी मेरी सज़ा (32) फिर क्या जो हर शख़्स से उसके अमल का हिसाब

كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ

करने वाला है, और लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं, कह दीजिए कि उनका नाम लो, क्या तुम

تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ

अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर दे रहे हो जिसको वह ज़मीन में नहीं जानता या तुम ऊपर ही ऊपर

الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا

बातें कर रहे हो; बल्कि इनकार करने वालों के लिए उनके धोखे ख़ूबसूरत बना दिए गए हैं और वे (सीधे) रास्ते

عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

से रोक दिए गए हैं, और अल्लाह जिसको गुमराह कर दे उसको कोई राह बताने वाला नहीं (33)

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ

उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी मैं भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो

اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ

बहुत सख़्त है और कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला नहीं (34) उस जन्नत की मिसाल

الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ

जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है कि ऐसी है कि उसके नीचे से नहरें बहती होंगी,

اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ

उसका फल और साया हमेशा रहेगा, यह अंजाम उन लोगों का है जो अल्लाह से डरे

وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

और मुनकिरों का अंजाम आग है (35) और जिन लोगों को हमने किताब दी थी

يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ

वे उस चीज़ पर ख़ुश हैं जो आप पर उतारी गई है, और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके बअज़ हिस्से का

بَعْضَهٗ ۭ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ

इनकार करते हैं, कह दीजिए कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक

بِهٖ ۭ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ

न ठहराऊँ, मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है (36) और इसी तरह हमने इसको एक हकम की

حُكْمًا عَرَبِيًّا ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ

हैसियत से अरबी में उतारा है, और अगर आप उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी करो बाद इसके

مَا جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ

कि आपके पास इल्म आ चुका है तो अल्लाह के मुक़ाबले में आपका न कोई मददगार होगा

وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا

और न कोई बचाने वाला (37) और हमने आपसे पहले कितने रसूल भेजे और हमने उनको

لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ

बीवियाँ और औलाद अता कीं, और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह

يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई निशानी ले आए, हर एक वादा लिखा हुआ है (38)

منزل ٣

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ

अल्लाह जिसको चाहे मिटाता है और जिसको चाहे बाक़ी रखता है और उसी के पास असल

الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ

किताब है (39) और जिसका वादा हम उनसे कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम आपको दिखा दें

اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

या हम आपको वफ़ात दे दें, पस आप के ऊपर सिर्फ़ पहुँचा देना है और हमारे ऊपर है

الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا

हिसाब लेना (40) क्या वे देखते नहीं कि हम ज़मीन को उसके अतराफ़ से

مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ

कम करते चले आ रहे हैं, और अल्लाह फ़ैसला करता है कोई उसके फैसले को हटाने वाला नहीं

وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ

और वह जल्द हिसाब लेने वाला है (41) जो उनसे पहले थे उन्होंने भी

قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ

तदबीरें कीं मगर तमाम तदबीरें अल्लाह के इख़्तियार में हैं, वह जानता है कि हर एक क्या

نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوْلُ

कर रहा है और मुनकिरीन जल्द जान लेंगे कि आख़िरत का घर किस के लिए है (42) और मुनकिरीन

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا

कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुए नहीं हो, कह दीजिए कि मेरे और तुम्हारे दरमियान

بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع

अल्लाह की गवाही काफ़ी है, और उसकी गवाही जिसके पास किताब का इल्म है (43)

منزل ٣

सूरह इब्राहीम मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (28,29) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई हैं, इसमें (52) आयात और (7) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (72) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (14) नम्बर पर है और सूरह नूह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3434) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (861) कलिमात हैं

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है जिसको हमने आपकी तरफ़ नाज़िल किया है; ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर

اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

उजाले की तरफ़ लाएं, उनके रब के हुक्म से ख़ुदा-ए-अज़ीज़ व हमीद के

الْحَمِيْدِ ۙ ① اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

रास्ते की तरफ़ (1) उस अल्लाह की तरफ़ कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है

الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ ②

सब उसी का है, और मुनकिरों के लिए एक सख़्त अज़ाब की तबाही है (2)

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ

जो कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद करते हैं

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ

और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी (टेढ़ा पन) निकालना चाहते हैं, ये लोग

فِيْ ضَلٰلٍ ۢ بَعِيْدٍ ③ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا

रास्ते से भटक कर बहुत दूर जा पड़े हैं (3) और हमने जो पैग़म्बर भी भेजा

بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ

उस क़ौम की ज़बान में भेजा ताकि वे उनसे बयान कर दे, फिर अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④ وَلَقَدْ

और जिसको चाहता है हिदायत देता है, वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (4) और यक़ीनन

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

हमने मूसा (अलै०) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरों से निकाल कर

اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

उजाले में लाइए और उनको अल्लाह के दिनों की याद दिलाइए, बेशक उनके अंदर

لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑤ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ

बड़ी निशानियाँ हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो (5) और जब मूसा (अलै०) ने अपनी क़ौम से कहा

اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ

कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो जबकि उसने तुमको फ़िरऔन की क़ौम से

فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ

छुड़ाया जो तुमको सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे और वह तुम्हारे बेटों को

اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रहने देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से

رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ

बड़ा इम्तिहान था (6) और जब तुम्हारे रब ने तुमको आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝

तो मैं तुमको ज़्यादा दूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है (7)

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ

और मूसा (अलै॰) ने कहा कि अगर तुम इनकार करो और ज़मीन के सारे लोग भी मुनकिर

جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا

हो जाएं तब भी अल्लाह बेनियाज़ है, ख़ूबियों वाला है (8) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڛ

जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं क़ौमे नूह, और आद और समूद

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ڔ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۭ

और जो लोग उनके बाद हुए हैं जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता,

جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ

उनके पैग़म्बर उनके पास दलाइल लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुँह में

اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا

दे दिए और कहा कि तुम जो कुछ देकर भेजे गए हो हम उसको नहीं मानते और जिस चीज़ की तरफ़

لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝ قَالَتْ

तुम हमको बुलाते हो हम उसके बारे में सख़्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं (9) उनके पैग़म्बरों ने

رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

कहाः क्या अल्लाह के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है,

يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى

वह तुमको बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ कर दे और तुमको एक मुक़र्रर मुद्दत तक

اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۭ

मोहलत दे, उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं कि हमारे जैसे ही एक आदमी हो,

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا

तुम चाहते हो कि हमको उन चीज़ों की इबादत से रोक दो जिन की इबादत हमारे बाप दादा करते थे,

فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ

तुम हमारे सामने कोई खुली सनद ले आओ (10) उनके रसूलों ने उनसे कहा कि हम

نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिसपर चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا

अपना इनाम फ़रमाता है और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि हम तुम को कोई मौजिज़ा दिखाएं बग़ैर अल्लाह के

بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

हुक्म के, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए (11)

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ

और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसने हमको हमारे रास्ते बताए,

وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

और जो तकलीफ़ तुम हमें दोगे हम उसपर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ

भरोसा करना चाहिए (12) और इनकार करने वालों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि

لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰٓى

या तो हम तुमको अपनी ज़मीन से निकाल देंगे या तुमको हमारी मिल्लत में वापस आना होगा, तो पैग़म्बरों के

اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾ لا وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ

रब ने उन पर वह्य भेजी कि हम इन ज़ालिमों को हलाक कर देंगे (13) और उनके बाद तुमको

الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ

ज़मीन पर बसाएंगे, यह उस शख़्स के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे

وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ

और जो मेरी वईद से डरे (14) और उन्होंने फ़ैसला चाहा, और हर सरकश ज़िद्दी

عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ لا مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ

ना मुराद हुआ (15) उसके आगे दोज़ख़ है और उसको पीप का पानी पीने को

صَدِيْدٍ ۝١٦ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ

मिलेगा (16) वह उसको घूंट घूंट पिएगा और उसको हलक़ से मुश्किल से उतार सकेगा, मौत

الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ

हर तरफ़ से उसपर छाई हुई होगी मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके

وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝١٧ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

आगे सख़्त अज़ाब होगा (17) जिन लोगों ने अपने रब का इनकार किया उनके

بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ

आमाल उस राख की तरह हैं जिसको एक तूफ़ानी दिन की आँधी ने

يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ

उड़ा दिया हो, वह अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे,

ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝١٨ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ

यही दूर की गुमराही है (18) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

और ज़मीन को बिलकुल ठीक ठीक पैदा किया है, अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٩ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

और एक नई मख़लूक़ ले आए (19) और यह अल्लाह पर ज़रा भी

بِعَزِيْزٍ ۝٢٠ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ

दुशवार नहीं (20) और अल्लाह के सामने सब पेश होंगे, फिर कमज़ोर लोग उन लोगों से

اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ

कहेंगे जो बड़ाई वाले थे कि हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम

عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا

अल्लाह के अज़ाब से कुछ हमको बचाओगे, वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमको कोई राह दिखाता

اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا

तो हम तुमको भी ज़रूर वह राह दिखा देते, अब हमारे लिए बराबर है कि हम बे क़रार हों या सब्र करें,

مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٢١ ع وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ

हमारे बचने की कोई सूरत नहीं (21) और जब मामले का फ़ैसला हो जाएगा तो शैतान

منزل ٣

ع ٣ / ١٥

الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ

कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने

فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ

उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी की, और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई ज़ोर न था मगर यह कि मैंने

اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْۤا

तुमको बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया, पस तुम मुझको इल्ज़ाम न दो और तुम अपने आपको

اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ

इल्ज़ाम दो, न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूँ और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो,

اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

मैं ख़ुद इससे बेज़ार हूँ कि तुम इससे पहले मुझको शरीक ठहराते थे, बेशक ज़ालिमों के लिए

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

दर्दनाक अज़ाब है (22) और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बाग़ों में

الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे अपने रब के हुक्म से

فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ

हमेशा रहेंगे, वे आपस में एक दूसरे का इस्तिक़बाल सलाम से करेंगे (23) क्या आपने नहीं देखा

كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ

कि किस तरह मिसाल बयान फ़रमाई है अल्लाह ने कलिमा तय्यबा की, वह एक पाकीज़ा दरख़्त की

طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ﴿٢٤﴾

मानिंद है जिसकी जड़ ज़मीन में जमी हुई है और जिसकी टहनियाँ आसमान तक पहुँची हुई हैं (24)

تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ

वह हर वक़्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से, और अल्लाह लोगों के लिए

الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ

मिसालें बयान करता है; ताकि वह नसीहत हासिल करें (25) और कलिमा ख़बीसा

كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨاجْتُثَّتْ مِنْ

की मिसाल एक ख़राब दरख़्त की सी है जो ज़मीन के ऊपर ही से

فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ

उखाड़ लिया जाए कि उसमें ज़रा भी जमाव न हो (26) अल्लाह वालों को

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

एक पक्की बात से दुनिया और आख़िरत में मज़बूत

وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ

करता है, और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह

مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا

चाहता है (27) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ़्र किया

وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ

और जिन्होंने अपनी क़ौम को हलाकत के घर जहन्नम में पहुँचा दिया (28) वह उसमें दाख़िल होंगे,

وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ

और वह कैसा बुरा ठिकाना है (29) और उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबिल ठहराए; ताकि वह लोगों को अल्लाह के रास्ते से

سَبِيْلِهٖ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

भटका दें, कह दीजिए कि चंद दिन का फ़ायदा उठा लो, आख़िर कार तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है (30)

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا

मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दीजिए कि वह नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उनको

مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ

दिया है उसमें से खुले और छुपे ख़र्च करें इससे पहले कि वह दिन आए

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ

जिसमें न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती काम आएगी (31) अल्लाह वह है जिसने आसमान

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ

और ज़मीन बनाए और आसमान से पानी उतारा फिर उससे मुख़्तलिफ़ फल

بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ

निकाले तुम्हारी रोज़ी के लिए, और कश्ती को तुम्हारे लिए ताबे कर दिया

لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾

कि समुंदर में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए ताबे कर दिया (32)

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ

और उसने सूरज और चाँद को तुम्हारे लिए ताबे कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को

الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ

तुम्हारे लिए ताबे कर दिया (33) और उसने तुमको हर उस चीज़ में से दिया जो तुमने मांगा,

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ

अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उनको गिन नहीं सकते, बेशक इंसान

لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا

बहुत बे इंसाफ़, बड़ा ना शुक्रा है (34) और जब इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरे रब! इस शहर को

الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

अमन वाला बनाइए और मुझको और मेरी औलाद को इससे दूर रखिए कि हम बुतों की इबादत करें (35)

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ

ऐ मेरे रब! इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, पस जिसने मेरी पैरवी की

فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

वह मेरा है, और जिसने मेरा कहा न माना तो आप बख़्शने वाले, मेहरबान हैं (36)

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ

ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को एक बग़ैर खेती की वादी में आपके

عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ

मोहतरम घर के पास बसाया है, ऐ हमारे रब! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें, पस आप लोगों के

اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ

दिलों को उनकी तरफ़ माइल कर दीजिए और उनको फलों की रोज़ी अता

الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ

फ़रमाइए ताकि वे शुक्र करें (37) ऐ हमारे प्यारे रब! आप जानते हैं

مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ

जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह से कोई चीज़ छुपी नहीं

فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न ज़मीन में और न आसमान में (38) शुक्र है उस अल्लाह का जिसने

ع ١٧ منزل ٣

وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّيْ

मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक (अलै०) दिए, बेशक मेरा रब

لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ

दुआ का सुनने वाला है (39) ऐ मेरे प्यारे रब! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बनाइए और मेरी

ذُرِّيَّتِيْ ۖۗ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ

औलाद में भी और ऐ मेरे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमाइए (40) ऐ हमारे रब! मुझे मुआफ़ फ़रमाइए

وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ ع

और मेरे वालिदैन को और मोमिनीन को उस रोज़ जबकि हिसाब क़ायम होगा (41)

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ؕ

और आप हरगिज़ यह ख़्याल न करें कि अल्लाह उससे बे ख़बर है जो ज़ालिम लोग कर रहे हैं,

اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ لا

वे उनको उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आँखें पथरा जाएंगी (42)

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ

वे सर उठाए हुए भाग रहे होंगे उनकी नज़र उनकी तरफ़ पलट कर न आएगी

وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾ ط وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ

और उनके दिल बदहवास होंगे (43) और लोगों को उस दिन से डराइए जिस दिन उनपर

الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ

अज़ाब आजाएगा, उस वक़्त ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमको थोड़ी मोहलत और दे

قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا

दीजिए, हम आपकी दावत क़ुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे, क्या तुमने

اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ لا وَّسَكَنْتُمْ فِيْ

इससे पहले क़स्में नहीं खाई थीं कि तुमपर कुछ ज़वाल आना नहीं है (44) और तुम उन लोगों की

مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ

बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और तुमपर खुल चुका था कि हमने

فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا

उनके साथ क्या किया, और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं (45) और उन्होंने अपनी

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ

सारी तदबीरें कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं, अगर्चे उनकी तदबीरें ऐसी थीं

لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

कि उनसे पहाड़ भी टल जाएं (46) पस आप अल्लाह को अपने पैग़म्बरों से

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ

वादा ख़िलाफ़ी करने वाला न समझें, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला है (47) जिस दिन

تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا

यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल जाएगी और आसमान भी और सब एक ज़बरदस्त

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ

अल्लाह के सामने पेश होंगे (48) और आप उस दिन मुजरिमों को जंजीरों में

مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ

जकड़ा हुआ देखोगे (49) उनके लिबास तारकोल के होंगे

وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ

और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी (50) ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसके

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

किए का बदला दे, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है (51)

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا

यह लोगों के लिए एक ऐलान है और ताकि इसके ज़रिए वह डरा दिए जाएं, और ताकि वे जान लें कि वही

هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

एक माबूद है और ताकि अक़्ल मंद लोग नसीहत हासिल करें (52)

ع ١١/١٩ — منزل ٣

सूरह हिज्र मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (87) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (99) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (54) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (15) नम्बर पर है और सूरह यूसुफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2760) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (654) कलिमात है

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

अलिफ़-लाम-रा, ये आयतें हैं किताब की और एक वाज़ेह क़ुरआन की (1)

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾

वह वक़्त आएगा जब इनकार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे मानने वाले बने होते (2)

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ

उनको छोड़ दीजिए कि वे खाएं और फ़ायदा उठाएं और ख़्याली उम्मीद उनको भुलावे में डाले रखे पस आइंदा वे

يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا

जान लेंगे (3) और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक किया है उसका एक मुक़र्रर

كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا

वक़्त लिखा हुआ था (4) कोई क़ौम न अपने मुक़र्रर वक़्त से आगे बढ़ती है और न

يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ

पीछे हटती है (5) और यह लोग कहते हैं कि ऐ वह शख़्स जिसपर नसीहत

الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٦﴾ لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ

उतरी है तू बेशक दीवाना है (6) अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ

क्यों नहीं ले आता (7) हम फ़रिश्तों को सिर्फ़ फ़ैसले के लिए

اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّا نَحْنُ

उतारते हैं और उस वक़्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती (8) हमने ही

نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

इस क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम ही इसके मुहाफ़िज़ हैं (9) और हम आपसे पहले

مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ

गुज़री हुई क़ौमों में रसूल भेज चुके हैं (10) और जो रसूल भी उनके

رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١١﴾ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ

पास आया वह उसका मज़ाक़ उड़ाते रहे (11) इसी तरह हम यह (मज़ाक़) मुजरिमों के

فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٢﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ

दिलों में डाल देते हैं (12) वे उसपर ईमान नहीं लाएंगे और यह दस्तूर

سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ

अगलों से होता आया है (13) और अगर हम उनपर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल देते

فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

जिसपर वे चढ़ने लगते (14) तब भी वे कह देते कि हमारी आँखों को

اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾ ع وَلَقَدْ

धोखा हो रहा है; बल्कि हम पर तो जादू कर दिया गया है (15) और हमने

جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾

आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रोनक़ दी (16)

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ اِلَّا مَنِ

और हमने उसको हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ किया (17) कोई चोरी छुपे

اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَالْاَرْضَ

सुनने के लिए कान लगाता है तो एक रोशन शोला उसका पीछा करता है (18) और हमने ज़मीन को

مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ

फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज़

كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ

एक अंदाज़े से उगाई (19) और उसी में हमने तुम्हारी रोज़ियाँ बनादी हैं

وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا

और जिन्हें तुम रोज़ी देने वाले नहीं हो (20) और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने

عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾

हमारे पास न हों, और हम उसको एक मुअय्यन अंदाज़े के साथ ही उतारते हैं (21)

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

और हम ही हवाओं को बोझल बनाकर चलाते हैं फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से

فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ج وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنَّا

तुमको सेराब करते हैं, और तुम्हारे बस में न था कि तुम उसका ज़ख़ीरा करके रखते (22) और बेशक हम ही

لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं और हम ही बाक़ी रह जाएंगे (23) और हम तुम्हारे

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं (24)

ع ١٥

منزل ٣

وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۲۵ وَلَقَدْ

और बेशक आपका रब उन सबको इकटठा करेगा, वह इल्म वाला, हिकमत वाला है (25) यक़ीनन हमने

خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۲۶

इंसान को काली और सड़ी हुई खनखनाती हुई मिटटी से पैदा किया है (26)

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ۲۷ وَاِذْ

और इससे पहले जिन्नात को हमने आग की लपट से पैदा किया (27) और जब

قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ

आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं काली और सड़ी हुई खनखनाती हुई मिटटी से

مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۲۸ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ

एक इंसान पैदा करने वाला हूँ (28) जब मैं उसको पूरा बना लूँ और उसमें अपनी रूह में से

مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۲۹ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ

फूँक दूँ तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना (29) पस तमाम फ़रिश्तों

كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۳۰ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ

ने सज्दा किया (30) मगर इबलीस कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से

السّٰجِدِيْنَ ۳۱ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ

इनकार कर दिया (31) अल्लाह ने कहा: ऐ इबलीस! तुझको क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में से

السّٰجِدِيْنَ ۳۲ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ

शामिल न हुआ (32) वह बोला कि में ऐसा नहीं कि उस इंसान को सज्दा करूँ जिसे तूने

مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۳۳ قَالَ فَاخْرُجْ

काली और सड़ी हुई खनखनाती हुई मिटटी से पैदा किया है (33) अल्लाह ने कहा: तू यहाँ से

مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۳۴ وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ

निकल जा; क्योंकि तू मरदूद है (34) और तुझपर मेरी फटकार है क़ियामत के दिन

الدِّيْنِ ۳۵ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۳۶

तक (35) इबलीस ने कहा: ऐ मेरे रब! तू मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे (36)

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۳۷ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ

अल्लाह ने कहा कि तुझे मोहलत है (37) उस मुक़र्रर वक़्त के

الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِیْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ

दिन तक (38) इबलीस ने कहाः ऐ मेरे रब! जैसा तूने मुझको गुमराह किया उसी तरह में ज़मीन में

فِی الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَكَ

उनके लिए मुज़य्यन करूँगा और सबको गुमराह कर दूँगा (39) सिवाए उनके जो तेरे

مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَیَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾

चुने हुए बंदे हैं (40) अल्लाह ने फ़रमायाः यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है (41)

اِنَّ عِبَادِیْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ

बेशक जो मेरे बंदे हैं उनपर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा सिवाए उनके जो

اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

गुमराहों में से तेरी पैरवी करें (42) और उन सबके लिए जहन्नम का

اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ

वायदा है (43) उसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के

جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤٥﴾ ؕ

अलग अलग हिस्से हैं (44) बेशक डरने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे (45)

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ

दाख़िल हो जाओ उनमें सलामती और अमन के साथ (46) और उनके दिलों में जो कुछ रंजिश व कीना था हम सब कुछ

مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ

निकाल देंगे, वह भाई भाई बने हुए एक दूसरे के आमने सामने तख़्तों पर बैठे होंगे (47) वहाँ उनको कोई

فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِیْۤ

तक्लीफ़ नहीं पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएंगे (48) मेरे बंदों को ख़बर दे दीजिए

اَنِّیْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾ وَاَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ

कि मैं बख़्शने वाला, रहमत वाला हूँ (49) और मेरी सज़ा दर्दनाक

الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٥١﴾ اِذْ دَخَلُوْا

सज़ा है (50) और उनको इब्राहीम (अलै०) के मेहमानों से आगाह कीजिए (51) जब वे उसके पास

عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا

आए फिर उन्होंने सलाम किया, इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि हमें तो तुमसे डर लग रहा है (52) उन्होंने कहाः

لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ

डरिए मत, हम तो आपको एक लड़के की बशारत देते हैं, जो बड़ा आलिम होगा (53) इब्राहीम (अलै०) ने कहा: क्या तुम

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾ قَالُوْا

इस बुढ़ापे में मुझको औलाद की बशारत देते हो, पस तुम किस चीज़ की बशारत मुझको दे रहो हो? (54) उन्होंने कहा:

بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ

हम आपको हक़ के साथ बशारत देते हैं, पस आप नाउम्मीद होने वालों में से न बनें (55) इब्राहीम (अलै०) ने कहा

يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا

कि अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन ना उम्मीद हो सकता है (56) कहा कि ऐ

خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

भेजे हुए फ़रिश्तो! अब तुम्हारा क्या काम है? (57) उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम की

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ

तरफ़ भेजे गए हैं (58) मगर लूत (अलै०) के घर वाले कि हम उन सबको

اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

बचा लेंगे (59) सिवाए उनकी बीवी के कि हमने अंदाज़ा कर लिया है कि वह ज़रूर मुजरिम लोगों में रह जाएगी (60)

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ

फिर जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत (अलै०) के ख़ानदान वालों के पास आए (61) उन्होंने कहा कि तुम लोग

مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ

अजनबी मालूम होते हो (62) उन्होंने कहा: नहीं; बल्कि हम आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें ये लोग

يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾

शक करते हैं (63) और हम आपके पास हक़ के साथ आए हैं और हम बिलकुल सच्चे हैं (64)

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ

अब आप अपने ख़ानदान समेत इस रात के किसी हिस्से में चल दीजिए और आप उनके पीछे रहना,

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

और (ख़बरदार) तुम में कोई पीछे मुड़ कर न देखे और जहाँ का तुम्हें हुक्म किया जा रहा है वहाँ चले जाना (65)

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ

और हमने लूत (अलै०) के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन लोगों

مُّصْبِحِيْنَ ﴿۶۶﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۶۷﴾

की जड़ कट जाएगी (66) और शहर के लोग ख़ुश होकर आए (67)

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿۶۸﴾ وَاتَّقُوا

लूत (अलै०) ने कहाः ये लोग मेरे मेहमान हैं पस तुम लोग मुझको रुसवा न करो (68) और तुम अल्लाह से

اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿۶۹﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ

डरो और मुझको ज़लील न करो (69) उन्होंने कहाः क्या हमने तुमको दुनिया भर के लोगों से

الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿۷۱﴾

मना नहीं कर दिया (70) उसने कहाः ये मेरी बेटियाँ हैं अगर तुमको करना ही है (71)

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۷۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ

आपकी जान की क़सम! वे तो अपने नशे में मस्त थे (72) पस सूरज निकलते उन्हें एक

الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

बड़े ज़ोर की आवाज़ ने पकड़ लिया (73) बिलआख़िर हमने उस शहर को उलट पुलट कर दिया

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿۷۴﴾ اِنَّ

और उन लोगों पर कंकर वाले पत्थर बरसाए (74) बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ

इसमें निशानियाँ हैं ध्यान करने वालों के लिए (75) और यह बस्ती एक सीधी राह पर

مُّقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۷﴾

वाक़े है (76) बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए (77)

وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَانْتَقَمْنَا

और ऐका वाले यक़ीनन ज़ालिम लोग थे (78) पस हमने उनसे (भी)

مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۹﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

इंतिक़ाम लिया, और ये दोनों बस्तियाँ खुले रास्ते पर वाक़े हैं (79) और हिज्र वालों ने

اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۸۰﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا

भी रसूलों को झुटलाया (80) और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं

فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ

मगर वे उनसे मुँह फेरते रहे (81) और वे पहाड़ों को काट कर

منزل ۳
وقف لازم ع ۵ ۱۹

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ

उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें (82) पस उनको सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने

مُصْبِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۴﴾

पकड़ लिया (83) पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया (84)

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है हिकमत के बग़ैर

بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ

नहीं बनाया, और यक़ीनन क़ियामत आने वाली है पस आप ख़ूबी के साथ

الْجَمِيْلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾ وَلَقَدْ

दरगुज़र कीजिए (85) बेशक आपका रब ही सबका ख़ालिक़ है, जानने वाला है (86) और यक़ीनन

اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾

हमने आपको सात आयतें दे रखी हैं कि दोहराई जाती हैं और अज़्मत वाला क़ुरआन भी दे रखा है (87)

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ

उस दुनियावी सामान की तरफ़ आँख उठाकर न देखें जो हमने उनमें से मुख़्तलिफ़ लोगों को दिया है

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾

और उनपर ग़म न करें, और ईमान वालों पर अपनी शफ़क़त के बाज़ू झुका दीजिए (88)

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۹﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى

और कहिए कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूँ (89) इसी तरह हमने

الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿۹۰﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿۹۱﴾

तक़सीम करने वालों पर भी उतारा था (90) जिन्होंने (अपने) क़ुरआन के टुकड़े टुकड़े कर दिए (91)

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۲﴾ عَمَّا كَانُوْا

पस आपके रब की क़सम! हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे (92) जो कुछ वे

يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ

करते थे (93) पस जिस चीज़ का आपको हुक्म मिला है उसको खोल कर सुना दीजिए और मुशरिकों से

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۴﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿۹۵﴾

ऐराज़ कीजिए (94) हम आपकी तरफ़ से इन मज़ाक उड़ाने वालों के लिए काफ़ी हैं (95)

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ

जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को शरीक करते हैं पस जल्द ही वे

يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ

जान लेंगे (96) और हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे आपका दिल

بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ

तंग होता है (97) पस आप अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह कीजिए और सज्दा करने वालों में से

السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

बन जाइए (98) और अपने रब की इबादत करते रहिए यहाँ तक कि आपको मौत आजाए (99)

ركوع ١٢

सूरह नह्ल मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर अख़ीर की तीन आयतें मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई हैं, इसमें (128) आयतें और (16) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (70) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (16) नम्बर पर है और सूरह कह्फ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (7707) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (2840) कलिमात ह

اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى

आ गया अल्लाह का फ़ैसला पस उसकी जल्दी न करो, वह पाक है और बरतर है उससे

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ

जिसको वे शरीक ठहराते हैं (1) वे फ़रिश्तों को अपने हुक्म से वह्य के साथ

اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا

उतारता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को ख़बरदार कर दो

اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, पस तुम मुझसे डरो (2) उसने आसमानों

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣﴾ خَلَقَ

और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है, वह बरतर है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं (3) उसने

الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤﴾

इंसान को एक बूंद से बनाया, फिर वह यकायक खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा (4)

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ

और उसने चौपायों को बनाया उनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और ख़ूराक भी और दूसरे फ़ायदे भी,

وَمِنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ۝۵ وَلَكُمۡ فِيۡهَا جَمَالٌ حِيۡنَ تُرِيۡحُوۡنَ
और उनमें से तुम खाते भी हो (5) और उनमें तुम्हारे लिए रोनक़ है जबकि शाम के वक़्त उनको लाते हो
وَحِيۡنَ تَسۡرَحُوۡنَ ۝۶ وَتَحۡمِلُ اَثۡقَالَكُمۡ اِلٰى بَلَدٍ
और जब सुबह के वक़्त छोड़ते हो (6) और वे तुम्हारे बोझ ऐसे मक़ामात तक पहुँचाते हैं
لَّمۡ تَكُوۡنُوۡا بٰلِغِيۡهِ اِلَّا بِشِقِّ الۡاَنۡفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمۡ
जहाँ तुम सख़्त मेहनत के बग़ैर नहीं पहुँच सकते थे, बेशक तुम्हारा रब
لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۝۷ وَّالۡخَيۡلَ وَالۡبِغَالَ وَالۡحَمِيۡرَ
बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है (7) और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए;
لِتَرۡكَبُوۡهَا وَزِيۡنَةً ؕ وَيَخۡلُقُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝۸ وَعَلَى
ताकि तुम उनपर सवार हो और ज़ीनत के लिए भी, और वे ऐसी चीज़ें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते (8) और अल्लाह तक
اللّٰهِ قَصۡدُ السَّبِيۡلِ وَمِنۡهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوۡ شَآءَ
पहुँचती है सीधी राह, और बअज़ रास्ते टेढ़े भी हैं, और अगर अल्लाह चाहता
لَهَدٰٮكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۝۹ هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
तो तुम सबको हिदायत दे देता (9) वही है जिसने आसमान से पानी
مَآءً لَّكُمۡ مِّنۡهُ شَرَابٌ وَّمِنۡهُ شَجَرٌ فِيۡهِ تُسِيۡمُوۡنَ ۝۱۰
उतारा जिससे तुम पीते हो और उसी से दरख़्त पैदा होते हैं जिनमें तुम चराते हो (10)
يُنۡۢبِتُ لَكُمۡ بِهِ الزَّرۡعَ وَالزَّيۡتُوۡنَ وَالنَّخِيۡلَ
वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर
وَالۡاَعۡنَابَ وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
और हर क़िस्म के फल उगाता है, बेशक इसके अंदर निशानी है
لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ۝۱۱ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ ۙ
उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं (11) और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को
وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌ ۢ بِاَمۡرِهٖ ؕ اِنَّ
और सूरज और चाँद को, और सितारे भी उसके हुक्म के ताबे हैं, बेशक
فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝۱۲ وَمَا ذَرَاَ لَكُمۡ
इसमें निशानियाँ हैं अक़्लमंद लोगों के लिए (12) और ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

जो चीज़ें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तुम्हारे लिए फैलाई, बेशक इसमें निशानी है

لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ⑬ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ

उन लोगों के लिए जो सबक़ हासिल करें (13) और वही है जिसने समुंदर को

لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً

तुम्हारे काम में लगा दिया; ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ और उससे ज़ेवर निकालो

تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا

जिसको तुम पहनते हो, और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ⑭ وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ

तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो (14) और उसने ज़मीन में पहाड़

رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ

रख दिए; ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे और उसने नहरें और रास्ते बनाए

تَهْتَدُوْنَ ⑮ۙ وَعَلٰمٰتٍ ۭ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ⑯

ताकि तुम राह पाओ (15) और बहुत सी दूसरी अलामतें भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं (16)

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ⑰

फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं (17)

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उनको गिन न सकोगे, बेशक अल्लाह

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑱ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا

बख़्शने वाला मेहरबान है (18) और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम

تُعْلِنُوْنَ ⑲ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

ज़ाहिर करते हो (19) और जिनको लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं

لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ⑳ۭ اَمْوَاتٌ

वह किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किए हुए हैं (20) वे मुर्दा हैं

غَيْرُ اَحْيَاۗءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ㉑ۧ

जिनमें जान नहीं, और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे (21)

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते

قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّ

उनके दिल मुनकिर हैं और वे तकब्बुर करते है (22) अल्लाह यक़ीनन

اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं, बेशक वे तकब्बुर करने वालों को

الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ

पसंद नहीं करता (23) और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने किया चीज़

رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْٓا

उतारी तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियाँ हैं (24) ताकि वे क़ियामत के दिन

اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ

अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ भी

الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

जिनको वे बग़ैर इल्म के गुमराह कर रहे हैं, याद रखो! बहुत बुरा है वह बोझ जिसको वे उठा रहे हैं (25)

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ

उनसे पहले लोगों ने भी मक्र किया था (आख़िर) अल्लाह ने उन (के मंसूबों) की इमारतों को

مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ

जड़ों से उखाड़ दिया और उन (के सरों) पर (उनकी) छतें ऊपर से गिर पड़ीं

وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ

और उनके पास अज़ाब वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें वह्म व गुमान भी न था (26) फिर क़ियामत के

الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

दिन अल्लाह उनको रुसवा करेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहाँ हैं

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे, जिनको इल्म दिया गया था वे कहेंगे

اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

कि आज रुसवाई और अज़ाब है काफ़िरों पर (27)

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ص

वे जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं फ़रिश्ते जब उनकी जान क़ब्ज़ करने लगते हैं

فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ط بَلٰٓى

उस वक़्त वे झुक जाते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे, क्यों नहीं!

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا

अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाला है जो कुछ तुम करते थे (28) अब जहन्नम के

اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط فَلَبِئْسَ مَثْوَى

दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ उसमें हमेशा हमेशा रहो, पस कैसा बुरा ठिकाना है

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ

तकब्बुर करने वालों का (29) और जो तक़्वे वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने

رَبُّكُمْ ط قَالُوْا خَيْرًا ط لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا

क्या चीज़ उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात, जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी

حَسَنَةٌ ط وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ط وَلَنِعْمَ دَارُ

भलाई है और आख़िरत का घर बेहतर है, और क्या ख़ूब घर है तक़्वे

الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾ لا جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ

वालों का (30) हमेशा रहने के बाग़ात हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे से

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ط كَذٰلِكَ

नहरें जारी होंगी, उनके लिए वहाँ सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, अल्लाह

يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ لا الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देगा (31) जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में क़ब्ज़ करते हैं

طَيِّبِيْنَ لا يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ لا ادْخُلُوا الْجَنَّةَ

कि वे पाक हैं, फ़रिश्ते कहते हैं: तुमपर सलामती हो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ

अपने आमाल के बदले में (32) क्या ये लोग इसके मुंतज़िर हैं कि उनके पास

تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ط كَذٰلِكَ فَعَلَ

फ़रिश्ते आएं या आपके रब का हुक्म आ जाए, ऐसा ही इनसे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ

पहले वालों ने किया, और अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही

كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ٣٣ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا

अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थ 33 फिर उनको उनके बुरे काम की सज़ाएं

عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ٣٤ ع

मिलीं और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ उड़ाते थे उसने उनको घेर लिया 34

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं कि अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज़ की इबादत

مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَاۗؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

न करते न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम उसके बग़ैर किसी चीज़ को हराम

مِنْ شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ

ठहराते, ऐसा ही उनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के

عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ٣٥ وَلَقَدْ بَعَثْنَا

ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना ही है 35 और हमने हर उम्मत में

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا

एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और तागूत

الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ

(शैतान) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और उनमें से किसी पर

حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۭ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

गुमराही साबित हुई, पस ज़मीन में चल फिर कर देखो

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ٣٦ اِنْ

कि झुटलाने वालों का अंजाम क्या हुआ 36 अगर आप

تَحْرِصْ عَلٰي هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ

उनकी हिदायत के हरीस हो तो अल्लाह उसको हिदायत नहीं देता जिसको वह गुमराह कर देता है

وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ٣٧ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ

और उनका कोई मददगार नहीं 37 और ये लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं

اَيۡمَانِهِمۡ ۙ لَا يَبۡعَثُ اللّٰهُ مَنۡ يَّمُوۡتُ ؕ بَلٰى وَعۡدًا

सख़्त क़समें कि जो शख़्स मर जाएगा अल्लाह उसको दुबारा नहीं उठाएगा, क्यों नहीं! यह

عَلَيۡهِ حَقًّا وَّلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۙ‏ ﴿۳۸﴾

उसके ऊपर एक पक्का वादा है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (38)

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِىۡ يَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ وَلِيَـعۡلَمَ الَّذِيۡنَ

ताकि उनके सामने उस चीज़ को खोल दे जिसमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं और इनकार करने वाले

كَفَرُوۡۤا اَنَّهُمۡ كَانُوۡا كٰذِبِيۡنَ‏ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا قَوۡلُـنَا لِشَىۡءٍ

लोग जान लें कि वे झूटे थे (39) जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो

اِذَاۤ اَرَدۡنٰهُ اَنۡ نَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۴۰﴾ وَالَّذِيۡنَ

हमारा इतना ही कहना काफ़ी होता है कि हम उसको कहते हैं हो जा तो वह हो जाती है (40) और जिन लोगों ने

هَاجَرُوۡا فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا ظُلِمُوۡا لَـنُبَوِّئَنَّهُمۡ

अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा बाद इसके कि उनपर ज़ुल्म किया गया, हम उनको दुनिया में भी

فِى الدُّنۡيَا حَسَنَةً‌ ؕ وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ‌ ۘ لَوۡ كَانُوۡا

ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे

يَعۡلَمُوۡنَ ۙ‏ ﴿۴۱﴾ الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ‏ ﴿۴۲﴾

जानते (41) वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं (42)

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ‌

और हमने आपसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा जिनकी तरफ़ हम वह्य करते थे,

فَسۡــئَلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّكۡرِ اِنۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۙ‏ ﴿۴۳﴾

पस इल्म वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते (43)

بِالۡبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ‌ ؕ وَاَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الذِّكۡرَ لِتُبَيِّنَ

हमने उन्हें भेजा था दलाइल और किताबों के साथ, और हमने आप पर भी याद दहानी उतारी; ताकि आप लागों पर

لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيۡهِمۡ وَلَعَلَّهُمۡ يَتَفَكَّرُوۡنَ‏ ﴿۴۴﴾

उस चीज़ को वाज़ेह करदें जो उनकी तरफ़ उतारी गई है और ताकि वे ग़ौर करें (44)

اَفَاَمِنَ الَّذِيۡنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ يَّخۡسِفَ اللّٰهُ

क्या वे लोग जो बुरी तदबीरें कर रहे हैं वे इस बात से बे फ़िक्र हैं कि अल्लाह उनको

بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

ज़मीन में धंसा दे या उनपर अज़ाब वहाँ से आए जहाँ से उनको

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ

गुमान भी न हो (45) या उनको चलते फिरते पकड़ ले तो वे लोग अल्लाह को आजिज़

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ

नहीं कर सकते (46) या उनको अंदेशे की हालत में पकड़ ले, पस तुम्हारा रब

لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ

मेहरबान है, रहमत वाला है (47) क्या वे नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है

يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ

उसके साये दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ झुक जाते हैं अल्लाह को सज्दा करते हुए

وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

और वे सब आजिज़ हैं (48) और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीज़े चलने वाली हैं आसमानों में

الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

और ज़मीन में और फ़रिश्ते भी और वे तकब्बुर नहीं करते (49)

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٥٠﴾

वे अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उनको हुक्म मिलता है (50)

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ

और अल्लाह ने फ़रमाया कि दो माबूद मत बनाओ, वह एक ही माबूद

وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

है तो मुझ ही से डरो (51) और उसी का है जो कुछ आसमानों

وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾

और ज़मीन में है, और उसी की इताअत है हमेशा, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो (52)

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ

और तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुमको तकलीफ़ पहुँचती है

فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا

तो उसी से फ़रयाद करते हो (53) फिर जब वह तुमसे तकलीफ़ दूर कर देता है

فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوْا

तो तुम में से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है (54) ताकि मुनकिर हो जाएं

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

उस चीज़ से जो हमने उनको दी है, पस चंद रोज़ फ़ायदे उठा लो जल्द ही तुम जान लोगे (55)

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ

और यह लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुताल्लिक़ उनको कुछ इल्म नहीं,

تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُوْنَ

अल्लाह की क़सम! जो झूठ तुम बाँध रहे हो उसके बारे में ज़रूर तुमसे पूछ ताछ होगी (56) और वे अल्लाह के लिए

لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا

बेटियाँ ठहराते हैं (हालाँकि) वह इससे पाक है, और अपने लिए वह जो दिल चाहता है (57) और जब

بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ

उनमें से किसी को बेटी की ख़ुशख़बरी दी जाए तो उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह

كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾ ۚ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ

जी ही जी में कुढ़ता है (58) इस बुरी ख़बर की वजह से लोगों से छुपा छुपा

بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ

फिरता है, सोचता है कि क्या इसको ज़िल्लत के साथ लिए हुए ही रहे या इसे मिटटी में दबा दे,

اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

आह! क्या ही बुरे फ़ैसले करते हैं (59) बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए

بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ

जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और अल्लाह के लिए आला मिसालें हैं और वह

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾ ع وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ

ग़ालिब है, हिकमत वाला है (60) और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर

بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ

पकड़ता तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़ता, लेकिन वह

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ

एक मुक़र्रर वक़्त तक लोगों को मोहलत देता है, फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाए

لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُوْنَ

तो वह न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे (61) और वे अल्लाह के लिए

لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ

वह चीज़ ठहराते हैं जिसको अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि

لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ

उनके लिए भलाई है, यक़ीनन उनके लिए दोज़ख़ है और वे ज़रूर उसमें

مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ

पहुँचा दिए जाएंगे (62) अल्लाह की क़सम! हमने आपसे पहले मुख़्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़

مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ

रसूल भेजे, फ़िर शैतान ने उनके काम उनको अच्छे करके दिखाए, पस वही

وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَاۤ

आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है (63) और हमने

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى

आप पर किताब सिर्फ़ इसलिए उतारी है कि आप उनको वह चीज़ खोल कर सुना दो

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

जिसमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, और वह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं (64)

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ

ज़िंदा कर दिया, बेशक उसमें निशानी है उन लोगों के लिए

يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ ع وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ

जो सुनते हैं (65) और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक़ है,

نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ

हम उनके पेटों के अंदर गोबर और ख़ून के दरमियान से तुमको ऐसा ख़ालिस

لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرٰتِ

दूध पिलाते हैं जो ख़ुशगवार है पीने वालों के लिए (66) और खजूर

النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ سَكَرًا وَّرِزۡقًا

और अंगूर के फलों से भी, तुम उनसे नशे की चीज़ें भी बनाते हो और खाने की अच्छी

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۷﴾

चीज़ें भी, बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं (67)

وَاَوۡحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِىۡ مِنَ الۡجِبَالِ

और आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली कि पहाड़ों में,

بُيُوۡتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعۡرِشُوۡنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ كُلِىۡ

दरख़्तों में और लोगों की बनाई हुई ऊँची ऊँची Vfê;ksa में अपने घर (छत्ते) ब (68) फिर हर क़िस्म

مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِىۡ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ

फलों का रस चूस कर और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल,

يَخۡرُجُ مِنۡۢ بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ

उसके पेट से पीने की चीज़ निकलती है उसके रंग मुख़्तलिफ़ हैं,

فِيۡهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ

उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है, बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए

يَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۶۹﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ يَتَوَفّٰٮكُمۡ

जो ग़ौर करते हैं (69) और अल्लाह ने तुमको पैदा किया फिर वही तुमको वफ़ात देता है,

وَمِنۡكُمۡ مَّنۡ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرۡذَلِ الۡعُمُرِ لِكَىۡ لَا يَعۡلَمَ

और तुम में से बअज़ वे हैं जो नाकारह उम्र तक पहुँचाए जाते हैं कि जानने के बाद

بَعۡدَ عِلۡمٍ شَيۡـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ قَدِيۡرٌ ﴿۷۰﴾ ع

वे कुछ न जानें, बेशक अल्लाह इल्म वाला, क़ुदरत वाला है (70)

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعۡضَكُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ فِى الرِّزۡقِ ۚ

और अल्लाह ने तुम में से बअज़ को बअज़ पर रोज़ी में बड़ाई दी है,

فَمَا الَّذِيۡنَ فُضِّلُوۡا بِرَآدِّىۡ رِزۡقِهِمۡ عَلٰى مَا مَلَكَتۡ

पस जिनको बड़ाई दी गई है वह अपनी रोज़ी अपने ग़ुलामों को

اَيۡمَانُهُمۡ فَهُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعۡمَةِ اللّٰهِ

नहीं दे देते कि वह उसमें बराबर हो जाएं, फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का

يَجۡحَدُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ

इनकार करते हैं (71) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से

اَزۡوَاجًا وَّجَعَلَ لَـكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ

बीवियाँ बनाई और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे

وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالۡبَاطِلِ

और पोते पैदा किए और तुमको पाकीज़ा चीज़ें खाने के लिए दीं, फिर क्या ये बातिल पर

يُؤۡمِنُوۡنَ وَبِنِعۡمَتِ اللّٰهِ هُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ ۙ﴿٧٢﴾

ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इनकार करते हैं (72)

وَيَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ رِزۡقًا

और वे अल्लाह के सिवा उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से,

مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ شَيۡـًٔـا وَّلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ ۚ﴿٧٣﴾

किसी रोज़ी पर इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन से और न वे क़ुदरत रखती हैं (73)

فَلَا تَضۡرِبُوۡا لِلّٰهِ الۡاَمۡثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ

पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो, बेशक अल्लाह जानता है

وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا

और तुम नहीं जानते (74) और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक ग़ुलाम

مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا

ममलूक की जो किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखता, और एक शख़्स जिसको हमने अपने पास से

رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ سِرًّا وَّجَهۡرًا ؕ هَلۡ

अच्छा रिज़्क़ दिया है पस वे उसमें से छुपा कर और ज़ाहिर करके ख़र्च करता है, क्या ये

يَسۡتَوٗنَ ؕ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٧٥﴾

बराबर होंगे, सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (75)

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيۡنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبۡكَمُ

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख़्स हैं जिनमें से एक गूंगा है

لَا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوۡلٰٮهُ ۙ اَيۡنَمَا

कोई काम नहीं कर सकता है और वह अपने मालिक पर बोझ है, वह उसको जहाँ

يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ

भेजता है वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता, क्या वह और ऐसा शख़्स बराबर हो सकते हैं

يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ وَلِلّٰهِ

जो इंसाफ़ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है (76) और अल्लाह ही के लिए हैं

غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا

आसमानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का मामला बस ऐसा होगा

كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

जैसे आँख झपकना बल्कि उससे भी जल्द, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर

قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ

क़ादिर है (77) और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से निकाला,

لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

तुम किसी चीज़ को न जानते थे, और उसने तुम्हारे लिए कान और आँख

وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَلَمْ يَرَوْا

और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो (78) क्या लोगों ने

اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ

परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की फ़िज़ा में मुसख़्ख़र हो रहे हैं, उनको सिर्फ़ अल्लाह

اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

थामे हुए है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं (79)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून की जगह बनाया और तुम्हारे लिए

لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا

जानवरों की खाल के घर बनाए जिनको तुम अपने सफ़र के दिन

يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا

और क़ियाम के दिन हल्का पाते हो, और उनकी ऊन और उनकी रुएं

وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾

और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे की चीज़ें एक मुददत तक के लिए बनाएं (80)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और तुम्हारे लिए

مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ

पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुमको गर्मी से

الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ

बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुमको बचाते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम पर अपनी नेमतें

نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا

पूरी करता है; ताकि तुम फ़रमाँबरदार बनो (81) फिर अगर वे मुँह फेर लें

فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ

तो आपके ऊपर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है (82) वे लोग अल्लाह की नेमत को

اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع وَيَوْمَ

पहचानते हैं फिर वे उसके मुनकिर हो जाते हैं और उनमें अकसर ना शुक्रे हैं (83) और जिस दिन

نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ

हम हर उम्मत में से एक गवाह उठाएंगे, फिर इनकार करने वालों को हिदायत न दी

كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا

जाएगी और न उनसे तौबा ली जाएगी (84) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब को

الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٥﴾

देखेंगे तो वह अज़ाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी (85)

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا

और जब मुशरिक लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब!

هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ

यही हमारे वे शुरका हैं जिनको हम तुझे छोड़ कर पुकारते थे,

فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٨٦﴾ ج وَاَلْقَوْا

तब वह बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूटे हो (86) उस दिन वह सब (आजिज़ होकर)

اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِنِ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

अल्लाह के सामने इताअत का इक़रार पेश करेंगे और जो झूठ वे बांधा करते थे वह सब

يَفْتَرُوْنَ ﴿٨٧﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ

उनसे गुम हो जाएगा (87) जिन्होंने इनकार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से

اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا

रोका हम उनके अज़ाब पर अज़ाब का इज़ाफ़ा करेंगे उस फ़साद की वजह से

يُفْسِدُوْنَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا

जो वे करते थे (88) और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से

عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى

उठाएंगे और आपको उन लोगों पर गवाह बनाकर

هٰۤؤُلَآءِ ط وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ

लाएंगे, और हमने आप पर किताब उतारी है हर चीज़ को खोल

شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ ع

देने के लिए, वह हिदायत और रहमत और बशारत है फ़रमाँबरदारों के लिए (89)

ركوع ١٢/١٨

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى

बेशक अल्लाह हुक्म देता है अदल का और एहसान का और रिश्तेदारों को

الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ج

देने का, और अल्लाह रोकता है खुली बेहयाई से और बुराई से और सरकशी से,

يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا

अल्लाह तुमको नसीहत करता है ताकि तुम सबक़ हासिल करो (90) और तुम अल्लाह के अहद को पूरा करो जबकि तुम

عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا

आपस में अहद कर लो, और क़समों को पक्का करने के बाद उनको न तोड़ो;

وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ط اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

हालाँकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर ज़ामिन भी बना चुके हो, बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ

مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا

तुम करते हो (91) और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपनी मेहनत से

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ط تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا

काता हुआ सूत टुकड़े टुकड़े करके तोड़ दिया, तुम अपनी क़समों को आपस में

بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ۭ

फ़साद डालने का ज़रिया बनाते हो महज़ इस वजह से एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए,

اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ۭ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ

अल्लाह इसके ज़रिए तुम्हारी आज़माइश करता है और वह क़ियामत के दिन उस चीज़ को

الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ

अच्छी तरह तुम पर ज़ाहिर कर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो (92) और अगर अल्लाह चाहता

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ

तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह बेराह कर देता है जिसको चाहता है

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَلَتُسْـَٔــلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

और हिदायत दे देता है जिसको चाहता है, और ज़रूर तुमसे तुम्हारे आमाल की पूछ गछ होगी (93)

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ

और तुम अपनी क़समों को आपस में फ़रेब का ज़रिया न बनाओ कि कोई क़दम जमने के बाद

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْۗءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ

फिसल जाए और तुम इस बात की सज़ा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا

रोका, और तुम्हारे लिए एक बड़ा अज़ाब है (94) और अल्लाह के अहद को

بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ

थोड़े फ़ायदे के लिए न बेचो, जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا

बेहतर है अगर तुम जानो (95) जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ

عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا

अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है, और जो लोग सब्र करेंगे

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ

हम उनके अच्छे कामों का अज्र उनको ज़रूर देंगे (96) जो कोई नेक काम

صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ

करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्तेकि वह मोमिन हो तो हम उसको ज़िंदगी देंगे

حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ اَجۡرَهُمۡ بِاَحۡسَنِ

एक अच्छी ज़िंदगी, और जो कुछ वे करते रहे हैं उसका हम उनको

مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ فَاسۡتَعِذۡ

बेहतरीन बदला देंगे (97) पस जब आप क़ुरआन को पढ़ें तो

بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ﴿٩٨﴾ اِنَّهٗ لَيۡسَ لَهٗ

शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगें (98) उसका ज़ोर उन लोगों पर

سُلۡطٰنٌ عَلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿٩٩﴾

नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं (99)

اِنَّمَا سُلۡطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيۡنَ يَتَوَلَّوۡنَهٗ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ

उसका ज़ोर तो सिर्फ़ उन लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक़ रखते हैं और जो अल्लाह के साथ

بِهٖ مُشۡرِكُوۡنَ ﴿١٠٠﴾ ع وَاِذَا بَدَّلۡنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ

शिर्क करते हैं (100) और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं,

وَّاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ ؕ

और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तुम घड़ लाए हो,

بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٠١﴾ قُلۡ نَزَّلَهٗ رُوۡحُ

बल्कि उनमें अकसर लोग इल्म नहीं रखते (101) कह दीजिए कि उसको रूहुल क़ुदुस ने तुम्हारे रब की

الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّكَ بِالۡحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

तरफ़ से हक़ के साथ उतारा है; ताकि वह ईमान वालों को साबित क़दम रखे

وَهُدًى وَّبُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَقَدۡ نَعۡلَمُ

और वह हिदायत और ख़ुशख़बरी हो फ़रमाँबरदारों के लिए (102) और हमको मालूम है

اَنَّهُمۡ يَقُوۡلُوۡنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىۡ

कि ये लोग कहते हैं कि इसको तो एक आदमी सिखाता है, जिस शख़्स की तरफ़

يُلۡحِدُوۡنَ اِلَيۡهِ اَعۡجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ

वे मंसूब करते हैं उसकी ज़बान अजमी है और यह (क़ुरआन) साफ़ अरबी

مُّبِيۡنٌ ﴿١٠٣﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ

ज़बान है (103) बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते

لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾ اِنَّمَا

अल्लाह उनको कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है (104) झूठ तो

يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ

वे लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं

اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ

रखते और यही लोग झूटे हैं (105) जो शख़्स ईमान लाने के बाद

بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ

अल्लाह से मुनकिर होगा सिवाए उसके जिसपर ज़बरदस्ती की गई हो बशर्तेकि उसका दिल

مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ

ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख़्स दिल खोल कर मुनकिर

صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ

हो जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उनको

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ

बड़ी सज़ा होगी (106) यह इस वास्ते कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में

الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

दुनिया की ज़िंदगी को पसंद किया, और अल्लाह मुनकिरों को रास्ता

الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

नहीं दिखाता (107) ये वे लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके

وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

कानों पर और उनकी आँख़ों पर मुहर कर दी, और ये लोग बिलकुल ग़ाफ़िल हैं (108)

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

लाज़मी बात है कि आख़िरत में ये लोग घाटे में रहेंगे (109)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا

फिर आपका रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आज़माइश में डाले जाने के बाद

فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ

हिजरत की फिर जिहाद किया और क़ायम रहे तो इन बातों के बाद

بَعۡدِهَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۱۰﴾ يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ نَفۡسٍ

बेशक आपका रब बख़्शने वाला, मेहरबान है (110) जिस दिन हर शख़्स अपनी ही

تُجَادِلُ عَنۡ نَّفۡسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ مَّا

तरफ़दारी में बोलता हुआ आएगा और हर शख़्स को उसके किए का

عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا

पूरा बदला मिलेगा और उनपर ज़ुल्म न किया जाएगा (111) और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल

قَرۡيَةً كَانَتۡ اٰمِنَةً مُّطۡمَئِنَّةً يَّاۡتِيۡهَا رِزۡقُهَا

बयान करता है कि वह अमन व इतमीनान में थे, उनको उनका रिज़्क़

رَغَدًا مِّنۡ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتۡ بِاَنۡعُمِ اللّٰهِ

फ़राग़त के साथ हर तरफ़ से पहुँच रहा था फिर उन्होंने अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री की

فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الۡجُوۡعِ وَالۡخَوۡفِ بِمَا كَانُوۡا

तो अल्लाह ने उनको उनके आमाल की वजह से भूख और ख़ौफ़ का

يَصۡنَعُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡهُمۡ

मज़ा चखाया (112) और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया

فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمُ الۡعَذَابُ وَهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾

तो उसको उन्होंने झूठा बताया फिर उनको अज़ाब ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे (113)

فَكُلُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشۡكُرُوۡا

पस जो चीज़ें अल्लाह ने तुमको हलाल और पाकीज़ा दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की

نِعۡمَتَ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا

नेमत का शुक्र करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो (114) उसने तो

حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةَ وَالدَّمَ وَلَحۡمَ الۡخِنۡزِيۡرِ وَمَاۤ

तुम पर सिर्फ़ मुर्दार को हराम किया है और ख़ून को और सुअर के गोश्त को और जिसपर

اُهِلَّ لِغَيۡرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ بَاغٍ

ग़ैर अल्लाह का नाम लिया गया हो, फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए बशर्तेकि वह न तालिब हो

وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَلَا تَقُوۡلُوۡا

और न हद से बढ़ने वाला हो तो अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (115) और अपनी ज़बानों के

لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا

घड़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह हलाल है और यह

حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

हराम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ, बेशक जो लोग

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ﴿۱۱۶﴾

अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे कामयाब नहीं होंगे (116)

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

वह थोड़ा सा फ़ायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (117)

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا

और यहूदियों पर हमने वह चीज़ें हराम कर दी थीं जो हम इससे पहले

عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

आपको बता चुके हैं, और हमने उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ

अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे (118) फ़िर आपका रब उन लोगों के लिए जिन्होंने

عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ

जिहालत की वजह से बुराई कर ली फिर उसके बाद

ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ

तौबा की और अपनी इस्लाह की तो आपका रब उसके बाद बख़्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾ ع اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ

मेहरबान है (119) बेशक इब्राहीम (अलै०) एक उम्मत (की तरह) थे (जो) अल्लाह के फ़रमाँबरदार

حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿۱۲۰﴾ شَاكِرًا

(और उसकी तरफ़) यकसू थे, और वे शिर्क करने वालों में से न थे (120) वह उसकी नेमतों का

لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾

शुक्र करने वाले थे, अल्लाह ने उसको चुन लिया और सीधे रास्ते की तरफ़ उसकी रहनुमाई की (121)

وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ

और हमने उसको दुनिया में भी भलाई दी और यक़ीनन आख़िरत में भी वे

لِمَنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ

अच्छे लोगों में से होगा (122) फिर हमने आपकी तरफ़ वह्य की कि इब्राहीम (अलै०) के

مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾

तरीक़े की पैरवी करें जो यकसू थे और वे शिर्क करने वालों में से न थे (123)

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ

सनीचर के दिन की अज़मत तो सिर्फ़ उन लोगों के ज़िम्मे ही ज़रूरी की गई थी जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ़ किया था,

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

और बेशक आपका रब क़ियामत के दिन उनके दरमियान फ़ैसला कर देगा जिस बात में वे

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ

इख़्तिलाफ़ कर रहे थे (124) अपने रब के रास्ते की तरफ़

بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ

हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ बुलाइए और उनसे अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए,

هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ

बेशक आपका रब ख़ूब जानता है कि कौन उसकी राह से

سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ

भटका हुआ है और वह उनको भी ख़ूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं (125) और अगर तुम बदला लो

فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ

तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है, और अगर तुम सब्र करो

لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ

तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है (126) और सब्र कीजिए, और आपका सब्र करना

اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ

अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है, और आप उन पर ग़म न करें और जो कुछ तदबीरें वे कर रहे हैं उससे

مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

तंग दिल न हों (127) बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेज़गार हैं

وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾ ع

और जो नेकी करने वाले हैं (128)

सूरह बनी इस्राईल मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर चंद आयतें (26, 32, 33, 57 और 73 से 80 तक) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई हैं, इसमें (111) आयतें और (12) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (50) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (17) नम्बर पर है और सूरह क़सस के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3460) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (533) कलिमात हैं

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِهٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ

पाक है वह अल्लाह जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे हराम से

اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنۡ

मस्जिदे अक़्सा तक ले गया जिसके पास हमने बरकत दे रखी है; इसलिए कि हम उसे अपनी क़ुदरत के

اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ ① وَاٰتَیۡنَا مُوۡسَی الۡکِتٰبَ

बअज़ नमूने दिखाएं, यक़ीनन अल्लाह ही ख़ूब सुनने वाला, देखने वाला है (1) और हमने मूसा (अलै०) को किताब दी

وَجَعَلۡنٰهُ هُدًی لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا مِنۡ

और उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना

دُوۡنِیۡ وَکِیۡلًا ؕ ② ذُرِّیَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّهٗ کَانَ

कारसाज़ न बनाओ (2) तुम उन लोगों की औलाद हो जिनको हमने नूह (अलै०) के साथ सवार किया था, बेशक वे

عَبۡدًا شَکُوۡرًا ③ وَقَضَیۡنَاۤ اِلٰی بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ فِی

एक शुक्रगुज़ार बंदे थे (3) और हमने बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था

الۡکِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِی الۡاَرۡضِ مَرَّتَیۡنِ وَلَتَعۡلُنَّ

कि तुम दो मर्तबा ज़मीन (मुल्के शाम) में ख़राबी करोगे और बड़ी

عُلُوًّا کَبِیۡرًا ④ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰىهُمَا بَعَثۡنَا عَلَیۡکُمۡ

सरकशी करोगे (4) फिर जब उनमें से पहला वादा आया तो हमने तुम पर

عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیۡ بَاۡسٍ شَدِیۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ

अपने बंदे भेजे निहायत ज़ोर वाले पस वे घरों में घुस पड़े

وَکَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ⑤ ثُمَّ رَدَدۡنَا لَکُمُ الۡکَرَّةَ عَلَیۡهِمۡ

और वादा पूरा होकर रहा (5) फिर हमने तुम्हारी बारी उनपर लौटा दी

وَاَمۡدَدۡنٰکُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّبَنِیۡنَ وَجَعَلۡنٰکُمۡ اَکۡثَرَ نَفِیۡرًا ⑥

और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुमको ज़्यादा बड़ी जमात बना दिया (6)

اِنۡ اَحۡسَنۡتُمۡ اَحۡسَنۡتُمۡ لِاَنۡفُسِكُمۡ وَاِنۡ اَسَاۡتُمۡ فَلَهَا

अगर तुम अच्छे काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरे काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे,

فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوۡهَكُمۡ وَلِيَدۡخُلُوا

फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरों को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल मुक़द्दस) में

الۡمَسۡجِدَ كَمَا دَخَلُوۡهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوۡا مَا عَلَوۡا

घुस जाएं जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज़ पर उनका ज़ोर चले उसको

تَتۡبِيۡرًا ۝۷ عَسٰى رَبُّكُمۡ اَنۡ يَّرۡحَمَكُمۡ وَاِنۡ عُدۡتُّمۡ

बरबाद करदें (7) क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर रहम करे, और अगर तुम फिर वही करोगे

عُدۡنَا ۘ وَجَعَلۡنَا جَهَنَّمَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ حَصِيۡرًا ۝۸ اِنَّ هٰذَا

तो हम भी वही करेंगे, और हमने जहन्नम को मुनकिरीन के लिए क़ैदख़ाना बना दिया है (8) बेशक यह

الۡقُرۡاٰنَ يَهۡدِىۡ لِلَّتِىۡ هِىَ اَقۡوَمُ وَيُبَشِّرُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

क़ुरआन वह राह दिखाता है जो बिलकुल सीधी है और वह ख़ुशख़बरी देता है ईमान वालों को

الَّذِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ اَجۡرًا كَبِيۡرًا ۝۹

जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज्र है (9)

وَّاَنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ اَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ عَذَابًا

और यह कि जो लोग आख़िरत को नहीं मानते उनके लिए हमने एक दर्दनाक अज़ाब

اَلِيۡمًا ۝۱۰ وَيَدۡعُ الۡاِنۡسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالۡخَيۡرِ

तैयार कर रखा है (10) और इंसान बुराई मांगता है जिस तरह उसको भलाई मांगना चाहिए,

وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ عَجُوۡلًا ۝۱۱ وَجَعَلۡنَا الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ

और इंसान बड़ा जल्दबाज़ है (11) और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ

اٰيَتَيۡنِ فَمَحَوۡنَاۤ اٰيَةَ الَّيۡلِ وَجَعَلۡنَاۤ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبۡصِرَةً

बनाया फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया;

لِّتَبۡتَغُوۡا فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَلِتَعۡلَمُوۡا عَدَدَ السِّنِيۡنَ

ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब

وَالۡحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ فَصَّلۡنٰهُ تَفۡصِيۡلًا ۝۱۲ وَكُلَّ

मालूम करो, और हमने हर चीज़ को ख़ूब खोल कर बयान किया है (12) और हमने

اِنۡسَانٍ اَلۡزَمۡنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیۡ عُنُقِهٖ ؕ وَنُخۡرِجُ لَهٗ یَوۡمَ

हर इंसान की बुराई भलाई को उसके गले लगा दिया है, और हम क़ियामत के दिन

الۡقِیٰمَةِ کِتٰبًا یَّلۡقٰهُ مَنۡشُوۡرًا ﴿۱۳﴾ اِقۡرَاۡ کِتٰبَكَ ؕ کَفٰی

उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसको वह खुला हुआ पाएगा (13) पढ़ अपनी किताब, आज

بِنَفۡسِكَ الۡیَوۡمَ عَلَیۡكَ حَسِیۡبًا ﴿۱۴﴾ؕ مَنِ اهۡتَدٰی فَاِنَّمَا

अपना हिसाब लेने के लिए तू ख़ुद ही काफ़ी है (14) जो शख़्स हिदायत की राह चलता है तो वह

یَهۡتَدِیۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیۡهَا ؕ

अपने ही लिए चलता है, और जो शख़्स बे राह होता है वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है,

احتیاط

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰی ؕ وَمَا کُنَّا مُعَذِّبِیۡنَ

और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ ना उठाएगा, और हम सज़ा नहीं देते जब तक कि

حَتّٰی نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَاۤ اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نُّهۡلِكَ قَرۡیَةً

हम किसी रसूल को न भेजें (15) और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं

اَمَرۡنَا مُتۡرَفِیۡهَا فَفَسَقُوۡا فِیۡهَا فَحَقَّ عَلَیۡهَا الۡقَوۡلُ

तो उसके ख़ुश ऐश लोगों को हुक्म देते हैं फिर वे उसमें नाफ़रमानी करते हैं, तब उनपर बात साबित हो जाती है

منزل ۴

فَدَمَّرۡنٰهَا تَدۡمِیۡرًا ﴿۱۶﴾ وَکَمۡ اَهۡلَکۡنَا مِنَ الۡقُرُوۡنِ

फिर हम उस बस्ती को तबाह व बरबाद कर देते हैं (16) और नूह (अलै०) के बाद हमने कितनी ही

مِنۡۢ بَعۡدِ نُوۡحٍ ؕ وَکَفٰی بِرَبِّكَ بِذُنُوۡبِ عِبَادِهٖ خَبِیۡرًۢا

क़ौमें हलाक करदीं, और आपका रब काफ़ी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए (और) उनको

بَصِیۡرًا ﴿۱۷﴾ مَنۡ کَانَ یُرِیۡدُ الۡعَاجِلَةَ عَجَّلۡنَا لَهٗ

देखने के लिए (17) जिसका इरादा सिर्फ़ इस जल्दी वाली दुनिया (फ़ौरी फ़ायदे) का ही हो उसे हम यहाँ

فِیۡهَا مَا نَشَآءُ لِمَنۡ نُّرِیۡدُ ثُمَّ جَعَلۡنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ

जिस क़दर जिसके लिए चाहें, फ़ौरन दे देते हैं, बिलआख़िर उसके लिए हम जहन्नम मुक़र्रर कर देते हैं

یَصۡلٰهَا مَذۡمُوۡمًا مَّدۡحُوۡرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنۡ اَرَادَ الۡاٰخِرَةَ

जहाँ वह बुरे हालों धुतकारा हुआ दाख़िल होगा (18) और जिसका इरादा आख़िरत का हो और जैसी कोशिश

وَسَعٰی لَهَا سَعۡیَهَا وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ کَانَ سَعۡیُهُمۡ

उसके लिए होनी चाहिए वह करता भी हो और वह ईमान वाला भी हो, पस यही लोग हैं जिनकी कोशिश की अल्लाह के पास

مَّشۡكُوۡرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَهٰۤؤُلَآءِ مِنۡ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ

पूरी क़द्रदानी की जाएगी (19) हम हर एक को आपके रब की बख़्शिश में से पहुँचाते हैं, उनको भी और इनको भी,

وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحۡظُوۡرًا ﴿۲۰﴾ اُنۡظُرۡ كَيۡفَ فَضَّلۡنَا

और आपके रब की बख़्शिश किसी के ऊपर बंद नहीं (20) देखिए हमने उनके एक को दूसरे पर

بَعۡضَهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ ؕ وَلَلۡاٰخِرَةُ اَكۡبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكۡبَرُ

किस तरह फ़ौक़ियत दी है, और यक़ीनन आख़िरत और भी ज़्यादा बड़ी है दर्जे के ऐतबार से और फ़ज़ीलत के

تَفۡضِيۡلًا ﴿۲۱﴾ لَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقۡعُدَ مَذۡمُوۡمًا

ऐतबार से (21) आप अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न बनाइए वरना आप बदहाल और बेकस होकर

مَّخۡذُوۡلًا ﴿۲۲﴾ ع وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَبِالۡوَالِدَيۡنِ

रह जाएंगे (22) और आपके रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ

اِحۡسَانًا ؕ اِمَّا يَبۡلُغَنَّ عِنۡدَكَ الۡكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوۡ كِلٰهُمَا

अच्छा सुलूक करो, अगर वे तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं उनमें से कोई एक या दोनों

فَلَا تَقُلۡ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنۡهَرۡهُمَا وَقُلۡ لَّهُمَا قَوۡلًا

तो उनको उफ़ न कहें और न उनको झिड़कें और उनसे

كَرِيۡمًا ﴿۲۳﴾ وَاخۡفِضۡ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحۡمَةِ

एहतराम के साथ बात करें (23) और उनके सामने नर्मी से आजिज़ी के बाज़ू झुका दें

وَقُلۡ رَّبِّ ارۡحَمۡهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِىۡ صَغِيۡرًا ﴿۲۴﴾ؕ رَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ

और कहिए कि ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमाइए जैसा कि उन्होंने मुझे बचपन में पाला (24) तुम्हारा रब

بِمَا فِىۡ نُفُوۡسِكُمۡ ؕ اِنۡ تَكُوۡنُوۡا صٰلِحِيۡنَ فَاِنَّهٗ كَانَ

ख़ूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है, अगर तुम नेक रहोगे तो वह

لِلۡاَوَّابِيۡنَ غَفُوۡرًا ﴿۲۵﴾ وَاٰتِ ذَا الۡقُرۡبٰى حَقَّهٗ وَالۡمِسۡكِيۡنَ

तौबा करने वालों को मुआफ़ कर देने वाला है (25) और रिश्तेदार को उसका हक़ दीजिए और मिस्कीन को

وَابۡنَ السَّبِيۡلِ وَلَا تُبَذِّرۡ تَبۡذِيۡرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الۡمُبَذِّرِيۡنَ

और मुसाफ़िर को और फ़ुज़ूलख़र्ची न करें (26) फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले

كَانُوۡۤا اِخۡوَانَ الشَّيٰطِيۡنِ ؕ وَكَانَ الشَّيۡطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوۡرًا ﴿۲۷﴾

शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है (27)

وَاِمَّا تُعۡرِضَنَّ عَنۡهُمُ ابۡتِغَآءَ رَحۡمَةٍ مِّنۡ رَّبِّكَ تَرۡجُوۡهَا

और अगर आपको अपने रब के फ़ज़्ल के इंतिज़ार में जिसकी आपको उम्मीद है उनसे ऐराज़ करना पड़े

فَقُلۡ لَّهُمۡ قَوۡلًا مَّيۡسُوۡرًا ﴿۲۸﴾ وَلَا تَجۡعَلۡ يَدَكَ مَغۡلُوۡلَةً

तो आप उनसे नर्मी की बात कहिए (28) और न तो अपना हाथ गर्दन से

اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبۡسُطۡهَا كُلَّ الۡبَسۡطِ فَتَقۡعُدَ مَلُوۡمًا

बांध लें और न खुला छोड़ दें कि आप बदहाल और आजिज़ बनकर

مَّحۡسُوۡرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ ؕ

रह जाएं (29) बेशक आपका रब जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़्क़ देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है,

اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيۡرًاۢ بَصِيۡرًا ﴿۳۰﴾ وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَوۡلَادَكُمۡ

बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है (30) और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के

خَشۡيَةَ اِمۡلَاقٍ ؕ نَحۡنُ نَرۡزُقُهُمۡ وَاِيَّاكُمۡ ؕ اِنَّ قَتۡلَهُمۡ

अंदेशे से क़त्ल न करो, हम उनको भी रिज़्क़ देते हैं और तुमको भी, बेशक उनको क़त्ल करना

كَانَ خِطۡاً كَبِيۡرًا ﴿۳۱﴾ وَلَا تَقۡرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ

बड़ा गुनाह है (31) और ज़िना के क़रीब भी न जाओ, यक़ीनन वह बेहयाई है

وَسَآءَ سَبِيۡلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا تَقۡتُلُوا النَّفۡسَ الَّتِىۡ حَرَّمَ اللّٰهُ

और बुरा रास्ता है (32) और जिस जान को अल्लाह ने मोहतरम ठहराया है उसको क़त्ल मत करो

اِلَّا بِالۡحَقِّ ؕ وَمَنۡ قُتِلَ مَظۡلُوۡمًا فَقَدۡ جَعَلۡنَا لِوَلِيِّهٖ

मगर हक़ पर, और जो शख़्स नाहक़ क़त्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार

سُلۡطٰنًا فَلَا يُسۡرِفۡ فِّى الۡقَتۡلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنۡصُوۡرًا ﴿۳۳﴾

दिया है पस वह क़त्ल में हद से न गुज़रे, बेशक उसकी मदद की जाएगी (33)

وَلَا تَقۡرَبُوۡا مَالَ الۡيَتِيۡمِ اِلَّا بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ حَتّٰى

और तुम यतीम के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो यहाँ तक कि वह

يَبۡلُغَ اَشُدَّهٗ ۖ وَاَوۡفُوۡا بِالۡعَهۡدِ ۚ اِنَّ الۡعَهۡدَ كَانَ

अपनी जवानी की उमर को पहुँच जाए, और अहद को पूरा करो, बेशक अहद की

مَسۡـُٔوۡلًا ﴿۳۴﴾ وَاَوۡفُوا الۡكَيۡلَ اِذَا كِلۡتُمۡ وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ

पूछ होगी (34) और जब नाप कर दो तो पूरा पूरा नापो और ठीक तराज़ू से

الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۳۵﴾ وَلَا تَقْفُ

तौल कर दो, यह बेहतर तरीक़ा है और उसका अंजाम भी अच्छा है (35) और ऐसी चीज़ के पीछे

مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ

न लगें जिसकी आपको ख़बर नहीं, बेशक कान और आँख और दिल

كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ﴿۳۶﴾ وَلَا تَمْشِ فِي

सब की आदमी से पूछ होगी (36) और ज़मीन में अकड़ कर

الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ

न चलें, आप ज़मीन को फाड़ नहीं सकते और न ही आप पहाड़ों की लम्बाई को

الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ

पहुँच सकते हो (37) ये सारे बुरे काम आपके रब के नज़दीक

مَكْرُوْهًا ﴿۳۸﴾ ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ

नापसंदीदा हैं (38) ये वे बातें हैं जो आपके रब ने हिकमत में से आपकी तरफ़ वह्य की हैं,

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا

और (ऐ इंसान) अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न बना वरना तुझे मलामत करके धक्के देकर दोज़ख़ में

مَّدْحُوْرًا ﴿۳۹﴾ اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ

फेंक दिया जाएगा (39) क्या तुम्हारे रब ने तुमको बेटे चुन कर दिए और अपने लिए

الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ ع وَلَقَدْ

फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना लीं, बेशक तुम बड़ी सख़्त बात कहते हो (40) और हमने

صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ

इस कुरआन में तरह तरह से बयान किया ताकि वे याद दहानी हासिल करें, लेकिन उनकी बेज़ारी बढ़ती ही

اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا

जा रही है (41) कह दीजिए कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद होते जैसा कि यह लोग कहते हैं तो वे

لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى

अर्श वाले की तरफ़ ज़रूर रास्ता निकालते (42) अल्लाह पाक और बरतर है

عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ

उससे जो ये लोग कहते हैं (43) उसी की पाकी बयान करते हैं सातों आसमान

منزل ٣

ع ٤

السَّبۡعُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِیۡهِنَّ ؕ وَاِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا

और ज़मीन और जो उनमें हैं, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो तारीफ़ के साथ उसकी

یُسَبِّحُ بِحَمۡدِهٖ وَلٰكِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِیۡحَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ

पाकी बयान न करती हो मगर तुम उनकी तसबीह को नहीं समझते, बेशक वह

كَانَ حَلِیۡمًا غَفُوۡرًا ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ جَعَلۡنَا بَیۡنَكَ

बुर्दबार है, बख़्शने वाला है (44) और जब आप क़ुरआन पढ़ते हो तो हम आपके

وَبَیۡنَ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسۡتُوۡرًا ﴿۴۵﴾

और उन लोगों के दरमियान एक छुपा हुआ परदा हाइल कर देते हैं जो आख़िरत को नहीं मानते (45)

وَّجَعَلۡنَا عَلٰی قُلُوۡبِهِمۡ اَكِنَّةً اَنۡ یَّفۡقَهُوۡهُ وَفِیۡۤ اٰذَانِهِمۡ

और हम उनके दिलों पर परदा रख देते हैं कि वे उसको न समझें और उनके कानों में गिरानी

وَقۡرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرۡتَ رَبَّكَ فِی الۡقُرۡاٰنِ وَحۡدَهٗ وَلَّوۡا عَلٰۤی

पैदा कर देते हैं, और जब आप क़ुरआन में तनहा अपने रब का ज़िक्र करते हो तो वे नफ़रत के साथ

اَدۡبَارِهِمۡ نُفُوۡرًا ﴿۴۶﴾ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا یَسۡتَمِعُوۡنَ بِهٖۤ اِذۡ

पीठ फेर लेते हैं (46) हम जानते हैं कि जब वे आपकी तरफ़ कान लगाते हैं तो वे

یَسۡتَمِعُوۡنَ اِلَیۡكَ وَاِذۡ هُمۡ نَجۡوٰۤی اِذۡ یَقُوۡلُ الظّٰلِمُوۡنَ

किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में काना फूसी करते हैं ये ज़ालिम लोग कहते हैं

اِنۡ تَتَّبِعُوۡنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسۡحُوۡرًا ﴿۴۷﴾ اُنۡظُرۡ كَیۡفَ ضَرَبُوۡا

कि तुम लोग बस एक जादू किए हुए इंसान के पीछे चल रहे हो (47) देखें तो सही कि वे आपके लिए

لَكَ الۡاَمۡثَالَ فَضَلُّوۡا فَلَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ سَبِیۡلًا ﴿۴۸﴾

क्या क्या मिसालें बयान करते हैं, पस वे बहक रहे हैं, अब तो राह पाना उनके बस में नहीं रहा (48)

وَقَالُوۡۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ خَلۡقًا

और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और रेज़ा हो जाएंगे तो क्या हम फिर से उठाए

جَدِیۡدًا ﴿۴۹﴾ قُلۡ كُوۡنُوۡا حِجَارَةً اَوۡ حَدِیۡدًا ﴿۵۰﴾ اَوۡ خَلۡقًا

जाएंगे (49) कह दीजिए कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ (50) या और कोई चीज़ जो तुम्हारे ख़्याल में

مِّمَّا یَكۡبُرُ فِیۡ صُدُوۡرِكُمۡ ۚ فَسَیَقُوۡلُوۡنَ مَنۡ یُّعِیۡدُنَا ؕ

उनसे भी ज़्यादा मुश्किल हो, फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमको दोबारा ज़िंदा करेगा,

قُلِ الَّذِیۡ فَطَرَکُمۡ اَوَّلَ مَرَّۃٍ ۚ فَسَیُنۡغِضُوۡنَ اِلَیۡکَ

आप कहिए कि वही जिसने तुमको पहली बार पैदा किया है, फिर वे आपके आगे अपने

رُءُوۡسَہُمۡ وَ یَقُوۡلُوۡنَ مَتٰی ہُوَ ؕ قُلۡ عَسٰۤی اَنۡ یَّکُوۡنَ

सर हिलाएंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कह दीजिए कि अजब नहीं कि उसका वक़्त

قَرِیۡبًا ﴿۵۱﴾ یَوۡمَ یَدۡعُوۡکُمۡ فَتَسۡتَجِیۡبُوۡنَ بِحَمۡدِہٖ وَ تَظُنُّوۡنَ

क़रीब आ पहुँचा हो (51) जिस दिन अल्लाह तुमको पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख़्याल करोगे कि

اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۵۲﴾ ع وَ قُلۡ لِّعِبَادِیۡ یَقُوۡلُوا الَّتِیۡ

तुम बहुत थोड़ी मुददत रह (52) और मेरे बंदों से कह दीजिए कि वही बात कहें

ہِیَ اَحۡسَنُ ؕ اِنَّ الشَّیۡطٰنَ یَنۡزَغُ بَیۡنَہُمۡ ؕ اِنَّ الشَّیۡطٰنَ

जो बेहतर हो, शैतान उनके दरमियान फ़साद डालता है, बेशक शैतान

کَانَ لِلۡاِنۡسَانِ عَدُوًّا مُّبِیۡنًا ﴿۵۳﴾ رَبُّکُمۡ اَعۡلَمُ بِکُمۡ ؕ

इंसान का खुला हुआ दुश्मन है (53) तुम्हारा रब तुमको ख़ूब जानता है,

اِنۡ یَّشَاۡ یَرۡحَمۡکُمۡ اَوۡ اِنۡ یَّشَاۡ یُعَذِّبۡکُمۡ ؕ وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ

अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुमको अज़ाब दे, और हमने आपको

عَلَیۡہِمۡ وَکِیۡلًا ﴿۵۴﴾ وَ رَبُّکَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ

उनका ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा (54) और आपका रब ख़ूब जानता है उनको जो आसमानों

وَ الۡاَرۡضِ ؕ وَ لَقَدۡ فَضَّلۡنَا بَعۡضَ النَّبِیّٖنَ عَلٰی بَعۡضٍ

और ज़मीन में हैं, और हमने बअज़ नबियों को बअज़ पर फ़ज़ीलत दी

وَّ اٰتَیۡنَا دَاوٗدَ زَبُوۡرًا ﴿۵۵﴾ قُلِ ادۡعُوا الَّذِیۡنَ زَعَمۡتُمۡ مِّنۡ

और हमने दाऊद (अलै०) को ज़बूर दी (55) कह दीजिए कि उनको पुकारो जिनको तुमने अल्लाह के सिवा

دُوۡنِہٖ فَلَا یَمۡلِکُوۡنَ کَشۡفَ الضُّرِّ عَنۡکُمۡ وَ لَا تَحۡوِیۡلًا ﴿۵۶﴾

माबूद समझ रखा है, वे न तुमसे किसी मुसीबत को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न उसको बदल सकते हैं (56)

اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ یَدۡعُوۡنَ یَبۡتَغُوۡنَ اِلٰی رَبِّہِمُ

जिनको ये लोग पुकारते हैं वे खुद अपने रब का क़ुर्ब ढूंडते हैं

الۡوَسِیۡلَۃَ اَیُّہُمۡ اَقۡرَبُ وَ یَرۡجُوۡنَ رَحۡمَتَہٗ وَ یَخَافُوۡنَ

कि उनमें से कौन सबसे ज़्यादा क़रीब हो जाए और वे अपने रब की रहमत के उम्मीदवार हैं और वे उसके अज़ाब से

عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ۝٥٧ وَاِنْ مِّنْ

डरते हैं, वाक़इ आपके रब का अज़ाब डरने ही की चीज़ है (57) और कोई बस्ती

قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا

ऐसी नहीं जिसको हम क़ियामत से पहले हलाक न करें या उसको

عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝٥٨

सख़्त अज़ाब न दें, यह बात किताब में लिखी हुई है (58)

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا

और हमको निशानियाँ भेजने से नहीं रोका मगर उस चीज़ ने कि अगलों ने उनको

الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ

झुटलाया, और हमने क़ौमे समूद को ऊँटनी दी थी जो आँखें खोलने के लिए काफ़ी थी मगर उन्होंने उसपर ज़ुल्म किया,

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝٥٩ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ

और हम निशानियाँ सिर्फ़ डराने के लिए भेजते हैं (59) और जब हमने आपसे कहा कि

رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْٓ اَرَيْنٰكَ

आपके रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है, और वह नज़ारा जो हमने आपको दिखाया

اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ

वह सिर्फ़ लोगों की जांच के लिए था और उस दरख़्त को भी जिसकी क़ुरआन में मज़म्मत की गई है,

وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝٦٠ وَاِذْ قُلْنَا

और हम उनको डराते हैं लेकिन उनकी ज़बरदस्त सरकशी बढ़ती ही जा रही है (60) और जब हमने

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अलै०) को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इबलीस ने नहीं किया, उसने कहाः

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۝٦١ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ

क्या मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूँ जिसको तूने मिट्टी से बनाया है? (61) उसने कहाः ज़रा देख! यह शख़्स

كَرَّمْتَ عَلَىَّ ز لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ

जिसको तूने मुझ पर इज़्ज़त दी है, अगर तू मुझको क़ियामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा

ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٦٢ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

उसकी तमाम औलाद को खा जाऊँगा (62) अल्लाह ने कहा कि जा उनमें से जो भी तेरा साथी बना

منزل ۴

فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمۡ جَزَآءً مَّوۡفُوۡرًا ﴿۶۳﴾ وَاسۡتَفۡزِزۡ مَنِ

तो जहन्नम तुम सबका पूरा पूरा बदला है (63) और उनमें से जिसपर

اسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُمۡ بِصَوۡتِكَ وَاَجۡلِبۡ عَلَيۡهِمۡ بِخَيۡلِكَ

तेरा बस चले तो अपनी आवाज़ से उनका क़दम उखाड़ दे और उनपर अपने सवार और पैदल सिपाही

وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِى الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَوۡلَادِ وَعِدۡهُمۡ‌ؕ وَمَا

चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर, और शैतान का

يَعِدُهُمُ الشَّيۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ

वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं (64) बेशक जो मेरे बंदे हैं उनपर तेरा ज़ोर

عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ‌ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيۡلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِىۡ يُزۡجِىۡ

नहीं चलेगा, और आपका रब काम बनाने के लिए काफ़ी है (65) तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए

لَـكُمُ الۡفُلۡكَ فِى الۡبَحۡرِ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ‌ؕ اِنَّهٗ كَانَ

समुंदर में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो, बेशक वह

بِكُمۡ رَحِيۡمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الۡبَحۡرِ ضَلَّ مَنۡ

तुम्हारे ऊपर मेहरबान है (66) और जब समुंदर में तुम पर कोई आफ़त आती है तो तुम उन माबूदों को

تَدۡعُوۡنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ‌ۚ فَلَمَّا نَجّٰٮكُمۡ اِلَى الۡبَرِّ اَعۡرَضۡتُمۡ‌ؕ

भूल जाते हो जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे, फिर जब वह तुमको ख़ुशकी की तरफ़ बचा लाता है तो तुम दोबारा फिर जाते हो,

وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ كَفُوۡرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمۡ

और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है (67) क्या तुम इससे बेख़ौफ़ हो गए कि अल्लाह तुमको ख़ुशकी की तरफ़

جَانِبَ الۡبَرِّ اَوۡ يُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ

लाकर ज़मीन में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना काम

وَكِيۡلًا ۙ‏ ﴿۶۸﴾ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ اَنۡ يُّعِيۡدَكُمۡ فِيۡهِ تَارَةً اُخۡرٰى

बनाने वाला न पाओग (68) या तुम इससे बेख़ौफ़ हो गए हो कि वह तुमको दोबारा उस (समुंदर) में ले जाए

فَيُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيۡحِ فَيُغۡرِقَكُمۡ بِمَا كَفَرۡتُمۡ‌ۙ

फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे और तुमको तुम्हारे इनकार की वजह से ग़र्क़ कर दे,

ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ عَلَيۡنَا بِهٖ تَبِيۡعًا ﴿۶۹﴾ وَلَقَدۡ كَرَّمۡنَا

फिर तुम उस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ (69) और हम ने आदम (अलै०) की औलाद को

بَنِیٓ اٰدَمَ وَحَمَلۡنٰهُمۡ فِی الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ وَرَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ

इज़्ज़त दी और हमने उनको ख़ुश्की और तरी में सवार किया और हमने उनको

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلۡنٰهُمۡ عَلٰى كَثِيۡرٍ مِّمَّنۡ خَلَقۡنَا

पाकीज़ा चीज़ों का रिज़्क़ दिया, और हमने उनको अपनी बहुत सी मख़्लूक़ात पर

تَفۡضِيۡلًا ﴿۷۰﴾ يَوۡمَ نَدۡعُوۡا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمۡ‌ۚ فَمَنۡ اُوۡتِىَ

फ़ौक़ियत दी (70) जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएंगे, पस जिसका आमाल नामा

كِتٰبَهٗ بِيَمِيۡنِهٖ فَاُولٰٓـئِكَ يَقۡرَءُوۡنَ كِتٰبَهُمۡ وَلَا يُظۡلَمُوۡنَ

उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा वे लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और उनके साथ ज़रा भी ना इंसाफ़ी

فَتِيۡلًا ﴿۷۱﴾ وَمَنۡ كَانَ فِىۡ هٰذِهٖۤ اَعۡمٰى فَهُوَ فِى الۡاٰخِرَةِ

नहीं की जाएगी (71) और जो शख़्स इस दुनिया में अंधा रहा वह आख़िरत में भी

اَعۡمٰى وَاَضَلُّ سَبِيۡلًا ﴿۷۲﴾ وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَفۡتِنُوۡنَكَ عَنِ

अंधा रहेगा वह बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से (72) और क़रीब था कि ये लोग फ़ितने में डाल कर आपको

الَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ لِتَفۡتَرِىَ عَلَيۡنَا غَيۡرَهٗ‌ ‌ۖ وَاِذًا

उससे हटा दें जो हमने आप पर वह्य की है ताकि आप उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात मंसूब करो, और तब वे

لَّاتَّخَذُوۡكَ خَلِيۡلًا ﴿۷۳﴾ وَلَوۡلَاۤ اَنۡ ثَبَّتۡنٰكَ لَقَدۡ كِدْتَّ

आपको अपना दोस्त बना लेते (73) और अगर हमने आपको जमाए न रखा होता तो क़रीब था कि आप

تَرۡكَنُ اِلَيۡهِمۡ شَيۡـئًا قَلِيۡلًا ﴿۷۴﴾ اِذًا لَّاَذَقۡنٰكَ ضِعۡفَ

उनकी तरफ़ कुछ झुक पड़ते (74) फिर हम आपको ज़िंदगी और मौत

الۡحَيٰوةِ وَضِعۡفَ الۡمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيۡنَا نَصِيۡرًا ﴿۷۵﴾

दोनों का दोहरा (अज़ाब) चखाते फिर उसके बाद आप हमारे मुक़ाबले में अपना कोई मददगार न पाते (75)

وَاِنۡ كَادُوۡا لَيَسۡتَفِزُّوۡنَكَ مِنَ الۡاَرۡضِ لِيُخۡرِجُوۡكَ

और ये लोग इस सरज़मीन से आपके क़दम उखाड़ने लगे थे ताकि आपको उससे

مِنۡهَا‌ وَاِذًا لَّا يَلۡبَثُوۡنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۷۶﴾ سُنَّةَ

निकाल दें, फिर ये भी आपके बाद बहुत ही कम ठहर पाते (76) जैसा कि उन रसूलों के

مَنۡ قَدۡ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنۡ رُّسُلِنَا‌ وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

बारे में हमारा तरीक़ा रहा है जिनको हमने आपसे पहले भेजा था और आप हमारे तरीक़े में

تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ

तबदीली न पाओगे (77) नमाज़ क़ायम कीजिए सूरज ढलने के बाद से रात के

الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾

अंधेरे तक और ख़ास कर फ़ज्र की क़िराअत, यक़ीनन फ़ज्र के वक़्त का क़ुरआन पढ़ना हाज़िर किया गया है (78)

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ

और रात को तहज्जुद पढ़िए यह नफ़्ल है आपके लिए, उम्मीद है कि आपका रब

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ

आपको मक़ामे महमूद पर खड़ा करे (79) और कहिए कि ऐ मेरे रब! मुझको दाख़िल कीजिए सच्चा

صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ

दाख़िल करना और मुझको निकालिए सच्चा निकालना, और मुझको अपने पास से

لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ

मददगार क़ुव्वत अता कीजिए (80) और कह दीजिए कि हक़ आया और बातिल

الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾ وَنُنَزِّلُ مِنَ

मिट गया, बेशक बातिल मिटने ही वाला था (81) और हम क़ुरआन में से

الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

उतारते हैं जिसमें शिफ़ा और रहमत है ईमान वालों के लिए, और ज़ालिमों के लिए

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ

उससे नुक़सान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता (82) और जब हम इंसान पर इनाम करते हैं

اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾

तो वे ऐराज़ करता है और पीठ फेर लेता है, और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है (83)

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ

कह दीजिए कि हर एक अपने तरीक़े पर अमल कर रहा है, अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन ज़्यादा

اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ

ठीक रास्ते पर है (84) और वे आपसे रूह के मुताल्लिक़ पूछते हैं, कह दीजिए कि रूह

مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

मेरे रब के हुक्म से है, और तुमको तो बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है (85)

وَلَئِنۡ شِئۡنَا لَنَذۡهَبَنَّ بِالَّذِیۡٓ اَوۡحَیۡنَآ اِلَیۡكَ ثُمَّ

और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने वह्य के ज़रिए आपको दिया है, फिर आप

لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیۡنَا وَكِیۡلًا ﴿٨٦﴾ اِلَّا رَحۡمَةً مِّنۡ

उसके लिए हमारे मुक़ाबले में कोई हिमायती न पाओ (86) मगर यह सिर्फ़ आपके

رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضۡلَهٗ كَانَ عَلَیۡكَ كَبِیۡرًا ﴿٨٧﴾ قُلۡ لَّئِنِ

रब की रहमत है, बेशक आपके ऊपर उसका बड़ा फ़ज़्ल है (87) कह दीजिए कि अगर

اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ هٰذَا

तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएं कि वे इस जैसा क़ुरआन बना लाएं

الۡقُرۡاٰنِ لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ وَلَوۡ كَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ

तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे; अगरचे वे एक दूसरे के मददगार

ظَهِیۡرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا لِلنَّاسِ فِیۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ

बन जाएं (88) और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म का मज़मून

مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰۤی اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿٨٩﴾

तरह तरह से बयान किया है, फिर भी अकसर लोग इंकार ही पर जमे रहे (89)

وَقَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰی تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ الۡاَرۡضِ

और वे कहते हैं कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा

یَنۡۢبُوۡعًا ﴿٩٠﴾ اَوۡ تَكُوۡنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِیۡلٍ وَّعِنَبٍ

जारी न कर दो (90) या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए

فَتُفَجِّرَ الۡاَنۡهٰرَ خِلٰلَهَا تَفۡجِیۡرًا ﴿٩١﴾ اَوۡ تُسۡقِطَ السَّمَآءَ

फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नहरें जारी करदो (91) या जैसाकि तुम कहते हो हमारे ऊपर

كَمَا زَعَمۡتَ عَلَیۡنَا كِسَفًا اَوۡ تَاۡتِیَ بِاللّٰهِ وَالۡمَلٰٓئِكَةِ

आसमान से टुकड़े गिरादो या अल्लाह और फ़रिश्तों को ला कर हमारे सामने

قَبِیۡلًا ﴿٩٢﴾ اَوۡ یَكُوۡنَ لَكَ بَیۡتٌ مِّنۡ زُخۡرُفٍ اَوۡ تَرۡقٰی

खड़ा कर दो (92) या तुम्हारे पास सोने का कोई घर हो जाए या तुम आसमान पर

فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنۡ نُّؤۡمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیۡنَا

चढ़ जाओ, और हम तुम्हारे चढ़ने को भी ना मानेंगे जब तक तुम वहाँ से हम पर कोई किताब

كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا

न उतार दो जिसे हम पढ़ें, कह दीजिए कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ़ एक इंसान हूँ

رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ

अल्लाह का रसूल (93) और जब उनके पास हिदायत आ गई तो उनको ईमान लाने से इसके सिवा

الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ

और कोई चीज़ मानेअ नहीं हुई कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने इंसान को रसूल बनाकर भेजा है (94) कह दीजिए कि

لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ یَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّیْنَ

अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते कि वे उसमें इतमीनान के साथ चलते फिरते तो अलबत्ता हम

لَنَزَّلْنَا عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفٰی

उन पर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बना कर भेजते (95) कहिए कि मेरे

بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए अल्लाह काफ़ी है, बेशक वह अपने बंदों को

خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ

जानने वाला, देखने वाला है (96) अल्लाह जिसको राह दिखाए वही राह पाने वाला है, और जिसको

یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ

वह बेराह कर दे तो आप उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओग, और हम क़ियामत के दिन

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَلٰی وُجُوْهِهِمْ عُمْیًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ

उनको उनके मुँह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे, उनका ठिकाना

جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِیْرًا ﴿٩٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ

जहन्नम है, जब जब उसकी आग धीमी होगी हम उसको मज़ीद भड़का देंगे (97) यह है उनका बदला

بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا

इस वजह से कि उन्होंने हमारी निशानियों का इनकार किया और कहा कि जब हम हड्डी और रेज़ा हो जाएंगे

ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِیْدًا ﴿٩٨﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

तो क्या हम दोबारा पैदा करके उठाए जाएंगे (98) क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने

الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓی اَنْ یَّخْلُقَ

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इस पर क़ादिर है कि उनके मानिंद दुबारा

منزل ٤

النصف

مِثۡلَهُمۡ وَجَعَلَ لَهُمۡ اَجَلًا لَّا رَيۡبَ فِيۡهِؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوۡنَ

पैदा करदे, और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है जिसमें कोई शक नहीं, इस पर भी ज़ालिम लोग

اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۹۹﴾ قُلْ لَّوۡ اَنۡتُمۡ تَمۡلِكُوۡنَ خَزَآٮِٕنَ رَحۡمَةِ رَبِّىۡۤ

बे सबब इनकार किए न रहे (99) कह दीजिए कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के मालिक होते

اِذًا لَّاَمۡسَكۡتُمۡ خَشۡيَةَ الۡاِنۡفَاقِؕ وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ قَتُوۡرًا ﴿۱۰۰﴾

तो इस सूरत में तुम ख़र्च हो जाने के अंदेशे से ज़रूर हाथ रोक लेते, और इंसान बड़ा ही तंग दिल है (100)

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسٰى تِسۡعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسۡـَٔلۡ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

और हमने मूसा (अलै०) को नौ खुली निशानियाँ दीं तो बनी इस्राईल से पूछ लीजिए

اِذۡ جَآءَهُمۡ فَقَالَ لَهٗ فِرۡعَوۡنُ اِنِّىۡ لَاَظُنُّكَ يٰمُوۡسٰى

जबकि वे उनके पास आए तो फिरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा! मेरे ख़्याल में तो ज़रूर तुम पर

مَسۡحُوۡرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَاۤ اَنۡزَلَ هٰٓؤُلَۤاءِ اِلَّا رَبُّ

किसी ने जादू कर दिया है (101) मूसा ने कहाः तुम ख़ूब जानते हो कि उनको आसमानों और ज़मीन के

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ بَصَآٮِٕرَۚ وَاِنِّىۡ لَاَظُنُّكَ يٰفِرۡعَوۡنُ

रब ही ने उतारा है आँखें खोल देने के लिए, और ए फ़िरऔन! मैं तो समझ रहा हूँ कि तुम यक़ीनन बरबाद व हलाक

مَثۡبُوۡرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنۡ يَّسۡتَفِزَّهُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ فَاَغۡرَقۡنٰهُ

किए गए हो (102) फिर फ़िरऔन ने चाहा कि उनको उस सरज़मीन से उखाड़ दे, पस हमने उसको और जो उसके

وَمَنۡ مَّعَهٗ جَمِيۡعًا ﴿۱۰۳﴾ ۙ وَّقُلۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ لِبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

साथ थे सबको ग़र्क़ कर दिया (103) और हमने उसके बाद बनी इस्राईल से कहा कि तुम

اسۡكُنُوا الۡاَرۡضَ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ جِئۡنَا بِكُمۡ لَفِيۡفًا ﴿۱۰۴﴾ ؕ

ज़मीन में रहो, फिर जब आख़िरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएंगे (104)

وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَؕ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا

और हमने क़ुरआन को हक़ के साथ उतारा है और वह हक़ ही के साथ उतरा है, और हमने आपको सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला

وَّنَذِيۡرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرۡاٰنًا فَرَقۡنٰهُ لِتَقۡرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى

और डराने वाला बना कर भेजा है (105) और हमने क़ुरआन को थोड़ा थोड़ा करके उतारा; ताकि आप उसको लोगों के सामने

مُكۡثٍ وَّنَزَّلۡنٰهُ تَنۡزِيۡلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلۡ اٰمِنُوۡا بِهٖۤ اَوۡ لَا تُؤۡمِنُوۡا ؕ

ठहर ठहर कर पढ़ें, और हमने उसको थोड़ा थोड़ा करके उतारा है (106) कह दीजिए कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ,

ع ۷ — منزل ۴ — وقف لازم

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ

वे लोग जिनको इससे पहले इल्म दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे

يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا

ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं (107) और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है,

إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ

बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा होता है (108) और वे ठोड़ियों के बल

يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩ ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ

السجدة

रोते हुए गिरते हैं और क़ुरआन उनका ख़ुशूअ बढ़ा देता है (109) कहिए कि अल्लाह कह कर पुकारो

ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ

या फिर रहमान कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो उसके लिए सब अच्छे नाम हैं,

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ

और आप अपनी नमाज़ न बहुत पुकार कर पढ़ें और न चुपके चुपके पढ़ें और दोनों के दरमियान का

ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ

तरीक़ा इख़्तियार करें (110) और कहिए कि तमाम ख़ूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जो

وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ

न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है और न

وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾ ع

कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार, और आप उसकी ख़ूब बड़ाई बयान कीजिए (111)

منزل ۴

ع ١٢

सूरह कहफ़ मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई मगर आयत (28) और आयत (83 से 101 तक) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई हैं, इसमें (110) आयतें और (12) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (69) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (18) नम्बर पर है और सूरह ग़ाशियह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (6360) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ	इसमें (1577) कलिमात हैं

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ

तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लायक़ हैं जिसने अपने बंदे पर यह क़ुरआन उतारा और उसमें

يَجْعَل لَّهُ عِوَجًا ۜ ﴿١﴾ قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّن

कोई कसर बाक़ी न छोड़ी (1) बिलकुल ठीक; ताकि वह अल्लाह की तरफ़ से एक

لَّدُنۡهُ وَيُبَشِّرَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ الَّذِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ

सख़्त अज़ाब से आगाह कर दे और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दे जो नेक आमाल करते हैं

اَنَّ لَهُمۡ اَجۡرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاكِثِيۡنَ فِيۡهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

कि उनके लिए अच्छा बदला है (2) वे उसमें हमेशा रहेंगे (3)

وَّيُنۡذِرَ الَّذِيۡنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ﴿۴﴾ۗ مَا لَهُمۡ بِهٖ

और उन लोगों को डरादे जो कहते हैं कि अल्ला ने बेटा बनाया है (4) उनको इस बात का

مِنۡ عِلۡمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمۡ ؕ كَبُرَتۡ كَلِمَةً تَخۡرُجُ مِنۡ

कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को, यह बड़ी भारी बात है जो उनके

اَفۡوَاهِهِمۡ ؕ اِنۡ يَّقُوۡلُوۡنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ

मुँह से निकल रही है, वे सिर्फ़ झूठ कहते हैं (5) शायद आप उनके पीछे

نَّفۡسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمۡ اِنۡ لَّمۡ يُؤۡمِنُوۡا بِهٰذَا الۡحَدِيۡثِ

ग़म से अपने आपको हलाक कर डालोगे अगर वे इस बात पर ईमान

اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا مَا عَلَى الۡاَرۡضِ زِيۡنَةً لَّهَا

ना लाए (6) रुए ज़मीन पर जो कुछ है हमने उसे ज़मीन की रोनक़ का बाइस बनाया है

لِنَبۡلُوَهُمۡ اَيُّهُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوۡنَ مَا

कि हम उन्हें आज़मा लें कि उनमें से कौन नेक आमाल करता है (7) और (ये भी यक़ीन रखो कि) रुए ज़मीन पर जो कुछ है

عَلَيۡهَا صَعِيۡدًا جُرُزًا ﴿۸﴾ؕ اَمۡ حَسِبۡتَ اَنَّ اَصۡحٰبَ

एक दिन हम उसे एक सपाट मैदान बना देंगे (8) क्या आप ख़्याल करते हो कि कहफ़

الۡكَهۡفِ وَالرَّقِيۡمِ كَانُوۡا مِنۡ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ اِذۡ اَوَى

और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे (9) जब उन

الۡفِتۡيَةُ اِلَى الۡكَهۡفِ فَقَالُوۡا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ

नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हमको अपने पास से

رَحۡمَةً وَّهَيِّئۡ لَنَا مِنۡ اَمۡرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبۡنَا

रहमत दीजिए और हमारे लिए हमारे मामले को दुरुस्त कर दीजिए (10) पस हमने ग़ार में

عَلٰٓى اٰذَانِهِمۡ فِى الۡكَهۡفِ سِنِيۡنَ عَدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ ثُمَّ

उनके कानों पर सालहा-साल के लिए (नींद का परदा) डाल दिया (11) फिर हमने

بَعَثۡنٰهُمۡ لِنَعۡلَمَ اَیُّ الۡحِزۡبَیۡنِ اَحۡصٰی لِمَا لَبِثُوۡۤا

उनको उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुद्दत का ज़्यादा ठीक

اَمَدًا ﴿۱۲﴾ ع نَحۡنُ نَقُصُّ عَلَیۡكَ نَبَاَهُمۡ بِالۡحَقِّ ؕ اِنَّهُمۡ

शुमार करता है (12) हम आपको उनका असल क़िस्सा सुनाते हैं, वे

فِتۡیَةٌ اٰمَنُوۡا بِرَبِّهِمۡ وَزِدۡنٰهُمۡ هُدًی ﴿۱۳﴾ قۖ وَّرَبَطۡنَا

कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मज़ीद तरक्क़ी दी (13) और हमने उनके

عَلٰی قُلُوۡبِهِمۡ اِذۡ قَامُوۡا فَقَالُوۡا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ

दिलों को मज़बूत कर दिया जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों

وَالۡاَرۡضِ لَنۡ نَّدۡعُوَا۠ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اِلٰـهًا لَّقَدۡ قُلۡنَاۤ

और ज़मीन का रब है, हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद को न पुकारेंगे, अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा

اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوۡمُنَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ

बात करेंगे (14) ये हमारी क़ौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद

اٰلِهَةً ؕ لَوۡلَا یَاۡتُوۡنَ عَلَیۡهِمۡ بِسُلۡطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ

बना रखे हैं, ये उनके हक़ में कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते,

فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ ط وَاِذِ

फिर उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे (15) और जब तुम

اعۡتَزَلۡتُمُوۡهُمۡ وَمَا یَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاۡوٗۤا اِلَی الۡكَهۡفِ

उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं तो अब चल कर ग़ार में पनाह लो

یَنۡشُرۡ لَكُمۡ رَبُّكُمۡ مِّنۡ رَّحۡمَتِهٖ وَیُهَیِّئۡ لَكُمۡ مِّنۡ

तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा और तुम्हारे काम के लिए सरो-सामान

اَمۡرِكُمۡ مِّرۡفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَی الشَّمۡسَ اِذَا طَلَعَتۡ تَّزٰوَرُ

मुहैया करेगा (16) और आप सूरज को देखते हो कि जब वह तुलू होता है तो उनके ग़ार से

عَنۡ كَهۡفِهِمۡ ذَاتَ الۡیَمِیۡنِ وَاِذَا غَرَبَتۡ تَّقۡرِضُهُمۡ

दाएं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है उनसे बाएं तरफ़ को

ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمۡ فِیۡ فَجۡوَةٍ مِّنۡهُ ؕ ذٰلِكَ مِنۡ

कतराता जाता है और वे ग़ार के अंदर एक वसीअ जगह में हैं, यह अल्लाह की

اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ

निशानियों में से है, जिसको अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसको अल्लाह बेराह कर दे

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا

तो आप उसके लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाओगे (17) और आप उन्हें देख कर यह समझते कि वे जाग रहे हैं;

وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ

हालाँकि वे सो रहे थे, हम उनको दाएं और बाएं करवट बदलवाते

الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

रहते थे, और उनका कुत्ता ग़ार के मुँह पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था, अगर आप उनको झांक कर

عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और आपके अंदर उनकी दहशत बैठ जाती (18)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ

और इसी तरह हमने उनको जगाया ताकि वे आपस में पूछ गछ करें, उनमें से एक कहने वाले

مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ

ने कहा: तुम कितनी देर यहाँ ठहरे? उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे,

قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ

वे बोले कि तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहाँ रहे पस अपने में से किसी को

بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا

यह चाँदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीज़ा खाना कहाँ मिलता है

فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ

और तुम्हारे लिए उसमें से कुछ खाना लाए, और वह नर्मी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर

بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ

न होने दे (19) अगर वे तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुमको पत्थरों से मार डालेंगे

اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

या तुमको अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी कामयाबी न पाओगे (20)

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

और इस तरह हमने उनपर लोगों को मुत्तला कर दिया; ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा

ع٢ ٥

منزل ٤

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان النون بعدها الياء من النصف الاول والدال الثانية من النصف الاخير

حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيۡبَ فِيۡهَا ۚ اِذۡ يَتَنَازَعُوۡنَ

सच्चा है और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, जब लोग आपस में उनके

بَيۡنَهُمۡ اَمۡرَهُمۡ فَقَالُوا ابۡنُوۡا عَلَيۡهِمۡ بُنۡيَانًا ؕ رَبُّهُمۡ

मामले में झगड़ रहे थे फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो, उनका रब

اَعۡلَمُ بِهِمۡ ؕ قَالَ الَّذِيۡنَ غَلَبُوۡا عَلٰٓى اَمۡرِهِمۡ لَنَتَّخِذَنَّ

उनको ख़ूब जानता है, जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके ग़ार पर

عَلَيۡهِمۡ مَّسۡجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوۡلُوۡنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمۡ

एक इबादत गाह बनाएंगे (21) कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे और चौथा

كَلۡبُهُمۡ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ خَمۡسَةٌ سَادِسُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ

उनका कुत्ता था, और कुछ लोग कहेंगे कि वे पाँच थे और छटा उनका कुत्ता था,

رَجۡمًاۢ بِالۡغَيۡبِ ۚ وَيَقُوۡلُوۡنَ سَبۡعَةٌ وَّثَامِنُهُمۡ كَلۡبُهُمۡ ؕ

ये लोग बे तहक़ीक़ बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था,

قُلۡ رَّبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِعِدَّتِهِمۡ مَّا يَعۡلَمُهُمۡ اِلَّا قَلِيۡلٌ ۙ۬

कह दीजिए कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वे कितने थे, थोड़े ही लोग उनको जानते हैं,

فَلَا تُمَارِ فِيۡهِمۡ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۖ وَّلَا تَسۡتَفۡتِ فِيۡهِمۡ

पस आप सरसरी बात से ज़्यादा उनके मामले में बहस न करें और न उनके बारे में उनमें से

مِّنۡهُمۡ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُوۡلَنَّ لِشَاۡىۡءٍ اِنِّىۡ فَاعِلٌ

किसी से पूछें (22) और आप किसी काम के बारे में यूँ न कहें कि मैं उसको

ذٰلِكَ غَدًا ۙ﴿٢٣﴾ اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ وَاذۡكُرۡ رَّبَّكَ

कल कर दूंगा (23) मगर यह कि अल्लाह चाहे, और जब आप भूल जाएं

اِذَا نَسِيۡتَ وَقُلۡ عَسٰٓى اَنۡ يَّهۡدِيَنِ رَبِّىۡ لِاَقۡرَبَ

तो अपने रब को याद करें और कहिए कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझको भलाई की इससे ज़्यादा

مِنۡ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوۡا فِىۡ كَهۡفِهِمۡ ثَلٰثَ مِائَةٍ

क़रीब राह दिखा दे (24) और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे

سِنِيۡنَ وَازۡدَادُوۡا تِسۡعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا

और(कुछ लोग मुददत के शुमार में) नौ साल और बढ़ गए (25) कह दीजिए कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को

لَبِثُوۡا ۚ لَهٗ غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اَبۡصِرۡ بِهٖ
ज़्यादा जानता है, आसमानों और ज़मीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला
وَاَسۡمِعۡ ؕ مَا لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّلِىٍّ ۫ وَّلَا يُشۡرِكُ
और सुनने वाला, अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को
فِىۡ حُكۡمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ وَاتۡلُ مَاۤ اُوۡحِىَ اِلَيۡكَ مِنۡ
अपने इख़्तियार में शरीक करता है (26) और आपके रब की जो किताब आप पर वह्य की जा रही है
كِتَابِ رَبِّكَ ۚؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚۖ وَلَنۡ تَجِدَ مِنۡ
उसको सुनाइए, अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और उसके सिवा आप
دُوۡنِهٖ مُلۡتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصۡبِرۡ نَفۡسَكَ مَعَ الَّذِيۡنَ
कोई पनाह नहीं पा सकते (27) और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखिए
يَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَدٰوةِ وَالۡعَشِىِّ يُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَهٗ
जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रिज़ा के तालिब हैं,
وَلَا تَعۡدُ عَيۡنٰكَ عَنۡهُمۡ ۚ تُرِيۡدُ زِيۡنَةَ الۡحَيٰوةِ
और आपकी आँखें दुनियावी ज़िंदगी की रौनक़ की ख़ातिर उनसे हटने
الدُّنۡيَا ۚ وَلَا تُطِعۡ مَنۡ اَغۡفَلۡنَا قَلۡبَهٗ عَنۡ ذِكۡرِنَا
न पाए, और आप ऐसे शख़्स का कहना न मानें जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया
وَاتَّبَعَ هَوٰٮهُ وَكَانَ اَمۡرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الۡحَقُّ مِنۡ
और वह अपनी ख़्वाहिश पर चलता है और उसका मामला हद से गुज़र गया है (28) और कह दीजिए कि यह हक़ है
رَّبِّكُمۡ ۚ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡيُؤۡمِنۡ وَّمَنۡ شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡ ۚ
तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस जो शख़्स चाहे उसे माने और जो शख़्स चाहे न माने,
اِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا لِلظّٰلِمِيۡنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمۡ سُرَادِقُهَا ؕ
हमने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी क़नातें उनको अपने घेरे में ले लेंगी,
وَاِنۡ يَّسۡتَغِيۡثُوۡا يُغَاثُوۡا بِمَآءٍ كَالۡمُهۡلِ يَشۡوِى الۡوُجُوۡهَ ؕ
और अगर वे पानी के लिए फ़रयाद करेंगे तो उनकी मदद ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तिलछट की तरह होगा जो चेहरों को
بِئۡسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ
भून डालेगा, क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना (29) बेशक जो लोग

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ

ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र ज़ाए नहीं करेंगे जो अच्छी तरह

عَمَلًا ۞ ۳۰ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ

काम करें (30) ये वे लोग हैं जिनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, उनके नीचे से

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

नहरें बहती होंगी, उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएंगे

وَّیَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ

और वह ऊँची मसनदों पर तकिया लगाए हुए बारीक और दबीज़ रेशम के

مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَی الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ

सब्ज़ कपड़े पहने होंगे, कितना बेहतरीन अज्र है और कैसी हसीन

مُرْتَفَقًا ۞ ۳۱ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَیْنِ جَعَلْنَا

आरामगाह है (31) और उन्हें दो शख़्सों की मिसाल भी सुना दीजिए जिनमें से एक को

لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَیْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ

हमने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे और जिन्हें हमने खजूर के दरख़्तों से घेर रखा था

وَّجَعَلْنَا بَیْنَهُمَا زَرْعًا ۞ ۳۲ كِلْتَا الْجَنَّتَیْنِ اٰتَتْ

और दोनों के दरमियान खेती लगा रखी थी (32) दोनों बाग़ अपना पूरा

اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَیْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا

फल लाए और उनमें कुछ कमी नहीं की, और दोनों बाग़ों के बीच हमने नहर

نَهَرًا ۞ ۳۳ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ یُحَاوِرُهٗٓ

जारी कर दी (33) और उसको ख़ूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा

اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۞ ۳۴ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ

कि मैं तुझसे माल में ज़्यादा हूँ और तादाद में भी ज़्यादा ताक़तवर हूँ (34) वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ

وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِیْدَ هٰذِهٖٓ

और वह अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था, उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बरबाद

اَبَدًا ۞ ۳۵ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ

हो जाएगा (35) और में नहीं समझता कि क़ियामत कभी आएगी, और अगर मैं अपने

रब की तरफ़ लौटा दिया गया तो ज़रूर इससे ज़्यादा अच्छी जगह मुझको मिलेगी (36) उसके साथी ने उससे बात करते हुए कहाः क्या तुम उस ज़ात से इनकार कर रहे हो जिसने तुमको मिटटी से बनाया फिर पानी की एक बूंद से फिर तुमको पूरा आदमी बनाया (37) लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता (38) और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बग़ैर किसी में कोई क़ुव्वत नहीं, अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुमसे कम हूँ (39) तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझको तुम्हारे बाग़ से बेहतर बाग़ देदे और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे जिससे वह बाग़ साफ़ मैदान होकर रह जाए (40) या उसका पानी ख़ुश्क हो जाए फिर तुम उसको किसी तरह न पा सको (41) और उसके (सारे) फल घेर लिए गए, पस वह अपने उस ख़र्च पर हाथ मलने लगा जो उसने उसमें किया था और वह बाग़ तो औंधा उलटा पड़ा था, और वह शख़्स कह रहा था कि काश! मैं अपने रब के साथ किसी को भी शरीक न करता (42) उसकी हिमायत में कोई जमात न उठी कि अल्लाह से

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿۴۳﴾ هُنَالِكَ

उसका बचाव करती और न वे ख़ुद ही बदला लेने वाला बन सका (43) यहाँ

الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿۴۴﴾ ع

सारा इख़्तियार सिर्फ़ ख़ुदाए बरहक़ का है, वह बेहतरीन अज्र और बेहतरीन अंजाम वाला है (44)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ

और उनको दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल सुनाईए जैसेकि पानी जिसको हमने आसमान से

مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ

उतारा फिर उससे ज़मीन की नबातात ख़ूब घनी हो गई फिर वे रेज़ा रेज़ा

هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हो गई जिसको हवाएं उड़ाती फिरती हैं, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत

مُّقْتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

रखने वाला है (45) माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की रोनक़ हैं,

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ

और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ आपके रब के नज़दीक सवाब के ऐतबार से और तवक़्क़ो के ऐतबार से

اَمَلًا ﴿۴۶﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ

बेहतर हैं (46) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और आप देखोगे ज़मीन को बिलकुल खुली हुई

وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ ۚ وَعُرِضُوْا

और हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे (47) और सब लोग

عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

आपके रब के सामने सफ़ बांध कर पेश किए जाएंगे, तुम हमारे पास आगए जिस तरह हमने तुमको

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿۴۸﴾

पहली बार पैदा किया था; बलकि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वायदे का वक़्त मुक़र्रर नहीं करेंगे (48)

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ

और रजिस्टर रखा जाएगा तो आप मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वह उससे

مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

डरते होंगे और कहेंगे कि हाय हमारी ख़राबी! कैसी है यह किताब

ع ۱۷ ۵ ۱۴

منزل ۴

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ

कि उसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात,

وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ

और जो कुछ उन्होंने किया है वह सब सामने पाएंगे, और आपका रब किसी के ऊपर ज़ुल्म न

اَحَدًا ۝٤٩ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

करेगा (49) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अलै०) को सज्दा करो

فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ

तो उन्होंने सज्दा किया मगर इबलीस ने न किया, वह जिन्नात में से था पस उसने अपने रब के

عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ

हुक्म की नाफ़रमानी की, अब क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ

बनाते हो; हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं, यह ज़ालिमों के लिए बुरा

بَدَلًا ۝٥٠ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

बदल है (50) मैंने उनको न आसमानों और ज़मीन को पैदा करने के वक़्त बुलाया और न ख़ुद

وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ

उनके पैदा करने के वक़्त बुलाया, और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना

عَضُدًا ۝٥١ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ

मददगार बनाऊँ (51) और जिस दिन अल्लाह कहेगा कि जिन को तुम मेरा शरीक समझते थे

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ

उनको पुकारो, पस वे उनको पुकारेंगे मगर वे उनका कोई जवाब ना देंगे

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝٥٢ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ

और हम उनके दरमियान हलाकत का सामान कर देंगे (52) और मुजरिम लोग आग को देखेंगे

فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا

और समझ लेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और वह उससे बचने की कोई राह

مَصْرِفًا ۝٥٣ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ

न पाएंगे (53) और हमने इस क़ुरआन में लोगों की हिदायत के लिए

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ

हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, और इंसान सबसे ज़्यादा

جَدَلًا (٥٤) وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ

झगड़ालू है (54) और जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो अब उन्हें ईमान लाने

الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

और अपने रब से मुआफ़ी मांगने से इस (मुतालबे) के सिवा कोई और चीज़ नहीं रोक रही कि उनके साथ

سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا (٥٥)

पिछले लोगों जैसे वाक़िआत पेश आ जाएं या अज़ाब उनके बिलकुल सामने आ खड़ा हो (55)

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ

और रसूलों को हम सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं,

وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ

और मुनकिर लोग नाहक़ की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं; ताकि उसके ज़रिए से हक़ को

الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا (٥٦)

नीचा कर दें, और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उनको मज़ाक़ बना दिया (56)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ

और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जिसको उसके रब की आयात के ज़रिए याद दिहानी की जाए तो वह उससे

عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى

मुँह फेर ले और अपने हाथों के अमल को भूल जाए, हमने उनके दिलों पर

قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ

परदे डाल दिए हैं कि वह उसको न समझें और उनके कानों में बोझ है,

وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا (٥٧)

और अगर आप उनको हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह कभी राह पर आने वाले नहीं हैं (57)

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

और आपका रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है, अगर वह उनके किए पर उन्हें

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ

पकड़े तो फ़ौरन उनपर अज़ाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुक़र्रर वक़्त है

لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى

(और) वह उसके मुक़ाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे (58) और ये बस्तियाँ हैं

اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ

जिनको हमने हलाक कर दिया जबकि वे ज़ालिम हो गए, और हमने उनकी हलाकत का एक वक़्त

مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى

मुक़र्रर किया था (59) और जब मूसा (अलै०) ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूंगा यहाँ तक कि

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا

या तो दो दरयाओं के मिलने की जगह पहुँच जाऊँ या इसी तरह बरसों तक चलता रहूँ (60) पस जब वे

مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ

दरियाओं के मिलने की जगह पहुँचे तो वे अपनी मछली को भूल गए, और मछली ने

فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا

दरिया में अपनी राह बनाली (61) फिर जब वह आगे बढ़े तो मूसा (अलै०) ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना

غَدَآءَنَا ز لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

लाओ, हमारे इस सफ़र से हम को बड़ी तकान हो गई है (62)

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ

शागिर्द ने कहा: क्या आपने देखा जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को

الْحُوْتَ ز وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ج

भूल गया, और मुझको शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता,

وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ

और मछली अजीब तरीक़े से निकल कर दरिया में चली गई (63) मूसा (अलै०) ने कहा: उसी

مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

मोक़े की तो हमें तलाश थी, पस दोनों अपने क़दमों के निशान देख़ते हुए वापस लौटे (64)

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ

तो उन्होंने वहाँ हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसको हमने अपने पास से रहमत

عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ

दी थी और जिसको हमने अपने पास से इल्म सिखाया था (65) मूसा (अलै०) ने

مُوۡسٰی هَلۡ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤی اَنۡ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمۡتَ

उससे कहा: क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ; ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको

رُشۡدًا ﴿۶۶﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۶۷﴾

सिखाया गया है (66) उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते (67)

وَكَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلٰى مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهٖ خُبۡرًا ﴿۶۸﴾

और तुम उस चीज़ पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी जानकारी के दायरे से बाहर है (68)

قَالَ سَتَجِدُنِىۡۤ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعۡصِىۡ

मूसा (अलै०) ने कहा इन्शा-अल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी

لَكَ اَمۡرًا ﴿۶۹﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعۡتَنِىۡ فَلَا تَسۡـَٔلۡنِىۡ

नाफ़रमानी नहीं करूंगा (69) उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात

عَنۡ شَىۡءٍ حَتّٰۤى اُحۡدِثَ لَكَ مِنۡهُ ذِكۡرًا ﴿۷۰﴾ ع

ना पूछना जब तक कि मैं ख़ुद तुमसे उसका ज़िक्र ना करूँ (70)

فَانۡطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيۡنَةِ خَرَقَهَا ‌ؕ

फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख़्स ने कश्ती में सूराख़ कर दिया,

قَالَ اَخَرَقۡتَهَا لِتُغۡرِقَ اَهۡلَهَا ‌ۚ لَقَدۡ جِئۡتَ

मूसा (अलै०) ने कहा: क्या आपने इस कश्ती में इस लिए सूराख़ किया है कि कश्ती वालों को ग़र्क़ कर दें, यह तो आपने बड़ी सख़्त

شَيۡـًٔـا اِمۡرًا ﴿۷۱﴾ قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ

चीज़ कर डाली (71) उसने कहा: मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ

مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۷۲﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذۡنِىۡ بِمَا نَسِيۡتُ

सब्र न कर सकोगे (72) मूसा (अलै०) ने कहा: मेरी भूल पर मुझको न पकड़िए

وَلَا تُرۡهِقۡنِىۡ مِنۡ اَمۡرِىۡ عُسۡرًا ﴿۷۳﴾ فَانۡطَلَقَا ٚ

और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए (73) फिर वह दोनों चले,

حَتّٰۤى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلۡتَ نَفۡسًا

यहाँ तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख़्स ने उसको मार डाला, मूसा (अलै०) ने कहा: क्या आपने

زَكِيَّةً ۢ بِغَيۡرِ نَفۡسٍ ؕ لَقَدۡ جِئۡتَ شَيۡـًٔـا نُّكۡرًا ﴿۷۴﴾

एक मासूम जान को मार डाला हालाँकि उसने किसी का ख़ून नहीं किया था, बेशक आपने तो बड़ी नापसंदीदा हरकत की (74)

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

उस शख़्स ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे (75)

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَىْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِىْ ۚ

मूसा (अलै॰) ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज़ के मुताल्लिक़ पूछूँ तो आप मुझको साथ न रखें,

قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّىْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۜ حَتّٰٓى

आप मेरी तरफ़ से उज़्र की हद को पहुँच गए (76) फिर दोनों चले यहाँ तक कि वे

اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨ اسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا

एक बस्ती वालों के पास पहुँचे तो वहाँ वालों से खाने को मांगा मगर उन्होंने उनकी

اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ

मेज़बानी से इनकार कर दिया, फिर उनको वहाँ एक दीवार मिली जो गिरने ही

يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ

वाली थी तो उसने उस (दीवार) को सीधा कर दिया, मूसा (अलै॰) ने कहा: अगर आप चाहते तो इसपर कुछ उजरत

اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِىْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ

ले लेते (77) उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई (का मोक़ा) है, मैं तुमको उन चीज़ों की

بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ

हक़ीक़त बताऊँगा जिन पर तुम सब्र न कर सके (78) कश्ती का मामला यह है कि वह

فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ

चंद मिस्कीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे, तो मैंने चाहा कि उसको ऐबदार

اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

कर दूँ, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को ज़बरदस्ती छीन कर

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ

ले लेता था (79) और लड़के का यह मामला है कि उसके माँ-बाप ईमानदार थे

فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَآ اَنْ

पस हमको अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और कुफ़्र से उनको तंग करेगा (80) पस हमने चाहा कि

يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

उनका रब उनको उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीज़गी में उससे बेहतर हो और शफ़क़त करने वाली हो (81)

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ

और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उस दीवार के नीचे

تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ

उनका एक ख़ज़ाना दफ़न था और उनका बाप एक नेक आदमी था, पस आपके रब ने चाहा कि

اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً

वे दोनों अपनी जवानी की उमर को पहुँचें और अपना ख़ज़ाना निकालें, यह आपके रब की

مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ

रहमत से हुआ और मैंने इसको अपनी राय से नहीं किया, यह है हक़ीक़त उन बातों की जिन पर

تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ

आप सब्र न कर सके (82) और वे आपसे ज़ुल्क़रनैन का हाल पूछते हैं,

قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ ؕ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى

कह दीजिए कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा (83) हमने उसको ज़मीन में

الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ ۙ فَاَتْبَعَ

इक़्तिदार दिया था और हमने उसको हर चीज़ का सामान दिया था (84) जिसके नतीजे में वह एक रास्ते के पीछे

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ

चल पड़ा (85) यहाँ तक कि जब वह सूरज के ग़ुरूब होने के मक़ाम तक पहुँच गया तो उसने सूरज को देखा कि वह

فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا

एक काले पानी में डूब रहा है और वहाँ उसको एक क़ौम मिली, हमने कहा कि ऐ ज़ुल्क़रनैन!

الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ

तुम चाहो तो इनको सज़ा दो और चाहो तो इनके साथ अच्छा सुलूक

حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ

करो (86) उसने कहा कि जो इनमें से ज़ुल्म करेगा हम उसको सज़ा देंगे फिर वह अपने रब के

اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ

पास पहुँचाया जाएगा फिर वह उसको सख़्त सज़ा देगा (87) और जो शख़्स ईमान लाएगा

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ

और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छा बदला है और हम भी उसके साथ

ع ١٢

منزل ٤

اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ

आसान मामला करेंगे (88) फिर वह एक राह पर चला (89) यहाँ तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह

الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ

पहुँचा तो उसने सूरज को ऐसी क़ौम पर तुलू होते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर

دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ۗ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

कोई आड़ नहीं रखी थी (90) यह इसी तरह है, और हम ज़ुल्क़रनैन के अहवाल से बाख़बर हैं (91)

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ

फिर वह एक राह पर चला (92) यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ों के दरमियान पहुँचा तो उनके पास

مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا

उसने एक क़ौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी (93) उन्होंने कहा:

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ

ऐ ज़ुल्क़रनैन! याजूज और माजूज इस ज़मीन में फ़साद फैलाने वाले लोग हैं

فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ

तो क्या हम आपको कुछ माल की पेशकश कर सकते हैं जिसके बदले आप हमारे और उनके दरमियान

سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ

कोई दीवार बना दें (94) ज़ुल्क़रनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है, तुम मेहनत से

اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ

मेरी मदद करो मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक दीवार बना दूंगा (95) तुम मुझे लोहे के तख़्ते लाकर दो,

حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰٓى

यहाँ तक कि जब उसने दोनों के दरमियान ख़ला को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक

اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

कि जब उसको आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उसपर पिघला हुआ तांबा डाल दूँ (96)

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

पस याजूज व माजूज न उसपर चढ़ सकते थे और न उसमें सूराख़ कर सकते थे (97)

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ

ज़ुल्क़रनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वे इसको ढा कर

دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ

बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है (98) और उस दिन हम लोगों को

يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ

छोड़ देंगे, वह मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे और सूर फूंका जाएगा पस हम सबको

جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

एक साथ जमा करेंगे (99) और उस दिन हम जहन्नम को मुनकिरों के सामने लाएंगे (100)

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

जिनकी आँखों पर हमारी याद दहानी से परदा पड़ा रहा और वह कुछ सुनने के लिए

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ

तैयार न थे (101) क्या इनकार करने वाले यह समझते हैं कि वे

يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ

मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना दोस्त बनाएंगे, हमने काफ़िरों की मेहमानी के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ

जहन्नम तैयार कर रखी है (102) कह दीजिए कि मैं तुमको बता दूँ कि अपने आमाल के ऐतबार से सबसे ज़्यादा घाटे में

اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ ۭ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ

कौन लोग हैं (103) ये वे लोग हैं कि दुनियावी ज़िंदगी में उनकी सारी दोड़ धूप सीधे रास्ते से भटकी रही और वे

يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰۗئِكَ الَّذِيْنَ

समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं (104) ये वही लोग हैं जिन्होंने

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ

अपने रब की आयतों का और उसके सामने पेश होने का इनकार किया इसलिए उनका सारा किया धरा ग़ारत हो गया;

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ

चुनाँचे क़ियामत के दिन हम उनका कोई वज़न शुमार नहीं करेंगे (105) यह जहन्नम उनका बदला है

جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

इस लिए कि उन्होंने इनकार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया (106)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उनके लिए फ़िरदौस के

الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا

बाग़ों की मेहमानी है (107) उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहाँ से कभी निकलना न

حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

चाहेंगे (108) कह दीजिए कि अगर समुंदर मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो समुंदर

الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ

ख़तम हो जाएगा इस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों, अगर्चे हम उसके साथ उसी के मानिंद

مَدَدًا ﴿١٠٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ

और समुंदर मिलादें (109) कह दीजिए कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ, मुझपर वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ

सिर्फ़ एक ही माबूद है, पस जिसको अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसको चाहिए

فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع

कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए (110)

सूरह मरयम मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (58) और (71) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (98) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (44) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (19) नम्बर पर है और सूरह फ़ातिर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3780) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (780) कलिमात हैं

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾

काफ़-हा-या-अ़ैन-सॉद (1) यह उस रहमत का ज़िक्र है जो आपके रब ने अपने बंदे ज़करिया पर की (2)

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ

जब उसने अपने रब को छुपी आवाज़ से पुकारा (3) ज़करिया (अलै॰) ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियाँ

الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ

कमज़ोर हो गई हैं और सर के बालों में सफ़ेदी फैल गई है और ऐ मेरे रब!

بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ

मैं आपसे माँग कर कभी मेहरूम नहीं रहा (4) और मैं अपने बाद रिश्तेदारों की तरफ़ से

وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ

अंदेशा रखता हूँ और मेरी बीवी बाँझ है, पस मुझको अपने पास से

وَلِيًّا ۙ﴿۵﴾ يَّرِثُنِىۡ وَيَرِثُ مِنۡ اٰلِ يَعۡقُوۡبَ‌ ۖ وَاجۡعَلۡهُ

एक वारिस दीजिए (5) जो मेरी जगह ले और आले याक़ूब की भी, और मेरे रब! उसको

رَبِّ رَضِيًّا ﴿۶﴾ يٰزَكَرِيَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨاسۡمُهٗ يَحۡيٰى ۙ

अपना पसंदीदा बनाइए (6) ऐ ज़करिया! हम तुमको एक लड़के की बशारत देते हैं जिसका नाम यहया होगा,

لَمۡ نَجۡعَلۡ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ سَمِيًّا ﴿۷﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوۡنُ

हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया (7) उसने कहा: ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ

لِىۡ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امۡرَاَتِىۡ عَاقِرًا وَّقَدۡ بَلَغۡتُ مِنَ

लड़का कैसे होगा जबकि मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे के इंतिहाई दर्जे को

الۡكِبَرِ عِتِيًّا ﴿۸﴾ قَالَ كَذٰلِكَ‌ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ

पहुँच चुका हूँ (8) जवाब मिला कि ऐसा ही होगा, आपका रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए

هَيِّنٌ وَّقَدۡ خَلَقۡتُكَ مِنۡ قَبۡلُ وَلَمۡ تَكُ شَيۡـًٔا ﴿۹﴾ قَالَ

आसान है, मैंने इससे पहले आपको पैदा किया; हालाँकि आप कुछ भी न थे (9) ज़करिया (अलै०) ने कहा कि

رَبِّ اجۡعَلۡ لِّىۡۤ اٰيَةً‌ ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दीजिए, फ़रमाया कि आपकी निशानी यह है कि आप तीन शब व रोज़ लोगों से बात न कर

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿۱۰﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنَ الۡمِحۡرَابِ

सकोगे हालाँकि आप तंदुरुस्त रहोगे (10) फिर ज़करिया (अलै०) मेहराबे इबादत से निकल कर लोगों के पास आए

فَاَوۡحٰۤى اِلَيۡهِمۡ اَنۡ سَبِّحُوۡا بُكۡرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۱۱﴾ يٰيَحۡيٰى خُذِ

और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करो (11) ऐ यहया! किताब को

الۡكِتٰبَ بِقُوَّةٍ‌ ؕ وَاٰتَيۡنٰهُ الۡحُكۡمَ صَبِيًّا ۙ﴿۱۲﴾ وَّحَنَانًا مِّنۡ لَّدُنَّا

मज़बूती से पकड़ो, और हमने उसको बचपन ही में दीन की समझ अता की (12) और अपनी तरफ़ से उसको नर्म दिली

وَزَكٰوةً‌ ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ﴿۱۳﴾ وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَيۡهِ وَلَمۡ يَكُنۡ جَبَّارًا

और पाकीज़गी अता की और वे परहेज़गार थे (13) और अपने वालिदैन के ख़िदमत गुज़ार थे और वे सरकश

عَصِيًّا ﴿۱۴﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيۡهِ يَوۡمَ وُلِدَ وَيَوۡمَ يَمُوۡتُ وَيَوۡمَ

और नाफ़रमान न थे (14) और उसपर सलामती है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह

يُبۡعَثُ حَيًّا ﴿۱۵﴾ وَاذۡكُرۡ فِى الۡكِتٰبِ مَرۡيَمَ‌ۘ اِذِ انْتَبَذَتۡ

ज़िंदा करके उठाया जाएगा (15) और किताब में मरयम (अलै०) का ज़िक्र कीजिए जबकि वह अपने लोगों से

مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ

अलग होकर शर्क़ी मकान में चली गई (16) फिर उसने अपने आपको उनसे परदे में

حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا

कर लिया, फिर हमने उसके पास अपना फ़रिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा आदमी बन कर

سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ

ज़ाहिर हुआ (17) मरयम (अलै०) ने कहाः मैं तुझसे ख़ुदा-ए-रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तू अल्लाह से

تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا

डरने वाला है (18) उसने कहाः मैं आपके रब का भेजा हुआ हूँ; ताकि आपको एक पाकीज़ा

زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ

लड़का दूँ (19) मरयम (अलै०) ने कहाः मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जबकि मुझको किसी आदमी ने नहीं छुआ

وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ

और न मैं बदकार हूँ (20) फ़रिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा, आपका रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए आसान है

وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا

और ताकि हम उसको लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत, और यह एक तयशुदा

مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

बात है (21) पस मरयम (अलै०) ने उसका हमल उठा लिया और वह उसको लेकर एक दूर की जगह चली गई (22)

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ

फिर दर्दे-ज़ह उसको खजूर के दरख़्त की तरफ़ ले गया, उसने कहाः काश! मैं इससे पहले

مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ

मर जाती और भूली बिसरी चीज़ हो जाती (23) फिर मरयम (अलै०) को उसने

تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

नीचे से आवाज़ दी कि ग़मगीन न हो, आपके रब ने आपके नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है (24)

وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا

और आप खजूर के तने को अपनी तरफ़ हिलाइए उससे आपके ऊपर पकी हुई खजूरें

جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

गिरेंगी (25) पस खाओ और पियो और आँखें ठंडी करो, फिर अगर तुम कोई आदमी

منزل ٤

الْبَشَرِ اَحَدًا فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ

देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोज़ा मान रखा है तो आज मैं

اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ قَالُوْا

किसी इंसान से नहीं बोलूंगी (26) फिर वह उसको गोद में लिए हुए अपनी क़ौम के पास आई, लोगों ने कहा:

يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ

ऐ मरयम! तुमने तो बड़ा तूफ़ान कर डाला (27) ऐ हारून की बहन! न तुम्हारा बाप

اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾ فَاَشَارَتْ

कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी माँ बदकार थी (28) फिर मरयम (अलै०) ने उस (बच्चे) की तरफ़

اِلَيْهِ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

इशारा किया, लोगों ने कहा कि हम उससे कैसे बात करेंगे जो कि गोद में बच्चा है (29)

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

बच्चा बोला: मैं अल्लाह का बंदा हूँ, उसने मुझे किताब दी और मुझको नबी बनाया (30)

وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ

और मैं जहाँ कहीं भी हूँ उसने मुझको बरकत वाला बनाया है और उसने मुझको नमाज़

وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾ وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ

और ज़कात की ताकीद की है जब तक मैं ज़िंदा रहूँ (31) और मुझको मेरी माँ का ख़िदमतगार बनाया है और मुझको

جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ

सरकश व बदबख़्त नहीं बनाया हैं (32) और मुझपर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन

اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ

मैं मरूँगा और जिस दिन मैं ज़िंदा करके उठाया जाऊँगा (33) यह है ईसा बिन मरयम, सच्ची बात

الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ

जिसमें लोग झगड़ रहे हैं (34) अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद

مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ

बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो कहता है कि हो जा

كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا

तो वह हो जाता है (35) और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी रब है पस तुम उसी की इबादत करो, यही

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۞٣٦ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ

सीधा रास्ता है (36) फिर उनके फिरक़ों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया, पस इनकार करने वालों

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۞٣٧ اَسْمِعْ

के लिए एक बड़े दिन के आने से ख़राबी है जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे (37) वह ख़ूब सुनते

بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ

और ख़ूब देखते होंगे जिस दिन वह हमारे पास आएंगे, मगर आज यह ज़ालिम खुली हुई

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۞٣٨ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ

गुमराही में हैं (38) और उन लोगों को उस हसरत के दिन से डराइए जब मामले का फ़ैसला

الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۞٣٩ اِنَّا نَحْنُ

कर दिया जाएगा और वे ग़फ़लत में हैं और वह ईमान नहीं ला रहे हैं (39) बेशक हम ही

نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۞٤٠ ع وَاذْكُرْ

ज़मीन और ज़मीन के रहने वालों के वारिस होंगे और हमारी तरफ़ लोटाए जाएंगे (40) और किताब में

فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۞٤١ اِذْ

इब्राहीम (अलै०) का ज़िक्र कीजिए, बेशक वे सच्चे थे और नबी थे (41) जब

قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ

उसने अपने वालिद से कहा कि ऐ मेरे अब्बा! आप ऐसी चीज़ की इबादत क्यों करते हो जो ना सुने और ना देखे

وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ۞٤٢ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ

और न तुम्हारे कुछ काम आ सके (42) ऐ मेरे अब्बा! मेरे पास ऐसा इल्म आया है

الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۞٤٣

जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो, मैं तुमको सीधा रास्ता दिखाऊँगा (43)

يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ

ऐ मेरे वालिद! आप शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान ख़ुदाए-रहमान की

عَصِيًّا ۞٤٤ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ

नाफ़रमानी करने वाला है (44) ऐ मेरे वालिद! मुझको डर है कि तुमको ख़ुदाए-रहमान का अज़ाब

الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ۞٤٥ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ

पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बन कर रह जाओ (45) वालिद ने कहा कि ऐ इब्राहीम! क्या तुम

عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ

मेरे माबूदों से फिर गए हो, अगर तुम बाज़ न आए तो मैं तुमको पत्थरों से मारूँगा और तुम मुझसे

وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ

हमेशा के लिए दूर हो जाओ (46) इब्राहीम (अलै॰) ने कहाः तुम पर सलामती हो मैं अपने रब से

رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ

तुम्हारे लिए बख़्शिश की दुआ करूँगा, बेशक वह मुझ पर मेहरबान है (47) और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूँ और उनको भी जिन्हें तुम अल्लाह

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ۖ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ

के सिवा पुकारते हो और मैं अपने रब ही को पुकारूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर

رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

महरूम नहीं रहूंगा (48) पस जब वह लोगों से जुदा हो गया और उनसे जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते थे

اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

तो हमने उसको इसहाक़ और याकूब (अलै॰) अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया (49)

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ

और उनको अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक

صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾ ع وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۚ اِنَّهٗ كَانَ

और बुलंद किया (50) और किताब में मूसा (अलै॰) का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह

مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ

चुने हुए थे और रसूल व नबी थे (51) और हमने उसको कोहे-तूर के

الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ

दाहिनी जानिब से पुकारा और उसको हमने राज़ की बातें करने के लिए क़रीब किया (52) और अपनी रहमत से हमने

رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ

उसके भाई हारून (अलै॰) को नबी बनाकर उसे दिया (53) और किताब में इस्माईल (अलै॰) का ज़िक्र कीजिए,

اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ وَكَانَ

वह वादे के सच्चे थे और रसूल व नबी थे (54) और वह

يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ

अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे और अपने रब के नज़दीक

مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ

पसंदीदा थे 55 और किताब में इदरीस (अलै०) का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह

صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

सच्चे थे और नबी थे 56 और हमने उसको बुलंद मर्तबे तक पहुँचाया 57 ये वह लोग हैं जिन पर

اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ

अल्लाह ने पैग़म्बरों में से अपना फ़ज़्ल फ़रमाया आदम (अलै०) की औलाद में से

وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ

और उन लोगों में से जिनको हमने नूह (अलै०) के साथ सवार किया था, और इब्राहीम और इस्राईल (अलै०) की

وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى

नस्ल से और उन लोगों में से जिनको हमने हिदायत बख़्शी और उनको मक़्बूल बनाया, जब उनको

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ السجدة

ख़ुदाए- रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते 58

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا

फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ जानशीन हुए जिन्होंने नमाज़ को खो दिया और ख़्वाहिशों के

الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

पीछे पड़ गए, पस बहुत जल्द वे अपनी ख़राबी को देखेंगे 59 अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया

وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ

और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी ज़रा भी हक़ तलफ़ी नहीं

شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

की जाएगी 60 उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है,

اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا

और यह वादा पूरा होकर रहना है 61 उसमें वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात नहीं सुनेंगे सिवाए

سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ

सलाम के, और उसमें उनका रिज़्क़ सुबह व शाम मिलेगा 62 यह वह जन्नत है

الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उनको बनाएंगे जो अल्लाह से डरने वाले होंगे 63

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا

और हम नहीं उतरते मगर आपके रब के हुक्म से, उसी का है जो हमारे आगे है और जो

خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ

हमारे पीछे है और जो उसके बीच में है, और आपका रब भूलने वाला नहीं (64) वह रब है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ

आसमानों का और ज़मीन का और जो उनके बीच में है पस आप उसी की इबादत कीजिए और उसकी इबादत पर

لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ

क़ायम रहिए, क्या आप उसका कोई हम सिफ़्त जानते हो (65) और इंसान कहता है

ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ

कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िंदा करके निकाला जाऊँगा (66) क्या इंसान को याद नहीं आता

اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ

कि हमने उसको इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था (67) पस आपके रब की क़सम!

لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

हम उनको जमा करेंगे और शैतानों को भी फिर उनको जहन्नम के गिर्द इस तरह हाज़िर करेंगे कि वह घुटनों के बल

جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى

गिरे होंगे (68) फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा

الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا

सरकश बने हुए थे (69) फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने के

صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا

ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं (70) और तुम में से कोई नहीं जिसका उसपर से गुज़र न हो, यह आपके रब के ऊपर

مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ

लाज़िम है जो पूरा होकर रहेगा (71) फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और ज़ालिमों को उसमें

فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ

गिरा हुआ छोड़ देंगे (72) और जब उनको हमारी खुली खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इनकार करने वाले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ

ईमान लाने वालों से कहते हैं कि दोनो गिरोहों में से कौन

ع ١٥ / ٧

منزل ٤

مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ

बेहतर हालत में है और किस की मजलिस ज़्यादा अच्छी है (73) और उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं

هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ

जो उनसे ज़्यादा असबाब वाली और उनसे ज़्यादा शान वाली थीं (74) कह दीजिए कि जो शख़्स गुमराह होता है

فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ

तो रहमान उस को ढील दिया करता है यहाँ तक कि जब वह देख लेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है

اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ

अज़ाब या क़ियामत तो उनको मालूम हो जाएगा कि किसका हाल

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

बुरा है और किसका लश्कर कमज़ोर है (75) और अल्लाह हिदायत पाने वालों की हिदायत में

اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ

इज़ाफ़ा करता है और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ आपके रब के नज़दीक अज्र के ऐतबार से

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ

बेहतर हैं और अंजाम के ऐतबार से भी बेहतर हैं (76) क्या आपने उसको देखा जिसने हमारी आयतों का

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ ط اَطَّلَعَ الْغَيْبَ

इनकार किया और कहा कि मुझको माल और औलाद मिलकर रहेंगे (77) क्या उसने ग़ैब में झाँक कर देखा है

اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ لا كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا

या उसने अल्लाह से कोई अहद लिया है (78) हरगिज़ नहीं! जो कुछ वह कहता है

يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ لا وَّنَرِثُهُ مَا

उसको हम लिख लेंगे और उसकी सज़ा में इज़ाफ़ा करेंगे (79) और जिन चीज़ों का वह मुद्दई है

يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

उसके वारिस हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा (80) और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद बनाए हैं

لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ لا كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ

ताकि वे उनके लिए मदद बनें (81) हरगिज़ नहीं! वे उनकी इबादत का इनकार करेंगे

وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا

और उनके मुख़ालिफ़ बन जाएंगे (82) क्या आपने नहीं देखा कि हमने मुनकिरों पर

منزل ٤

الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ

शैतानों को छोड़ दिया है वे उनको ख़ूब उभार रहे हैं (83) पस आप उनके लिए

عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى

जल्दी न करें, हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं (84) जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की तरफ़

الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

मेहमान बनाकर जमा करेंगे (85) और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ़ प्यासा हाँकेंगे (86)

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ

किसी को शफ़ाअत का इख़्तियार न होगा मगर उसको जिसने रहमान के पास से

عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ

इजाज़त ली हो (87) और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है (88) यह तुमने बड़ी संगीन बात

شَيْـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ

कही है (89) क़रीब है कि उससे आसमान फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े

الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें (90) इसपर कि लोग रहमान की तरफ़ औलाद की निसबत करते हैं (91)

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي

हालाँकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इख़्तियार करे (92) आसमानों और ज़मीन में

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ

कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए (93) उसके पास उनका शुमार है

وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ

और उसने उनको अच्छी तरह गिन रखा है (94) और उनमें से हर एक क़ियामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा (95) अलबत्ता

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनके लिए अल्लाह मुहब्बत पैदा

وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ

कर देगा (96) पस हमने इस क़ुरआन को आपकी ज़बान में इस लिए आसान कर दिया है कि आप परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी सुना दें

وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ

और हटधर्म लोगों को डराएं (97) और इनसे पहले हम कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं,

वक़्फ़ लाज़िम वक़्फ़ लाज़िम मंज़िल ४

هَلۡ تُحِسُّ مِنۡهُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ اَوۡ تَسۡمَعُ لَهُمۡ رِكۡزًا ﴿٩٨﴾

क्या आप उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो (98)

सूरह तॉहा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (130 और 131) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (135) आयतें और (8) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (45) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (20) नम्बर पर है और सूरह मरयम के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (5242) हुरूफ़ हैं	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ	इसमें (1641) कलिमात हैं

طٰهٰ ﴿١﴾ مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡقُرۡاٰنَ لِتَشۡقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذۡكِرَةً

तॉ-हा (1) हमने आप पर क़ुरआन इस लिए नहीं उतारा कि आप मुसीबत में पड़ जाओ (2) बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए

لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ﴿٣﴾ تَنۡزِيۡلًا مِّمَّنۡ خَلَقَ الۡاَرۡضَ وَالسَّمٰوٰتِ

जो डरता हो (3) यह उसकी तरफ़ से उतारा गया है जिसने ज़मीन को और ऊँचे आसमानों को

الۡعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحۡمٰنُ عَلَى الۡعَرۡشِ اسۡتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

पैदा किया है (4) वह रहमत वाला है अर्श पर क़ायम है (5) उसी का है जो कुछ आसमानों में है

وَمَا فِى الۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَمَا تَحۡتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنۡ

और जो कुछ ज़मीन में है और जो उन दोनों के दरमियान है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है (6) और आप चाहे

تَجۡهَرۡ بِالۡقَوۡلِ فَاِنَّهٗ يَعۡلَمُ السِّرَّ وَاَخۡفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ

अपनी बात पुकार कर कहिए वह चुपके से कही हुई बात को जानता है और उससे ज़्यादा छुपी बात को भी (7) वह अल्लाह है उसके सिवा

اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰى ﴿٨﴾ وَهَلۡ اَتٰٮكَ حَدِيۡثُ

कोई माबूद नहीं, तमाम अच्छे नाम उसी के हैं (8) और क्या आपको मूसा (अलै०) की बात

مُوۡسٰى ﴿٩﴾ اِذۡ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهۡلِهِ امۡكُثُوۡۤا اِنِّىۡۤ اٰنَسۡتُ نَارًا

पहुँची (9) जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ठहरो मैंने एक आग देखी है,

لَّعَلِّىۡۤ اٰتِيۡكُمۡ مِّنۡهَا بِقَبَسٍ اَوۡ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾

शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊँ या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए (10)

فَلَمَّاۤ اَتٰٮهَا نُوۡدِىَ يٰمُوۡسٰى ﴿١١﴾ اِنِّىۡۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخۡلَعۡ

फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा! (11) मैं ही तुम्हारा रब हूँ पस तुम अपने

نَعۡلَيۡكَ ۚ اِنَّكَ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾ وَاَنَا اخۡتَرۡتُكَ

जूते उतार दो क्योंकि तुम तुवा की मुक़द्दस वादी में हो (12) और मैंने तुमको चुन लिया है

فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا

पस जो वह्य की जा रही है उसको सुनो (13) मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई माबूद नहीं,

فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ

पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो (14) बेशक क़ियामत

اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿١٥﴾

आने वाली है मैं उसको छुपाए रखना चाहता हूँ ताकि हर शख़्स को उसके किए का बदला मिले (15)

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ

पस उससे तुमको वह शख़्स ग़ाफ़िल न कर दे जो उसपर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिशों पर चलता है

فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ

कि तुम हलाक हो जाओ (16) और यह तुम्हारे हाथ मे क्या है ऐ मूसा! (17) उसने कहाः यह मेरी लाठी है

اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ

मैं उस पर टेक लगाता हूँ और उससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ और इसमें मेरे लिए दूसरे भी

اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

काम हैं (18) फ़रमाया कि ऐ मूसा! उसको ज़मीन पर डाल दो (19) उसने उसको डाल दिया तो यकायक वह एक दोड़ता हुआ

تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا

साँप बन गया (20) फ़रमाया कि उसको पकड़ लो और मत डरो, हम दोबारा उसको उसकी पहली हालत पर

الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾ وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ

लौटा देंगे (21) और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल से मिला लो तो वह चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी

غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ ۙ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ ۚ

ऐब के, यह दूसरी निशानी है (22) ताकि हम अपनी निशानियों में से बअज़ निशानियाँ तुम्हें दिखाएं (23)

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٢٤﴾ ۧ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ

तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वह हद से निकल गया है (24) मूसा (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे सीने को

صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ ۙ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ ۙ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ

मेरे लिए खोल दीजिए (25) और मेरे काम को मेरे लिए आसान फ़रमा दीजिए (26) और मेरी ज़ुबान की गिरह को

لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ ۙ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ ۖ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾ ۙ

खोल दीजिए (27) ताकि लोग मेरी बात समझें (28) और मेरे खानदान से मेरे लिए एक मददगार मुक़र्रर कर दीजिए (29)

هٰرُوْنَ اَخِى ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِىْ ﴿۳۱﴾ وَاَشْرِكْهُ فِىْٓ

हारून (अलै०) को जो मेरा भाई है (30) उसके ज़रिए से मेरी कमर मज़बूत कीजिए (31) और उसको मेरे काम में

اَمْرِىْ ﴿۳۲﴾ كَىْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿۳۳﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿۳۴﴾

शरीक कीजिए (32) ताकि हम दोनों कसरत से आपकी पाकी बयान करें (33) और कसरत से आपका ज़िक्र करें (34)

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿۳۵﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ

बेशक आप हमको देख रहे हैं (35) फ़रमाया कि ऐ मूसा! तुमने जो कुछ मांगा वह तुम्हें

يٰمُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿۳۷﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ

दे दिया गया (36) और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया (37) जबकि हमने तुम्हारी माँ की

اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿۳۸﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ

तरफ़ वह्य की जो वह्य की जा रही है (38) कि उसको संदूक़ में रखो फिर उसको दरिया में

فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ

डाल दो, फिर दरिया उसको किनारे पर डाल दे, उसको एक शख़्स उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है

وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ۚ وَلِتُصْنَعَ

और उसका भी दुश्मन है, और मैंने अपनी तरफ़ से तुम पर मुहब्बत डाल दी और ताकि तुम मेरी निगरानी में

عَلٰى عَيْنِىْ ﴿۳۹﴾ اِذْ تَمْشِىْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى

परवरिश पाओ (39) जबकि तुम्हारी बहन चलती हुई आई फिर वह कहने लगी: क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूँ

مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا

जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे, पस हमने तुमको तुम्हारी माँ की तरफ़ लोटा दिया ताकि उसकी आँख ठंडी हो

وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ

और उसको ग़म न रहे, और तुमने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया फिर हमने तुमको उस ग़म से निजात दी

وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ

और हमने तुमको ख़ूब जांचा, फिर तुम कई साल मदयन वालों में रहे फिर तुम

جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿۴۰﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ﴿۴۱﴾ ۚ

एक अंदाज़े पर आ गए ऐ मूसा! (40) और मैंने तुमको अपने लिए मुंतख़ब किया (41)

اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿۴۲﴾ ۚ اِذْهَبَآ

जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ और तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना (42) तुम दोनों

وقف لازم

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ

फ़िरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है (43) पस उससे नर्मी से बात करना शायद वह

يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ

नसीहत क़बूल करे या डर जाए (44) दोनों ने कहा कि ऐ हमारे रब! हमको अंदेशा है कि वह हम पर

عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ

ज़्यादती करे या सरकशी करने लगे (45) फ़रमाया कि तुम अंदेशा न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ

اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ

सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ (46) पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं

مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۭ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ

पस तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे और उनको न सता, हम तेरे रब के पास से

مِّنْ رَّبِّكَ ۭ وَالسَّلٰمُ عَلٰي مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ

एक निशानी भी लाए हैं, और सलामती उस शख़्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे (47) हम पर

اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰي مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ

यह वह्य की गई है कि उस शख़्स पर अज़ाब होगा जो झुठलाए और मुँह मोड़ ले (48) फिरऔन ने कहा:

فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ

फिर तुम दोनों का रब कौन है ऐ मूसा! (49) मूसा (अलै०) ने कहा: हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी

خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾ قَالَ

सूरत अता की फिर रहनुमाई फ़रमाई (50) फ़िरऔन ने कहा: फिर अगली क़ौमों का क्या हाल है (51) मूसा (अलै०) ने कहा:

عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

उसका इल्म मेरे रब के पास एक दफ़्तर में है, मेरा रब ना ग़लती करता है और न भूलता है (52)

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا

वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का फ़र्श बनाया और उसमें तुम्हारे लिए राहें

سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۭ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا

निकालीं और आसमान से पानी उतारा फिर हमने उसके ज़रिए से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की

مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ

नबातात पैदा कीं (53) खाओ और अपने मवेशियों को चराओ, बेशक इसके

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝٥٤ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ

अंदर अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं (54) इसी से हमने तुमको पैदा किया है

وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝٥٥

और इसी में हम तुमको लौटाएंगे और इसी से हम तुमको दोबारा निकालेंगे (55)

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝٥٦ قَالَ

और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशनियाँ दिखाई तो उसने झुठलाया और इनकार किया (56) उसने कहा

اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝٥٧

कि ऐ मूसा! क्या तुम इस लिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमको हमारे मुल्क से निकाल दो (57)

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

तो हम तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे पस तुम हमारे और अपने दरमियान एक वादा

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝٥٨

मुक़र्रर कर लो, न हम उसके ख़िलाफ़ करें और न तुम, यह मुक़ाबला एक हमवार मैदान में हो (58)

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ

मूसा (अलै०) ने कहा: तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े

ضُحًى ۝٥٩ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ۝٦٠

जमा किए जाएं (59) फ़िरऔन वहाँ से हटा फिर अपने सारे दाव जमा किए उसके बाद वह मुक़ाबले पर आया (60)

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

मूसा (अलै०) ने कहा: तुम्हारा बुरा हो, अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह

فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ۝٦١

तुमको किसी आफ़त से ग़ारत करदे, और जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ (61)

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ۝٦٢

फिर उन्होंने अपने मामले में इख़्तिलाफ़ किया और उन्होंने चुपके चुपके बाहम मशवरा किया (62)

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ

उन्होंने कहा: यह दोनों यक़ीनन जादूगर हैं वह चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर से

مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ

तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीक़े का

الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ

ख़ातमा कर दें (63) पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो फिर मुत्तहिद होकर आओ, और वही

اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ

जीत गया जो आज ग़ालिब रहा (64) उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! या तो तुम

تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ

डालो या हम पहले डालने वाले बनें (65) मूसा (अलै०) ने कहा कि तुम ही

اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ

पहले डालो, तो यकायक उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादू के ज़ोर से उसको इस तरह

مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ

दिखाई दीं गोया कि वह दोड़ रही हैं (66) पस मूसा (अलै०) अपने दिल में

خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾

कुछ डर गए (67) हमने कहा कि तुम डरो नहीं, तुम ही ग़ालिब रहोगे (68)

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا

और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसको डाल दो वह उसको निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है, यह जो कुछ

صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾

उन्होंने बनाया है यह जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता चाहे वह कैसे ही आए (69)

فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ

पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े, उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा (अलै०) के रब पर

وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ

ईमान लाए (70) फ़िरऔन ने कहा कि तुमने उसको मान लिया इससे पहले कि मैं तुमको इजाज़त देता, वही

لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ

तुम्हारा बड़ा है जिसने तुमको जादू सिखाया है, तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव

وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ

मुखालिफ़ सिम्तों से कटवाऊँगा और मैं तुमको खजूर के तनों पर सूली

النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾

दूंगा और तुम जान लोगे कि हम में से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त है और ज़्यादा देर तक रहने वाला है (71)

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ

जादूगरों ने कहा कि हम तुझको हरगिज़ उन दलाईल पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं

وَالَّذِىْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِىْ

और न उस ज़ात पर जिसने हमको पैदा किया है, पस तुझको जो करना है उसे कर डाल, तुम इसी दुनिया की

هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَلَنَا

ज़िंदगी का कर सकते हो (72) हम अपने रब पर ईमान लाए ताकि वह हमारे गुनाहों को

خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ

बख़्श दे और उस जादू को भी जिसपर तुमने हमें मजबूर किया, और अल्लाह

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ

बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है (73) बेशक जो शख़्स मुजरिम बनकर अपने रब के सामने हाज़िर होगा तो उसके लिए

لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ

जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा (74) और जो शख़्स

يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ

अपने रब के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों तो ऐसे लोगों के लिए

الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

बड़े ऊँचे दर्जे हैं (75) उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं जिनके नीचे

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

नहरें जारी होंगी, वह उनमें हमेशा रहेंगे, और यह बदला है उस शख़्स का जो पाकीज़गी इख़्तियार करे (76)

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ

और हमने मूसा (अलै०) को वह्य की कि रात के वक़्त मेरे बंदों को लेकर निकलो

فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ

फिर उनके लिए समुंदर में सूखा रास्ता बनालो, तुम न पीछा किए जाने से

دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ

घबराओ और न किसी और चीज़ से डरो (77) फिर फ़िरऔन ने अपने लश्करों के साथ उनका पीछा किया

فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ

फिर उनको समुंदर के पानी ने ढांप लिया जैसा कि ढांप लिया (78) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को

قَوۡمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِىۡٓ اِسۡرَآءِيۡلَ قَدۡ اَنۡجَيۡنٰكُمۡ

गुमराह किया और उसको सही राह न दिखाई (79) ऐ बनी इस्राईल! हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन से

مِّنۡ عَدُوِّكُمۡ وَوٰعَدۡنٰكُمۡ جَانِبَ الطُّوۡرِ الۡاَيۡمَنَ

निजात दी और तुमसे तूर के दाएं जानिब वादा ठहराया

وَنَزَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوۡا مِنۡ

और हमने तुम्हारे ऊपर मन व सलवा उतारा (80) खाओ हमारी

طَيِّبٰتِ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ وَلَا تَطۡغَوۡا فِيۡهِ فَيَحِلَّ

दी हुई पाक रोज़ी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर

عَلَيۡكُمۡ غَضَبِىۡ ۚ وَمَنۡ يَّحۡلِلۡ عَلَيۡهِ غَضَبِىۡ فَقَدۡ

मेरा ग़ज़ब नाज़िल हो, और जिसपर मेरा ग़ज़ब उतरा

هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّىۡ لَغَفَّارٌ لِّمَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ

वह तबाह हुआ (81) अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए

صَالِحًا ثُمَّ اهۡتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَاۤ اَعۡجَلَكَ عَنۡ قَوۡمِكَ

मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ (82) और ऐ मूसा! अपनी क़ौम को छोड़ कर जल्द आने पर आपको

يٰمُوۡسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمۡ اُولَاۤءِ عَلٰٓى اَثَرِىۡ وَعَجِلۡتُ

किस चीज़ ने उभारा (83) मूसा (अलै०) ने कहा: वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं, और मैं ऐ मेरे रब!

اِلَيۡكَ رَبِّ لِتَرۡضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدۡ فَتَنَّا قَوۡمَكَ

आपकी तरफ़ जल्दी आ गया ताकि आप राज़ी हो जाएं (84) फ़रमाया: तो हमने आपकी क़ौम को आपके बाद

مِنۡۢ بَعۡدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

एक फ़ितने में डाल दिया है और सामिरी ने उनको गुमराह कर दिया (85) फिर मूसा (अलै०) अपनी क़ौम

مُوۡسٰٓى اِلٰى قَوۡمِهٖ غَضۡبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوۡمِ

की तरफ़ ग़ुस्से और रंज में भरे हुए लौटे, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम!

اَلَمۡ يَعِدۡكُمۡ رَبُّكُمۡ وَعۡدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ

क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वादा नहीं किया था, क्या तुम पर ज़्यादा ज़माना

عَلَيۡكُمُ الۡعَهۡدُ اَمۡ اَرَدۡتُّمۡ اَنۡ يَّحِلَّ عَلَيۡكُمۡ

गुज़र गया या तुमने चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का

غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَآ

ग़ज़ब नाज़िल हो इस लिए तुमने मुझसे वादा ख़िलाफ़ी की (86) उन्होंने कहा कि हमने अपने

اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ

इख़्तियार से आपके साथ वादा ख़िलाफ़ी नहीं की बल्कि क़ौम के ज़ेवरात का बोझ हमसे

زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

उठवाया गया था तो हमने उसको फैंक दिया, फिर इस तरह सामिरी ने ढाल लिया (87)

فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ

पस उसने उनके लिए एक बछड़ा बरामद कर दिया एक ढांचा जिससे बैल की सी आवाज़ निकलती थी पस (उसके बारे में)

اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ اَفَلَا يَرَوْنَ

लोगों ने कहा कि यह तुम्हारा माबूद है और मूसा का भी (यही) माबूद है लेकिन मूसा उसे भूल गए (88) क्या वे देखते न थे

اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۬ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا

कि न वह किसी बात का जवाब देता है और न कोई नफ़ा या नुक़सान

وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ

पहुँचा सकता है (89) और हारून (अलै०) ने उनसे पहले ही कहा था

يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ

कि ऐ मेरी क़ौम! तुम इस बछड़े के ज़रिए से बहक गए हो और तुम्हारा रब तो रहमान है

فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ

पस मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो (90) उन्होंने कहा कि हम तो उसी की

عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا

इबादत में लगे रहेंगे जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए (91) मूसा (अलै०) ने कहा ऐ हारून!

مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ۭ اَفَعَصَيْتَ

जब तुमने देखा कि वह बहक गए हैं तो तुमको किस चीज़ ने रोका (92) कि तुम मेरी पैरवी करो, क्या तुमने मेरे कहने के

اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ

ख़िलाफ़ किया (93) हारून (अलै०) ने कहा: ऐ मेरी माँ के बेटे! आप मेरी दाढ़ी न पकड़ें और न मेरा सर,

اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ

मुझे यह डर था कि आप कहोगे कि तुमने बनी इस्राईल के दरमियान फूट डाल दी

وَلَمۡ تَرۡقُبۡ قَوۡلِيۡ ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطۡبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

और मेरी बात का लिहाज़ न किया (94) मूसा (अलै०) ने कहा कि ऐ सामिरी! तुम्हारा क्या मामला है? (95)

قَالَ بَصُرۡتُ بِمَا لَمۡ يَبۡصُرُوۡا بِهٖ فَقَبَضۡتُ قَبۡضَةً

उसने कहा कि मुझको वह चीज़ नज़र आई जो दूसरों को नज़र नहीं आई तो मैंने रसूल के

مِّنۡ اَثَرِ الرَّسُوۡلِ فَنَبَذۡتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتۡ لِيۡ

नक़्शे-क़दम से एक मुट्ठी उठाई और वह उसमें डाल दी और मेरे नफ़्स ने मुझको

نَفۡسِيۡ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذۡهَبۡ فَاِنَّ لَكَ فِي الۡحَيٰوةِ اَنۡ

ऐसा ही समझाया (96) मूसा (अलै०) ने कहा कि दूर हो, अब तेरे लिए ज़िंदगी भर यह है कि

تَقُوۡلَ لَا مِسَاسَ ۖ وَاِنَّ لَكَ مَوۡعِدًا لَّنۡ تُخۡلَفَهٗ ۚ

तू यह कहे कि मुझको न छूना, और तेरे लिए एक वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं,

وَانۡظُرۡ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيۡ ظَلۡتَ عَلَيۡهِ عَاكِفًا ؕ

और तू अपने उस माबूद को देख जिस पर तू बराबर अड़ा रहता था

لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنۡسِفَنَّهٗ فِي الۡيَمِّ نَسۡفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ

कि हम उसको जलाएंगे फिर उसको दरिया में बिखेर कर बहा देंगे (97) तुम्हारा माबूद तो सिर्फ़

اللّٰهُ الَّذِيۡ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَيۡءٍ عِلۡمًا ﴿٩٨﴾

अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसका इल्म हर चीज़ पर हावी है (98)

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ مَا قَدۡ سَبَقَ ۚ وَقَدۡ

इसी तरह हम आपको उनके अहवाल सुनाते हैं जो पहले गुज़र चुके, और हमने

اٰتَيۡنٰكَ مِنۡ لَّدُنَّا ذِكۡرًا ﴿٩٩﴾ مَنۡ اَعۡرَضَ عَنۡهُ فَاِنَّهٗ

आपको अपने पास से एक नसीहत नामा दिया है (99) जो उससे मुँह मोड़ेगा वह

يَحۡمِلُ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وِزۡرًا ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمۡ

क़ियामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा (100) वह उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ क़ियामत के दिन

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ حِمۡلًا ﴿١٠١﴾ يَّوۡمَ يُنۡفَخُ فِي الصُّوۡرِ وَنَحۡشُرُ

उनके लिए बहुत बुरा होगा (101) जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और मुजरिमों को हम इस हाल में

الۡمُجۡرِمِيۡنَ يَوۡمَئِذٍ زُرۡقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوۡنَ بَيۡنَهُمۡ اِنۡ

जमा करेंगे कि ख़ौफ़ से उनकी आँखें नीली होंगी (102) आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम सिर्फ़

لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ

दस दिन रहे होगे (103) हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे, जबकि उनका सबसे ज़्यादा

اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ

वाक़िफ़कार कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक दिन ठहरे (104) और लोग आप से पहाड़ों के बारे में

عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا

पूछते हैं, कह दीजिए कि मेरा रब उनको उड़ा कर बिखेर देगा (105) फिर ज़मीन को साफ़ मैदान

قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾

बनाकर छोड़ देगा (106) आप उसमें न कोई कजी (टेढ़ापन) देखोगे और न कोई ऊँचाई (107)

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ

उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे ज़रा भी कजी न होगी, और तमाम आवाज़ें

الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

रहमान के आगे दब जाएंगी पस आप एक सरसराहट के सिवा कुछ न सुनोगे (108)

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ

उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसा शख़्स जिसको रहमान ने इजाज़त दी हो

وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا

और उसके लिए बोलना पसंद किया हो (109) वह सबके अगले और पिछले अहवाल को

خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ

जानता है और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता (110) और तमाम चेहरे उस ज़िंदा व क़ायम रहने वाली

لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ

ज़ात के सामने झुके होंगे, और ऐसा शख़्स नाकाम रहेगा जो ज़ुल्म लेकर आया होगा (111) और जिसने

يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ

नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसको न किसी की ज़्यादती का

ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अंदेशा होगा और न किसी कमी का (112) और इसी तरह हमने अरबी में क़ुरआन उतारा है

وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ

और उसमें हमने तरह तरह से वईद बयान की है; ताकि लोग डरें

اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे (113) पस बुलंद है अल्लाह हक़ीक़ी बादशाह,

وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ

और आप क़ुरआन के लेने में जल्दी न करें जब तक उसकी वह्य तकमील को न

وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى

पहुँच जाए, और कहिए कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म ज़्यादा कर दीजिए (114) और हमने आदम (अलै०) को

اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ ع

इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गए और हमने उसमें अज़्म न पाया (115)

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया

اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا

मगर इबलीस कि उसने इनकार किया (116) फिर हमने कहा कि ऐ आदम! यक़ीनन यह

عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ

तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे

فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ لا

फिर तुम महरूम होकर रह जाओ (117) यहाँ तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे (118)

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ

और तुम यहाँ न प्यासे होगे और न तुमको धूप लगेगी (119) फिर शैतान ने उनको

اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى

बहकाया, उसने कहा कि ऐ आदम! क्या मैं तुमको हमेशगी का दरख़्त न बताऊँ

شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا

और ऐसी बादशाही कि जिसमें कभी कमज़ोरी न आए (120) पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया

فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا

तो उन दोनों के सतर एक दूसरे के सामने खुल गए और दोनो अपने आपको जन्नत के पत्तों से

مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ صلے

ढांपने लगे, और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की तो बहक गए (121)

منزل ٤

احتياط

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾ قَالَ

फिर उसके रब ने उसको नवाज़ा, पस उसकी तौबा क़ुबूल की और उसको हिदायत दी (122) अल्लाह ने कहा

اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا

कि तुम दोनों यहाँ से उतरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे फिर अगर

يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ

तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा

وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ

और न महरूम रहेगा (123) और जो शख़्स मेरी नसीहत से मुँह मोड़ेगा तो उसके लिए

مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ

तंगी का जीना होगा और क़ियामत के दिन हम उसको अंधा उठाएंगे (124) वह कहेगा

رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ

कि ऐ मेरे रब! आपने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आँखों वाला था (125) इरशाद होगा

كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ

कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी निशानियाँ आईं तो तुमने उनका कुछ ख़्याल न किया तो उसी तरह आज तुम्हारा

تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ

कुछ ख़्याल न किया जाएगा (126) और इसी तरह हम बदला देंगे उसको जो हद से गुज़र जाए और अपने रब की निशानियों पर

بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ

ईमान न लाए, और आख़िरत का अज़ाब बड़ा सख़्त है और बहुत बाक़ी रहने वाला है (127) क्या लोगों को

يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ

इस बात से समझ न आई कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए, यह उनकी

فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾ ع

बस्तियों में चलते हैं, बेशक इसमें अक़्लमंदों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं (128)

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ

और अगर आपके रब की तरफ़ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती और मोहलत की एक मुद्दत मुक़र्रर न होती तो ज़रूर उनका

مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾ ط فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ

फ़ैसला चुका दिया जाता (129) पस जो यह कहते हैं उसपर सब्र करें और अपने रब की हम्द के साथ

رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ

उसकी तस्बीह कीजिए सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के

اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾

औक़ात में भी तस्बीह कीजिए और दिन के किनारों पर भी ताकि तुम राज़ी हो जाओ (130)

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا

और हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ आँख उठाकर भी न देखिए जिनको हमने

مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ

उनके कुछ गिरोहों को उनकी आज़माईश के लिए उन्हें दे रखा है,

وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ

और आपके रब का रिज़्क़ ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है (131) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए

وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ

और उसके पाबंद रहिए, हम आपसे कोई रिज़्क़ नहीं मांगते, रिज़्क़ तो हम आपको देंगे,

وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ

और बेहतर अंजाम तो तक़्वे ही के लिए है (132) और लोग कहते हैं कि यह अपने रब के पास से

رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾

हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते, क्या उनको अगली किताबों की दलील नहीं पहुँची (133)

وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا

और अगर हम उनको इससे पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब!

لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ

आपने हमारे पास कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम ज़लील और रुसवा होने से पहले आपकी

اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ

निशानियों की पैरवी करते (134) कह दीजिए कि हर एक मुंतज़िर है तो तुम भी इंतिज़ार करो,

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ

आईंदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंज़िल तक

اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع

पहुँचा है (135)

सूरह अम्बिया मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई है इसमें (112) आयतें और (7) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (73) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (21) नम्बर पर है और सूरह इब्राहीम के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (4890) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1186) कलिमात हैं

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ ﴿١﴾

लोगों के लिए उनका हिसाब नज़दीक आ पहुँचा और वह ग़फ़लत में पड़े हुए मुँह फेर रहे हैं (1)

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

उनके रब की तरफ़ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है वह उसको हंसी करते हुए

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ

सुनते हैं (2) उनके दिल ग़फ़्लत में पड़े हुए हैं और ज़ालिमों ने आपस में यह

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ

कानाफूसी की कि यह शख़्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है, फिर तुम क्यों आँखों देखे उसके

السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٣﴾ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ

जादू में फंसते हो (3) रसूल ने कहा कि मेरा रब हर बात को जानता है

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۫ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٤﴾ بَلْ

चाहे वह आसमान में हो या ज़मीन में, और वह सुनने वाला, जानने वाला है (4) बल्कि वह

قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۖۚ

कहते हैं कि ये इधर उधर के ख़्यालात हैं बल्कि इसको इन्होंने घड़ लिया है बल्कि वह एक शायर है, पस उनको चाहिए कि हमारे

فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٥﴾ مَاۤ اٰمَنَتْ

पास उस तरह की कोई निशानी लाएं जिस तरह की निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए थे (5) उनसे पहले किसी बस्ती के लोग

قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

भी जिनको हमने हलाक किया ईमान नहीं लाए तो क्या यह लोग ईमान लाएंगे (6)

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ

और आपसे पहले भी जिसको हमने रसूल बनाकर भेजा आदमियों ही में से भेजा, हम उनकी तरफ़ वह्य भेजते थे,

فَسْئَلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧﴾

पस तुम एहले किताब से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते (7)

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا

और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वह खाना न खाते हों और वह

كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿٨﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ

हमेशा रहने वाले न थे (8) फिर हमने उनसे वादा पूरा किया पस उनको और जिस जिसको

وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٩﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ

हमने चाहा बचा लिया और हमने हद से गुज़रने वालों को हलाक कर दिया (9) हमने तुम्हारी तरफ़

اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠﴾

एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी याद देहानी है, फिर क्या तुम समझते नहीं (10)

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا

और कितनी ही ज़ालिम बस्तियाँ हैं जिनको हमने पीस डाला और उनके बाद हमने

بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا

दूसरी क़ौम को उठाया (11) पस जब उन्होंने हमारा अज़ाब आते देखा तो वह

هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ ؕ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى

उससे भागने लगे (12) भागो मत, और अपने सामाने-ऐश की तरफ़

مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो; ताकि तुम से पूछा जाए (13)

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ

उन्होंने कहा: हाय हमारी कमबख़्ती! बेशक हम ज़ालिम लोग थे (14) पस वह यही

تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾

पुकारते रहे यहाँ तक कि हमने उनको ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो (15)

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर

لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ

नहीं बनाया (16) अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसको हम अपने पास से

لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ

बना लेते, अगर हमको यह करना होता (17) बल्कि हम हक़ को बातिल पर

ع ١٠

منزل ٤

عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ

मारेंगे तो वह उसका सर तोड़ देगा तो वह यकायक जाता रहेगा, और तुम्हारे लिए

الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝۱۸ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो (18) और उसी के हैं जो आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ

में हैं और जो उसके पास हैं वे उसकी इबादत से मुँह नहीं फेरते

وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝۱۹ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और न सुस्ती करते हैं (19) वह रात दिन उसको याद करते हैं कभी नहीं

لَا يَفْتُرُوْنَ ۝۲۰ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ

थकते (20) क्या उन्होंने ज़मीन में से माबूद ठहराए हैं जो किसी को

هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝۲۱ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ

ज़िंदा करते हों (21) अगर उन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों

لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا

दरहम बरहम हो जाते, पस अल्लाह अर्श का मालिक उन बातों से पाक है जो ये लोग

يَصِفُوْنَ ۝۲۲ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ۝۲۳

बयान करते हैं (22) वह जो कुछ करता है उसपर वह पूछा न जाएगा और उनसे पूछ होगी (23)

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ

क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा और माबूद बनाए हैं, उनसे कह दीजिए कि तुम अपनी दलील लाओ

هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझ से पहले हुए, बल्कि उनमें से

لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝۲۴ وَمَآ اَرْسَلْنَا

अकसर हक़ को नहीं जानते पस वह मुँह मोड़ रहे हैं (24) और हमने आपसे पहले

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ

कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिस की तरफ़ हमने यह वह्य न की हो कि मेरे सिवा

اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝۲۵ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ

कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो (25) और वे कहते हैं कि रहमान ने

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ

औलाद बनाई है, वह इससे पाक है; बल्कि वे (फ़रिश्ते) तो मुअज़्ज़ज़ बंदे है (26) वे उससे आगे बढ़ कर

بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ

बात नहीं करते और वह उसी के हुक्म के मुताबिक़ अमल करते हैं (27) अल्लाह उनके अगले

اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ

और पिछले अहवाल को जानता है और वे सिफ़ारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिसको

ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَمَنْ

अल्लाह पसंद करे और वह उसकी हैबत से डरते रहते हैं (28) और उनमें से

يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ

जो शख़्स कहेगा कि उसके सिवा मैं माबूद हूँ तो हम उसको जहन्नम की सज़ा

جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ ع اَوَلَمْ يَرَ

देंगे, हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं (29) क्या इनकार करने वालों ने

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا

नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों बंद थे फिर हमने

رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ

उनको खोल दिया, और हमने पानी से हर जानदार चीज़ को

حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ

बनाया फिर भी वे ईमान नहीं लाते (30) और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाए कि वह

اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا

उनको लेकर झुक न जाए और उसमें हमने चोड़े रास्ते बनाए

لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا

ताकि लोग राह पाएं (31) और हमने आसमान को एक महफ़ूज़

مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَهُوَ

छत बनाया, और वे उसकी निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं (32) और वही है

الَّذِىْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद बनाए,

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ

सब एक एक मदार में तैर रहे हैं (33) और हमने आपसे पहले भी किसी इंसान को

قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾

हमेशा की ज़िंदगी नहीं दी, तो क्या अगर आपको मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं (34)

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ

हर जान को मौत का मज़ा चखना है, और हम तुमको बुरी हालत और अच्छी हालत से

وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَا

आज़माते हैं परखने के लिए, और तुम सब हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे (35) और जब

رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۖ

मुनकिर लोग आपको देखते हैं तो वे सब आपको मज़ाक़ बना लेते हैं,

اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ

क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों का ज़िक्र किया करता है, और ख़ुद यह लोग रहमान के ज़िक्र का

هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۖ سَاُورِيْكُمْ

इनकार करते हैं (36) इंसान जल्दबाज़ मख़लूक़ है, मैं तुमको जल्द ही अपनी निशानियाँ

اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

दिखाऊँगा पस तुम मुझसे जल्दी न करो (37) और लोग कहते हैं कि यह वादा

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ

कब आएगा अगर तुम सच्चे हो (38) काश! उन मुनकिरों को उस वक़्त की

كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا

ख़बर होती जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने

عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ

पीछे से और न उनको मदद पहुँचेगी (39) बल्कि वह अचानक उनपर

بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ

आ जाएगी पस उनको बदहवास कर देगी फिर वे उसको हटा न सकेंगे और न उनको

يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ

मोहलत दी जाएगी (40) और आपसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا

फिर जिन लोगों ने उनमें से मज़ाक़ उड़ाया था उनको उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ

मज़ाक़ उड़ाते थे (41) कह दीजिए कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ

तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है, बल्कि वे लोग अपने रब की याद से

مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ

मुँह मोड़ रहे हैं (42) क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद हैं जो उनको बचा लेते हैं,

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

वे ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त की क़ुदरत नहीं रखते और न हमारे मुक़ाबले में कोई उनका साथ दे सकता है (43)

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ

बल्कि हमने उनको और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहाँ तक कि इस हाल में उनपर लम्बी मुद्दत गुज़र गई,

اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ

क्या वे नहीं देखते कि हम ज़मीन को उसके किनारों से घटाते चले जा रहे हैं,

اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ

फिर क्या यही लोग ग़ालिब रहने वाले हैं (44) कह दीजिए कि मैं बस वह्य के ज़रिए से तुमको डराता हूँ,

وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उन्हें डराया जाए (45)

وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ

और अगर आपके रब के अज़ाब का एक झोंका भी उन्हें लग जाए तो कहने लगेंगे

يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ

कि हाय हमारी बदबख़्ती! बेशक हम ज़ालिम थे (46) और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की

الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ

तराज़ू रखेंगे पस किसी जान पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा, और अगर

كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى

राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसको हाज़िर कर देंगे, और हम

بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ

हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं (47) यह बिलकुल सच है कि हमने मूसा व हारून (अलै०) को

الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ

फ़ैसला करने वाली नूरानी और परहेज़गारों के लिए वाज़ व नसीहत वाली किताब अता की है (48) जो बिन देखे

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

अपने रब से डरते हैं और वे क़ियामत का ख़ौफ़ रखने वाले हैं (49)

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

और यह एक बा बरकत याद दहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुनकिर हो (50)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ

और हमने इससे पहले इब्राहीम (अलै०) को उसकी हिदायत अता की और हम उसको

عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ

ख़ूब जानते थे (51) जब उसने अपने वालिद और अपनी क़ौम से कहा कि ये क्या

الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا

मूरतियाँ हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो (52) उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप दादा को इनकी

لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ

इबादत करते हुए पाया है (53) इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ

एक खुली गुमराही में मुबतला रहे (54) उन्होंने कहाः क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम

اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ

मज़ाक कर रहे हो (55) इब्राहीम (अलै०) ने कहाः बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और ज़मीन का

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۡ ۖ وَاَنَا عَلٰى

रब है जिसने उनको पैदा किया, और मैं इस बात की गवाही

ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ

देने वाला हूँ (56) और अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बुतों के साथ

اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ

एक तदबीर करूँगा जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे (57) पस उसने उनको

جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿۵۸﴾

टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाए उनके एक बड़े के ताकि वह उसकी तरफ़ रुजू करें (58)

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۹﴾

उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है, बेशक वह बड़ा ज़ालिम है (59)

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿۶۰﴾ؕ

लोगों ने कहा कि हमने एक नौजवान को उनका तज़किरा करते हुए सुना था जिसको इब्राहीम कहा जाता है (60)

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ

उन्होंने कहा कि उसको सब आदमियों के सामने हाज़िर करो ताकि वे

يَشْهَدُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا

देखें (61) उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम! क्या हमारे माबूदों के साथ तुमने

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿۶۲﴾ؕ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖۗ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا

ऐसा किया है? (62) इब्राहीम (अलै०) ने कहाः बल्कि उनके इस बड़े ने ऐसा किया है

فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿۶۳﴾ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى

तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों (63) फिर उन्होंने अपने जी में

اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾ۙ ثُمَّ نُكِسُوْا

सोचा फिर कहने लगे कि हक़ीक़त में तुम ही नाहक़ पर हो (64) फिर अपने सरों को

عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿۶۵﴾

झुका लिया (और कहा कि) ऐ इब्राहीम! तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं (65)

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ

इब्राहीम ने कहाः क्या तुम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुमको ना फ़ायदा

شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿۶۶﴾ؕ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

पहुँचा सकें और न कोई नुक़सान (66) अफ़सोस है तुम पर और उन चीज़ों पर भी जिनकी तुम

دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا

अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, क्या तुम समझते नहीं (67) उन्होंने कहा कि इसको आग में जला दो और अपने माबूदों की

اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿۶۸﴾ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا

मदद करो, अगर तुमको कुछ करना है (68) हमने कहा कि ऐ आग! तू इब्राहीम के लिए

وَّسَلٰمًا	عَلٰٓى	اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾	وَاَرَادُوْا	بِهٖ	كَيْدًا

ठंडक और सलामती बन जा (69) और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा

فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى

तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया (70) और हमने उसको और लूत (अलै०) को उस ज़मीन

الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا

की तरफ़ निजात देदी जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं (71) और हमने उसको

لَهٗٓ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا

इसहाक़ दिया और उससे ज़्यादा के तौर पर याक़ूब, और हमने उन सबको

صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا

नेक बनाया (72) और हमने उनको इमाम बनाया जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे।

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ

और हमने उनको नेक अमली और नमाज़ की इक़ामत और ज़कात की अदायगी का

وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ

हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे (73) और लूत (अलै०) को हमने हिकमत

حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ

और इल्म अता किया और उसको उस बस्ती से निजात दी जो गंदे काम

تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

करती थी, यक़ीनन वे बहुत बुरे, फ़ासिक़ लोग थे (74)

وَاَدْخَلْنٰهُ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

और हमने उसको अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वे नेकों में से थे (75)

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ

और नूह (अलै०) को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी दुआ क़बूल की पस हमने उसको

وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ

और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से निजात दी (76) और हमने उन लोगों के मुक़ाबले में

الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ

उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, बेशक वे बहुत बुरे

سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ

लोग थे पस हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया (77) और दाऊद और सुलैमान (अलै०)

اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ

जब वे दोनों खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे थे जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियाँ रात के वक़्त

الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنٰهَا

जा पड़ीं, और हम उनके फ़ैसले को देख रहे थे (78) पस हमने सुलैमान (अलै०) को उसकी

سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ

समझ देदी, और हमने दोनों को हिकमत और इल्म अता किया था और हमने दाऊद (अलै०) के साथ

دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾

ताबे कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्बीह करते थे और परिंदों को भी, और हम ही करने वाले थे (79)

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ

और हमने उसको तुम्हारे लिए जंगी लिबास की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुमको लड़ाई में

بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ

महफ़ूज़ रखे, तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो (80) और हमने सुलैमान (अलै०) के लिए

الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ

तेज़ हवा को ताबे कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकतें

بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾ وَمِنَ

रखी हैं, और हम हर चीज़ को जानने वाले हैं (81) और शयातीन में से भी

الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

हमने उसके ताबे कर दिया था जो उसके लिए गोता लगाते थे और उसके सिवा दूसरे काम

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاَيُّوْبَ

करते थे और हम उनको संभालने वाले थे (82) और अय्यूब (अलै०) को

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ

जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझको बीमारी लग गई है और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा

الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

रहम करने वाले हैं (83) तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसको जो तकलीफ़ थी उसको

ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً

दूर कर दिया और हमने उसको उसका कुनबा अता किया, और उसी के साथ उसके बराबर और भी

مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ

अपनी तरफ़ से रहमत और नसीहत इबादत करने वालों के लिए (84) और इस्माईल

وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ط كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल (अलै०) को, ये सब सब्र करने वालों में से थे (85)

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ط اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

और हमने उनको अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे (86)

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ

और मछली वाले (यूनुस) को जबकि वह अपनी क़ौम से नाराज़ होकर चले गए फिर उसने यह समझा कि हम उसको

عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ

न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में पुकारा कि आपके सिवा

اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ق اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

कोई माबूद नहीं, आप पाक हैं बेशक मैं क़ुसूरवार हूँ (87)

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ لا وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ط وَكَذٰلِكَ

तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसको ग़म से निजात दी, और इसी तरह हम ईमान वालों को

نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

निजात देते हैं (88) और ज़करिया (अलै०) को जबकि उसने अपने रब को पुकारा

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾

कि ऐ मेरे रब! आप मुझको अकेला न छोड़ें, और आप बेहतरीन वारिस हैं (89)

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ز وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ

तो हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और उसको यहया (अलै०) अता किया और उसकी बीवी को

زَوْجَهٗ ط اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

उसके लिए दुरुस्त कर दिया, ये लोग नेक कामों में दोड़ते थे

وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ط وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

और हमको उम्मीद और ख़ौफ़ के साथ पुकारते थे और हमारे आगे झुके हुए थे (90)

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

और वह ख़ातून जिसने अपनी इसमत को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूँक दी

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ

और उसको और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया (91) और यह तुम्हारी उम्मत

اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۡ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾

एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूँ तो तुम मेरी इबादत करो (92)

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع

और उन्होंने अपना दीन अपने अंदर टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सब हमारे पास आने वाले हैं (93)

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ

पस जो शख़्स नेक अमल करेगा और ईमान वाला होगा तो उसकी मेहनत की नाक़दरी

لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ

न होगी और हम उसको लिख लेते हैं (94) और वह जिस बस्ती वालों के लिए हमने

اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ

हलाकत मुकद्दर कर दी है उनके लिए हराम है कि वे रुजूअ करें (95) यहाँ तक कि जब

يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलंदी से निकल पड़ेंगे (96)

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ

और सच्चा वादा नज़दीक आ लगेगा तो अचानक उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएंगी जिन्होंने

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ

इनकार किया था, हाय हमारी कम्बख़्ती! हम इससे ग़फ़लत में पड़े रहे

هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

बल्कि हम ज़ालिम थे (97) बेशक तुम और जिनको तुम अल्लाह के सिवा

دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ

पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं, वहीं तुमको जाना है (98) अगर ये वाक़इ

هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

माबूद होते तो इसमें न पड़ते, और सब उसमें हमेशा रहेंगे (99)

منزل ٤

لَهُمۡ فِيۡهَا زَفِيۡرٌ وَّهُمۡ فِيۡهَا لَا يَسۡمَعُوۡنَ ﴿١٠٠﴾

उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ ना सुनेंगे (100)

اِنَّ الَّذِيۡنَ سَبَقَتۡ لَهُمۡ مِّنَّا الۡحُسۡنٰٓى ۙ اُولٰٓٮِٕكَ

बेशक जिनके लिए हमारी तरफ़ से भलाई का फ़ैसला हो चुका है और वे उससे

عَنۡهَا مُبۡعَدُوۡنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسۡمَعُوۡنَ حَسِيۡسَهَا ۚ

दूर रखे जाएंगे। (101) वे उसकी आहट भी न सुनेंगे।

وَهُمۡ فِىۡ مَا اشۡتَهَتۡ اَنۡفُسُهُمۡ خٰلِدُوۡنَ ﴿١٠٢﴾

और वे अपनी पसंदीदा चीज़ों में हमेशा रहेंगे (102)

لَا يَحۡزُنُهُمُ الۡفَزَعُ الۡاَكۡبَرُ وَتَتَلَقّٰٮهُمُ الۡمَلٰٓٮِٕكَةُ ؕ

उनको बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी और फ़रिश्ते उनका इस्तिक़बाल करेंगे,

هٰذَا يَوۡمُكُمُ الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ﴿١٠٣﴾ يَوۡمَ

यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था (103) जिस दिन

نَطۡوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ لِلۡكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاۡنَاۤ

हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह ख़तों का अंबार लपेट लेते हैं, जिस तरह पहले हमने

اَوَّلَ خَلۡقٍ نُّعِيۡدُهٗ ؕ وَعۡدًا عَلَيۡنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

तख़्लीक़ की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा करेंगे, यह हमारे ज़िम्मे वादा है और हम उसको

فٰعِلِيۡنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدۡ كَتَبۡنَا فِى الزَّبُوۡرِ مِنۡۢ بَعۡدِ

करके रहेंगे (104) और ज़बूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं

الذِّكۡرِ اَنَّ الۡاَرۡضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوۡنَ ﴿١٠٥﴾

कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे (105)

اِنَّ فِىۡ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوۡمٍ عٰبِدِيۡنَ ﴿١٠٦﴾ؕ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ

इसमें एक बड़ी ख़बर है इबादत गुज़ार लोगों के लिए (106) और हमने आपको तो बस दुनिया वालों के

اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿١٠٧﴾ قُلۡ اِنَّمَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ

लिए रहमत बनाकर भेजा है (107) कह दीजिए कि मेरे पास जो वह्य आती है वह यह है

اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿١٠٨﴾

कि तुम्हारा माबूद सिर्फ़ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअत गुज़ार बनते हो (108)

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ۭ وَإِنْ

पस अगर वे मुँह फेर लें तो कह दीजिए कि मैं तुमको साफ़ तौर पर इत्तिला कर चुका हूँ और मैं

اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ

नहीं जानता कि वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है क़रीब है या दूर (109) बेशक वह

يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾

खुली बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसको तुम छुपाते हो (110)

وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى

और मुझको नहीं मालूम शायद वह तुम्हारे लिए इम्तिहान हो और फ़ायदा उठा लेने की

حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۭ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ

एक मोहलत हो (111) पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब! हक़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए और हमारा रब रहमान है,

الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع

उसी से हम उन बातों पर मदद मांगते हैं जो तुम बयान करते हो (112)

सूरह हज मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई मगर आयत (52) से (55) तक मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरह के बीच में नाज़िल हुई है, इसमें (78) आयतें और (10) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (103) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (22) नम्बर पर है और सूरह नूर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (5075) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (1291) कलिमात हैं

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ

ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का ज़ल्ज़ला

شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ

बड़ी भारी चीज़ है (1) जिस दिन तुम देखोगे कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को

عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا

भूल जाएगी और हर हमल वाली अपना हमल डाल देगी

وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ

और लोग आपको मदहोश नज़र आएंगे; हालाँकि वह मदहोश न होंगे बल्कि अल्लाह का

عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ

अज़ाब बड़ा ही सख़्त है (2) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर

فِي اللهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ﴿۳﴾

अल्लाह के बारे में झगड़ता है और सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है (3)

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ

उसकी निस्बत यह लिख दिया गया है कि जो शख़्स उसको दोस्त बनाएगा वह उसको बेराह कर देगा

وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۴﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ

और उसको जहन्नम का रास्ता दिखाएगा (4) ऐ लोगो!

اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

अगर तुम दोबारा ज़िंदा किए जाने के मुताल्लिक़ शक में हो तो हमने तुमको मिट्टी से

مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ

पैदा किया फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून के लोथड़े से फिर गोश्त की

مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ

बोटी से शक्ल वाली और बग़ैर शक्ल वाली भी ताकि हम तुम पर वाज़ेह करें,

وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى

और हम (माओं के) रिहमों में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक मुअय्यन मुद्दत तक

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ

फिर हम तुमको बच्चा बना कर बाहर लाते हैं फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुँच जाओ,

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى

और तुम में से कोई शख़्स पहले ही मर जाता है और कोई शख़्स बदतरीन उमर तक

اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ

पहुँचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने,

وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

और आप ज़मीन को देखते हो कि ख़ुश्क पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ

बरसाते हैं तो वह ताज़ा हो गई और उभर आई और वह तरह तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें

بَهِيْجٍ ﴿۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ

उगाती है (5) यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और बेजानों में जान

الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ ﴿٦﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ

डालता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (6) और यह कि क़ियामत

اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي

आने वाली है उसमें कोई शक नहीं, और अल्लाह ज़रूर उन लोगों को उठाएगा

الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ

जो क़बरों में हैं (7) और लोगों में कोई शख़्स है जो अल्लाह की बात मैं झगड़ता है

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ ﴿٨﴾ ثَانِيَ

इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर (8) तकब्बुर करते हुए

عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِي الدُّنْيَا

ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे, उसके लिए दुनिया में

خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾

रुसवाई है और क़ियामत के दिन हम उसको जलती आग का अज़ाब चखाएंगे (9)

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ

यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर

لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى

ज़ुल्म करने वाला नहीं (10) और लोगों में से कोई है जो किनारे पर रह कर अल्लाह की

حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ࣙ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ

इबादत करता है, पस अगर उसको कोई फ़ायदा पहुँचा तो वह उस इबादत पर क़ायम हो गया, और अगर

اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ࣙ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا

कोई आज़माइश पेश आई तो उल्टा फिर गया, उसने दुनिया भी खो दी

وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾ يَدْعُوْا

और आख़िरत भी, यही खुला हुआ नुक़सान है (11) वह अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ

ऐसी चीज़ को पुकारता है जो न उसको नुक़सान पहुँचा सकती है और न उसको नफ़ा पहुँचा सकती है, यह

هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ ۚ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ

इंतिहाई दर्जे की गुमराही है (12) वह ऐसी चीज़ को पुकारता है जिसका नुक़सान उसके नफ़ा से

مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ

क़रीब तर है, कैसा बुरा कारसाज़ है और कैसा बुरा रफ़ीक़ है (13) बेशक

اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेगा

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا

जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, अल्लाह करता है जो वह

يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي

चाहता है (14) जो शख़्स यह गुमान रखता हो कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उसकी

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ ثُمَّ

मदद नहीं करेगा तो उसको चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने फिर उसको

لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके ग़ुस्से को दूर करने वाली बनती है (15)

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ

और इस तरह हमने क़ुरआन को खुली खुली दलीलों के साथ उतारा है और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है

مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

हिदायत दे देता है (16) इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इख़्तियार की

وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ڰ

और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क किया,

اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي

अल्लाह इन सब के दरमियान क़ियामत के रोज़ फ़ैसला फ़रमाएगा, बेशक अल्लाह

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ

हर चीज़ से वाक़िफ़ है (17) क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे

لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ

सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और सूरज

وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ

और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाये

وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ

और बहुत से इंसान, और बहुत से ऐसे हैं जिनपर अज़ाब साबित हो चुका है,

وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ

और जिसको अल्लाह ज़लील कर दे तो उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह करता है

مَا يَشَآءُ ۩ ﴿١٨﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ز

जो वह चाहता है (18) ये दो गिरोह हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया,

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ

पस जिन्होंने इनकार किया उनके लिए आग के कपड़े तैयार किए जाएंगे,

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ ج يُصْهَرُ

उनके सरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी डाला जाएगा (19) उससे उनके

بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ﴿٢٠﴾ ؕ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ

पेट की चीज़ें तक गल जाएंगी और खालें भी (20) और उनके लिए वहाँ लोहे के

مِنْ حَدِيْدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ

हथोड़े होंगे (21) जब भी वह घबरा कर उससे बाहर निकलना चाहेंगे

غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ق وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٢٢﴾ ع

तो फिर उसमें धकेल दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) चखते रहो जलने का अज़ाब (22)

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए अल्लाह उनको ऐसे बाग़ात में

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا

दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनको वहाँ सोने के

مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ؕ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا

कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहाँ उनका लिबास

حَرِيْرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ

रेशम होगा (23) और उनको पाकीज़ा क़ौल की हिदायत बख़्शी गई थी

وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और उनको ख़ुदाए हमीद का रास्ता दिखाया गया था (24) बेशक जिन लोगों ने इनकार किया है

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और वे लोगों को अल्लाह की राह से और मस्जिदे हराम से रोकते हैं

الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨ الْعَاكِفُ فِيْهِ

जिसको हमने लोगों के लिए बनाया है जिसमें मक़ामी बाशिंदे और बाहर से आने वाले

وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ

बराबर हैं, और जो उस मस्जिद में इंसाफ़ से हटकर ज़ुल्म का रास्ता इख़्तियार करेगा उसको हम दर्दनाक अज़ाब का

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ ع وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ

मज़ा चखाएंगे (25) और जब हमने इब्राहीम (अलै०) को बैतुल्लाह की जगह बता दी

الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ

कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना और मेरे घर को पाक रखना

لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों के लिए और रुकूअ और सज्दा करने वालों के लिए (26)

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى

और लोगों में हज का ऐलान कीजिए वह आपके पास आएंगे पैरों पर चलकर

كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لا

और दुबले ऊँटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज़ रास्तों से आएंगे (27)

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ

ताकि वे अपने फ़ायदे की जगहों पर पहुँचें और चंद मालूम दिनों में

اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ

उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख़्शे

الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ز

हैं, पस उसमें से खाओ और मुसीबत ज़दह मोहताज को खिलाओ (28)

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا

तो चाहिए कि वह अपना मैल कुचैल ख़तम कर दें और अपनी नज़्रें पूरी करें और उस क़दीम घर का

بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ

तवाफ़ करें (29) यह बात हो चुकी, और जो शख़्स अल्लाह की

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ط وَاُحِلَّتْ لَكُمُ

हुरमतों की ताज़ीम करेगा तो वह उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बेहतर है, और तुम्हारे लिए चौपाये

الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ

हलाल कर दिए गए हैं सिवाए उनके जो तुमको पढ़कर सुनाए जा चुके हैं, तो तुम बुतों की

مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝٣٠ حُنَفَآءَ

गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो (30) अल्लाह की तरफ़ यकसू

لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ط وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

हो रहो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है

فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ

तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा फिर चिड़ियाँ उसको उचक लें या हवा उसको

بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝٣١ ذٰلِكَ ق وَمَنْ

किसी दूर दराज़ मक़ाम पर ले जाकर डाल दे (31) यह बात हो चुकी, और जो शख़्स

يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝٣٢

अल्लाह की यादगार निशानियों का पूरा लिहाज़ रखेगा तो यह दिल के तक़्वे की बात है (32)

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ

तुमको उनसे एक मुक़र्रर वक़्त तक फ़ायदा उठाना है फिर उनको क़ुरबानी के लिए क़दीम घर

اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٣٣ ع وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا

की तरफ़ ले जाना है (33) और हमने हर उम्मत के लिए क़ुरबानी करना मुक़र्रर किया

لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ

ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उनको अता

الْاَنْعَامِ ط فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ط

किए हैं, पस तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है तो तुम उसी के होकर रहो

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝٣٤ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ

और आजिज़ी करने वालों को बशारत दे दीजिए (34) जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है

وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ

तो उनके दिल काँप उठते हैं और जो उनपर पड़े उसको सहने वाले

وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

और नमाज़ की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उनको दिया है वह उसमें से ख़र्च करते हैं (35)

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ

और कुरबानी के ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार निशानी बनाया है, उनमें

فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ

तुम्हारे लिए भलाई है, पस उनको खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो,

فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا

फिर जब वह करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और बे सवाल

الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ

मोहताज और साइल को खिलाओ, इस तरह हमने उन जानवरों को तुम्हारे लिए ताबे कर दिया है;

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا

ताकि तुम शुक्र अदा करो (36) और अल्लाह को न उनका गोश्त पहुँचता है

وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۗ

और न उनका ख़ून; बल्कि अल्लाह को सिर्फ़ तुम्हारा तक़्वा पहुँचता है, इस तरह अल्लाह ने उनको तुम्हारे

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا

लिए ताबे कर दिया है ताकि तुम अल्लाह की बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी

هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ

बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए (37) बेशक अल्लाह उन लोगों की जानिब से

عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ

दिफ़ाअ़ करता है जो ईमान लाए, बेशक अल्लाह बद अहदों और नाशुक्रों को

كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ ع اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۗ

पसंद नहीं करता (38) इजाज़त देदी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वजह से कि उनपर ज़ुल्म किया गया है,

وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ ﴿٣٩﴾ الَّذِيْنَ

और बेशक अल्लाह उनकी मदद पर क़ादिर है (39) वे लोग

اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए सिर्फ़ इस लिए कि वह कहते हैं

رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

कि हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के ज़रिए

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ

दफ़ा ना करता रहे तो ख़ानक़ाहें और गिरजा और इबादतख़ाने और मस्जिदें

وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ

जिनमें अल्लाह का नाम कसरत से लिया जाता है ढा दिए जाते,

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ

और अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है,

عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ

ज़ोर वाला है (40) ये वे लोग हैं जिनको अगर हम ज़मीन में ग़लबा दें

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا

तो वे नमाज़ का ऐहतमाम करेंगे और ज़कात अदा करेंगे और नेकी का

بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

हुक्म देंगे और बुराई से रोकेंगे, और सब कामों का अंजाम अल्लाह ही के

الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ

इख़्तियार में है (41) और अगर वे आपको झुठलाएं तो उनसे पहले क़ौमे-नूह

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾ لا وَقَوْمُ

और आद और समूद झुठला चुके हैं (42) और क़ौमे-इब्राहीम

اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ لا وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

और क़ौमे लूत (43) और मदयन के लोग भी, और मूसा को

مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ

झुठलाया गया फिर मैंने मुनकिरों को ढील दी फिर मैंने उनको पकड़ लिया

فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

पस कैसा हुआ मेरा अज़ाब (44) पस कितनी ही बस्तियाँ हैं

اَهْلَكْنٰهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ فَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

जिनको हमने हलाक कर दिया और वे ज़ालिम थीं, पस अब वे अपनी छतों पर

عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾

उलटी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुएं और कितने पुख़्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं (45)

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ

क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते हैं कि वे

يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا

उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते, क्योंकि

لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ

आँखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो

فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ

सीनों में है (46) और ये लोग आपसे अज़ाब के लिए जल्दी किए हुए हैं, और अल्लाह

يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ

हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है, और आपके रब के यहाँ का एक दिन

كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ

तुम्हारे शुमार के ऐतबार से एक हज़ार साल के बराबर होता है (47) और कितनी ही

قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ

बस्तियाँ हैं जिनको हमने ढील दी और वे ज़ालिम थीं, फिर मैंने उनको पकड़ लिया

وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾ ع قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ

और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है (48) कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम्हारे लिए

اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

एक खुला हुआ डराने वाला हूँ (49) पस जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ

और अच्छे काम किए उनके लिए मग़फ़िरत है और इज़्ज़त की

كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ

रोज़ी (50) और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ

वही दोज़ख़ वाले हैं (51) और हमने आपसे पहले

قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلۡقَى

जो भी रसूल और नबी भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने

الشَّيۡطٰنُ فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖ‌ ۚ فَيَنۡسَخُ اللّٰهُ مَا يُلۡقِى

उसके पढ़ने में मिला दिया, फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को

الشَّيۡطٰنُ ثُمَّ يُحۡكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ‌ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ

मिटा देता है फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है, और अल्लाह इल्म वाला,

حَكِيۡمٌ ۙ‏ ﴿۵۲﴾ لِّيَجۡعَلَ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ فِتۡنَةً

हिकमत वाला है (52) ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है उससे वह उन लोगों को जाँचे

لِّلَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡقَاسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ‌ ؕ

जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं,

وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَفِىۡ شِقَاقٍ ۢ بَعِيۡدٍ ۙ‏ ﴿۵۳﴾ وَّلِيَـعۡلَمَ

और ज़ालिम लोग मुख़ालिफ़त में बहुत दूर निकल गए हैं (53) और ताकि वे लोग

الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ اَنَّهُ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّكَ

जिनको इल्म मिला है जान लें कि यह हक़ीक़त में आपके रब की तरफ़ से है

فَيُؤۡمِنُوۡا بِهٖ فَتُخۡبِتَ لَهٗ قُلُوۡبُهُمۡ‌ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ

फिर वे उसपर यक़ीन लाएं और उनके दिल उसके आगे झुक जाएं, और अल्लाह

لَهَادِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ‏ ﴿۵۴﴾

ईमान लाने वालों को ज़रूर सीधा रास्ता दिखाता है (54)

وَلَا يَزَالُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّنۡهُ حَتّٰى

और इनकार करने वाले लोग हमेशा उसकी तरफ़ से शक में पड़े रहेंगे

تَاۡتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغۡتَةً اَوۡ يَاۡتِيَهُمۡ عَذَابُ

यहाँ तक कि अचानक उनपर क़ियामत आ जाए या एक मनहूस दिन का

يَوۡمٍ عَقِيۡمٍ‏ ﴿۵۵﴾ اَلۡمُلۡكُ يَوۡمَٮِٕذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحۡكُمُ

अज़ाब आ जाए (55) उस दिन सारा इख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को होगा, वह उनके दरमियान

بَيۡنَهُمۡ‌ ؕ فَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىۡ

फ़ैसला फ़रमाएगा, पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए वे नेमत के

جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

बाग़ों में होंगे (56) और जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया

فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾ ع وَالَّذِيْنَ

तो उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है (57) और जिन लोगों ने

هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا

अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा फिर वे क़त्ल कर दिए गए या वे मर गए

لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ

अल्लाह ज़रूर उनको अच्छा रिज़्क़ देगा, और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ

रिज़्क़ देने वाला है (58) वह उनको ऐसी जगह पहुँचाएगा जिससे वे राज़ी होंगे,

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ

और बेशक अल्लाह जानने वाला, बुर्दबार है (59) यह हो चुका, और जो शख़्स

عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ

बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था और फिर उसपर ज़्यादती की जाए

لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾ ذٰلِكَ

तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा, बेशक अल्लाह मुआफ़ करने वाला, दरगुज़र करने वाला है (60) यह इसलिए

بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ

दाख़िल करता है, और अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है (61) यह इस लिए कि

اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

अल्लाह ही हक़ है और वे सब बातिल हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़ कर

هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

लोग पुकारते हैं, और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है (62)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۡ فَتُصْبِحُ

क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया फिर ज़मीन

منزل ٤

الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ لَهٗ

सरसब्ज़ हो गई, बेशक अल्लाह बारीकबीं है, ख़बर रखने वाला है (63) उसी का है

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, बेशक अल्लाह ही है

الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ

जो बेनियाज़ है, तारीफ़ों वाला है (64) क्या आप देखते नहीं कि अल्लाह ने ज़मीन की चीज़ों को

مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ

तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी कि वह उसके हुक्म से समुंदर में चलती है,

وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا

और वह आसमान को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है मगर यह कि उसके

بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾

हुक्म से, बेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, मेहरबान है (65)

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ز ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ

और वही है जिसने तुमको ज़िंदगी दी फिर वह तुमको मौत देता है फिर वह तुमको ज़िंदा करेगा,

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا

बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है (66) और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीक़ा

مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ

मुक़र्रर किया कि वे उसकी पैरवी करते थे, पस वह इस मामले में आपसे झगड़ा न करें

وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾

और आप अपने रब की तरफ़ बुलाइए, यक़ीनन आप सीधे रास्ते पर हो (67)

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾

अगर वे आपसे झगड़ा करें तो कह दीजिए कि अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो (68)

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ

अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें तुम

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي

इख़्तिलाफ़ कर रहे हो (69) क्या आप नहीं जानते कि आसमान व ज़मीन की हर चीज़

السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىۡ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ

अल्लाह के इल्म में है, सब कुछ एक किताब में है, बेशक

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ

यह अल्लाह के लिए आसान है (70) और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं

اللّٰهِ مَا لَمۡ يُنَزِّلۡ بِهٖ سُلۡطٰنًا وَّمَا لَيۡسَ لَهُمۡ

जिनके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और न उनके बारे में उनको

بِهٖ عِلۡمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيۡنَ مِنۡ نَّصِيۡرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتۡلٰى

कोई इल्म है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (71) और जब उनको

عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعۡرِفُ فِىۡ وُجُوۡهِ الَّذِيۡنَ

हमारी वाज़ेह आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो आप मुनकिरों के चेहरों पर बुरे आसार

كَفَرُوا الۡمُنۡكَرَ ؕ يَكَادُوۡنَ يَسۡطُوۡنَ بِالَّذِيۡنَ

देखते हो गोया कि वह उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उनको हमारी आयतें

يَتۡلُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا ؕ قُلۡ اَفَاُنَبِّئُكُمۡ بِشَرٍّ

पढ़कर सुना रहे हैं, कह दीजिए कि क्या मैं तुमको बताऊँ कि इससे बदतर चीज़

مِّنۡ ذٰلِكُمۡ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ؕ

क्या है, वह आग है जिसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इनकार किया

وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿٧٢﴾ ع يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ

और वह बहुत बुरा ठिकाना है (72) ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है

فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ

तो उसको ग़ौर से सुनो, तुम लोग अल्लाह के सिवा जिस चीज़ को पुकारते हो

اللّٰهِ لَنۡ يَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا وَّلَوِ اجۡتَمَعُوۡا لَهٗ ؕ

वह एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते अगर्चे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएं,

وَاِنۡ يَّسۡلُبۡهُمُ الذُّبَابُ شَيۡـئًا لَّا يَسۡتَنۡقِذُوۡهُ

और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसको उससे छुड़ा

مِنۡهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالۡمَطۡلُوۡبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا

नहीं सकते, मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे मदद चाही गई वह भी कमज़ोर (73) उन्होंने अल्लाह की क़द्र

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ ﴿۷۴﴾ اَللّٰهُ

न पहचानी जैसाकि उसके पहचानने का हक़ है, बेशक अल्लाह ताक़तवर है, ग़ालिब है (74) अल्लाह

یَصْطَفِیْ مِنَ الْمَلٰٓئِکَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ

फ़रिश्तों में से अपना पैग़ाम पहुँचाने वाला चुनता है और इंसानों में से भी, बेशक

اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۷۵﴾ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ

अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है (75) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ

وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۷۶﴾ یٰۤاَیُّهَا

उनके पीछे है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे मामलात (76) ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ارْکَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّکُمْ

ईमान वालो! रुकूअ और सज्दा करो और अपने रब की इबादत करो

وَافْعَلُوا الْخَیْرَ لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ ۩ ﴿۷۷﴾ وَجَاهِدُوْا

और भलाई के काम करो; ताकि तुम कामयाब हो (77) और अल्लाह की राह में

فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىکُمْ وَمَا جَعَلَ

कोशिश करो जैसा कि कोशश करने का हक़ है, उसने तुमको चुना है और उसने दीन के

عَلَیْکُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِیْکُمْ

मामले में तुमपर कोई तंगी नहीं रखी, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अलै०)

اِبْرٰهِیْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىکُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ

का दीन, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा, इससे पहले

وَفِیْ هٰذَا لِیَکُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِیْدًا عَلَیْکُمْ

और इस क़ुरआन में भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हो

وَتَکُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَی النَّاسِ ۚۖ فَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ

और तुम लोगों पर गवाह बनो, पस नमाज़ क़ायम करो

وَاٰتُوا الزَّکٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىکُمْ ۚ

और ज़कात अदा करो और अल्लाह को मज़बूत पकड़ो, वही तुम्हारा मालिक है,

فَنِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِیْرُ ﴿۷۸﴾ ع

पस कैसा अच्छा मालिक है और कैसा अच्छा मददगार है (78)

السجدة

सूरह मोमिनून मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई है, इसमें (118) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (74) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (23) नम्बर पर है और सूरह अम्बिया के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (4802) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1840) कलिमात हैं

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ ١ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ

यक़ीनन फ़लाह पाई ईमान वालों ने (1) जो अपनी नमाज़ में झुकने वाले

خٰشِعُوْنَ ۙ ٢ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ ٣

हैं (2) और जो लग़्व बातों से ऐराज़ करते हैं (3)

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ ٤ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ

और जो ज़कात अदा करने वाले हैं (4) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने

حٰفِظُوْنَ ۙ ٥ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

वाले हैं (5) सिवाए अपनी बीवियों के और उन बांदियों के जो उनके क़ब्ज़े में हों

فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ ٦ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ

कि उनपर वे क़ाबिले-मलामत नहीं (6) अलबत्ता जो इसके अलावा चाहें तो वही

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ ٧ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ

ज़्यादती करने वाले हैं (7) और जो अपनी अमानतों और अपने अहद का

وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ ٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ

ख़्याल रखने वाले हैं (8) और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त

يُحَافِظُوْنَ ۘ ٩ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ ١٠ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ

करते हैं (9) यही लोग वारिस होने वाले हैं (10) जो फ़िरदौस की विरासत

الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ١١ وَلَقَدْ خَلَقْنَا

पाएंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे (11) और हमने इंसान को

الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ ١٢ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً

मिट्टी के ख़ुलासे से पैदा किया (12) फिर हमने पानी की एक बूंद की शक्ल में उसको महफ़ूज़

فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۖ ١٣ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا

ठिकाने में रखा (13) फिर हमने पानी की बूंद को एक जमे हुए ख़ून की शक्ल दी फिर उस जमे हुए ख़ून को

الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

गोश्त का एक लौथड़ा बनाया, पस लौथड़े के अंदर हड्डियाँ पैदा कीं फिर हमने हड्डियों पर गोश्त

لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ

चढ़ा दिया, फिर हमने उसको एक नई सूरत में बना कर खड़ा किया, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन

الْخٰلِقِيْنَ ؕ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ

पैदा करने वाला (14) फिर उसके बाद तुमको ज़रूर मरना है (15) फिर तुम क़ियामत के दिन

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ

उठाए जाओगे (16) और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए

وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ

और हम मख़लूक़ से बेख़बर नहीं हुए (17) और हमने आसमान से पानी बरसाया

مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ

एक अंदाज़े के साथ फिर हमने उसको ज़मीन मैं ठहराया, और हम उसको वापस लेने पर

لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

क़ादिर हैं (18) फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग़ात

وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿١٩﴾

पैदा किए, तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं और तुम उनमें से खाते हो (19)

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ

और हमने वह दरख़्त पैदा किया जो तूरे-सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है और खाने वालों के लिए

لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ

सालन भी (20) और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक़ है, हम तुमको उनके

مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا

पेट की चीज़ से पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ायदे हैं, और तुम उनको

تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع وَلَقَدْ

खाते हो (21) और तुम उनपर और कश्तियों पर सवारी करते हो (22) और हमने

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

नूह (अलै०) को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ

तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं (23) तो उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने इनकार किया था

كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ

उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक आदमी है, वह चाहता है कि

اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰۗىِٕكَةً ښ مَّا

तुम्हारे ऊपर बरतरी हासिल करे, और अगर अल्लाह चाहता तो वह फ़रिश्ते भेजता, हमने

سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَاۗىِٕنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ ښ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ

यह बात अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी (24) यह तो बस एक शख़्स है जिसको

بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ

जुनून हो गया है, पस एक वक़्त तक उसका इंतिज़ार करो (25) नूह (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरे रब! आप मेरी

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ

मदद फ़रमाइए कि इन्होंने मुझको झुठला दिया (26) तो हमने उसको वह्य की कि तुम कश्ती तैयार करो

بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ

हमारी निगरानी में और हमारी हिदायत के मुताबिक़, तो जब हमारा हुक्म आजाए और ज़मीन से पानी उबल पड़े तो हर क़िस्म के

فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ

जानवरों में से एक एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ और अपने घर वालों को भी, सिवाए उनके जिनके

عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ

बारे में पहले फ़ैसला हो चुका है, और जिन्होंने ज़ुल्म किया है उनके मामले में मुझसे बात न करना,

اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ

बेशक उनको तो डूबना है (27) फिर जब आप और आपके साथी कश्ती में

عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ

बैठ जाएं तो कहिए कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमको ज़ालिम लोगों से

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ

निजात दी (28) और कहिए कि ऐ मेरे रब! आप मुझे उतारिए बरकत का उतारना और आप ही

خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا

बेहतर उतारने वाले हैं (29) बेशक इसमें निशानियाँ हैं और बेशक हम बंदों को

لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾ۚ

आज़माते हैं (30) फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया (31)

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा कि तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ۧ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ

ركوع

माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं (32) और उसकी क़ौम के सरदारों ने जिन्होंने इनकार किया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي

और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया और उनको हमने दुनिया की ज़िंदगी में आसूदगी दी थी

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا

कहा कि यह तो तुम्हारे जैसा ही एक आदमी है, वही खाता है जो तुम

تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ۙ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ

खाते हो और वही पीता है जो तुम पीते हो (33) और अगर तुमने अपने ही जैसे

بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ۙ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ

منزل ٤

एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे (34) क्या यह शख़्स तुमसे कहता है कि जब तुम

اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ۖۙ

मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे (35)

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ۖۙ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا

बहुत ही दूर की बात है और बहुत ही नामुमकिन बात है जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है (36) ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ۖۙ اِنْ هُوَ اِلَّا

ज़िंदगी है, यहीं हम मरते हैं और जीते हैं, और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं (37) यह तो बस एक

رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है और हम उसको मानने वाले नहीं (38)

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ

रसूल ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमाइए कि उन्होंने मुझको झुठला दिया (39) फ़रमाया कि ये लोग जल्द ही

نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ۚ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

पछताएंगे (40) पस उनको एक सख़्त आवाज़ ने हक के मुताबिक़ पकड़ लिया, फिर हमने उनको

غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ

कूड़ा करकट बनाकर रख दिया, पस दूर हो ज़ालिम क़ौम (41) फिर हमने उनके बाद

بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا

दूसरी क़ौमें पैदा कीं (42) कोई क़ौम न अपने वादे से आगे जाती है और न

وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۭ كُلَّمَا

उससे पीछे रहती है (43) फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे, जब भी

جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

किसी क़ौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसको झुठलाया तो हमने एक के बाद एक को लगा दिया

وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾ ثُمَّ

और हमने उनको कहानियाँ बना दिया, पस दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते (44) फिर हमने

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ

मूसा (अलै०) और उसके भाई हारून (अलै०) को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील

مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

के साथ (45) फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकब्बुर किया और वे

عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا

मग़रूर लोग थे (46) पस उन्होंने कहा: क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें हालाँकि उनकी क़ौम के लोग

لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾

हमारे ताबेदार हैं (47) पस उन्होंने उनको झुठला दिया फिर वे हलाक कर दिए गए (48)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

और हमने मूसा (अलै०) को किताब दी ताकि वे राह पाएं (49)

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ

और हमने मरयम (अलै०) के बेटे को और उसकी माँ को एक निशानी बना दिया और हमने उनको एक ऊँची ज़मीन पर ठिकाना दिया

ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ

जो सुकून की जगह थी और वहाँ चश्मा जारी था (50) ऐ पैग़म्बरो! पाकीज़ा चीज़ें खाओ

الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

और नेक काम करो, मैं जानता हूँ जो कुछ तुम करते हो (51)

وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمۡ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمۡ فَاتَّقُوۡنِ ﴿۵۲﴾

और यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है और मैं तुम्हारा रब हूँ तो तुम मुझसे डरो (52)

فَتَقَطَّعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ بَيۡنَهُمۡ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزۡبٍۢ بِمَا لَدَيۡهِمۡ

फिर लोगों ने अपने दीन को आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया, हर गिरोह के पास जो कुछ है उसी पर

فَرِحُوۡنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرۡهُمۡ فِىۡ غَمۡرَتِهِمۡ حَتّٰى حِيۡنٍ ﴿۵۴﴾ اَيَحۡسَبُوۡنَ

वह ख़ुश है (53) पस उनको उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दीजिए (54) क्या वे समझते हैं

اَنَّمَا نُمِدُّهُمۡ بِهٖ مِنۡ مَّالٍ وَّبَنِيۡنَ ۙ﴿۵۵﴾ نُسَارِعُ لَهُمۡ فِى

कि हम उनको जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं (55) तो हम उनको फ़ायदा पहुँचाने में

الۡخَيۡرٰتِ ؕ بَلۡ لَّا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ هُمۡ مِّنۡ خَشۡيَةِ

सरगर्म हैं, बल्कि वे बात को नहीं समझते (56) बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से

رَبِّهِمۡ مُّشۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۵۷﴾ وَالَّذِيۡنَ هُمۡ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمۡ يُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۵۸﴾

डरते हैं (57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर यक़ीन रखते हैं (58)

وَالَّذِيۡنَ هُمۡ بِرَبِّهِمۡ لَا يُشۡرِكُوۡنَ ۙ﴿۵۹﴾ وَالَّذِيۡنَ يُؤۡتُوۡنَ

और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते (59) और जो लोग देते हैं

مَاۤ اٰتَوۡا وَّقُلُوۡبُهُمۡ وَجِلَةٌ اَنَّهُمۡ اِلٰى رَبِّهِمۡ رٰجِعُوۡنَ ۙ﴿۶۰﴾

जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं (60)

اُولٰٓـئِكَ يُسٰرِعُوۡنَ فِى الۡخَيۡرٰتِ وَهُمۡ لَهَا سٰبِقُوۡنَ ﴿۶۱﴾

ये लोग भलाईयों की राह में सबक़त कर रहे हैं और उनपर पहुँचने वाले हैं सबसे आगे (61)

وَلَا نُكَلِّفُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَهَا وَلَدَيۡنَا كِتٰبٌ يَّنۡطِقُ

और हम किसी पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालते, और हमारे पास एक किताब है जो बिलकुल ठीक

بِالۡحَقِّ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۶۲﴾ بَلۡ قُلُوۡبُهُمۡ فِىۡ غَمۡرَةٍ مِّنۡ

बोलती है और उन पर ज़ुल्म न होगा (62) बल्कि उनके दिल उसकी तरफ़ से ग़फ़लत में हैं,

هٰذَا وَلَهُمۡ اَعۡمَالٌ مِّنۡ دُوۡنِ ذٰلِكَ هُمۡ لَهَا عٰمِلُوۡنَ ﴿۶۳﴾

और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं वे उनको करते रहेंगे (63)

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذۡنَا مُتۡرَفِيۡهِمۡ بِالۡعَذَابِ اِذَا هُمۡ يَجۡـئَرُوۡنَ ؕ﴿۶۴﴾

यहाँ तक कि जब हम उनके आसूदा लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे तो वे फ़रयाद करने लगेंगे (64)

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۗ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ

अब फ़रयाद न करो, अब हमारी तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद न होगी (65) तुमको

اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾

मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे (66)

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا

उससे तकब्बुर करके, गोया किसी क़िस्सा सुनाने वाले को छोड़ रहे हो (67) फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर

الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

ग़ौर नहीं किया या उनके पास ऐसी चीज़ आई जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं आई (68)

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ

या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इस वजह से वे उसको नहीं मानते (69) या वे

يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ

कहते हैं कि उसको जुनून है, बल्कि वह उनके पास हक़ लेकर आया है और उनमें से अकसर को

لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ

हक़ बात बुरी लगती है (70) और अगर हक़ उनकी ख़्वाहिशों के ताबे होता तो आसमान और ज़मीन

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ

और जो उनमें है सब तबाह हो जाते, बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا

तो वे अपनी नसीहत से ऐराज़ कर रहे हैं (71) क्या आप उनसे कोई माल माँग रहे हो

فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ

तो आपके रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है, और वह बेहतरीन रोज़ी देने वाला है (72) और यक़ीनन आप

لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

उनको एक सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते हो (73) और जो लोग

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ

आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते वह रास्ते से हट गए हैं (74) और अगर हम

رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

उनपर रहम करें और उनपर जो तकलीफ़ है वे दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे

يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا

बहके हुए (75) और हमने उनको अज़ाब में पकड़ा लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके

لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ

और न उन्होंने आजिज़ी की (76) यहाँ तक कि जब हम उन पर सख़्त अज़ाब का

بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾

दरवाज़ा खोल देंगे तो उस वक़्त वे हैरतज़दह रह जाएंगे। (77)

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए,

قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي

तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो (78) और वही है जिसने तुमको ज़मीन में

الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ

फैलाया और तुम उसी की तरफ़ जमा किए जाओगे (79) और वही है जो ज़िंदा करता है और मारता है

وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ

और उसी के इख़्तियार में है रात और दिन का बदलना, तो क्या तुम समझते नहीं (80) बल्कि

قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا

उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी (81) उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएंगे और हम

تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ

मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे तो क्या हम दोबारा उठाए जाएंगे (82) उसका वादा हमको

وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾

और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया, यह महज़ अगलों के अफ़साने हैं (83)

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾

कह दीजिए कि ज़मीन और जो कोई उसमें है यह किसका है, अगर तुम जानते हो (84)

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ

वे कहेंगे कि अल्लाह का है, कहिए कि फिर तुम सोचते नहीं (85) कहिए कि कौन मालिक है सातों आसमानों का

السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ

और कौन मालिक है अर्शे अज़ीम का (86) वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है, कह दीजिए कि

ع ٤/٧

منزل ٤

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ

फिर क्या तुम डरते नही (87) कहिए कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है और वह

يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ

पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो (88) वे कहेंगे कि

لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ

यह अल्लाह के लिए है, कहिए कि फिर कहाँ से तुम जादू किए जाते हो (89) बल्कि हम उनके पास हक़ लाए हैं

وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ

और बेशक वे झूठे हैं (90) अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद नहीं,

مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ

ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़लूक़ को लेकर अलग हो जाता और एक दूसरे पर

عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ

चढ़ाई करता, अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं (91) वह खुले और छुपे का जानने वाला है,

وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ

वह बहुत ऊपर है उससे जिसको ये शरीक बनाते हैं (92) कह दीजिए कि ऐ मेरे रब! अगर आप मुझको

مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

दिखा दें जिसका उनसे वादा किया जा रहा है (93) तो ऐ मेरे रब! मुझको ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए (94)

وَاِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ

और बेशक हम क़ादिर हैं कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह आपको दिखा दें (95) आप बुराई को

هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَقُلْ

उस तरीक़े से दफ़ा करें जो बेहतर हो, हम ख़ूब जानते हैं जो ये लोग कहते हैं (96) और कहिए

رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ

कि ऐ मेरे रब! मैं पनाह मांगता हूँ शैतानों के वसवसों से (97) और ऐ मेरे रब! मैं आपसे

رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ

पनाह मांगता हूँ कि वे मेरे पास आएं (98) यहाँ तक कि जब उन में से किसी पर मौत आती है तो वह

قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

कहता है कि ऐ मेरे रब! मुझको वापस भेज दीजिए (99) ताकि जिसको मैं छोड़ आया हूँ उसमें कुछ नेकी कमाऊँ,

كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۚ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ

हरगिज़ नहीं! यह एक बात है कि वही वह कहता है, और उनके आगे

بَرْزَخٌ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ

एक परदा है उस दिन तक के लिए जबकि वे उठाए जाएंगे (100) फिर जब सूर फूंका जाएगा

فَلَآ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

तो फिर उस दिन उनके दरमियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा (101)

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾

पस जिनके पलड़े भारी होंगे वही लोग कामयाब होंगे (102)

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا

और जिनके पलड़े हलके होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको

أَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ

घाटे में डाला, वह जहन्नम में हमेशा रहेंगे (103) उनके चेहरों को आग झुलस देगी

النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ أَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى

और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे (104) क्या तुमको मेरी आयतें पढ़कर

عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ

नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उनको झुठलाते थे (105) वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमारी बदबख़्ती ने

عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا

हमको घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे (106) ऐ हमारे रब! हमको इससे

مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا

निकाल दीजिए, फिर अगर हम ऐसा दोबारा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं (107) अल्लाह कहेगा कि दूर हो, उसी में पड़े रहो

وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ إِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ

और मुझ से बात न करो (108) मेरे बंदों में से एक गिरोह था

يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ

जो कहता था कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए पस आप हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए और आप

الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى أَنْسَوْكُمْ

बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं (109) पस तुमने उनको मज़ाक बना लिया, यहाँ तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद

ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ

भुला दी और तुम उनपर हंसते रहे (110) मैंने उनको आज उनके

الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ

सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले (111) अल्लाह कहेगा कि बरसों के

لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا

शुमार से तुम कितनी मुद्दत ज़मीन में रहे (112) वे कहेंगे कि हम एक दिन रहे

اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ

या एक दिन से भी कम, पस गिनती करने वालों से पूछ लीजिए (113) इरशाद होगा कि तुम थोड़ी ही

اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا

मुद्दत रहे, काश तुम जानते होते (114) पस क्या तुम यह ख़्याल करते हो

خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ

कि हमने तुमको बेमक़सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे (115) पस बहुत बरतर है अल्लाह

الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

जो हक़ीक़ी बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मालिक है अर्शे अज़ीम का (116)

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ

और जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे जिसके हक़ में उसके पास कोई दलील नहीं

فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

तो उसका हिसाब उसके रब के पास है, बेशक मुनकिरों को कामयाबी नहीं मिलेगी (117)

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾ ع

और कह दीजिए कि ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दीजिए और मुझ पर रहम फ़रमाइए, आप बेहतरीन रहम फ़रमाने वाले हैं (118)

منزل ٤

ركوع ٤

सूरह नूर मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (64) आयतें और (9) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (102) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (24) नम्बर पर है और सूरह हश्र के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (5980) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1316) कलिमात हैं

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ

यह एक सूरत है जिसको हमने उतारा है और उसको हमने फ़र्ज़ किया है और उसमें हमने साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं;

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝١ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ

ताकि तुम याद रखो (1) ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाले मर्द दोनों में से

وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ

हर एक को सो कोड़े मारो, और तुमको उन दोनों पर अल्लाह के दीन के

فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ

मामले में रहम न आना चाहिए अगर तुम अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान रखते हो,

وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ اَلزَّانِيْ

और चाहिए कि दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गिरोह मोजूद रहे (2) ज़ानी

لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۡ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ

निकाह न करे मगर ज़ानिया के साथ या मुशरिका के साथ और ज़ानिया से निकाह न करे

اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣

मगर ज़ानी या मुशरिक, और यह हराम कर दिया गया अहले ईमान पर (3)

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ

और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाऐं फिर चार गवाह

شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

न ले आएं उनको अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤ اِلَّا الَّذِيْنَ

कभी क़ुबूल न करो, यही लोग नाफ़रमान हैं (4) लेकिन जो लोग

تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

उसके बाद तौबा करें और इस्लाह कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला है,

رَّحِيْمٌ ۝٥ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ

मेहरबान है (5) और जो लोग अपनी बीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा

شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ

और गवाह न हों तो ऐसे शख़्स की गवाही की सूरत यह है कि वह चार बार

بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ

अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है (6) और पाँचवीं बार यह कहे कि उसपर

اللّٰهِ عَلَيۡهِ اِنۡ كَانَ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ۝٧ وَيَدۡرَؤُا عَنۡهَا

अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो (7) और औरत से सज़ा इस तरह

الۡعَذَابَ اَنۡ تَشۡهَدَ اَرۡبَعَ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ

टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि यह शख़्स

الۡكٰذِبِيۡنَ ۝٨ ۙ وَالۡخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيۡهَاۤ اِنۡ

झूठा है (8) और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझपर अल्लाह का ग़ज़ब हो

كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۝٩ وَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ

अगर यह शख़्स सच्चा हो (9) और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत

وَرَحۡمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيۡمٌ ۝١٠ ع اِنَّ الَّذِيۡنَ جَآءُوۡ

न होती और यह कि अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, हिकमत वाला है (10) जिन लोगों ने यह तूफ़ान

بِالۡاِفۡكِ عُصۡبَةٌ مِّنۡكُمۡ ؕ لَا تَحۡسَبُوۡهُ شَرًّا لَّكُمۡ ؕ بَلۡ هُوَ

बरपा किया वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमात है, तुम इसको अपने हक़ में बुरा न समझो बल्कि यह

خَيۡرٌ لَّكُمۡ ؕ لِكُلِّ امۡرِئٍ مِّنۡهُمۡ مَّا اكۡتَسَبَ مِنَ الۡاِثۡمِ ۚ

तुम्हारे लिए बेहतर है, उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया,

وَالَّذِىۡ تَوَلّٰى كِبۡرَهٗ مِنۡهُمۡ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۝١١ لَوۡلَاۤ

और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है (11) जब तुम लोगों ने

اِذۡ سَمِعۡتُمُوۡهُ ظَنَّ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ بِاَنۡفُسِهِمۡ

उसको सुना तो मुसलमान मर्दों और औरतों ने एक दूसरे के बारे में नेक गुमान

خَيۡرًا ۙ وَّقَالُوۡا هٰذَاۤ اِفۡكٌ مُّبِيۡنٌ ۝١٢ لَوۡلَا جَآءُوۡ

क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान है (12) ये लोग उसपर चार

عَلَيۡهِ بِاَرۡبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذۡ لَمۡ يَاۡتُوۡا بِالشُّهَدَآءِ

गवाह क्यों न लाए, पस जब वे गवाह न लाए

فَاُولٰٓئِكَ عِنۡدَ اللّٰهِ هُمُ الۡكٰذِبُوۡنَ ۝١٣ وَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ

तो अल्लाह के नज़दीक वही झूठे हैं (13) और अगर तुम लोगों पर दुनिया

عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمۡ فِىۡ مَاۤ

और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में

اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ

तुम पड़ गए थे उसकी वजह से तुम पर कोई बड़ी आफ़त आजाती (14) जबकि तुम उसको अपनी ज़बानों से नक़ल कर रहे थे

وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ

और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म न था और तुम उसको एक मामूली बात

هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ

समझ रहे थे हालाँकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत भारी बात है (15) और जब तुमने उसको सुना तो

قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا

यूँ क्यों न कहा कि हमको ज़ेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुँह से निकालें, मआज़ल्लाह! यह

بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا

बहुत बड़ा बोहतान है (16) अल्लाह तुमको नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ

अगर तुम मोमिन हो (17) अल्लाह तुमसे साफ़-साफ़ अहकाम बयान करता है, और अल्लाह

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ

जानने वाला, हिकमत वाला है (18) बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का

فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ

चर्चा हो उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा है,

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ

और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (19) और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع يٰٓاَيُّهَا

और उसकी रहमत न होती और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला, रहमत करने वाला है (20) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ وَمَنْ يَّتَّبِعْ

ईमान वालो! तुम शैतान के क़दमों पर न चलो, और जो शख़्स शैतान के

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ

क़दमों पर चलेगा तो वह उसको बेहयाई और बदी ही के काम करने को कहेगा,

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ

और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स कभी

اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ‌ؕ وَاللّٰهُ سَمِيۡعٌ

पाक न हो सकता लेकिन अल्लाह ही जिसको चाहता है पाक कर देता है, और अल्लाह सुनने वाला,

عَلِيۡمٌ ﴿۲۱﴾ وَلَا يَاۡتَلِ اُولُوا الۡـفَضۡلِ مِنۡكُمۡ وَالسَّعَةِ اَنۡ

जानने वाला है (21) और तुम में से जो लोग फ़ज़्ल वाले और वुसअत वाले हैं वे इस बात की क़सम न खाएं

يُّؤۡتُوۡۤا اُولِى الۡقُرۡبٰى وَالۡمَسٰكِيۡنَ وَالۡمُهٰجِرِيۡنَ فِىۡ سَبِيۡلِ

कि वे अपने रिश्तेदारों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को

اللّٰهِ ‌ۖ وَلۡيَعۡفُوۡا وَلۡيَـصۡفَحُوۡا ؕ اَلَا تُحِبُّوۡنَ اَنۡ يَّغۡفِرَ

ना देंगे, और चाहिए कि वे मुआफ़ कर दें और दरगुज़र करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुमको

اللّٰهُ لَـكُمۡ‌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۲۲﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَرۡمُوۡنَ

मुआफ़ करे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (22) बेशक जो लोग पाकदामन,

الۡمُحۡصَنٰتِ الۡغٰفِلٰتِ الۡمُؤۡمِنٰتِ لُعِنُوۡا فِى الدُّنۡيَا

बेख़बर ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं उनपर दुनिया और आख़िरत में

وَالۡاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ﴿۲۳﴾ ۙ يَّوۡمَ تَشۡهَدُ عَلَيۡهِمۡ

लानत की गई और उनके लिए बड़ा अज़ाब है (23) उस दिन जबकि उनकी ज़बानें उनके ख़िलाफ़

اَلۡسِنَتُهُمۡ وَاَيۡدِيۡهِمۡ وَاَرۡجُلُهُمۡ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۲۴﴾

गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की जो कि ये लोग किया करते थे (24)

يَوۡمَٮِٕذٍ يُّوَفِّيۡهِمُ اللّٰهُ دِيۡنَهُمُ الۡحَـقَّ وَيَعۡلَمُوۡنَ اَنَّ اللّٰهَ

उस दिन अल्लाह उनको उनका वाजिबी बदला पूरा पूरा देगा, और वे जान लेंगे अल्लाह ही

هُوَ الۡحَـقُّ الۡمُبِيۡنُ ﴿۲۵﴾ اَلۡخَبِيۡثٰتُ لِلۡخَبِيۡثِيۡنَ وَالۡخَبِيۡثُوۡنَ

हक़ है, खोलने वाला है (25) गंदी औरतें गंदे मर्दों के लिए हैं और गंदे मर्द गंदी औरतों

لِلۡخَبِيۡثٰتِ‌ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيۡنَ وَالطَّيِّبُوۡنَ لِلطَّيِّبٰتِ‌ ۚ

के लिए हैं, और पाकबाज़ औरतें पाकबाज़ मर्दों के लिए हैं और पाकबाज़ मर्द पाकबाज़ औरतों के लिए हैं,

اُولٰۤٮِٕكَ مُبَرَّءُوۡنَ مِمَّا يَقُوۡلُوۡنَ‌ ؕ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ

वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं, उनके लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त की

كَرِيۡمٌ ﴿۲۶﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَدۡخُلُوۡا بُيُوۡتًا غَيۡرَ

रोज़ी है (26) ऐ ईमान वालो! तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में

منزل ۴

بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ

दाख़िल न हो जब तक इजाज़त हासिल न कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है

خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ

ताकि तुम याद रखो (27) फिर अगर वहाँ किसी को न पाओ

اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ

तो उनमें दाख़िल न हो जब तक तुमको इजाज़त न दी जाए, और अगर तुम से

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह जानता है

تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا

जो कुछ तुम करते हो (28) तुम पर उसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में

بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

दाख़िल हो जिनमें कोई न रहता हो (और) उनमें तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो, और अल्लाह जानता है

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا

जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो (29) मोमिन मर्दों से कह दीजिए कि वे अपनी निगाहें

مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى

नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उनके लिए

لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ

पाकीज़ा है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो वे करते हैं (30) और मोमिन औरतों से कह दीजिए

يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ

कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ

और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें मगर जो उसमें से ज़ाहिर हो जाए और अपने दोपट्टे

بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ

अपने सीने पर डाले रहें, और अपनी ज़ीनत को ज़ाहिर न करें मगर अपने

اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ

शोहरों पर या अपने वालिद पर या अपने शोहर के वालिद पर

اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ

या अपने बेटों पर या अपने शोहर के बेटों पर या अपने भाईयों पर

بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا

या अपने भाईयों के बेटों पर या अपनी बहनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर

مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ

या अपने ममलूक पर या ऐसे ख़िदमत गुज़ारों पर जो कुछ जिंसी ख़्वाहिश

الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ

नहीं रखते या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के परदे की बातों से

النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ

अभी नावाक़िफ़ हों, और वे अपने पांव ज़ोर से न मारें कि उनकी छुपी हुई ज़ीनत

مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ

मालूम हो जाए, और ऐ ईमान वालो! तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ़ रुजू करो

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ

ताकि तुम फ़लाह पाओ (31) और तुम में जो बे निकाह हों उनका निकाह कर दो और तुम्हारे ग़ुलामों

مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ

और लोंडियों में से जो निकाह के लायक़ हों उनका भी, अगर वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह उनको अपने फ़ज़्ल से

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ

ग़नी कर देगा, और अल्लाह वुसअत वाला, जानने वाला है (32) और जो निकाह का मौक़ा न पाएं

الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ

उनको चाहिए कि वे ज़ब्त करें यहाँ तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उनको

فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

ग़नी कर दे, और तुम्हारे ग़ुलामों में से जो आज़ादी हासिल करना चाहते हों

فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۗ وَّاٰتُوْهُمْ

तो उनसे आज़ादी का मामला तय कर लो अगर तुम उनमें सलाहियत पाओ, और उनको

مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ

उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी लोंडियों को बदकारी के पेशे पर

عَلَى الۡبِغَآءِ اِنۡ اَرَدۡنَ تَحَصُّنًا لِّتَبۡتَغُوۡا عَرَضَ الۡحَيٰوةِ

मजबूर न करो जबकि वह पाक दामन रहना चाहती हों, इसलिए कि दुनियावी ज़िंदगी का कुछ फ़ायदा तुमको

الدُّنۡيَا ؕ وَمَنۡ يُّكۡرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنۡۢ بَعۡدِ اِكۡرَاهِهِنَّ

हासिल हो जाए, और जो शख़्स उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उस जब्र के बाद

غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكُمۡ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (33) और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें उतारी हैं

وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَمَوۡعِظَةً

और उन लोगों की मिसालें भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और डरने वालों के लिए

لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۳۴﴾ اَللّٰهُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ مَثَلُ نُوۡرِهٖ

नसीहत भी (34) अल्लाह आसमानों और ज़मीन की रोशनी है, उसकी रोशनी की मिसाल

كَمِشۡكٰوةٍ فِيۡهَا مِصۡبَاحٌ ؕ اَلۡمِصۡبَاحُ فِىۡ زُجَاجَةٍ ؕ

ऐसी है जैसे एक ताक़ उसमें एक चिराग़ है, चिराग़ एक शीशे के अंदर है,

اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوۡكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوۡقَدُ مِنۡ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा, वह ज़ैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के

زَيۡتُوۡنَةٍ لَّا شَرۡقِيَّةٍ وَّلَا غَرۡبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيۡتُهَا يُضِىۡٓءُ وَلَوۡ

तेल से रोशन किया जाता है जो न शर्क़ी है और न ग़र्बी, उसका तेल ऐसा है गोया आग के

لَمۡ تَمۡسَسۡهُ نَارٌ ؕ نُوۡرٌ عَلٰى نُوۡرٍ ؕ يَهۡدِى اللّٰهُ لِنُوۡرِهٖ مَنۡ

छुए बग़ैर ही ख़ुद बख़ुद जल उठेगा, रोशनी के ऊपर रोशनी, अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसको

يَّشَآءُ ؕ وَيَضۡرِبُ اللّٰهُ الۡاَمۡثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ

चाहता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर चीज़ को

شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۳۵﴾ۙ فِىۡ بُيُوۡتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنۡ تُرۡفَعَ وَيُذۡكَرَ

जानने वाला है (35) ऐसे घरों में जिनकी निसबत अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वह बुलंद किए जाएं और उनमें

فِيۡهَا اسۡمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيۡهَا بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ﴿۳۶﴾ۙ

उसके नाम का ज़िक्र किया जाए उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते रहें (36)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلۡهِيۡهِمۡ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيۡعٌ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ

वे लोग जिनको तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती

وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ

और न नमाज़ को क़ायम करने से और ज़कात की अदायगी से, वह उस दिन से डरते हैं जिसमें

فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ

दिल और आँखें उलट जाएंगी (37) कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का

مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ

बेहतरीन बदला दे और उनको मज़ीद अपने फ़ज़्ल से नवाज़े, और अल्लाह जिसको चाहता है

يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ

बेहिसाब रिज़्क़ देता है (38) और जिन लोगों ने इनकार किया उनके आमाल ऐसे हैं

كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ

जैसे चटयल मैदान में सराब, प्यासा उसको पानी ख़्याल करता है यहाँ तक कि जब वे उसके पास आया

لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ

तो उसको कुछ न पाया और उसने वहाँ अल्लाह को मोजूद पाया पस उसने उसका हिसाब चुका दिया,

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ

और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है (39) या जैसे एक गहरे समुंदर में अंधेरा हो,

يَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ

मौज के ऊपर मौज उठ रही हो (और) ऊपर से बादल छाए हुए हों,

ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ

ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसको भी न

يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ

देख पाए, और जिसको अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई

نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

रोशनी नहीं (40) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो

وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ

और ज़मीन में हैं और चिड़ियाँ भी पर को फैलाए हुए, हर एक अपनी नमाज़ को और तस्बीह को

وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ

जानता है, और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं (41) और अल्लाह ही की हुकूमत है

मंज़िल ٤ ع ٥

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ

आसमानों और ज़मीन में, और अल्लाह ही की तरफ़ है सबकी वापसी (42) क्या आपने नहीं देखा

اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ

कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उनको आपस में मिला देता है फिर उनको तह-बतह

رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ

कर देता है फिर आप बारिश को देखते हो कि उसके बीच से निकलती है, और वह आसमान से

السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ

उसके अंदर पहाड़ों से ओले बरसाता है फिर उनको जिस पर चाहता है

مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ

गिराता है और जिससे चाहता है उनको हटा देता है, उसकी बिजली की चमक मालूम होता है कि

يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾ۭ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ

निगाहों को उचक ले जाएगी (43) अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है,

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَ

बेशक इसमें सबक़ है आँख वालों के लिए (44) और अल्लाह ने हर जानदार को

كُلَّ دَاۗبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ

पानी से पैदा किया फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है,

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ

और उनमें से कोई दो पाँव पर चलता है और उनमें से कोई

يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

चार पाँव पर चलता है, अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है,

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ

बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (45) हमने खोल कर बताने वाली आयतें उतारी हैं, और अल्लाह

يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

जिसको चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है (46) और वे कहते हैं

اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ

कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत की, मगर उनमें से एक गिरोह

مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۭ وَمَآ اُولٰۗىِٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

उसके बाद फिर जाता है, और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं (47)

وَاِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا

और जब उनको अल्लाह और रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि अल्लाह का रसूल उनके दरमियान फ़ैसला करे

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ

तो उनमें से एक गिरोह मुँह फेर लेता है (48) और अगर हक़ उनको मिलने वाला हो

يَاْتُوْٓا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ ۭ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ

तो वह उसकी तरफ़ फ़रमाँबरदार बनकर आजाते हैं (49) क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे

ارْتَابُوْٓا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ۭ

शक में पड़े हुए हैं या उनको अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ ज़ुल्म करेंगे,

بَلْ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ ۧ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ

बल्कि यही लोग ज़ालिम हैं (50) ईमान वालों का क़ौल तो यह है

اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ

कि जब वह अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके दरमियान फ़ैसला करे

يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾

तो वे कहें कि हमने सुना और हमने माना, और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं (51)

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ

और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुख़ालफ़त से बचे

فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ

तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे (52) और वह अल्लाह की क़समें खाते हैं बड़ी सख़्त

اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ

क़समें कि अगर तुम उनको हुक्म दो तो वे ज़रूर निकलेंगे, कह दीजिए कि क़समें न खाओ,

طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾ قُلْ

दस्तूर के मुताबिक़ इताअत चाहिए, बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो (53) कह दीजिए कि

اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो, फिर अगर तुम मुँह मोड़ लोगे तो रसूल पर

ع ١٢ الثلثة

منزل ٤

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ

वह बोझ है जो उसपर डाला गया है और तुमपर वह बोझ है जो तुमपर डाला गया है, और अगर तुम उसकी इताअत करोगे

تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾

तो हिदायत पाओगे, और रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है (54)

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अल्लाह ने वादा फ़रमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और नेक अमल करें

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ

कि वह उनको ज़मीन में इक़्तिदार देगा जैसा कि उनसे पहले लोगों को

قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ

इक़्तिदार दिया था और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसको उनके लिए पसंद किया है,

وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ

और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद उसको अमन से बदल देगा, वह सिर्फ़ मेरी इबादत करेंगे

لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

और किसी चीज़ को मेरा शरीक न बनाएंगे, और जो इसके बाद इनकार करे तो ऐसे ही लोग

هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا

नाफ़रमान हैं (55) और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की

الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए (56) जो लोग इनकार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करें

مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ

कि वे ज़मीन में अल्लाह को आजिज़ कर देंगे, और उनका ठिकाना आग है और वह

الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ

निहायत बुरा ठिकाना है (57) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे ग़ुलामों को

مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ

और तुम में जो बुलूग़ को नहीं पहुँचे उनको तीन वक़्तों में इजाज़त

ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ

लेना चाहिए, फ़ज्र की नमाज़ से पहले और दोपहर को जब तुम

ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ؕ

अपने कपड़े उतारते हो और इशा की नमाज़ के बाद,

ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ

यह तीन वक़्त तुम्हारे लिए परदे के हैं, उनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है और न ही

بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ

उनपर, तुम एक दूसरे के पास कसरत से आते जाते रहते हो, इस तरह

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (58)

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا

और जब तुम्हारे बच्चे अक़्ल की हद को पहुँच जाएं तो वह भी उसी तरह इजाज़त लें

كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ

जिस तरह उनके अगले इजाज़त लेते रहे हैं, इस तरह

اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ

अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (59) और बड़ी बूढ़ी

مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ

औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं उनपर कोई गुनाह नहीं

جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ

अगर वे अपनी चादरें उतार कर रख दें बशर्तेकि वह ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हों,

وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

और अगर वह भी एहतियात करें तो उनके लिए बेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (60)

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ

अंधे पर कोई गुनाह नहीं और लंगड़े पर कोई गुनाह नहीं

وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ

और बीमार पर कोई गुनाह नहीं और न तुम लोगों पर कोई गुनाह है कि तुम

تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

अपने घरों से खाओ या अपने बाप दादा के घरों से या अपनी माओं के

اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ

घरों से या अपने भाईयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से

اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के

اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ

घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो

اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا

या अपने दोस्तों के घरों से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिल कर खाओ

جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا

या अलग अलग, फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को

عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ

सलाम करो जो बाबरकत व पाकीज़ा दुआ है अल्लाह की तरफ़ से,

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वज़ाहत करता है ताकि तुम समझो (61)

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا

ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यक़ीन रखें और जब

كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى

किसी इज्तिमाइ काम के मौक़े पर रसूल के साथ हों तो जब तक उस (रसूल) से इजाज़त न ले लें

يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ

वहाँ से न जाएं, जो लोग आप से इजाज़त लेते हैं वही

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, पस जब वे अपने

لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ

किसी काम के लिए आपसे इजाज़त मांगें तो आप उनमें से जिसे चाहें इजाज़त दे दीजिए

وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾

और उनके लिए अल्लाह से मुआफ़ी मांगिए, बेशक अल्लाह मुआफ़ करने वाला रहम करने वाला है (62)

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ

तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को

بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ

बुलाते हो, अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से

لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ

चले जाते हैं, पस जो लोग उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं उनको डरना चाहिए

تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ اَلَاۤ

कि उनपर कोई आज़माईश आजाए या उनको एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ ले (63) याद रखो

اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ

कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह का है, अल्लाह उस हालत को जानता है

مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ

जिसपर तुम हो, और जिस दिन लोग उसकी तरफ़ बुलाए जाएंगे तो जो कुछ उन्होंने क्या था

بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾ ع

वह उससे उनको बाख़बर कर देगा, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है (64)

सूरह फ़ुरक़ान मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई लेकिन आयत (68, 69, 70) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (77) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (42) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (25) नम्बर पर है और सूरह यासीन के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3703) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (892) कलिमात हैं

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ

बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान उतारा ताकि वह

لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

जहान वालों के लिए डराने वाला हो (1) वह जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ

बादशाही है और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका

فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾

शरीक नहीं, और उसने हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक अंदाज़ा मुक़र्रर किया (2)

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا

और लोगों ने उसके सिवा ऐसे माबूद बनाए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते

وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا

बल्कि वे ख़ुद पैदा किए जाते हैं, और वे ख़ुद अपने लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखते हैं

وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا

और न किसी नफ़ा का और न वे किसी के मरने का इख़्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का

نُشُوْرًا ﴿٣﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ

और न किसी को दुबारा ज़िंदा करने का (3) और मुनकिर लोग कहते हैं कि यह तो सिर्फ़

اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛ

एक झूठ है जिसको इसने घड़ा है और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसकी मदद की है,

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿٤﴾ وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ

पस ये लोग ज़ुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए (4) और वह कहते हैं कि यह अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً

बेसनद बातें हैं जिनको उसने लिखवा लिया है, पस वे उसको सुबह व शाम

وَّاَصِيْلًا ﴿٥﴾ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

सुनाई जाती हैं (5) कह दीजिए कि इसको उसने उतारा है

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا

जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है, बेशक वह बख़्शने वाला,

رَّحِيْمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ

रहम करने वाला है (6) और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना

الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْ لَآ اُنْزِلَ

खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है, क्यों न उसके पास

اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ﴿٧﴾ اَوْ يُلْقٰٓى

कोई फ़रिश्ता भेजा गया कि वह उसके साथ रह कर डराता है (7) या उसके लिए

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ

कोई ख़ज़ाना उतारा जाता या उसके लिए कोई बाग़ होता जिसमें से वह खाता,

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٨﴾

और ज़ालिमों ने कहा कि तुम लोग तो एक जादू किए हुए आदमी की पैरवी कर रहे हो (8)

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا

देखिए कि वह कैसी कैसी मिसालें आपके लिए बयान कर रहे हैं, पस वह बहक गए हैं

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩﴾ع تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ

फिर वह राह नहीं पा सकते (9) बड़ा बाबरकत है वह

اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ

अगर वह चाहे तो आपको उससे भी बेहतर चीज़ देदे ऐसे बाग़ात

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ

जिनके नीचे नहरें जारी हों और आपको बहुत से

قُصُوْرًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ وَاَعْتَدْنَا

महल देदे (10) बल्कि उन्होंने क़ियामत को झुठला दिया है, और हमने ऐसे शख़्स के लिए

لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿١١﴾ج اِذَا رَاَتْهُمْ

जो क़ियामत को झुठलाए दोज़ख़ तैयार कर रखी है (11) जब वह उनको

مِّنْ مَّكَانٍ ۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا

दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना

وَّزَفِيْرًا ﴿١٢﴾ وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ

सुनेंगे (12) और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बाँध कर डाल दिए जाएंगे

دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾ط لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا

तो वे वहाँ मौत को पुकारेंगे (13) आज एक मौत को

وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ

न पुकारो; बल्कि बहुत सी मौत को पुकारो (14) कहिए कि क्या यह बेहतर है

اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ط كَانَتْ

या हमेशा की जन्नत जिसका वादा अल्लाह से डरने वालों से किया गया है, वह

لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ

उनके लिए बदला और ठिकाना होगी (15) उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे,

ع ١٢/٥ منزل ٤

خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾

वे उसमें हमेशा रहेंगे, यह आपके रब के ज़िम्मे एक वादा है वाजिबुल अदा (16)

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और जिस दिन वह उनको जमा करेगा और उनको भी जिनकी वह अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं

فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِىْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ

फिर वह कहेगा कि क्या तुमने मेरे इन बंदों को गुमराह किया या वह ख़ुद

ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿١٧﴾ؕ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِىْ

रास्ता भटक गए (17) वे कहेंगे कि पाक है आपकी ज़ात! हमारे लिए मुनासिब न था

لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ

कि हम आपके सिवा दूसरों को कारसाज़ तजवीज़ करें,

وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ

मगर आपने उनको और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहाँ तक कि वे नसीहत को भूल गए

وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا

और हलाक होने वाले बने (18) पस उन्होंने तुमको तुम्हारी बातों में

تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ

झूठा ठहरा दिया, अब न तुम ख़ुद टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो,

وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

और तुम में से जो शख़्स ज़ुल्म करेगा हम उसको एक बड़ा अज़ाब चखाएंगे (19)

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ

और हमने आपसे पहले जितने भी पैग़म्बर भेजे सबके सब

لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا

खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हमने तुमको

بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ

एक दूसरे के लिए आज़माइश बनाया, क्या तुम सब्र करते हो, और आपका रब सब कुछ

بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾ ع

देखता है (20)

وَقَالَ الَّذِيۡنَ لَا يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا لَوۡلَآ اُنۡزِلَ عَلَيۡنَا

और जो लोग हमारे सामने पेश होने की उम्मीद नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर

الۡمَلٰٓئِكَةُ اَوۡ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسۡتَكۡبَرُوۡا فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ

फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए या हम अपने रब को देख लेते, उन्होंने अपने जी में अपने को बड़ा समझा

وَعَتَوۡ عُتُوًّا كَبِيۡرًا ﴿٢١﴾ يَوۡمَ يَرَوۡنَ الۡمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشۡرٰى

और वे सरकशी में हद से गुज़र गए हैं (21) जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन

يَوۡمَئِذٍ لِّلۡمُجۡرِمِيۡنَ وَيَقُوۡلُوۡنَ حِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿٢٢﴾

मुजरिमों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी और वे कहेंगे कि पनाह पनाह (22)

وَقَدِمۡنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوۡا مِنۡ عَمَلٍ فَجَعَلۡنٰهُ هَبَآءً

और हम उनके हर अमल की तरफ़ बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसको उड़ती हुई

مَّنۡثُوۡرًا ﴿٢٣﴾ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ يَوۡمَئِذٍ خَيۡرٌ مُّسۡتَقَرًّا

खाक बना देंगे (23) जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे और निहायत

وَّاَحۡسَنُ مَقِيۡلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوۡمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالۡغَمَامِ وَنُزِّلَ

अच्छी आरामगाह में (24) और जिस दिन आसमान बादल से फट जाएगा और फ़रिश्ते लगातार

الۡمَلٰٓئِكَةُ تَنۡزِيۡلًا ﴿٢٥﴾ اَلۡمُلۡكُ يَوۡمَئِذِ ۨالۡحَقُّ لِلرَّحۡمٰنِ ؕ وَكَانَ

उतारे जाएंगे (25) उस दिन हक़ीक़ी बादशाहत सिर्फ़ रहमान की होगी, और वह

يَوۡمًا عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ عَسِيۡرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوۡمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى

दिन मुनकिरों पर बड़ा सख़्त होगा (26) और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को

يَدَيۡهِ يَقُوۡلُ يٰلَيۡتَنِى اتَّخَذۡتُ مَعَ الرَّسُوۡلِ سَبِيۡلًا ﴿٢٧﴾

काटेगा, वह कहेगा कि काश! मैंने रसूल के साथ रहकर राह इख़्तियार की होती (27)

يٰوَيۡلَتٰى لَيۡتَنِىۡ لَمۡ اَتَّخِذۡ فُلَانًا خَلِيۡلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدۡ اَضَلَّنِىۡ

हाय अफ़सोस! काश मैं फ़लाँ शख़्स को दोस्त न बनाता (28) उसने मुझको नसीहत से

عَنِ الذِّكۡرِ بَعۡدَ اِذۡ جَآءَنِىۡ ؕ وَكَانَ الشَّيۡطٰنُ لِلۡاِنۡسَانِ

बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी, और शैतान है ही इंसान को

خَذُوۡلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوۡلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوۡمِى اتَّخَذُوۡا

रुसवा करने वाला (29) और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को

هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

बिलकुल नज़र अंदाज़ कर दिया (30) और इसी तरह हमने मुजरिमों में से

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

हर नबी के दुश्मन बनाए और आपका रब काफ़ी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए (31)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً

और इनकार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा क़ुरआन क्यों नहीं

وَّاحِدَةً ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ

उतारा गया, ऐसा इस लिए है ताकि इसके ज़रिए से हम आपके दिल को मज़बूत करें और हमने इसको ठहर ठहर कर

تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ

उतारा है (32) और ये लोग कैसा ही अजीब सवाल आपके सामने लाएं मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वज़ाहत

تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ ؕ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى

आपको बता देंगे (33) जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए

جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ ع وَلَقَدْ

जाएंगे, उन्हीं का बुरा ठिकाना है और वही हैं राह से बहुत भटके हुए (34) और हमने

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ

मूसा (अलै०) को किताब दी और उसके साथ उसके भाई हारून (अलै०) को

وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ ۚ فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

मददगार बनाया (35) फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को

بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ ؕ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

झुठला दिया है, फिर हमने उनको बिलकुल तबाह कर दिया (36) और नूह (अलै०) की क़ौम को भी हमने डुबो दिया

الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا

जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उनको लोगों के लिए एक निशानी बना दिया, और हमने

لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ ۚۖ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ

ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (37) और आद और समूद को और असहाबुर्रस (कुएं वालों) को

الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

और उनके दरमियान बहुत सी क़ौमों को (38) और हमने उनमें से हर एक को

الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ

मिसालें सुनाईं और हमने हर एक को बिलकुल बरबाद कर दिया (39) और यह लोग उस बस्ती पर से गुज़रे हैं

الَّتِىْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ

जिसपर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए, क्या वे उसको देखते नहीं रहे हैं, बल्कि

كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ

वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते (40) और वे जब आपको देखते हैं तो वे आपका

اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِىْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ

मज़ाक़ बना लेते हैं, क्या यही है जिसको अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है (41) उसने तो

لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ

हमको हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उन पर जमे न रहते, और जल्द ही

يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

उनको मालूम हो जाएगा जब वे अज़ाब को चखेंगे कि सबसे ज़्यादा बेराह कौन है (42)

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ

क्या आपने उस शख़्स को नहीं देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना रखा है पस क्या आप उसका

وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ

ज़िम्मा ले सकते हो (43) या आप ख़्याल करते हो कि उनमें से अकसर सुनते और समझते हैं,

اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾ اَلَمْ تَرَ

वे तो महज़ जानवरों की तरह हैं बल्कि वे उनसे भी ज़्यादा बेराह हैं (44) क्या आपने अपने रब की

اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ

(क़ुदरत की) तरफ़ नहीं देखा कि वह किस तरह साए को फैला देता है और अगर वह चाहता तो वह उसको ठहरा देता,

ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا

फिर हमने सूरज को उस पर दलील बनाया (45) फिर हमने आहिस्ता आहिस्ता उसको

قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا

अपनी तरफ़ समेट लिया (46) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को परदा

وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِىْٓ

और नींद को राहत और दिन को जी उठने का वक़्त बनाया (47) और वही है जो अपनी रहमत से

اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَیْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ

पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी लाने वालियाँ बना कर भेजता है और हम आसमान से

السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾ لِّنُحْیِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ

पाक पानी उतारते हैं (48) ताकि उसके ज़रिए से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें, और उसको पिलाएं

مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِیَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ

अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को (49) और हमने इसको उनके दरमियान,

بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾ وَلَوْ

तरह तरह से बयान किया ताकि वे सोचें, फिर भी अकसर लोग नाशुकरी किए बग़ैर नहीं रहते (50) और अगर

شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِیْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते (51) पस आप मुनकिरों की बात न मानिए

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِیْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

और इसके ज़रिए उनके साथ बड़ा जिहाद कीजिए (52) और वही है जिसने दो समुंदरों को मिलाया,

هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا

यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह खारा है कड़वा, और उसने उनके दरमियान

بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ

एक परदा रख दिया और एक मज़बूत आड़ (53) और वही है जिसने इंसान को पानी से

بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾

पैदा किया फिर उसको खानदान और सुसराल वाला बनाया, और आपका रब बड़ी क़ुदरत वाला है (54)

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ

और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो उनको न नफ़ा पहुँचा सकती है और न नुक़सान,

وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا

और काफ़िर तो अपने रब के ख़िलाफ़ मददगार बना हुआ है (55) और हमने आपको सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला

وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ

बनाकर भेजा है (56) आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इसपर कोई उजरत नहीं मांगता मगर यह कि जो चाहे

اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَیِّ الَّذِیْ

वह अपने रब का रास्ता पकड़ ले (57) और उस अल्लाह पर भरोसा रखिए जो ज़िंदा है कभी मरने वाला नहीं

لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿۵۸﴾

और उसकी तारीफ़ के साथ उसकी पाकीज़गी बयान कीजिए, और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफ़ी है (58)

الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ

वही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है

اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ

छः दिन में फिर वह तख़्त पर मुतमक्किन हुआ, वह रहमान है पस उसको किसी जानने वाले से

خَبِيْرًا ﴿۵۹﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا

पूछिए (59) और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो वे कहते हैं कि रहमान

الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ﴿۶۰﴾ تَبٰرَكَ

क्या है, क्या हम उसको सज्दा करें जिसको तुम हमसे कहो? और उनका बिदकना और बढ़ जाता है (60) बड़ी बाबरकत है

الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا

वह ज़ात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चिराग़ (सूरज)

وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿۶۱﴾ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً

और एक चमकता चाँद रखा (61) और वही है जिसने रात और दिन को एक के बाद एक आने वाला बनाया

لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿۶۲﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ

उस शख़्स के लिए जो सबक़ लेना चाहे और शुक्रगुज़ार बनना चाहे (62) और रहमान के बंदे वे हैं

الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ

जो ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे

الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿۶۳﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ

बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुमको सलाम (63) और जो अपने रब के आगे सज्दे

سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿۶۴﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

और क़ियाम में रातें गुज़ारते हैं (64) और जो कहते हैं कि ए हमारे प्यारे रब! जहन्नम के अज़ाब को

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿۶۵﴾ اِنَّهَا سَآءَتْ

हमसे दूर रखिए, बेशक उसका अज़ाब पूरी तबाही है (65) बेशक वह बुरा

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿۶۶﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا

ठिकाना है और बुरी जगह है (66) और वे लोग कि जब वे ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं

منزل ۴

وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ

और न तंगी करते हैं, और उनका ख़र्च उसके दरमियानी तरीक़े पर होता है (67) और जो

لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِىْ

अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद को नहीं पुकारते, और वह अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को क़त्ल नहीं करते

حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ

मगर हक़ पर, और वे बदकारी नहीं करते, और जो शख़्स ऐसे काम करेगा तो वह सज़ा से

اَثَامًا ﴿٦٨﴾ لا يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ

दोचार होगा (68) क़ियामत के दिन उसका अज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वह उसमें हमेशा ज़लील होकर

مُهَانًا ﴿٦٩﴾ قلے اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا

रहेगा (69) मगर जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे

فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ط وَكَانَ اللّٰهُ

तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराईयों को भलाईयों से बदल देगा और अल्लाह

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ

बख़्शने वाला, मेहरबान है (70) और जो शख़्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहक़ीक़त

اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ لا وَاِذَا مَرُّوْا

अल्लाह की तरफ़ रुजू कर रहा है (71) और जो लोग झूठे काम में शामिल नहीं होते, और जब किसी बेहूदा चीज़ से

بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

उनका गुज़र होता है तो संजीदगी के साथ गुज़र जाते हैं (72) और वे ऐसे हैं कि जब उनको उनके रब की आयतों के ज़रिए

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ

नसीहत की जाती है तो वे उनपर बेहरे और अंधे होकर नहीं गिरते (73) और जो कहते हैं

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ

कि ए हमारे प्यारे रब! हमको हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक अता फ़रमाइए

وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ

और हमको परहेज़गारों का इमाम बनाइए (74) ये लोग हैं कि उनको बालाख़ाने मिलेंगे

بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾ لا خٰلِدِيْنَ

इस लिए कि उन्होंने सब्र किया, और उनमें उनका इस्तिक़बाल दुआ और सलाम के साथ होगा (75) वे उनमें हमेशा रहेंगे,

فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝۷٦ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

वह ख़ूब जगह है ठहरने की और ख़ूब जगह है रहने की (76) कह दीजिए कि मेरा रब तुम्हारी

رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝۷۷

परवा नहीं रखता अगर तुम उसको न पुकारो, पस तुम झुठला चुके तो वह चीज़ जल्द ही होकर रहेगी (77)

सूरह शुअरा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई लेकिन आयत (197) और (224 से आख़िर सूरह तक) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई हैं इसमें (227) आयतें और (11) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (47) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (26) नम्बर पर है और सूरह वाक़िआ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (5540) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1279) कलिमात है

طٰسٓمّٓ ۝۱ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝۲ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

तॉ-सीन-मीम (1) यह वाज़ेह किताब की आयतें हैं (2) शायद आप अपने आपको

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝۳ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

हलाक कर डालोगे इसपर कि वे ईमान नहीं लाते (3) अगर हम चाहें तो उन पर आसमान से निशानी

مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝۴

उतार दें, फिर उनकी गर्दनें उनके आगे झुक जाएं (4)

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا

उनके पास रहमान की तरफ़ से कोई भी नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे

عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ۝۵ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا

बेरुख़ी न करते हों (5) पस उन्होंने झुठला दिया तो अब जल्द ही उनको उस चीज़ की हक़ीक़त मालूम हो जाएगी

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ

जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे (6) क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने

اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝۷ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

उसमें किस क़द्र तरह तरह की उमदा चीज़ें उगाई हैं (7) बेशक इसमें

لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۸ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ

निशानी है, और उनमें से अकसर लोग ईमान नहीं लाते (8) और बेशक आपका रब ही

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝۹ ۧ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ

ग़ालिब है, रहम करने वाला है (9) और जब आपके रब ने मूसा (अलै०) को पुकारा कि तुम

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١١﴾ قَالَ

ज़ालिम क़ौम के पास जाओ (10) फ़िरऔन की क़ौम के पास, क्या वह नहीं डरते (11) मूसा (अलै०) ने

رَبِّ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ؕ﴿١٢﴾ وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ

कहाः ऐ मेरे रब! मुझको अंदेशा है कि वे मुझे झुठला देंगे (12) और मेरा सीना तंग होता है

وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ

और मेरी ज़बान नहीं चलती, पस आप हारून के पास पैग़ाम भेज दीजिए (13) और मेरे ऊपर उनका

ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۚ﴿١٤﴾ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا

एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूँ कि वह मुझको क़त्ल कर दें (14) फ़रमायाः कभी नहीं, पस तुम दोनों

بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ

हमारी निशानियों के साथ साथ जाओ, हम तुम्हारे सुनने वाले हैं (15) पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो

اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١٦﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ

कि हम तमाम जहानों के परवरदिगार के रसूल हैं (16) कि तुम बनी इस्राईल को हमारे साथ

اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿١٧﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ

जाने दो (17) फ़िरऔन ने कहाः क्या हमने तुमको बचपन में अपने दरमियान नहीं पाला और तुमने अपनी उमर के

فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ﴿١٨﴾ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ

कई साल हमारे यहाँ गुज़ारे (18) और तुमने वह काम किया

فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّاَنَا

जो तुमने ही किया, और तुम नाशुक्रों में से हो (19) मूसा (अलै०) ने फ़रमायाः वह ग़लती मैंने उस वक़्त की थी जब मैं

مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ

नावाक़िफ़ था (20) फिर जब मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुम्हारे दरमियान से निकल गया, फिर मुझको

لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ

मेरे रब ने समझदारी अता फ़रमाई और मुझको रसूलों में से बना दिया (21) और यह

نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿٢٢﴾ قَالَ

एहसान है जो तुम मुझ पर जता रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना लिया (22) फ़िरऔन ने

فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

कहा कि यह रब्बुल-आलमीन क्या है? (23) मूसा (अलै०) ने फ़रमाया कि आसमानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ

और ज़मीन का रब और उन सबका जो उनके दरमियान हैं, अगर तुम यक़ीन लाने वाले हो (24) फ़िरऔन ने

لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

अपने इर्द गिर्द वालों से कहा: क्या तुम सुनते हो? (25) मूसा (अलै०) ने फ़रमाया: वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ

बुज़ुर्गों का भी (26) फ़िरऔन ने कहा: तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है

لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ

मजनूँ है (27) मूसा (अलै०) ने फ़रमाया: मशरिक़ व मग़रिब का रब और जो कुछ उनके दरमियान है,

اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ

अगर तुम अक़्ल रखते हो (28) फ़िरऔन ने कहा: अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद बनाया

لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ

तो मैं तुमको क़ैद कर दूँगा (29) मूसा (अलै०) ने फ़रमाया: क्या अगर मैं कोई वाज़ेह दलील

مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

पेश करूँ तब भी? (30) फ़िरऔन ने कहा: फिर उसको पेश करो अगर तुम सच्चे हो (31)

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ

फिर मूसा (अलै०) ने अपना असा डाल दिया तो यकायक वह एक वाज़ेह अज़्दहा था (32) और उसने अपना हाथ खींचा

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ

तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था (33) फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा: यक़ीनन यह शख़्स

هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ

एक माहिर जादूगर है (34) वह चाहता है कि अपने जादू से तुमको तुम्हारे मुल्क से

بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ

निकाल दे, पस तुम क्या मश्वरा देते हो (35) दरबारियों ने कहा कि इसको और उसके भाई को मोहलत दीजिए और शहरों में

فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾

जमा करने वाले भेजिए (36) कि वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएं (37) पस जादूगर एक दिन

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾ وَّقِيْلَ

मुक़र्ररह वक़्त पर इकट्ठा किए गए (38) और लोगों से

منزل ٥

ع ٢

لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ

कहा गया कि क्या तुम लोग जमा होगे? (39) ताकि हम जादूगरों का साथ दें

اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا

अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों (40) फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने

لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾

फ़िरऔन से कहा: क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहें (41)

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى

उसने कहा: हाँ, और तुम इस सूरत में क़रीबी लोगों में शामिल हो जाओगे (42) मूसा (अलै०) ने उनसे फ़रमाया

اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ

कि तुमको जो कुछ डालना हो डालो (43) पस उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं

وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى

और कहा कि फ़िरऔन की अज़मत की क़सम! हम ही ग़ालिब रहेंगे (44) फिर मूसा (अलै०) ने

مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِىَ

अपना असा डाला तो अचानक वह झूठमूठ के करतब को निगलने लगा जो उनहोंने बनाया था (45) फिर जादूगर

السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

सज्दे में गिर पड़े (46) उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए रब्बुल-आलमीन पर (47)

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ

जो मूसा और हारून (अलै०) का रब है (48) फ़िरऔन ने कहा: तुमने उसको मान लिया इससे पहले कि मैं

اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

तुमको इजाज़त दूँ, बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुमको जादू सिखाया है,

فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۥ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ

पस अब तुमको मालूम हो जाएगा, मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पांव

خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫

काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा (49) उन्होंने कहा कि कुछ हर्ज नहीं,

اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا

हम अपने मालिक के पास पहुँच जाएंगे (50) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ

माफ़ कर देगा, इस लिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने (51) और हमने मूसा (अलै०) पर

اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾

वह्य भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ, बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा (52)

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

पस फ़िरऔन ने शहरों में जमा करने वाले भेजे (53) कि ये लोग

لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾

थोड़ी सी जमात हैं (54) और उन्होंने हमको ग़ुस्सा दिलाया है (55)

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ

और हम एक तैयार जमात हैं (56) पस हमने उनको बाग़ों और चश्मों से

وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

निकाला (57) ख़ज़ानों और उम्दा मकानात से (58) यह हुआ,

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾

और हमने बनी इस्राईल को उन चीज़ों का वारिस बना दिया (59) पस उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त उनका पीछा किया (60)

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾

फिर जब दोनों जमातें आमने सामने हुईं तो मूसा (अलै०) के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए (61)

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى

मूसा (अलै०) ने फ़रमाया: हरगिज़ नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझको रास्ता बताएगा (62) फिर हमने

مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ

मूसा (अलै०) को वह्य की कि अपना असा दरिया पर मारें, पस वह फट गया और हर हिस्सा

فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़ (63) और हमने पीछे आने वालों को भी उनके क़रीब पहुँचा दिया (64)

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

और हमने मूसा (अलै०) को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया (65) फिर दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

डुबो दिया (66) बेशक इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अकसर मानने वाले

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ

नहीं हैं (67) और बेशक आपका रब ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (68) और उनको

عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾

इब्राहीम (अलै०) का क़िस्सा सुनाइए (69) जबकि उसने अपने वालिद से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो (70)

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ

उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर उसपर जमे रहेंगे (71) इब्राहीम (अलै०) ने कहा: क्या ये

يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

तुम्हारी सुनते हैं जब तुम उनको पुकारते हो (72) या वे तुमको नफ़ा या नुक़सान पहुँचाते हैं? (73)

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ

उन्होंने कहा: बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है (74) इब्राहीम (अलै०) ने कहा:

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ

क्या तुमने उन चीज़ों को देखा भी है जिनकी तुम इबादत करते हो (75) तुम भी और तुम्हारे अगले

الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾

बड़े भी (76) ये सब मेरे दुश्मन हैं सिवाए एक रब्बुल आलमीन के (77)

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ

जिसने मुझे पैदा किया फिर वही मेरी रहनुमाई फ़रमाता है (78) और जो मुझको खिलाता है

وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ

और पिलाता है (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझको शिफ़ा देता है (80) और जो

يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ

मुझको मौत देगा फिर मुझको ज़िंदा करेगा (81) और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदले के दिन

خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ

वह मेरी ख़ता मुआफ़ करेगा (82) ऐ मेरे रब! मुझको हिकमत अता फ़रमाइए और मुझको

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي

नेक लोगों में शामिल फ़रमाइए (83) और मेरा बोल सच्चा रखिए बाद के आने

الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾

वालों में (84) और मुझे नेमत के बाग़ के वारिसों में से बनाइए (85)

ع ٤/٨

وقف لازم

منزل ٥

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ

और मेरे वालिद को मुआफ़ फ़रमाइए, बेशक वह गुमराहों में से हैं (86) और मुझको उस दिन रुसवा न कीजिए जबकि लोग

يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ

उठाए जाएंगे (87) जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद (88) मगर वह जो अल्लाह के पास

اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

साफ़ सुथरा दिल लेकर आए (89) और जन्नत डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी (90)

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا

और जहन्नम गुमराहों के लिए ज़ाहिर की जाएगी (91) और उनसे कहा जाएगा कि कहाँ हैं वे

كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ

जिनकी तुम इबादत करते थे (92) अल्लाह के सिवा, क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे या क्या वे

اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُوْدُ

अपना बचाव कर सकते हैं (93) फिर उसमें औंधे मुँह डाल दिए जाएंगे वे और गुमराह लोग (94) और इबलीस का

اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾

लशकर सबके सब (95) वे उसमें आपस में झगड़ते हुए कहेंगे (96)

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾ اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ

अल्लाह की क़सम! हम खुली हुई गुमराही में थे (97) जबकि हम तुमको रब्बुल-आलमीन के

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا

बराबर करते थे (98) और हमको तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया (99) पस अब हमारा कोई

مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا

सिफ़ारिशी नहीं (100) और न कोई मुख़्लिस दोस्त (101) पस काश! हमको

كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ

फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें (102) बेशक इसमें निशानी है,

وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ

और उनमें अकसर लोग ईमान लाने वाले नहीं (103) और बेशक आपका रब ज़बरदस्त है

الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِذْ قَالَ

रहमत वाला है (104) नूह (अलै०) की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया (105) जबकि उनके भाई

لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ

नूह (अलै०) ने उनसे कहा: क्या तुम डरते नहीं हो? (106) मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार

اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ

रसूल हूँ (107) पस तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (108) और मैं इसपर तुमसे कोई अज्र

مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا

नहीं मांगता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है (109) पस तुम अल्लाह से

اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ

डरो और मेरी बात मानो (110) उन्होंने कहा: क्या हम तुमको मान लें; हालाँकि तुम्हारी पैरवी

الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

कमतर लोगों ने की है (111) नूह (अलै०) ने कहा कि मुझको क्या ख़बर जो वे करते रहे हैं (112)

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَآ اَنَا

उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है अगर तुम समझो (113) और मैं मोमिनों को

بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوْا

दूर करने वाला नहीं हूँ (114) मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूँ (115) उन्होंने कहा

لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾

कि ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर तुम्हें पत्थर मार कर ख़तम कर दिया जाएगा (116)

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ

नूह (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया है (117) पस आप मेरे और उनके दरमियान

فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

वाज़ेह फ़ैसला फ़रमा दीजिए और मुझको और जो मोमिन मेरे साथ हैं उनको निजात दीजिए (118) फिर हमने उसको और उस

وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ

के साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया (119) फिर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को

الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

डुबो दिया (120) यक़ीनन उसके अंदर निशानी है, और उनमें से अकसर लोग

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ

मानने वाले नहीं (121) और बेशक आपका रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (122) आद ने

منزل ٥ — النصف — ع ٨

عَادٌ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا

रसूलों को झुठलाया (123) जबकि उनके भाई हूद (अलै०) ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग

تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

डरते नहीं (124) मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूँ (125) पस अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ

और मेरी बात मानो (126) और में इसपर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला तो सिर्फ़

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً

रब्बुल-आलमीन के ज़िम्मे है (127) क्या तुम हर ऊँची ज़मीन पर बग़ैर फ़ायदे की एक इमारत

تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾

बनाते हो (128) और बड़े बड़े महल तामीर करते हो, गोया तुम्हें हमेशा रहना है (129)

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

और जब किसी पर हाथ डालते हो तो सख़्त बन कर हाथ डालते हो (130) पस तुम अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

और मेरी बात मानो (131) और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीज़ों से तुम्हें मदद पहुँचाई जिनको तुम जानते हो (132)

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَّجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾ اِنِّيْٓ

उसने तुम्हारी मदद की चौपायों से और औलाद से (133) और बाग़ों से और चश्मों से (134) मैं तुम्हारे ऊपर

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ

एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (135) उन्होंने कहा: हमारे लिए

عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾ اِنْ هٰذَآ

बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो (136) यह तो बस

اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ

अगले लोगों की एक आदत है (137) और हमपर हरगिज़ अज़ाब आने वाला नहीं है (138) पस उन्होंने उसको झुठला दिया

فَاَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

फिर हमने उनको हलाक कर दिया, बेशक इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अकसर लोग

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ

मानने वाले नहीं हैं (139) और बेशक आपका रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (140) समूद ने

ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا

रसूलों को झुठलाया (141) जब उनके भाई सालेह (अलै०) ने उनसे कहा: क्या तुम

تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

डरते नहीं (142) मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूँ (143) पस तुम अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ

और मेरी बात मानो (144) और मैं तुमसे इसपर कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला सिर्फ़

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ

रब्बुल-आलमीन के ज़िम्मे है (145) क्या तुमको इन चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जाएगा

اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ

जो यहाँ हैं (146) बाग़ों और चश्मों में (147) और खेतों और रस भरे

طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا

ख़ोशों वाले खजूरों में (148) और तुम पहाड़ खोद कर फ़ख़्र करते हुए

فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ

मकान बनाते हो (149) पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (150) और हद से गुज़रने वालों की

الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا

बात न मानो (151) जो ज़मीन में ख़राबी करते हैं और इस्लाह

يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَآ اَنْتَ

नहीं करते (152) उन्होंने कहा: तुमपर तो किसी ने जादू कर दिया है (153) तुम सिर्फ़

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो (154)

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

सालेह ने कहा: यह एक ऊँटनी है, इसके लिए पानी पीने की एक बारी है और एक मुक़र्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है (155)

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

और उसको बुराई के इरादे से मत छेड़ना वरना एक बड़े दिन का अज़ाब तुमको पकड़ लेगा (156)

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ط

फिर उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला फिर अफ़सोस करने वाले बनकर रह गए (157) फिर उनको अज़ाब ने पकड़ लिया,

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

बेशक इसमें निशानी है, और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं (158)

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ۣ

और बेशक आपका रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (159) लूत (अलै०) की क़ौम ने

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

रसूलों को झुठलाया (160) जब उनके भाई लूत (अलै०) ने उनसे कहा: क्या तुम डरते नहीं (161)

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾

मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूँ (162) पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (163)

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ

मैं इसपर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला तो रब्बुल-आलमीन के

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

ज़िम्मे है (164) क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो (165)

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ

और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियाँ पैदा की हैं उनको छोड़ते हो, बल्कि तुम

قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ

हद से गुज़र जाने वाले लोग हो (166) उन्होंने कहा कि ऐ लूत! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर तुम

الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ

निकाल दिए जाओगे (167) लूत (अलै०) ने कहा: मैं तुम्हारे अमल से सख़्त बेज़ार हूँ (168) ऐ मेरे रब! आप मुझको

نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾

और मेरे घर वालों को इनके अमल से निजात दे दीजिए (169) पस हमने उसको और उसके सब घर वालों को बचा लिया (170)

اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

मगर एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गई (171) फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया (172)

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ

और हमने उनपर एक बारिश बरसाई, पस कैसी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसी जिनको डराया गया था (173) बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ

इसमें निशानी है, और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं (174) और बेशक

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ

आपका रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (175) ऐका वालों ने रसूलों को

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

झुठलाया (176) जब शुएब (अलै०) ने उनसे कहाः क्या तुम डरते नहीं (177)

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूँ (178) पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो (179)

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ

और मैं इसपर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला रब्बुल-आलमीन के

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾

ज़िम्मे है (180) तुम लोग पूरा-पूरा नापो और नुक़सान देने वालों में से न बनो (181)

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

और सीधी तराज़ू से तौलो (182) और लोगों को उनकी चीज़ें

اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا

घटाकर न दो और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ (183) और उस ज़ात से

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ

डरो जिसने तुमको पैदा किया है और गुज़िश्ता नस्लों को भी (184) उन्होंने कहाः तुमपर तो

اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

किसी ने जादू कर दिया है (185) और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا

और हम तो तुमको झूठे लोगों में से ख़्याल करते हैं (186) पस हमारे ऊपर आसमान से

مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْٓ

कोई टुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो (187) शुऐब (अलै०) ने कहाः मेरा रब

اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ

ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो (188) पस उन्होंने उसको झुठला दिया, फिर उनको बादल वाले

يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾ اِنَّ

दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया, बेशक वह एक बड़े दिन का अज़ाब था (189) बेशक

منزل ٥

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٠﴾ وَاِنَّ

इसमें निशानी है, और उनमें से अकसर मानने वाले नहीं (190) और बेशक

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩١﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ

आपका रब ही ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (191) और बेशक यह रब्बुल-आलमीन का उतारा हुआ

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾ عَلٰى قَلْبِكَ

कलाम है (192) इसको अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है (193) आपके दिल पर;

لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾

ताकि आप डराने वालों में से बनो (194) साफ़ अरबी ज़बान में (195)

وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً

और उसका ज़िक्र अगले लोगों की किताबों में है (196) और क्या उनके लिए यह निशानी नहीं है

اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ

कि उसको बनी इस्राईल के उलमा जानते हैं (197) और अगर हम इसको किसी

عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

अजमी पर उतारते (198) फिर वह उनको पढ़कर सुनाता तो वे उसपर ईमान लाने वाले

مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾

न बनते (199) इसी तरह हमने ईमान न लाने वालों को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है (200)

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾

ये लोग ईमान न लाएंगे जब तक सख़्त अज़ाब न देख लें (201)

فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُوْلُوْا

पस वह उनपर अचानक आ जाएगा और उनको ख़बर भी न होगी (202) फिर वे कहेंगे

هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

कि क्या हमको कुछ मोहलत मिल सकती है (203) क्या वे हमारे अज़ाब को जल्द मांग रहे हैं (204)

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَآءَهُمْ

बताओ कि अगर हम उनको चंद साल तक फ़ायदा पहुँचाते रहें (205) फिर उनपर वह चीज़ आ जाए

مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

जिससे उन्हें डराया जा रहा है (206) तो यह फ़ायदामंदी उनके

ع ١٠

احتياط

منزل ٥

يُمَتَّعُوْنَ ۝٢٠٧ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝٢٠٨

किस काम आएगी (207) और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया मगर उसके लिए डराने वाले थे (208)

ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٢٠٩ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ۝٢١٠

याद दिलाने के लिए, और हम ज़ालिम नहीं हैं (209) और उसको शैतान लेकर नहीं उतरे हैं (210)

مع

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٢١١ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ

न यह उनके लायक़ है, और न वे ऐसा कर सकते हैं (211) वे उसको सुनने से रोक दिए

لَمَعْزُوْلُوْنَ ۝٢١٢ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ

गए हैं (212) पस आप अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारिए कि आप भी

مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ۝٢١٣ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۝٢١٤

सज़ा पाने वालों में से हो जाएंगे (213) और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइए (214)

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢١٥

और उन लोगों के लिए अपने बाज़ू झुकाए रखिए जो मोमिनीन में दाख़िल होकर आपकी पैरवी करें (215)

منزل ٥

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٢١٦ وَتَوَكَّلْ

पस अगर वे आपकी नाफ़रमानी करें तो कह दीजिए कि जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उससे बरी हूँ (216) और भरोसा रखिए

عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٢١٧ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝٢١٨

उस अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, मेहरबान है (217) जो देखता है आपको जबकि आप उठते हो (218)

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ۝٢١٩ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٢٢٠

और नमाज़ियों के साथ आपकी नक़्ल व हरकत को (219) बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है (220)

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ۝٢٢١ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ

क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शयातीन किस पर उतरते हैं (221) वे हर झूठे गुनहगार पर

اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٢٢٢ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۝٢٢٣

उतरते हैं (222) वे कान लगाते हैं और उनमें से अकसर झूठे हैं (223)

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ۝٢٢٤ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ

और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं (224) क्या आप नहीं देखते कि वे

وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ۝٢٢٥ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۝٢٢٦

हर वादी में भटकते हैं (225) और वह कहते हैं कि जो वे ख़ुद नहीं करते (226)

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ

मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को

كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ

बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उनपर ज़ुल्म हुआ, और ज़ुल्म करने वालों को

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾

जल्द मालूम हो जाएगा कि उनको कैसी जगह लौटकर जाना है (227)

सूरह नम्ल मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (93) आयतें और (7) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (48) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (27) नम्बर पर है और सूरह शुअरा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (4799) हुरूफ़ हैं	بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم	इसमें (1317) कलिमात हैं

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾ۙ هُدًى

तॉ-सीन, ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक वाज़ेह किताब की (1) रहनुमाई

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ۙ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए (2) जो नमाज़ क़ायम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ

और ज़कात देते हैं और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं (3) जो लोग

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ

आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके कामों को हमने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया है, पस वह

يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ

भटक रहे हैं (4) ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सज़ा है और वे

فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ

आख़िरत में सख़्त ख़सारे में होंगे (5) और बेशक क़ुरआन आपको

مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ

एक हिकमत वाले, जानने वाले की तरफ़ से दिया जा रहा है (6) जब मूसा (अलै०) ने अपने घर वालों से कहा

اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ

कि मैंने एक आग देखी है, मैं वहाँ से कोई ख़बर लाता हूँ या आग का

بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٧ فَلَمَّا جَآءَهَا

कोई अंगारा लाता हूँ ताकि तुम गर्मी हासिल करो (7) फिर जब वे उसके पास पहुँचे

نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ

तो आवाज़ दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है,

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨ يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ

और पाक है अल्लाह जो सारे जहानों का रब है (8) ऐ मूसा! यह मैं हूँ अल्लाह,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

ज़बरदस्त और हिकमत वाला (9) और तुम अपना असा डाल दो, फिर जब उसने उसको इस तरह हरकत करते देखा

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى

जैसे वह साँप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलट कर न देखा, ऐ मूसा!

لَا تَخَفْ ۫ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠ اِلَّا

डरो नहीं, मेरे हुजूर पैग़म्बर डरा नहीं करते (10) मगर जिसने

مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ

ज़्यादती की फिर उसने बुराई के बाद उसको भलाई से बदल दिया, तो मैं बख़्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ۝١١ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ

मेहरबान हूँ (11) और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान मैं डालो, वह किसी ऐब के बग़ैर

مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ

सफ़ेद निकलेगा, ये दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ,

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝١٢ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا

बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं (12) पस जब उनके पास हमारी वाज़ेह निशानियाँ

مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ وَجَحَدُوْا بِهَا

आई तो उन्होंने कहा कि यह खुला हुआ जादू है (13) और उन्होंने ज़ुल्म और घमंड की वजह से

وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ

उनका इनकार किया; हालाँकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन कर लिया था, पस देखिए कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ

बुरा अंजाम हुआ फ़साद फैलाने वालों का (14) और हमने दाऊद

وَسُلَيۡمٰنَ عِلۡمًا ۚ وَقَالَا الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ فَضَّلَنَا

और सुलैमान (अलै०) को इल्म अता किया और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमको

عَلٰى كَثِيۡرٍ مِّنۡ عِبَادِهِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۵﴾ وَوَرِثَ سُلَيۡمٰنُ

अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई (15) और दाऊद (अलै०) के वारिस

دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمۡنَا مَنۡطِقَ الطَّيۡرِ

सुलैमान (अलै०) हुए और कहा कि ऐ लोगो! हमको परिंदों की बोली सिखाई गई है

وَاُوۡتِيۡنَا مِنۡ كُلِّ شَىۡءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الۡفَضۡلُ

और हमको हर क़िस्म की चीज़ दी गई है, बेशक यह खुला हुआ

الۡمُبِيۡنُ ﴿۱۶﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيۡمٰنَ جُنُوۡدُهٗ مِنَ الۡجِنِّ

फ़ज़्ल है (16) और सुलैमान (अलै०) के लिए उसका लशकर जमा किया गया जिन और इंसान

وَالۡاِنۡسِ وَالطَّيۡرِ فَهُمۡ يُوۡزَعُوۡنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوۡا

और परिंदे फिर उनकी जमातें बनाई जातीं (17) यहाँ तक कि जब वह चींटियों की

عَلٰى وَادِ النَّمۡلِ ۙ قَالَتۡ نَمۡلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمۡلُ ادۡخُلُوۡا

वादी पर पहुँचे तो एक चींटी ने कहा: ऐ चींटियो! अपने सूराख़ों में

مَسٰكِنَكُمۡ ۚ لَا يَحۡطِمَنَّكُمۡ سُلَيۡمٰنُ وَجُنُوۡدُهٗ ۙ وَهُمۡ

दाख़िल हो जाओ कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान (अलै०) और उसका लशकर तुमको कुचल डालें और उनको

لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنۡ قَوۡلِهَا وَقَالَ

ख़बर भी न हो (18) पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कुराते हुए हंस पड़े और कहा:

رَبِّ اَوۡزِعۡنِىۡۤ اَنۡ اَشۡكُرَ نِعۡمَتَكَ الَّتِىۡۤ اَنۡعَمۡتَ عَلَىَّ

ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं आपकी नेमत का शुक्र करूँ जो आपने मुझपर

وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنۡ اَعۡمَلَ صَالِحًا تَرۡضٰٮهُ وَاَدۡخِلۡنِىۡ

और मेरे वालिदेन पर की है और यह कि मैं नेक काम करूँ जो आपको पसंद हो और अपनी रहमत से आप मुझको

بِرَحۡمَتِكَ فِىۡ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۱۹﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيۡرَ

अपने नेक बंदों में दाख़िल फ़रमा दीजिए (19) और सुलैमान (अलै०) ने परिंदों का जायज़ा लिया

فَقَالَ مَا لِىَ لَاۤ اَرَى الۡهُدۡهُدَ ۖ اَمۡ كَانَ مِنَ

तो कहा: क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह कहीं

الْغَآبِبِيْنَ ﴿٢٠﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗ

ग़ायब हो गया है? (20) मैं उसको सख़्त सज़ा दूंगा। या उसको ज़बह कर दूंगा

اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ

या वह मेरे सामने कोई साफ़ हुज्जत लाए (21) ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी

فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ

कि उसने आकर कहा कि मैं एक चीज़ की ख़बर लाया हूँ जिसकी आपको ख़बर न थी और में "सबा" से एक यक़ीनी ख़बर

يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ

लेकर आया हूँ (22) मैंने पाया कि एक औरत उनपर बादशाहत करती है और उसको

كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا

सब चीज़ मिली हुई है और उसका एक बड़ा तख़्त है (23) मैंने उसको और उसकी क़ौम को पाया

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ

कि वे सूरज को सज्दा करते हैं अल्लाह के सिवा, और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए

اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾

ख़ुशनुमा बना दिए हैं फिर उनके रास्ते से रोक दिया पस वे राह नहीं पाते (24)

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ

(इस बात की तरफ़ कि) वे अल्लाह को सज्दा करें जो आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई

وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ

चीज़ को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो (25) वह अल्लाह

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۩ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ

कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं जो अर्शे-अज़ीम का मालिक है (26) सुलैमान (अलै०) ने कहा कि हम देखेंगे

اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ

कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो (27) मेरा यह ख़त लेकर जाओ

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا

फिर उसको उन लोगों की तरफ़ डाल दो फिर उनसे हट जाना, फिर देखना कि वह क्या रददे-अमल

يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ

ज़ाहिर करते हैं (28) मलक-ए-सबा ने कहा कि ऐ दरबार वालो! मेरी तरफ़ एक अहमियत वाला ख़त

كَرِيمٌ ۝٢٩ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ

डाला गया है (29) वह सुलैमान की तरफ़ से है और वह है शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत

الرَّحِيمِ ۝٣٠ أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝٣١ قَالَتْ

रहम वाला है (30) कि तुम मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो और फ़रमाँबरदार होकर मेरे पास आ जाओ (31) मलका ने कहा

يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً

कि ऐ दरबारियो! मेरे मामले में मुझे राय दो, मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती

أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ۝٣٢ قَالُوا نَحْنُ أُولُو قُوَّةٍ وَأُولُو

जब तक तुम लोग मोजूद न हो (32) उन्होंने कहाः हम लोग ताक़त वाले हैं और सख़्त

بَأْسٍ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ۝٣٣

लड़ाई वाले हैं, और फ़ैसला आपके इख़्तियार में है पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं (33)

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا

मलका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसको ख़राब कर देते हैं

وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۚ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝٣٤

और उसके इज़्ज़त वालों को ज़लील कर देते हैं, और यही ये लोग करेंगे (34)

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ

और मैं उनकी तरफ़ एक हदिया भेजती हूँ फिर देखती हूँ कि सफ़ीर क्या जवाब

الْمُرْسَلُونَ ۝٣٥ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ

लाते हैं (35) फिर जब सफ़ीर सुलैमान (अलै०) के पास पहुँचा तो उसने कहाः क्या तुम लोग माल से

بِمَالٍ فَمَا آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا آتَاكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ

मेरी मदद करना चाहते हो पस अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुमको दिया है;

بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝٣٦ ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ

बल्कि तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश हो (36) उनके पास वापस जाओ, हम उनपर ऐसे लशकर लेकर

بِجُنُودٍ لَا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا

आएंगे जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे और हम उनको वहाँ से बेइज़्ज़त करके

أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝٣٧ قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ

निकाल देंगे और वे रुसवा होंगे (37) सुलैमान (अलै०) ने कहा कि ऐ दरबार वालो! तुम में से कौन

يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ

उसका तख़्त मेरे पास लाता है इससे पहले कि वे लोग फ़रमाँबरदार होकर मेरे पास आएं (38) जिन्नात में से

عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ

ऐक देव ने कहा: मैं उसको आपके पास ले आऊँगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से

مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ

उठें, और मैं इसपर क़ुदरत रखने वाला, अमानतदार हूँ (39) जिसके पास

الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ

किताब का एक इल्म था उसने कहा: मैं आपके पास आपके पलक झपकने से पहले

اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ

उसको ला दूंगा, फिर जब उसने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा:

قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ

यह मेरे रब का फ़ज़्ल है; ताकि वे मुझे जाँचे कि मैं शुक्र अदा करता हूँ या नाशुक्री

اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ

करता हूँ, और जो शख़्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है और जो शख़्स नाशुक्री करे तो मेरा रब

فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ

बेनियाज़ है, करम करने वाला है (40) सुलैमान (अलै०) ने कहा कि उसके तख़्त का रूप बदल दो, देखें

اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا

वह समझ पाती है या उन लोगों में से हो जाती है जिनको समझ नहीं (41) पस जब

جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ

वह आई तो कहा गया: क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है? उसने कहा: गोया कि यह वही है,

وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا

और हमको इससे पहले मालूम हो चुका था और हम फ़रमाँबरदारों में थे (42) और उसको रोक रखा था

مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ

उन चीज़ों ने जिनको वह अल्लाह के सिवा पूजती थी, यक़ीनन वह मुनकिर लोगों

قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا

में से थी (43) उससे कहा गया कि महल में दाख़िल हो जाओ, पस जब उसने

رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ

देखा तो उसने ख़्याल किया कि वह गेहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं, सुलैमान (अलै०) ने कहा:

اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ۬ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ

कि यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है, उसने कहा कि ऐ मेरे रब! मैंने

ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ

अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल-आलमीन पर

الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۴﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا

ईमान लाई (44) और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह (अलै०) को भेजा

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۵﴾

कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो गिरोह बन कर आपस में झगड़ने लगे (45)

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۶﴾

कर रहे हो, तुम अल्लाह से मुआ़फ़ी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए (46)

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ

उन्होंने कहा: हम तो तुमको और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं, उसने कहा: तुम्हारी बुरी क़िस्मत

اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَكَانَ فِي

अल्लाह के पास है; बल्कि तुम तो आज़माए जा रहे हो (47) और शहर में

الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ

नो ख़ानदान थे जो ज़मीन में फ़साद मचाते थे और इस्लाह का काम

وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

न करते थे (48) उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की क़सम खाओ कि हम उसको और उसके लोगों को

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ

चुपके से हलाक कर देंगे फिर उसके वली से कह देंगे कि हम उसके घर वालों की हलाकत के वक़्त

اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا

मोजूद न थे, और बेशक हम सच्चे हैं (49) और उन्होंने एक तदबीर की और हमने भी

منزل ۵

مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

एक तदबीर की और उनको ख़बर भी न हुई (50) पस देखिए कैसा हुआ उनकी

عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾

तदबीर का अंजाम, हमने उनको और उनकी पूरी क़ौम को हलाक कर दिया (51)

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

पस ये हैं उनके घर वीरान पड़े हुए उनके ज़ुल्म के सबब से, बेशक इसमें

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

सबक़ है उन लोगों के लिए जो जानें (52) और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए

وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ

और जो डरते थे (53) और लूत (अलै०) को जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम बेहयाई

الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

करते हो हालाँकि तुम देखते हो (54) क्या तुम मर्दों के साथ शहवत

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

पूरी करते हो औरतों को छोड़ कर; बल्कि तुम लोग बे समझ हो (55)

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ

फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि लूत के घर वालों को

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक साफ़ बनते हैं (56) फिर हमने उसको और उसके लोगों को

وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

निजात दी सिवाए उसकी बीवी के जिसका पीछे रह जाना हमने तय कर दिया था (57)

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾ ع

और हमने उनपर बरसाया एक हौलनाक बरसाना, पस कैसा बुरा बरसाव था उनपर जिनको आगाह किया जा चुका था (58)

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ

कह दीजिए कि तारीफ़ है अल्लाह के लिए और सलाम उसके उन बंदों पर जिनको उसने चुन लिया,

آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

क्या अल्लाह बेहतर है या वे जिनको वे शरीक करते हैं (59)

منزل ٥
ع ٤ ١٩

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ

भला वह कौन है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे लिए

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ

आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उससे रौनक़ वाले बाग़ उगाए, तुम्हारे बस में

لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

न था कि तुम उनके दरख़्तों को उगा सकते, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? बल्कि वह राह से हट जाने वाले

يَّعْدِلُوْنَ ؕ ﴿٦٠﴾ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ

लोग हैं (60) भला किसने ज़मीन को ठहरने के लायक़ बनाया और उसके दरमियान नदियाँ

اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ

जारी कीं और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए और दो समुंदरों के दरमियान

حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ ﴿٦١﴾ اَمَّنْ

परदा डाल दिया, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? बल्कि उनके अकसर लोग नहीं जानते (61) कौन है जो

يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ

बेबस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है और तुमको ज़मीन का

خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ؕ ﴿٦٢﴾

जानशीन बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो (62)

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ

कौन है जो तुमको ख़ुशकी और समुंदर के अंधेरों में रास्ता दिखाता है और कौन अपनी रहमत के आगे

الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ

हवाओं को ख़ुशख़बरी लाने वाला बना कर भेजता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है?

تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ؕ ﴿٦٣﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ

अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिनको वे शरीक ठहराते हैं (63) कौन है जो पैदाईश की इब्तिदा करता है और फिर उसे

يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ

दुबारा लौटाता है और कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या अल्लाह के साथ

مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

कोई और माबूद है? कह दीजिए कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो (64)

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ

कह दीजिए कि अल्लाह के सिवा आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब का इल्म नहीं रखता,

وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي

और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे (65) बल्कि आख़िरत के बाब में उनका इल्म

الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

उलझ गया है; बल्कि वे उसकी तरफ़ से शक में हैं बल्कि वे उससे अंधे हैं (66)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا

और इनकार करने वालों ने कहा: क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप दादा भी तो क्या हम

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ

(ज़मीन से) निकाले जाएंगे? (67) इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी,

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

यह महज़ अगलों की कहानियाँ हैं (68) कह दीजिए कि ज़मीन में चलो फिरो

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ (69) और आप उनपर ग़म न करें

وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

और दिल तंग न करें उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं (70) और वे कहते हैं कि यह वादा

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ

कब है अगर तुम सच्चे हो (71) कह दीजिए कि जिस चीज़ की तुम जल्दी कर रहे हो शायद उसमें से

لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ

कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो (72) और बेशक आपका रब लोगों पर

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

बड़े फ़ज़्ल वाला है मगर उनमें से अकसर शुक्र नहीं करते (73) और बेशक आपका रब

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ

ख़ूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं (74) और आसमान और ज़मीन की

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا

कोई पोशीदा चीज़ नहीं है जो एक वाज़ेह किताब में दर्ज न हो (75) बेशक यह

الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَكْثَرَ الَّذِیْ هُمْ فِیْهِ

क़ुरआन बनी इस्राईल पर बहुत सी चीज़ों को वाज़ेह कर रहा है जिनमें वे

يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٧٧﴾ اِنَّ

इख़्तिलाफ़ रखते हैं (76) और वह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए (77) बेशक

رَبَّكَ يَقْضِیْ بَیْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْعَلِیْمُ ﴿٧٨﴾

आपका रब अपने हुक्म के ज़रिए उनके दरमियान फ़ैसला करेगा, और वह ज़बरदस्त है, जानने वाला है (78)

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِیْنِ ﴿٧٩﴾ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

पस अल्लाह पर भरोसा कीजिए, बेशक आप वाज़ेह हक पर हैं (79) आप न मुर्दों को

الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِیْنَ ﴿٨٠﴾

सुना सकते हो और ना बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वे पीठ फेर कर चले जाएं (80)

وَمَاۤ اَنْتَ بِهٰدِی الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا

और न आप अंधों को उनकी गुमराही से बचा कर रास्ता दिखाने वाले हो, आप तो सिर्फ़ उनको सुना सकते

مَنْ یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ

हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं फिर फ़रमाँबरदार बन जाते हैं (81) और जब उनपर बात

عَلَیْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ

आ पड़ेगी तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो उनसे कलाम करेगा कि लोग

النَّاسَ كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَیَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ

हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे (82) और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों

اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ یُّكَذِّبُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ حَتّٰۤى

का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे फिर उनकी जमात बंदी की जाएगी (83) यहाँ तक कि

اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰیٰتِیْ وَلَمْ تُحِیْطُوْا بِهَا عِلْمًا

जब वे आजाएंगे तो अल्लाह पूछेगा कि क्या तुम ही ने मेरी आयतों को झुठलाया हालाँकि तुम्हारा इल्म उनका इहाता भी न कर सका,

اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ بِمَا

या बोलो कि तुम क्या करते थे (84) और उन पर बात पूरी हो जाएगी इस वजह से कि उन्होंने

ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّیْلَ

ज़ुल्म किया, पस वे कुछ न बोल सकेंगे (85) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई

لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

ताकि लोग उसमें आराम करें और दिन (बनाया) कि उसमें देखें, बेशक इसमें निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ

उन लोगों के लिए जो यक़ीन करते हैं (86) और जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ

आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं मगर वह जिसको अल्लाह चाहे, और सब चले आएंगे

اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً

उसके आगे आजिज़ी से (87) और आप पहाड़ों को देख कर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं

وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ

और वे चलेंगे जैसे बादल, यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को पुख़्ता

شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ

बनाया है, बेशक वह जानता है जो तुम करते हो (88) जो शख़्स भलाई लेकर आएगा

فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

तो उसके लिए उससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ होंगे (89)

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ

और जो शख़्स बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग औंधे मुँह आग में डाल दिए जाएंगे, तुम वही

تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ

बदला पा रहे हो जो तुम करते थे (90) मुझको यही हुक्म दिया गया है कि मैं

رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ز

इस शहर के रब की इबादत करूँ जिसने उसको मोहतरम ठहराया और हर चीज़ उसी की है,

وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ لا وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ

और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं फ़रमाँबरदारी करने वालों में से बनूँ (91) और यह कि मैं क़ुरआन की तिलावत करूँ,

فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ

फिर जो शख़्स राह पर आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा, और जो गुमराह हुआ तो कह दीजिए

اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ

कि मैं तो सिर्फ़ डराने वालों में से हूँ (92) और कह दीजिए कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, वह तुम को अपनी निशानियाँ

اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ ع

दिखाएगा तो तुम उनको पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो (93)

सूरह क़सस मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (52) से (55) तक मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुईं और आयत (85) हिजरत के वक़्त जुहफ़ा में नाज़िल हुई, इसमें (88) आयतें और (9) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (49) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (28) नम्बर पर है और सूरह नम्ल के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (5800) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (441) कलिमात हैं

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ

ताॅ-सीम-मीम (1) ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं (2) हम मूसा (अलै०) और फ़िरऔन का

مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾

कुछ हाल आपको ठीक ठीक सुनाते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएंगे (3)

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا

बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में सरकशी की और उसने उसके रहने वालों को गिरोहों में तक़सीम कर दिया,

يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْیٖ

उनमें से एक गिरोह को उसने कमज़ोर कर रखा था, वह उनके लड़कों को ज़बह करता था और उनकी औरतों को

نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ

ज़िंदा रखता था, बेशक वह फ़साद करने वालों में से था (4) और हम चाहते थे कि उन लोगों पर

عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً

एहसान करें जो ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए थे और उनको पेशवा बनाएं

وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾ لا وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ

और उनको वारिस बना दें (5) और उनको ज़मीन में इक़्तिदार अता करें और फ़िरऔन और हामान

فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾

और उनकी फ़ौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे (6)

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ

और हमने मूसा (अलै०) की वालिदा को इल्हाम किया कि उसको दूध पिलाओ फिर जब तुमको उसके मुताल्लिक़

عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا

डर हो तो उसको दरिया में डाल दो और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो, हम उसको

منزل ٥

رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۞٧ فَالْتَقَطَهٗٓ

तुम्हारे पास लौटाकर लाएंगे और उसको पैग़म्बरों में से बनाएंगे (7) फिर उसको फ़िरऔन के

اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ

घर वालों ने उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बाइस बने, बेशक फ़िरऔन

وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۞٨ وَقَالَتِ امْرَاَتُ

और हामान और उनके लशकर ख़ताकार थे (8) और फ़िरऔन की बीवी ने

فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖۗ عَسٰٓى اَنْ

कहा कि यह आँख की ठंडक है मेरे लिए और तुम्हारे लिए, इसको क़त्ल ना करो, मुमकिन है कि यह

يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۞٩ وَاَصْبَحَ

हमको नफ़ा दे या हम इसको बेटा बना लें और वे समझते न थे (9) और मूसा (अलै०) की

فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ

वालिदा का दिल बेचैन हो गया, क़रीब था कि वह उसको ज़ाहिर कर दे अगर हम उसके

اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۞١٠

दिल को न संभालते; ताकि वह यक़ीन करने वालों में से रहे (10)

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ز فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

और उसने उसकी बहन से कहा कि तू उसके पीछे पीछे जा, तो वह उसको अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को

لَا يَشْعُرُوْنَ ۞١١ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

ख़बर नहीं हुई (11) और हमने पहले ही मूसा (अलै०) से दाईयों को रोक रखा था

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ

तो लड़की ने कहाः क्या मैं तुमको ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो इसको तुम्हारे लिए पालें

وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۞١٢ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ

और वह उसकी ख़ैरख़्वाही करें (12) पस हमने उसको उसकी माँ की तरफ़ लौटा दिया; ताकि उसकी आँखें

عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ

ठंडी हों और वह ग़मगीन न हो और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर

اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞١٣ ع وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى

अकसर लोग नहीं जानत (13) और जब मूसा (अलै०) अपनी जवानी को पहुँचे और पूरे हो गए।

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾

तो हमने उसको हिकमत और इल्म अता किया, और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को (14)

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ

और शहर में वह ऐसे वक़्त दाख़िल हुआ जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे तो उसने वहाँ

فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ

दो आदमियों को लड़ते हुए पाया, एक उसकी अपनी क़ौम का था और दूसरा दुश्मनों

عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ

में से था, तो जो उसकी क़ौम में से था उसने उसके ख़िलाफ़ मदद तलब की जो उसके

مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا

दुश्मनों में से था पस मूसा (अलै०) ने उसको घूंसा मारा फिर उसका काम तमाम कर दिया, मूसा (अलै०) ने कहा कि यह तो

مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ

शैतानी काम है, बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला है (15) उसने कहा कि

رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ

ऐ मेरे रब! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है पस आप मुझको बख़्श दीजिए तो अल्लाह ने उसको बख़्श दिया, बेशक वह

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ

बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (16) उसने कहा कि ऐ मेरे रब! जैसा आपने मेरे ऊपर फ़ज़्ल किया

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ

तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार न बनूंगा (17) फिर सुबह को वह शहर में उठा

خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ

डरता हुआ (और) ख़बर लेता हुआ तो देखा कि वही शख़्स जिसने कल उससे मदद मांगी थी

يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

वही आज फिर उसको मदद के लिए पुकार रहा है, मूसा (अलै०) ने उससे कहा: बेशक तुम सरीह गुमराह हो (18)

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِىْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ

फिर जब उसने चाहा कि उसको पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

तो उसने कहा कि ऐ मूसा! क्या तुम मुझको क़त्ल करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक शख़्स को

بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ

क़त्ल किया? तुम तो ज़मीन में सरकश बन कर रहना चाहते हो

وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ

और तुम सुलह करने वालों में से बनना नहीं चाहते (19) और एक शख़्स

رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ

शहर के किनारे से दोड़ता हुआ आया, उसने कहा कि ऐ मूसा! दरबार वाले

الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ

मशवरा कर रहे हैं कि आपको मार डालें पस आप निकल जाइए, मैं आपके ख़ैरख़्वाहों

النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ

में से हूँ (20) फिर वह वहाँ से निकला डरता हुआ ख़बर लेता हुआ, उसने कहा कि ऐ मेरे रब!

نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ ع وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ

मुझे ज़ालिम लोगों से निजात दीजिए (21) और जब उसने मदयन का रुख़ किया

قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ

तो उसने कहाः उम्मीद है कि मेरा रब मुझको सीधा रास्ता दिखा दे (22) और जब वह मदयन के

مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫

पानी पर पहुँचा तो वहाँ लोगों की एक जमात को पानी पिलाते हुए पाया, और उनसे अलग

وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ

एक तरफ़ दो औरतों को देखा कि वह अपनी बकरियों को रोके खड़ी हैं, मूसा (अलै०) ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है,

قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ سكتة وَاَبُوْنَا شَيْخٌ

उन्होंने कहाः हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियाँ ना हटा लें, और हमारे वालिद

كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ

बहुत बूढ़े हैं (23) तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया फिर साए की तरफ़ हट गया, फिर कहा कि ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا

आप जो चीज़ मेरी तरफ़ ख़ैर में से उतारें मैं उसका मोहताज हूँ (24) फिर उन दोनों में से एक आई शर्म से

تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ

चलती हुई, उसने कहा कि मेरे वालिद आपको बुला रहे हैं कि आपने हमारी ख़ातिर

اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ

जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दें, फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा क़िस्सा बयान किया

قَالَ لَا تَخَفْ ٚ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ

तो उसने कहा कि अंदेशा न करो, तुम ज़ालिमों से निजात पा चुके (25) उनमें से एक ने

اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ

कहा कि ऐ अब्बा जान! इसको मुलाज़िम रख लीजिए, बेहतरीन आदमी जिसे आप मुलाज़िम रखें वही है जो

الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى

मज़बूत हो, अमानतदार हो (26) उसने कहा कि मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का

ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ

निकाह तुम्हारे साथ कर दूँ इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाज़िमत करो, फिर अगर तुम दस

اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ

साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ़ से है, और मैं तुमपर मशक़्क़त डालना

عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

नहीं चाहता, अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझको भला आदमी पाओगे (27)

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ

मूसा (अलै०) ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दरमियान तय है, इन दोनों मुद्दतों में से जो भी

فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾ ع

मैं पूरी करूँ तो मुझपर कोई जब्र न होगा, और अल्लाह हमारे क़ौल व क़रार पर गवाह है (28)

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ

फिर जब मूसा (अलै०) ने मुद्दत पूरी कर दी और वह अपने घरवालों के साथ रवाना हुआ तो उसने

مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ

तूर की तरफ़ से एक आग देखी, उसने अपने घर वालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने

اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ

एक आग देखी है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ या आग का

النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

कोई अंगारा; ताकि तुम तापो (29) फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो वादी के

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ

दाहिने किनारे से बरकत वाले हिस्से में (मोजूद) दरख़्त से

الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۳۰﴾

पुकारा गया कि ऐ मूसा! मैं अल्लाह हूँ सारे जहानों का मालिक (30)

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى

और यह कि तुम अपना असा डाल दो, तो जब उसने उसको हरकत करते हुए देखा कि गोया वह साँप हो तो वह

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۣ

पीठ फेर कर भागा और उसने मुड़कर न देखा, ऐ मूसा! आगे आओ और न डरो,

اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ

तुम बिलकुल महफ़ूज़ हो (31) अपना हाथ गिरेबान में डालो वह चमकता हुआ निकलेगा

بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ

बग़ैर किसी बीमारी के और ख़ौफ़ के वास्ते अपना बाज़ू अपनी तरफ़

الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ

मिला लो, पस यह तुम्हारे रब की तरफ़ से दो सनदें हैं फ़िरऔन और उसके

وَمَلَا۟ىِٕهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ

दरबारियों के पास जाने के लिए, बेशक वे नाफ़रमान लोग हैं (32) मूसा (अलै०) ने कहाः ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿۳۳﴾

मैंने उनमें से एक शख़्स को क़त्ल किया है तो मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालें (33)

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ

और मेरा भाई हारून वह मुझसे ज़्यादा फ़सीह है ज़बान में, पस आप उसको मेरे साथ मददगार की

رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۡ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾ قَالَ

हैसियत से भेजिए कि वह मेरी ताईद करे, मैं डरता हूँ कि वे लोग मुझे झुठला देंगे (34) फ़रमाया कि हम

سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا

तुम्हारे भाई के ज़रिए तुम्हारे बाज़ू को मज़बूत कर देंगे और हम तुम दोनों को ग़लबा देंगे

فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا

तो वे तुम लोगों तक न पहुँच सकेंगे, हमारी निशानियों के साथ तुम दोनों और तुम्हारी पैरवी करने वाले ही

الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ
ग़ालिब रहेंगे (35) फिर जब मूसा (अलै०) उन लोगों के पास हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ पहुँचे
قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
तो उन्होंने कहा कि यह महज़ घड़ा हुआ जादू है, और यह बात हमने अपने
فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ
अगले बाप दादा में नहीं सुनी (36) और मूसा (अलै०) ने कहा: मेरा रब ख़ूब जानता है उसको
بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
जो उसकी तरफ़ से हिदायत लेकर आया और जिसको आख़िरत का
عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ
घर मिलेगा, बेशक ज़ालिम कामयाबी न पाएंगे (37) और फ़िरऔन ने कहा
فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ
कि ऐ दरबार वालो! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद को नहीं जानता,
فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا
तो ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी को आग दे फिर मेरे लिए एक ऊँची इमारत बना;
لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
ताकि मैं मूसा के रब को झाँक कर देखूं, और मैं तो उसको एक झूठा आदमी
الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
समझता हूँ (38) और उसने और उसकी फ़ौजों ने ज़मीन में नाहक़
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾
घमंड किया और उन्होंने समझा कि उनको हमारी तरफ़ लौट कर आना नहीं है (39)
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ
तो हमने उसको और उसकी फ़ौजों को पकड़ा फिर उनको समुंदर में फैंक दिया, तो देखिए कि
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ
ज़ालिमों का अंजाम क्या हुआ (40) और हमने उनको सरदार बनाया कि आग की तरफ़
اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ وَاَتْبَعْنٰهُمْ
बुलाते हैं, और क़ियामत के दिन उनको मदद नहीं मिलेगी (41) और हमने इस दुनिया में भी

فِيۡ هٰذِهِ الدُّنۡيَا لَعۡنَةً ۚ وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ هُمۡ مِّنَ

उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन वह बदहाल लोगों में से

الۡمَقۡبُوۡحِيۡنَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ مِنۡۢ بَعۡدِ

होंगे (42) और हमने अगली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा (अलै०) को

مَاۤ اَهۡلَكۡنَا الۡقُرُوۡنَ الۡاُوۡلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى

किताब दी, लोगों के लिए बसीरत का सामान ओर हिदायत

وَّرَحۡمَةً لَّعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿٤٣﴾ وَمَا كُنۡتَ بِجَانِبِ

और रहमत ताकि वे नसीहत पकड़ें (43) और आप पहाड़ के मग़रिबी जानिब

الۡغَرۡبِيِّ اِذۡ قَضَيۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسَى الۡاَمۡرَ وَمَا كُنۡتَ مِنَ

मोजूद न थे जबकि हमने मूसा (अलै०) को अहकाम दिए और ना आप शाहिदीन में

الشّٰهِدِيۡنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّاۤ اَنۡشَاۡنَا قُرُوۡنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيۡهِمُ

शामिल थे (44) लेकिन हमने बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उनपर बहुत ज़माना

الۡعُمُرُ ۚ وَمَا كُنۡتَ ثَاوِيًا فِيۡۤ اَهۡلِ مَدۡيَنَ تَتۡلُوۡا

गुज़र गया, और आप मदयन वालों में न रहते थे कि उनको हमारी

عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرۡسِلِيۡنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنۡتَ

आयतें सुनाते, मगर हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले (45) और आप तूर के

بِجَانِبِ الطُّوۡرِ اِذۡ نَادَيۡنَا وَلٰكِنۡ رَّحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ

किनारे न थे जब हमने (मूसा को) पुकारा लेकिन यह आपके रब का इनाम है;

لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اَتٰهُمۡ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ

ताकि आप एक ऐसी क़ौम को डरा दें जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया

لَعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوۡلَاۤ اَنۡ تُصِيۡبَهُمۡ مُّصِيۡبَةٌۢ

ताकि वे नसीहत पकड़ें (46) और अगर ऐसा न होता कि उनपर उनके आमाल के सबब से

بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُوۡا رَبَّنَا لَوۡلَاۤ اَرۡسَلۡتَ

कोई आफ़त आई तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! आपने हमारी तरफ़ कोई रसूल

اِلَيۡنَا رَسُوۡلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٤٧﴾

क्यों नहीं भेजा कि हम आपकी आयतों की पैरवी करते और हम ईमान वाले में से होते (47)

ع ٤

منزل ٥

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ

फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसको वैसा मिला

مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

जैसा मूसा को मिला था, क्या लोगों ने उसका इनकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा (अलै०) को

مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۙ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ

दिया गया था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों का

كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ

इनकार करते हैं (48) कह दीजिए कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में

اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ

इन दोनों से बेहतर हो मैं उसकी पैरवी करूंगा, अगर तुम सच्चे हो (49) पस अगर

لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ

ये लोग आपका कहा न कर सकें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं,

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ

और उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे,

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع وَلَقَدْ وَصَّلْنَا

बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (50) और हमने उन लोगों के लिए

لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ ط اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

पे दर पे अपना कलाम भेजा; ताकि वे नसीहत पकड़ें (51) जिन लोगों को हमने इससे पहले

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاِذَا يُتْلٰى

किताब दी है वे इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं (52) और जब वह उनको

عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا

सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इसपर ईमान लाए, बेशक यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से, हम तो

مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾ اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ

पहले ही से इसको मानने वाले हैं (53) ये लोग हैं कि उनको उनका अज्र दोहरा दिया जाएगा

بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا

इस पर कि उन्होंने सब्र किया और वह बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं, और हमने

منزل ٥ النصف ع ٥

رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ﴿٥٤﴾ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغۡوَ اَعۡرَضُوۡا

जो कुछ उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं (54) और जब वे लग़्व बात सुनते हैं तो उससे

عَنۡهُ وَقَالُوۡا لَنَاۤ اَعۡمَالُنَا وَلَكُمۡ اَعۡمَالُكُمۡ سَلٰمٌ

ऐराज़ करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल,

عَلَيۡكُمۡ لَا نَبۡتَغِى الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهۡدِىۡ مَنۡ

तुमको सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते (55) (ऐ प्यारे नबी) आप जिसको चाहो

اَحۡبَبۡتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعۡلَمُ

हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है, और वही ख़ूब जानता है

بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوۡۤا اِنۡ نَّتَّبِعِ الۡهُدٰى مَعَكَ

उनको जो हिदायत क़ुबूल करने वाले हैं (56) और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर चलने लगें

نُتَخَطَّفۡ مِنۡ اَرۡضِنَا ؕ اَوَلَمۡ نُمَكِّنۡ لَّهُمۡ حَرَمًا اٰمِنًا

तो हम अपनी ज़मीन से उचक लिए जाएंगे, क्या हमने उनको अमन व अमान वाले हरम में जगह नहीं दी

يُّجۡبٰۤى اِلَيۡهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىۡءٍ رِّزۡقًا مِّنۡ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ

जहाँ हर क़िस्म के फल खींचे चले आते हैं हमारी तरफ़ से रिज़्क़ के तौर पर, लेकिन

اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٥٧﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍۢ

उनमें से अकसर लोग नहीं जानते (57) और हमने कितनी बस्तियाँ हलाक कर दीं

بَطِرَتۡ مَعِيۡشَتَهَا ۚ فَتِلۡكَ مَسٰكِنُهُمۡ لَمۡ تُسۡكَنۡ

जो अपने सामाने-ज़िंदगी पर नाज़ां थीं, पस ये हैं उनकी बस्तियाँ जो उनके बाद

مِّنۡۢ بَعۡدِهِمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا ؕ وَكُنَّا نَحۡنُ الۡوٰرِثِيۡنَ ﴿٥٨﴾

आबाद नहीं हुईं मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए (58)

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهۡلِكَ الۡقُرٰى حَتّٰى يَبۡعَثَ فِىۡۤ اُمِّهَا

और आपका रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था जब तक उनकी बड़ी बस्ती में

رَسُوۡلًا يَّتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهۡلِكِى الۡقُرٰٓى

किसी पैग़म्बर को न भेज दे जो उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाए, और हम हरगिज़ बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं

اِلَّا وَاَهۡلُهَا ظٰلِمُوۡنَ ﴿٥٩﴾ وَمَاۤ اُوۡتِيۡتُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ

मगर जबकि वहाँ के लोग ज़ालिम हों (59) और जो चीज़ भी तुमको दी गई है तो वह बस

فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ

दुनिया की ज़िंदगी का सामान और उसकी रौनक़ है, और जो कुछ अल्लाह के पास है

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٠ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا

वह बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं? (60) भला वह शख़्स जिससे हमने

حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ

अच्छा वादा किया है फिर वह उसको पाने वाला है क्या उस शख़्स जैसा हो सकता है जिसको हमने सिर्फ़

الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٦١ وَيَوْمَ

दुनियावी ज़िंदगी का फ़ायदा दिया है फिर क़ियामत के दिन वह हाज़िर किए जाने वालों में से है (61) और जिस दिन

يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۗءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

अल्लाह उनको पुकारेगा फिर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम

تَزْعُمُوْنَ ۝٦٢ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ

दावा करते थे (62) जिनपर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! ये लोग हैं

الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۡ

जिन्होंने हमको बहकाया, हमने उनको उसी तरह बहकाया जिस तरह हम ख़ुद बहके, हम उनसे बराअत करते हैं

مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ۝٦٣ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَاۗءَكُمْ

कि ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे (63) और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ

तो वे उनको पुकारेंगे तो वे उनको जवाब न देंगे और वे अज़ाब को देखेंगे,

لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ۝٦٤ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ

काश! वे हिदायत इख़्तियार करने वाले होते (64) और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा और फ़रमाएगा

مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦٥ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَاۗءُ

कि तुमने पैग़ाम पहुँचाने वालों को क्या जवाब दिया था (65) फिर उस दिन उनकी तमाम बातें

يَوْمَىِٕذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاۗءَلُوْنَ ۝٦٦ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

गुम हो जाएंगी तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे (66) अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया

وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ۝٦٧

और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से होगा (67)

ع

منزل ٥

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ

और आपका रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसको चाहे, उनके हाथ में नहीं

الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

पसंद करना, अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसको वे शरीक ठहराते हैं (68)

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾

और आपका रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं (69)

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى

और वही अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसीके लिए हम्द है दुनिया में

وَالْاٰخِرَةِ ز وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ

और आख़िरत में और उसी के लिए फ़ैसला है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओग (70) कह दीजिए

اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى

कि बताओ अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए

يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ

रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए,

اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ

तो क्या तुम लोग सुनते नहीं (71) कह दीजिए कि बताओ अगर अल्लाह क़ियामत तक तुम पर हमेशा के लिए

النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ

दिन करदे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को

يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾

ले आए जिस में तुम सुकून हासिल करते हो, क्या तुम लोग देखते नहीं (72)

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا

और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया; ताकि तुम उस में

فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो (73)

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ

और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा फिर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे शरीक जिनका तुम

كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا

गुमान रखते थे (74) और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे

فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ

फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक अल्लाह की तरफ़ से है

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ اِنَّ قَارُوْنَ

और वे बातें उनसे गुम हो जाएंगी जो वे घड़ते थे (75) बेशक क़ारून

كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ وَاٰتَيْنٰهُ

मूसा (अलै०) ही की क़ौम में से था फिर वह उनके ख़िलाफ़ सरकश हो गया, और हमने उसको

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ

इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उनकी कुंजियाँ उठाने से कई ताक़तवर मर्द

اُولِي الْقُوَّةِ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ

थक जाते थे, जब उसकी क़ौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰكَ اللّٰهُ

इतराने वालों को पसंद नहीं करता (76) और जो कुछ अल्लाह ने तुमको दिया है उसमें

الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا

आख़िरत के तालिब बनो और दुनिया में से अपने हिस्से को न भूलो,

وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ

और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है और ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

फ़साद के तालिब न बनो, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता (77)

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ اَوَلَمْ يَعْلَمْ

उसने कहा: यह माल मुझको एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है, क्या उसने यह नहीं जाना

اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ

कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही जमाअतों को हलाक कर चुका है

هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْئَلُ

जो उससे ज़्यादा क़ुव्वत और जमईयत रखती थीं, और मुजरिमों से

عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

उनके गुनाह पूछे नहीं जाते (78) पस वह अपनी क़ौम के सामने अपनी पूरी

فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

आराइश के साथ निकला, जो लोग दुनियावी ज़िंदगी के तालिब थे उन्होंने कहा:

يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ

काश! हमको भी वही मिलता जो क़ारून को दिया गया है, बेशक वह बड़ी

حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

क़िसमत वाला है (79) और जिन लोगों को इल्म मिला था उन्होंने कहा:

وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ

तुम्हारा बुरा हो, अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख़्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे,

وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ

और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं (80) फिर हमने उसको और उसके घर को ज़मीन में

الْاَرْضَ ۗ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ

धंसा दिया, फिर उसके लिए कोई जमाअत न उठी जो अल्लाह के मुक़ाबले में

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾

उसकी मदद करती और ना वह ख़ुद ही अपने को बचा सका (81)

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वे कहने लगे कि अफ़सोस!

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ

बेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ को कुशादह कर देता है

عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ

और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है, अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमको भी

بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ

ज़मीन में धंसा देता, अफ़सोस! बेशक इनकार करने वाले फ़लाह नहीं पाएंगे (82) यह आख़िरत का

الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي

घर हम उन लोगों को देंगे जो ज़मीन में न बड़ा बनना चाहते हैं

الْاَرْضِ	وَلَا	فَسَادًا ؕ	وَالْعَاقِبَةُ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

और न फ़साद करना, और आख़िरी अंजाम डरने वालों के लिए है (83)

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ

जो शख़्स नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है, और जो शख़्स

جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ

बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उनको

اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ

वही मिलेगा जो उन्होंने किया (84) बेशक जिसने आप पर क़ुरआन को

عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّىْٓ

फ़र्ज़ किया है वह आपको एक अच्छे अंजाम तक पहुँचा कर रहेगा, कह दीजिए कि मेरा रब ख़ूब

اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ

जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ

में है (85) और आपको यह उम्मीद न थी कि आप पर किताब उतारी

الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا

जाएगी मगर आपके रब की मेहरबानी है, पस आप मुनकिरों के मददगार

لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ

न बनें (86) और वे आपको अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वे

اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ

आप की तरफ़ उतारी जा चुकी हैं, और आप अपने रब की तरफ़ बुलाइए और मुशरिकों में से

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ

न बनें (87) और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारें,

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَىْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ

नहीं है कोई माबूद उसके सिवा, हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाए उसकी ज़ात के,

لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

फ़ैसला उसी के लिए है और तुम लोग उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे (88)

وقف لازم
الثلثة ع

सूरह अन्कबूत मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (1) से (11) तक मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (69) आयतें और (7) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (85) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (29) नम्बर पर है और सूरह रूम के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (980) कलिमात हैं	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ	इसमें (4165) हुरूफ़ हैं

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ يُّتۡرَكُوۡۤا اَنۡ يَّقُوۡلُوۡۤا

अलिफ़-लाम-मीम (1) क्या ये लोग समझते हैं कि वे महज़ यह कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम

اٰمَنَّا وَهُمۡ لَا يُفۡتَنُوۡنَ ﴿٢﴾ وَلَقَدۡ فَتَنَّا الَّذِيۡنَ مِنۡ

ईमान लाए और उनको जाँचा न जाएगा (2) और हमने उन लोगों को जाँचा है जो इनसे

قَبۡلِهِمۡ فَلَيَعۡلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ صَدَقُوۡا وَلَيَعۡلَمَنَّ

पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को जान कर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी ज़रूर

الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿٣﴾ اَمۡ حَسِبَ الَّذِيۡنَ يَعۡمَلُوۡنَ السَّيِّاٰتِ اَنۡ

मालूम करेगा (3) क्या जो लोग बुराईयाँ कर रहे हैं वे समझते हैं कि वे हमसे

يَّسۡبِقُوۡنَا ؕ سَآءَ مَا يَحۡكُمُوۡنَ ﴿٤﴾ مَنۡ كَانَ يَرۡجُوۡا لِقَآءَ

बच जाएंगे, बहुत बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं (4) जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद

اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿٥﴾

रखता है तो अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है, और वह सुनने वाला, जानने वाला है (5)

وَمَنۡ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفۡسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِىٌّ

और जो शख़्स मेहनत करे तो वे अपने ही लिए मेहनत करता है, बेशक अल्लाह जहान वालों से

عَنِ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٦﴾ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

बेनियाज़ है (6) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए

لَنُكَفِّرَنَّ عَنۡهُمۡ سَيِّاٰتِهِمۡ وَلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ اَحۡسَنَ

तो हम उनकी बुराईयाँ उनसे ज़रूर दूर करदेंगे और उनको उनके अमल का

الَّذِىۡ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٧﴾ وَوَصَّيۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَيۡهِ

बेहतरीन बदला देंगे (7) और हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने माँ-बाप के साथ

حُسۡنًا ؕ وَاِنۡ جَاهَدٰكَ لِتُشۡرِكَ بِىۡ مَا لَيۡسَ لَكَ

नेक सुलूक करे, और अगर वह तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझको

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا

कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत न कर, तुम सबको मेरे पास लौटकर आना है फिर मैं तुमको बता दूंगा

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

जो कुछ तुम करते थे (8) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए

لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ﴿٩﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ

तो हम उनको ज़रूर नेक बंदों में दाख़िल करेंगे (9) और लोगों में से कोई ऐसा है जो कहता है

اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ

कि हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में उसको सताया जाता है तो वे लोगों के सताने को

كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ

अल्लाह के अज़ाब की तरह समझ लेता है, और अगर आपके रब की तरफ़ से कोई मदद आजाए तो वे कहेंगे

اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِیْ صُدُوْرِ

कि हम तो तुम्हारे साथ थे, क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के

الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٠﴾ وَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَیَعْلَمَنَّ

दिलों में है (10) और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह ज़रूर मालूम करेगा

الْمُنٰفِقِیْنَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا

मुनाफ़िक़ीन को (11) और मुनकिर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम

اتَّبِعُوْا سَبِیْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰیٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِیْنَ

हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे, और वे उनके गुनाहों में से

مِنْ خَطٰیٰهُمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَیَحْمِلُنَّ

कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं, बेशक वे झूठे हैं (12) और वे ज़रूर अपने बोझ

اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ز وَلَیُسْئَلُنَّ یَوْمَ

उठाएंगे और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी, और ये लोग झूठी बातें बनाते हैं

الْقِیٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا

क़ियामत के दिन उसके बारे में ज़रूर उनसे पूछ होगी (13) और हमने नूह (अलै॰) को उसकी क़ौम

اِلٰی قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِیْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِیْنَ عَامًا ؕ

की तरफ़ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हज़ार साल रहा,

فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

फिर उनको तूफ़ान ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे (14) फिर हमने नूह (अलै०) को

وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ

और कश्ती वालों को बचा लिया और हमने इस वाक़िआ़ को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया (15) और इब्राहीम (अलै०) को

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ

जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो, यह

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो (16) तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर महज़ बुतों को

اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ

पूजते हो और तुम झूठी बातें घड़ते हो, अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते हो

دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ

वह तुमको रिज़्क़ देने का इख़्तियार नहीं रखते, पस तुम अल्लाह के पास रिज़्क़

الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

तलाश करो और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो, उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे (17)

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى

और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी क़ौमें झुठला चुकी हैं, और रसूल पर

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ

साफ़-साफ़ पहुँचा देने के सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं (18) क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह

يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى

ख़लक़ को शुरू करता है फिर वह उसको दोहराएगा, बेशक यह अल्लाह पर

اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ

आसान है (19) कह दीजिए कि ज़मीन में चलो फिरो फिर देखो कि अल्लाह ने किस तरह

بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ

ख़लक़ को शुरू किया फिर अल्लाह ही उसको दुबारा उठाएगा, बेशक

اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ

अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (20) वह जिसको चाहे अज़ाब देगा

وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَآ اَنْتُمْ

और जिसपर चाहेगा रहम करेगा, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे (21) और तुम न ज़मीन में

بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ

आजिज़ करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए

دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है और ना कोई मददगार (22) और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ

और उससे मिलने का इनकार किया तो वही मेरी रहमत से महरूम हुए

وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ

और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब हैं (23) फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा

قَوْمِهٖۤ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ

कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसको क़त्ल कर दो या उसको जला दो, तो अल्लाह ने उसको

مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾

आग से बचा लिया, बेशक इसके अंदर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं (24)

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ

और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं बस वे तुम्हारे बाहमी दुनिया के

بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ

ताल्लुक़ात की वजह से है, फिर क़ियामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का

بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ

इनकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा, और आग ही तुम्हारा

النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ

ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा मददगार न होगा (25) फिर लूत (अलै०) ने उसको माना

وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ

और कहा कि मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूँ, बेशक वह ज़बरदस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا

हिकमत वाला है (26) और हमने अता किए उसको इसहाक़ और याक़ूब (अलै०) और उसकी नस्ल में

فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي

नुबुव्वत और किताब रख दी, और हमने दुनिया में उसको अज्र

الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

अता किया और आख़िरत में यक़ीनन वह सालिहीन में से होगा (27)

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫

और लूत (अलै०) को जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ

कि तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने उसको नहीं किया (28) क्या तुम

لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ

मर्दों के पास जाते हो और डाके डालते हो और अपनी मजलिस में

فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ

बुरा काम करते हो, पस उसकी क़ौम का जवाब उसके सिवा कुछ न था

اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ

कि उन्होंने कहा अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का

الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ

अज़ाब लाओ (29) लूत (अलै०) ने कहा कि ऐ मेरे रब! फ़साद मचाने वाले लोगों के मुक़ाबले में

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ ع وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ

मेरी मदद फ़रमाइए (30) और जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम (अलै०) के पास बशारत लेकर

بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

पहुँचे तो उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं,

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ

बेशक इसके लोग ज़ालिम हैं (31) इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि उसमें तो लूत (अलै०) भी हैं,

قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗۤ

उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहाँ कौन है, हम उसको और उसके घर वालों को बचा लेंगे

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّاۤ اَنْ

मगर उसकी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी (32) फिर जब हमारे

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا

भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत (अलै०) के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ,

وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ

और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और ग़म न करो, हम तुमको और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे

اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى

मगर तुम्हारी बीवी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी (33) हम इस बस्ती के रहने वालों पर

اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

एक आसमानी अज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में नाज़िल

يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ

करने वाले हैं (34) और हमने इस बस्ती के कुछ वाज़ेह निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इबरत के लिए

يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ

जो अक़्ल रखते हैं (35) और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब (अलै०) को, पस उसने कहा

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا

कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो और ज़मीन में

فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ

फ़साद फैलाने वाले न बनो (36) तो उन्होंने उसको झुठला दिया पस ज़लज़ले ने उनको

الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا

आ पकड़ा फिर वह अपने घरों में ओंधे पड़े रह गए (37) और आद

وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ

और समूद को, और तुम पर हाल खुल चुका है उनके घरों से,

وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

और उनके आमाल को शैतान ने उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया फिर उनको

السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَارُوْنَ

रास्ते से रोक दिया और वह होशियार लोग थे (38) और क़ारून को

وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ

और फ़िरऔन को और हामान को, और मूसा (अलै०) उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए

فَاسۡتَكۡبَرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَمَا كَانُوۡا سٰبِقِيۡنَ ﴿٣٩﴾

तो उन्होंने ज़मीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे (39)

فَكُلًّا اَخَذۡنَا بِذَنۡۢبِهٖ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِ

पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा, फिर उनमें से बअज़ पर हमने पत्थराव करने वाली

حَاصِبًا ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اَخَذَتۡهُ الصَّيۡحَةُ ۚ وَمِنۡهُمۡ

हवा भेजी और उनमें से बअज़ को कड़क ने आ पकड़ा, और उनमें से बअज़ को

مَّنۡ خَسَفۡنَا بِهِ الۡاَرۡضَ ۚ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ اَغۡرَقۡنَا ۚ

हमने ज़मीन में धंसा दिया और उनमें से बअज़ को हमने ग़र्क़ कर दिया,

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلٰـكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ

और अल्लाह उनपर ज़ुल्म करने वाला न था मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर

يَظۡلِمُوۡنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ

ज़ुल्म कर रहे थे (40) जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे हिमायती

اللّٰهِ اَوۡلِيَآءَ كَمَثَلِ الۡعَنۡكَبُوۡتِ ۚ اِتَّخَذَتۡ بَيۡتًا ؕ

बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है, उसने एक घर बनाया,

وَاِنَّ اَوۡهَنَ الۡبُيُوۡتِ لَبَيۡتُ الۡعَنۡكَبُوۡتِ ۘ لَوۡ كَانُوۡا

और बेशक तमाम घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर मकड़ी का घर है, काश कि लोग

يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ

जानते (41) बेशक अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिनको वे उसके सिवा

مِنۡ شَىۡءٍ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلۡكَ

पुकारते हैं, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (42) और ये मिसालें हैं

الۡاَمۡثَالُ نَضۡرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعۡقِلُهَاۤ اِلَّا

जिनको हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और उनको वही लोग समझते हैं

الۡعٰلِمُوۡنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ ؕ

जो इल्म वाले हैं (43) अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया है,

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿٤٤﴾

बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए (44)

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّ

आप उस किताब को पढ़िए जो आप पर वह्य की गई है और नमाज़ क़ायम कीजिए, बेशक

الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ

नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है, और अल्लाह की याद बड़ी

اَكْبَرُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ۝٤٥ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ

चीज़ है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो (45) और तुम अहले-किताब से

الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ اَحْسَنُ ڰ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

बहस न करो मगर उस तरीक़े पर जो बेहतर है मगर जो उन में बे इंसाफ़

مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ

हैं और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ भेजी गई और उसपर जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गई है,

وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝٤٦

और हमारा और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फ़रमाँबरदारी करने वाले हैं (46)

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

और इसी तरह हमने आपके ऊपर किताब उतारी, तो जिन लोगों को हमने किताब दी है

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ

वे उसपर ईमान लाते हैं, और उन लोगों में से भी बअज़ ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों का

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝٤٧ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ

इनकार सिर्फ़ काफ़िर ही करते हैं (47) और आप इससे पहले कोई किताब

قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ

नहीं पढ़ते थे और न उसको अपने हाथ से लिखते थे, ऐसी हालत में बातिल परस्त लोग

الْمُبْطِلُوْنَ ۝٤٨ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ

शुब्हे में पड़ते (48) बल्कि यह खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन को

اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٩ وَقَالُوْا

इल्म अता हुआ है, और हमारी आयतों का इनकार नहीं करते मगर वे जो ज़ालिम हैं (49) और वे कहते हैं

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ

कि इस पर उसके रब की तरफ़ से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गईं? कह दीजिए कि निशानियाँ तो

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا۠ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ

अल्लाह के पास हैं और मैं सिर्फ़ एक खुला हुआ डराने वाला हूँ (50) क्या उनके लिए यह काफ़ी नहीं है

اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

कि हमने आप पर किताब उतारी जो उनको पढ़कर सुनाई जाती है, बेशक उसमें

لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ

रहमत और याददहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं (51) कह दीजिए कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान

وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

गवाही के लिए काफ़ी है, वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है,

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ

और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और जिन्होंने इनकार किया वही ख़सारे में

الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ

रहने वाले हैं (52) और ये लोग आपसे अज़ाब जल्द माँग रहे हैं, और अगर एक वक़्त मुक़र्रर

مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ

न होता तो उनपर अज़ाब आ जाता, और यक़ीनन वह उनपर अचानक आएगा और उनको

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ

ख़बर भी न होगी (53) वे आपसे अज़ाब जल्द माँग रहे हैं, और यक़ीनन

جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ

जहन्नम मुनकिरों को घेरे हुए है (54) जिस दिन अज़ाब उनको ऊपर से

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا

ढाँक लेगा और पांव के नीचे से भी और कहेगा कि चखो उसको

مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ

जो तुम करते थे (55) ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो! बेशक

اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ

मेरी ज़मीन वसीअ़ है तो तुम मेरी ही इबादत करो (56) हर जान को

ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे (57) और जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ

और उन्होंने नेक अमल किए उनको हम जन्नत के बालाख़ानों में जगह देंगे, जिनके नीचे

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۟ۖ ٥٨

नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अज्र है अमल करने वालों का (58)

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ٥٩ وَكَاَيِّنْ

जिन्होंने सब्र किया और जो अपने रब पर भरोसा रखते हैं (59) और कितने

مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖۗ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ

जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाए नहीं फिरते, अल्लाह उनको रिज़्क़ देता है और तुमको भी,

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٦٠ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

और वह सुनने वाला, जानने वाला है (60) और अगर आप उनसे पूछो कि किसने पैदा किया

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ

आसमानों और ज़मीन को और मुसख़्ख़र किया सूरज को और चाँद को तो वह ज़रूर कहेंगे

اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ٦١ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

कि अल्लाह ने, फिर वह कहाँ से फेर दिए जाते हैं (61) अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का

عَلِيْمٌ ٦٢ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ

जानने वाला है (62) और अगर आप उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी

مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ

उतारा फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा किया उसके मरजाने के बाद तो वे ज़रूर कहेंगे

اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ٦٣

कि अल्लाह ने, कह दीजिए कि सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है; बल्कि उनमें से अकसर लोग नहीं समझते (63)

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ

और यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा, और बेशक

الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ٦٤

आख़िरत का घर ही असल ज़िंदगी की जगह है, काश कि वे जानते (64)

منزل ٥

ع ٦

وقف لازم

فَاِذَا رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ

पस जब वे कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं उसी के लिए दीन को ख़ालिस

الدِّیْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾

करते हुए, फिर जब वह उनको निजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है तो वह फ़ौरन शिर्क करने लगते हैं (65)

لِیَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَیْنٰهُمْ ۚ وَلِیَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ

ताकि हमने जो नेमत उनको दी है उसकी नाशुक्री करें और चंद दिन फ़ायदा उठा लें, पस वह जल्द ही

یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّیُتَخَطَّفُ

जान लेंगे (66) क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुर अमन हरम बनाया और उनके आस पास से

النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ یُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ

लोग उचक लिए जाते हैं, तो क्या वे बातिल को मानते हैं और अल्लाह की

اللّٰهِ یَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

नेमत की नाशुक्री करते हैं (67) और उस शख़्स से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَیْسَ فِیْ

बांधे या हक़ को झुठलाए जबकि वह उसके पास आ चुका, क्या मुनकिरों का

جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۶۸﴾ وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا

ठिकाना जहन्नम में न होगा (68) और जो लोग हमारी ख़ातिर मशक़्क़त उठाएंगे

لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۶۹﴾ ع

उनको हम अपने रास्ते दिखाएंगे, और यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है (69)

सूरह रूम मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (17) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (60) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (84) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (30) नम्बर पर है और सूरह इन्शिक़ाक़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3534) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (819) कलिमात हैं

الٓمّٓ ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿۲﴾ فِیْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْ

अलिफ़-लाम-मीम (1) रूम वाले मग़लूब हो गए (2) पास के इलाक़े में और वे अपनी

بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَیَغْلِبُوْنَ ﴿۳﴾ فِیْ بِضْعِ سِنِیْنَ ؕ لِلّٰهِ

मग़लूबियत के बाद जल्द ही ग़ालिब होंगे (3) चंद बरसों में, अल्लाह ही के

منزل ۵

الْاَمْرُ	مِنْ	قَبْلُ	وَمِنْۢ	بَعْدُ ؕ	وَيَوْمَئِذٍ	يَّفْرَحُ

हाथ में सब काम हैं, पहले भी और पीछे भी, और उस दिन ईमान वाले

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۴﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ

ख़ुश होंगे (4) अल्लाह की मदद से, वह जिसकी चाहता है मदद करता है, और वह

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۵﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ

ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (5) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता;

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا

लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (6) वे दुनिया की ज़िंदगी

مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ

के सिर्फ़ ज़ाहिर को जानते हैं और वे आख़िरत से

غٰفِلُوْنَ ﴿۷﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۫ مَا خَلَقَ

बेख़बर हैं (7) क्या उन्होंने अपने आपमें ग़ौर नहीं किया, अल्लाह ने

اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है बरहक़ पैदा किया है

وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ

और सिर्फ़ एक मुक़र्रर मुद्दत के लिए, और लोगों में बहुत से हैं जो अपने रब से मुलाक़ात के

لَكٰفِرُوْنَ ﴿۸﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ

मुनकिर हैं (8) क्या वे ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ

अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे, वे उनसे ज़्यादा ताक़त

قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا

रखते थे और उन्होंने ज़मीन को बोया और उसको उससे ज़्यादा आबाद किया जितना उन्होंने आबाद किया है,

وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

और उनके पास रसूल वाज़ेह निशानियाँ लेकर आए, पस अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۹﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ

मगर वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे (9) फिर जिन लोगों ने बुरा काम

منزل ۵

اَلَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا

किया था उनका अंजाम बुरा हुआ इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और वह

بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑩ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

उनकी हंसी उड़ाते थे (10) अल्लाह ख़लक़ को पहली बार पैदा करता है फिर वही उसको दुबारा पैदा करेगा

ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ⑪ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ

फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे (11) और जिस दिन क़ियामत बर्पा होगी उस दिन मुजरिम लोग

الْمُجْرِمُوْنَ ⑫ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىِٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا

हैरतज़दह रह जाएंगे (12) और उनके शरीकों में उनका कोई सिफ़ारिशी न होगा

وَكَانُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑬ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ

और वे अपने शरीकों के मुनकिर हो जाएंगे (13) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी

يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ⑭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

उस दिन सब लोग जुदा जुदा हो जाएंगे (14) पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक

الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ⑮ وَاَمَّا الَّذِيْنَ

अमल किए वे एक बाग़ में मसरूर होंगे (15) और जिन लोगों ने

كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىِٕكَ فِي

इनकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया तो वे

الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ⑯ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ

अज़ाब में पकड़े हुए होंगे (16) पस तुम पाक अल्लाह को याद करो जब तुम शाम करते हो

وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ⑰ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ

और जब तुम सुबह करते हो (17) और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ⑱ يُخْرِجُ الْحَيَّ

हम्द है और शाम के पहर में और जब तुम ज़ुहर करते हो (18) वह ज़िंदा को मुर्दे से

مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ

निकालता है और मुर्दे को ज़िंदा से निकालता है और वह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ⑲ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ

ज़िंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे (19) और उसकी निशानियों में से यह है

خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया है फिर यकायक तुम बशर बनकर फैल जाते हो (20)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिंस से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए;

لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ

ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो, और उसने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत रख दी, बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ

इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं (21) और उसकी निशानियों में से आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ

और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़ है,

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ

बेशक इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं इल्म वालों के लिए (22) और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात

بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ

और दिन में सोना और तुम्हारा उसके फ़ज़्ल को तलाश करना है, बेशक इसमें

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ

बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं (23) और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुमको

الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

बिजली दिखाता है ख़ौफ़ के साथ और उम्मीद के साथ, और वह आसमान से पानी उतारता है

فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद, बेशक इसमें निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ

उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं (24) और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन

وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ

उसके हुक्म से क़ायम है, फिर जब वह तुमको एक बार पुकारेगा तो तुम

الْاَرْضِ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَهٗ مَنْ فِي

उसी वक़्त ज़मीन से निकल पड़ोगे (25) और आसमानों और ज़मीन में

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوۡنَ ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ

जो भी है उसी का है, सब उसी के ताबे हैं (26) और वही है जो

يَبۡدَؤُا الۡخَلۡقَ ثُمَّ يُعِيۡدُهٗ وَهُوَ اَهۡوَنُ عَلَيۡهِ ؕ وَلَهُ

पहली बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा, और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है, और आसमानों

الۡمَثَلُ الۡاَعۡلٰى فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ

और ज़मीन में उसी के लिए सबसे बरतर सिफ़त है, और वह ज़बरदस्त है,

الۡحَكِيۡمُ ﴿۲۷﴾ ضَرَبَ لَكُمۡ مَّثَلًا مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ هَلۡ لَّكُمۡ

हिकमत वाला है (27) वह तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारी ज़ात से एक मिसाल बयान करता है, क्या तुम्हारे

مِّنۡ مَّا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ مِّنۡ شُرَكَآءَ فِىۡ مَا رَزَقۡنٰكُمۡ

ग़ुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुमको दिया है

فَاَنۡتُمۡ فِيۡهِ سَوَآءٌ تَخَافُوۡنَهُمۡ كَخِيۡفَتِكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ ؕ

कि तुम और वे उसमें बराबर हों, और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज़ करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज़ करते हो,

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ

इस तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं (28) बल्कि अपनी जानों पर

الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ بِغَيۡرِ عِلۡمٍ ۚ فَمَنۡ يَّهۡدِىۡ مَنۡ

ज़ुल्म करने वालों ने बिला दलील अपने ख़्यालात की पैरवी कर रखी है तो उसको कौन हिदायत दे सकता है जिसको

اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمۡ وَجۡهَكَ

अल्लाह ने भटका दिया हो, और कोई उनका मददगार नहीं (29) पस आप यकसू होकर

لِلدِّيۡنِ حَنِيۡفًا ؕ فِطۡرَتَ اللّٰهِ الَّتِىۡ فَطَرَ النَّاسَ

अपना रुख़ इस दीन की तरफ़ रखो, अल्लाह की फ़ितरत जिस पर उसने लोगों को

عَلَيۡهَا ؕ لَا تَبۡدِيۡلَ لِخَلۡقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ

बनाया है, उसके बनाए हुए को बदलना नहीं, यही सीधा दीन है,

وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾ مُنِيۡبِيۡنَ اِلَيۡهِ

लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (30) उसी की तरफ़ मुतवज्जह होकर

وَاتَّقُوۡهُ وَاَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۳۱﴾

और उसी से डरो और नमाज़ क़ायम करो और मुशरिकीन में से न बनो (31)

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ

जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर लिया और वे बहुत से गिरोह हो गए, हर गिरोह

بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا

अपने तरीक़े पर ख़ुश है जो उसके पास है (32) और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे अपने रब को

رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً

पुकारते हैं उसी की तरफ़ मुतवज्जह होकर, फिर जब वह अपनी तरफ़ से उनको मेहरबानी चखाता है

اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ

तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है (33) कि जो कुछ हमने उनको दिया है

اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا

उसके मुनकिर हो जाएं, तो चंद दिन फ़ायदा उठा लो, जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा (34) क्या हमने उनपर

عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾

कोई सनद उतारी है कि वह उनको अल्लाह के साथ शिर्क करने को कह रही है (35)

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

और जब हम लोगों को मेहरबानी चखाते हैं तो वे उससे ख़ुश हो जाते हैं, और अगर उनके

سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

आमाल के सबब से उनको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं (36)

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे कम,

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ

बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं (37) पस रिश्तेदार को

ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ

उसका हक़ दो और मिस्कीन को और मुसाफ़िर को, यह बेहतर है

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रिज़ा चाहते हैं और वही लोग फ़लाह

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاْ فِيْٓ اَمْوَالِ

पाने वाले हैं (38) और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ

शामिल होकर वह बढ़ जाए तो अल्लाह के नज़दीक वह नहीं बढ़ता, और जो ज़कात तुम दोगे

تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं, जो अल्लाह के यहाँ अपने माल को बढ़ाने वाले हैं (39) अल्लाह ही है

الَّذِیْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ

जिसने तुमको पैदा किया फिर उसने तुमको रोज़ी दी फिर वह तुमको मौत देता है फिर वह तुमको ज़िंदा करेगा,

هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ

क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो उनमें से कोई काम

شَیْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ

करता हो, वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं (40) ख़ुशकी और तरी में

فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِی النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ

फ़साद फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से; ताकि अल्लाह मज़ा चखाए

بَعْضَ الَّذِیْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيْرُوْا

उन को उनके बअज़ आमाल का, शायद कि वे बाज़ आ जाएं (41) कह दीजिए कि ज़मीन में

فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ

चलो फिरो फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उससे पहले

قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

गुज़रे हैं, उनमें से अकसर मुशरिक थे (42) पस आप अपना रुख़

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِیَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

दीने-क़य्यिम की तरफ़ सीधा रखो क़ब्ल इसके कि अल्लाह की तरफ़ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए

مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ

वापसी नहीं, उस दिन लोग जुदा जुदा हो जाएंगे (43) जिसने इनकार किया तो उसका इनकार

كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

उसी पर पड़ेगा, और जिसने नेक अमल किए तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं (44)

لِيَجْزِیَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फ़ज़्ल से जज़ा दे,

اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۴۵﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖۤ اَنۡ يُّرۡسِلَ

बेशक अल्लाह मुनकिरों को पसंद नहीं करता (45) और उसकी निशानियों में से यह है कि वह

الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيۡقَكُمۡ مِّنۡ رَّحۡمَتِهٖ وَلِتَجۡرِىَ

हवाएं भेजता है ख़ुशख़बरी देने के लिए और ताकि वह तुमको अपनी रहमत से नवाज़े, और ताकि कश्तियाँ

الۡـفُلۡكُ بِاَمۡرِهٖ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ

उसके हुक्म से चलें और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम उसका

تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۴۶﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوۡمِهِمۡ

शुक्र अदा करो (46) और हमने आपसे पहले रसूलों को भेजा उनकी क़ौम की तरफ़,

فَجَآءُوۡهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ فَانۡتَقَمۡنَا مِنَ الَّذِيۡنَ اَجۡرَمُوۡا ؕ

पस वे उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए तो हमने उन लोगों से इंतिक़ाम लिया जिन्होंने जुर्म किया

وَكَانَ حَقًّا عَلَيۡنَا نَصۡرُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۴۷﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡ

और हम पर यह हक़ था कि हम मोमिनों की मदद करें (47) अल्लाह ही है

يُرۡسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيۡرُ سَحَابًا فَيَبۡسُطُهٗ فِى السَّمَآءِ كَيۡفَ

जो हवाओं को भेजता है पस वह बादल को उठाती हैं फिर अल्लाह उनको आसमान में फैला देता है जिस तरह

يَشَآءُ وَيَجۡعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الۡوَدۡقَ يَخۡرُجُ مِنۡ

चाहता है और वह उनको तह-बतह करता है, फिर आप बारिश को देखते हो कि उसके

خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَاۤ اَصَابَ بِهٖ مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖۤ

अंदर से निकलती है, फिर जब वह अपने बंदों में से जिसको चाहता है उसे पहुँचा देता है

اِذَا هُمۡ يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾ وَاِنۡ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلِ

तो यकायक वह ख़ुश हो जाते हैं (48) और वह उसके

اَنۡ يُّنَزَّلَ عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ قَبۡلِهٖ لَمُبۡلِسِيۡنَ ﴿۴۹﴾ فَانۡظُرۡ اِلٰٓى

नाज़िल किए जाने से क़ब्ल, ख़ुशी से पहले नाउम्मीद थे (49) पस अल्लाह की

اٰثٰرِ رَحۡمَتِ اللّٰهِ كَيۡفَ يُحۡىِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ

रहमत के आसार को देखिए कि वह किस तरह ज़मीन को ज़िंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद,

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحۡىِ الۡمَوۡتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۵۰﴾

बेशक वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (50)

وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ

और अगर हम एक हवा भेज दें फिर वे खेती को ज़र्द होती देखें तो उसके बाद वे इनकार

يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ

करने लगेंगे (51) तो आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न आप बहरों को अपनी पुकार

الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ

सुना सकते हैं जबकि वह पीठ फेर कर चले जा रहे हों (52) और ना आप अंधों को उनकी गुमराही से

عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا

निकाल कर राह पर ला सकते हो, आप सिर्फ़ उसको सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो,

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ

पस यही लोग इताअत करने वाले हैं (53) अल्लाह ही है जिसने तुमको कमज़ोरी से पैदा किया

ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ

फिर कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत दी फिर क़ुव्वत के बाद

بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ

ज़ुअफ़ और बुढ़ापा तारी कर दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है और वह

الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ

इल्म वाला, क़ुदरत वाला है (54) और जिस दिन क़ियामत बर्पा होगी मुजरिम क़सम खाकर

الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا

कहेंगे कि वह एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे, इस तरह वे

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ

फेरे जाते थे (55) और जिन लोगों को इल्म और इमान अता हुआ था वे कहेंगे

لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ز فَهٰذَا يَوْمُ

कि अल्लाह की किताब में तो तुम रोज़े हश्र तक पड़े रहे, पस यह हश्र का

الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ

दिन है लेकिन तुम जानते न थे (56) पस उस दिन ज़ालिमों को उनकी

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

मअज़रत कुछ नफ़ा न देगी और ना उनसे मुआफ़ी मांगने के लिए कहा जाएगा (57)

امام حفصؒ سے ان تینوں کلمات میں ضاد کا ضمہ اور فتحہ دونوں مروی ہے لیکن ضمہ مختار ہے

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ

और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं,

وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ

और अगर आप उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इनकार किया है वे यही कहेंगे

اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى

कि तुम सब बातिल पर हो (58) इस तरह अल्लाह मुहर लगा देता है उन लोगों के

قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

दिलों पर जो नहीं जानते (59) पस आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वादा

حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

सच्चा है और आपको कमज़ोर न कर दें वे लोग जो यक़ीन नहीं रखते (60)

सूरह लुक़मान मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर चंद आयतें (27, 28, 29) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (34) आयतें और (4) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (57) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (31) नम्बर पर है और सूरह साफ़्फ़ात के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2110) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (548) कलिमात हैं

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى

अलिफ़-लाम-मीम (1) यह हिकमत भरी किताब की आयतें हैं (2) हिदायत

وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

और रहमत नेकी करने वालों के लिए (3) जो कि नमाज़ क़ायम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ ؕ

और ज़कात अदा करते हैं और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं (4)

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फ़लाह

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ

पाने वाले हैं (5) और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का ख़रीदार बनता है

الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ

जो ग़ाफ़िल करने वाली हैं; ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे बग़ैर किसी इल्म के

रुकूअ ७ मंज़िल ५

وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًاؕ اُولٰٓٮِٕكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ۞ وَاِذَا

और उसकी हंसी उड़ाए, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है (6) और जब

تُتۡلٰى عَلَيۡهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسۡتَكۡبِرًا كَاَنۡ لَّمۡ يَسۡمَعۡهَا

उसको हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वे तकब्बुर करता हुआ मुँह मोड़ लेता है जैसे उसने सुना ही नहीं

كَاَنَّ فِىۡۤ اُذُنَيۡهِ وَقۡرًا‌ ۚ فَبَشِّرۡهُ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۞

जैसे उसके कानों में बेहरापन है, तो उसको एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दीजिए (7)

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ جَنّٰتُ

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनके लिए नेमत के

النَّعِيۡمِ ۞ لَا خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَهُوَ

बाग़ हैं (8) उनमें वे हमेशा रहेंगे, ये अल्लाह का पक्का वादा है, और वह

الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۞ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٍ تَرَوۡنَهَا

ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (9) अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया ऐसे सुतूनों के बग़ैर जो तुमको नज़र आऐं

وَاَلۡقٰى فِى الۡاَرۡضِ رَوَاسِىَ اَنۡ تَمِيۡدَ بِكُمۡ وَبَثَّ

और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिए कि वह तुमको लेकर झुक न जाए और उसमें

فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ‌ ؕ وَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

हर क़िस्म के जानदार फैला दिए, और हमने आसमान से पानी उतारा

فَاَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِيۡمٍ ۞ هٰذَا خَلۡقُ

फिर ज़मीन में हर क़िस्म की उमदा चीज़ें उगाई (10) यह है अल्लाह की

اللّٰهِ فَاَرُوۡنِىۡ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ‌ ؕ بَلِ

तख़्लीक़ तो तुम मुझको दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने किया पैदा किया है, बल्कि

الظّٰلِمُوۡنَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ۞ ع وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا لُقۡمٰنَ

ज़ालिम लोग खुली गुमराही में हैं (11) और हमने लुक़मान को हिकमत

الۡحِكۡمَةَ اَنِ اشۡكُرۡ لِلّٰهِ ؕ وَمَنۡ يَّشۡكُرۡ فَاِنَّمَا يَشۡكُرُ

अता फ़रमाई कि अल्लाह का शुक्र अदा करो, और जो शख़्स शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए

لِنَفۡسِهٖ‌ ۚ وَمَنۡ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيۡدٌ ۞ وَاِذۡ

शुक्र करेगा, और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ है, ख़ूबियों वाला है (12) और जब

منزل ٥

ع ١١

قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ

लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ

शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है (13) और हमने इंसान को उसके माँ-बाप के

بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ

मामले में ताकीद की, उसकी माँ ने दुख पर दुख उठाकर उसको पेट में रखा और दो बरस में

فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾

उसका दूध छुड़ाना हुआ, कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदैन का, मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है (14)

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ

और अगर वे दोनों तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए, जो तुझको

عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ز

मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना, और दुनिया में उनके साथ नेक बरताव करना,

وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

और तुम उस शख़्स के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ़ रुजूअ किया है फिर तुम सबको मेरे पास आना है

فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ

फिर मैं तुमको बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे (15) ऐ मेरे बेटे! अगर कोई अमल

مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ

राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो

اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ

या आसमानों में हो या ज़मीन में हो, अल्लाह उसको हाज़िर कर देगा, बेशक

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

अल्लाह बारीकबीं है, बाख़बर है (16) ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ायम करो, अच्छे काम की

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا

नसीहत करो और बुराई से रोको और जो मुसीबत तुमको पहुँचे उसपर

اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ

सब्र करो, बेशक यह हिम्मत के कामों में से है (17) और लोगों से

خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ

बेरुख़ी न करो और ज़मीन में अकड़ कर न चलो,

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾ وَاقْصِدْ

बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता (18) और अपनी चाल में

فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ

दरमियानी तरीक़ा इख़्तियार करो और अपनी आवाज़ को पस्त रखो, बेशक सबसे

الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है (19) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में

سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ

लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है,

وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ

और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं, और लोगों में

النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى

ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं किसी इल्म और किसी हिदायत

وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ

और किसी रोशन किताब के बग़ैर (20) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज़ की

اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ

जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं हम तो उस चीज़ की पैरवी करेंगे जिसपर हमने अपने बाप दादा को

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ

पाया है, क्या अगर शैतान उनको आग के अज़ाब की तरफ़ बुला रहा हो

السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ

तब भी? (21) और जो शख़्स अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे और वह नेक अमल

مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى

करने वाला भी हो तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली, और अल्लाह ही की तरफ़ है

اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ

तमाम मुआमलात का अंजामकार (22) और जिसने इनकार किया तो उसका इनकार आपको

كُفْرُهٗ ۗ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ

ग़मगीन न करे, हमारी ही तरफ़ है उनकी वापसी तो हम उनको बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया, बेशक अल्लाह

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ

दिलों की बात से भी वाक़िफ़ है (23) हम उनको थोड़ी मुद्दत फ़ायदा देंगे फिर उनको एक सख़्त अज़ाब

اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

की तरफ़ खींच लाएंगे (24) और अगर आप उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ

किसने पेदा किया तो वे ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने, कह दीजिए कि सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है;

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

बल्कि उनमें से अकसर नहीं जानते (25) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّ مَا

में है, बेशक अल्लाह बेनियाज़ है, ख़ूबियों वाला है (26) और अगर ज़मीन में जो

فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ

दरख़्त हैं वे क़लम बन जाएं और समुंदर मज़ीद सात समुंदरों

بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ

के साथ रोशनाई बन जाएं तब भी अल्लाह की बातें ख़त्म न हों, बेशक

اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا

अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (27) तुम सबका पैदा करना और दोबारा ज़िंदा करना बस ऐसा ही है

كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

जैसा एक शख़्स का, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है (28) क्या आपने नहीं देखा कि

اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ

अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है,

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया है, हर एक चलता है एक मुक़र्ररह वक़्त तक,

وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (29) यह इस वजह से है कि अल्लाह ही

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ

हक़ है और उसके सिवा जिन चीज़ों को वे पुकारते हैं वे बातिल हैं

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۳۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ

और बेशक अल्लाह बरतर है, बड़ा है (30) क्या आपने नहीं देखा कि कश्ती समुंदर में

تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ

अल्लाह के फ़ज़्ल से चलती है; ताकि वह तुमको अपनी निशानियाँ दिखाए,

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۱﴾ وَاِذَا

बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए (31) और जब

غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

मौज उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है तो वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को

لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ

ख़ालिस करते हुए, फिर जब वह उनको निजात देकर ख़ुश्की की तरफ़ ले आता है तो उनमें कुछ

مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۲﴾

एतिदाल पर रहते हैं, और हमारी निशानियों का इनकार वही लोग करते हैं जो बद अहद हैं, नाशुक्रे हैं (32)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا

ऐ लोगो! अपने रब (के ग़ुस्से) से बचो और उस दिन से डरो जबकि

لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ

कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ़ से

عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

कुछ बदला देने वाला होगा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۫ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾

धोखे में न डाले और न धोखे बाज़ तुमको अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए (33)

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ

बेशक अल्लाह ही को क़ियामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا

और वह जानता है जो कुछ रिहम में है, और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल वह

تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ

क्या कमाइ करेगा और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा,

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿٣٤﴾

बेशक अल्लाह जानने वाला, बाख़बर है (34)

ع ٤ / ١٤

सूरह सज्दा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (16) से (20) तक मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (30) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (75) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (32) नम्बर पर है और सूरह मोमिनून के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1518) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (380) कलिमात हैं

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ

अलिफ़-लाम-मीम (1) यह नाज़िल की हुई किताब है, इसमें कोई शुब्हा नहीं, ख़ुदा वंदे आलम की

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ

तरफ़ से है (2) क्या वे कहते हैं कि इस शख़्स ने इसको ख़ुद घड़ लिया है; बल्कि यह हक़ है

مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ

आपके रब की तरफ़ से ताकि आप उन लोगों को डरादो जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला

قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ

नहीं आया; ताकि वह राह पर आजाएं (3) अल्लाह ही है जिसने पैदा किया

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है छः दिनों में फिर वह

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ

अर्श पर क़ायम हुआ, उसके सिवा न कोई तुम्हारा मददगार है और न कोई

وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ

सिफ़ारिश करने वाला, तो क्या तुम ध्यान नहीं करते (4) वह आसमान से ज़मीन तक

السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ

तमाम मुआमलात की तदबीर करता है फिर वह उसकी तरफ़ लौटते हैं एक ऐसे दिन में

كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ

जिसकी मिक़दार तुम्हारी गिनती से हज़ार साल के बराबर है (5) वही है

منزل ٥

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ

पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, ज़बरदस्त है, रहमत वाला है (6) उसने

اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ

जो चीज़ भी बनाई ख़ूब बनाई, और उसने इंसान की तख़लीक़ की इब्तिदा

طِيْنٍ ﴿٧﴾ۚ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ

मिट्टी से की (7) फिर उसकी नस्ल हक़ीर पानी के ख़ुलासे से

مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ۚ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ

चलाई (8) फिर उसके आज़ा दुरुस्त किए और उसमें अपनी रूह फूंकी

وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا

और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम लोग बहुत कम

مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ

शुक्र करते हो (9) और उन्होंने कहा कि क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे

ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۀ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ

तो हम फिर नए सिरे से पैदा किए जाएंगे? बल्कि वह अपने रब की मुलाक़ात के

كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ

मुनकिर हैं (10) कह दीजिए कि मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है जो तुम पर

وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ۧ وَلَوْ تَرٰٓى

मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे (11) और काश आप देखो

اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ

जबकि यह मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे,

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا

ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और हमने सुन लिया पस आप हमको वापस भेज दीजिए कि हम नेक काम करें,

مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ

हम यक़ीन करने वाले बन गए (12) और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते; लेकिन

حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नात और इंसानों से

اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ

भर दूँगा (13) तो अब मज़ा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया,

اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ

हमने भी तुमको भुला दिया और (अब) अपने किए की बदोलत हमेशा का अज़ाब

تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا

चखो (14) हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको उनके ज़रिए याद-दहानी

بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ

की जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करते हैं और वे

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ ﴿۱۵﴾ تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

तकब्बुर नहीं करते (15) उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं,

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾

वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से, और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं (16)

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ

तो किसी को ख़बर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के सिले में आँखों की

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا

क्या ठंडक छुपा रखी गई है (17) तो क्या जो मोमिन है वह उस शख़्स

كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿۱۸﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जैसा होगा जो नाफ़रमान है, दोनों बराबर नहीं हो सकते (18) जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًا بِمَا

और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की क़ियामगाहें हैं, मेहमान नवाज़ी के तौर पर

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ

उन कामों की वजह से जो वे करते थे (19) और जिन लोगों ने नाफ़रमानी की तो उनका ठिकाना

النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا

आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ

और उनसे कहा जाएगा कि आग का अज़ाब चखो जिसको तुम

منزل ۵

وقف غفران

تُكَذِّبُوْنَ ۝٢٠ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى

झुठलाते थे (20) और हम उनको बड़े अज़ाब से पहले क़रीब का अज़ाब

دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٢١ وَمَنْ

ज़रूर चखाएंगे शायद कि वे बाज़ आजाएं (21) और उस शख़्स से

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ۭ اِنَّا

ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसको उसके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाए फिर वह उनसे मुँह मोड़े, हम

مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ۝٢٢ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

ऐसे मुजरिमों से ज़रूर बदला लेंगे (22) और हमने मूसा (अलै०) को

الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآىِٕهٖ وَجَعَلْنٰهُ

किताब दी तो आप उसके मिलने में कुछ शक न करें, और हमने उसको

هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٣ ع وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَىِٕمَّةً

बनी-इस्राईल के लिए हिदायत बनाया (23) और हमने उनमें पेशवा बनाए

يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۣ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे जबकि उन्होंने सब्र किया, और वह हमारी आयतों पर

يُوْقِنُوْنَ ۝٢٤ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

यक़ीन रखते थे (24) बेशक आपका रब क़ियामत के दिन उनके दरमियान उन उमूर में फ़ैसला कर देगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٢٥ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ

जिन में वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे (25) क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत देने वाली न बनी कि

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ

उनसे पहले हमने कितनी क़ौमों को हलाक कर दिया, जिनकी बस्तियों में ये लोग

مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ۭ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ۝٢٦

आते जाते थे, बेशक इसमें निशानियाँ हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटयल ज़मीन की तरफ हाँक कर ले जाते हैं (26)

فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ۭ

फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाये खाते हैं और वे ख़ुद भी,

اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ

फिर क्या वे देखते नहीं? (27) और वे कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा, अगर तुम

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ

सच्चे हो (28) कह दीजिए कि फ़ैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा

كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَعْرِضْ

जिन्होंने इनकार किया और न उनको मोहलत दी जाएगी (29) तो उनसे

عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع

ऐराज़ कीजिए और मुंतज़िर रहिए, ये भी मुंतज़िर हैं (30)

सूरह अहज़ाब मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (73) आयतें और (9) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (90) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (33) नम्बर पर है और सूरह आले-इमरान के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (5790) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1280) कलिमात हैं

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ط

ऐ प्यारे नबी! अल्लाह से डरिए और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की इताअत न कीजिए,

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى

बेशक अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (1) और पैरवी कीजिए उस चीज़ की जो आपके रब की तरफ़ से

اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ط اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

आप पर वह्य की जा रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो

خَبِيْرًا ﴿٢﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ط وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٣﴾

तुम लोग करते हो (2) और अल्लाह पर भरोसा रखिए, और अल्लाह कारसाज़ होने के लिए काफ़ी है (3)

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ج وَمَا

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे और न

جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ج

तुम्हारी बीवियों को जिनसे तुम ज़िहार करते हो तुम्हारी माँ बनाया

وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ط ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ

और न तुम्हारे अपने मुँह बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया, यह सब तुम्हारे अपने मुँह की

بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى

बातें हैं, और अल्लाह हक़ बात कहता है और वह सीधा रास्ता

السَّبِيْلَ ﴿۴﴾ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

दिखाता है (4) मुँह बोले बेटों को उनके बापों की निस्बत से पुकारो यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा मुंसिफ़ाना बात है,

فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ

फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे

وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ

रफ़ीक़ हैं, और जिस चीज में तुमसे भूल चूक हो जाए तो उसका तुम पर कुछ गुनाह

بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

नहीं मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो, और अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला,

رَّحِيْمًا ﴿۵﴾ اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

रहम करने वाला है (5) और नबी का हक़ मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज़्यादा है

وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

और नबी की बीवियाँ उनकी माएं हैं, और रिश्तेदार अल्लाह की किताब में दूसरे मोमिनीन

بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

और मुहाजिरीन की बनिस्बत एक दूसरे से ज़्यादा तअल्लुक़ रखते हैं

اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ

मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो, यह किताब में

فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۶﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ

लिखा हुआ है (6) और जब हमने पैग़म्बरों से उनका

مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى

अहद लिया और आपसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा

وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۷﴾ ۙ

और ईसा बिन मरयम (अलै०) से, और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया (7)

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुनकिरों के लिए उसने

عَذَابًا اَلِيۡمًا ﴿۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ

दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (8) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अपने ऊपर अल्लाह के

اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ جَآءَتۡكُمۡ جُنُوۡدٌ فَاَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ

एहसान को याद करो जब तुमपर फ़ौजें चढ़ आएं तो हमने उनपर एक आंधी

رِيۡحًا وَّجُنُوۡدًا لَّمۡ تَرَوۡهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

भेजी और ऐसी फ़ौज जो तुमको दिखाई न देती थी, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ

بَصِيۡرًا ﴿۹﴾ اِذۡ جَآءُوۡكُمۡ مِّنۡ فَوۡقِكُمۡ وَمِنۡ اَسۡفَلَ

तुम करते हो (9) जबकि वे तुमपर चढ़ आए तुम्हारे ऊपर की तरफ़ से और तुम्हारे नीचे की

مِنۡكُمۡ وَاِذۡ زَاغَتِ الۡاَبۡصَارُ وَبَلَغَتِ الۡقُلُوۡبُ الۡحَنَاجِرَ

तरफ़ से और जब आँखें पथरा गईं और दिल गलों तक पहुँच गए

وَتَظُنُّوۡنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوۡنَا ﴿۱۰﴾ هُنَالِكَ ابۡتُلِىَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ

और तुम अल्लाह के साथ तरह तरह के गुमान करने लगे (10) उस वक़्त ईमान वाले इमतिहान में डाले गए

وَزُلۡزِلُوۡا زِلۡزَالًا شَدِيۡدًا ﴿۱۱﴾ وَاِذۡ يَقُوۡلُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ

और बिलकुल हिला दिए गए (11) और जब मुनाफ़िक़ीन और वे लोग जिनके

وَالَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوۡلُهٗۤ

दिलों में रोग है कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था

اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۱۲﴾ وَاِذۡ قَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡهُمۡ يٰۤاَهۡلَ

वह सिर्फ़ धोखा था (12) और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब वालो!

يَثۡرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمۡ فَارۡجِعُوۡا ۚ وَيَسۡتَاۡذِنُ فَرِيۡقٌ

तुम्हारे लिए ठहरने का मोक़ा नहीं तो तुम लौट चलो, और उनमें से एक गिरोह पैग़म्बर से

مِّنۡهُمُ النَّبِىَّ يَقُوۡلُوۡنَ اِنَّ بُيُوۡتَنَا عَوۡرَةٌ ؕۛ وَمَا هِىَ

इजाज़त मांगता था वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर महफ़ूज़ हैं हालाँकि वे

بِعَوۡرَةٍ ۛۚ اِنۡ يُّرِيۡدُوۡنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَلَوۡ دُخِلَتۡ

ग़ैर महफ़ूज़ नहीं, वे सिर्फ़ भागना चाहते थे (13) और अगर मदीना के

عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَقۡطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الۡفِتۡنَةَ لَاٰتَوۡهَا

अतराफ़ से उनपर कोई घुस आता और उनको फ़ितने की दावत देता तो वे मान लेते

وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا

और वे उसमें बहुत कम बाक़ी रहते (14) और उन्होंने इससे पहले

اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ

अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किए हुए अहद की

مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ

पूछ होगी (15) कह दीजिए कि अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागो

الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾

तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा, और इस हालत में तुमको सिर्फ़ थोड़े दिनों फ़ायदा उठाने का मौक़ा मिलेगा (16)

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ

कह दीजिए कि कौन है जो तुमको अल्लाह से बचाएगा अगर वह तुमको नुक़सान पहुँचाना

بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ

चाहे या वह तुमपर रहमत करना चाहे, और वह अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबले में

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ

कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे (17) अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से

الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ

रोकने वाले हैं और जो अपने भाईयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ,

وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚۖ

और वे लड़ाई में कम ही आते हैं (18) वे तुमसे बुख़्ल करते हैं,

فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ

पस जब ख़ौफ़ पेश आता है तो आप देखते हैं कि वे आपकी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी

اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا

आँखें उस शख़्स की आँखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिसपर मौत की बेहोशी तारी हो, फिर जब

ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى

ख़तरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिर्स में तुमसे तेज़ ज़बानी के साथ

الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ

मिलते हैं, ये लोग यक़ीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल बेकार कर दिए,

وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ

और यह अल्लाह के लिए आसान है (19) वे समझते हैं कि फ़ौजें अभी

لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

गई नहीं हैं, और अगर फ़ौजें आ जाएं तो ये लोग यही पसंद करें कि

بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ

काश हम बद्दुओं के साथ देहात में हों तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें, और अगर

كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ

वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते (20) यक़ीनन तुम्हारे लिए

فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ

अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना था, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के

وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ

दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे (21) और जब ईमान वालों ने फ़ोजों को

الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

देखा तो उन्होंने कहा कि यह वही है जिसका अल्लाह ने और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था,

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا

और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा, और इसने उनके ईमान और इताअत में

وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا

इज़ाफ़ा कर दिया (22) ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से

عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ

किए हुए अहद को पूरा कर दिखाया, पस उनमें से कोई अपना ज़िम्मा पूरा कर चुका और उनमें से

مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ

कोई मुंतज़िर है, और उन्होंने ज़रा भी तबदीली नहीं की (23) ताकि अल्लाह सच्चों को

الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ

उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को अज़ाब दे अगर चाहे

اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

या उनकी तौबा क़ुबूल करे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (24)

ع ٢/١٨

منزل ٥

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِغَيۡظِهِمۡ لَمۡ يَنَالُوۡا خَيۡرًا ؕ

और अल्लाह ने मुनकिरों को उनके ग़ुस्से के साथ फेर दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई,

وَكَفَى اللّٰهُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ الۡقِتَالَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيۡزًا ۚ‏ ﴿۲۵﴾

और मोमिनीन की तरफ़ से अल्लाह लड़ने के लिए काफ़ी हो गया, और अल्लाह क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है (25)

وَاَنۡزَلَ الَّذِيۡنَ ظَاهَرُوۡهُمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مِنۡ

और अल्लाह ने उन अहले-किताब को जिन्होंने हमला आवरों का साथ दिया उनके

صَيَاصِيۡهِمۡ وَقَذَفَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمُ الرُّعۡبَ فَرِيۡقًا تَقۡتُلُوۡنَ

क़िलों से उतारा और उसने उनके दिलों में रोब डाल दिया, तुम उनके एक गिरोह को क़त्ल कर रहे हो

وَتَاۡسِرُوۡنَ فَرِيۡقًا ۚ‏ ﴿۲۶﴾ وَاَوۡرَثَكُمۡ اَرۡضَهُمۡ وَدِيَارَهُمۡ

और एक गिरोह को क़ैद कर रहे हो (26) और उसने उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके

وَاَمۡوَالَهُمۡ وَاَرۡضًا لَّمۡ تَطَـُٔوۡهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

मालों का तुमको वारिस बना दिया और ऐसी ज़मीन का भी जिस पर तुमने क़दम नहीं रखा, और अल्लाह हर चीज़ पर

شَىۡءٍ قَدِيۡرًا ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزۡوَاجِكَ اِنۡ

क़ुदरत रखने वाला है (27) ऐ (प्यारे) नबी! अपनी बीवियों से कह दीजिए कि अगर

كُنۡتُنَّ تُرِدۡنَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا وَزِيۡنَتَهَا فَتَعَالَيۡنَ

तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत चाहती हो तो आओ

اُمَتِّعۡكُنَّ وَاُسَرِّحۡكُنَّ سَرَاحًا جَمِيۡلًا‏ ﴿۲۸﴾ وَاِنۡ كُنۡتُنَّ

मैं तुमको कुछ माल व मताअ देकर ख़ूबी के साथ रुख़सत कर दूँ (28) और अगर तुम

تُرِدۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَالدَّارَ الۡاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ

अल्लाह और उसके रसूल को और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से

لِلۡمُحۡسِنٰتِ مِنۡكُنَّ اَجۡرًا عَظِيۡمًا‏ ﴿۲۹﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِىِّ

नेक किरदारों के लिए बड़ा अज्र मुहय्या कर रखा है (29) ऐ (प्यारे) नबी की बीवियो!

مَنۡ يَّاۡتِ مِنۡكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفۡ لَهَا

तुम में से जो किसी खुली बेहयाई का इरतिकाब करेगी उसको

الۡعَذَابُ ضِعۡفَيۡنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرًا‏ ﴿۳۰﴾

दोहरा अज़ाब दिया जाएगा, और यह अल्लाह के लिए आसान है (30)

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगी और नेक अमल करेगी

نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

तो हम उसको उसका दोहरा अज्र देंगे, और हमने उसके लिए बाइज़्ज़त रोज़ी तैयार कर रखी है (31)

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ

ऐ प्यारे नबी की बीवियो! तुम आम औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम अल्लाह से डरो

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ

तो तुम लेहजे में नर्मी इख़्तियार न करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह

مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

लालच में पड़ जाए और मुनासिब तरीक़े के मुताबिक़ बात कहो (32) और तुम अपने घरों में जमी रहो

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ

और साबिक़ा जाहिलीयत की तरह दिखलाती न फिरो, और नमाज़ क़ायम करो

وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ

और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, अल्लाह तो

اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ

चाहता है कि तुम अहले-बैत से गंदगी को दूर करे और तुमको पूरी तरह

تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ

पाक कर दे (33) और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयात और हिकमत की

اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

जो तालीम होती है उसको याद रखो, बेशक अल्लाह भेद जानने वाला है, ख़बर रखने वाला है (34)

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

बेशक इताअत करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें, ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें,

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ

फ़रमाँबरदारी करने वाले मर्द और फ़रमाँबरदारी करने वाली औरतें, सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें,

وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ

सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, ख़ुशू इख़्तियार करने वाले मर्द और ख़ुशू इख़्तियार करने वाली औरतें,

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ

सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें, रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें

وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ

अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और अल्लाह को कसरत से याद कने वाले

كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا

मर्द और याद करने वाली औरतें, उनके लिए अल्लाह ने मग़फ़िरत और बड़ा अज्र तैयार

عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ

कर रखा है (35) और किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह

وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ

और उसका रसूल किसी मुआमले में फ़ैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इख़्तियार बाक़ी रहे,

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ

और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा तो वह खुली गुमराही में पड़ गया (36) और जब

تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ

आप उस शख़्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनआम किया और आपने भी एहसान किया कि अपनी बीवी को

عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

रोके रखो और अल्लाह से डरो, और आप अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसको अल्लाह

مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ

ज़ाहिर करने वाला था, और आप लोगों से डर रहे थे; हालाँकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि आप उससे डरो,

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ

फिर जब ज़ैद उससे अपनी ग़र्ज़ तमाम कर चुका तो हमने आपसे उसका निकाह कर दिया; ताकि मुसलमानों पर

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا

अपने मुँह बोले बेटों की बीवियों के बारे में कुछ तंगी ना रहे जबकि वे उनसे अपनी ग़र्ज़

مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى

तमाम कर लें, और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था (37) पैग़म्बर के लिए

النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ

उसमें कोई हर्ज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर कर दिया हो, यही अल्लाह की सुन्नत

فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۭ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا

उन पैग़म्बरों के मुआमले में रही है जो पहले गुज़र चुके हैं, और अल्लाह का हुक्म एक क़तई

مَّقْدُوْرَا ۨ ﴿٣٨﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ

फ़ैसला होता है (38) वह (पैग़म्बर) अल्लाह के पैग़ामों को पहुँचाते थे और उसी से डरते थे

وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾

और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे, और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है (39)

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ

मुहम्मद (सल०) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन

رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

वे अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातिम हैं, और अल्लाह हर चीज़ का

عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا

इल्म रखने वाला है (40) ऐ ईमान वालो! अल्लाह को बहुत ज़्यादा

كَثِيْرًا ﴿٤١﴾ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِيْ

याद करो (41) और उसकी तस्बीह करो सुबह और शाम (42) वही है जो

يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰۗىِٕكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ

तुम पर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी; ताकि तुमको अंधेरों से निकाल कर

اِلَى النُّوْرِ ۭ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ

रोशनी में लाए, और वह मोमिनों पर बहुत मेहरबान है (43) जिस रोज़ वे उससे मिलेंगे उनका

يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ښ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾ يٰٓاَيُّهَا

इस्तिक़बाल सलाम से होगा, और उसने उनके लिए बाइज़्ज़त सिला तैयार कर रखा है (44) ऐ (प्यारे)

النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾

नबी! हमने आपको गवाही देने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है (45)

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ

और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से दावत देने वाला और एक रोशन चिराग़ (46) और मोमिनों को

الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾

बशारत दे दीजिए कि उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है (47)

منزل ٥

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ

और आप काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानिए और उनके सताने को नज़र अंदाज़ कीजिए और अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

भरोसा रखिए, और अल्लाह भरोसे के लिए काफ़ी है (48) ऐ ईमान वालो!

اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ

जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो फिर उनको हाथ लगाने से पहले

تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ

तलाक़ देदो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्दत लाज़िम नहीं जिसका तुम शुमार करो,

فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ

पस उनको कुछ सामान देदो और ख़ूबी के साथ उनको रुख़सत कर दो (49) ऐ (प्यारे) नबी!

اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا

हमने आपके लिए हलाल करदीं आप की वे बीवियाँ जिनका महर आप दे चुके हो और वह औरतें भी

مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ

जो आपकी ममलूका हैं, जो अल्लाह ने ग़नीमत के तौर पर आपको दी हैं, और आपके चचा की बेटियाँ और फूफियों की

عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫

बेटियाँ और आपके मामुओं की बेटियाँ और आपकी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने आपके साथ हिजरत की हो,

وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ

और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को देदे; बशर्तेकि पैग़म्बर उसको

اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ

निकाह में लाना चाहे, यह ख़ुसूसियत सिर्फ़ आपके लिए है न कि दूसरे मोमिनों के लिए,

قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

हमको मालूम है जो हमने उनपर उनकी बीवियों और उनकी लोंडियों के बाब में

اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

फ़र्ज़ किया है; ताकि आप पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला,

رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ

मेहरबान है (50) आप उनमें से जिसको चाहो दूर रखो और जिसको चाहो

تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ

अपने पास रखो, और जिनको दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी आप पर कोई गुनाह नहीं,

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ

इसमें ज़्यादा तवक़्क़ो है कि उनकी आँखें ठंडी रहेंगी और वे ग़मगीन न होंगी, और न उस पर राज़ी रहेंगी

بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ

जो आप उन सबको दो, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है,

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ

और अल्लाह जानने वाला, बुर्दबार है (51) इनके अलावा और औरतें आपके लिए

بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ

हलाल नहीं हैं, और न यह दुरुस्त है कि आप इनकी जगह दूसरी बीवियाँ कर लें, अगर्चे उनकी सूरत

حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

आपको अच्छी लगे मगर जो आपकी ममलूका हो, और अल्लाह हर चीज़ पर

شَیْءٍ رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ

निगराँ है (52) ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में

النَّبِیِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ

मत जाया करो मगर जिस वक़्त तुमको खाने के लिए इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के

اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ

मुंतज़िर न रहो, लेकिन जब तुमको बुलाया जाए तो दाख़िल हो जाओ, फिर जब तुम खा चुको

فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ

तो उठ कर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो, इस बात से नबी को

يُؤْذِی النَّبِیَّ فَيَسْتَحْیٖ مِنْكُمْ ز وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْیٖ مِنَ

नागवारी होती है मगर वे तुम्हारा लिहाज़ करते हैं, और अल्लाह हक़ बात कहने में किसी का

الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ

लिहाज़ नहीं करता, और जब तुम रसूल की बीवियों से कोई चीज़ माँगो तो परदे की

حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ

औट से माँगो, यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी, और तुम्हारे लिए

لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَهٗ

जाएज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तक्लीफ़ दो और न यह जायज़ है कि तुम उनके बाद

مِنْ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿٥٣﴾

उनकी बीवियों से कभी निकाह करो, यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी भारी बात है (53)

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ

तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको छुपाओ तो अल्लाह हर चीज़ को

عَلِيْمًا ﴿٥٤﴾ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ

जानने वाला है (54) पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं है और न अपने बेटों के बारे में

وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ

और न अपने भाईयों के बारे में और न अपने भतीजों के बारे में और न अपने भांजों के

اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ

बारे में और न अपनी औरतों के बारे में और न अपनी लौंडियों के बारे में,

وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾

और तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखता है (55)

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं, ऐ ईमान

اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

वालो! तुम भी उस पर दरूद व सलाम भेजो (56) बेशक जो लोग

يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا

अल्लाह और उसके रसूल को अज़िय्यत देते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में

وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ

लानत की और उनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (57) और जो लोग

يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا

मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अज़िय्यत देते हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो,

فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾ ع يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ

तो उन्होंने बोहतान का और सरीह गुनाह का बोझ उठाया (58) ऐ (प्यारे) नबी! अपनी बीवियों से

لِّاَزۡوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ يُدۡنِيۡنَ عَلَيۡهِنَّ

और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दीजिए कि अपने ऊपर अपनी चादरें थोड़ी सी

مِنۡ جَلَابِيۡبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدۡنٰٓى اَنۡ يُّعۡرَفۡنَ فَلَا يُؤۡذَيۡنَ ؕ

नीचे कर लिया करें, इससे उनकी पहचान जल्दी हो जाएगी तो वे सताइ न जाएंगी,

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿٥٩﴾ لَئِنۡ لَّمۡ يَنۡتَهِ الۡمُنٰفِقُوۡنَ

और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (59) मुनाफ़िक़ीन और वे लोग जिनके दिलों में

وَالَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡمُرۡجِفُوۡنَ فِى الۡمَدِيۡنَةِ

रोग है और जो मदीना में झूठी ख़बरें फैलाने वाले हैं, अगर वे बाज़ न आए

لَنُغۡرِيَنَّكَ بِهِمۡ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوۡنَكَ فِيۡهَآ اِلَّا قَلِيۡلًا ۛۚ ﴿٦٠﴾

तो हम आपको उनके पीछे लगा देंगे फिर वे तुम्हारे साथ मदीना में बहुत कम रहने पाएंगे (60)

مَّلۡعُوۡنِيۡنَ ۛۚ اَيۡنَمَا ثُقِفُوۡۤا اُخِذُوۡا وَقُتِّلُوۡا تَقۡتِيۡلًا ﴿٦١﴾

फटकारे हुए, जहाँ पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह मारे जाएंगे (61)

سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّةِ

यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के बारे में जो पहले गुज़र चुके हैं, और आप अल्लाह के दस्तूर में

اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا ﴿٦٢﴾ يَسۡـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلۡ اِنَّمَا

कोई तबदीली न पाओगे (62) लोग आपसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए कि उसका

عِلۡمُهَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوۡنُ

इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है, और आपको क्या ख़बर शायद क़ियामत क़रीब

قَرِيۡبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الۡكٰفِرِيۡنَ وَاَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيۡرًا ۙ ﴿٦٤﴾

आ लगी हो (63) बेशक अल्लाह ने मुनकिरों को रहमत से दूर कर दिया है और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है (64)

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوۡنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ۚ ﴿٦٥﴾

उसमें वे हमेशा रहेंगे, वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार (65)

يَوۡمَ تُقَلَّبُ وُجُوۡهُهُمۡ فِى النَّارِ يَقُوۡلُوۡنَ يٰلَيۡتَنَآ اَطَعۡنَا

जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वे कहेंगे: ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअत

اللّٰهَ وَاَطَعۡنَا الرَّسُوۡلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعۡنَا سَادَتَنَا

की होती और हमने रसूल की इताअत की होती (66) और वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों

مُعَانَقَة ١٣ الربع منزل ٥

وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوۡنَا السَّبِيۡلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَاۤ اٰتِهِمۡ ضِعۡفَيۡنِ

और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमको रास्ते से भटका दिया (67) ऐ हमारे रब! उनको दोहरा

مِنَ الۡعَذَابِ وَالۡعَنۡهُمۡ لَعۡنًا كَبِيۡرًا ﴿٦٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

अज़ाब दे और उनपर भारी लानत कर (68) ऐ ईमान

اٰمَنُوۡا لَا تَكُوۡنُوۡا كَالَّذِيۡنَ اٰذَوۡا مُوۡسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ

वालो! तुम उन लोगों की तरह ना बनो जिन्होंने मूसा (अलै०) को अज़ियत पहुँचाई तो अल्लाह ने उसको

مِمَّا قَالُوۡا ؕ وَكَانَ عِنۡدَ اللّٰهِ وَجِيۡهًا ﴿٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

उन बातों से बरी साबित किया, और वे अल्लाह के नज़दीक बाइज़्ज़त थे (69) ऐ ईमान

اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ﴿٧٠﴾ يُّصۡلِحۡ

वालो! अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो (70) वह तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल

لَكُمۡ اَعۡمَالَكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوۡبَكُمۡ ؕ وَمَنۡ

सुधारेगा और तुम से तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा, और जो शख़्स

يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَقَدۡ فَازَ فَوۡزًا عَظِيۡمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا

अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, उसने बड़ी कामयाबी हासिल की (71) हमने

عَرَضۡنَا الۡاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَالۡجِبَالِ

अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया

فَاَبَيۡنَ اَنۡ يَّحۡمِلۡنَهَا وَاَشۡفَقۡنَ مِنۡهَا وَحَمَلَهَا

तो उन्होंने उसको थामने से इनकार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसको

الۡاِنۡسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوۡمًا جَهُوۡلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ

उठा लिया, बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था (72) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों

الۡمُنٰفِقِيۡنَ وَالۡمُنٰفِقٰتِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ وَالۡمُشۡرِكٰتِ

और मुनाफ़िक़ औरतों को और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को सज़ा दे,

وَيَتُوۡبَ اللّٰهُ عَلَى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फ़रमाए, और अल्लाह

غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿٧٣﴾

बख़्शने वाला, मेहरबान है (73)

ع ٥ ٦

منزل ٥

सूरह सबा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (6) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (54) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (58) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (34) नम्बर पर है और सूरह लुक़मान के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1512) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (833) कलिमात हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَهُ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और उसी की

الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ① يَعْلَمُ مَا يَلِجُ

तारीफ़ है आख़िरत में, और वह हिकमत वाला, जानने वाला है (1) वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर

فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا

दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो

يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ② وَقَالَ الَّذِيْنَ

उसमें चढ़ता है, और वह रहमत वाला, बख़्शने वाला है (2) और जिन्होंने इनकार किया

كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّىْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ

वे कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, कह दीजिए कि क्यों नहीं, क़सम है ग़ैब को जानने वाले

عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ

मेरे परवरदिगार की! वह ज़रूर तुम पर आएगी, उससे ज़र्रा बराबर कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं, न आसमानों में

وَلَا فِى الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِىْ

और न ज़मीन में, और न कोई चीज़ उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ③ ۙ لِّيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

खुली किताब मैं है (3) ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किए,

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ

यही लोग हैं जिनके लिए मुआफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी (4) और जिन लोगों ने हमारी

فِىْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ

आयतों को आजिज़ करने की कोशिश की, उनके लिए सख़्ती भरा दर्दनाक

اَلِيْمٌ ⑤ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِىْٓ اُنْزِلَ

अज़ाब है (5) और जिनको इल्म दिया गया है वह उस चीज़ को जो आपके रब की तरफ़ से

اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

आपके पास भेजा गया है, जानते हैं कि वह हक़ है और वह ख़ुदाए-अज़ीज़ व हमीद का

الْحَمِيْدِ ﴿٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى

रास्ता दिखाता है (6) और जिन्होंने इनकार किया वे कहते हैं: क्या हम तुमको एक ऐसा आदमी बताएं

رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ

जो तुमको ख़बर देता है कि जब तुम बिलकुल रेज़ा रेज़ा हो जाओगे तो फिर तुमको (क़ियामत के दिन) नए सिरे से

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿٧﴾ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ

बनना है (7) क्या उसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है या उसको किसी तरह का जुनून है?

بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ

बल्कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते वही अज़ाब में और दूर की गुमराही में

الْبَعِيْدِ ﴿٨﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

मुबतला हैं (8) तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ़ नज़र नहीं की जो उनके आगे है

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ

और उनके पीछे भी, अगर हम चाहें तो उनको ज़मीन में धंसा दें

اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

या उनपर आसमान से टुकड़े गिरा दें, बेशक इसमें निशानी है

لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٩﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا

हर उस बंदे के लिए जो मुतवज्जह होने वाला है (9) और हमने दाऊद (अलै०) को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत

فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ

दी, ऐ पहाड़ो! तुम भी उसके साथ तस्बीह करने में शिरकत करो, और इसी तरह परिंदों को भी हुक्म दिया, और हमने उसके लिए

الْحَدِيْدَ ﴿١٠﴾ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا

लोहे को नर्म कर दिया (10) कि तुम कुशादा ज़िरहें बनाओ और कड़ियों को अंदाज़े से जोड़ो

صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ

और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसको मैं देख रहा हूँ (11) और सुलैमान (अलै०) के लिए हमने हवा को ताबे कर दिया,

غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ

उसकी सुबह की मंज़िल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंज़िल एक महीने की, और हमने उसके लिए तांबे का चश्मा बहा दिया,

وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهٖ ۭ وَمَنْ

और जिन्नात में से ऐसे थे जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे, और उनमें से

يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ⑫

जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसको आग का अज़ाब चखाएंगे (12)

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۗءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ

वह उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तसवीरें और होज़

كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ

जैसे लगन और जमी हुई देगें, ऐ आले-दाऊद! शुक्रगुज़ारी के साथ अमल करो

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ⑬ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ

और मेरे बंदों में कम ही शुक्रगुज़ार हैं (13) फिर जब हमने उस पर मौत का फ़ैसला

الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰي مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَاۗبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ

नाफ़िज़ किया तो किसी चीज़ ने उनको उसके मरने का पता नहीं दिया मगर ज़मीन के कीड़े ने जो उसके असा को

مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

खाता था, पस जब वह गिर पड़ा तब जिन्नात पर खुला कि अगर वह ग़ैब को

الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ⑭ لَقَدْ كَانَ

जानते तो इस ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते (14) सबा के लिए

لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ڛ

उनके अपने मसकन में निशानी थी, दो बाग़ दाएं और बाएं,

كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ

अपने रब के रिज़्क़ से खाओ और उसका शुक्र करो, उम्दा शहर

وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ⑮ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ

और बख़्शने वाला रब (15) पस उन्होंने मुँह फेरा तो हमने उनपर बंद का सेलाब भेज दिया

وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ

और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिन में बदमज़ा फल और झाव के दरख़्त

وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ⑯ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ

और कुछ थोड़े से बेर थे (16) यह हमने उनकी नाशुक्री का बदला दिया,

وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ

और ऐसा हम बदला उसी को देते हैं जो नाशुक्रा हो (17) और हमने उनके और उनकी बस्तियों के

الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا

दरमियान जहाँ हमने बरकत रखी थी ऐसी बस्तियाँ आबाद कीं जो नज़र आती थीं, और हमने उनके दरमियान

السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾ فَقَالُوْا

सफ़र की मंज़िलें ठहरा दीं, उनमें रात दिन अमन के साथ चलो (18) फिर उन्होंने कहा कि

رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ

ऐ हमारे रब! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी डाल दे, और उन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हमने

اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

उनको अफ़साना बना दिया और हमने उनको बिलकुल तित्तर बित्तर कर दिया, बेशक इसमें निशानियाँ हैं

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ

हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए (19) और इबलीस ने उनके ऊपर अपना गुमान

ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ

सच कर दिखाया, पस उन्होंने उसकी पैरवी की मगर ईमान वालों का एक गिरोह (20) और इबलीस को

لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ

उनके ऊपर कोई इख़्तियार न था, मगर यह कि हम मालूम करलें उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं

مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ ع

उन लोगों से (अलग करके) जो उसकी तरफ़ से शक में हैं, और आपका रब हर चीज़ पर निगराँ है (21)

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ

कह दीजिए कि उनको पुकारो जिनको तुमने अल्लाह के सिवा माबूद समझ रखा है, वह न आसमानों में

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ

ज़र्रा बराबर इख़्तियार रखते हैं और न ज़मीन में और न इन दोनों में उनकी

فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا تَنْفَعُ

कोई शिरकत है और न इनमें से कोई उसका मददगार है (22) और उसके सामने कोई शिफ़ाअत

الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ

काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाज़त दे, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट

قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

दूर होगी तो वह पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया? वे कहेंगे कि हक़ बात का हुक्म फ़रमाया, और वह सबसे

الْكَبِيْرُ ۝۲۳ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ऊपर है, सबसे बड़ा है (23) कह दीजिए कि कौन तुमको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ देता है?

قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۲۴

कह दीजिए कि अल्लाह, और हम में और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में (24)

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۲۵

कहिए कि जो क़ुसूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी और जो कुछ तुम कर रहे हो उसके मुतअल्लिक़ हमसे नहीं पूछा जाएगा (25)

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ

कह दीजिए कि हमारा रब हमको जमा करेगा फिर हमारे दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमाएगा, और वह फ़ैसला फ़रमाने वाला,

الْعَلِيْمُ ۝۲۶ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ

इल्म वाला है (26) कह दीजिए कि मुझे उनको दिखाओ जिनको तुमने शरीक बनाकर अल्लाह के साथ मिलाकर रखा है, हरगिज़ नहीं!

بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۲۷ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً

बल्कि वह अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (27) और हमने आपको तमाम इंसानों के लिए

لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۲۸

ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, मगर अकसर लोग नहीं जानते (28)

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۲۹

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो? (29)

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا

कह दीजिए कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक साअत पीछे हट सकते हो

تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝۳۰ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا

और न आगे बढ़ सकते हो (30) और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज़ न इस क़ुरआन को

الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ

मानेंगे और न उसको जो उसके आगे है, और अगर आप उस वक़्त को देखो जबकि यह ज़ालिम

مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨ

अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, एक दूसरे पर बात

منزل ٥

النصف ع ١٠

الۡقَوۡلَ ۚ يَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡا لِلَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡا

डालता होगा, जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों से कहेंगे

لَوۡلَاۤ اَنۡتُمۡ لَـكُنَّا مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ الَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡا

कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान वाले होते (31) बड़ा बनने वाले कमज़ोर लोगों को

لِلَّذِيۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡۤا اَنَحۡنُ صَدَدۡنٰكُمۡ عَنِ الۡهُدٰى

जवाब देंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत से रोका था

بَعۡدَ اِذۡ جَآءَكُمۡ بَلۡ كُنۡتُمۡ مُّجۡرِمِيۡنَ ﴿۳۲﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ

जबकि वह तुमको पहुँच चुकी थी? बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम हो (32) और कमज़ोर लोग

اسۡتُضۡعِفُوۡا لِلَّذِيۡنَ اسۡتَكۡبَرُوۡا بَلۡ مَكۡرُ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ

बड़े लोगों से कहेंगे: नहीं; बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से,

اِذۡ تَاۡمُرُوۡنَنَاۤ اَنۡ نَّكۡفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجۡعَلَ لَهٗۤ اَنۡدَادًا ؕ

जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और उसके शरीक ठहराएं,

وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الۡعَذَابَ ؕ وَجَعَلۡنَا الۡاَغۡلٰلَ

और वह अपनी पशेमानी को छुपाएंगे जबकि वह अज़ाब देखेंगे, और हम मुनकिरों की,

فِىۡۤ اَعۡنَاقِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ؕ هَلۡ يُجۡزَوۡنَ اِلَّا مَا كَانُوۡا

गर्दन में तौक़ डालेंगे, वह वही बदला पाएंगे जो वे

يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ اِلَّا قَالَ

करते थे (33) और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके

مُتۡرَفُوۡهَاۤ اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوۡا نَحۡنُ

ख़ुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुनकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो (34) और उन्होंने कहा कि हम

اَكۡثَرُ اَمۡوَالًا وَّاَوۡلَادًا ۙ وَّمَا نَحۡنُ بِمُعَذَّبِيۡنَ ﴿۳۵﴾ قُلۡ اِنَّ

माल और औलाद में ज़्यादा हैं और हम कभी सज़ा पाने वाले नहीं (35) कह दीजिए कि

رَبِّىۡ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ

मेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम कर देता है, लेकिन अकसर लोग

النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۶﴾ ع وَمَاۤ اَمۡوَالُكُمۡ وَلَاۤ اَوۡلَادُكُمۡ بِالَّتِىۡ

नहीं जनते (36) और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज़ नहीं

منزل ٥

ع ٤

تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۡ فَاُولٰٓئِكَ

जो दर्जे में तुमको हमारा मुक़र्रब बना दे; अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक अमल किया, ऐसे लोगों

لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِى الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ۝٣٧

के लिए उनके अमल का दोगुना बदला है, और वे बालाख़ानों में इतमीनान से रहेंगे (37)

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ

और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगर्म हैं वे अज़ाब में

مُحْضَرُوْنَ ۝٣٨ قُلْ اِنَّ رَبِّىْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

दाख़िल किए जाएंगे (38) कह दीजिए कि मेरा रब अपने बंदों में से जिसको चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَهُوَ

कुशादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है तंग कर देता है, और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे तो वह उसका बदला देगा,

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝٣٩ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है (39) और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝٤٠

फिर वह फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे? (40)

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا

वे कहेंगे: पाक है आपकी ज़ात, हमारा तअल्लुक़ आपसे है न कि इन लोगों से, बल्कि ये

يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ۝٤١ فَالْيَوْمَ

जिन्नात की इबादत करते थे, उनमें से अकसर लोग उन्हीं पर ईमान रखने वाले थे (41) पस आज

لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ

तुम में से कोई एक दूसरे को न फ़ायदा पहुँचा सकता है और न नुक़सान, और हम ज़ालिमों से

ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِىْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝٤٢

कहेंगे कि आग का अज़ाब चखो जिसको तुम झुठलाते थे (42)

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ

और जब उनको हमारी खुली खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख़्स है

يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا

जो चाहता है कि तुमको उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे, और उन्होंने कहा

مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ

कि यह तो महज़ एक झूठ है घड़ा हुआ, और उन मुनकिरों के सामने जब हक़ आया

لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۴۳﴾ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ

तो उन्होंने कहा कि यह तो बस एक खुला हुआ जादू है (43) और हमने उनको

مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ

किताबें नहीं दी थीं जिनको वे पढ़ते हों, और हमने आपसे पहले उनके पास कोई डराने वाला

نَّذِيْرٍ ﴿۴۴﴾ ؕ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ

नहीं भेजा (44) और उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया, और ये उसके दसवीं हिस्से को भी नहीं पहुँचे

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۵﴾ ع قُلْ اِنَّمَآ

जो हमने उनको दिया था, पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया तो कैसा था उनपर मेरा अज़ाब (45) कह दीजिए कि में तुमको

اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ

एक बात की नसीहत करता हूँ, यह कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ, दो दो और एक एक

تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ

फिर सोचो कि तुम्हारे साथी को जुनून नहीं है, वह तो बस एक सख़्त अज़ाब से पहले

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿۴۶﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

तुमको डराने वाला है (46) कह दीजिए कि मैंने तुमसे कुछ मुआवज़ा मांगा हो

فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

तो वह तुम्हारा ही है, मेरा मुआवज़ा तो बस अल्लाह के ऊपर है, और वह हर चीज़ पर

شَهِيْدٌ ﴿۴۷﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۴۸﴾

गवाह है (47) कह दीजिए कि मेरा रब हक को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीज़ों को जानने वाला है (48)

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿۴۹﴾ قُلْ اِنْ

कह दीजिए कि हक आ गया और बातिल न (किसी चीज़ को) पैदा करता है और न (किसी चीज़ को) दोबारा लाता है (49) कह दीजिए कि अगर

ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا

मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी गुमराही का वबाल मुझ पर है, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह उस वह्य की बदोलत है

يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿۵۰﴾ وَلَوْ تَرٰى اِذْ فَزِعُوْا

जो मेरा रब मेरी तरफ़ भेज रहा है, बेशक वह सुनने वाला है, क़रीब है (50) और अगर आप देखो जब ये घबराए हुए

मंज़िल ५

فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا

होंगे, पस वह भाग न सकेंगे और क़रीब ही से पकड़ लिए जाएंगे (51) और वे कहेंगे कि हम उस पर

بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ وَّقَدْ

ईमान लाए, और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहाँ (52) और उन्होंने

كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ

इससे पहले उसका इनकार किया, और वे बिन देखे दूर जगह से बातें

بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ

फैंकते रहे (53) और उनकी और उनकी आरज़ू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे पहले

بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿٥٤﴾

उनके तरीक़े वालों के साथ किया गया, दरहक़ीक़त वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे (54)

सूरह फ़ातिर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (45) आयतें और (5) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (43) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (35) नम्बर पर है और सूरह फ़ुरक़ान के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3130) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (970) कलिमात हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, फ़रिश्तों को

رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ

पैग़ामरसाँ बनाने वाला जिन के पर हैं दो दो और तीन तीन और चार चार, वह पैदाइश में जो चाहे

مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ

ज़्यादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (1) अल्लाह कोई रहमत

لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ

लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं, और जिसको वह रोक ले

فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾

तो कोई उसको खोलने वाला नहीं, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (2)

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

ऐ लोगो! अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, क्या अल्लाह के सिवा

منزل ٥

خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِؕ لَآ اِلٰهَ

कोई और ख़ालिक़ है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो? उसके सिवा

اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ

कोई माबूद नहीं, तो तुम कहाँ से धोखा खा रहे हो? (3) और अगर ये लोग आपको झुठला दें तो

كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤﴾

आपसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुठलाए जा चुके है, और सारे उमूर अल्लाह ही की तरफ़ रुजू होने वाले हैं (4)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ

ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है, तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में

الدُّنْيَاۤ وقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ

न डाले, और वह बड़ा धोखेबाज़ तुमको अल्लाह के बारे में धोखा न देने पाए (5) बेशक शैतान

لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّاؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا

तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसको दुश्मन ही समझो, वह तो अपने गिरोह को इसी लिए बुलाता है कि वह

مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿٦﴾ؕ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ

दोज़ख वालों में से हो जाएं (6) जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए

شَدِيْدٌ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

सख़्त अज़ाब है, और जो ईमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए मुआफ़ी है

وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ ع اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًاؕ

और बड़ा अज्र है (7) क्या ऐसा शख़्स जिसको उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया फिर वह उसको अच्छा समझने लगा,

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ۖ

पस अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है और जिसको चाहता है हिदायत देता है

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ

पस आप उनपर अफ़सोस करके अपने आप को न घुलाएं, अल्लाह को मालूम है

بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ

जो कुछ वे करते हैं (8) और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है फिर वह बादल को

سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ

उठाती हैं, फिर हम उसको मुर्दा इलाक़े की तरफ़ ले जाते हैं, पस हमने उससे उस ज़मीन को

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ

उसके मुर्दा हो जाने के बाद फिर ज़िंदा कर दिया, इसी तरह होगा दोबारा ज़िंदा हो उठना (9) जो शख़्स

الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ

इज़्ज़त चाहता हो तो इज़्ज़त तमाम तर अल्लाह के लिए है, उसकी तरफ़ पाकीज़ा कलाम

الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ

चढ़ता है और अमले-सालेह उसको ऊपर उठाता है, और जो लोग बुरी तदबीरें

السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ

कर रहे हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और उनकी तदबीरें बरबाद होकर

يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ

रहेंगी (10) और अल्लाह ने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर पानी की बूंद से, फिर तुमको

جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا

जोड़े जोड़े बनाया, और कोई औरत हामिला नहीं होती है और न जनती है मगर उसके

بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ

इल्म से, और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है

اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾ وَمَا

मगर वह एक किताब में दर्ज है, बेशक यह अल्लाह पर आसान है (11) और दोनों

يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ

दरिया यकसाँ नहीं, यह मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए ख़ुशगवार,

وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا

और यह खारा, कड़वा है, और तुम दोनों से ताज़ा गोश्त खाते हो

وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ

और ज़ीनत की चीज़ निकालते हो जिसको तुम पहनते हो, और तुम देखते हो जाहाज़ों को कि वे उसमें

مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾

फाड़ते हुए चलते हैं; ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो (12)

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ

वह दाख़िल करता है रात को दिन में और वह दाख़िल करता है दिन को रात में,

وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجۡرِىۡ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

और उसने सूरज और चाँद को पाबंद कर दिया है, हर एक चलता है एक मुक़र्रर वक़्त के लिए,

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمۡ لَهُ الۡمُلۡكُ ؕ وَالَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ

यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है, और उसके सिवा तुम जिन्हें

دُوۡنِهٖ مَا يَمۡلِكُوۡنَ مِنۡ قِطۡمِيۡرٍ ؕ ﴿١٣﴾ اِنۡ تَدۡعُوۡهُمۡ

पुकारते हो वह खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं (13) अगर तुम उनको पुकारो

لَا يَسۡمَعُوۡا دُعَآءَكُمۡ ۚ وَلَوۡ سَمِعُوۡا مَا اسۡتَجَابُوۡا لَكُمۡ ؕ

तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे, और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फ़रयाद पूरी नहीं कर सकते,

وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ يَكۡفُرُوۡنَ بِشِرۡكِكُمۡ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ

और वे क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इनकार करेंगे, और एक बाख़बर की तरह

مِثۡلُ خَبِيۡرٍ ﴿١٤﴾ ع يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنۡتُمُ الۡفُقَرَآءُ اِلَى

कोई तुमको नहीं बता सकता (14) ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज

اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الۡغَنِىُّ الۡحَمِيۡدُ ﴿١٥﴾ اِنۡ يَّشَاۡ يُذۡهِبۡكُمۡ

हो, और अल्लाह तो बे नियाज़ है, तारीफ़ वाला है (15) अगर वह चाहे तो तुमको ले जाए

وَيَاۡتِ بِخَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ﴿١٦﴾ ۚ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيۡزٍ ﴿١٧﴾

और एक नई मख़लूक़ ले आए (16) और यह अल्लाह के लिए कुछ मुशकिल नहीं (17)

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰى ؕ وَاِنۡ تَدۡعُ مُثۡقَلَةٌ اِلٰى

और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा, और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए

حِمۡلِهَا لَا يُحۡمَلۡ مِنۡهُ شَىۡءٌ وَّلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبٰى ؕ

पुकारे तो उसमें से ज़रा भी न उठाया जाएगा; अगर्चे वे रिश्तेदार ही क्यों न हो,

اِنَّمَا تُنۡذِرُ الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَيۡبِ وَاَقَامُوا

आप तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम

الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنۡ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفۡسِهٖ ؕ وَاِلَى

करते हैं, और जो शख़्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है, और अल्लाह

اللّٰهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿١٨﴾ وَمَا يَسۡتَوِى الۡاَعۡمٰى وَالۡبَصِيۡرُ ﴿١٩﴾ لا

ही की तरफ़ लौटकर जाना है (18) और अंधा और आँखों वाला बराबर नहीं (19)

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۙ﴿۲۰﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۚ﴿۲۱﴾

और न अंधेरा और न उजाला (20) और न साया और न धूप (21)

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ

और ज़िंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते, बेशक अल्लाह सुनाता है

مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾ اِنْ اَنْتَ

जिसको वह चाहता है, और आप उनको सुनाने वाले नहीं बन सकते जो क़ब्रों में हैं (22) आप तो बस

اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ

एक ख़बरदार करने वाले हो (23) हमने आपको हक़ के साथ भेजा है ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर, और कोई

مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ

उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो (24) और अगर आपको झुठलाते हैं तो इनसे पहले

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

जो लोग हुए हैं उन्होंने भी झुठलाया, उनके पास उनके पैग़म्बर खुले दलाइल

وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ

और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर आए (25) फिर जिन लोगों ने न माना उनको मैंने

كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ

पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ (उनके ऊपर) मेरा अज़ाब (26) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ने

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

आसमान से पानी उतारा फिर हमने उससे मुख़्तलिफ़ रंगों के फल पैदा

اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ

कर दिए, और पहाड़ों में भी सफ़ेद और सुर्ख़ मुख़्तलिफ़ रंगों के

اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ

टुकड़े हैं और गहरे सियाह भी (27) और इसी तरह इंसानों और जानवरों

وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ

और चौपायों में भी मुख़्तलिफ़ रंग के हैं, अल्लाह से उसके बंदों में से

مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾ اِنَّ

सिर्फ़ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है (28) बेशक

منزل ٥

ع ٢ / ١٥

احتياط

احتياط

اَلَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उनको अता किया है

رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾

उसमें से छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी ज़ाए नहीं होगी (29)

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ

ताकि अल्लाह उनको उनका पूरा अज्र दे और उनके लिए अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादा कर दे, बेशक वह

غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ

बख़्शने वाला है, क़द्रदान है (30) और हमने आपकी तरफ़ जो किताब वह्य की है

هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ

वह हक़ है, उसकी तस्दीक़ करने वाली है जो उसके पहले से मौजूद है, बेशक अल्लाह अपने बंदों की

لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا

ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है (31) फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन को हमने अपने बंदों में से

مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ

चुन लिया, पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ

مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

बीच की चाल पर हैं, और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफ़ीक़ से भलाईयों में सबक़त करने वाले हैं, यही

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا

सबसे बड़ा फ़ज़्ल है (32) हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनमें ये लोग दाख़िल होंगे,

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ

वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहाँ उनका लिबास

فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا

रेशम का होगा (33) और वे कहेंगे: शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे ग़म को

الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۨ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ

दूर किया, बेशक हमारा रब मुआ़फ़ करने वाला, क़द्र करने वाला है (34) जिसने हमको अपने फ़ज़्ल से

الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا

आबाद रहने के घर में उतारा, उसमें हमको न कोई मशक़्क़त पहुँचेगी और न हमको उसमें

فِيْهَا لُغُوْبٌ ۝٣٥ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ

कभी तकान लाहिक़ होगी (35) और जिन्होंने इनकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है,

لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ

न उनको मौत आएगी कि वे मर जाएं और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का

عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۝٣٦ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ

किया जाएगा, हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं (36) और वे लोग उसमें

فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا

चिल्लाएंगेः ऐ हमारे रब! हमको निकाल ले, हम नेक अमल करेंगे उससे मुख़्तलिफ़ जो हम

نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ

किया करते थे, क्या हमने तुमको इतनी उम्र न दी कि जिसको समझना होता वह समझ सकता,

وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝٣٧

और तुम्हारे पास डराने वाला आया, अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (37)

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानने वाला है, बेशक वह दिल की

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٣٨ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى

बातों से भी बाख़बर है (38) वही है जिसने तुमको ज़मीन में

الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ

आबाद किया, तो जो शख़्स इनकार करेगा उसका इनकार उसी पर पड़ेगा, और मुनकिरों के लिए उनका इनकार

كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ

उनके रब के नज़दीक नाराज़ी ही बढ़ने का बाअिस होता है, और मुनकिरों के लिए उनका इनकार

كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ۝٣٩ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ

ख़सारा ही में इज़ाफ़ा करेगा (39) कह दीजिए कि ज़रा तुम देखो अपने उन शरीकों को

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ

जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझको दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में से

الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا

क्या बनाया है या उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है या हमने उनको कोई किताब दी है

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ

तो वह उसकी किसी दलील पर हैं; बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से सिर्फ़ धोखे की

بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

बातों का वादा कर रहे हैं (40) बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है

اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ

कि वे टल न जाएं, और अगर वे दोनों टल जाएं तो उसके सिवा कोई और उनको

بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ

थाम नहीं सकता, बेशक वह बुर्दबार है, बख़्शने वाला है (41) और उन्होंने अल्लाह की ताकीदी क़समें

اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى

खाई थीं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे हर एक उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले

الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۙ ﴿٤٢﴾

होंगे, फिर जब उनके पास एक डराने वाला आया तो सिर्फ़ उनकी बेज़ारी ही में इज़ाफ़ा हुआ (42)

اسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۭ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ

ज़मीन में अपने को बड़ा समझने और उनकी बुरी तदबीरों की वजह से, और बुरी तदबीरों का वबाल तो

السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۭ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ

बुरी तदबीर करने वालों ही पर पड़ता है, तो क्या यह उसी दस्तूर के मुंतज़िर हैं जो अगले लोगों के बारे में ज़ाहिर हुआ?

فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ

पस आप अल्लाह के दस्तूर में न कोई तबदीली पाओगे और न आप अल्लाह के दस्तूर को टलता हुआ

تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ

पाओगे (43) क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ

अंजाम उन लोगों का जो उनसे पहले गुज़रे हैं, और वे क़ुव्वत में उनसे

قُوَّةً ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ

बढ़े हुए थे, और अल्लाह ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसको आजिज़ कर दे, ना आसमानों में

وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ

और न ज़मीन में, बेशक वह इल्म वाला है, क़ुदरत वाला है (44) और अगर अल्लाह

اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ

लोगों के आमाल पर उनको पकड़ता तो ज़मीन पर वह एक जानदार को भी

دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا

न छोड़ता, लेकिन वह उनको एक मुक़र्रर मुद्दत तक मोहलत देता है, फिर जब

جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को ख़ुद देखने वाला है (45)

सूरह यासीन मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (45) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (83) आयतें और (5) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (41) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (36) नम्बर पर है और सूरह जिन्न के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3090) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (739) कलिमात हैं

يٰسٓ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾ عَلٰى

या-सीन (1) हिकमत भरे क़ुरआन की क़सम (2) बेशक आप रसूलों में से हैं (3) निहायत

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

सीधे रास्ते पर (4) यह ख़ुदा-ए-अज़ीज़ व रहीम की तरफ़ से उतारा गया है (5) ताकि आप उन लोगों को डरा दें

مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى

जिन के अगलों को नहीं डराया गया, पस वे बेख़बर हैं (6) उनमें से अकसर लोगों पर बात

اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا

साबित हो चुकी है तो वह ईमान नहीं लाएंगे (7) हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं

فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ

तो वे ठोड़ियों तक हैं, पस उनके सर ऊँचे हो रहे हैं (8) और हमने एक आड़ उनके

اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ

सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी, फिर हमने उनको ढाँक दिया तो उनको

لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

दिखाई नहीं देता (9) और उनके लिए यकसाँ है कि आप उनको डराएं या न डराएं,

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ

वह ईमान नहीं लाएंगे (10) आप तो सिर्फ़ उस शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और अल्लाह से बिन देखे

بِالۡغَيۡبِ‌ۚ فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّاَجۡرٍ كَرِيۡمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡىِ

डरे, तो ऐसे शख़्स को मुआफ़ी की और बाइज़्ज़त सवाब की बशारत दे दीजिए (11) यक़ीनन हम मुर्दों को ज़िंदा

الۡمَوۡتٰى وَنَكۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَاٰثَارَهُمۡ‌ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ اَحۡصَيۡنٰهُ

करेंगे, और हम लिख रहे हैं, जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा और हर चीज़ हमने दर्ज कर ली है

فِىۡۤ اِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱۲﴾ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ‌ۘ

एक खुली किताब में (12) और उनको बस्ती वालों की मिसाल सुनाइए,

اِذۡ جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ‌ۚ ﴿۱۳﴾ اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ

जबकि उसमें रसूल आए (13) जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे

فَكَذَّبُوۡهُمَا فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾

तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी ताइद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं (14)

قَالُوۡا مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ الرَّحۡمٰنُ مِنۡ

लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे इंसान हो और रहमान ने कोई चीज़ नहीं

شَىۡءٍ ۙ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ﴿۱۵﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا يَعۡلَمُ

उतारी है, तुम महज़ झूठ बोलते हो (15) उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है

اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَمَا عَلَيۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۱۷﴾

कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं (16) और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर पहुँचा देना है (17)

قَالُوۡۤا اِنَّا تَطَيَّرۡنَا بِكُمۡ‌ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّكُمۡ

बस्ती वालों ने कहा: हमने तो तुम्हारे अंदर नहूसत महसूस की है, यकीन जानो अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम पर पत्थर बरसाएंगे

وَلَيَمَسَّنَّكُمۡ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۸﴾ قَالُوۡا طَآئِرُكُمۡ مَّعَكُمۡ‌ؕ

और हमारे हाथों तुम्हें बड़ी दर्दनाक सज़ा मिलेगी (18) उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है,

اَئِنۡ ذُكِّرۡتُمۡ‌ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ مُّسۡرِفُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ مِنۡ

क्या इतनी बात पर कि तुमको नसीहत की गई; बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो (19) और शहर के

اَقۡصَا الۡمَدِيۡنَةِ رَجُلٌ يَّسۡعٰى قَالَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ ﴿۲۰﴾

दूर मक़ाम से एक शख़्स दोड़ता हुआ आया, उसने कहा: ऐ मेरी क़ौम! रसूलों की पैरवी करो (20)

اتَّبِعُوۡا مَنۡ لَّا يَسۡـئَلُكُمۡ اَجۡرًا وَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۲۱﴾

उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते, और वे ठीक रास्ते पर हैं (21)

وَمَالِيَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِيۡ فَطَرَنِيۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٢٢﴾

और मैं क्यों न इबादत करूँ उस ज़ात की जिसने मुझको पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (22)

ءَاَتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ يُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ

क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद बनाऊँ, अगर ख़ुदा-ए-रहमान मुझको कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे

لَّا تُغۡنِ عَنِّيۡ شَفَاعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يُنۡقِذُوۡنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيۡۤ اِذًا

तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न अएगी और न वे मुझको छुड़ा सकेंगे (23) बेशक उस वक़्त

لَّفِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيۡۤ اٰمَنۡتُ بِرَبِّكُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿٢٥﴾

मैं एक खुली हुई गुमराही में हूंगा (24) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो (25)

قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِيۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا

इरशाद हुआ कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ, उसने कहाः काश! मेरी क़ौम जानती (26) इस बात को

غَفَرَلِيۡ رَبِّيۡ وَجَعَلَنِيۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا

कि मेरे रब ने मुझको बख़्श दिया और मुझको इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया (27) और उसके बाद

عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا

उसकी क़ौम पर हमने आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी, और हम फ़ौज नहीं

مُنۡزِلِيۡنَ ﴿٢٨﴾ اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ

उतारा करते (28) बस एक धमाका हुआ तो यकायक वह सब बुझ कर

خٰمِدُوۡنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ

रह गए (29) अफ़सोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास

رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا كَمۡ اَهۡلَكۡنَا

आया वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे (30) क्या उन्होंने नही देखा कि हम ने उनसे पहले

قَبۡلَهُمۡ مِّنَ الۡقُرُوۡنِ اَنَّهُمۡ اِلَيۡهِمۡ لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٣١﴾ وَاِنۡ

कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं, अब वह उनकी तरफ़ वापस आने वाली नहीं (31) और उनमें

كُلٌّ لَّمَّا جَمِيۡعٌ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ ﴿٣٢﴾ ع وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الۡاَرۡضُ

कोई ऐसा नहीं जो इकटठा होकर हमारे पास हाज़िर न किया जाए (32) और एक निशानी उनके लिए

الۡمَيۡتَةُ ۚۖ اَحۡيَيۡنٰهَا وَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهَا حَبًّا فَمِنۡهُ

मुर्दा ज़मीन है, उसको हमने ज़िंदा किया और उससे हमने ग़ल्ला निकाला, पस वे उसमें से

يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ

खाते है 33 और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाए

وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ

और उसमें हमने चश्मे जारी किए 34 ताकि लोग उसके फल खाएं,

وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ الَّذِيْ

और इसको उनके हाथों ने नहीं बनाया, तो क्या वे शुक्र नहीं करते? 35 पाक है वह ज़ात जिसने

خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ

सब चीज़ के जोड़े बनाए उनमें से भी जिनको ज़मीन उगाती है और ख़ुद उनके अंदर से भी,

وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ

और उनमें से भी जिनको वे नहीं जानते 36 और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं

فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ

तो वे अंधेरे में रह जाते हैं 37 और सूरज, वह अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है,

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ

यह ज़बरदस्त, इल्म वाले (रब) का बाँधा हुआ अंदाज़ा है 38 और चाँद के लिए हमने मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं;

حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ

यहाँ तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख़ 39 न सूरज के बस में है

لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ

कि वह चाँद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है, और सब एक एक

فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ

दाएरे में तेर रहे हैं 40 और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नसल को

فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا

भरी हुई कश्ती में सवार किया 41 और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीज़ें पैदा कीं जिन पर

يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا

वे सवार होते हैं 42 और अगर हम चाहें तो उनको ग़र्क़ करदें, फिर न कोई उनकी फ़रयाद सुनने वाला हो और न वे

هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

बचाए जा सकें 43 मगर यह हमारी रहमत है, और उनको एक मुतअय्यन वक़्त तक फ़ाएदा देना है 44

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ

और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है;

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ

ताकि तुम पर रहम किया जाए (45) और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी

رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ

उनके पास ऐसी नहीं आती जिससे वे ऐराज़ न करते हों (46) और जब उनसे कहा जाता है

اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ

कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से ख़र्च करो, तो जिन लोगों ने इनकार किया वह ईमान लाने वालों से

اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ

कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिनको अल्लाह चाहता तो वह उनको खिला देता, तुम लोग तो

اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ

खुली गुमराही में हो (47) और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً

अगर तुम सच्चे हो (48) ये लोग बस एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं

تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

जो उनको आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएंगे (49) फिर वे न कोई वसीयत

تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ

कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ़ लौट सकेंगे (50) और सूर फूंका जाएगा

فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾

तो यकायक वे क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ चल पड़ेंगे (51)

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ٚ سکتة هٰذَا مَا

वे कहेंगे: हाय हमारी बदबख़्ती! हमारी क़ब्र से किसने हमको उठाया? यह वही है जिसका

وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا

रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था (52) और कुछ नहीं,

صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिसके बाद ये सब के सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे (53)

منزل ٥

ع ٣

وقف لازم
وقف غفران وقف منزل

* یہاں پر سکتہ واجب ہے۔

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

पस आज के दिन किसी शख़्स पर कोई ज़ुल्म न होगा, और तुमको वही बदला मिलेगा जो तुम

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ

करते थे (54) बेशक जन्नत के लोग आज

شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى

अपने मशग़लों में ख़ुश होंगे (55) वे और उनकी बीवियाँ सायों में मसहरियों पर

الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ

तकिया लगाए बैठे होंगे (56) उनके लिए वहाँ मेवे होंगे और उनके लिए

مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا

वह सब कुछ होगा जो वे मांगेंगे (57) उनको सलाम कहलाया जाएगा मेहरबान रब की तरफ़ से (58) और ऐ मुजरिमो!

الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ

आज तुम अलग हो जाओ (59) ऐ औलादे-आदम! क्या मैंने तुमको ताकीद नहीं

اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾

कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (60)

وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ

और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है (61) और उसने

اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

तुम में से एक बड़े गिरोह को गुमराह कर दिया, तो क्या तुम समझते नहीं थे? (62)

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا

यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था (63) अब अपने कुफ़्र के

الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى

बदले में इसमें दाख़िल हो जाओ (64) आज हम उनके मुँह पर

اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ

मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पाँव गवाही देंगे

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى

जो कुछ ये लोग करते थे (65) और अगर हम चाहते तो उनकी आँखों को

اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ

मिटा देते फिर वे रास्ते की तरफ़ दोड़ते तो उनको कहाँ नज़र आता (66) और अगर

نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا

हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते, तो वे न आगे

مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي

बढ़ सकते थे और न पीछे लौट सकते थे (67) और हम जिसकी उमर ज़्यादा कर देते हैं तो उसको उसकी पैदाइश में

الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ

पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं? (68) और हमने उस (नबी सल्ल०) को शेअर नहीं सिखाया और न यह उसके

لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ

लायक़ है, यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है और वाज़ेह क़ुरआन है (69) ताकि वह उस शख़्स को ख़बरदार करदे

مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَلَمْ

जो ज़िंदा हो और इनकार करने वालों पर हुज्जत क़ायम हो जाए (70) क्या उन्होंने

يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا

नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए,

فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ

तो वे उनके मालिक हैं (71) और हमने उनको उनका ताबे बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है

وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ

और किसी को वे खाते हैं (72) और उनके लिए उनमें से फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी,

اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

तो क्या वे शुक्र नहीं करते (73) और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद बनाए

لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ

कि शायद उनकी मदद की जाए (74) वह उनकी मदद न कर सकेंगे और वे

لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا

उनकी फ़ौज होकर हाज़िर किए जाएंगे (75) तो उनकी बात आपको ग़मगीन न करे, बेशक हम

نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ

जानते हैं जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं (76) क्या इंसान ने

ع ٤ / ٤

منزل ٥

وقف لازم

الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

नहीं देखा कि हमने उसको एक बूंद से पैदा किया फिर वह खुल्लम खुल्ला

مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ

झगड़ालू बन गया (77) हमारे लिए मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया, और कहने लगा

الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ

कि हड्डियाँ जब चूरा हो जाएंगी फिर उसे कौन ज़िंदा कर सकता है (78) कह दीजिए कि उनको वही ज़िंदा करेगा जिसने उनको

اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾ ۙ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ

पहली मर्तबा पैदा किया, और वह सब तरह पैदा करना जानता है (79) वही है जिसने तुम्हारे लिए

مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी, फिर तुम उससे आग जलाते हो (80)

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ

क्या जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह उस पर क़ादिर नहीं कि

يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۚ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ

उन जैसों को पैदा करदे? हाँ वह क़ादिर है, और वही है असल पैदा करने वाला, जानने वाला (81) उसका मामला तो बस यह है

اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ

कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है कि होजा तो वह हो जाती है (82) पस पाक है वह ज़ात

الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

जिसके हाथ में हर चीज़ का इख़्तियार है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे (83)

सूरह साफ़्फ़ात मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (182) आयतें और (5) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (56) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (37) नम्बर पर है और सूरह अन्आम के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3826) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (860) कलिमात हैं

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ ۙ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ ۙ فَالتّٰلِيٰتِ

क़सम है क़तार दर क़तार सफ़ बाँधने वाले फ़रिश्तों की (1) फिर डाँटने वालों की झिड़क कर (2) फिर उनकी जो नसीहत

ذِكْرًا ﴿٣﴾ ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ ؕ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

सुनाने वाले हैं (3) कि तुम्हारा माबूद एक ही है (4) आसमानों और ज़मीन का रब,

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

और जो कुछ उनके दरमियान है और सारे मशरिक़ों का रब (5) हमने आसमाने-दुनिया को सितारों

بِزِيْنَةِ ِۨ الْكَوَاكِبِ ۝٦ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧

की ज़ीनत से सजाया है (6) और हर सरकश शैतान से उसको महफ़ूज़ किया है (7)

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ

वे मला-ए-आला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते और वह हर तरफ़ से मारे

جَانِبٍ ۝٨ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝٩ اِلَّا مَنْ

जाते हैं (8) भगाने के लिए, और उनके लिए एक दाइमी अज़ाब है (9) मगर जो शैतान

خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ

कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है (10) पस उनसे पूछिए

اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ

कि उनकी पैदाइश ज़्यादा मुश्किल है या उन चीज़ों की जो हमने पैदा की हैं? हमने उनको चिपकती मिट्टी से

لَّازِبٍ ۝١١ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝١٢ وَاِذَا ذُكِّرُوْا

पैदा किया है (11) बल्कि तुम तअज्जुब करते हो और वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं (12) और जब उनको समझाया जाता है

لَا يَذْكُرُوْنَ ۝١٣ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝١٤ وَقَالُوْٓا اِنْ

तो वे समझते नहीं (13) और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसको हंसी में डाल देते हैं (14) और कहते हैं कि यह तो बस

هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

एक खुला हुआ जादू है (15) क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे

ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝١٦ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝١٧ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ

तो फिर हम उठाए जाएंगे? (16) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी? (17) कह दीजिए कि हाँ, और तुम ज़लील भी

دَاخِرُوْنَ ۝١٨ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝١٩

होगे (18) पस वह तो एक ज़ोरदार आवाज़ होगी, फिर उसी वक़्त वे देखने लगेंगे (19)

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝٢٠ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ

और वे कहेंगे कि हाय हमारी बदबख़्ती! यह तो बदले का दिन है (20) यह वही फ़ैसले का दिन है

الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢١ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

जिसको तुम झुठलाते थे (21) जमा करो उनको जिन्होंने ज़ुल्म किया

منزل ٦

وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और उनके साथियों को और उनके माबूदों को (22) जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे,

فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ

फिर उन सब को दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ (23) और उनको ठहराओ, उनसे कुछ

مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ

पूछना है (24) तुमको क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते (25) बल्कि आज तो वे

مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

फ़रमाँबरदार हैं (26) और वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे (27)

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا بَلْ

कहेंगेः तुम हमारे पास दाएं तरफ़ से आते थे (28) वे जवाब देंगेः बल्कि

لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ

तुम ख़ुद ईमान लाने वाले नहीं थे (29) और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई

سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ

ज़ोर न था; बल्कि तुम ख़ुद ही सरकश लोग थे (30) पस हम सब पर हमारे रब की बात पूरी

رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾

होकर रही, हमको इसका मज़ा चखना ही है (31) हमने तुमको गुमराह किया, हम ख़ुद भी गुमराह थे (32)

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

पस वे सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे (33) हम मुजरिमों के साथ

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ

ऐसा ही करते हैं (34) ये वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा

اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا

कोई माबूद नहीं तो वे तकब्बुर करते थे (35) और वे कहते थे कि क्या हम एक दीवाने शायर के कहने पर

لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾

अपने माबूदों को छोड़ दें (36) बल्कि वह हक़ लेकर आया है, और वह रसूलों की पेशीनगोइयों का मिसदाक़ है (37)

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ

बेशक तुमको दर्दनाक अज़ाब चखना होगा (38) और तुम उसी का बदला दिए जा रहे हो

إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

जो तुम करते थे (39) मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं (40)

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

उनके लिए मालूम रिज़्क़ होगा (41) मेवे, और वह निहायत इज़्ज़त से होंगे (42)

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ

आराम के बाग़ों में (43) तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे (44) उनके पास

عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ﴿٤٦﴾

ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा (45) साफ़ शफ़्फ़ाफ़, पीने वालों के लिए लज़्ज़त (46)

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِندَهُمْ

न ही उसमें कोई नशा होगा और न वे उससे बहकेंगे (47) और उनके पास

قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾

नीची निगाह वाली, बड़ी आँखों वाली औरतें होंगी (48) गोया कि वे अंडे हैं जो छुपाकर रखे हुए हों (49)

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾ قَالَ

फिर वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। (50) उनमें से

قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾ يَقُولُ أَإِنَّكَ

एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाक़ाती था (51) वह कहा करता था कि क्या तुम भी

لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا

तस्दीक़ करने वालों में से हो? (52) क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे

أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾

तो क्या हमको जज़ा मिलेगी? (53) कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखोगे? (54)

فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللَّهِ إِن

तो वह झांकेगा और उसको जहन्नम के बीच में देखेगा (55) कहेगा कि अल्लाह की क़सम! तुम तो

كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ

मुझको तबाह कर देने वाले थे (56) और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता

الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا مَوْتَتَنَا

जो पकड़े हुए आए हैं (57) क्या अब हमको मरना नहीं है (58) मगर पहली बार जो हम

الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۵۹﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ

मर चुके और अब हमको अज़ाब न होगा (59) बेशक यही बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿۶۰﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَذٰلِكَ

कामयाबी है (60) ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए (61) यह मेहमान नवाज़ी

خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿۶۲﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً

अच्छी है या फिर ज़क़्क़ूम का दरख़्त? (62) हमने उसको ज़ालिमों के लिए

لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۳﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿۶۴﴾

फ़ितना बनाया है (63) वह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ की तह से निकलता है (64)

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿۶۵﴾ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ

उसका ख़ोशा ऐसा है जैसे शैतान के सर (65) तो वे लोग उससे

مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿۶۶﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا

खाएंगे, फिर उसी से पेट भरेंगे (66) फिर उनको उसके ऊपर

لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿۶۷﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى

खोलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा (67) फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही

الْجَحِيْمِ ﴿۶۸﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿۶۹﴾ فَهُمْ

की तरफ़ होगी (68) उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराही में पाया (69) फिर वे

عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ

उन्हीं के क़दम बक़दम दोड़ते रहे (70) और उनसे पहले भी अगले लोगों में अकसर

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿۷۲﴾ فَانْظُرْ

गुमराह हुए (71) और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे (72) तो देखिए

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۷۳﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

उन लोगों का क्या अंजाम हुआ जिनको डराया गया था (73) मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿۷۵﴾

बंदे थे (74) और हमको नूह (अलै०) ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं (75)

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ وَجَعَلْنَا

और हमने उसको और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया (76) और हमने उसकी

منزل ۶ احتیاط ع ۵۳

ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

नस्ल को बाक़ी रहने वाला बनाया (77) और हमने उसके तरीक़े पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा (78)

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

सलाम है नूह (अलै०) पर तमाम दुनिया वालों में (79) हम नेकी करने वालों को ऐसा ही

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ

बदला देते हैं (80) बेशक वे हमारे मोमिन बंदों में से थे (81) फिर

اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾

हमने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया (82) और उसी के तरीक़े वालों में से इब्राहीम (अलै०) भी थे (83)

اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ

जबकि वे आए अपने रब के पास क़ल्बे-सलीम के साथ (84) जब उसने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा

مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾

कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो? (85) क्या तुम अल्लाह के सिवा मन घड़त माबूदों को चाहते हो? (86)

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

तो ख़ुदावंदे-आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है (87) फिर इब्राहीम (अलै०) ने सितारों पर एक नज़र डाली (88)

فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى

पस कहा कि मैं बीमार हूँ (89) फिर वे लोग उसको छोड़ कर चले गए (90) तो वे उनके

اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

बुतों में घुस गए, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो (91) तुमको क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं? (92)

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾

फिर उनको मारा पूरी क़ुव्वत के साथ (93) फिर लोग उसके पास दोड़े हुए आए (94)

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا

इब्राहीम (अलै०) ने कहा: क्या तुम लोग उन चीज़ों को पूजते हो जिनको ख़ुद तराशते हो (95) और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुमको भी और उन

تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾

चीज़ों को भी जिनको तुम बनाते हो (96) उन्होंने कहा: उसके लिए एक मकान बनाओ फिर उसको दहकती हुई आग में डाल दो (97)

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَقَالَ

पस उन्होंने उसके ख़िलाफ़ एक कार्रवाई करनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया (98) और उसने कहा

وقف لازم

إِنِّيْ ذَاهِبٌ إِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ

कि मैं अपने रब की तरफ़ जा रहा हूँ, वह मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा (99) ऐ मेरे प्यारे रब! मुझको

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ

औलाद सालेह अता फ़रमाइए (100) तो हमने उसको एक बुर्दबार लड़के की बशारत दी (101) पस जब वह उसके साथ

مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ إِنِّيْ أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيْ

चलने फिरने की उम्र को पहुँचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि तुमको

أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ز

ज़बह कर रहा हूँ, पस तुम सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है, उसने कहा कि ऐ मेरे अब्बा! आपको जो हुक्म दिया जा रहा है

سَتَجِدُنِيْٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ أَسْلَمَا

उसको कर डालिए, इंशा अल्लाह आप मुझको सब्र करने वालों में से पाएंगे (102) पस जब दोनों मुतीअ हो गए

وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ أَنْ يّٰٓإِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ

और इब्राहीम (अलै०) ने उसको माथे के बल गिरा दिया (103) और हमने उसको आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! (104) तुमने

صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं (105)

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ

यक़ीनन यह एक खुली हुई आज़माइश थी (106) और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके फ़िदये में

عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى

दे दिया (107) और हम ने उसपर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा (108) सलामती हो

إِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ إِنَّهٗ مِنْ

इब्राहीम पर (109) हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं (110) बेशक वह

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ بِإِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ

हमारे मोमिन बंदों में से था (111) और हमने उसको इसहाक़ की ख़ुशख़बरी दी, एक नबी

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى إِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ

सालिहीन में से था (112) और हमने उसको और इसहाक़ को बरकत दी, और उन दोनों की

ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ ع وَلَقَدْ

नसल में अच्छे भी हैं और ऐसे भी जो अपने नफ़्स पर सरीह ज़ुल्म करने वाले हैं (113) और हमने

مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ

मूसा और हारून (अलै॰) पर एहसान किया (114) और उनको और उनकी क़ौम को एक बड़ी

الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

मुसीबत से निजात दी (115) और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने (116)

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ

और हमने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी (117) और हमने उन दोनों को सीधा

الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى

रास्ता दिखाया (118) और हमने उनके तरीक़े पर पीछे वालों में एक गिरोह को छोड़ा (119) सलामती हो

مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

मूसा और हारून (अलै॰) पर (120) यक़ीनन हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं (121)

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ

बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे (122) और बेशक इलियास (अलै॰) भी पैग़म्बरों

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ

में से थे (123) जबकि उसने अपनी क़ौम से कहाः क्या तुम डरते नहीं? (124) क्या तुम लोग

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ

बअल (नामी बुत) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक़ को छोड़ देते हो (125) अल्लाह को, जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे

اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

अगले बाप दादा का भी (126) पस उन्होंने उसको झुठलाया तो वह ज़रूर (अज़ाब में) पकड़े जाएंगे (127)

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾

मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे। (128) और हमने उसके तरीक़े पर पिछलों में भी एक गिरोह को छोड़ा (129)

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾

सलामती हो इलियास (अलै॰) पर (130) हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं (131)

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ

बेशक वे हमारे मोमिन बंदों में से थे (132) और बेशक लूत (अलै॰) भी पैग़म्बरों

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾ اِلَّا عَجُوْزًا

में से थे (133) जबकि हमने उसको और उसके तमाम लोगों को निजात दी (134) मगर एक बुढ़िया

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿۱۳۵﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ

जो पीछे रह जाने वालों में से थी (135) फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया (136) और तुम उनकी बस्तियों पर

عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَاِنَّ

गुज़रते हो सुबह को भी (137) और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते? (138) और बेशक

يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۴۰﴾

यूनुस (अलै०) भी रसूलों में से थे (139) जबकि वे भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुँचे (140)

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ

फिर क़ुरआ डाला तो वही क़ुरआ में मग़लूब हो गए (141) फिर उसको मछली ने निगल लिया,

وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿۱۴۲﴾ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ لَلَبِثَ

और वह अपने को मलामत कर रहे थे (142) पस अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते (143) तो लोगों के

فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहते (144) फिर हमने उसको एक मैदान में डाल दिया और वह

سَقِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿۱۴۶﴾

निढाल थे (145) और हमने उसपर एक बेल दार दरख़्त उगा दिया (146)

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰمَنُوْا

और हमने उसको एक लाख या उससे ज़्यादा लोगों की तरफ़ भेजा (147) फिर वे लोग ईमान लाए

فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۱۴۸﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنٰتُ

तो हमने उनको फ़ायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक (148) पस उनसे पूछिए कि क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियाँ हैं

وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿۱۴۹﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ

और उनके लिए बेटे? (149) क्या हमने फ़रिश्तों को औरत बनाया है और वे

شٰهِدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

देख रहे थे (150) सुन लो! ये लोग सिर्फ़ मन घड़त बात के तौर पर ऐसा कहते हैं (151)

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ اَصْطَفَى الْبَنٰتِ عَلَى

कि अल्लाह औलाद रखता है, और यक़ीनन वे झूठे हैं (152) क्या अल्लाह ने बेटों के मुक़ाबले में

الْبَنِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۵﴾

बेटियाँ पसंद की हैं (153) तुमको क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो (154) फिर क्या तुम सोच से काम नहीं लेते (155)

اَمۡ لَكُمۡ سُلۡطٰنٌ مُّبِيۡنٌ ۝۱۵۶ فَاۡتُوۡا بِكِتٰبِكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝۱۵۷

क्या तुम्हारे पास कोई वाज़ेह दलील है (156) तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो (157)

وَجَعَلُوۡا بَيۡنَهٗ وَبَيۡنَ الۡجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدۡ عَلِمَتِ الۡجِنَّةُ

और उन्होंने अल्लाह और जिन्नात में भी रिश्तेदारी क़रार दी है, और जिन्नात को मालूम है

اِنَّهُمۡ لَمُحۡضَرُوۡنَ ۝۱۵۸ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۝۱۵۹ اِلَّا عِبَادَ

कि यक़ीनन वे पकड़े हुए आएंगे (158) अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते है (159) मगर वे जो अल्लाह के

اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ۝۱۶۰ فَاِنَّكُمۡ وَمَا تَعۡبُدُوۡنَ ۝۱۶۱ مَاۤ اَنۡتُمۡ

चुने हुए बंदे हैं (160) पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो (161) अल्लाह से किसी को

عَلَيۡهِ بِفٰتِنِيۡنَ ۝۱۶۲ اِلَّا مَنۡ هُوَ صَالِ الۡجَحِيۡمِ ۝۱۶۳ وَمَا مِنَّاۤ

फेर नहीं सकते (162) मगर उसको जो जहन्नम में पड़ने वाला है (163) और हम में से

اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعۡلُوۡمٌ ۝۱۶۴ وَّاِنَّا لَنَحۡنُ الصَّآفُّوۡنَ ۝۱۶۵ وَاِنَّا

हर एक का एक मुअय्यन मक़ाम है (164) और हम अल्लाह के हुज़ूर बस सफ़ बाँधे रहने वाले हैं (165) और हम

لَنَحۡنُ الۡمُسَبِّحُوۡنَ ۝۱۶۶ وَاِنۡ كَانُوۡا لَيَقُوۡلُوۡنَ ۝۱۶۷ لَوۡ اَنَّ عِنۡدَنَا

उसकी तसबीह करने वाले हैं (166) और ये लोग कहा करते थे (167) कि अगर हमारे पास

ذِكۡرًا مِّنَ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝۱۶۸ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ۝۱۶۹

पहलों की कोई तालीम होती (168) तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते (169)

فَكَفَرُوۡا بِهٖ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ۝۱۷۰ وَلَقَدۡ سَبَقَتۡ كَلِمَتُنَا

फिर उन्होंने उसका इनकार कर दिया तो जल्द ही वे जान लेंगे (170) और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फ़ैसला

لِعِبَادِنَا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۝۱۷۱ اِنَّهُمۡ لَهُمُ الۡمَنۡصُوۡرُوۡنَ ۝۱۷۲ وَاِنَّ

पहले ही हो चुका है (171) कि यक़ीनी तौर पर उनकी मदद की जाएगी (172) और यक़ीनन

جُنۡدَنَا لَهُمُ الۡغٰلِبُوۡنَ ۝۱۷۳ فَتَوَلَّ عَنۡهُمۡ حَتّٰى حِيۡنٍ ۝۱۷۴

हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है (173) तो कुछ मुद्दत तक उनसे ऐराज़ कीजिए (174)

وَّاَبۡصِرۡهُمۡ فَسَوۡفَ يُبۡصِرُوۡنَ ۝۱۷۵ اَفَبِعَذَابِنَا يَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۝۱۷۶

और देखते रहिए, जल्द ही वे भी देख लेंगें (175) क्या वे हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं (176)

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمۡ فَسَآءَ صَبَاحُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ۝۱۷۷ وَتَوَلَّ

पस जब वे उनके सहन में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिनको डराया जा चुका है (177) तो उनसे

عَنۡهُمۡ حَتّٰى حِيۡنٍ ۙ﴿۱۷۸﴾ وَّاَبۡصِرۡ فَسَوۡفَ يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۷۹﴾

कुछ मुद्दत के लिए ऐराज़ कीजिए (178) और देखते रहिए, जल्द ही वे ख़ुद देख लेंगे (179)

سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۚ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ

पाक है आपका रब, इज़्ज़त का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं (180) और सलाम है

عَلَى الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۚ﴿۱۸۱﴾ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۸۲﴾

पैग़म्बरों पर (181) और सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है सारे जहानों का (182)

सूरह सॉद मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (88) आयतें और (5) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतिबार से (38) नम्बर पर है और तिलावत के ऐतिबार से भी (38) नम्बर पर है और सूरह क़मर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (732) कलिमात हैं — بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ — इसमें (3067) हुरूफ़ हैं

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِ ؕ﴿۱﴾ بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ

सॉद, क़सम है नसीहत वाले क़ुरआन की (1) बल्कि जिन लोगों ने इनकार किया

عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿۲﴾ كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ

वे घमंड और ज़िद में हैं (2) उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं,

فَنَادَوۡا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ﴿۳﴾ وَعَجِبُوۡۤا اَنۡ جَآءَهُمۡ

तो वे पुकारने लगे और वह वक़्त बचने का न था (3) और उन लोगों ने तअज्जुब किया कि उनके पास उनमें से

مُّنۡذِرٌ مِّنۡهُمۡ ۫ وَقَالَ الۡكٰفِرُوۡنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۖۚ﴿۴﴾

एक डराने वाला आया, और इनकार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है (4)

اَجَعَلَ الۡاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ عُجَابٌ ﴿۵﴾

क्या उसने इतने माबूदों की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है (5)

وَانۡطَلَقَ الۡمَلَاُ مِنۡهُمۡ اَنِ امۡشُوۡا وَاصۡبِرُوۡا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمۡ ۖۚ

और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो

اِنَّ هٰذَا لَشَىۡءٌ يُّرَادُ ۚ﴿۶﴾ مَا سَمِعۡنَا بِهٰذَا فِى الۡمِلَّةِ

यह कोई मतलब की बात है (6) हमने यह बात पिछले मज़हब में

الۡاٰخِرَةِ ۖۚ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا اخۡتِلَاقٌ ۖۚ﴿۷﴾ ءَاُنۡزِلَ عَلَيۡهِ الذِّكۡرُ

नहीं सुनी, यह सिर्फ़ एक बनाई बात है (7) क्या हम सब में से इसी शख़्स पर कलामे-इलाही

مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا

नाज़िल किया गया; बल्कि ये लोग मेरी याददहानी की तरफ़ से शक में हैं, बल्कि उन्होंने अब तक

يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۭ﴿٨﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۗىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ

मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा (8) क्या आपके रब की रहमत के ख़ज़ाने उनके पास हैं

الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۚ﴿٩﴾ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا

जो ज़बरदस्त है, फ़य्याज़ है (9) क्या आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों की बादशाही उनके

بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ

इख़्तियार में है, फिर वह सीढ़ियाँ लगाकर चढ़ जाएं (10) एक लश्कर यह भी यहाँ

مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ

तबाह होगा सब लश्करों में से (11) उनसे पहले क़ौमे-नूह और आद

وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۙ﴿١٢﴾ وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ

और मेख़ों वाला फ़िरऔन (12) और समूद और क़ौमे-लूत और असहाबे-ऐका ने

لْــَٔـيْكَةِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾ اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ

झुठलाया, ये लोग बड़ी बड़ी जमाअतें थे (13) उन सबने रसूलों को

الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۧ﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَاۗءِ اِلَّا صَيْحَةً

झुठलाया तो मेरा अज़ाब नाज़िल होकर रहा (14) और ये लोग सिर्फ़ एक चिंघाड़ के

وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا

मुंतज़िर हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं (15) और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हमारा हिस्सा हमको

قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اِصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ

हिसाब के दिन से पहले देदे (16) जो कुछ वे कहते हैं उसपर सब्र कीजिए

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٧﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا

और हमारे बंदे दाऊद (अलै०) को याद कीजिए जो क़ुव्वत वाला, रुजूअ करने वाला था (17) हमने पहाड़ों को

الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ۙ﴿١٨﴾ وَالطَّيْرَ

उसके साथ मुसख़्ख़र कर दिया कि वह उसके साथ सुबह व शाम तसबीह करते थे (18) और परिंदों

مَحْشُوْرَةً ۭ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ

को भी जमा होकर, सब अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे (19) और हमने उसकी सलतनत मज़बूत की और उसको हिकमत

منزل ٦

الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ أَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ إِذْ

अता की, और मुआमलात का फ़ैसला करने की सलाहियत दी (20) और क्या आपको ख़बर पहुँची है मुक़दमे वालों की, जबकि वह दीवार

تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا

फाँद कर इबादत ख़ाने में दाख़िल हो गए (21) जब वे दाऊद (अलै०) के पास पहुँचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने कहा

لَا تَخَفْ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا

कि आप डरें नहीं, हम एक मामले के दो फ़रीक़ हैं, एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हमारे दरमियान

بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ إِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ

हक़ के साथ फ़ैसला कीजिए, बेइंसाफ़ी न कीजिए और हम को राहे-रास्त बताइए (22) दर हक़ीक़त

هٰذَآ أَخِيْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ

यह मेरा भाई है, उसके पास निन्नानवे दुम्बियाँ हैं और मेरे पास एक दुम्बी है

فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ

तो वह कहता है कि वह भी मेरे हवाले करदे, और उसने बात चीत में मुझको दबा लिया (23) दाऊद ने कहाः उसने तुम्हारी

بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ

दुम्बी को अपनी दुम्बियों में मिलाने का मुतालबा करके वाक़ई तुम पर ज़ुल्म किया है, और अकसर शुरका

لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

एक दूसरे पर ज़्यादती किया करते हैं मगर वे जो ईमान रखते हैं और नेक अमल

الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ

करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं, और दाऊद को ख़्याल आया कि हमने उसका इम्तिहान लिया है तो उसने अपने रब से

رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ ﴿٢٤ السجدة﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ وَإِنَّ لَهٗ

मुआफ़ी माँगी और सज्दे में गिर गए और रुजू हुए (24) फिर हमने उसके लिए वह मुआफ़ कर दिया, और बेशक हमारे

عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾ يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ

यहाँ उसके लिए तक़र्रुब है और अच्छा अंजाम है (25) ऐ दाऊद! हमने तुमको ज़मीन में

خَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ

ख़लीफ़ा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दरमियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो और ख़्वाहिश की

الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ إِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ

पैरवी न करो, कि वह तुमको अल्लाह की राह से भटका देगी, यक़ीनन जो लोग अल्लाह की राह से

منزل ٦

السجدة

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ

भटकते हैं उनके लिए सख़्त अज़ाब है इस वजह से कि वे हिसाब के दिन को

الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

भूले रहे (26) और हमने आसमान और ज़मीन और जो उनके दरमियान है बेकार नहीं

بَاطِلًا ۭ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

पैदा किया है, यह उन लोगों का गुमान है जिनहोंने इनकार किया, तो जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए बरबादी है

مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ ۭ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

आग से (27) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए

كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۡ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

उनकी मानिंद कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद करने वाले हैं, या हम परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे (28)

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا

यह एक बाबरकत किताब है जो हमने आपकी तरफ़ उतारी है; ताकि लोग उसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले

الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ

उससे नसीहत हासिल करें (29) और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ़

اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ ۭ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ ۙ

बहुत रुजू करने वाला (30) जब शाम के वक़्त उसके सामने तेज़ रफ़्तार उम्दा घोड़े पेश किए गए (31)

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى

तो कहने लगे: मैंने अपने परवरदिगार की याद पर इन घोड़ों की मुहब्बत को तरजीह दी; यहाँ तक कि

تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ ۣ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

आफ़ताब छुप गया (32) उनको मेरे पास वापस लाओ, फिर वह झाड़ने लगा पिंडलियाँ

وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰي كُرْسِيِّهٖ

और गर्दनें (33) और हमने सुलैमान (अलै०) को आज़माया और हमने उसके तख़्त पर

جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا

एक जिस्म डाल दिया,फिर उसने रुजू किया (34) उसने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझको माफ़ कर दीजिए और मुझको ऐसी सलतनत

لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا

दीजिए जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार न हो, बेशक आप बड़े देने वाले हैं (35) तो हमने हवा को

لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ

उसके ताबे कर दिया, वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वे चाहते (36) और जिन्नात को भी उसका ताबे

كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

कर दिया, हर तरह के इमारत बनाने वाले, ग़ौता लगाने वाले (37) और दूसरे जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए रहते (38)

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ

यह है हमारा अतिया, अब तुम एहसान करो या रोक रखो, कुछ हिसाब नहीं (39) और यक़ीनन

لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ

उसके लिए हमारे यहाँ क़ुर्ब है और बेहतर अंजाम (40) और हमारे बंदे अय्यूब (अलै॰) को याद करो,

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾

जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझको तक्लीफ़ और अज़ाब में डाल दिया है (41)

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

अपना पांव मारो, यह ठंडा पानी है नहाने के लिए और पीने के लिए (42)

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى

और हमने उसको कुनबा अता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी रहमत के तौर पर और

لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ

नसीहत के तौर पर (43) और अपने हाथ में तिनकों का एक मुट्ठा लो और उससे मारो

وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ

और क़सम न तोड़ो, बेशक हमने उसको सब्र करने वाला पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ़

اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي

बहुत रुजूअ करने वाला (44) और हमारे बंदों इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ुब को याद करो, वे

الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى

हाथों वाले और आँखों वाले थे (45) हमने उनको एक ख़ास बात के साथ मख़्सूस किया था कि वह आख़िरत की

الدَّارِ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾

याद देहानी है (46) और वह हमारे यहाँ चुने हुए नेक लोगों में से थे (47)

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

और इसमाईल और अल-यसअ और ज़ुलकिफ़्ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे (48)

هٰذَا ذِكۡرٌ ؕ وَاِنَّ لِلۡمُتَّقِيۡنَ لَحُسۡنَ مَاٰبٍ ۙ﴿٤٩﴾ جَنّٰتِ

यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है (49) हमेशा के

عَدۡنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الۡاَبۡوَابُ ۚ﴿٥٠﴾ مُتَّكِـِٕيۡنَ فِيۡهَا يَدۡعُوۡنَ

बाग़ जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे (50) वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे, बहुत से मेवे

فِيۡهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيۡرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِنۡدَهُمۡ قٰصِرٰتُ

और मशरूबात तलब करते होंगे (51) और उनके पास शरमीली हम उम्र

الطَّرۡفِ اَتۡرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوۡعَدُوۡنَ لِيَوۡمِ الۡحِسَابِ ﴿٥٣﴾

बीवियाँ होंगी (52) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे हिसाब का दिन आने पर वादा किया जाता है (53)

اِنَّ هٰذَا لَرِزۡقُنَا مَا لَهٗ مِنۡ نَّفَادٍ ۚۖ﴿٥٤﴾ هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيۡنَ

यह हमारा रिज़्क़ है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं (54) यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए

لَشَرَّ مَاٰبٍ ۙ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصۡلَوۡنَهَا ۚ فَبِئۡسَ الۡمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا ۙ

बुरा ठिकाना है (55) जहन्नम, उसमें वे दाख़िल होंगे, पस क्या ही बुरी जगह है (56) यह खोलता हुआ पानी

فَلۡيَذُوۡقُوۡهُ حَمِيۡمٌ وَّغَسَّاقٌ ۙ﴿٥٧﴾ وَّاٰخَرُ مِنۡ شَكۡلِهٖۤ اَزۡوَاجٌ ؕ﴿٥٨﴾

और पीप है, तो ये लेग उनको चखें (57) और इस क़िस्म की दूसरी और भी चीज़ें होंगी (58)

هٰذَا فَوۡجٌ مُّقۡتَحِمٌ مَّعَكُمۡ ۚ لَا مَرۡحَبًۢا بِهِمۡ ؕ اِنَّهُمۡ صَالُوا

यह एक फ़ौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है।, उनके लिए कोई इस्तिक़बाल नहीं, वे आग में

النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوۡا بَلۡ اَنۡتُمۡ ۚ لَا مَرۡحَبًۢا بِكُمۡ ؕ اَنۡتُمۡ قَدَّمۡتُمُوۡهُ

पड़ने वाले हैं (59) वे कहेंगे: बल्कि तुम्हारे लिए कोई इस्तिक़बाल नहीं, तुम्हीं तो यह हमारे आगे

لَنَا ۚ فَبِئۡسَ الۡقَرَارُ ﴿٦٠﴾ قَالُوۡا رَبَّنَا مَنۡ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا

लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना (60) वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! जो शख़्स इसको हमारे आगे लाया

فَزِدۡهُ عَذَابًا ضِعۡفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾ وَقَالُوۡا مَا لَنَا لَا نَرٰى

उसको दोगुना अज़ाब दे जहन्नम में (61) और वे कहेंगे: क्या बात है कि हम उन लोगों को यहाँ

رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمۡ مِّنَ الۡاَشۡرَارِ ؕ﴿٦٢﴾ اَتَّخَذۡنٰهُمۡ سِخۡرِيًّا

नहीं देख रहे हैं जिनको हम बुरे लोगों में शुमार करते थे (62) क्या हमने उनको मज़ाक़ बना लिया था

اَمۡ زَاغَتۡ عَنۡهُمُ الۡاَبۡصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ

या उनसे निगाहें चूक रही हैं (63) बेशक यह बात सच्ची है, अहले-दोज़ख़ का

اَهۡلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَاۡ مُنۡذِرٌ ۖ وَّمَا مِنۡ اِلٰهٍ اِلَّا

आपस में झगड़ना (64) कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ एक डराने वाला हूँ, और कोई माबूद नहीं मगर

اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا

अल्लाह, यकता और ग़ालिब (65) वह रब है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का

بَيۡنَهُمَا الۡعَزِيۡزُ الۡغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلۡ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيۡمٌ ﴿٦٧﴾ اَنۡتُمۡ

जो उनके दरमियान है, वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है (66) कह दीजिए कि यह एक बड़ी ख़बर है (67) जिससे तुम

عَنۡهُ مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِىَ مِنۡ عِلۡمٍۢ بِالۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰٓى

बेपरवाह हो रहे हो (68) मुझको आलमे-बाला की कुछ ख़बर न थी जबकि वे

اِذۡ يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿٦٩﴾ اِنۡ يُّوۡحٰٓى اِلَىَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَاۡ نَذِيۡرٌ

आपस में तकरार कर रहे थे (69) मेरे पास तो वह्य इस लिए आती है कि मैं एक खुला

مُّبِيۡنٌ ﴿٧٠﴾ اِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنۡ

डराने वाला हूँ (70) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक इंसान

طِيۡنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا

बनाने वाला हूँ (71) फिर जब मैं उसको दुरुस्त कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके

لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الۡمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّاۤ

आगे सज्दे में गिर पड़ना (72) पस तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया (73) मगर

اِبۡلِيۡسَ ؕ اِسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ

इबलीस, कि उसने घमंड किया और वह इनकार करने वालों में से हो गया (74) फ़रमाया कि ऐ इबलीस!

مَا مَنَعَكَ اَنۡ تَسۡجُدَ لِمَا خَلَقۡتُ بِيَدَىَّ ؕ اَسۡتَكۡبَرۡتَ

किस चीज़ ने तुझको रोक दिया कि तू उसको सज्दा करे जिसको मैंने अपने हाथों से बनाया, तूने तकब्बुर किया

اَمۡ كُنۡتَ مِنَ الۡعَالِيۡنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَاۡ خَيۡرٌ مِّنۡهُ ؕ خَلَقۡتَنِىۡ مِنۡ

या तू बड़े दर्जों वालों में से है (75) उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूँ, तूने मुझको आग से

نَّارٍ وَّخَلَقۡتَهٗ مِنۡ طِيۡنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ

पैदा किया है और उसको मिट्टी से (76) फ़रमाया कि तू यहाँ से निकल जा; क्योंकि तू

رَجِيۡمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيۡكَ لَعۡنَتِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿٧٨﴾

मरदूद है (77) और तुझपर मेरी लानत है बदले के दिन तक (78)

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ

इबलीस ने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझको मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दोबारा उठाए जाएंगे (79) फ़रमाया

مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ لا اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ

कि तुझको मोहलत दी गई (80) वक़्त मुअय्यन तक के लिए (81) उसने कहा

فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ لا اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ

कि तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सबको गुमराह करके रहूँगा (82) सिवाए तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ ز وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ ج لَاَمْلَئَنَّ

ख़ालिस कर लिया है (83) फ़रमायाः तो हक़ यह है, और मैं हक़ ही कहता हू (84) कि मैं जहन्नम को

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَآ

तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूंगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे (85) कह दीजिए कि मैं

اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾ اِنْ

उसपर तुमसे कोई अज्र नहीं माँगता, और न मैं तकल्लुफ़ करने वालों में से हूँ (86) यह तो बस

هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾ ع

एकन सीहतह ैद ुनियाव ालोंक ि लिए (87) अ ैरत ुमज ल्दउ सकीद ीह ुईख़ ाबरक ोज ानल ोगे (88)

सूरह ज़ुमर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर आयत (52) से (54) तक मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई हैं, इसमें (75) आयतें और (8) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (59) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (39) नम्बर पर है और सूरह सबा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (4908) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1172) कलिमात हैं

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ

यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है जो ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (1) बेशक हमने यह किताब

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ

आपकी तरफ़ हक़ के साथ उतारी है, पस आप अल्लाह ही की इबादत कीजिए उसी के लिए दीन को ख़ालिस

الدِّيْنَ ﴿٢﴾ ط اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ط وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

करते हुए (2) सुन लो! दीन सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, और जिन लोगों ने उसके सिवा

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ م مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى

दूसरे हिमायती बना रखे हैं कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इस लिए करते हैं कि वे हमको

اللّٰهِ زُلْفٰی ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ

अल्लाहसे करीबकर दें, बेशकअल्लाहउनके दरमियानउस बातका फ़ैसलाकर देगा जिसमेंवे

يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝٣

इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता जो झूठा हो, हक़ को न मानने वाला हो (3)

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰی مِمَّا يَخْلُقُ

अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहता

مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤ خَلَقَ

चुन लेता, वह पाक है, वह अल्लाह है, अकेला सब पर ग़ालिब (4) उसने आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ

और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, वह रात को दिन पर लपेटता है

وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

और दिन को रात पर लपेटता है, और उसने सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र कर रखा है,

كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥

हर एक मुअय्यन मुद्दत तक चल रहा है, सुन लो कि वह ज़बरदस्त है, बख़्शने वाला है (5)

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا

अल्लाह ने तुमको एक जान से पैदा किया फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया

وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ

और उसी ने तुम्हारे लिए नर व मादा चौपायों की आठ क़िस्में उतारीं, वह तुमको तुम्हारी

بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ

माओं के पेट में बनाता है एक मरहले के बाद दूसरे मरहले में तीन तारीकियों के अंदर,

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰی

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, बादशाहत उसी की है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ से

تُصْرَفُوْنَ ۝٦ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۗ

फेरे जाते हो (6) अगर तुम इनकार करो तो अल्लाह तुमसे बेनियाज़ है,

وَلَا يَرْضٰی لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ

और वह अपने बंदों के लिए इनकार को पसंद नहीं करता, और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसको तुम्हारे लिए

لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ ना उठाएगा, फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़

مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ اِنَّهٗ

तुम्हारी वापसी है तो वह तुमको बता देगा जो तुम करते थे, बेशक वह

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ

दिलों की बात को जानने वाला है (7) और जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है

دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ

तो वह अपने रब को पुकारता है उसकी तरफ़ रुजू होकर, फिर जब वह उसको अपने पास से नेमत दे देता है

نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ

तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था, और वह दूसरों को अल्लाह के बराबर

اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ

ठहराने लगता है; ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे, कह दीजिए कि अपने कुफ़्र से थोड़े दिन

قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝٨ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ

फ़ायदा उठाले, बेशक तू आग वालों में से है (8) भला जो शख़्स रात की घड़ियों में

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا

सजदा और क़ियाम की हालत में आजिज़ी कर रहा हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की

رَحْمَةَ رَبِّهٖ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ

रहमत का उम्मीदवार हो, कह दीजिए: क्या जानने वाले और न जानने वाले

وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۗ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٩ ع

बराबर हो सकते हैं, नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक़्ल वाले हैं (9)

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۗ لِلَّذِيْنَ

कह दीजिए कि ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो अपने रब से डरो, जो लोग

اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَاَرْضُ اللّٰهِ

इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला है, और अल्लाह की ज़मीन

وَاسِعَةٌ ۗ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝١٠

वसीअ है, बेशक सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा (10)

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾

कह दीजिए कि मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूँ, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए (11)

وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْۤ

और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले ख़ुद मुस्लिम बनूँ (12) कह दीजिए कि अगर मैं

اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾

अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं एक होलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ (13)

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا

कह दीजिए कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपने दीन को ख़ालिस करते हुए (14) पस तुम उसके सिवा

مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ

जिसकी चाहे इबादत करो, कह दीजिए कि असली घाटे वाले तो वे हैं

خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ

जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को क़ियामत के दिन घाटे में डाला, सुन लो! यही

هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ

खुला हुआ घाटा है (15) उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के

مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ

सायबान होंगे और उनके नीचे से भी, यह चीज़ है जिससे अल्लाह

بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا

अपने बंदों को डराता है, ऐ मेरे बंदो! पस मुझसे डरो (16) और वे लोग जो

الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ

शैतान से बचे कि वह उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हुए उनके लिए

الْبُشْرٰی ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ

ख़ुशख़बरी है, तो मेरे उन बंदों को ख़ुशख़बरी दे दो (17) जो बात को ग़ौर से

الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ

सुनते हैं फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं, यही वे लोग हैं जिनको

هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾

अल्लाह ने हिदायत बख़्शी है और यही हैं जो अक़्ल वाले हैं (18)

اَفَمَنۡ حَقَّ عَلَيۡهِ كَلِمَةُ الۡعَذَابِ ؕ اَفَاَنۡتَ تُنۡقِذُ مَنۡ

क्या जिसपर अज़ाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या आप ऐसे शख़्स को बचा सकते हो जो कि

فِى النَّارِ ۚ‏ ﴿۱۹﴾ لٰكِنِ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا رَبَّهُمۡ لَهُمۡ غُرَفٌ مِّنۡ

आग में है (19) लेकिन जो लोग अपने रब से डरे उनके लिए बालाख़ाने हैं

فَوۡقِهَا غُرَفٌ مَّبۡنِيَّةٌ ۙ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ

जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं बने हुए, उनके नीचे नहरें बहती हैं,

وَعۡدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخۡلِفُ اللّٰهُ الۡمِيۡعَادَ ﴿۲۰﴾ اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

यह अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता (20) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيۡعَ فِى الۡاَرۡضِ

आसमान से पानी उतारा फिर उसको ज़मीन के चश्मों में जारी कर दिया

ثُمَّ يُخۡرِجُ بِهٖ زَرۡعًا مُّخۡتَلِفًا اَلۡوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيۡجُ فَتَرٰٮهُ

फिर वह उससे मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खेतियाँ निकालता है, फिर वह सूख जाती हैं तो तुम उसको देखते हो

مُصۡفَرًّا ثُمَّ يَجۡعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَذِكۡرٰى

कि पीली पड़ गई हैं फिर वह उसको रेज़ा रेज़ा कर देता है, बेशक इसमें नसीहत है

لِاُولِى الۡاَلۡبَابِ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنۡ شَرَحَ اللّٰهُ صَدۡرَهٗ لِلۡاِسۡلَامِ

अक़्ल वालों के लिए (21) क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया है

فَهُوَ عَلٰى نُوۡرٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيۡلٌ لِّلۡقٰسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ

पस वह अपने रब की तरफ़ से एक रोशनी पर है, तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के

مِّنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۲۲﴾ اَللّٰهُ نَزَّلَ

मुआमले में सख़्त हो गए, ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं (22) अल्लाह ने बेहतरीन

اَحۡسَنَ الۡحَدِيۡثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ تَقۡشَعِرُّ

कलाम उतारा है, एक ऐसी किताब आपस में मिलती जुलती, बार बार दोहराई हुई, उससे उन लोगों के

مِنۡهُ جُلُوۡدُ الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ۚ ثُمَّ تَلِيۡنُ جُلُوۡدُهُمۡ

रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं, फिर उनके बदन और उनके दिल

وَقُلُوۡبُهُمۡ اِلٰى ذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهۡدِىۡ بِهٖ

नर्म हो कर अल्लाह की याद की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं, यह अल्लाह की हिदायत है, उससे वे हिदायत देता है

مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

जिसको वह चाहता है, और जिसको अल्लाह गुमराह कर दे तो उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं (23)

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

क्या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब से (बचने के लिए) ढाल बनाएगा,

وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ

और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि चखो मज़ा उस कमाई का जो तुम करते थे (24) उनसे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

पहले वालों ने भी झुठलाया तो उनपर अज़ाब वहाँ से आ गया जिधर से उनका

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ

ख़्याल भी न था (25) तो अल्लाह ने उनको दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का

الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

मज़ा चखाया और आख़िरत का अज़ाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते (26)

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

और हमने इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं;

لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ

ताकि वे नसीहत हासिल करें (27) यह अरबी क़ुरआन है, इसमें कोई

عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

टेढ़ापन नहीं; ताकि लोग डरें (28) अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख़्स की

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۭ

जिसकी मिल्कियत में कई ज़िद्दी आक़ा शरीक हैं और दूसरा शख़्स पूरा का पूरा एक ही आक़ा का ग़ुलाम है,

هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

क्या इन दोनों का हाल यक्साँ होगा? सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है; लेकिन अकसर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ

नहीं जानते (29) आपको भी मरना है और वह भी मरने वाले हैं (30) फिर

اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

तुम लोग क़ियामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुक़द्दमा पेश करोगे (31)

وقف لازم

منزل ٦

ع ١٧

فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنۡ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدۡقِ اِذۡ

उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा और सच्चाई को झुठला दिया जब वह

جَآءَهٗ ؕ اَلَيۡسَ فِىۡ جَهَنَّمَ مَثۡوًى لِّلۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۳۲﴾ وَالَّذِىۡ

उसके पास आई, क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा (32) और जो शख़्स

جَآءَ بِالصِّدۡقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُتَّقُوۡنَ ﴿۳۳﴾

सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तस्दीक़ की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं (33)

لَهُمۡ مَّا يَشَآءُوۡنَ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۳۴﴾

उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का (34)

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ اَسۡوَاَ الَّذِىۡ عَمِلُوۡا وَيَجۡزِيَهُمۡ اَجۡرَهُمۡ

ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे आमाल को दूर कर दे और उनके नेक कामों के बदले

بِاَحۡسَنِ الَّذِىۡ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۳۵﴾ اَلَيۡسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبۡدَهٗ ؕ

उनको उनका सवाब दे (35) क्या अल्लाह अपने बंदों के लिए काफ़ी नहीं है?

وَيُخَوِّفُوۡنَكَ بِالَّذِيۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ ؕ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

और ये लोग उसके सिवा दूसरों से आपको डराते हैं, और अल्लाह जिसको गुमराह करदे उसको कोई रास्ता

مِنۡ هَادٍ ﴿۳۶﴾ وَمَنۡ يَّهۡدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيۡسَ

दिखाने वाला नहीं (36) और अल्लाह जिसको हिदायत दे उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह

اللّٰهُ بِعَزِيۡزٍ ذِى انۡتِقَامٍ ﴿۳۷﴾ وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ مَّنۡ خَلَقَ

ज़बरदस्त, इंतिक़ाम लेने वाला नहीं? (37) और अगर आप उनसे पूछो कि आसमानों को

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ لَيَقُوۡلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلۡ اَفَرَءَيۡتُمۡ مَّا تَدۡعُوۡنَ

और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने, कह दीजिए: तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिनको

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ اَرَادَنِىَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلۡ هُنَّ كٰشِفٰتُ

पुकारते हो अगर अल्लाह मुझको कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या यह उसकी दी हुई तकलीफ़ को

ضُرِّهٖۤ اَوۡ اَرَادَنِىۡ بِرَحۡمَةٍ هَلۡ هُنَّ مُمۡسِكٰتُ رَحۡمَتِهٖ ؕ

दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझपर मेहरबानी करना चाहे तो क्या यह उसकी मेहरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं?

قُلۡ حَسۡبِىَ اللّٰهُ ؕ عَلَيۡهِ يَتَوَكَّلُ الۡمُتَوَكِّلُوۡنَ ﴿۳۸﴾ قُلۡ يٰقَوۡمِ

कह दीजिए कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं (38) कह दें कि ऐ मेरी क़ौम!

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ مَنْ

तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूँ, तो तुम जल्द जान लोगे (39) कि किस पर

يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّآ

रुसवा करने वाला अज़ाब आता है और किस पर वह अज़ाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं (40) यक़ीनन हमने

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى

लोगों की हिदायत के लिए यह किताब आप पर हक़ के साथ उतारी है, पस जो शख़्स हिदायत हासिल करेगा

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ

वह अपने ही लिए करेगा, और जो शख़्स गुमराह होगा तो उसकी गुमराही उसी पर पड़ेगी, और आप

عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا

उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हो (41) अल्लाह ही वफ़ात देता है जानों को उनकी मौत के वक़्त

وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا

और जिनकी मौत नहीं आई उनको सोने के वक़्त, फिर वह उनको रोक लेता है जिनकी मौत का फ़ैसला

الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

कर चुका है और दूसरों को एक वक़्त मुक़र्रर तक के लिए छोड़ देता है, बेशक इसमें

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं (42) क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को

شُفَعَآءَ ۗ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾

सिफ़ारिशी बना रखा है, कहिए कि अगर्चे वे न कुछ इख़्तियार रखते हों और न कुछ समझते हों (43)

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۗ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ

कह दीजिए: सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के इख़्तियार में है, आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है,

ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ

फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे (44) और जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल

قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ

कुढ़ते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और जब उसके सिवा दूसरों का

مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ

ज़िक्र होता है तो उस वक़्त वह ख़ुश हो जाते हैं (45) कह दीजिए कि ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के

وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

पैदा करने वाले! ग़ायब और हाज़िर के जानने वाले! आप अपने बंदों के

عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ

दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला फ़रमाएंगे जिसमें वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं (46) और अगर ज़ुल्म करने वालों के

ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا

पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे

بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ

क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से बचने के लिए उनको फ़िदये में देदें, और अल्लाह की तरफ़ से उनको

اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا

वह मुआमला पेश आएगा जिसका उनको गुमान भी न था (47) और उनके सामने आ जाएंगे उनके

كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ

बुरे आमाल और वह चीज़ उनको घेर लेगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे (48) पस जब इंसान को

الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ؗ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ

कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमको पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ़ से उसको नेमत दे देते हैं तो वह कहता है

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

कि यह तो मुझको इल्म की बुनियाद पर दिया गया है; बल्कि यह आज़माइश है मगर उनमें से अकसर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى

नहीं जानते (49) उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ

कमाते थे वह उनके काम न आया (50) पस उनपर वह बुराईयाँ आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं,

وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ

और उन लोगों में से जो ज़ालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई से बुरे नताइज जल्द आ जाएंगे,

وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

और वे (हमको) आजिज़ कर देने वाले नहीं हैं (51) क्या उनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع

कर देता है और वही तंग कर देता है, बेशक इसके अंदर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं (52)

منزل ٦

ع ٥ / ١١

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ

कह दीजिए कि ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की रहमत से

رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ

मायूस न हो, बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर देता है, यक़ीनन वह

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ

बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है (53) और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ करो और उसके फ़रमाँबरदार बन जाओ इससे पहले कि

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا

तुम पर कोई अज़ाब आ जाए फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए (54) और तुम पैरवी करो

اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ

अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, क़ब्ल इसके कि तुम पर

الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ۙ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ

अचानक अज़ाब आ जाए और तुमको ख़बर भी न हो (55) कहीं कोई शख़्स यह कहे

يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ

कि अफ़सोस मेरी कोताही पर जो मैंने अल्लाह की जनाब में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने

السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ۙ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ

वालों में शामिल रहा (56) या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझको हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों

الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ۙ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ

में से होता (57) या अज़ाब को देखकर कोई शख़्स यह कहे कि काश! मुझे दुनिया में

كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ

फिर जाना हो तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊँ (58) हाँ, तेरे पास मेरी आयतें आईं

فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ

फिर तूने उनको झुठलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िरों में शामिल रहा (59) और आप

الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ

क़ियामत के दिन उनके चेहरे सियाह देखोगे जिनहोंने अल्लाह पर झूठ बोला था,

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ

क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम न होगा? (60) और जो लोग डरते रहे अल्लाह उन लोगों को

اتَّقَوۡا بِمَفَازَتِهِمۡ ۡ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوۡٓءُ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ

कामयाबी से निजात देगा, उनको कोई तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे ग़मगीन होंगे (61) अल्लाह

خَالِقُ كُلِّ شَىۡءٍ ۡ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ وَّكِيۡلٌ ﴿۶۲﴾ لَهٗ مَقَالِيۡدُ

हर चीज़ का ख़ालिक़ है और वही हर चीज़ पर निगहबान है (62) आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ

उसी के पास हैं, और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इनकार किया वही घाटे में

هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۶۳﴾ قُلۡ اَفَغَيۡرَ اللّٰهِ تَاۡمُرُوۡٓنِّىۡۤ اَعۡبُدُ اَيُّهَا

रहने वाले हैं (63) कह दीजिए कि ऐ नादानो! क्या तुम मुझको अल्लाह के सिवा की इबादत करने

الۡجٰهِلُوۡنَ ﴿۶۴﴾ وَلَقَدۡ اُوۡحِىَ اِلَيۡكَ وَاِلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ

के लिए कहते हो (64) और आपकी तरफ़ और आपसे पहले वालों की तरफ़ भी वह्य भेजी जा चुकी है

لَئِنۡ اَشۡرَكۡتَ لَيَحۡبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۶۵﴾

कि अगर आपने शिर्क किया तो आपका अमल ज़ाए हो जाएगा और आप ख़सारे में रहोगे (65)

بَلِ اللّٰهَ فَاعۡبُدۡ وَكُنۡ مِّنَ الشّٰكِرِيۡنَ ﴿۶۶﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ

बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें और शुक्र करने वालों में से बनें (66) और लोगों ने अल्लाह की क़द्र न की

حَقَّ قَدۡرِهٖ ۖ وَالۡاَرۡضُ جَمِيۡعًا قَبۡضَتُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ

जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है, और ज़मीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन

وَالسَّمٰوٰتُ مَطۡوِيّٰتٌۢ بِيَمِيۡنِهٖ ؕ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में, वह पाक और बरतर है उस शिर्क से

يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۶۷﴾ وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَصَعِقَ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ

जो ये लोग करते हैं (67) और सूर फूँका जाएगा तो आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं

فِى الۡاَرۡضِ اِلَّا مَنۡ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيۡهِ اُخۡرٰى فَاِذَا هُمۡ

सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे मगर जिसको अल्लाह चाहे, फिर दोबारा उसमें फूँका जाएगा तो यकायक सबके सब

قِيَامٌ يَّنۡظُرُوۡنَ ﴿۶۸﴾ وَاَشۡرَقَتِ الۡاَرۡضُ بِنُوۡرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ

उठकर देखने लगेंगे (68) और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी, और किताब रख दी

الۡكِتٰبُ وَجِاۡىۡٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ

जाएगी और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किए जाएंगे और लोगों के दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ

कर दिया जाएगा और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा (69) और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा,

وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى

और वह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं (70) और जिन लोगों ने इनकार किया वे गिरोह गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ़

جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ

हाँके जाएंगे, यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचेंगे उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उसके

لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ

मुहाफ़िज़ उनसे कहेंगे: क्या तुम्हारे पास तुम ही लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए जो तुमको तुम्हारे रब की

اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا

आयतें सुनाते थे और तुमको तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से डराते थे? वे कहेंगे

بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

कि हाँ, लेकिन अज़ाब का वादा मुनकिरों पर पूरा होकर रहा (71)

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ

कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए, पस कैसा बुरा

مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى

ठिकाना है तकब्बुर करने वालों का (72) और जो लोग अपने रब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़

الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ

ले जाए जाएंगे, यहाँ तक कि वे जब वहाँ पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उसके

لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

मुहाफ़िज़ उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुमपर, ख़ुशहाल रहो, पस इसमें दाख़िल हो जाओ हमेशा के लिए (73)

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا

और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमको इस ज़मीन का

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ

वारिस बनादिया, हम जन्नत में जहाँ चाहें मक़ाम करें, पस क्या ख़ूब बदला है

الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ

अमल करने वालों का (74) और आप फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द

منزل ٦

الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ

हलक़ा बनाए हुए अपने रब की हम्द और तस्बीह करते होंगे, और लोगों के दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा

وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

और कहा जाएगा तमाम तारीफ़ें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं (75)

सूरह मुअ्मिन मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर दो आयतें (56, 57) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुईं, इसमें (85) आयतें और (9) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (60) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (40) नम्बर पर है और सूरह ज़ुमर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1199) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (4960) हुरूफ़ हैं

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾

हा-मीम (1) यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, जानने वाला है (2)

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي

गुनाहों को मुआफ़ करने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला, बड़ी क़ुदरत

الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ

वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौटना है (3) अल्लाह की आयतों में

فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ

वही लोग झगड़े निकालते हैं जो मुनकिर हैं, तो इन लोगों का शहरों में चलना फिरना आपको

فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ

धोखे में न डाले (4) इनसे पहले नूह (अलै०) की क़ौम को झुठलाया और उनके बाद के

مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ

गिरोहों ने भी, और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें

وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ

और उन्होंने नाहक़ के झगड़े निकाले; ताकि उसके ज़रिए हक़ को मिटा दें तो मैंने उनको पकड़ लिया,

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى

फिर कैसी थी मेरी सज़ा (5) और इसी तरह आपके रब की बात उन लोगों पर पूरी

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ

हो चुकी है जिन्होंने इनकार किया कि वे आग वाले हैं (6) जो अर्श को

الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ

उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह करते हैं उसकी हम्द के साथ और वे उस पर ईमान

بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ

रखते हैं, और वे ईमान वालों के लिए मग़फ़िरत की दुआ करते हैं, ऐ हमारे रब! आपकी रहमत और आपका इल्म

رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ

हर चीज़ का इहाता किए हुए है, पस आप मुआफ़ फ़रमा दीजिए उन लोगों को जो तौबा करें और आपके रास्ते की पैरवी करें

وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ

और उनको जहन्नम के अज़ाब से बचाइए (7) ऐ हमारे रब! और आप उनको हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कीजिए

الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ

जिनका आपने उनसे वादा किया है, और उनको भी जो सालेह हों उनके वालिदैन और उनकी बीवियों और उनकी

وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ

औलाद में से, बेशक आप ज़बरदस्त हैं, हिकमत वाले हैं (8) और उनको बुराइयों से बचाइए,

وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ

और जिसको आपने उस दिन बुराईयों से बचाया तो उसपर आपने रहम किया, और यही

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ

बड़ी कामयाबी है (9) जिन लोगों ने इनकार किया उनको पुकार कर कहा जाएगा कि अल्लाह की बेज़ारी

اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ

तुमसे उससे ज़्यादा है जितनी बेज़ारी तुमको अपने आप पर है, जब तुमको ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था

فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا

तो तुम इनकार करते थे (10) वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब! आपने हमको दो बार मौत दी और दो बार हमको

اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ

ज़िंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इक़रार किया, तो क्या निकलने की कोई

سَبِيْلٍ ۝١١ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ

सूरत है? (11) यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता था तो तुम इनकार करते थे, और जब

يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢ هُوَ

उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस फ़ैसला अल्लाह के इख़्तियार में है, जो बुलंद है, बड़े मर्तबे वाला है (12) वही

منزل ٦

ع ٩

الَّذِىْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ

है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारता है,

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

और नसीहत सिर्फ़ वही शख़्स क़ुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाला हो (13) पस अल्लाह ही को पुकारो दीन को

لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ

उसी के लिए ख़ालिस करते हुए, ख़्वाह काफ़िरों को नागवार क्यों न हो (14) वह बुलंद दर्जों वाला,

ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ

अर्श का मालिक है, वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है वह्य

عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ ۙ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ

भेजता है; ताकि वह मुलाक़ात के दिन से डराए (15) जिस दिन कि वे ज़ाहिर होंगे,

لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَىْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ

अल्लाह से उनकी कोई चीज़ छुपी ना होगी, आज बादशाही किस की है?

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا

अल्लाह की जो अकेला है, ज़बरदस्त है (16) आज हर शख़्स को उसके किए का

كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

बदला मिलेगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है (17)

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ

और उनको क़रीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराइए जबकि दिल हलक़ तक आ पहुँचेंगे,

كٰظِمِيْنَ ؕ۬ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ

वे ग़म से भरे हुए होंगे, ज़ालिमों का न कोई दोस्त होगा और न सिफ़ारशी

يُّطَاعُ ﴿١٨﴾ ؕ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

जिसकी बात मानी जाए (18) वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिनको सीने छुपाए हुए हैं (19)

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करेगा, और जिनको अल्लाह के सिवा पुकारते हैं

لَا يَقْضُوْنَ بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ ع

वह किसी चीज़ का फ़ैसला नहीं करते, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है (20)

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

क्या वे ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ

الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

उन लोगों का जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, वे उनसे बहुत ज़्यादा थे क़ुव्वत में

وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ

और उन आसार के ऐतिबार से भी जो उन्होंने ज़मीन में छोड़े, फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उनको पकड़ लिया और कोई उनको

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ

अल्लाह से बचाने वाला न था (21) यह इस लिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ

खुली निशानियाँ लेकर आए तो उन्होंने इनकार किया, तो अल्लाह ने उनको पकड़ लिया, यक़ीनन वह ताक़तवर है,

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا

सख़्त सज़ा देने वाला है (22) और हमने मूसा (अलै०) को अपनी निशानियों के साथ और खुली

وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا

दलील के साथ (23) फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह

سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا

एक जादूगर है, झूठा है (24) फिर जब वे हमारी तरफ़ से हक लेकर उनके पास पहुँचे तो उन्होंने कहा

اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ

कि उन लोगों के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उसके साथ ईमान लाएं और उनकी औरतों को ज़िंदा रखो,

وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ

और उन काफ़िरों की तदबीर महज़ बेअसर रही (25) और फ़िरऔन ने कहा:

ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ

मुझको छोड़ो, मैं मूसा को क़त्ल कर डालूँ और वह अपने रब को पुकारे, मुझको अंदेशा है कि कहीं वह

يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

तुम्हारा दीन बदल डालेगा या मुल्क में फ़साद फैला देगा (26)

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ

और मूसा (अलै०) ने कहा कि मैंने अपने रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर से

لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ

जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता (27) और आले-फ़िरऔन में से एक मोमिन

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ

शख़्स जो अपने ईमान को छुपाए हुए था बोला कि क्या तुम लोग एक शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल कर दोगे कि वह

يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ

कहता है कि मेरा रब अल्लाह है; हालाँकि वह तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली दलीलें भी लेकर आया है,

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا

और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा है

يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ

तो उसका कोई हिस्सा तुमको पहुँच कर रहेगा जिसका वादा वह तुमसे करता है, बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को हिदायत नहीं देता

هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ

जो हद से गुज़रने वाला हो, झूठा हो (28) ऐ मेरी क़ौम! आज तुम्हारी सलतनत है

ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ

कि तुम ज़मीन में ग़ालिब हो, फिर अल्लाह के अज़ाब के मुक़ाबिल कौन हमारी मदद करेगा

اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ

अगर वह हम पर आ गया, फ़िरऔन ने कहा: मैं तुमको वही राय देता हूँ जिसको मैं समझ रहा हूँ, और मैं तुम्हारी

اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ

रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ़ कर रहा हूँ (29) और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम!

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ

मैं डरता हूँ कि तुमपर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए (30) जैसा दिन

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا

क़ौमे-नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया, और अल्लाह

اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

अपने बंदों पर कोई ज़ुल्म करना नहीं चाहता (31) और ऐ मेरी क़ौम! मैं डरता हूँ कि तुमपर

يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

चीख़ पुकार का दिन आजाए (32) जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे और तुमको अल्लाह से बचाने वाला

مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾

कोई न होगा, और जिसको अल्लाह गुमराह करदे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं (33)

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ

और इससे पहले यूसुफ़ (अलै०) तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई

فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

बातों की तरफ़ से शक ही में पड़े रहे, यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुमने कहा

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

कि अल्लाह उनके बाद हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚۖ ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ

जो हद से गुज़रने वाले और शक करने वाले होते हैं (34) जो अल्लाह की आयतों में

اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ

झगड़ा करते हैं बग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो, अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक

وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ

यह सख़्त ना पसंदीदा है, इसी तरह अल्लाह मुहर लगा देता है हर मग़रूर

مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿۳۵﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ

सरकश के दिल पर (35) और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ हामान! मेरे लिए एक

صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿۳۶﴾ لا اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ

ऊँची इमारत बना; ताकि मैं रास्तों पर पहुँचूं (36) आसमानों के रास्तों तक,

فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ

पस मूसा के माबूद को झाँक कर देखूं, और मैं तो उसको झूठा ख़्याल करता हूँ, और इस तरह

زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ

फ़िरऔन के लिए उसकी बदअमली ख़ुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया,

وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿۳۷﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ

और फ़िरऔन की तदबीर ग़ारत होकर रही (37) और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहा

يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿۳۸﴾ ج يٰقَوْمِ اِنَّمَا

कि ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुमको सही रास्ता बता रहा हूँ (38) ऐ मेरी क़ौम! यह

هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ

दुनिया की ज़िंदगी महज़ चंद रोज़ा है, और असल ठहरने का मक़ाम

الْقَرَارِ ٣٩ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ج

आख़िरत है (39) जो शख़्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला पाएगा,

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

और जो शख़्स नेक काम करेगा ख़्वाह वह मर्द हो या औरत बशर्तेकि वह मोमिन हो

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ

तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहाँ वे बेहिसाब रिज़्क़

حِسَابٍ ٤٠ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ

पाएंगे (40) और ऐ मेरी क़ौम! क्या बात है कि मैं तुमको निजात की तरफ़ बुलाता हूँ

وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ٤١ ط تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ

और तुम मुझको आग की तरफ़ बुला रहे हो (41) तुम मुझको बुला रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ

وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ز وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى

और ऐसी चीज़ को उसका शरीक बनाऊँ जिसका मुझे कोई इल्म नहीं, और मैं तुमको ज़बरदस्त, मग़फ़िरत करने वाले

الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ٤٢ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ

अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ (42) यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ की तरफ़ मुझको बुलाते हो

لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ

उसकी कोई आवाज़ न दुनिया में है और न आख़िरत में, और बेशक

مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ٤٣

हम सब की वापसी अल्लाह ही की तरफ़ है, और हद से गुज़रने वाले ही आग में जाने वाले हैं (43)

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ط وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ط

पस तुम आगे चल कर मेरी बात को याद करोगे, और में अपना मुआमला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ,

اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ٤٤ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا

बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगराँ है (44) फिर अल्लाह ने उसको उनकी बुरी

مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ٤٥ ع

तदबीरों से बचा लिया, और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया (45)

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ

आग, जिसपर वह सुबह व शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत

السَّاعَةُ ۗ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿۴۶﴾

क़ायम होगी, फ़िरऔन वालों को सख़्त तरीन अज़ाब में दाख़िल करो (46)

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ

और जब वे दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग

اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ

बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबे थे, तो क्या तुम हमसे आग का

عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿۴۷﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا

कोई हिस्सा हटा सकते हो? (47) बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही

كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿۴۸﴾ وَقَالَ

इसमें हैं, अल्लाह ने बंदों के दरमियान फ़ैसला कर दिया (48) और जो लोग

الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ

आग में होंगे वे जहन्नम के निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने रब से दरख़ास्त करो कि हमारे

عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿۴۹﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ

अज़ाब में से एक दिन की तख़्फ़ीफ़ करदे (49) वे कहेंगेः क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल

رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا

वाज़ेह दलीलें लेकर नहीं आए, वे कहेंगे कि हाँ, निगहबान कहेंगेः फिर तुम ही दरख़ास्त करो, और मुनकिरों की पुकार

الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۵۰﴾ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ

ज़ाए ही होने वाली है (50) बेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की

اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿۵۱﴾

और ईमान वालों की दुनिया की ज़िंदगी में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे (51)

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ

जिस दिन ज़ालिमों को उनकी मअ़ज़िरत कुछ फ़ायदा न देगी, और उनके लिए लानत होगी

وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿۵۲﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى

और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा (52) और हमने मूसा (अलै०) को हिदायत अता की

وَاَوْرَثْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ ۙ ۝۵۳ هُدًی وَّذِكْرٰی

और बनी-इस्राईल को किताब का वारिस बनाया (53) रहनुमाई और नसीहत,

لِاُولِی الْاَلْبَابِ ۝۵۴ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

अक़्ल वालों के लिए (54) पस आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है,

وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِیِّ

और अपने क़ुसूर की मुआफ़ी चाहिए, और सुबह व शाम अपने रब की तस्बीह कीजिए उसकी

وَالْاِبْكَارِ ۝۵۵ اِنَّ الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیْرِ

हम्द के साथ (55) जो लोग किसी सनद के बग़ैर जो उनके पास आई हो अल्लाह की आयतों में

سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ

झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में सिर्फ़ बड़ाई है कि वह उस तक कभी

بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝۵۶

पहुँचने वाले नहीं, पस आप अल्लाह की पनाह मांगिए, बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है (56)

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ

यक़ीनन आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निसबत ज़्यादा बड़ा काम है,

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝۵۷ وَمَا یَسْتَوِی الْاَعْمٰی

लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (57) और अंधा और आँखों वाला

وَالْبَصِیْرُ ۙ۬ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا

यकसाँ नहीं हो सकता, और न ईमान वाला और नेको कार और वह जो बुराई

الْمُسِیْٓءُ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝۵۸ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِیَةٌ

करने वाले हैं, तुम लोग बहुत कम सोचते हो (58) बेशक क़ियामत आकर रहेगी,

لَّا رَیْبَ فِیْهَا ۫ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝۵۹

उसमें कोई शक नहीं; मगर अकसर लोग नहीं मानते (59)

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ

और तुम्हारे रब ने फ़रमा दिया है कि मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़ुबूल करुंगा, जो लोग

یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ۝۶۰ ع

मेरी इबादत से मुँह मोड़ते हैं वे जल्द ही ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे (60)

منزل ٦

ع ٦

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई; ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को

مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

रोशन किया, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है मगर अकसर

النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ

लोग शुक्र नहीं करते (61) यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा

شَيْءٍ م لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ز فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ

करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ से बहकाए जाते हो (62) इसी तरह

يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ

वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे (63) अल्लाह ही है

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً

जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया

وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ

और तुम्हारी सूरत बनाई पस उम्दा सूरत बनाई और उसने तुमको उम्दा चीज़ों का रिज़्क़ दिया,

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ

यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह जो रब है सारे जहान का (64) वही

الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ

ज़िंदा है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम उसी को पुकारो दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए,

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का (65) कह दीजिए कि मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ

उनकी इबादत करूँ जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से

مِنْ رَّبِّيْ ز وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ

खुली दलीलें आ चुकीं, और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रब्बुल-आलमीन के हवाले कर दूँ (66) वही है

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ

जिसने तुम को मिट्टी से पैदा किया फिर नुतफ़े से फिर ख़ून के

وقف لازم

منزل ٦

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ

लोथड़े से फिर वह तुमको बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुमको बढ़ाता है; ताकि तुम अपनी पूरी ताक़त को पहुँचो,

ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ

फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ, और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है,

وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ

और ताकि तुम मुक़र्ररह वक़्त तक पहुँच जाओ और ताकि तुम सोचो (67) वही है

الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

जो ज़िंदा करता है और मारता है, पस जब वह किसी अमर का फ़ैसला कर लेता है तो बस उसको कहता है

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ

कि होजा, तो वह हो जाता है (68) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में

فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

झगड़े निकालते हैं, वह कहाँ से फिराए जाते हैं (69) जिन्होंने किताब को

بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

झुठलाया और उस चीज़ को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा, तो जल्द ही वे जान लेंगे (70)

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

जबकि उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और ज़ंजीरें, वह घसीटे जाएंगे (71)

فِي الْحَمِيْمِ ڏ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ

जलते हुए पानी में, फिर वह आग में झोंक दिए जाएंगे (72) फिर उनसे

لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ

कहा जाएगा; कहाँ हैं वे जिनको तुम शरीक करते थे? (73) अल्लाह के सिवा,

قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـــًٔا ۭ

वे कहेंगे: वह हमसे खोए गए; बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को पुकारते न थे,

كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

इस तरह अल्लाह गुमराह करता है मुनकिरों को (74) यह इस सबब से कि तुम

تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

ज़मीन में नाहक़ ख़ुश होते थे और इस सबब से कि तुम

تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

घमंड करते थे (75) जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा

فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ

रहने के लिए, पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का (76) पस आप सब्र कीजिए,

اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ

बेशक अल्लाह का वादा बरहक़ है, फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम आपको

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَلَقَدْ

दिखादेंगे या आपको वफ़ात देंगे, फिर उनकी वापसी हमारी ही तरफ़ है (77) और हमने

اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ

आपसे पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने आपको सुनाए हैं

وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ

और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने आपको नहीं सुनाए, और किसी रसूल के बस में यह न था

اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ

कि वह अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई निशानी ले आए, फिर जब अल्लाह का हुक्म

اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ ع

आ गया तो हक के मुताबिक़ फ़ैसला कर दिया गया और ग़लतकार लोग उस वक़्त ख़सारे में रह गए (78)

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि तुम बअज़ से सवारी का काम लो

وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ ز وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا

और उनमें से बअज़ को तुम खाते हो (79) और तुम्हारे लिए उनमें और भी फ़ायदे हैं, और ताकि तुम उनके

عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ

ज़रिए से अपनी हाजत तक पहुँचो जो तुम्हारे दिलों में हो, और उनपर और कश्ती पर तुम

تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ ط وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ

सवार किए जाते हो (80) और वह तुमको और भी निशानियाँ दिखाता है, तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का

تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

इनकार करोगे (81) क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते

منزل ٦ ع ٨

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ

कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले गुज़रे हैं, वह उनसे

مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ

ज़्यादा थे और वे क़ुव्वत में और निशानियों में जो कि वे ज़मीन पर छोड़ गए बढ़े हुए थे, पस उनकी

عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ

कमाई उनके कुछ काम न आई (82) पस जब उनके पैग़म्बर उनके पास

رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ

खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर इतराने लगे जो उनके पास था,

وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْا

और उनपर वह अज़ाब आ पड़ा जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे (83) फिर जब उनहोंने

بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ

हमारा अज़ाब देखा तो कहने लगे कि हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और हम इनकार करते हैं उनका जिनको हम उसके साथ

مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا

शरीक करते थे (84) पस उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारा अज़ाब

بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ

देख लिया, यही अल्लाह की सुन्नत है जो उसके बंदों में जारी रही है,

وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾ ع

और उस वक़्त इनकार करने वाले ख़सारे में रह गए (85)

सूरह हा-मीम अस-सज्दा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (54) आयतें और (6) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (61) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (41) नम्बर पर है और सूरह मोमिन के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3350) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ	इसमें (796) कलिमात हैं

حم ﴿١﴾ تَنزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿٢﴾ كِتَابٌ

हा-मीम (1) यह बड़े मेहरबान, निहायत रहम करने वाले की तरफ़ से उतारा हुआ कलाम है (2) यह एक किताब है

فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

जिसकी आयतें खोल खोल कर बयान की गई हैं, अरबी ज़बान का क़ुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं (3)

منزل ٦

ع ٧

بَشِيۡرًا وَّنَذِيۡرًا ۚ فَاَعۡرَضَ اَكۡثَرُهُمۡ فَهُمۡ لَا يَسۡمَعُوۡنَ ﴿٤﴾

खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला, चुनाँचे उन लोगों में से अकसर ने उससे मुँह मोड़ा, पस वे नहीं सुन रहे हैं (4)

وَقَالُوۡا قُلُوۡبُنَا فِىۡۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَيۡهِ

और उन्होंने कहाः हमारे दिल उससे परदे में है जिसकी तरफ़ तुम हमको बुलाते हो

وَفِىۡۤ اٰذَانِنَا وَقۡرٌ وَّمِنۡۢ بَيۡنِنَا وَبَيۡنِكَ حِجَابٌ

और हमारे कानों में बोझ है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक हिजाब है,

فَاعۡمَلۡ اِنَّنَا عٰمِلُوۡنَ ﴿٥﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَاۡ بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ

पस तुम अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं (5) कह दीजिएः मैं तो एक बशर हूँ तुम जेसा,

يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسۡتَقِيۡمُوۡۤا

मेरे पास यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद बस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो

اِلَيۡهِ وَاسۡتَغۡفِرُوۡهُ ؕ وَوَيۡلٌ لِّلۡمُشۡرِكِيۡنَ ۙ ﴿٦﴾

उसी की तरफ़ और उसी से मुआफ़ी चाहो, और ख़राबी है मुशरिकों के लिए (6)

الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ

जो ज़कात नहीं देते और वे आख़िरत के

كٰفِرُوۡنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

मुनकिर हैं (7) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया

لَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ﴿٨﴾ ۧ قُلۡ اَئِنَّكُمۡ لَتَكۡفُرُوۡنَ

उनके लिए ऐसा अज्र है जो मोक़ूफ़ होने वाला नहीं (8) कह दीजिएः क्या तुम लोग उस हस्ती का

بِالَّذِىۡ خَلَقَ الۡاَرۡضَ فِىۡ يَوۡمَيۡنِ وَتَجۡعَلُوۡنَ لَهٗۤ

इनकार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में बनाया और तुम उसके शरीक

اَنۡدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۚ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيۡهَا

ठहराते हो, वह रब है तमाम जहानों का (9) और उसने ज़मीन में

رَوَاسِىَ مِنۡ فَوۡقِهَا وَبٰرَكَ فِيۡهَا وَقَدَّرَ فِيۡهَاۤ

उसके ऊपर पहाड़ बनाए और उसमें फ़ायदे की चीज़ें रख दीं, और उसमें उसकी ग़िज़ाएं

اَقۡوَاتَهَا فِىۡۤ اَرۡبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيۡنَ ﴿١٠﴾

ठहरा दीं चार दिन में, तमाम सवाल करने वालों के लिए बराबर (10)

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

फिर वह आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और वह धुवाँ था, फिर उसने

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ

आसमान और ज़मीन से कहा कि तुम दोनो आओ ख़ुशी से या नाख़ुशी से, दोनो ने कहा

اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ

कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं (11) फिर उसने दो दिन में उसके

فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا

सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया, और हमने

السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖۗ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ

आसमाने-दुनिया को चिराग़ों से ज़ीनत दी और उसको महफ़ूज़ कर दिया, यह

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ

अज़ीज़ व अलीम की मंसूबाबंदी है (12) पस अगर वे ऐराज़ करते हैं तो कह दीजिए

اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ ؕ

कि मैं तुमको उसी तरह के अज़ाब से डराता हूँ जैसा अज़ाब आद व समूद पर नाज़िल हुआ (13)

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ

जबकि उनके पास रसूल आए उनके आगे से और उनके

خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ

पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो, उनहेंने कहा कि अगर हमारा रब चाहता

رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

तो वह फ़रिश्ते उतारता, पस हम उस चीज़ के मुनकिर हैं जिसको देकर तुम

كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ

भेजे गए हो (14) आद का यह हाल था कि उन्होंने ज़मीन में बग़ैर किसी हक़ के

الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ

घमंड किया और उन्होंने कहाः कौन है जो क़ुव्वत में हमसे ज़्यादा है, क्या उन्होंने नहीं देखा कि

اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا

जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया है वह क़ुव्वत में उनसे ज़्यादा है और वे

بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ⑮ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

हमारी निशानियों का इनकार करते रहे (15) तो हमने चंद मनहूस दिनों में उनपर

فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي

सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दी; ताकि उनको दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ

अज़ाब चखाएं, और आख़िरत का अज़ाब इससे भी ज़्यादा रुसवा करने वाला है, और उनको

لَا يُنْصَرُوْنَ ⑯ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا

कोई मदद न पहुँचेगी (16) और वह जो समूद थे तो हमने उनको हिदायत का रास्ता दिखाया, मगर उन्होंने हिदायत के मुक़ाबले

الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ

में अंधेपन को पसंद किया, तो उनको अज़ाबे-ज़िल्लत के कड़के ने

الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ⑰ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ

पकड़ लिया उनकी बद किरदारियों की वजह से (17) और हमने उन लोगों को निजात दी

اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ⑱ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ

जो ईमान लाए और डरने वाले थे (18) और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ़

اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ⑲ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا

जमा किए जाएंगे, फिर वह जुदा जुदा किए जाएंगे (19) यहाँ तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे,

شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا

उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उनपर उनके

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑳ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ

आमाल की गवाही देंगी (20) और वह अपनी खालों से कहेंगे: तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों

عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ

गवाही दी? वे कहेंगी कि हमको उसी अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी जिसने हर चीज़ को बोलना सिखाया है,

وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ㉑ وَمَا

और उसी ने तुमको पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो (21) और तुम

كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ

अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें तुम्हारे कान

وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ

और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें; लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह

لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ

तुम्हारे बहुत से आमाल को नहीं जानता जो तुम करते हो (22) और तुम्हारे इसी गुमान ने जो कि तुमने

ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

अपने रब के साथ किया था तुमको बरबाद किया, पस तुम ख़सारा उठाने वालों में से हो गए (23)

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا

पस अगर वे सब्र करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वह मुआफ़ी मांगें

فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ

तो उनको मुआफ़ी नहीं मिलेगी (24) और हमने उनपर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए

فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ

तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज़ उनको ख़ुशनुमा बनाकर दिखाया, और उनपर

عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नात और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई

مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

जो उनसे पहले गुज़र चुके थे, बेशक वह ख़सारे में रह जाने वाले थे (25)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ

और कुफ़्र करने वालों ने कहा कि इस क़ुरआन को न सुनो

وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ

और इसमें ख़लल डालो; ताकि तुम ग़ालिब रहो (26) पस हम इनकार करने

كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ

वालों को सख़्त अज़ाब चखाएंगे और उनको उनके अमल का बदतरीन

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ

बदला देंगे (27) यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है यानी आग,

لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का

منزل ٦

ركوع ١٧

يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۲۸﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا رَبَّنَاۤ اَرِنَا

इनकार करते थे (28) और कुफ़्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें उन लोगों को

الَّذَيۡنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ نَجۡعَلۡهُمَا تَحۡتَ

दिखा जिन्होंने जिन्नात और इंसानों में से हमको गुमराह किया, हम उनको अपने पांव

اَقۡدَامِنَا لِيَكُوۡنَا مِنَ الۡاَسۡفَلِيۡنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ

के नीचे डालेंगे; ताकि वे ज़लील हों (29) जिन लोगों ने

قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ

कहा कि अल्लाह हमारा रब है फिर वे साबित क़दम रहे, यक़ीनन उनपर फ़रिश्ते

الۡمَلٰٓـئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوۡا وَلَا تَحۡزَنُوۡا وَاَبۡشِرُوۡا بِالۡجَنَّةِ

उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो, और उस जन्नत की बशारत से

الَّتِىۡ كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ﴿۳۰﴾ نَحۡنُ اَوۡلِيٰٓؤُكُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ

ख़ुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है (30) हम दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हारे

الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمۡ فِيۡهَا مَا تَشۡتَهِىۡۤ

साथी हैं और आख़िरत में भी, और तुम्हारे लिए वहाँ हर चीज़ है जिसको तुम्हारा

اَنۡفُسُكُمۡ وَلَكُمۡ فِيۡهَا مَا تَدَّعُوۡنَ ﴿۳۱﴾ؕ نُزُلًا مِّنۡ غَفُوۡرٍ

दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज़ है जो तुम तलब करोगे (31) ग़फ़ूर व रहीम की तरफ़ से मेहमानी के

رَّحِيۡمٍ ﴿۳۲﴾ وَمَنۡ اَحۡسَنُ قَوۡلًا مِّمَّنۡ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ

तौर पर (32) और उससे बेहतर किस की बात होगी जिसने अल्लाह की तरफ़ बुलाया

وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىۡ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿۳۳﴾ وَلَا تَسۡتَوِى

और नेक अमल किया और कहा कि मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ (33) और भलाई

الۡحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ

और बुराई दोनों बराबर नहीं, आप जवाब में वह कहिए जो उससे बेहतर हो

فَاِذَا الَّذِىۡ بَيۡنَكَ وَبَيۡنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ

फिर आप देखोगे कि आप में और जिसमें दुश्मनी थी वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त

حَمِيۡمٌ ﴿۳۴﴾ وَمَا يُلَقّٰهَاۤ اِلَّا الَّذِيۡنَ صَبَرُوۡا ۚ وَمَا

क़ुराबत वाला (34) यह बात उसी को मिलती है जो सब्र करने वाले हैं, और यह बात

يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝٣٥ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ

उसी को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला है (35) और अगर शैतान आपके दिल में

الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

कुछ वसवसा डाले तो अल्लाह की पनाह माँगें बेशक वह सुनने वाला,

الْعَلِيْمُ ۝٣٦ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ

जानने वाला है (36) और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज

وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا

और चाँद, तुम सूरज और चाँद को सज्दा न करो बल्कि उस अल्लाह को

لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝٣٧

सज्दा करो जिसने उन सबको पैदा किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो (37)

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ

पस अगर वह तकब्बुर करें तो जो लोग आपके रब के पास हैं वे शब व रोज़

لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ۩ ۝٣٨ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

उसी की तस्बीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते (38) और उसकी निशानियों में से

اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

यह है कि आप ज़मीन को मुर्झाई हालत में देखते हो, फिर जब हम उसपर पानी

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ

बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है, बेशक जिसने उसको ज़िंदा कर दिया वह मुर्दों को भी

الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩ اِنَّ الَّذِيْنَ

ज़िंदा करदेने वाला है, बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है (39) जो लोग

يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ

हमारी आयतों को उलटे मायने पहनाते हैं वह हमसे छुपे हुए नहीं हैं, क्या जो शख़्स

يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख़्स जो क़ियामत के दिन अमन के साथ आएगा,

اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤٠ اِنَّ

जो कुछ चाहे कर लो, बेशक वह देखता है जो तुम कर रहे हो (40) यक़ीनन

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ

जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत का इनकार किया जबकि वह उनके पास आ गई, और बेशक यह एक ज़बरदस्त

عَزِيْزٌ ۙ ﴿٤١﴾ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ

किताब है (41) इसमें बातिल न उसके आगे से आ सकता है और न उसके

خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ

पीछे से, यह हकीम व हमीद की तरफ़ से उतारी गई है (42) आपको वही बातें

لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

कही जा रही हैं जो आपसे पहले रसूलों को कही गई हैं, बेशक आपका रब

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ

मग़फ़िरत वाला है और दर्दनाक सज़ा देने वाला भी (43) और अगर हम इस (किताब) को

قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ

अजमी क़ुरआन बनाते तो वह कहते कि इसकी आयतें साफ़ साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं? क्या अजमी किताब

وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ

और अरबी लोग! कह दीजिए कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफ़ा है,

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ

और जो लोग ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है और वह उनके हक़ में

عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ ع وَلَقَدْ

अंधापन है, यह लोग गोया कि दूर की जगह से पुकारे जा रहे हैं (44) और हमने

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ

मूसा (अलै०) को किताब दी थी तो उसमें इख़्तिलाफ़ पैदा किया गया, और अगर आपके

سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ

रब की तरफ़ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और ये लोग उसकी तरफ़ से

شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ

ऐसे शक में हैं जिसने उनको बेचैनी में डाल रखा है (45) जो शख़्स नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा,

وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

और जो शख़्स बुराई करेगा तो उसका वबाल उसी पर आएगा, और आपका रब बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है (46)

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ

क़ियामत का इल्म अल्लाह ही से मुतअल्लिक़ है, और कोई फल अपने ग़िलाफ़ से

مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ

नहीं निकलता और न कोई औरत हामिला होती है और न जनती है

اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا

मगर यह सब उसके इल्म से होता है, और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा कि मेरे शरीक कहाँ हैं? वे कहेंगे

اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۚ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

कि हम आपसे यही अर्ज़ करते हैं कि हम में कोई इस का मुददई नहीं (47) और जिनको वे पहले पुकारते थे वे सब

يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٤٨﴾

उनसे गुम हो जाएंगे और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव की सूरत नहीं (48)

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ

इंसान भलाई माँगने से नहीं थकता, और अगर उसको कोई तकलीफ़

الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا

पहुँच जाए तो मायूस और ना उम्मीद हो जाता है (49) और अगर हम उसको तकलीफ़ के बाद जो कि उसे

مِنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ

पहुँची थी अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो कहता है कि यह तो मेरा हक़ ही है

وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ

और मैं नही समझता कि क़ियामत कभी आएगी, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया

اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तो उसके पास भी मेरे लिए बेहतरी ही है, पस हम उन मुनकिरों को उनके आमाल से ज़रूर

بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾

आगाह करेंगे और उनको सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे (50)

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ

और जब हम इंसान पर फ़ज़्ल करते हैं तो वह ऐराज़ करता है और अपनी करवट फेर लेता है,

وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ

और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लम्बी लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है (51) कह दीजिए

اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كَانَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرۡتُمۡ

कि बताओ अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से आया हो फिर तुमने उसका

بِهٖ مَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ هُوَ فِىۡ شِقَاقٍۢ بَعِيۡدٍ ۝٥٢

इनकार किया तो उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुख़ालिफ़त में बहुत दूर चला जाए (52)

سَنُرِيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا فِى الۡاٰفَاقِ وَفِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ حَتّٰى

हम उनको अपनी निशानियाँ दिखाएंगे आफ़ाक़ में भी और ख़ुद उनके अंदर भी, यहाँ तक कि

يَتَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُ الۡحَقُّ ؕ اَوَلَمۡ يَكۡفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ

उनपर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह क़ुरआन हक़ है, क्या यह बात काफ़ी नहीं कि आपका

عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ ۝٥٣ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ فِىۡ مِرۡيَةٍ

रब हर चीज़ का गवाह है (53) सुन लो! ये लोग अपने रब की मुलाक़ात में

مِّنۡ لِّقَآءِ رَبِّهِمۡ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىۡءٍ مُّحِيۡطٌ ۝٥٤

शक रखते हैं, सुन लो! वह हर चीज़ का इहाता किए हुए है (54)

सूरह शूरा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर चंद आयतें (23,24,25,27) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (53) आयतें और (5) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (62) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (42) नम्बर पर है और सूरह हा-मीम सज्दा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (860) कलिमात हैं	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ	इसमें (3588) हुरूफ़ हैं

حٰمٓ ۝١ عٓسٓقٓ ۝٢ كَذٰلِكَ يُوۡحِىۡۤ اِلَيۡكَ وَاِلَى

हा-मीम (1) ऐन-सीन-क़ाफ़ (2) इसी तरह ग़ालिब और हिकमत वाला अल्लाह वह्य करता है

الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۙ اللّٰهُ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۝٣ لَهٗ

आपकी तरफ़ और उनकी तरफ़ जो आपसे पहले गुज़रे हैं (3) उसी का है

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَهُوَ الۡعَلِىُّ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वह सबसे ऊपर है,

الۡعَظِيۡمُ ۝٤ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِنۡ

सबसे बड़ा है (4) क़रीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट

فَوۡقِهِنَّ وَالۡمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ

पड़े और फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह करते हैं उसी की हम्द के साथ

وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ

और ज़मीन वालों के लिए मुआफ़ी माँगते हैं, सुन लो कि अल्लाह ही

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۵ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ

मुआफ़ करने वाला, रहमत करने वाला है (5) और जिन लोगों ने उसके सिवा

دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ

दूसरे कारसाज़ बनाए हैं अल्लाह उनके ऊपर निगहबान है, और आप उनके

عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝۶ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

ऊपर ज़िम्मेदार नहीं (6) और हमने इसी तरह आपकी तरफ़

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا

अरबी क़ुरआन उतारा है ताकि आप मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को डरा दो

وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ

और उनको जमा होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई शक नहीं, एक गिरोह जन्नत में होगा

وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝۷ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً

और एक गिरोह आग में (7) और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत

وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

बना देता; लेकिन वह जिसको चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है,

وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝۸ اَمِ

और ज़ालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं (8) क्या

اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ

उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज़ है

وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۹

और वही मुर्दों को ज़िंदा करता है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (9)

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ

और जिस किसी बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है,

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝۱۰

वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ करता हूँ (10)

منزل ٦

ع ٢

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ

वह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उसने तुम्हारी जिंस से

اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا وَّمِنَ الۡاَنۡعَامِ اَزۡوَاجًا ۚ

तुम्हारे जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए,

يَذۡرَؤُكُمۡ فِيۡهِ ؕ لَيۡسَ كَمِثۡلِهٖ شَىۡءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيۡعُ

उसके ज़रिए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है, कोई चीज़ उसके मिस्ल नहीं और वह सुनने वाला

الۡبَصِيۡرُ ﴿١١﴾ لَهٗ مَقَالِيۡدُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۚ يَبۡسُطُ

देखने वाला है (11) उसी के इख़्तियार में आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ हैं, वह जिसके लिए

الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىۡءٍ

चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम कर देता है, बेशक वह हर चीज़ का

عَلِيۡمٌ ﴿١٢﴾ شَرَعَ لَكُمۡ مِّنَ الدِّيۡنِ مَا وَصّٰى بِهٖ

इल्म रखने वाला है (12) अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर किया है जिसका उसने नूह (अलै०) को

نُوۡحًا وَّالَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ وَمَا وَصَّيۡنَا بِهٖۤ

हुक्म दिया था और जिसकी वह्य हमने आपकी तरफ़ की है और जिसका हुक्म हमने

اِبۡرٰهِيۡمَ وَمُوۡسٰى وَعِيۡسٰۤى اَنۡ اَقِيۡمُوا الدِّيۡنَ

इब्राहीम और मूसा को और ईसा (अलै०) को दिया था कि दीन को क़ायम रखो

وَلَا تَتَفَرَّقُوۡا فِيۡهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الۡمُشۡرِكِيۡنَ مَا

और उसमें इख़्तिलाफ़ न डालो, मुशरिकीन पर वह बात बहुत भारी है जिसकी तरफ़

تَدۡعُوۡهُمۡ اِلَيۡهِ ؕ اَللّٰهُ يَجۡتَبِىۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ

आप उनको बुला रहे हो, अल्लाह जिसको चाहता है अपनी तरफ़ चुन लेता है

وَيَهۡدِىۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ يُّنِيۡبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ

और वह अपनी तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं (13) और जो लोग मुतफ़र्रिक़ हुए

بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ بَغۡيًاۢ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ

वह इल्म आने के बाद हुए सिर्फ़ आपस की ज़िद की वजह से, और अगर आपके

سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِىَ

रब की तरफ़ से एक वक़्ते मुअय्यन तक की बात तय न हो चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला

بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ الَّذِيۡنَ اُوۡرِثُوا الۡكِتٰبَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ

कर दिया जाता, और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई वह उसकी तरफ़ से

لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ﴿۱۴﴾ فَلِذٰلِكَ فَادۡعُ ۚ

शक में पड़े हुए हैं जिसने उनको तरद्दुद में डाल दिया है (14) पस आप उसी की तरफ़ बुलाइए

وَاسۡتَقِمۡ كَمَاۤ اُمِرۡتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعۡ اَهۡوَآءَهُمۡ ۚ وَقُلۡ

और उसपर जमे रहिए जिस तरह आपको हुक्म हुआ है और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न कीजिए, और कहिए

اٰمَنۡتُ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنۡ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرۡتُ

कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उसपर ईमान लाता हूँ और मुझको यह हुक्म हुआ है

لِاَعۡدِلَ بَيۡنَكُمۡ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمۡ ؕ لَنَاۤ اَعۡمَالُنَا

कि मैं तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा भी रब है, हमारा अमल हमारे लिए

وَلَكُمۡ اَعۡمَالُكُمۡ ؕ لَا حُجَّةَ بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمۡ ؕ اَللّٰهُ

और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए, हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं, अल्लाह हम सबको

يَجۡمَعُ بَيۡنَنَا ۚ وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿۱۵﴾ؕ وَالَّذِيۡنَ يُحَآجُّوۡنَ

जमा करेगा और उसी के पास जाना है (15) और जो लोग अल्लाह के बारे में

فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا اسۡتُجِيۡبَ لَهٗ حُجَّتُهُمۡ

हुज्जत कर रहे हैं बाद इसके कि वह मान लिया गया उनकी हुज्जत

دَاحِضَةٌ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ وَعَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ وَّلَهُمۡ

उनके रब के नज़्दीक बातिल है और उनपर ग़ज़ब है और उनके लिए

عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ﴿۱۶﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ الۡكِتٰبَ

सख़्त अज़ाब है (16) अल्लाह ही है जिसने हक के साथ किताब

بِالۡحَقِّ وَالۡمِيۡزَانَ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ

उतारी और तराज़ू भी, और आपको क्या ख़बर कि शायद वह घड़ी

قَرِيۡبٌ ﴿۱۷﴾ يَسۡتَعۡجِلُ بِهَا الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِهَا ۚ

क़रीब हो (17) जो लोग उसका यक़ीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं,

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مُشۡفِقُوۡنَ مِنۡهَا ۙ وَيَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهَا

और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वे

فِي السَّاعَةِ	يُمَارُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	اَلَآ	اَلْحَقُّ ؕ			

बरहक़ है, याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं

لَفِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ⑱ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ

वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए (18) अल्लाह अपने बंदों पर मेहरबान है, वह जिसको चाहता है

مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ⑲ مَنْ كَانَ

रोज़ी देता है और वह क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है (19) जो शख़्स

يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ

आख़िरत की खेती चाहे हम उसको उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे, और जो

كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي

शख़्स दुनिया की खेती चाहे हम उसको उसमें से कुछ दे देते हैं और उसका

الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ⑳ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا

आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं (20) क्या उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए

لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ

ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिसकी अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी और अगर फ़ैसले की बात

الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ

तय न पा चुकी होती तो उनका फ़ैसला कर दिया जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ㉑ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا

दर्दनाक अज़ाब है (21) आप उन ज़ालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे

كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

जो उन्होंने कमाया और उनपर ज़रूर पड़ने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने

الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ

अच्छे काम किए वे जन्नत के बाग़ों में होंगे, उनके लिए उनके रब के पास

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ㉒ ذٰلِكَ الَّذِيْ

वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनआम है (22) यह चीज़ है

يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

जिस की ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया,

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ

कह दीजिए कि मैं उस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर क़ुराबतदारी की मुहब्बत,

وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और जो शख़्स कोई नेकी करेगा हम उसके लिए उसमें भलाई बढ़ा देंगे, बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ

मुआफ़ करने वाला है, क़द्रदान है (23) क्या वे कहते हैं कि उसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है,

فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ

पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे, और अल्लाह बातिल को

الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

मिटाता है और हक़ को साबित करता है अपनी बातों से, बेशक वह दिलों की

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ

बातें जानता है (24) और वही है जो अपने बंदों की तौबा

عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا

क़ुबूल करता है और बुराईयों को मुआफ़ करता है, और वह जानता है जो कुछ तुम

تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ لا وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

करते हो (25) और वह उन लोगों की दुआए क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने

الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ

नेक अमल किया और वह उनको अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा दे देता है, और जो इनकार करने वाले हैं उनके लिए

عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ

सख़्त अज़ाब है (26) और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोज़ी को खोल देता

لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ

तो वह ज़मीन में फ़साद करते; लेकिन वह अंदाज़े के साथ उतारता है जितना चाहता है,

اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ

बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है (27) और वही है जो लोगों के

الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ

मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है, और वह

اَلۡوَلِيُّ الۡحَمِيۡدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ خَلۡقُ السَّمٰوٰتِ

काम बनाने वाला है, क़ाबिले-तारीफ़ है (28) और उसी की निशानियों में से है आसमानों

وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَثَّ فِيۡهِمَا مِنۡ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى

और ज़मीन का पैदा करना और वे जानदार जो उसने उनके दरमियान फैलाए हैं, और वह उनको

جَمۡعِهِمۡ اِذَا يَشَآءُ قَدِيۡرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَآ اَصَابَكُمۡ مِّنۡ

जब चाहे जमा करने पर क़ादिर है (29) और जो मुसीबत तुमको पहुँचती है

مُّصِيۡبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتۡ اَيۡدِيۡكُمۡ وَيَعۡفُوۡا عَنۡ كَثِيۡرٍ ﴿٣٠﴾

तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही से है, और बहुत से क़ुसूरों को वह मुआफ़ कर देता है (30)

وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ۖۚ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ

और तुम ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू से निकल नहीं सकते, और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा

دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿٣١﴾ وَمِنۡ اٰيٰتِهِ الۡجَوَارِ

कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार (31) और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज़

فِى الۡبَحۡرِ كَالۡاَعۡلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنۡ يَّشَاۡ يُسۡكِنِ الرِّيۡحَ فَيَظۡلَلۡنَ

समुंदर में चलते हैं जैसे पहाड़ (32) अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वह समुंदर की सतह पर

رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهۡرِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

ठहरे रह जाएं, बेशक उसके अंदर निशानियाँ हैं हर उस शख़्स के लिए जो सब्र करने वाला,

شَكُوۡرٍ ﴿٣٣﴾ اَوۡ يُوۡبِقۡهُنَّ بِمَا كَسَبُوۡا وَيَعۡفُ عَنۡ

शुक्र करने वाला है (33) या वह उनको तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और मुआफ़ कर दे

كَثِيۡرٍ ﴿٣٤﴾ وَّيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ يُجَادِلُوۡنَ فِىۡۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا

बहुत से लोगों को (34) और ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए

لَهُمۡ مِّنۡ مَّحِيۡصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَآ اُوۡتِيۡتُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ فَمَتَاعُ

भागने की कोई जगह नहीं (35) पस जो कुछ तुमको मिला है वह महज़ दुनियावी ज़िंदगी के

الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۚ وَمَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى لِلَّذِيۡنَ

बरतने के लिए है, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है उन लोगों के लिए

اٰمَنُوۡا وَعَلٰى رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُوۡنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيۡنَ يَجۡتَنِبُوۡنَ

जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं (36) और वे लोग जो बड़े गुनाहों से

كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

और बेहयाई से बचते हैं, और जब उनको ग़ुस्सा आता है तो वह मुआफ़ कर देते हैं (37)

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ص وَاَمْرُهُمْ

और वह जिन्होंने अपने रब की दावत को क़ुबूल किया और नमाज क़ायम की और वह अपना काम

شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ص وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ

आपस के मशवरे से करते हैं, और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं (38) और वे लोग

اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ

कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं (39) और बुराई का बदला है

سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ج فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى

वेसी ही बुराई, फिर जिसने मुआफ़ कर दिया और इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह के

اللّٰهِ ط اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ

ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता (40) और जो शख़्स अपने मज़लूम होने के बाद

ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ط ﴿٤١﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ

बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्ज़ाम नहीं (41) इल्ज़ाम सिर्फ़

عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ

उनपर है जो लोगों के ऊपर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़

بِغَيْرِ الْحَقِّ ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ

सरकशी करते हैं, यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (42) और जिस शख़्स ने सब्र किया

وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع وَمَنْ يُّضْلِلِ

और मुआफ़ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं (43) और जिस शख़्स को

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ط وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ

अल्लाह भटका दे तो उसके बाद उसका कोई कारसाज़ नहीं, और आप ज़ालिमों को देखोगे

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ

कि जब वे अज़ाब को देखेंगे तो वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई

سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾ ج وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ

सूरत है (44) और आप उनको देखोगे कि वे दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे, वे ज़िल्लत से

الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ط وَقَالَ الَّذِيْنَ

झुके हुए होंगे, छुपी निगाह से देखते होंगे, और ईमान वाले

اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

कहेंगे कि ख़सारे वाले वही लोग हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने आपको

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ

और अपने मुतअल्लिक़ीन को ख़सारे में डाल दिया, सुन लो! ज़ालिम लोग हमेशा रहने वाले

عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ

अज़ाब में रहेंगे (45) और उनके लिए कोई मददगार न होंगे

يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

जो अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी मदद करेंगे, और अल्लाह जिसको भटका दे

فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ط ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ

तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं (46) तुम अपने रब की दावत क़ुबूल करो इससे पहले

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ط مَا لَكُمْ

कि ऐसा दिन आजाए जिसके लिए अल्लाह की तरफ़ से मिटना न होगा, उस दिन तुम्हारे लिए

مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ

कोई पनाहगाह न होगी और न तुम किसी चीज़ को रद कर सकोगे (47) पस अगर

اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ط اِنْ عَلَيْكَ

वे ऐराज़ करें तो हमने आपको उनके ऊपर निगराँ बनाकर नहीं भेजा है, आपके ज़िम्मे

اِلَّا الْبَلٰغُ ط وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

सिर्फ़ पहुँचा देना है, और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाज़ते हैं तो वह

فَرِحَ بِهَا ج وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ

उस पर ख़ुश हो जाता है, और अगर उनके आमाल के बदले उनपर कोई मुसीबत आ पड़ती है

فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

तो आदमी नाशुक्री करने लगता है (48) आसमानों और ज़मीन की बादशाही

وَالْاَرْضِ ط يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ط يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا

अल्लाह ही के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है, वह जिसको चाहता है बेटियाँ अता करता है

وَيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا

और जिसको चाहता है बेटे अता करता है (49) या उनको जमा कर देता है बेटे भी

وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

और बेटियाँ भी, और जिसको चाहता है बे औलाद रखता है, बेशक वह जानने वाला, क़ुदरत वाला है (50)

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ

और किसी आदमी की यह ताक़त नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे मगर वह्य के ज़रिए या परदे के

وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ

पीछे से या वह किसी फ़रिश्ते को भेजे कि वह वह्य कर दे उसके हुक्म से

مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

जो वह चाहे, बेशक वह सबसे ऊपर है, हिकमत वाला है (51) और इसी तरह हमने आपकी तरफ़ भी

اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ

वह्य की है एक रूह अपने हुक्म से, आप नहीं जानते थे कि किताब क्या है

وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ

और न यह जानते थे कि ईमान क्या है; लेकिन हमने उसको एक नूर बनाया, उससे हम हिदायत देते हैं

نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۗ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْ اِلٰى صِرَاطٍ

अपने बंदों में से जिसको चाहते हैं, और बेशक आप एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

कर रहे हो (52) उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾

और ज़मीन में है, सुन लो! सारे मुआमलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं (53)

सूरह ज़ुख़रुफ़ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर आयत (54) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (89) आयतें और (7) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (63) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (43) नम्बर पर है और सूरह शूरा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3400) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (848) कलिमात हैं

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا

हा-मीम (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की (2) हमने इसको अरबी ज़बान का

منزل ٦ ع ٥ مع

عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾ وَإِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ

क़ुरआन बनाया है; ताकि तुम समझो (3) और बेशक यह अस्ल किताब में

لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٤﴾ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا

हमारे पास है, बुलंद और पुरहिकमत (4) क्या हम तुम्हारी नसीहत से इस लिए निगाहें फेर लेंगे

اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ

कि तुम हद से गुज़रने वाले हो (5) और हमने अगले लोगों में

فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

कितने ही नबी भेजे (6) और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया जिसका उन्होंने

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى

मज़ाक़ न उड़ाया हो (7) फिर जो लोग उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे उनको हमने हलाक कर दिया और

مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

लोगों की मिसालें गुज़र चुकीं (8) और अगर आप उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٩﴾ الَّذِيْ

किसने पैदा किया तो वे ज़रूर कहेंगे कि उनको ज़बरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया (9) जिसने

جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا

तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए;

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ

ताकि तुम राह पाओ (10) और जिसने आसमान से पानी उतारा

بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١١﴾

एक अंदाज़े के साथ, फिर हमने उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा कर दिया, इसी तरह तुम निकाले जाओगे (11)

وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ

और जिसने तमाम क़िस्में बनाईं और तुम्हारे लिए वे कश्तियाँ

الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿١٢﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ

और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो (12) ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो

ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ

फिर तुम अपने रब की नेमत को याद करो जब कि तुम उनपर बैठो

وَتَقُوۡلُوۡا سُبۡحٰنَ الَّذِىۡ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ

और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया, और हम ऐसे न थे

مُقۡرِنِيۡنَ ۙ﴿۱۳﴾ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ ﴿۱۴﴾ وَجَعَلُوۡا لَهٗ

कि उनको क़ाबू में करते (13) और बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं (14) और उन लोगों ने

مِنۡ عِبَادِهٖ جُزۡءًا ؕ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَـكَفُوۡرٌ مُّبِيۡنٌ ؕ﴿۱۵﴾

अल्लाह के बंदों में से अल्लाह का जुज़ ठहराया, बेशक इंसान खुला हुआ नाशुक्रा है (15)

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخۡلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصۡفٰٮكُمۡ بِالۡبَنِيۡنَ ﴿۱۶﴾

क्या अल्लाह ने अपनी मख़्लूक़ात में से बेटियाँ पसंद कीं और तुमको बेटों से नवाज़ा? (16)

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحۡمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ

और जब उनमें से किसी को उस चीज़ की ख़बर दी जाती है जिसको वह रहमान की तरफ़ मंसूब करता है तो उसका

وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ كَظِيۡمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَمَنۡ يُّنَشَّؤُا فِى

चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है (17) क्या वह जो ज़ेवर में

الۡحِلۡيَةِ وَهُوَ فِى الۡخِصَامِ غَيۡرُ مُبِيۡنٍ ﴿۱۸﴾ وَجَعَلُوا

परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके (18) और फ़रिश्ते

الۡمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيۡنَ هُمۡ عِبٰدُ الرَّحۡمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوۡا

जो रहमान के बंदे हैं उनको उन्होंने औरत क़रार दे रखा है, क्या वह उनकी पैदाइश के वक़्त

خَلۡقَهُمۡ ؕ سَتُكۡتَبُ شَهَادَتُهُمۡ وَيُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوۡا

मौजूद थे, उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी (19) और वे कहते हैं

لَوۡ شَآءَ الرَّحۡمٰنُ مَا عَبَدۡنٰهُمۡ ؕ مَا لَهُمۡ بِذٰلِكَ مِنۡ عِلۡمٍ ۚ

कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते, उनको उसका कोई इल्म नहीं

اِنۡ هُمۡ اِلَّا يَخۡرُصُوۡنَ ؕ﴿۲۰﴾ اَمۡ اٰتَيۡنٰهُمۡ كِتٰبًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ

वे महज़ बेतहक़ीक़ बात कर रहे हैं। (20) क्या हमने उनको इससे पहले कोई किताब दी है

فَهُمۡ بِهٖ مُسۡتَمۡسِكُوۡنَ ﴿۲۱﴾ بَلۡ قَالُوۡۤا اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا

तो उन्होंने उसको मज़बूत पकड़ रखा है (21) बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर

عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ مَاۤ

पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं (22) और इसी तरह हमने

اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ اِلَّا قَالَ

आपसे पहले जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके ख़ुशहाल

مُتۡرَفُوۡهَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى

लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया है और हम उनके पीछे

اٰثٰرِهِمۡ مُّقۡتَدُوۡنَ ﴿۲۳﴾ قٰلَ اَوَلَوۡ جِئۡتُكُمۡ بِاَهۡدٰى مِمَّا

चले जा रहे हैं (23) डराने वाले ने कहा: अगर्चे मैं उससे ज़्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊँ जिस पर

وَجَدۡتُّمۡ عَلَيۡهِ اٰبَآءَكُمۡ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ

तुमने अपने बाप दादा को पाया है, उन्होंने कहा कि हम उसके मुनकिर हैं जो देकर

كٰفِرُوۡنَ ﴿۲۴﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ

तुम भेजे गए हो (24) तो हमने उनसे इंतिक़ाम लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ

عَاقِبَةُ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿۲۵﴾ وَاِذۡ قَالَ اِبۡرٰهِيۡمُ لِاَبِيۡهِ

झुठलाने वालों का (25) और जब इब्राहीम (अलै०) ने अपने वालिद से और अपनी क़ौम से

وَقَوۡمِهٖۤ اِنَّنِىۡ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۲۶﴾ ۙ اِلَّا الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ

कहा कि मैं उन चीज़ों से बरी हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो (26) मगर वह जिसने मुझको पैदा किया,

فَاِنَّهٗ سَيَهۡدِيۡنِ ﴿۲۷﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىۡ

पस बेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा (27) और इब्राहीम (अलै०) यही कलिमा अपने पीछे

عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۲۸﴾ بَلۡ مَتَّعۡتُ هٰٓؤُلَآءِ

अपनी औलाद में छोड़ गए; ताकि वह उसकी तरफ़ रुजू करें (28) बल्कि मैंने उनको उनके बाप दादा को

وَاٰبَآءَهُمۡ حَتّٰى جَآءَهُمُ الۡحَقُّ وَرَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۲۹﴾ وَلَمَّا

दुनिया का सामान दिया यहाँ तक कि उनके पास हक आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला (29) और जब

جَآءَهُمُ الۡحَقُّ قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ﴿۳۰﴾

उनके पास हक़ आ गया, उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम उसके मुनकिर हैं (30)

وَقَالُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ هٰذَا الۡقُرۡاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ

और उन्होंने कहा कि यह क़ुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर

الۡقَرۡيَتَيۡنِ عَظِيۡمٍ ﴿۳۱﴾ اَهُمۡ يَقۡسِمُوۡنَ رَحۡمَتَ رَبِّكَ ؕ

क्यों नहीं उतारा गया? (31) क्या ये लोग आपके रब की रहमत को तक़सीम करते हैं?

منزل ۶ · النصف ع ۸

نَحۡنُ قَسَمۡنَا بَيۡنَهُمۡ مَّعِيۡشَتَهُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا

दुनिया की ज़िंदगी में उनकी रोज़ी को तो हमने तक़सीम किया है।

وَرَفَعۡنَا بَعۡضَهُمۡ فَوۡقَ بَعۡضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعۡضُهُمۡ

और हमने एक को दूसरे पर फ़ोक़ियत दी है; ताकि वह एक दूसरे से

بَعۡضًا سُخۡرِيًّا ؕ وَرَحۡمَتُ رَبِّكَ خَيۡرٌ مِّمَّا يَجۡمَعُوۡنَ ﴿۳۲﴾

काम लें, और आपके रब की रहमत उससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं (32)

وَلَوۡلَاۤ اَنۡ يَّكُوۡنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلۡنَا لِمَنۡ

और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीक़े के हो जाएंगे तो जो लोग

يَّكۡفُرُ بِالرَّحۡمٰنِ لِبُيُوۡتِهِمۡ سُقُفًا مِّنۡ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ

रहमान का इनकार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की बना देते और ज़ीने भी

عَلَيۡهَا يَظۡهَرُوۡنَ ۙ ﴿۳۳﴾ وَلِبُيُوۡتِهِمۡ اَبۡوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيۡهَا

जिन पर वे चढ़ते हैं (33) और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिन पर वे

يَتَّكِـُٔوۡنَ ۙ ﴿۳۴﴾ وَزُخۡرُفًا ؕ وَاِنۡ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ

तकिया लगा कर बैठते हैं (34) और सोने के भी, और ये चीज़ें तो सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी का

الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَالۡاٰخِرَةُ عِنۡدَ رَبِّكَ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۳۵﴾ ع وَمَنۡ

सामान हैं और आख़िरत आपके रब के पास मुत्तक़ियों के लिए है (35) और जो शख़्स

يَّعۡشُ عَنۡ ذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ نُقَيِّضۡ لَهٗ شَيۡطٰنًا فَهُوَ لَهٗ

रहमान की नसीहत से ऐराज़ करता है तो हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं पस वह उसका साथी

قَرِيۡنٌ ﴿۳۶﴾ وَاِنَّهُمۡ لَيَصُدُّوۡنَهُمۡ عَنِ السَّبِيۡلِ وَيَحۡسَبُوۡنَ

बन जाता है (36) और वे उनको राहे-हक़ से रोकते रहते हैं और ये लोग समझते हैं

اَنَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۳۷﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيۡتَ

कि वे हिदायत पर हैं (37) यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश

بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكَ بُعۡدَ الۡمَشۡرِقَيۡنِ فَبِئۡسَ الۡقَرِيۡنُ ﴿۳۸﴾

मेरे और तेरे दरमियान मशरिक़ और मग़रिब की दूरी होती, पस क्या ही बुरा साथी था (38)

وَلَنۡ يَّنۡفَعَكُمُ الۡيَوۡمَ اِذۡ ظَّلَمۡتُمۡ اَنَّكُمۡ فِى الۡعَذَابِ

और जब कि तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज यह बात तुमको कुछ भी फ़ायदा न देगी कि तुम अज़ाब में

مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۹﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِی الْعُمْیَ

एक दूसरे के शरीक हो (39) पस क्या आप बेहरों को सुनाओगे या आप अंधों को राह दिखाओगे

وَمَنْ كَانَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۰﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ

और उनको जो खुली हुई गुमराही में हैं (40) पस अगर हम आपको उठा लें

فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اَوْ نُرِیَنَّكَ الَّذِیْ وَعَدْنٰهُمْ

तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं (41) या आपको दिखा देंगे वह चीज़ जिसका हमने उनसे वादा किया है,

فَاِنَّا عَلَیْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿۴۲﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِیْۤ اُوْحِیَ

पस हम उनपर पूरी तरह क़ादिर हैं (42) पस आप उसको मज़बूती से थामे रहिए जो आपके ऊपर वह्य

اِلَیْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۴۳﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ

की गई है, बेशक आप एक सीधे रास्ते पर हो (43) और यह आपके लिए और आपकी क़ौम के लिए

وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ

नसीहत है, और जल्द ही तुमसे पूछ होगी (44) और जिन को हमने आपसे पहले भेजा है

قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَاۤ ۟ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً

हमारे रसूलों में से उनसे पूछ लीजिए कि क्या हमने रहमान के सिवा दूसरे माबूद ठहराए थे

یُّعْبَدُوْنَ ﴿۴۵﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰیٰتِنَاۤ اِلٰی فِرْعَوْنَ

कि उनकी इबादत की जाए (45) और हमने मूसा (अलै॰) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन

وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّیْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۶﴾ فَلَمَّا

और उसके उमरा के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं रब्बुल-आलमीन का रसूल हूँ (46) पस जब

جَآءَهُمْ بِاٰیٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا یَضْحَكُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَمَا نُرِیْهِمْ

वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उसपर हंसने लगे (47) और हम उनको

مِّنْ اٰیَةٍ اِلَّا هِیَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ

जो निशानियाँ दिखाते थे वह पहली से बढ़ कर होती थीं, और हमने उनको अज़ाब में पकड़ा

لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَقَالُوْا یٰۤاَیُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ

ताकि वह रुजू करें (48) और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ करो

بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا

उस अहद की बिना पर जो उसने तुमसे किया है, हम ज़रूर राह पर आजाएंगे (49) फिर जब हमने

عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ

वह अज़ाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया (50) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के दरमियान

فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ

पुकार कर कहा कि ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें

الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَمْ اَنَا

जो मेरे नीचे बह रही हैं, क्या तुम लोग देखते नहीं (51) बल्कि मैं

خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾

बेहतर हूँ उस शख़्स से जो कि हक़ीर है और साफ़ बोल भी नहीं सकता (52)

فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ

फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े या फ़रिश्ते उसके साथ

الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۗ

जमा होकर आते (53) पस उसने अपनी क़ौम को बेअक़्ल कर दिया फिर उन्होंने उसकी बात मान ली,

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا

ये नाफ़रमान क़िस्म के लोग थे (54) फिर जब उन्होंने हमको ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उनसे

مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا

बदला लिया और हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया (55) फिर हमने उनको माज़ी की दास्तान बना दिया और दूसरों के लिए

لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ

एक नमूना-ए-इबरत (56) और जब इब्ने-मरयम की मिसाल दी गई तो आपकी क़ौम के लोग

مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا

उसपर चिल्ला उठे (57) और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद अच्छे हैं या वे? यह मिसाल

ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾

वे आप से सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं; बल्कि ये लोग झगड़ालू हैं (58)

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ

ईसा (अलै०) तो बस हमारे एक बंदे थे जिसपर हमने फ़ज़्ल फ़रमाया और उसको बनी इस्राईल के लिए

اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي

एक मिसाल बना दिया (59) और अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फ़रिश्ते बना दें

الۡاَرۡضِ يَخۡلُفُوۡنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ

जो ज़मीन में तुम्हारे जानशीन हों (60) और बेशक ईसा क़ियामत का एक निशान हैं तो तुम उसमें

بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ

शक न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधा रास्ता है (61) और शैतान तुमको उससे

الشَّيۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا جَآءَ عِيۡسٰى

रोकने न पाए, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (62) और जब ईसा (अलै०) खुली

بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمۡ

निशानियों के साथ आए, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिकमत लेकर आया हूँ और ताकि मैं तुम पर वाज़ेह कर दूँ

بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿٦٣﴾

बअज़ बातें जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो, पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (63)

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ

बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, तो तुम उसी की इबादत करो, यही सीधा

مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ

रास्ता है (64) फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया,

فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿٦٥﴾ هَلۡ

पस तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से (65) ये लोग

يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ

बस क़ियामत का इंतिज़ार कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उनको

لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٦٦﴾ اَلۡاَخِلَّآءُ يَوۡمَئِذٍ ۢ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ

ख़बर भी न हो (66) तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे

اِلَّا الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ

सिवाए डरने वालों के (67) ऐ मेरे बंदो! आज तुम पर न कोई ख़ौफ़ है और न तुम

تَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٨﴾ ۚ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿٦٩﴾ ۚ

ग़मगीन होगे (68) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए और फ़रमाँबरदार रहे (69)

اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَاَزۡوَاجُكُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ

जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियाँ, तुम ख़ुश किए जाओगे (70) उनके सामने

منزل ٦

عَلَيۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّاَكۡوَابٍ ۚ وَفِيۡهَا

सोने की रिकाबियाँ और प्याले पेश किए जाएंगे, और वहाँ

مَا تَشۡتَهِيۡهِ الۡاَنۡفُسُ وَتَلَذُّ الۡاَعۡيُنُ ۚ وَاَنۡتُمۡ فِيۡهَا

वे चीज़ें होंगी जिनको जी चाहेगा और जिनसे आँखों को लज़्ज़त होगी, और तुम यहाँ हमेशा

خٰلِدُوۡنَ ۚ﴿۷۱﴾ وَتِلۡكَ الۡجَنَّةُ الَّتِىۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا كُنۡتُمۡ

रहोगे (71) और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम

تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۷۲﴾ لَكُمۡ فِيۡهَا فَاكِهَةٌ كَثِيۡرَةٌ مِّنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿۷۳﴾

करते थे (72) तुम्हारे लिए उसमें बहुत से मेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे (73)

اِنَّ الۡمُجۡرِمِيۡنَ فِىۡ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ۚ﴿۷۴﴾ لَا يُفَتَّرُ

बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोज़ख़ के अज़ाब में रहेंगे (74) वे उनसे हलका

عَنۡهُمۡ وَهُمۡ فِيۡهِ مُبۡلِسُوۡنَ ۚ﴿۷۵﴾ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَلٰكِنۡ

न किया जाएगा और वह उसमें मायूस पड़े रहेंगे (75) और हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे

كَانُوۡا هُمُ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۷۶﴾ وَنَادَوۡا يٰمٰلِكُ لِيَقۡضِ عَلَيۡنَا

ख़ुद ही ज़ालिम थे (76) और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा रब हमारा ख़ातमा ही

رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمۡ مّٰكِثُوۡنَ ﴿۷۷﴾ لَقَدۡ جِئۡنٰكُمۡ بِالۡحَقِّ

कर दे, फ़रिश्ता कहेगाः तुमको इसी तरह पड़े रहना है (77) हम तुम्हारे पास हक़ लेकर आए

وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَكُمۡ لِلۡحَقِّ كٰرِهُوۡنَ ﴿۷۸﴾ اَمۡ اَبۡرَمُوۡۤا اَمۡرًا

मगर तुम में से अकसर हक़ से बेज़ार रहे (78) क्या उन्होंने कोई बात ठहराली है

فَاِنَّا مُبۡرِمُوۡنَ ۚ﴿۷۹﴾ اَمۡ يَحۡسَبُوۡنَ اَنَّا لَا نَسۡمَعُ سِرَّهُمۡ

तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे (79) क्या उनका गुमान है कि हम उनके राज़ों को और उनके मशवरों को

وَنَجۡوٰهُمۡ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيۡهِمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ﴿۸۰﴾ قُلۡ اِنۡ

नहीं सुन रहे हैं, हाँ! और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं (80) कह दीजिए कि अगर

كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الۡعٰبِدِيۡنَ ﴿۸۱﴾ سُبۡحٰنَ

रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला हूँ (81) आसमानों

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ رَبِّ الۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿۸۲﴾

और ज़मीन का ख़ुदावंद, अर्श का मालिक, वह उन बातों से पाक है जिसको लोग बयान करते हैं (82)

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ

पस उनको छोड़ दीजिए कि वह बहस करें और खेलें यहाँ तक कि वे उस दिन से दो चार हों

الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ

जिसका उनसे वादा किया जा रहा है (83) और वही है जो आसमान में अल्लाह है

وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۴﴾ وَتَبٰرَكَ

और वही ज़मीन में अल्लाह है, और वह हिकमत वाला, इल्म वाला है (84) और बड़ी बाबरकत है

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

वह ज़ात जिसकी बादशाही आसमानों और ज़मीन में है और जो कुछ उनके दरमियान है,

وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا يَمْلِكُ

और उसी के पास क़ियामत की ख़बर है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे (85) और अल्लाह के सिवा

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ

जिनको ये लोग पुकारते हैं वे सिफ़ारिश का इख़्तियार नहीं रखते, मगर वे

شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

जो हक की गवाही देंगे और वे जानते होंगे (86) और अगर आप उनसे पूछो

مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَقِيْلِهٖ

कि उनको किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर वे कहाँ भटक जाते हैं (87) और उसको रसूल के

يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ

इस कहने की ख़बर है कि ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते (88) पस उनसे दरगुज़र कीजिए

وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾

और कहिए कि सलाम है (तुमको), पस जल्द ही उनको मालूम हो जाएगा (89)

सूरह दुख़ान मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (59) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (64) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (44) नम्बर पर है और सूरह ज़ुख़रुफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1421) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (346) कलिमात हैं

حٰمٓ ﴿۱﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ

हा-मीम (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की (2) हमने इसको एक बरकत वाली रात में

منزل ۶

مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنۡذِرِيۡنَ ﴿٣﴾ فِيۡهَا يُفۡرَقُ

उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे (3) इस रात में हर

كُلُّ اَمۡرٍ حَكِيۡمٍ ﴿٤﴾ اَمۡرًا مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

हिकमत वाला मुआमला तय किया जाता है (4) हमारे हुक्म से, बेशक हम थे

مُرۡسِلِيۡنَ ﴿٥﴾ رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ

भेजने वाले (5) आपके रब की रहमत से, वही सुनने वाला,

الۡعَلِيۡمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ

जानने वाला है (6) आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दरमियान है,

وقف لازم

اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ﴿٧﴾ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ

अगर तुम यक़ीन करने वाले हो (7) उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, वही ज़िंदा करता है और मारता है,

رَبُّكُمۡ وَرَبُّ اٰبَآٮِٕكُمُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٨﴾ بَلۡ هُمۡ

तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब (8) बल्कि वे

فِىۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ﴿٩﴾ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ

शक में पड़े हुए खेल रहे हैं (9) पस इंतिज़ार कीजिए उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए

منزل ٦

بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ﴿١٠﴾ يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ

धुएं के साथ ज़ाहिर होगा (10) वे लोगों को घेर लेगा, यह एक दर्दनाक

اَلِيۡمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكۡشِفۡ عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١٢﴾

अज़ाब है (11) ऐ हमारे रब! हमपर से अज़ाब टाल दीजिए, हम ईमान लाते हैं (12)

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكۡرٰى وَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ﴿١٣﴾

उनके लिए नसीहत कहाँ, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला (13)

وقف لازم

ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ﴿١٤﴾ اِنَّا

फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है (14) हम

وقف لازم

كَاشِفُوا الۡعَذَابِ قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآٮِٕدُوۡنَ ﴿١٥﴾

कुछ वक़्त के लिए अज़ाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे (15)

يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ﴿١٦﴾

जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़, उस दिन हम पूरा बदला लेंगे (16)

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ

और उनसे पहले हमने फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया, और उनके पास एक मुअज़्ज़ज़

كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ

रसूल आया (17) कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे लिए

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْٓ

एक मोतबर रसूल हूँ (18) और यह कि अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं

اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ

तुम्हारे सामने एक वाज़ेह दलील पेश करता हूँ (19) और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह

وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ

ले चुका हूँ इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो (20) और अगर तुम मुझपर ईमान नहीं लाते तो तुम

فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ

मुझसे अलग रहो (21) पस मूसा (अलै०) ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग

مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

मुजरिम हैं (22) तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा (23)

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾

और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है (24)

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾ وَّزُرُوْعٍ

उन्होंने कितने ही बाग़ और चश्मे (25) और खेतियाँ

وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾

और उमदा मकानात (26) और आराम के सामान जिन में वे ख़ुश रहते थे सब छोड़ दिए (27)

كَذٰلِكَ ۫ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا

इसी तरह हुआ, और हमने दूसरी क़ौम को उनका मालिक बना दिया (28) पस न

بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا

उनपर आसमान रोया और न ज़मीन और न उनको

مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ

मोहलत दी गई (29) और हमने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले

منزل ٦

الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝۳۰ مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ

अज़ाब से निजात दी (30) यानी फ़िरऔन से, बेशक वह सरकश

عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ۝۳۱ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ

और हद से निकल जाने वालों में से था (31) और हमने उनको अपने इल्म की

عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝۳۲ وَآتَيْنَاهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا

रू से दुनिया वालों पर तरजीह दी (32) और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें

فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۝۳۳ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝۳۴ إِنْ

खुला हुआ इनआम था (33) यक़ीनन ये लोग कहते हैं (34) बस यही

هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ۝۳۵

हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे (35)

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝۳۶ أَهُمْ خَيْرٌ

अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को (36) क्या ये बेहतर हैं

أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ

या तुब्बा की क़ौम और जो उनसे पहले थे, हमने उनको हलाक कर दिया है,

إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝۳۷ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ

बेशक वे नाफ़रमान थे (37) और हमने आसमानों और ज़मीन को

وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ۝۳۸ مَا خَلَقْنَاهُمَا

और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया (38) उनको हमने हक़ के साथ

إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝۳۹

बनाया है लेकिन उनके अकसर लोग नहीं जानते (39)

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝۴۰ يَوْمَ

बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका तय शुदा वक़्त है (40) जिस दिन

لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ

कोई रिश्तेदार किसी रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत

يُنصَرُونَ ۝۴۱ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ

की जाएगी (41) हाँ मगर वह जिसपर अल्लाह रहम फ़रमाए, बेशक वह ज़बरदस्त है,

الرَّحِيۡمُ ﴿۴۲﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ﴿۴۳﴾ طَعَامُ

रहमत वाला है (42) यक़ीन जानो कि ज़क़्क़ूम का दरख़्त (43) गुनहगार का

الۡاَثِيۡمِ ﴿۴۴﴾ كَالۡمُهۡلِ ۚ يَغۡلِىۡ فِى الۡبُطُوۡنِ ﴿۴۵﴾ كَغَلۡىِ

खाना होगा (44) तेल की तिलछट जैसा, वह पेट में खोलेगा (45) जिस तरह गर्म पानी

الۡحَمِيۡمِ ﴿۴۶﴾ خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ﴿۴۷﴾

खोलता है (46) उसको पकड़ो और उसको घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ (47)

ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ﴿۴۸﴾

फिर उसके सर पर खोलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो (48)

ذُقۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡكَرِيۡمُ ﴿۴۹﴾ اِنَّ

चख इसको, तू बड़ा मुअज़्ज़ज़, मुकर्रम है (49) यह वही

هٰذَا مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تَمۡتَرُوۡنَ ﴿۵۰﴾ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ

चीज़ है जिसमें तुम शक करते थे (50) बेशक अल्लाह से डरने वाले

فِىۡ مَقَامٍ اَمِيۡنٍ ﴿۵۱﴾ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿۵۲﴾

अमन की जगह में होंगे (51) बाग़ों और चश्मों में (52)

يَّلۡبَسُوۡنَ مِنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَقٰبِلِيۡنَ ﴿۵۳﴾

बारीक रेशम और दबीज़ रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे (53)

كَذٰلِكَ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ﴿۵۴﴾ يَدۡعُوۡنَ

उनके साथ यही मुआमला होगा, और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों का उनसे बियाह कर देंगे (54) वे उसमें

فِيۡهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيۡنَ ﴿۵۵﴾ لَا يَذُوۡقُوۡنَ

तलब करेंगे हर क़िस्म के मेवे निहायत इतमीनान से (55) वे वहाँ मौत को

فِيۡهَا الۡمَوۡتَ اِلَّا الۡمَوۡتَةَ الۡاُوۡلٰى ۚ وَوَقٰهُمۡ

न चखेंगे मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है, और अल्लाह ने उनको जहन्नम के

عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ﴿۵۶﴾ فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ

अज़ाब से बचा लिया (56) ये आपके रब के फ़ज़्ल से होगा, यही है

هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۵۷﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ

बड़ी कामयाबी (57) पस हमने इस किताब को आपकी ज़बान में आसान बना दिया है

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

ताकि लोग नसीहत हासिल करें (58) पस आप भी इंतिज़ार कीजिए, वह भी इंतिज़ार कर रहे हैं (59)

सूरह जासिया मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर आयत (14) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (37) आयतें और (4) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (65) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (45) नम्बर पर है और सूरह दुख़ान के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2191) हुरूफ़ हैं | بسم الله الرحمن الرحيم | इसमें (488) कलिमात हैं

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

हा-मीम (1) यह नाज़िल की हुई किताब है ग़ालिब, हिकमत वाले अल्लाह की तरफ़ से (2)

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

बेशक आसमानों और ज़मीन में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए (3)

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ

और तुम्हारे बनाने में और उन हैवानात में जो उसने ज़मीन मैं फैला रखे हैं निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं (4) और रात और दिन के आने जाने में

وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا

और उस रिज़्क़ में जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा फिर उससे

بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ

ज़मीन को ज़िंदा कर दिया उसके मर जाने के बाद और हवाओं की गर्दिश में भी निशानियाँ हैं

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं (5) ये अल्लाह की आयतें हैं जिनको हम हक़ के साथ

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ

आपको सुना रहे हैं, फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है

وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾

जिस पर वे ईमान लाएंगे (6) ख़राबी है हर उस शख़्स के लिए जो झूठा, गुनहगार हो (7)

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

जो अल्लाह की आयतों को सुनता है जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकब्बुर के साथ अड़ा रहता है

كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٨﴾

गोया उसने उसको सुना ही नहीं, पस आप उसको एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दीजिए (8)

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ

और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज़ की ख़बर पाता तो वह उसको मज़ाक़ बना लेता है,

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩﴾ ؕ مِنْ وَّرَآئِهِمْ

ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है (9) उनके आगे

جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا

जहन्नम है, और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम आने वाला नहीं और न वे

مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज़ बनाया, और उनके लिए बड़ा

عَظِيْمٌ ﴿١٠﴾ ؕ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ

अज़ाब है (10) यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का

رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ ع اَللّٰهُ

इनकार किया उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब है (11) अल्लाह ही है

الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ

जिसने तुम्हारे लिए समुंदर को मुसख़्ख़र कर दिया; ताकि उसके हुक्म से उसमें

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ

कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि

تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ ج وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

तुम शुक्र करो (12) और उसने आसमानों और ज़मीन की चीज़ों को

فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया सबको अपनी तरफ़ से, बेशक इसमें निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا

उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं (13) ईमान वालों से कह दीजिए कि उन लोगों से दरगुज़र करें

لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते; ताकि अल्लाह एक क़ौम को

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

उसकी कमाई का बदला दे (14) जो शख़्स नेक अमल करेगा तो उसका फ़ायदा

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۟ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

उसी के लिए है, और जिस शख़्स ने बुरा किया तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा, फिर तुम अपने रब की तरफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ

लौटाए जाओगे (15) और हमने बनी इस्राईल को किताब

الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ

और हुक्म और नुबुव्वत दी और उनको पाकीज़ा रिज़्क़

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ

अता किया और हमने उनको दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी (16) और हमने उनको

بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

दीन के बारे में खुली खुली दलीलें दीं, फिर उन्होंने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर इसके बाद

مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ

कि उनके पास इल्म आ चुका था आपस की ज़िद की वजह से, बेशक आपका रब

يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ

क़ियामत के दिन उनके दरमियान फ़ैसला कर देगा उन चीज़ों के बारे में जिन में वे बाहम

يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ

इख़्तिलाफ़ करते थे (17) फिर हमने आपको दीन के एक वाज़ेह तरीक़े पर क़ायम किया

فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾

पस आप उसी पर चलिए और उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी न कीजिए जो इल्म नहीं रखते (18)

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ وَاِنَّ

ये लोग अल्लाह के मुक़ाबले में आपके कुछ काम नहीं आ सकते, और बेशक

الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ

ज़ालिम लोग एक दूसरे के साथी हैं और डरने वालों का साथी

الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

अल्लाह है (19) ये लोगों के लिए बसीरत की बातें हैं और हिदायत

وَّرَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ يُّوۡقِنُوۡنَ ﴿٢٠﴾ اَمۡ حَسِبَ الَّذِيۡنَ

और रहमत उन लोगों के लिए जो यक़ीन करें (20) क्या वे लोग जिन्होंने

اجۡتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ نَّجۡعَلَهُمۡ كَالَّذِيۡنَ

बुराईयों का इर्तिकाब किया है यह ख़्याल करते हैं कि हम उनको उन लोगों की मानिंद कर देंगे

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحۡيَاهُمۡ

जो ईमान लाए और नेक अमल किया, उन सबका जीना और मरना,

وَمَمَاتُهُمۡ ؕ سَآءَ مَا يَحۡكُمُوۡنَ ﴿٢١﴾ ع وَخَلَقَ اللّٰهُ

यकसाँ हो जाए, बहुत बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं (21) और अल्लाह ने आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ وَلِتُجۡزٰى كُلُّ نَفۡسٍۢ

और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया और ताकि हर शख़्स को उसके किए का

بِمَا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيۡتَ

बदला दिया जाए और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा (22) क्या आपने उस शख़्स को देखा

مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰٮهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلۡمٍ

जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसको गुमराही में डाल दिया

وَّخَتَمَ عَلٰى سَمۡعِهٖ وَقَلۡبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ

और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँख पर परदा

غِشٰوَةً ؕ فَمَنۡ يَّهۡدِيۡهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا

डाल दिया, पस ऐसे शख़्स को कौन हिदायत दे सकता है इसके बाद कि अल्लाह ने उसको गुमराह कर दिया हो, क्या तुम

تَذَكَّرُوۡنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوۡا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا

ध्यान नहीं करते? (23) और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की ज़िंदगी के सिवा

الدُّنۡيَا نَمُوۡتُ وَنَحۡيَا وَمَا يُهۡلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهۡرُ ۚ

कोई और ज़िंदगी नहीं, हम मरते हैं और जीते हैं और हमको सिर्फ़ ज़माने की गर्दिश हलाक करती है,

وَمَا لَهُمۡ بِذٰلِكَ مِنۡ عِلۡمٍ ۚ اِنۡ هُمۡ اِلَّا

और उनको इस बाब में कोई इल्म नहीं, वह महज़ गुमान की बिना पर

يَظُنُّوۡنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

ऐसा कहते हैं (24) और जब उनको हमारी आयतें खुली खुली सुनाई जाती हैं

مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ

तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे बाप दादा को ज़िंदा करके लाओ

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ

अगर तुम सच्चे हो (25) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुमको ज़िंदा करता है फिर वह

يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا

तुमको मारता है फिर वे क़ियामत के दिन तुमको जमा करेगा, इसमें

رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

कोई शक नहीं; लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (26)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَيَوْمَ تَقُوْمُ

और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और ज़मीन में और जिस दिन क़ियामत

السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَتَرٰى

क़ायम होगी उस दिन अहले-बातिल ख़सारे में पड़ जाएंगे (27) और आप देखोगे

كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً قف كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى

कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा, हर गिरोह अपने नामा-ए-आमाल की तरफ़

كِتٰبِهَا ط اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

बुलाया जाएगा, आज तुमको उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे (28)

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ط اِنَّا

यह हमारा दफ़्तर है जो तुम्हारे ऊपर ठीक ठीक गवाही दे रहा है, यक़ीनन हम

كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا

लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे (29) पस जो लोग

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ

ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उनको

رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾

अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही खुली कामयाबी है (30)

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قف اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى

और जिन्होंने इनकार किया, क्या तुमको मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई

عَلَيۡكُمۡ فَاسۡتَكۡبَرۡتُمۡ وَكُنۡتُمۡ قَوۡمًا مُّجۡرِمِيۡنَ ﴿٣١﴾

जाती थीं, पस तुमने तकब्बुर किया और तुम मुजरिम लोग थे (31)

وَاِذَا قِيۡلَ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيۡبَ

और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक़ है और क़ियामत में कोई

فِيۡهَا قُلۡتُمۡ مَّا نَدۡرِىۡ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنۡ نَّظُنُّ

शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा

اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحۡنُ بِمُسۡتَيۡقِنِيۡنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمۡ

रखते हैं और हम उसपर यक़ीन करने वाले नहीं (32) और उनपर उनके

سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوۡا وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ

आमाल की बुराईयाँ खुल जाएंगी और वह चीज़ उनको घेर लेगी जिसका वे

يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيۡلَ الۡيَوۡمَ نَنۡسٰكُمۡ كَمَا

मज़ाक़ उड़ाते थे (33) और कहा जाएगा कि आज हम तुमको भुला देंगे जिस तरह

نَسِيۡتُمۡ لِقَآءَ يَوۡمِكُمۡ هٰذَا وَمَاۡوٰٮكُمُ النَّارُ

तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा, और तुम्हारा ठिकाना आग है

وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمۡ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذۡتُمۡ

और कोई तुम्हारा मददगार नहीं (34) यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का

اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتۡكُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا ۚ

मज़ाक़ उड़ाया और दुनिया की ज़िंदगी ने तुमको धोखे में रखा,

فَالۡيَوۡمَ لَا يُخۡرَجُوۡنَ مِنۡهَا وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿٣٥﴾

पस आज न वे उससे निकाले जाएंगे और न उनका उज़्र क़ुबूल किया जाएगा (35)

فَلِلّٰهِ الۡحَمۡدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الۡاَرۡضِ رَبِّ

पस सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है आसमानों का और रब है ज़मीन का, रब है

الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٣٦﴾ وَلَهُ الۡكِبۡرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۖ

तमाम आलम का (36) और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में

وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٣٧﴾

और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (37)

सूरह अहक़ाफ़ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर आयत (10,15,35) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (35) आयतें और (4) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (66) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (46) नम्बर पर है और सूरह जासिया के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2595) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (644) कलिमात हैं

حٰمٓ ① تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

हा-मीम (1) यह किताब ज़बरदस्त, हिकमत वाले अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है (2)

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا

हमने आसमानों और ज़मीन को और उनके दरमियान की चीज़ों को नहीं पैदा किया

بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ

मगर हक़ के साथ और मुअय्यन मुद्दत के लिए, और जो लोग मुनकिर हैं वे उससे बेरुख़ी करते हैं

اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ③ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

जिससे उनको डराया गया है (3) कह दीजिए कि तुमने ग़ौर भी किया है उन चीज़ों पर जिनको तुम

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ

अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या बनाया है या उनकी

لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ

आसमान में कुछ हिस्सेदारी है? मेरे पास उससे पहले की

هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ④

कोई किताब ले आओ या कोई इल्म जो चला आता हो, अगर तुम सच्चे हो (4)

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ

और उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो

لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ

क़ियामत तक उसका जवाब नहीं दे सकते, और उनको उनके

دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ⑤ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ

पुकारने की भी ख़बर नहीं (5) और जब लोग इकट्ठा किए जाएंगे तो वे उनके

اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑥ وَاِذَا تُتْلٰى

दुश्मन होंगे और उनकी इबादत के मुनकिर बन जाएंगे (6) और जब हमारी

عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلۡحَقِّ

खुली खुली आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुनकिर लोग इस हक के बारे में जबकि वे

لَمَّا جَآءَهُمۡ ۙ هٰذَا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ؕ ﴿٧﴾ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ

उनके पास पहुँचा है, कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है (7) क्या ये लोग कहते हैं कि उसने

افۡتَرٰٮهُ ؕ قُلۡ اِنِ افۡتَرَيۡتُهٗ فَلَا تَمۡلِكُوۡنَ لِىۡ مِنَ

इसको अपनी तरफ़ से बना लिया है, कह दीजिए कि अगर मैंने इसको अपनी तरफ़ से बना लिया है तो तुम लोग मुझको

اللّٰهِ شَيۡـئًا ؕ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَا تُفِيۡضُوۡنَ فِيۡهِ ؕ كَفٰى بِهٖ

ज़रा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते, जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उनको ख़ूब जानता है, वे मेरे

شَهِيۡدًۢا بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكُمۡ ؕ وَهُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ﴿٨﴾

और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफ़ी है, और वे बख़्शने वाला, रहमत वाला है (8)

قُلۡ مَا كُنۡتُ بِدۡعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَاۤ اَدۡرِىۡ مَا

कह दीजिए कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ

يُفۡعَلُ بِىۡ وَلَا بِكُمۡ ؕ اِنۡ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ

क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या, मैं तो सिर्फ़ उसी का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ़ वह्य के ज़रिए आता है

وَمَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿٩﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كَانَ

और मैं तो सिर्फ़ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूँ (9) कह दीजिए कि क्या तुमने कभी सोचा कि अगर यह क़ुरआन

مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ وَكَفَرۡتُمۡ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۡۢ

अल्लाह की जानिब से हो और तुमने उसको नहीं माना, और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने

بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ عَلٰى مِثۡلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسۡتَكۡبَرۡتُمۡ ؕ

उस जैसी किताब पर गवाही दी है, पस वह ईमान लाया और तुमने तकब्बुर किया,

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿١٠﴾ ع وَقَالَ

बेशक अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता (10) और इनकार

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَوۡ كَانَ خَيۡرًا مَّا

करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज़ होती तो वह उसपर

سَبَقُوۡنَاۤ اِلَيۡهِ ؕ وَاِذۡ لَمۡ يَهۡتَدُوۡا بِهٖ فَسَيَقُوۡلُوۡنَ

हमसे पहले न दौड़ते, और चूँकि उन्होंने उससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे

منزل ٦ ع

هٰذَآ اِفۡكٌ قَدِيۡمٌ ﴿۱۱﴾ وَمِنۡ قَبۡلِهٖ كِتٰبُ مُوۡسٰٓى

कि यह तो पुराना झूठ है (11) और इससे पहले मूसा (अलै०) की किताब थी

اِمَامًا وَّرَحۡمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا

रहनुमा और रहमत, और यह एक किताब है जो उसको सच्चा करती है अरबी ज़बान में

لِّيُنۡذِرَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا ۖ وَبُشۡرٰى لِلۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۲﴾

ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने ज़ुल्म किया, और वह ख़ुशख़बरी है नेक लोगों के लिए (12)

اِنَّ الَّذِيۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا فَلَا خَوۡفٌ

बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर वे उसपर जमे रहे तो उन लोगों पर

عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۱۳﴾ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ

कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे (13) यही लोग जन्नत वाले हैं

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴﴾

जो उसमें हमेशा रहेंगे उन आमाल के बदले जो वे दुनिया में करते थे (14)

وَوَصَّيۡنَا الۡاِنۡسَانَ بِوَالِدَيۡهِ اِحۡسٰنًا ؕ حَمَلَتۡهُ

और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने माँ-बाप के साथ भलाई करे, उसकी माँ ने तकलीफ़ के साथ

اُمُّهٗ كُرۡهًا وَّوَضَعَتۡهُ كُرۡهًا ؕ وَحَمۡلُهٗ وَفِصٰلُهٗ

उसको पेट में रखा और तकलीफ़ के साथ उसको जना, और उसका हमल में रहना और दूध छुड़ाना

ثَلٰثُوۡنَ شَهۡرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرۡبَعِيۡنَ

तीस महीनों में हुआ, यहाँ तक कि जब वह अपनी पुख़्तगी को पहुँचा और चालीस बरस को

سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوۡزِعۡنِىۡۤ اَنۡ اَشۡكُرَ نِعۡمَتَكَ الَّتِىۡۤ

पहुँच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं आपके एहसान का शुक्र करूँ जो आपने

اَنۡعَمۡتَ عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنۡ اَعۡمَلَ صَالِحًا

मुझ पर किया और मेरे माँ-बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूँ

تَرۡضٰىهُ وَاَصۡلِحۡ لِىۡ فِىۡ ذُرِّيَّتِىۡ ۚ اِنِّىۡ تُبۡتُ

जिससे आप राज़ी हों, और मेरी औलाद में भी मुझको नेक औलाद दे, मैंने आपकी तरफ़

اِلَيۡكَ وَاِنِّىۡ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ

रुजू किया और मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ (15) ये लोग हैं

نَتَقَبَّلُ عَنۡهُمۡ اَحۡسَنَ مَا عَمِلُوۡا وَنَتَجَاوَزُ عَنۡ

जिनके अच्छे आमाल को हम क़ुबूल करेंगे और उनकी बुराईयों से हम दरगुज़र

سَيِّاٰتِهِمۡ فِىۡۤ اَصۡحٰبِ الۡجَـنَّةِ‌ ؕ وَعۡدَ الصِّدۡقِ الَّذِىۡ

करेंगे, वह अहले जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो

كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِىۡ قَالَ لِوَالِدَيۡهِ اُفٍّ لَّـكُمَاۤ

उनसे किया जाता है (16) और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि मैं बेज़ार हूँ तुमसे

اَتَعِدٰنِنِىۡۤ اَنۡ اُخۡرَجَ وَقَدۡ خَلَتِ الۡقُرُوۡنُ مِنۡ قَبۡلِىۡ‌ ۚ

क्या तुम मुझको ख़ौफ़ दिलाते हो कि मैं क़ब्र से निकाला जाऊँगा; हालाँकि मुझसे पहले बहुत-सी क़ौमें गुज़र चुकी हैं,

وَهُمَا يَسۡتَغِيۡثٰنِ اللّٰهَ وَيۡلَكَ اٰمِنۡ ‌ۖ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ

और वे दोनों अल्लाह से फ़रयाद करते हैं कि तेरी ख़राबी हो! तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा

حَقٌّ ‌ ۚ فَيَقُوۡلُ مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۷﴾

सच्चा है, पस वह कहता है कि ये सब अगलों की कहानियाँ हैं (17)

اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ حَقَّ عَلَيۡهِمُ الۡقَوۡلُ فِىۡۤ اُمَمٍ قَدۡ خَلَتۡ

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का क़ौल पूरा हुआ उनके गिरोहों के साथ जो उनसे

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ‌ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا

पहले गुज़रे जिन्नात और इंसानों में से, बेशक वे

خٰسِرِيۡنَ ﴿۱۸﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوۡا‌ ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمۡ

ख़सारे में रहे (18) और हर एक के लिए उनके आमाल के ऐतबार से दर्जे होंगे, और ताकि अल्लाह सबको

اَعۡمَالَهُمۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ

उनके आमाल पूरे कर दे और उनपर ज़ुल्म न होगा (19) और जिस दिन इनकार करने वाले

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ ؕ اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ فِىۡ

आग के सामने लाए जाएंगे, तुम अपनी अच्छी चीज़ें अपनी दुनिया की

حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا وَاسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا‌ ۚ فَالۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ

ज़िंदगी में ले चुके और उनसे लुत्फ़ उठा चुके तो आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा

عَذَابَ الۡهُوۡنِ بِمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ

दी जाएगी इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ तकब्बुर

بِغَيۡرِ الۡحَقِّ وَبِمَا كُنۡتُمۡ تَفۡسُقُوۡنَ ؑ ﴿۲۰﴾ وَاذۡكُرۡ

किया करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी करते थे (20) और आद के

اَخَا عَادٍ ؕ اِذۡ اَنۡذَرَ قَوۡمَهٗ بِالۡاَحۡقَافِ وَقَدۡ خَلَتِ

भाई (हूद अलै०) को याद करो, जबकि उसने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में डराया, और डराने वाले

النُّذُرُ مِنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖۤ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا

उससे पहले भी गुज़र चुके थे और उसके बाद भी आए, कि अल्लाह के सिवा किसी की

اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۲۱﴾

इबादत न करो, मैं तुमपर एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ (21)

قَالُوۡۤا اَجِئۡتَنَا لِتَاۡفِكَنَا عَنۡ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاۡتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ

उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हमको हमारे माबूदो से फेर दो, पस अगर तुम सच्चे हो

اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ اِنَّمَا الۡعِلۡمُ عِنۡدَ

तो वह चीज़ हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो (22) उसने कहा कि उसका इल्म तो

اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمۡ مَّاۤ اُرۡسِلۡتُ بِهٖ وَلٰـكِنِّىۡۤ اَرٰٮكُمۡ قَوۡمًا

अल्लाह को है, और मैं तो तुमको वह पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है, लेकिन मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग

تَجۡهَلُوۡنَ ﴿۲۳﴾ فَلَمَّا رَاَوۡهُ عَارِضًا مُّسۡتَقۡبِلَ اَوۡدِيَتِهِمۡ ۙ

नादानी की बातें करते हो (23) पस जब उनहोंने उसको बादल की शक्ल में अपनी वादियों की तरफ़ आते हुए देखा

قَالُوۡا هٰذَا عَارِضٌ مُّمۡطِرُنَا ؕ بَلۡ هُوَ مَا اسۡتَعۡجَلۡتُمۡ بِهٖ ؕ

तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हमपर बरसेगा, नहीं बल्कि यह वह चीज़ है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे,

رِيۡحٌ فِيۡهَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۲۴﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَىۡءٍۢ بِاَمۡرِ

एक आँधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है (24) वह हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से उखाड़

رَبِّهَا فَاَصۡبَحُوۡا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمۡ ؕ كَذٰلِكَ نَجۡزِى

फेंकेगी, पस वह ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा वहाँ कुछ न नज़र आता था, मुजरिमों को हम

الۡقَوۡمَ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۲۵﴾ وَلَقَدۡ مَكَّنّٰهُمۡ فِيۡمَاۤ اِنۡ

इसी तरह सज़ा देते हैं (25) और हमने उन लोगों को उन बातों में क़ुदरत दी थी

مَّكَّنّٰكُمۡ فِيۡهِ وَجَعَلۡنَا لَهُمۡ سَمۡعًا وَّاَبۡصَارًا

कि तुमको उन बातों में क़ुदरत नहीं दी और हमने उनको कान और आँख

وَّاَفۡـِٕدَةً ۖ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ سَمۡعُهُمۡ وَلَاۤ اَبۡصَارُهُمۡ

और दिल दिए, मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आँखें

وَلَاۤ اَفۡـِٕدَتُهُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ اِذۡ كَانُوۡا يَجۡحَدُوۡنَ ۙ

और न दिल, क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٢٦﴾

और उनको उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे (26)

وَلَقَدۡ اَهۡلَكۡنَا مَا حَوۡلَـكُمۡ مِّنَ الۡقُرٰى وَصَرَّفۡنَا

और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियाँ भी तबाह कर दीं और हमने बार बार

الۡاٰيٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوۡلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيۡنَ

अपनी निशानियाँ बताई ताकि वे बाज़ आएं (27) पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने

اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ قُرۡبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلۡ ضَلُّوۡا

जिनको उन्होंने अल्लाह के तक़र्रुब के लिए माबूद बना रखा था, बल्कि वे सब उनसे

عَنۡهُمۡ ۚ وَذٰلِكَ اِفۡكُهُمۡ وَمَا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذۡ

खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी घड़ी हुई बातें थीं (28) और जब

صَرَفۡنَاۤ اِلَيۡكَ نَفَرًا مِّنَ الۡجِنِّ يَسۡتَمِعُوۡنَ الۡقُرۡاٰنَ ۚ

हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ़ ले आए, वे क़ुरआन सुनने लगे,

فَلَمَّا حَضَرُوۡهُ قَالُوۡۤا اَنۡصِتُوۡا ۚ فَلَمَّا قُضِىَ وَلَّوۡا

पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो, फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग

اِلٰى قَوۡمِهِمۡ مُّنۡذِرِيۡنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوۡا يٰقَوۡمَنَاۤ اِنَّا سَمِعۡنَا

डराने वाले बनकर अपनी क़ौम की तरफ़ वापस गए (29) उन्होंने कहा कि ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब

كِتٰبًا اُنۡزِلَ مِنۡۢ بَعۡدِ مُوۡسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ

सुनी है जो मूसा (अलै०) के बाद उतारी गई है, उन पेशीनगोइयों की तस्दीक़ करती हुई जो उसके

يَدَيۡهِ يَهۡدِىۡۤ اِلَى الۡحَـقِّ وَاِلٰى طَرِيۡقٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿٣٠﴾

पहले से मौजूद हैं, वह हक़ की तरफ़ और एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है (30)

يٰقَوۡمَنَاۤ اَجِيۡبُوۡا دَاعِىَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوۡا بِهٖ يَغۡفِرۡ لَـكُمۡ

ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की दावत क़ुबूल कर लो और उसपर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को

ركوع ٣ منزل ٦

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ

मुआफ़ कर देगा और तुमको दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा (31) और जो शख़्स

لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ

अल्लाह के दाई की दावत पर लब्बैक नहीं कहेगा तो वह ज़मीन में हरा नहीं सकता,

وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ

और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार न होगा, ऐसे लोग खुली हुई गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

में हैं (32) क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ

पैदा किया और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इसपर क़ुदरत रखता है

يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

कि वह मुर्दों को ज़िंदा करदे, हाँ वह हर चीज़ पर क़ादिर है (33)

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ

और जिस दिन ये इनकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, क्या यह

هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا

हक़ीक़त नहीं है? वे कहेंगे कि हाँ हमारे रब की क़सम! इरशाद होगाः फिर चखो

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ

अज़ाब उस इनकार के बदले जो तुम कर रहे थे (34) पस आप सब्र कीजिए जिस तरह

اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ

हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया, और उनके लिए जल्दी न कीजिए,

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا

जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देखेंगे जिस का उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे

سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ

दिन की एक घड़ी से ज़्यादा न रहे, यह पहुँचा देना है, पस वही लोग बरबाद होंगे जो नाफ़रमानी

الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ ع

करने वाले हैं (35)

منزل ٦

सूरह मुहम्मद मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, मगर आयत (13) रास्ते में हिजरत के वक़्त नाज़िल हुई, इसमें (38) आयतें और (4) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (95) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (47) नम्बर पर है और सूरह हदीद के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2475) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (558) कलिमात हैं

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ①

जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को राएगाँ कर दिया (1)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज़ को माना जो मुहम्मद (सल०) पर

مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ

उतारी गई है और वह हक़ है उनके रब की तरफ़ से, अल्लाह ने उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दीं

وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ② ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا

और उनका हाल दुरुस्त कर दिया (2) यह इस लिए कि जिन लोगों ने इनकार किया उन्होंने बातिल की

الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ

पैरवी की और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक़ की पैरवी की जो उनके रब की तरफ़ से है,

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ③ فَاِذَا

इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है (3) पस जब

لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۗ حَتّٰۤى اِذَاۤ

मुनकिरों से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनकी गर्दनें मारो, यहाँ तक कि जब

اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا

ख़ूब क़त्ल कर चुको तो उनको मज़बूत बाँध लो, फिर उसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है

فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ۛ وَلَوْ

या मुआवज़ा लेकर, यहाँ तक कि जंग अपने हथियार रख दे, यह है काम, और अगर

يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ

अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, मगर ताकि वे उन लोगों को एक दूसरे से

بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ

आज़माए, और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएंगे अल्लाह उनके आमाल को हरगिज़

اَعۡمَالَهُمۡ ﴿٤﴾	سَيَهۡدِيۡهِمۡ	وَيُصۡلِحُ	بَالَهُمۡ ﴿٥﴾

ज़ाए नहीं करेगा (4) वह उनकी रहनुमाई फ़रमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा (5)

وَيُدۡخِلُهُمُ الۡجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمۡ ﴿٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

और उनको जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है (6) ऐ ईमान वालो!

اٰمَنُوۡۤا اِنۡ تَنۡصُرُوا اللّٰهَ يَنۡصُرۡكُمۡ وَيُثَبِّتۡ اَقۡدَامَكُمۡ ﴿٧﴾

अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा (7)

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فَتَعۡسًا لَّهُمۡ وَاَضَلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ﴿٨﴾

और जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को ज़ाए कर देगा (8)

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَرِهُوۡا مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ فَاَحۡبَطَ اَعۡمَالَهُمۡ ﴿٩﴾

यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है, पस अल्लाह ने उनके आमाल को बरबाद कर दिया (9)

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ

क्या ये लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते

الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ ۫ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ

जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, अल्लाह ने उनको उखाड़ फैंका और मुनकिरों के सामने

اَمۡثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوۡلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَاَنَّ

उन्हीं की मिसालें आनी हैं (10) यह इस वजह से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है, और मुनकिरों का

الۡكٰفِرِيۡنَ لَا مَوۡلٰى لَهُمۡ ﴿١١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ

कोई कारसाज़ नहीं (11) बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا

और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बाग़ो में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें

الۡاَنۡهٰرُ ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يَتَمَتَّعُوۡنَ وَيَاۡكُلُوۡنَ كَمَا

बहती होंगी, और जिन लोगों ने इनकार किया वे फ़ायदा उठा रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि

تَاۡكُلُ الۡاَنۡعَامُ وَالنَّارُ مَثۡوًى لَّهُمۡ ﴿١٢﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ

चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है (12) और कितनी ही

قَرۡيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنۡ قَرۡيَتِكَ الَّتِىۡۤ اَخۡرَجَتۡكَ ۚ

बस्तियाँ हैं जो क़ुव्वत में आपकी उस बस्ती से ज़्यादा थीं जिसने आपको निकाला है,

اَهۡلَكۡنٰهُمۡ فَلَا نَاصِرَ لَهُمۡ ﴿۱۳﴾ اَفَمَنۡ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ

हमने उनको हलाक कर दिया पस कोई उनका मददगार न हुआ (13) क्या वह जो अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील

مِّنۡ رَّبِّهٖ كَمَنۡ زُيِّنَ لَهٗ سُوۡٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ ﴿۱۴﴾

पर है वह उस तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए ख़ुशनुमा बना दी गई है और वह अपनी ख़्वाहिशात पर चल रहे हैं (14)

مَثَلُ الۡجَنَّةِ الَّتِىۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ فِيۡهَاۤ اَنۡهٰرٌ مِّنۡ

जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है, उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें नहरें हैं

مَّآءٍ غَيۡرِ اٰسِنٍ‌ۚ وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ لَّبَنٍ لَّمۡ يَتَغَيَّرۡ طَعۡمُهٗ‌ۚ

ऐसे पानी की जिसमें तग़य्युर न होगा और नहरें होंगी दूध की जिसका मज़ा नहीं बदला होगा,

وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ خَمۡرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيۡنَ ۚ وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ

और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ होगी, और नहरें होंगी

عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمۡ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ

शहद की जो बिलकुल साफ़ होगा, और उनके लिए वहाँ हर क़िस्म के फल होंगे,

وَمَغۡفِرَةٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ ؕ كَمَنۡ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ

और उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी, क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे

وَسُقُوۡا مَآءً حَمِيۡمًا فَقَطَّعَ اَمۡعَآءَهُمۡ ﴿۱۵﴾ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ

और उनको खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएग, पस वह उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा (15) और उनमें से

يَّسۡتَمِعُ اِلَيۡكَ‌ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوۡا مِنۡ عِنۡدِكَ قَالُوۡا

कुछ लोग ऐसे हैं जो आपकी तरफ़ कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे आपके पास से बाहर जाते हैं

لِلَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۚ اُولٰٓئِكَ

तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा, यही लोग हैं

الَّذِيۡنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ ﴿۱۶﴾

जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और वह अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं (16)

وَالَّذِيۡنَ اهۡتَدَوۡا زَادَهُمۡ هُدًى وَّاٰتٰهُمۡ تَقۡوٰٮهُمۡ ﴿۱۷﴾

और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो अल्लाह उनको और ज़्यादा हिदायत देता है और उनको उनकी परहेज़गारी अता करता है (17)

فَهَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً‌ۚ

ये लोग तो बस इसके मुंतज़िर हैं कि क़ियामत उन पर अचानक आ जाए

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ

तो उसकी अलामतें ज़ाहिर हो चुकी हैं, पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का

ذِكْرٰىهُمْ ﴿۱۸﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ

मौक़ा कहाँ रहेगा? (18) पस जान लीजिए कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुआफ़ी माँगें

لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

अपने क़ुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए, और अल्लाह जानता है

مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿۱۹﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को (19) और जो लोग ईमान लाए हैं वे कहते हैं

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ

कि कोई सूरत क्यों नहीं उतारी जाती, पस जब एक वाज़ेह सूरत उतार दी गई

وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

और उसमें जंग का भी ज़िक्र था तो आपने देखा कि जिनके दिलों में

مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ

बीमारी है वे आपकी तरफ़ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत

الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿۲۰﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۟ فَاِذَا

छा गई है, पस ख़राबी है उनकी (20) हुक्म मानना है और भली बात कहना है, पस जब

عَزَمَ الْاَمْرُ ۟ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿۲۱﴾

मुआमले का क़तई फ़ैसला हो जाए तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता (21)

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي

पस अगर तुम फिर गए तो इसके सिवा तुम से कुछ मुतवक़्क़े नहीं कि तुम ज़मीन में

الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ

फ़साद करो और आपस के रिश्तों को क़तअ करो (22) यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने अपनी रहमत से

اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿۲۳﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

दूर किया, पस उनको बेहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया (23) क्या ये लोग क़ुरआन में

الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿۲۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

ग़ौर नहीं करते या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं (24) बेशक जो लोग

ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

पीठ फेर कर हट गए बाद इसके कि हिदायत उनपर वाज़ेह

الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۭ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾

हो गई, शैतान ने उनको फ़रेब दिया और अल्लाह ने उनको ढील देदी (25)

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ

यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि अल्लाह की उतारी हुई चीज़ को नापसंद करते हैं, कहा

سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

कि बअज़ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे, और अल्लाह उनकी राज़दारी को जानता है (26)

فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ

पस उस वक़्त क्या होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करते होंगे, उनके मुँह और उनकी पीठों पर

وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ

मारते हुए (27) यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज़ की पैरवी की जो अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाने वाली थी

وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ ع اَمْ حَسِبَ

और उन्होंने उसकी रिज़ा को नापसंद किया, पस अल्लाह ने उनके आमाल ज़ाए कर दिए (28) जिन लोगों के

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ

दिलों में बीमारी है क्या वे ख़्याल करते हैं कि अल्लाह उनके कीने को कभी

اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ

ज़ाहिर नहीं करेगा (29) और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस आप उनकी अलामतों से

بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۭ

उनको पहचान लेते, और आप उनके अंदाज़े-कलाम से ज़रूर उनको पहचान लोगे,

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है (30) और हम ज़रूर तुमको आज़माएंगे ताकि हम उन लोगों को

الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

जान लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और साबित क़दम रहने वाले हैं, और हम तुम्हारे हालात की जाँच करेंगे (31)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا

बेशक जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की

الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لَنْ يَّضُرُّوا

मुख़ालिफ़त की जबकि हिदायत उनपर वाज़ेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ नुक़सान

اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

न पहुँचा सकेंगे, और अल्लाह उनके आमाल को ढा देगा (32) ऐ ईमान वालो!

اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا

अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को

اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ

बरबाद न करो (33) बेशक जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के

سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ

रास्ते से रोका फिर वे मुनकिर ही मर गए, अल्लाह उनको कभी

لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ

न बख़्शेगा (34) पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख़्वास्त न करो, और तुम ही

الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है, और वे हरगिज़ तुम्हारे आमाल में कमी न करेगा (35)

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا

दुनिया की ज़िंदगी तो महज़ एक खेल तमाशा है, और अगर तुम ईमान लाओ और तक़्वा इख़्तियार करो

يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ

तो अल्लाह तुमको तुम्हारे अज्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुमसे न माँगेगा (36) अगर वह

يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर आख़िर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़्ल करने लगो, और अल्लाह तुम्हारे कीने को ज़ाहिर कर दे (37)

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَاۤءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ

हाँ तुम वे लोग हो कि तुमको अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाया

اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا

जाता है, पस तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़्ल करते हैं, और जो शख़्स बुख़्ल करता है तो वह

يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ

अपने ही से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है जबकि तुम मोहताज हो,

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا

और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आएगा फिर वे

اَمْثَالَكُمْ ٣٨

तुम जैसे न होंगे (38)

सूरह फ़त्ह मदनी है, हुदैबिया से वापसी के वक़्त रास्ते में नाज़िल हुई, इसमें (29) आयतें और (4) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (111) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (48) नम्बर पर है और सूरह जुमुआ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (2559) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (568) कलिमात हैं

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ ١ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا

बेशक हमने आपको खुली फ़तह दे दी (1) ताकि अल्लाह आपकी अगली

تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ

और पिछली ख़ताएं मुआफ़ कर दे और आपके ऊपर अपनी नेमत की तकमील कर दे,

وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ ٢ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ

और आपको सीधा रास्ता दिखाए (2) और आपको ज़बरदस्त

نَصْرًا عَزِيْزًا ٣ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ

मदद अता करे (3) वही है जिसने मोमिनों के दिलों में

قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ

इतमीनान उतारा; ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाए,

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا

और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह जानने वाला,

حَكِيْمًا ۙ ٤ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ

हिकमत वाला है (4) ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ

जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे, और ताकि उनकी

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا

बुराईयाँ उनसे दूर कर दे, और यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी

عَظِيْمًا ۙ ﴿٥﴾ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ

कामयाबी है (5) और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को

وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ

और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान

السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ

रखते हैं, बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है, और उनपर अल्लाह का

عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ

ग़ज़ब हुआ और उनपर उसने लानत की और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है, और वह बहुत बुरा

مَصِيْرًا ﴿٦﴾ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ठिकाना है (6) और आसमानों और ज़मीन की फ़ौजें अल्लाह ही की हैं,

وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ

और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (7) बेशक हमने आपको

شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

गवाही देने वाला और बशारत देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है (8) ताकि तुम लोग ईमान लाओ अल्लाह पर

وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً

और उसके रसूल पर और उसकी मदद करो और उसकी ताज़ीम करो, और तुम अल्लाह की तस्बीह करो

وَّاَصِيْلًا ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ

सुबह व शाम (9) जो लोग आपसे बैअत करते हैं वह दर हक़ीक़त अल्लाह से

اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ

बैअत करते हैं, अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है, फिर जो शख़्स उसको तोड़ेगा

فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ

तो उसके तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा, और जो शख़्स उस अहद को पूरा करेगा जो उसने

عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۧ ﴿١٠﴾ سَيَقُوْلُ

अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसको बड़ा अज्र अता फ़रमाएगा (10) जो देहाती

لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا

पीछे रह गए वे अब आपसे कहेंगे कि हमको हमारे अमवाल और हमारे

منزل ٧

ع ١٠

وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ

बाल बच्चों ने मशग़ूल कर रखा है पस आप हमारे लिए मुआफ़ी की दुआ फ़रमाएं, ये अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ

जो उनके दिलों में नहीं है, आप कह दीजिए कि कौन है जो अल्लाह के सामने

مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ

तुम्हारे लिए कुछ इख़्तियार रखता हो अगर वह तुमको कोई नुक़सान या कोई नफ़ा

بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾

पहुँचाना चाहे, बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो (11)

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ़

اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ

लौट कर न आएंगे, और यह ख़्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नज़र आया

وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿١٢﴾

और तुमने बहुत बुरे गुमान किए, और तुम बरबाद होने वाले लोग हो गए (12)

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا

और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुनकिरों के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ

दहकती आग तैयार कर रखी है (13) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है,

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ

वह जिसको चाहे बख़्शे और जिसको चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ

बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (14) जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए

اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ

चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो,

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا

वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें, कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते,

كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ

अल्लाह पहले ही यह फ़रमा चुका है, तो वे कहेंगे: बल्कि तुम लोग

تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٥

हम से हसद करते हो; बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं (15)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى

उन पीछे रह जाने वाले देहातियों से कह देना कि जल्द ही तुम्हें ऐसे लोगों के पास

قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ

(लड़ने के लिए) बुलाया जाएगा जो बड़े सख़्त जंगजू होंगे, कि या तो उनसे लड़ते रहो या वे इताअत क़ुबूल कर लें

فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ

उस वक़्त अगर तुम (जिहाद के इस हुक्म की) इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा, और अगर

تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا

तुम मुँह मोड़ोगे जैसा कि तुमने पहले मुँह मोड़ा था तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब

اَلِيْمًا ۝١٦ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ

देगा (16) अंधे आदमी पर (जिहाद न करने का) कोई गुनाह नहीं है, न लंगड़े आदमी पर

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

कोई गुनाह है और न बीमार आदमी पर गुनाह है, और जो शख़्स भी अल्लाह और उसके रसूल का

وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

कहना माने अल्लाह उस को ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٧ ع

बहती होंगी, और जो कोई मुँह मोड़ेगा उसे दर्दनाक अज़ाब देगा (17)

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ

यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हो गया जबकि वे आपसे दरख़्त के नीचे बैअत

تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ

कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था, पस उसने उनपर

السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝١٨ لا وَّمَغَانِمَ

सकीनत नाज़िल फ़रमाई और उनको इनआम में एक क़रीबी फ़तह देदी (18) और बहुत सी

كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝١٩

ग़नीमतें भी जिनको वे हासिल करेंगे, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (19)

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ

और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिनको तुम लोगे, पस यह उसने

لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ

तुमको फ़ौरी तौर पर दे दिया और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए; ताकि

اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝٢٠ ۙ

अहले-ईमान के लिए एक निशानी बन जाए और ताकि वे तुमको सीधे रास्ते पर चलाए (20)

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۭ

और एक फ़तह और भी है जिसपर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए, अल्लाह ने उसका इहाता कर रखा है,

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝٢١ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ

और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (21) और अगर यह मुनकिर लोग

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا

तुमसे लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर कर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते

وَّلَا نَصِيْرًا ۝٢٢ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ

और न मददगार (22) यह अल्लाह की सुन्नत है जो पहले से चली

قَبْلُ ښ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝٢٣ وَهُوَ

आ रही है, और आप अल्लाह की सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे (23) और वही है

الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे

بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۭ

रोक दिए बाद इसके कि तुमको उनपर क़ाबू दे दिया था,

وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝٢٤ هُمُ الَّذِيْنَ

और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा था (24) वही लोग हैं

كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ

जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिदे-हराम से रोका और क़ुर्बानी के जानवरों को भी

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۭ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ

रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुँचें, और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द

وَنِسَاۗءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ

और मुसलमान औरतें न होतीं जिनको तुम ला इल्मी में पीस डालते

فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ

फिर उनके बाअिस तुमपर बेख़बरी में इल्ज़ाम आता, ताकि अल्लाह जिसको चाहे

اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا

अपनी रहमत में दाख़िल करे, और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ

मुनकिर थे उनको हम दर्दनाक सज़ा देते (25) जबकि काफ़िरों ने

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ

अपने दिलों में ज़िद की ठान ली, वह भी जाहिलियत की

الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰي رَسُوْلِهٖ

ज़िद, तो अल्लाह ने अपनी सकीनत उतारी अपने रसूल पर

وَعَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا

और ईमान वालों पर और उसने तक़्वे का कलिमा उनसे चिपका दिया और वही

اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾ ع

उसके ज़्यादा मुस्तहिक़ और उसके अहल थे, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है (26)

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ

हक़ीक़त यह है कि अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया है जो वाक़िए के बिल्कुल मुताबिक़ है, तुम लोग इंशा अल्लाह ज़रूर

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ

मस्जिदे-हराम में इस तरह अमन व अमान के साथ दाख़िल होगे कि तुम (में से कुछ) ने

رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۭ فَعَلِمَ مَا لَمْ

अपने सरों को बेख़ौफ़ व ख़तर मुंडवाया होगा और (कुछ ने) बाल तराशे होंगे, अल्लाह वे बातें जानता है जो तुम्हें

تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

मालूम नहीं हैं, चुनाँचे उसने वह ख़्वाब पूरा होने से पहले एक क़रीबी फ़तह तय कर दी है (27)

هُوَ الَّذِيٓ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰى وَدِيۡنِ الۡحَقِّ

और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने-हक़ के साथ भेजा

لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا ؕ ﴿۲۸﴾

ताकि वह उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और (उसकी) गवाही देने के लिए अल्लाह काफ़ी है (28)

مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى

मुहम्मद (सल०) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उनके साथ हैं वे काफ़िरों के मुक़ाबले में

الۡكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡ تَرٰٮهُمۡ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبۡتَغُوۡنَ

सख़्त हैं (और) आपस में एक दूसरे के लिए रहम दिल हैं, तुम उन्हें देखोगे कि कभी रुकूअ में हैं और कभी सज्दे

فَضۡلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضۡوَانًا ؗ سِيۡمَاهُمۡ فِىۡ وُجُوۡهِهِمۡ

में हैं, (ग़र्ज़) अल्लाह के फ़ज़्ल और ख़ुशनूदी की तलाश में लगे हुए हैं, उनकी अलामतें सज्दे के असर से

مِّنۡ اَثَرِ السُّجُوۡدِ ؕ ذٰ لِكَ مَثَلُهُمۡ فِى التَّوۡرٰٮةِ ۛۚ

उनके चेहरों पर नुमायाँ हैं, ये हैं उनके वे औसाफ़ जो तौरात में मज़कूर हैं,

وَمَثَلُهُمۡ فِى الۡاِنۡجِيۡلِ ۛۚ كَزَرۡعٍ اَخۡرَجَ شَطۡـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ

और इंजील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे एक खेती हो जिसने अपनी कोंपल निकाली फिर उसको मज़बूत किया

فَاسۡتَغۡلَظَ فَاسۡتَوٰى عَلٰى سُوۡقِهٖ يُعۡجِبُ الزُّرَّاعَ

फिर वह मोटी हो गई, फिर अपने तने पर इस तरह सीधी खड़ी हो गई कि काश्तकार उससे ख़ुश होते हैं;

لِيَـغِيۡظَ بِهِمُ الۡكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

ताकि अल्लाह उन (की इस तरक़्क़ी) से काफ़िरों का दिल जलाए, ये लोग जो ईमान लाए और उन्होंने

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنۡهُمۡ مَّغۡفِرَةً وَّاَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿۲۹﴾ ع

नेक अमल किए हैं, अल्लाह ने उनसे मग़फ़िरत और ज़बरदस्त सवाब का वादा कर लिया है (29)

सूरह हुजुरात मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (18) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (106) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (49) नम्बर पर है और सूरह मुजादला के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1476) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (343) कलिमात हैं

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُقَدِّمُوۡا بَيۡنَ يَدَىِ اللّٰهِ

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल से

وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है (1)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊपर

صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

मत करो और न उसको उस तरह आवाज़ देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ

एक दूसरे को पुकारते हो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बरबाद हो जाएं और तुमको

لَا تَشْعُرُوْنَ ② اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ

ख़बर भी न हो (2) जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाज़ें

عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ

पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वे के लिए

قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

जाँच लिया है, उनके लिए मुआफ़ी है और बड़ा सवाब है (3)

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ

बेशक जो लोग आपको हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अकसर

لَا يَعْقِلُوْنَ ④ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ

समझ नहीं रखते (4) और अगर वे सब्र करते यहाँ तक कि आप ख़ुद उनके पास निकल कर

اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

आ जाएं तो यह उनके लिए बेहतर होता, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (5)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ

ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास ख़बर लाए

فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى

तो तुम अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुक़सान पहुँचा दो फिर तुमको

مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ⑥ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ

अपने किए पर पछताना पड़े (6) और जान लो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह का

اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

रसूल है, अगर वह बहुत से मुआमलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ

लेकिन अल्लाह ने तुमको ईमान की मुहब्बत दी और उसको तुम्हारे दिलों में

قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ

मरग़ूब बना दिया और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी से तुमको मुतनफ़्फ़िर कर दिया,

اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ

ऐसे ही लोग राहे-रास्त पर हैं (7) अल्लाह के फ़ज़्ल

وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨ وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ

और इनआम से, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (8) और अगर मुसलमानों के

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ

दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके दरमियान सुलह कराओ, फिर अगर

بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ

उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो

تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ

जो ज़्यादती करता है, यहाँ तक कि वे अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौटे, फिर अगर वह लौट आए

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ

तो उनके दरमियान अदल के साथ सुलह कराओ और इंसाफ़ करो, बेशक

اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ

अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है (9) मुसलमान सब भाई हैं

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

पस अपने भाईयों के दरमियान मिलाप कराओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर

تُرْحَمُوْنَ ۝١٠ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ

रहम किया जाए (10) ऐ ईमान वालो! न मर्द दूसरे मर्दों का

مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ

मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है कि वह उनसे बेहतर हों, और न औरतें

مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ

दूसरी औरतों का मज़ाक़ उड़ाएं, हो सकता है कि वह उनसे बेहतर हों,

وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ

और न एक दूसरे को तअ़्ना दो और न एक दूसरे को बुरे लक़ब से पुकारो,

بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ

ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना बहुत बुरी बात है, और जो

لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا

बाज़ न आएं तो वही लोग ज़ालिम हैं (11) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ

ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचो; क्योंकि

بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ

बअ़ज़ गुमान गुनाह होते हैं, और टोह में न लगो, और तुम में से कोई किसी की

بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ

ग़ीबत न करे, क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए

اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

भाई का गोश्त खाए, उसको तुम ख़ुद नागवार समझते हो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह

تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

मुआ़फ़ करने वाला, रहम करने वाला है (12) ऐ लोगो! हमने तुमको एक मर्द

مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ

और एक औरत से पैदा किया और तुमको क़ौमों और ख़ानदानों में तक़सीम कर दिया ताकि तुम

لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ

एक दूसरे को पहचानो, बेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार है,

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ

बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है (13) देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए,

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाए; बल्कि यूँ कहो कि हमने इस्लाम क़ुबूल किया, और अभी तक

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَاِنْ تُطِيْعُوا

ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ط

और उसके रसूल की इताअत करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा,

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (14) मोमिन तो बस वे हैं जो

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط اُولٰٓئِكَ

और अपनी जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही

هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ط

सच्चे लोग हैं (15) कह दीजिए: क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो;

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط

हालाँकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ

और अल्लाह हर चीज़ से बाख़बर है (16) ये लोग आप पर एहसान रखते हैं

اَنْ اَسْلَمُوْا ط قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ج

कि उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया है, कह दीजिए कि अपने इस्लाम का एहसान मुझपर न रखो,

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ

बल्कि अल्लाह का तुमपर एहसान है कि उसने तुमको ईमान की हिदायत दी,

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

अगर तुम सच्चे हो (17) बेशक अल्लाह आसमानों

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا

और ज़मीन की छुपी बातों को जानता है, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ ع

करते हो (18)

सूरह क़ाफ़ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर आयत (38) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (45) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (34) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (50) नम्बर पर है और सूरह मुर्सलात के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1494) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (357) कलिमात हैं

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ

क़ाफ़, क़सम है बा अज़्मत क़ुरआन की (1) बल्कि उनको तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से

مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ

एक डराने वाला आया, पस मुनकिरों ने कहा कि यह तअज्जुब की

عَجِيْبٌ ۚ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ

चीज़ है (2) क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे, यह दोबारा ज़िंदा होना

بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ

बहुत बईद है (3) हमको मालूम है जितना ज़मीन उनके अंदर से घटाती है,

وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا

और हमारे पास किताब है जिस में सब कुछ महफ़ूज़ है (4) बल्कि उन्होंने झुठलाया है जबकि वह

جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا

उनके पास आ चुका है, पस वे उलझन में पड़े हुए हैं (5) भला क्या उन्होंने अपने ऊपर

اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

आसमान को नहीं देखा कि हमने उसे कैसे बनाया और हमने उसे ख़ूबसूरती बख़्शी है और उसमें किसी क़िस्म के

مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا

रख़ने नहीं हैं (6) और ज़मीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़

رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۙ ﴿٧﴾

डाल दिए और उसमें हर क़िस्म की रौनक़ की चीज़ें उगाई (7)

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾ وَنَزَّلْنَا

समझाने को और याद दिलाने को, हर उस बंदे के लिए जो रुजू करे (8) और हमने आसमान से

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ

बरकत वाला पानी उतारा फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली

الْحَصِيْدِ ۙ﴿٩﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ﴿١٠﴾

फ़सलें (9) और खजूरों के लम्बे दरख़्त जिनमें तह-ब-तह ख़ोशे लगते हैं (10)

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ

बंदों की रोज़ी के लिए, और हमने उसके ज़रिए से मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा किया, इसी तरह ज़मीन से

الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ

निकलना होगा (11) उनसे पहले नूह (अलै०) की क़ौम और असहाबुर्रस

وَثَمُوْدُ ۙ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ﴿١٣﴾ وَّاَصْحٰبُ

और समूद (12) और आद और फ़िरऔन और लूत (अलै०) के भाई (13) और ऐका

الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

वाले और तुब्बा की क़ौम ने भी झुठलाया, सबने पैग़म्बरों को झुठलाया पस मेरा डराना उनपर वाक़े होकर रहा (14)

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ

क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज़ रहे, बल्कि ये लोग अज़-सरे-नौ पैदा करने की तरफ़ से

جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾ ع وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ

शुब्हे में हैं (15) और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके

بِهٖ نَفْسُهٗ ۚۖ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾

दिल में आती हैं, और हम रगे-गर्दन से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं (16)

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाएं और बाएं तरफ़

قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ

बैठे हैं (17) वह कोई बात नहीं निकालता मगर उसके सामने एक निगराँ तैयार

عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ

होता है (18) और मौत की बेहोशी हक के साथ आ पहुँची, यह वही

مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ

चीज़ है जिससे तू भागता था (19) और सूर फूंका जाएगा, यह डराने का

يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

दिन होगा (20) और हर शख़्स इस तरह आएगा कि उसके साथ एक हाँकने वाला है

وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا

और एक गवाही देने वाला (21) तुम इससे ग़फ़लत में रहे पस हमने तुम्हारे

عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ

ऊपर से परदा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज़ है (22) और उसके

قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ

साथ का फ़रिश्ता कहेगाः यह जो मेरे पास था हाज़िर है (23) जहन्नम में डाल दो

كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾

हर एक नाशुक्रे मुख़ालिफ़ को (24) नेकी से रोकने वाला, हदसे बढ़ने वाला, शुब्हे डालने वाला (25)

الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ

जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद बनाए, पस उसको डाल दो सख़्त

الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ

अज़ाब में (26) उसका साथी शैतान कहेगा कि ए हमारे रब! मैंने इसे सरकश नहीं बनाया; बल्कि

كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ

वह ख़ुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था (27) इरशाद होगाः मेरे सामने झगड़ा न करो,

وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ

और मैंने पहले ही तुमको अज़ाब से डरा दिया था (28) मेरे यहाँ बात

لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ

बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूँ (29) जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगेः

هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزْلِفَتِ

क्या तू भर गई, और वह कहेगी कि कुछ और भी है (30) और जन्नत

الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ

डरने वालों के क़रीब लाई जाएगी, कुछ दूर न रहेगी (31) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था,

لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

हर रुजू करने वाले और याद रखने वाले के लिए (32) जो शख़्स रहमान से डरा बिन देखे

وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ

और रुजू होने वाला दिल लेकर आया (33) दाख़िल हो जाओ उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा

الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

रहेगा (34) वहाँ उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें, और हमारे पास मज़ीद है (35)

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ

और हम उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, वे क़ुव्वत में उनसे

بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾ اِنَّ

ज़्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह (36) बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى

उसमें याददहानी है उस शख़्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह

السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ

कान लगाए मुतवज्जह होकर (37) और हमने आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا

और जो कुछ उनके दरमियान है छः दिन में बनाया और हमको कुछ तकान

مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ

नहीं हुई (38) पस जो कुछ वे कहते हैं उसपर सब्र कीजिए और अपने रब की तस्बीह कीजिए

رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ ۚ

हम्द के साथ सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले (39)

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ

और रात के हिस्सों में भी उसकी तस्बीह कीजिए, और सज्दों के बाद भी (40) और ज़रा तवज्जोह से सुनिए

يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ ۙ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ

जिस दिन एक पुकारने वाला एक क़रीबी जगह से पुकारेगा (41) उस दिन उस भयानक आवाज़ को

الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾ اِنَّا نَحْنُ

बराबर सुन लेंगे, यह दिन होगा मुर्दों के ज़िंदा होकर निकल पड़ने का (42) बेशक हम ही

نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ ۙ يَوْمَ تَشَقَّقُ

जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ़ लौटना है (43) जिस दिन ज़मीन उनपर से

الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾

खुल जाएगी, वे सब दोड़ते होंगे, यह इकटठा करना हमारे लिए आसान है (44)

نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا يَقُوۡلُوۡنَ وَمَآ اَنۡتَ عَلَيۡهِمۡ بِجَبَّارٍ

हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं, और आप उनपर जब्र करने वाले नहीं हो,

فَذَكِّرۡ بِالۡقُرۡاٰنِ مَنۡ يَّخَافُ وَعِيۡدِ ﴿٤٥﴾

पस आप क़ुरआन के ज़रिए उस शख़्स को नसीहत कीजिए जो मेरे डराने से डरे (45)

सूरह ज़ारियात मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (60) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (67) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (51) नम्बर पर है और सूरह अह्क़ाफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1239) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (360) कलिमात हैं

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرۡوًا ﴿١﴾ فَالۡحٰمِلٰتِ وِقۡرًا ﴿٢﴾ فَالۡجٰرِيٰتِ

क़सम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं (1) फिर वे उठा लेती हैं बोझ (2) फिर वह चलने लगती हैं

يُسۡرًا ﴿٣﴾ فَالۡمُقَسِّمٰتِ اَمۡرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوۡعَدُوۡنَ

आहिस्ता (3) फिर अलग अलग करती हैं मामला (4) बेशक तुम से जो वादा किया जा रहा है

لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَّاِنَّ الدِّيۡنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ

वह सच है (5) और बेशक इंसाफ़ होना ज़रूर है (6) क़सम है जालदार

الۡحُبُكِ ﴿٧﴾ اِنَّكُمۡ لَفِىۡ قَوۡلٍ مُّخۡتَلِفٍ ﴿٨﴾ يُّؤۡفَكُ عَنۡهُ

आसमान की (7) बेशक तुम एक इख़्तिलाफ़ में पड़े हुए हो (8) उस से वही फिरता है

مَنۡ اُفِكَ ﴿٩﴾ قُتِلَ الۡخَرّٰصُوۡنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ

जो फेरा गया (9) मारे गए अटकल से बातें करने वाले (10) जो ग़फ़लत में

غَمۡرَةٍ سَاهُوۡنَ ﴿١١﴾ يَسۡـَٔلُوۡنَ اَيَّانَ يَوۡمُ الدِّيۡنِ ﴿١٢﴾

भूले हुए हैं (11) वे पूछते हैं कि कब है बदले का दिन? (12)

يَوۡمَ هُمۡ عَلَى النَّارِ يُفۡتَنُوۡنَ ﴿١٣﴾ ذُوۡقُوۡا فِتۡنَتَكُمۡ

जिस दिन वे आग पर रखे जाएंगे (13) चखो मज़ा अपनी शरारत का,

هٰذَا الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ﴿١٤﴾ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ

यह है वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे (14) बेशक डरने वाले लोग बाग़ों

جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿١٥﴾ اٰخِذِيۡنَ مَآ اٰتٰهُمۡ رَبُّهُمۡ اِنَّهُمۡ

और चश्मों में होंगे (15) ले रहे होंगे जो कुछ उनके रब ने उनको दिया, यक़ीनन वह

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ

इससे पहले नेकी करने वाले थे (16) वे रातों को कम

مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾ وَفِيْٓ

सोते थे (17) और सहर के वक़्तों में वे मुआफ़ी माँगते थे (18) और उनके

اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ

माल में साइल और महरूम का हिस्सा था (19) और ज़मीन में निशानियाँ हैं यक़ीन करने

لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَفِي

वालों के लिए (20) और ख़ुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं (21) और आसमान में

السَّمَاۗءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَوَرَبِّ السَّمَاۗءِ

तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है (22) पस आसमान और ज़मीन के

وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾ هَلْ

रब की क़सम! वह यक़ीनी है जैसा कि तुम बोलते हो (23) क्या आपको

اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِذْ دَخَلُوْا

इब्राहीम (अलै०) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की बात पहुँची (24) जब वे उसके पास

عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

आए फिर उसको सलाम किया, उसने कहाः तुम लोगों को भी सलाम है, कुछ अजनबी लोग हैं (25)

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۗءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ

फिर वे अपने घर की तरफ़ चले और एक बछड़ा भुना हुआ ले आए (26) फिर उसको उनके पास रखा,

قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا

उसने कहाः आप लोग खाते क्यों नही? (27) फिर वह दिल में उनसे डरे, उन्होंने कहाः

لَا تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ

डरिए मत, और उनको समझदार लड़के की बशारत दी (28) फिर उसकी बीवी

فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾

बोलती हुई आई फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बाँझ (29)

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

उन्होंने कहा कि ऐसा ही फ़रमाया है तुम्हारे रब ने, बेशक वह हिकमत वाला, जानने वाला है (30)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ

इब्राहीम (अलै०) ने कहा कि ऐ फ़रिश्तो! तुमको क्या काम दर्पेश है? (31) उन्होंने कहा कि हम

اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً

एक मुजरिम क़ौम (क़ौमे-लूत) की तरफ़ भेजे गए हैं (32) ताकि उनपर पकी हुई मिट्टी के

مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾

पत्थर बरसाएं (33) जो निशान लगाए हुए हैं आपके रब के पास उन लोगों के लिए जो हद से गुज़रने वाले हैं (34) फिर

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَا

वहाँ जितने ईमान वाले थे उनको हमने निकाल दिया (35) पस वहाँ

وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا

हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम घर न पाया (36) और हमने उसमें

فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾

एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं (37)

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ

और मूसा (अलै०) में भी निशानी है जबकि हमने उसको फ़िरऔन के पास एक खुली हुई दलील

مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

के साथ भेजा (38) तो वह अपनी क़ुव्वत के साथ फिर गया और कहा कि यह जादूगर है या मजनूँ है (39)

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾

पस हमने उसको और उसकी फ़ौज को पकड़ा फिर उनको समुंदर में फैंक दिया और वह क़ाबिले-मलामत था (40)

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ

और आद में भी निशानी है जबकि हमने उनपर एक बे नफ़ा हवा भेज दी (41) वह जिस चीज़ पर

مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ

से भी गुज़री उसको रेज़ा रेज़ा करके छोड़ दिया (42) और समूद में

ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا

भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के लिए फ़ायदा उठा लो (43) पस उन्होंने अपने रब के

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾

हुक्म से सरकशी की, पस उनको कड़क ने पकड़ लिया और वे देख रहे थे (44)

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

फिर वह न उठ सके और न अपना बचाव कर सके (45)

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۖ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

और नूह (अलै०) की क़ौम को भी इससे पहले, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे (46)

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ

और हमने आसमान को अपनी क़ुदरत से बनाया और हम क़ुशादा करने वाले हैं (47) और ज़मीन को

فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हमने बिछाया, पस क्या ही ख़ूब बिछाने वाले हैं (48) और हमने हर चीज़ को

خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى

जोड़ा जोड़ा बनाया है; ताकि तुम ध्यान करो (49) पस दौड़ो अल्लाह की

اللّٰهِ ۖ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ

तरफ़, मैं उसकी तरफ़ से एक खुला डराने वाला हूँ (50) और अल्लाह के साथ

اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۖ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾ كَذٰلِكَ

कोई और माबूद न बनाओ, मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूँ (51) इसी तरह

مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ

उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसको उन्होंने जादूगर या मजनूँ

اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾

न कहा हो (52) क्या यह एक दूसरे को इसकी वसीयत करते चले आ रहे हैं; बल्कि ये सरकश लोग हैं (53)

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى

पस आप उनसे ऐराज़ कीजिए, आप पर कुछ इल्ज़ाम नहीं (54) और समझाते रहिए; क्योंकि समझाना

تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا

ईमान वालों को नफ़ा देता है (55) और मैं ने जिन्न और इंसान को सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया है

لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ

कि वे मेरी ही इबादत करें (56) मैं उनसे रिज़्क़ नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि

يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

वह मुझको खिलाएं (57) बेशक अल्लाह ही रोज़ी देने वाला, बड़ी क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है (58)

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ

पस जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भरे थे,

فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ

पस वे मुझसे जल्दी न करें (59) पस मुनकिरों के लिए ख़राबी है उनके

يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾

उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है (60)

सूरह तूर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (49) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (76) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (52) नम्बर पर है और सूरह सज्दा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1500) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (312) कलिमात हैं

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾

क़सम है तूर की (1) और लिखी हुई किताब की (2) खुले हुए वर्क़ में (3)

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ

और आबाद घर की (4) और ऊँची छत की (5) और उबलते हुए

الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ مَّا لَهٗ

समुंदर की (6) बेशक आपके रब का अज़ाब वाक़े होकर रहेगा (7) उसको कोई

مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّتَسِيْرُ

टालने वाला नहीं (8) जिस दिन आसमान डगमगाएगा (9) और पहाड़

الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

चलने लगेंगे (10) पस ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए (11)

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ

जो बातें बनाते हैं खेलते हुए (12) जिस दिन वह जहन्नम की

اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ

आग की तरफ़ धकेले जाएंगे (13) यह है वह आग जिसको तुम

بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾

झुठलाते थे (14) क्या यह जादू है या तुमको नज़र नहीं आता (15)

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ

उसमें दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो तुम्हारे लिए बराबर है,

اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ

तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे (16) बेशक मुत्तक़ी लोग बाग़ों

جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ

और नेमतों में होंगे (17) वे ख़ुश दिल होंगे उन चीज़ों से जो उनके रब ने उन्हें दी होंगी, और उनके

رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا

रब ने उनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया (18) खाओ और पियो मज़े के साथ अपने

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ

आमाल के बदले में (19) तकिया लगाए हुए सफ़-बसफ़ तख़्तों के ऊपर,

وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ

और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें उनसे बियाह देंगे (20) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी

ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ

उनकी राह पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे और उनके

مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾

अमल में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे, हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है (21)

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُوْنَ

और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त उनको बराबर देते रहेंगे (22) उनके दरमियान

فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوْفُ

शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे, जो लग़्वियत और गुनाह से पाक होगी (23) और उनकी ख़िदमत में

عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾ وَاَقْبَلَ

लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे, गोया कि वह हिफ़ाज़त से रखे हुए मोती हैं (24) और वे एक दूसरे

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا

की तरफ़ मुतवज्ज होकर बात करेंगे (25) वे कहेंगे: हम इससे पहले

قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا

अपने घर वालों में डरते रहते थे (26) पस अल्लाह ने हम पर फ़ज़्ल फ़रमाया

وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ

और हमको सख़्त गर्मी के अज़ाब से बचा लिया (27) हम इससे पहले उसी को पुकारते थे,

اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ

बेशक वह नेक सुलूक वाला, मेहरबान है (28) पस आप नसीहत करते रहिए, अपने रब के

رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ

फ़ज़्ल से आप न काहिन हो और न मजनूँ (29) क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है,

نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ

हम उस पर हादसा-ए-मौत के मुंतज़िर हैं (30) कह दीजिए कि इंतिज़ार करो, मैं भी

مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ

तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वालों में से हूँ (31) क्या उनकी अक़्लें उनको यही

بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ

सिखाती हैं या ये सरकश लोग हैं (32) क्या वे कहते हैं कि यह क़ुरआन को ख़ुद बना लाया है;

بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا

बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते (33) पस वे उसके मानिंद कोई कलाम लेकर आएं अगर वे

صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

सच्चे हैं (34) क्या वे किसी ख़ालिक़ के बग़ैर पैदा हो गए या वे ख़ुद ही ख़ालिक़ हैं (35)

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾

क्या आसमानों व ज़मीन को उन्होंने पैदा किया है; बल्कि वे यक़ीन नहीं रखते (36)

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

क्या उनके पास आपके रब के ख़ज़ाने हैं या वे दारोग़ा हैं (37)

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ

क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिसपर वे बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾

खुली दलील ले आए (38) क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे (39)

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ

क्या आप उनसे मुआवज़ा माँगते हो कि वह तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं (40) क्या

ع ٤٨

منزل ٧

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ

उनके पास ग़ैब है कि वे लिख लेते हैं (41) क्या वे कोई तदबीर

كَيْدًا ۭ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ

करना चाहते हैं, पस इनकार करने वाले ख़ुद ही उस तदबीर में गिरफ़्तार होंगे (42) क्या अल्लाह के सिवा

اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَاِنْ

उनका और कोई माबूद है, अल्लाह पाक है उनके शरीक बनाने से (43) और अगर वे

يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ

आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह-ब-तह

مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ

बादल है (44) पस उनको छोड़ दीजिए यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से दो-चार हों जिस में उनके होश

يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا

जाते रहेंगे (45) जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ काम न आएंगी

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا

और न उनको कोई मदद मिलेगी (46) और उन ज़ालिमों के लिए इसके सिवा

دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ

भी अज़ाब है; लेकिन उनमें से अकसर नहीं जानते (47) और आप सब्र के साथ

لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ

अपने रब के फ़ैसले का इंतिज़ार कीजिए, बेशक आप हमारी निगाह में हो, और अपने रब की तस्बीह कीजिए उसकी हम्द के साथ

تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾

जिस वक़्त आप उठते हो (48) और रात को भी उसकी तस्बीह कीजिए और सितारों के पीछे हटने के वक़्त भी (49)

सूरह नज्म मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर आयत (32) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (62) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (23) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (53) नम्बर पर है और सूरह इख़्लास के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1405) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (360) कलिमात हैं

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾

क़सम है सितारे की जब वह ग़ुरूब हो (1) तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है (2)

منزل ٧

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾

और वह अपने जी से नहीं बोलता (3) यह एक वह्य है जो उसपर भेजी जाती है (4)

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ وَهُوَ

उसको ज़बरदस्त क़ुव्वत वाले ने तालीम दी है (5) आक़िल व दाना ने, फिर वह नमूदार हुआ (6) और वह

بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ

आसमान के ऊँचे किनारे पर था (7) फिर वह नज़दीक हुआ पस वह उतर आया (8) फिर दो कमानों के

قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ﴿٩﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ﴿١٠﴾ مَا

बराबर या उससे भी कम फ़ासला रह गया (9) फिर अल्लाह ने वह्य की अपने बंदे की तरफ़ जो वह्य की (10) झूठ नहीं कहा

كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿١١﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾

रसूल के दिल ने जो उसने देखा (11) अब क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है (12)

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾

और उसने एक बार और भी (13) उसको सिदरतुल-मुंतहा के पास उतरते देखा है (14)

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾

उसके पास ही बहिश्त है, आराम से रहने की (15) जबकि सिदरा (बेरी) पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था (16)

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ

निगाह बहकी नहीं और ना हद से बढ़ी (17) उसने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियाँ

الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ

देखीं (18) भला तुमने लात और उज़्ज़ा पर ग़ौर किया है (19) और तीसरे एक

الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ

मनात पर (20) क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और अल्लाह के लिए बेटियाँ (21) यह तो बहुत बेढंगी

ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾ اِنْ هِیَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ

तक़सीम हुई (22) यह महज़ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

रख लिए हैं, अल्लाह ने उनके हक़ में कोई दलील नहीं उतारी, वह महज़ गुमान की

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ

पैरवी कर रहे हैं और नफ़्स की ख़्वाहिश की; हालाँकि उनके पास उनके रब की

رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ

जानिब से हिदायत आ चुकी है (23) क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे (24) पस अल्लाह के

الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ

इख़्तियार में है आख़िरत और दुनिया (25) और आसमानों में कितने फ़रिश्ते हैं

لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ

जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती, मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाज़त दे

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

जिसको वह चाहे और पसंद करे (26) बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते

لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

वे फ़रिश्तों को औरत का नाम देते हैं (27) हालाँकि उनके पास उसपर

مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ

कोई दलील नहीं, वह महज़ गुमान पर चल रहे हैं, और गुमान

لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾ۚ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ۵

हक़ीक़ी बात में ज़रा भी मुफ़ीद नहीं (28) पस आप ऐसे शख़्स से ऐराज़ कीजिए जो हमारी नसीहत से

عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ؕ ذٰلِكَ

मुँह मोड़े और वह दुनिया की ज़िंदगी के सिवा और कुछ न चाहे (29) उनकी समझ

مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

बस यहीं तक पहुँची है, आपका रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से

عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا

भटका हुआ है और वह उसको भी ख़ूब जानता है जो राहे-रास्त पर है (30) और अल्लाह ही का है जो कुछ

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا

आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है; ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को

بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ۚ

उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से (31)

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ

जो कि बड़े गुनाहों से और बे हयाई से बचते हैं मगर कुछ आलूदगी,

اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ

बेशक आपका रब बड़ी बख़्शिश वाला है, वह तुमको ख़ूब जानता है जबकि उसने तुमको

مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ

ज़मीन से पैदा किया, और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे की शक्ल में थे,

فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿۳۲﴾ اَفَرَءَيْتَ

तो तुम अपने को मुक़द्दस न समझो, वह तक़वे वालों को ख़ूब जानता है (32) भला आपने

الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿۳۳﴾ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿۳۴﴾ اَعِنْدَهٗ

उस शख़्स को देखा जिसने ऐराज़ किया (33) थोड़ा सा दिया और रुक गया (34) क्या उसके पास

عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿۳۵﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ

ग़ैब का इल्म है पस वह देख रहा है (35) क्या उसको ख़बर नहीं पहुँची उस बात की जो मूसा (अलै०) के

مُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿۳۷﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ

सहीफ़ों में है (36) और इब्राहीम (अलै०) की जिसने अपना क़ौल पूरा कर दिया (37) कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का

وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿۳۸﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ وَاَنَّ

बोझ नहीं उठाएगा (38) और यह कि इंसान के लिए वही है जो उसने कोशिश की (39) और यह कि

سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿۴۰﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿۴۱﴾

उस की कोशिश जल्द ही देखी जाएगी (40) फिर उसको पूरा पूरा बदला दिया जाएगा (41)

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿۴۲﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿۴۳﴾

और यह कि सबको आप के रब तक पहुँचना है (42) और बेशक वही हंसाता है और रुलाता है (43)

وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ﴿۴۴﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ

और वही मारता है और ज़िंदगी देता है (44) और उसी ने दोनों क़िस्म

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۴۵﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿۴۶﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ

नर और मादा को पैदा किया (45) एक बूंद से जबकि वह टपकाई जाए (46) और उसी के ज़िम्मे है

النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿۴۷﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿۴۸﴾ وَاَنَّهٗ

दूसरी बार उठाना (47) और उसी ने दौलत दी और सरमाया महफ़ूज़ रखा (48) और वही

هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿۴۹﴾ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادًا الْاُوْلٰى ﴿۵۰﴾

शिअ्रा का रब है (49) और अल्लाह ने हलाक किया आद अव्वल को (50)

وَثَمُوْدَاْ فَمَآ اَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ

और समूद को, फिर किसी को बाक़ी न छोड़ा (51) और क़ौमे-नूह को उससे पहले, बेशक वे

كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾

निहायत ज़ालिम और सरकश थे (52) और उलटी हुई बस्तियों को भी फैंक दिया (53)

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾

पस उनको ढाँक लिया जिस चीज़ ने ढाँक लिया (54) पस तुम अपने रब के किन किन करिश्मों को झुठलाओगे (55)

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾

यह एक डराने वाला है पहले डराने वालों की तरह (56) क़रीब आने वाली क़रीब आ गई (57)

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ هٰذَا

अल्लाह के सिवा कोई उसको हटाने वाला नहीं (58) क्या तुमको

الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾

इस बात से तअज्जुब होता है (59) और तुम हंसते हो और तुम रोते नहीं (60)

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۩ ﴿٦٢﴾

और तुम तकब्बुर करते हो (61) पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी की इबादत करो (62)

सूरह क़मर मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई, मगर आयत (44 से 46 तक) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (55) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (37) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (54) नम्बर पर है और सूरह तारिक़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (342) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (1423) हुरूफ़ हैं

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً

क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया (1) और वे कोई भी निशानी देखें तो वे ऐराज़ ही

يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا

करेंगे और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है (2) और उन्होंने झुठला दिया और अपनी ख़्वाहिशों की

اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ

पैरवी की और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है (3) और उनको वे ख़बरें

الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا

पहुँच चुकी हैं जिसमें काफ़ी इबरत है (4) निहायत दर्जे की हिकमत, मगर तंबीहात

تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى

उनको फ़ायदा नहीं देतीं (5) पस उनसे ऐराज़ कीजिए, जिस दिन पुकारने वाला एक नागवार

شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ

चीज़ की तरफ़ पुकारेगा (6) आँखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल

الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٧ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى

पड़ेंगे गोया कि वे बिखरी हुई टिड्डियाँ हैं (7) भागते हुए पुकारने वाले

الدَّاعِ ۭ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨ كَذَّبَتْ

की तरफ़, मुनकिर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है (8) उनसे पहले

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ

नूह (अलै०) की क़ौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तकज़ीब की और कहा कि दीवाना है

وَّازْدُجِرَ ۝٩ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

और झिड़क दिया (9) पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हूँ पस तू बदला ले (10)

فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَاۗءِ بِمَاۗءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١ وَّفَجَّرْنَا

पस हमने आसमान के दरवाज़े मूसलाधार बारिश से खोल दिए (11) और ज़मीन से

الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَاۗءُ عَلٰٓي اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

चश्मे बहा दिए, पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुकद्दर हो चुका था (12)

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰي ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ

और हमने उसको एक तख़्तों और कीलों वाली पर उठा लिया (13) वह हमारी आँखों के सामने चलती रही,

جَزَاۗءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٤ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ

उस शख़्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाक़दरी की गई थी (14) और उसको हमने निशानी के लिए छोड़ दिया, फिर कोई है

مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٥ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٦ وَلَقَدْ

सोचने वाला (15) फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना (16) और हमने

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧ كَذَّبَتْ

क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला? (17) आद ने

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٨ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

झुठलाया तो कैसा था मेरा अज़ाब और मेरा डराना (18) हमने उनपर

رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ

एक सख़्त हवा भेजी मुसलसल नहूसत के दिन (19) वह लोगों को उखाड़ फैंकती थी

كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

जैसे कि वह उखड़े हुए खजूरों के तने हों (20) फिर कैसा था मेरा अज़ाब

وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ

और मेरा डराना (21) और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत

مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا

हासिल करने वाला (22) समूद ने डर सुनाने को झुठलाया (23) पस उन्होंने कहा कि क्या हम अपने ही

وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾ ءَاُلْقِيَ

अंदर के एक आदमी के कहने पर चलेंगे, इस सूरत में तो हम ग़लती और जुनून में पड़ जाएंगे (24) क्या हम सब में से

الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾

उसी पर नसीहत उतरी है; बल्कि वह झूठा है बड़ा बनने वाला (25)

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا

अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला (26) हम ऊँटनी को

النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ

भेजने वाले हैं उनके लिए आज़माइश बनाकर, पस आप उनका इंतिज़ार कीजिए और सब्र कीजिए (27) और उनको आगाह कर दीजिए

اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا

कि पानी उनमें बाँट दिया गया है, हर एक बारी पर हाज़िर हो (28) फिर उन्होंने अपने

صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊँटनी को काट डाला (29) फिर कैसा था मेरा अज़ाब

وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا

और मेरा डराना (30) हमने उनपर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रोंदी हुई

كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

बाढ़ की तरह होकर रह गए (31) और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया,

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला (32) लूत (अलै०) की क़ौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया (33)

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَٰهُم

हमने उनपर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ़ लूत के घर वाले उससे बचे, उनको हमने बचा लिया

بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى مَن

सहर के वक़्त (34) अपनी जानिब से फ़ज़्ल करके, हम इसी तरह बदला देते हैं उसको

شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا۟ بِٱلنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

जो शुक्र करे (35) और लूत (अलै॰) ने उनको हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने हमारे डराने में झगड़े पैदा किए (36)

وَلَقَدْ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِۦ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا۟

और वह उसके मेहमानों को उससे लेने लगे पस हमने उनकी आँखें मिटा दीं, अब चखो

عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ

मेरा अज़ाब और मेरा डराना (37) और सुबह सवेरे उनपर अज़ाब आ पड़ा

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا

जो ठहर चुका था (38) अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना (39) और हमने क़ुरआन को नसीहत

ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ جَآءَ ءَالَ

हासिल करने के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला (40) और फ़िरऔन वालों के पास

فِرْعَوْنَ ٱلنُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَٰهُمْ

पहुँचे डराने वाले (41) उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उनको

أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُو۟لَٰٓئِكُمْ

एक ग़ालिब और क़ुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा (42) क्या तुम्हारे मुनकिर उन लोगों से बेहतर हैं

أَمْ لَكُم بَرَآءَةٌ فِى ٱلزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ

या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में मुआफ़ी लिख दी गई है (43) क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी

جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ ٱلْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ ٱلدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

जमाअत हैं जो ग़ालिब रहेंगे (45) जल्द ही यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीठ फेर कर भागेगी (44)

بَلِ ٱلسَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَٱلسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ﴿٤٦﴾

बल्कि क़ियामत के दिन उनके वादे का वक़्त है, और क़ियामत बड़ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज़ है (46)

إِنَّ ٱلْمُجْرِمِينَ فِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُونَ

बेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअक़्ली में हैं (47) जिस दिन वे मुँह के बल

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا

आग में घसीटे जाएंगे, चखो मज़ा आग का (48) बेशक हमने

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ

हर चीज़ को पैदा किया है अंदाज़े से (49) और हमारा हुक्म बस यकबारगी आ जाएगा

كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ

जैसे आँख का झपकना (50) और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को फिर क्या

مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَكُلُّ

कोई है सोचने वाला (51) और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है (52) और हर

صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ

छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है (53) बेशक डरने वाले बाग़ों में और नहरों में

وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

होंगे (54) बैठे सच्ची बैठक में, क़ुदरत वाले बादशाह के पास (55)

सूरह रहमान मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (78) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतिबार से (97) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतिबार से (55) नम्बर पर है और सूरह रअ्द के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1636) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (351) कलिमात हैं

اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ

रहमान ने (1) क़ुरआन की तालीम दी (2) उसने इंसान को पैदा किया (3) उसको बोलना

الْبَيَانَ ﴿٤﴾ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَّالنَّجْمُ

सिखाया (4) सूरज और चाँद के लिए एक हिसाब है (5) और सितारे

وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾

और दरख़्त सज्दा करते हैं (6) और उसने आसमान को ऊँचा किया और उसने तराज़ू रख दिए (7)

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ

कि तुम तौलने में ज़्यादती न करो (8) और इंसाफ़ के साथ सीधी तराज़ू तौलो

وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾

और तौल में न घटाओ (9) और उसने मख़्लूक़ के लिए ज़मीन बनाई (10)

فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ

उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर ग़िलाफ़ होता है (11) और भुस वाले

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अनाज भी हैं, और ख़ुश्बूदार फूल भी (12) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को

تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾

झुठलाओगे (13) उसने पैदा किया इंसान को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से (14)

وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया (15) फिर तुम अपने रब की

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

किन किन नेमतों को झुठलाओगे (16) वह मालिक है दोनो मशरिक़ व मग़रिब का (17)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (18) उसने चलाए दो दरिया,

يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

मिलकर चलने वाले (19) दोनों के दरमियान एक परदा है जिससे वह तजावुज़ नहीं करते (20) फिर तुम अपने रब की

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

किन किन नेमतों को झुठलाओगे (21) उन दोनों से मोती और मोंगा निकलता है (22)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (23) और उसी के हैं जहाज़, समुंदर में

فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾

ऊँचे खड़े हुए जैसे पहाड़ (24) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (25)

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ

जो भी ज़मीन पर है वह फ़ना होने वाला है (26) और आपके रब की ज़ात बाक़ी रहेगी,

ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अज़्मत वाली और इज़्ज़त वाली (27) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को

تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْئَلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط

झुठलाओगे (28) उसी से माँगते हैं जो आसमानों में और ज़मीन में हैं,

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

हर रोज़ उसका एक काम है (29) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (30)

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا

हम जल्दी फ़ारिग़ होने वाले हैं तुम्हारी तरफ़ से ऐ दो भारी क़ाफ़िलो (31) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ

झुठलाओगे (32) ऐ जिन्नात और इंसान के गिरोह! अगर तुमसे हो सके

اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

कि तुम आसमानों और ज़मीन की हुदूद से निकल जाओ

فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ

तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बग़ैर सनद के (33) फिर तुम अपने रब की किन किन

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ

नेमतों को झुठलाओगे। (34) तुम पर छोड़े जाएंगे आग के

نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا

शोले और धुआँ तो तुम बचाव न कर सकोगे (35) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً

झुठलाओगे (36) फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुर्ख़

كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾

हो जाएगा (37) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (38)

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾

पस उस दिन किसी इंसान या जिन से उसके गुनाह के बारे में पूछ ना होगी (39)

فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (40) मुजरिम पहचान लिए जाएंगे

بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ

अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पांव से (41) फिर तुम

اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا

अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (42) यह जहन्नम है जिसको मुजरिम लोग झूठ

اَلْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾

बताते थें (43) वे फिरेंगे उसके दरमियान और खौलते पानी के दरमियान (44)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (45) और जो शख़्स अपने रब के सामने

مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾

खड़े होने से डरे उसके लिए दो बाग़ हैं (46) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (47)

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾

दोनों बहुत शाख़ों वाले (48) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (49)

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

उनके अंदर दो चश्मे जारी होंगे (50) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾

झुठलाओगे (51) दोनों बाग़ों में हर फल की दो क़िस्में (52)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (53) वे तकिया लगाए ऐसे बिछोनों पर बैठे होंगे

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे, और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा (54)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (55) उनमें नीची निगाह वाली औरतें

الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾

होंगी जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुआ होगा और न किसी जिन ने (56)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (57) वह ऐसी होंगी जैसे कि याक़ूत

وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾

और मरजान (58) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (59)

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ

नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है (60) फिर तुम

وقف لازم ع ۲

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا

अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (61) और उनके सिवा दो बाग़

جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾

और हैं (62) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (63)

مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾

दोनों गहरे सब्ज़ सियाही माईल (64) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (65)

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

उनमें दो चश्मे होंगे उबलते हुए (66) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को

تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

झुठलाओगे (67) उनमें फल और खजूर और अनार होंगे (68)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (69) उनमें ख़ूबसीरत, ख़ूबसूरत

حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ

औरतें होंगी (70) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (71) हूरें

مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

ख़ेमों में रहने वालियाँ (72) फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾

को झुठलाओगे (73) उनसे पहले उनको न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन ने (74)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى

फिर तुम अपने रब की किन किन नेमतों को झुठलाओगे (75) तकिया लगाए

رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

सब्ज़ मसनदों पर और क़ीमती नफ़ीस बिछोने पर (76) फिर तुम अपने रब की

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ

किन किन नेमतों को झुठलाओगे (77) बड़ा बाबरकत है आपके रब का नाम, बड़ाई वाला

وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

और अज़मत वाला (78)

منزل ٧

सूरह वाक़िआ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, मगर दो आयतें (81 और 82) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (96) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतिबार से (46) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतिबार से (56) नम्बर पर है और सूरह ताॅ-हा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1703) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (378) कलिमात हैं

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢

जब वाक़े हुई वाक़े होने वाली (1) उसके वाक़े होने में कोई झूठ नहीं (2)

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝٤

वह पस्त करने वाली, बुलंद करने वाली होगी (3) जबकि ज़मीन हिला डाली जाएगी (4)

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۝٦

और पहाड़ टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे (5) फिर वह परागंदा ग़ुबार बन जाएंगे (6)

وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝٧ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ

और तुम लोग तीन क़िस्म के हो जाओगे (7) फिर दाएं वाले,

مَآ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨ وَأَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ

पस क्या ख़ूब हैं दाएं वाले (8) और बाएं वाले,

مَآ أَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۝٩ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝١٠

कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले (9) और आगे वाले तो आगे वाले ही हैं (10)

أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝١١ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝١٢

वे मुक़र्रब लोग हैं (11) नेमत के बाग़ों में (12)

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝١٣ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝١٤

उनकी बड़ी तादाद अगलों में से होगी (13) और थोड़े पिछलों में से होंगे (14)

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝١٥ مُّتَّكِـِٔيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝١٦

जड़ाऊ तख़्तों पर (15) तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे (16)

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝١٧ بِأَكْوَابٍ

फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले (17) प्याले

وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝١٨ لَّا يُصَدَّعُوْنَ

और जग लिए हुए और जाम साफ़ शराब का (18) उससे न दर्दे-सर

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾

होगा और न अक़्ल में फ़ुतूर आएगा (19) और मेवे कि जो चाहें चुन लें (20)

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾

और परिंदों का गोश्त जो उनको मरग़ूब हो (21) और बड़ी आँखों वाली हूरें (22)

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا

जेसे मोती के दाने अपने ग़िलाफ़ के अंदर (23) बदला उन कामों का जो वे

يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾

करते थे (24) उसमें वे कोई लग़्व और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे (25)

اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ مَآ

मगर सिर्फ़ सलाम सलाम का बोल (26) और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं

اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ

दाहिने वाले (27) बेरी के दरख़्तों में जिनमें काँटा नहीं (28) और केले

مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾

तह-बतह (29) और फैले हुए साए (30) और बहता हुआ पानी (31)

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾

और कसरत से मेवे (32) जो न ख़त्म होंगे और न कोई रोक टोक होगी (33)

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾

और ऊँचे बिछोने (34) हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है (35)

فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ

फिर उनको कुंवारी रखा (36) दिलरुबा और हम उम्र (37) दाहिने वालों

الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ مِّنَ

के लिए (38) अगलों में से एक बड़ा गिरोह होगा (39) और पिछलों में से भी

الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ مَآ اَصْحٰبُ

एक बड़ा गिरोह (40) और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं

الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ

बाएं वाले (41) आग में और खौलते हुए पानी में (42) और सियाह धुएं के

يَحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا

साए में (43) न ठंडा होगा और ना इज़्ज़त का (44) ये लोग इससे

قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى

पहले ख़ुशहाल थे (45) और भारी गुनाह पर इसरार

الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا

करते रहे (46) और वे कहते थे: क्या जब हम मर जाएंगे

وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا

और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे (47) और क्या हमारे अगले

الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

बाप दादा भी (48) कह दीजिए कि अगले और पिछले सब (49)

لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾

जमा किए जाएंगे, एक मुक़र्ररह दिन के वक़्त पर (50)

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾

फिर तुम लोग ऐ बहके हुए और झुठलाने वालो (51)

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ

ज़क़्क़ूम के दरख़्त में से खाओगे (52) फिर उससे

مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ

अपना पेट भरोगे (53) फिर उसपर खौलता हुआ पानी

الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا

पियोगे (54) फिर प्यासे ऊँटों की तरह पियोगे (55) यह उनकी

نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا

मेहमानी होगी इंसाफ़ के दिन (56) हमने तुमको पैदा किया है, फिर तुम

تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ

तस्दीक़ क्यों नहीं करते (57) क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम टपकाते हो (58) क्या तुम उसको

تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا

बनाते हो या हम हैं बनाने वाले (59) हमने तुम्हारे दरमियान

بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۙ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى اَنْ

मौत मुक़द्दर की है और हम उससे आजिज़ नहीं (60) कि तुम्हारी जगह

نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुमको ऐसी सूरत में बना दें जिनको तुम नहीं जानते (61)

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

और तुम पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक़ नहीं लेते (62)

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ؕ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ

क्या तुमने ग़ौर किया उस चीज़ पर जो तुम बोते हो (63) क्या तुम उसको उगाते हो

نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

या हम हैं उगाने वाले (64) अगर हम चाहें तो उसको रेज़ा-रेज़ा कर दें

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۙ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर तुम बातें बनाते रह जाओगे (65) हम तो तावान में पड़ गए (66) बल्कि हम

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ؕ﴿٦٨﴾

बिलकुल महरूम हो गए (67) क्या तुमने ग़ौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो (68)

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾

क्या तुमने उसको बादल से उतारा है या हम हैं उतारने वाले (69)

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

अगर हम चाहें तो उसको सख़्त खारी बना दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते (70)

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ؕ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ

क्या तुमने ग़ौर किया उस आग पर जिसको तुम जलाते हो (71) क्या तुमने पैदा किया

شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا

उसके दरख़्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले (72) हमने उसको याददहानी

تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۚ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ

बनाया है और मुसाफ़िरों के लिए फ़ायदे की चीज़ (73) पस आप अपने अज़ीम रब के

رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۧ﴿٧٤﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۙ﴿٧٥﴾

नाम की तस्बीह बयान कीजिए (74) पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सितारों के मवाक़े की (75)

منزل ٧

الثلثة ع ٢

وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝٧٦ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ

और अगर तुम ग़ौर करो तो यह बहुत बड़ी क़सम है (76) बेशक यह एक इज़्ज़त वाला

كَرِيْمٌ ۝٧٧ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝٧٨ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا

क़ुरआन है (77) एक महफ़ूज़ किताब में (78) उसको वही छूते हैं

الْمُطَهَّرُوْنَ ۝٧٩ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٠

जो पाक बनाए गए हैं (79) उतारा हुआ है परवरदिगारे-आलम की तरफ़ से (80)

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ۝٨١ وَتَجْعَلُوْنَ

फिर क्या तुम उस कलाम के साथ बेतवज्जुही बरतते हो (81) और तुम अपना हिस्सा

رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ۝٨٢ فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ

यही लेते हो कि तुम उसको झुठलाते हो (82) फिर क्यों नहीं, जब कि जान हलक़ में

الْحُلْقُوْمَ ۝٨٣ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ۝٨٤ وَنَحْنُ

पहुँचती है (83) और तुम उस वक़्त देख रहे होते हो (84) और हम तुमसे

اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ۝٨٥ فَلَوْلَاۤ

ज़्यादा उस शख़्स के क़रीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते (85) फिर क्यों नहीं,

اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ۝٨٦ تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम किसी के हुक्म में नहीं हो (86) तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ۝٨٧ فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝٨٨

सच्चे हो (87) पस अगर वह मुक़र्रबीन में से हो (88)

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ۝٨٩ وَاَمَّاۤ اِنْ

तो राहत है और उमदा रोज़ी है और नेमत का बाग़ है (89) और अगर वह

كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝٩٠ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ

अस्हाबे-यमीन में से हो (90) तो तुम्हारे लिए सलामती,

اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝٩١ وَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ

तो अस्हाबे-यमीन में से है (91) और अगर वे झुठलाने वाले गुमराह

الضَّآلِّيْنَ ۝٩٢ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ۝٩٣ وَّتَصْلِيَةُ

लोगों में से हो (92) तो गर्म पानी की मेहमानी है (93) और जहन्नम में

جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ

दाख़िल होना (94) बेशक यह क़तई हक़ है (95) पस आप अपने

بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

अज़ीम रब के नाम की तस्बीह कीजिए (96)

सूरह हदीद मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (29) आयतें और (4) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतिबार से (94) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतिबार से (57) नम्बर पर है और सूरह ज़िलज़ाल के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (3476) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (544) कलिमात हैं

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है और वह ज़बरदस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ

हिकमत वाला (1) आसमानों और ज़मीन की सलतनत उसी की है, वह ज़िंदा करता है

وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ

और मारता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (2) वही अव्वल भी है

وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

और आख़िर भी और ज़ाहिर भी है और बातिन भी, और वह हर चीज़ का

عَلِيْمٌ ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ

जानने वाला है (3) वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا

छः दिनों में फिर वह अर्श पर क़ायम हुआ, वह जानता है जो कुछ

يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

ज़मीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से

مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ

उतरता है और जो उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है

اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾

जहाँ भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो (4)

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
आसमानों और ज़मीन की सलतनत उसी की है और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं
الْاُمُوْرُ ⑤ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
सारे उमूर (5) वह रात को दिन में दाख़िल कर देता है और दिन को रात में
فِي الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑥ اٰمِنُوْا
दाख़िल कर देता है, और वह सीनों में छुपी बातों को ख़ूब जानता है (6) ईमान लाओ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ
अल्लाह और उसके रसूल पर और ख़र्च करो उसमें से जिसमें उसने तुमको अमीन
فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ
बनाया है, पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और ख़र्च करें उनके लिए बड़ा
كَبِيْرٌ ⑦ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ
अज्र है (7) और तुमको क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते; हालाँकि रसूल
يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ
तुमको बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे अहद ले चुका है,
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑧ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى
अगर तुम मोमिन हो (8) अल्लाह वही तो है जो अपने बंदे पर
عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ
खुली खुली आयतें नाज़िल फ़रमाता है; ताकि तुम्हें अंधेरों से निकाल कर
اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ⑨ وَمَا
रोशनी में लाए, और यक़ीन जानो अल्लाह तुमपर बहुत शफ़ीक़, बहुत मेहरबान है (9) और तुमको
لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ
क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते; हालाँकि सब आसमान और ज़मीन आख़िर में
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
अल्लाह ही का रह जाएगा, तुम में से जो लोग फ़तह के बाद ख़र्च करें
مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً
और लड़ें वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने

मंज़िल ७

مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا

फ़तह से पहले ख़र्च किया और लड़े, और अल्लाह ने

وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۰﴾

सबसे भलाई का वादा किया है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो (10)

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़ कि वह उसको उसके लिए

لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۱﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ

बढ़ाए और उसके लिए बाइज़्ज़त अज्र है (11) जिस दिन आप मोमिन मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ

और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी,

بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

आज के दिन तुमको ख़ुशख़बरी है बाग़ों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ

तुम उनमें हमेशा रहोगे, यह बड़ी कामयाबी है (12) जिस दिन

يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे

انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا

कि हमें मोक़ा दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फ़ायदा उठा लें, कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे

وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ

लौट जाओ फिर रोशनी तलाश करो, फिर उनके दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिस में

بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ

एक दरवाज़ा होगा, उसके अंदर की तरफ़ रहमत होगी और उसके बाहर की तरफ़

الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى

अज़ाब होगा (13) वह उनको पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे, वे कहेंगे कि हाँ,

وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

मगर तुमने अपने आपको फ़ितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे

وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ

और झूठी उम्मीदों ने तुमको धोखे में रखा यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया, और धोखेबाज़ ने

بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ

तुमको अल्लाह के मुआमले में धोखा दिया (14) पस आज न तुमसे कोई फ़िदया क़ुबूल किया जाएगा

وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ

और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़्र किया, तुम्हारा ठिकाना आग है, वही

مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ

तुम्हारी रफ़ीक़ है और वह बुरा ठिकाना है (15) क्या ईमान वालों के लिए

اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ

वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं और उस हक़ के आगे

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

जो नाज़िल हो चुका है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिनको पहले

مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ

किताब दी गई थी फिर उनपर लम्बी मुद्दत गुज़र गई तो उनके दिल सख़्त हो गए,

وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

और उनमें से अकसर नाफ़रमान हैं (16) जान लो कि अल्लाह

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ

ज़मीन को ज़िंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ

الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ

बयान कर दी हैं; ताकि तुम समझो (17) बेशक सदक़ा देने वाले मर्द

وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ

और सदक़ा देने वाली औरतें और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को क़र्ज़ दिया अच्छा क़र्ज़, वह उनके लिए

لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

बढ़ाया जाएगा, और उनके लिए बाइज़्ज़त अज्र है (18) और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर

وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ

और उसके रसूलों पर वही लोग सिद्दीक़ और शहीद हैं

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ

अपने रब के नज़्दीक उनके लिए उनका अज्र और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने

كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोज़ख़ के

الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ

लोग हैं (19) ख़ूब समझ लो कि इस दुनिया वाली ज़िंदगी की हक़ीक़त बस यह है कि वह नाम है

وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي

खेल कूद का, ज़ाहिरी सजावट का, तुम्हारे लिए एक दूसरे पर फ़ख़्र जताने का और माल और औलाद में

الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ

एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करने का, उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक बारिश जिस से उगने वाली चीज़ें

نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ

किसानों को बहुत अच्छी लगती है फिर वह अपना ज़ोर दिखाती है फिर तुम उसको देखते हो ज़र्द पड़ गई है फिर वह चूरा-चूरा

حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

हो जाती है, और आख़िरत में (एक तो) सख़्त अज़ाब है और (दूसरे) अल्लाह की तरफ़ से

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ

बख़्शिश है और ख़ुशनूदी, और दुनिया वाली ज़िंदगी धोखे के

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

सामान के सिवा कुछ भी नहीं है (20) दौड़ो अपने रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

मुआफ़ी की तरफ़ और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी वुसअत आसमान और ज़मीन की वुसअत के

وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ

बराबर है, वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं,

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह उसको देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह

ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ

बड़ा फ़ज़्ल वाला है (21) कोई मुसीबत न ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ

आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है

مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

इससे पहले कि हम उनको पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए

يَسِيْرٌ ۚ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا

आसान है (22) ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुमसे खोया गया और न

تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ

उस चीज़ पर फ़ख़्र करो जो उसने तुमको दिया, और अल्लाह इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को

مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴿٢٣﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ

पसंद नहीं करता (23) जो कि बुख़्ल करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की

النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ

तालीम देते हैं, और जो शख़्स ऐराज़ करेगा तो अल्लाह

هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا

बेनियाज़ है, ख़ूबियों वाला है (24) हक़ीक़त यह है कि हमने अपने पैग़म्बरों को

بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ

खुली हुई निशानियाँ देकर भेजा और उनके साथ किताब भी उतारी और तराज़ू भी;

لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ

ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम रहें, और हमने लोहा उतारा

فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ

जिसमें जंगी ताक़त भी है और लोगों के लिए दूसरे फ़ायदे भी, और यह इस लिए ताकि अल्लाह

اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

जान ले कि कौन है जो उसको देखे बग़ैर उस (के दीन) की और उसके पैग़म्बरों की मदद करता है, यक़ीन रखो कि अल्लाह

قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ

बड़ी क़ुव्वत का, बड़े इक़्तिदार का मालिक है (25) और हमने नूह को और इब्राहीम (अलै०) को भेजा

وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ

और उनकी औलाद में हमने पैग़म्बरी और किताब रख दी, फिर उनमें से कोई

مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا

राह पर है और उनमें से बहुत से नाफ़रमान हैं (26) फिर उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर

عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ

हमने रसूल भेजे और उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर ईसा बिन मरयम (अलै॰) को भेजा

وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ

और हमने उसको इंजील दी, और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में

اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا

शफ़क़त और रहमत रख दी, और रहबानियत को उन्होंने ख़ुद ईजाद किया है

مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا

हमने उसको उनपर नहीं लिखा था, मगर उन्होंने अल्लाह की रिज़ामंदी के लिए उसको इख़्तियार कर लिया, फिर

رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

उन्होंने उसकी पूरी रिआयत न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उनको

مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾ يٰٓاَيُّهَا

हमने उनका अज्र दिया, और उनमें से अकसर नाफ़रमान हैं (27) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ

ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुमको

كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ

अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा और तुमको रोशनी अता करेगा जिसको तुम लेकर

بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ

चलोगे और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (28) ताकि अहले-किताब

اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ

जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखते

وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहता है अता फ़रमाता है,

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ ع

और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है (29)

सूरह मुजादलह मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (22) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (105) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (58) नम्बर पर है और सूरह मुनाफ़िक़ून के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1792) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (473) कलिमात हैं

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِىْ تُجَادِلُكَ فِىْ زَوْجِهَا

अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मुआमले में आपसे झगड़ती थी

وَتَشْتَكِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

और अल्लाह से शिकवा कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह

سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ① اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ

सुनने वाला, देखने वाला है ① तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं

مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔىْ وَلَدْنَهُمْ ۭ

वे उनकी माएं नहीं हैं, उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उनको जना,

وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ

और ये लोग बेशक एक नामाक़ूल और झूठ बात कहते हैं, और बेशक अल्लाह

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ② وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ

मुआफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है ② और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करें

ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ

फिर उससे रुजू करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आज़ाद करना है उससे पहले कि वे

يَّتَمَآسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

आपस में हाथ लगाएं, उससे तुमको नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ

خَبِيْرٌ ③ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

तुम करते हो ③ फिर जो शख़्स न पाए तो रोज़े हैं दो महीने के लगातार इससे

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۭ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ

पहले कि आपस में हाथ लगाएं, फिर जो शख़्स न कर सके तो साठ मिस्कीनों को खाना

مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ

खिलाना है, यह इस लिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और यह अल्लाह की

اللّٰهِ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ

हदें हैं और मुनकिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है (4) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ

मुख़ालिफ़त करते हैं वे ज़लील होंगे जिस तरह वे लोग ज़लील हुए जो उनसे पहले थे, और हमने,

اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥ۚ

वाज़ेह आयतें उतार दी हैं, और मुनकिरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है (5)

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ

जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उनको बताएगा,

اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦ۧ

अल्लाह ने उसको गिन रखा है और वे लोग उसको भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज़ (6)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ

क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,

مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ

कोई सरगोशी तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो, और न पाँच की होती है

اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ

जिसमें छटा वह न हो, और न उससे कम की या ज़्यादा की मगर वह

مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

उनके साथ होता है जहाँ भी वे हों, फिर वह उनको उनके किए से आगाह करेगा क़ियामत के दिन,

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है (7) क्या आपने नहीं देखा जिनको सरगोशियों से

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ

रोका गया था फिर भी वे वही कर रहे हैं जिनसे रोके गए थे, और वह गुनाह

بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۡ وَاِذَا جَاۗءُوْكَ

और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशियाँ करते हैं, और जब वे आपके पास आते हैं

حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

तो आपको ऐसे तरीक़े से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने आपको सलाम नहीं किया, और अपने दिलों में कहते हैं

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ

कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमको अज़ाब क्यों नहीं देता, उनके लिए जहन्नम काफ़ी है वे उसमें पड़ेंगे,

فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ

पस वह बुरा ठिकाना है (8) ऐ ईमान वालो! जब तुम सरगोशी करो

فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ

तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशी न करो

وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ

और तुम नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩﴾ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ

जमा किए जाओगे (9) यह सरगोशी शैतान की तरफ़ से है ताकि वह ईमान वालों को

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

रंज पहुँचाए, और वह उनको कुछ भी रंज नहीं पहुँचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से,

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (10) ऐ ईमान वालो!

اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ

जब तुमको कहा जाए कि मजलिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुमको

اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ

कुशादगी देगा, और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ, तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ

और जिनको इल्म दिया गया है अल्लाह उनके दर्जे बुलंद करेगा,

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (11) ऐ ईमान वालो!

اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ

जब तुम रसूल से राज़दाराना बात करो तो अपनी राज़दाराना बात से पहले

صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا

कुछ सदक़ा दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम न पाओ

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ

तो अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (12) क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम

يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ

अपनी राज़दाराना गुफ़्तगू से पहले सदक़ा दो, पस अगर तुम ऐसा न करो और अल्लाह ने तुमको

عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

मुआफ़ कर दिया तो तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की

وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى

इताअत करो, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है (13) क्या तुमने

الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ

उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे न तुम में से हैं

وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾

और न उनमें से हैं, और वे झूठी बात पर क़सम खाते हैं हालाँकि वे जानते हैं (14)

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ

जो वे करते हैं (15) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है फिर वे रोकते हैं

سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ

अल्लाह की राह से, पस उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है (16) उनके माल

عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

और उनकी औलाद उनको ज़रा भी अल्लाह से न बचा सकेंगे,

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ

ये लोग दोज़ख़ वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे (17) जिस दिन

يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ

अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी उस तरह की क़सम खाएंगे जिस तरह तुम से क़सम खाते हैं,

وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾

और वे समझते हैं कि वे किसी चीज़ पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं (18)

ع ٢ / ٧

منزل ٧

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ

शैतान ने उन पर क़ाबू हासिल कर लिया है फिर उसने उनको अल्लाह की याद भुला दी है, ये लोग शैतान का

الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ اِنَّ

गिरोह हैं, सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बरबाद होने वाला है (19) बेशक

الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वही ज़लील लोगों में हैं (20)

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾

अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे, बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला, ज़बरदस्त है (21)

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ

आप ऐसी क़ौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे

مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ

जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं; अगर्चे वे उनके बाप या उनके बेटे

اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ

या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले क्यों न हो, यही लोग हैं जिनके दिलों में

الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उनको अपने फ़ैज़ से क़ुव्वत दी है, और वह उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से

عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع

राज़ी हुए, यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं, और अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह पाने वाला है (22)

सूरह हश्र मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (24) आयतें और (3) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (101) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (59) नम्बर पर है और सूरह बय्यिनह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1913) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (445) कलिमात हैं

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ

अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वे

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ

जबरदस्त है, हिकमत वाला है (1) वही है जिसने अहले-किताब काफ़िरों को उनके

اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ

घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान न था कि वह

يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

निकलेंगे और वे ख़्याल करते थे कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे,

فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

फिर अल्लाह उनपर वहाँ से पहुँचा जहाँ से उनको ख़्याल भी न था और उनके दिलों में रौब

الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ

डाल दिया, वे अपने घरों का ख़ुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी,

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ

पस ऐ आँख वालो! इबरत हासिल करो (2) और अगर अल्लाह ने उनपर जिलावतनी न लिख दी

الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ

होती तो वह दुनिया ही में उनको अज़ाब देता, और आख़िरत में उनके लिए आग का

النَّارِ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ

अज़ाब है (3) यह इस लिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की, और जो शख़्स

يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾ مَا قَطَعْتُمْ

अल्लाह की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सख़्त अज़ाब वाला है (4) खजूरों के जो दरख़्त

مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ

तुमने काट डाले या उनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह

اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٥﴾ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

के हुक्म से और ताकि वह नाफ़रमानों को रुसवा करे (5) और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल

مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ

की तरफ़ लौटाया तो तुमने उसपर न घोड़े दोड़ाए और न ऊँट,

وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिसपर चाहता है तसल्लुत दे देता है, और अल्लाह

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ

हर चीज़ पर क़ादिर है (6) जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ़ से

الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों

وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ

और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है; ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दरमियान

الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ وَمَا

गर्दिश न करता रहे, और रसूल तुमको जो कुछ दे वह लेलो और वह जिस चीज़ से

نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

तुमको रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा

الْعِقَابِ ۝٧ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا

देने वाला है (7) उन मुफ़लिस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों

مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ

और अपने मालों से निकाले गए हैं, वे अल्लाह का फ़ज़्ल और रिज़ामंदी

وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ

चाहते हैं और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग

الصّٰدِقُوْنَ ۝٨ۚ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ

सच्चे हैं (8) और जो लोग पहले से दारुल इस्लाम (मदीना) में क़रार पकड़े हुए हैं और ईमान पर

مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ

जमे हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में

فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى

उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है, और वे उनको अपने ऊपर

اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ړ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ

मुक़द्दम रखते हैं अगर्चे उनके ऊपर फ़ाक़ा हो, और जो शख़्स अपने जी के लालच से

نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩ۚ وَالَّذِيْنَ جَاۗءُوْ

बचा लिया गया तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं (9) और जो लोग उनके

وقف لازم

منزل ٧

مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا

बाद आए वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमको बख़्श दे और हमारे उन भाईयों को

الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا

जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में

غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰﴾

ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ हमारे रब! बेशक तू बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है (10)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक़ में मुबतला हैं, वे अपने भाईयों से कहते हैं जिन्होंने

كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ

अहले-किताब में से कुफ़्र किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ

مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ

निकल जाएंगे और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे, और अगर तुमसे लड़ाई हुई

لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾

तो हम तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वह झूठे हैं (11)

لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا

अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे लड़ाई हो

لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ

तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर उनकी मदद करेंगे तो ज़रूर वे पीठ फेर कर भागेंगे

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ

फिर वे कहीं मदद न पाएंगे (12) बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से

مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۳﴾

ज़्यादा है, यह इस लिए कि वे लोग समझ नहीं रखते (13)

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ

ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में

وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا

या दीवारों की आड़ में, उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है, तुम उनको मुत्तहिद ख़्याल करते हो

وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾

और उनके दिल जुदा जुदा हो रहे हैं, यह इस लिए कि वे लोग अक़्ल नहीं रखते (14)

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनसे कुछ ही पहले अपने किए का मज़ा चख चुके हैं,

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ

और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (15) जैसे शैतान जो इंसान से

لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ

कहता है कि मुनकिर हो जा, फिर जब वह मुनकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूँ,

اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا

मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहान का रब है (16) फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों

فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾

दोज़ख़ में गए जहाँ वे हमेशा रहेंगे, और ज़ालिमों की सज़ा यही है (17)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और हर शख़्स देखे

مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا

कि उसने कल के लिए क्या भेजा है, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बाख़बर है

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ

जो तुम करते हो (18) और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उनको ख़ुद उनकी

اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ

जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं (19) दोज़ख़ वाले

اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ

और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते, जन्नत वाले ही असल में

الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ

कामयाब हैं (20) अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते

لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ

तो आप देखते कि वे अल्लाह के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता,

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं; ताकि वे

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
सोचें (21) वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं,

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾
पोशीदा और ज़ाहिर को जानने वाला, वह बड़ा मेहरबान है, निहायत रहम वाला है (22)

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, बादशाह, सब ऐबों से पाक,

السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ
सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़ोरआवर, अज़्मत वाला,

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं (23) वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला,

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي
सूरत बनाने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम, हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾
उसी की तस्बीह कर रही है, और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (24)

सूरह मुम्तहिनह मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (13) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (91) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (60) नम्बर पर है और सूरह अहज़ाब के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1510) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (348) कलिमात हैं

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ
ऐ ईमान वालो! तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों

اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا
को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इज़्हार करते हो; हालाँकि उन्होंने उस हक़ का

جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
इनकार किया जो तुम्हारे पास आया, वह रसूल को और तुमको इस बिना पर जिला वतन करते हैं

اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ

कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान लाए, अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिज़ामंदी की

سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ

तलब के लिए निकले हो, तुम छुपा कर उन्हें दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो,

وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ

और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो, और जो शख़्स तुम में से

مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ① اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ

ऐसा करेगा वह राहे रास्त से भटक गया (1) अगर वे तुमपर क़ाबू पा जाएं

يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ

तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे और अपने हाथ और अपनी ज़बान से तुमको

وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ② ؕ لَنْ تَنْفَعَكُمْ

तकलीफ़ पहुँचाएंगे, और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुनकिर हो जाओ (2) तुम्हारे रिश्तेदार

اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ

और तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा,

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ

और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो (3) तुम्हारे लिए इब्राहीम (अलै०)

حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا

और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने

لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ

अपनी क़ौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीज़ों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा

دُوْنِ اللّٰهِ ؗ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ

इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुनकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दरमियान हमेशा के लिए

الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ

अदावत और बेज़ारी ज़ाहिर हो गई है यहाँ तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ,

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ

मगर इब्राहीम (अलै०) का अपने वालिद से यह कहना कि मैं आप के लिए मुआफ़ी माँगूंगा और मैं

اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا

आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हमने तुझ पर भरोसा किया

وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٤﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

और हम तेरी तरफ़ रुजू हुए और तेरी ही तरफ़ लौटना है (4) ऐ हमारे रब! हमको काफ़िरों के लिए

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

फ़ितना न बना और ऐ हमारे रब! हमको बख़्श दे, बेशक तू

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٥﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (5) बेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

उस शख़्स के लिए जो अल्लाह का और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो, और जो शख़्स रुगर्दानी करेगा

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦﴾ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ

तो अल्लाह बेनियाज़ है, तारीफ़ों वाला है (6) उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ

और उन लोगों के दरमियान दोस्ती पैदा करदे जिनसे तुमने दुश्मनी की, और अल्लाह

قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧﴾ لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ

सब कुछ कर सकता है और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (7) अल्लाह तुमको उन लोगों से नहीं रोकता

الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ

जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की और तुमको तुम्हारे घरों से

مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ

नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ़ करो, बेशक

اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ

अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है (8) अल्लाह बस उन लोगों से तुमको मना करता है

الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ

जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से

دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ

निकाला और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो,

ع ١

منزل ٧

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩﴾ يٰٓاَيُّهَا

और जो उनसे दोस्ती करे तो वही लोग ज़ालिम हैं (9) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ

ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत करके आएं

فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ

तो तुम उनको जाँच लो, अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है, पस अगर तुम जान लो कि वे

مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ

मोमिन हैं तो उनको काफ़िरों की तरफ़ न लौटाओ, न वे औरतें उनके लिए

لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ

हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं, और काफ़िर शौहरों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उनको अदा कर दो,

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ

और तुमपर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके

اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ

महर अदा कर दो, और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो, और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है

اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ

उनको माँग लो और जो कुछ काफ़िरों ने ख़र्च किया है वह भी तुमसे माँग लें, यह अल्लाह का हुक्म है,

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ وَاِنْ فَاتَكُمْ

वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है (10) और अगर तुम्हारी बीवियों के

شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

महर में से कुछ काफ़िरों की तरफ़ रह जाए फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियाँ

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا

गई हैं उनको अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया, और अल्लाह से

اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا

डरो जिसपर तुम ईमान लाए हो (11) ऐ (प्यारे) नबी! जब

جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ

आपके पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत के लिए आएं कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज़ को

بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ

शरीक न करेंगी और वे चोरी न करेंगी और वे बदकारी न करेंगी और वे अपनी औलाद को

اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ

क़त्ल न करेंगी और वे अपने हाथ और पाँव के आगे कोई बोहतान घड़ कर

وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

न लाएंगी और वे किसी मारूफ़ में आपकी नाफ़रमानी न करेंगी, तो उनसे बैअत ले लीजिए

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰۤاَيُّهَا

और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ कीजिए, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है (12) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا

ईमान वालो! तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वह आख़िरत से ना उम्मीद

مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع

हो गए हैं जिस तरह क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर ना उम्मीद हैं (13)

सूरह सफ़्फ़ मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (14) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (109) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (61) नम्बर पर है और सूरह तग़ाबुन के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (900) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (221) कलिमात हैं

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

अल्लाह की तस्बीह बयान करती है हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब है,

الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا

हिकमत वाला है (1) ऐ ईमान वालो! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम

لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا

करते नहीं (2) अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि तुम ऐसी बात कहो

لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ

जो तुम करो नहीं (3) अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में

سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾ وَاِذْ

इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं (4) और (याद करो) जबकि

منزل ٧

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ

मूसा (अलै०) ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों सता रहे हो; हालाँकि तुम्हें (बख़ूबी) मालूम है

اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۭ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ

कि मैं तुम्हारी जानिब अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, पस जब वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके

قُلُوْبَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ٥ وَاِذْ

दिलों को (और) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआला नाफ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं देता (5) और जब

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ

ईसा बिन मरयम (अलै०) ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी तरफ़

اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ

अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, तस्दीक़ करने वाला हूँ उस तौरात का जो मुझसे पहले से मौजूद है

وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۭ

और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा (और) उसका नाम अहमद होगा,

فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ٦

फिर जब वह उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहाः यह तो खुला हुआ जादू है (6)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे; हालाँकि वह

يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ٧

इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (7)

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِــُٔـوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुँह से बुझा दें; हालाँकि अल्लाह

مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ٨ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ

अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा ख़्वाह काफ़िरों को यह कितना ही नागवार हो (8) वही है जिसने भेजा

رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى

अपने रसूल को हिदायत और दीने-हक़ के साथ; ताकि उसको सब दीनों पर

الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۧ ٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

ग़ालिब कर दे ख़्वाह मुशरिकों को यह कितना ही नागवार हो (9) ऐ ईमान वालो!

منزل ٧

ع ١

اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ

क्या मैं तुमको एक ऐसी तिजारत बताऊँ जो तुमको एक दर्दनाक अज़ाब से

اَلِيْمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ

बचा ले (10) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ

अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ

बेहतर है अगर तुम जानो (11) अल्लाह तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा

وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें जारी होंगी

وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ

कामयाबी (12) और एक और चीज़ भी है जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फ़तह

قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जल्दी, और मोमिनों को बशारत दे दीजिए (13) ऐ ईमान वालो!

كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

तुम अल्लाह (के दीन) के मददगार बन जाओ, उसी तरह जिस तरह ईसा बिन मरयम (अलै०) ने

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हवारियों से कहा था कि वे कौन हैं जो अल्लाह के वास्ते मेरे मददगार बनें? हवारियों ने कहा:

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ

हम अल्लाह (के दीन) के मददगार हैं, फिर बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया

وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى

और एक गिरोह ने कुफ़्र इख़्तियार किया; चुनाँचे जो लोग ईमान लाए थे हमने उनके दुश्मनों के ख़िलाफ़

عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾

उनकी मदद की, नतीजा यह हुआ कि वे ग़ालिब आए (14)

सूरह जुमुआ मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (11) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (110) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (62) नम्बर पर है और सूरह सफ़्फ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (180) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (720) हुरूफ़ हैं

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है, जो बादशाह है,

الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ① هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي

पाक है, ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (1) वही है जिसने उम्मी लोगों में

الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

उन्हीं में से एक रसूल को भेजा जो उनके सामने उसकी आयतों की तिलावत करे और उनको पाकीज़ा बनाए

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ق وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ

और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे, जबकि वह उससे पहले

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ② وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ط

खुली गुमराही में पड़े हुए थे (2) और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए,

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ③ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

और वह ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है (3) यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह देता है

مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ④ مَثَلُ

जिसको चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है (4) जिन लोगों को

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ

तौरात का हामिल बनाया गया फिर उन्होंने उसको न उठाया उनकी मिसाल उस गधे की सी है

يَحْمِلُ أَسْفَارًا ط بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो, क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑤

आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (5)

قُلْ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ

कह दीजिए कि ऐ यहूद! अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के

لِلّٰهِ مِنۡ دُوۡنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الۡمَوۡتَ اِنۡ كُنۡتُمۡ

मुक़ाबिल में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो अगर तुम

صٰدِقِيۡنَ ۝٦ وَلَا يَتَمَنَّوۡنَهٗۤ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ ؕ

सच्चे हो (6) और वे कभी उसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिनको उनके हाथ आगे भेज चुके हैं

وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِالظّٰلِمِيۡنَ ۝٧ قُلۡ اِنَّ الۡمَوۡتَ الَّذِىۡ

और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है (7) कह दीजिए कि जिस मौत से

تَفِرُّوۡنَ مِنۡهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيۡكُمۡ ثُمَّ تُرَدُّوۡنَ اِلٰى عٰلِمِ

तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले के पास

الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٨ ع

ले जाए जाओगे फिर वह तुमको बता देगा जो तुम करते रहे हो (8)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا نُوۡدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنۡ يَّوۡمِ

ऐ ईमान वालो! जब जुमुअ़ा के दिन नमाज़ के लिए

الۡجُمُعَةِ فَاسۡعَوۡا اِلٰى ذِكۡرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الۡبَيۡعَ ؕ ذٰلِكُمۡ

पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ़ चल पड़ो और ख़रीद-फ़रोख़्त छोड़ दो, यह

خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ

तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो (9) फिर जब नमाज़

الصَّلٰوةُ فَانۡتَشِرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ

पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल

اللّٰهِ وَاذۡكُرُوا اللّٰهَ كَثِيۡرًا لَّعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ۝١٠ وَاِذَا

तलाश करो, और अल्लाह को कसरत से याद करो; ताकि तुम फ़लाह पाओ (10) और जब

رَاَوۡا تِجَارَةً اَوۡ لَهۡوَا ۨانْفَضُّوۡۤا اِلَيۡهَا وَتَرَكُوۡكَ قَآئِمًا ؕ

वह कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ़ दोड़ पड़ते हैं और आपको खड़ा हुआ छोड़ देते हैं,

قُلۡ مَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ مِّنَ اللَّهۡوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ

कह दीजिए कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से ज़्यादा बेहतर है

وَاللّٰهُ خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ ۝١١ ع

और अल्लाह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है (11)

ع ٨ ۔ ع ٢ ۔ منزل ٧

सूरह मुनाफ़िक़ून मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (11) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (104) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (63) नम्बर पर है और सूरह हज के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (976) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (180) कलिमात हैं

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ

जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं,

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ

और अल्लाह जानता है कि बेशक आप उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये

الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ ① اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

मुनाफ़िक़ीन झूठे हैं (1) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे

يَعْمَلُوْنَ ② ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى

कर रहे हैं (2) यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ़्र किया, फिर उनके दिलों पर

قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ③ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ

मुहर कर दी गई पस वे नहीं समझते (3) और जब आप उन्हें देखो तो उनके जिस्म आपको

اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो आप उनकी बात सुनते हो गोया कि वे

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ

लकड़ियाँ हैं टेक लगाई हुई, वे हर ज़ोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ़ समझते हैं, यही लोग

الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ④

दुश्मन हैं पस उनसे बचो, अल्लाह उनको हलाक करे, वे कहाँ फिरे जाते हैं (4)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا

और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार करे तो वह अपना सर

رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ⑤

फेर लेते हैं, और आप उनको देखोगे कि वे तकब्बुर करते हुए बेरुख़ी करते हैं (5)

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ

उनके लिए यकसाँ है आप उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करो या मग़फ़िरत की दुआ

لَهُمْ ط لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى

ना करो, अल्लाह हरगिज़ उनको मुआ़फ़ न करेगा, अल्लाह नाफ़रमान लोगों को

الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا

हिदायत नहीं देता (6) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के

عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ط وَلِلّٰهِ

पास हैं उनपर ख़र्च मत करो यहाँ तक कि वे मुंतशिर हो जाएं, और आसमानों

خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं; लेकिन मुनाफ़िक़

لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٧﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ

नहीं समझते (7) वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे

لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ط وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ

तो इज़्ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा; हालाँकि इज़्ज़त अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए

وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ ع يٰۤاَيُّهَا

और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िक़ीन नहीं जानते (8) ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ

ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको अल्लाह की याद से

عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ج وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

ग़ाफ़िल न करने पाए, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले

الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ

लोग हैं (9) और हमने जो कुछ तुमको दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले

اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ

कि तुम में से किसी की मौत आ जाए फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब! तूने मुझे

اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ لا فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ

कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदक़ा करता और नेक लोगों में

منزل ٧

ع ٤ ١٨

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ

शामिल हो जाता (10) और अल्लाह हरगिज़ किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद आ जाए,

وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع

और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो (11)

सूरह तग़ाबुन मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (18) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (108) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (64) नम्बर पर है और सूरह तहरीम के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (241) कलिमात हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (1070) हुरूफ़ हैं

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ

अल्लाह की तस्बीह बयान कर रही है हर चीज़ जो आसमानों में है और हर चीज़ जो ज़मीन में है, उसी की

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾

बादशाही है और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (1)

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ

वही है जिसने तुमको पैदा किया फिर तुम में से कोई काफ़िर है और कोई मोमिन,

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो (2) उसने आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ

ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई,

وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और उसी की तरफ़ लौटना है (3) वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है

وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

और वह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों तक की बातों का

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जानने वाला है (4) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले

مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

इनकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक

ع ١٦ ١٨

منزل ٧

اَلِيْمٌ ⑤ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ

अज़ाब है (5) यह इस लिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों

بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ز فَكَفَرُوْا

के साथ आए तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे? पस उन्होंने इनकार किया

وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑥ زَعَمَ

और मुँह फेर लिया और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज़ है, तारीफ़ वाला है (6) इनकार

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ط قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ

करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज़ दोबारा उठाए न जाएंगे, कह दीजिए कि हाँ, मेरे रब की क़सम!

لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ط وَذٰلِكَ عَلَى

तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुमको बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए

اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑦ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ

बहुत आसान है (7) पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर पर जो हमने

اَنْزَلْنَا ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑧ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ

उतारा है और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो (8) जिस दिन वह तुम सबको एक जगह जमा

لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ط وَمَنْ يُّؤْمِنْ

होने के दिन जमा करेगा, यही हार जीत का दिन होगा, और जो शख़्स अल्लाह पर

بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ

ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा

وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और उसको बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑨

वह हमेशा उनमें रहेंगे, यही है बड़ी कामयाबी (9)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही

النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑩ ع مَآ اَصَابَ

आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है (10) जो मुसीबत भी

مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ
आती है अल्लाह के हुक्म से आती है, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है

يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ⑪ وَاَطِيْعُوا
अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है (11) और तुम अल्लाह की

اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا
इताअत करो और रसूल की इताअत करो, फिर अगर तुम ऐराज़ करोगे तो हमारे

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑫ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ
रसूल पर बस साफ़-साफ़ पहुँचा देना है (12) अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं,

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑬ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (13) ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ
वालो! तुम्हारी बअज़ बीवियाँ और बअज़ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं

فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا
पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम मुआफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बख़्श दो

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑭ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ
तो अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (14) तुम्हारे माल

وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑮
और तुम्हारी औलाद आज़माइश की चीज़ हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है (15)

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا
लिहाज़ा जहाँ तक हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनो और मानो,

وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ
और (अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़) ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है, और जो लोग अपने दिल की लालच से

نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑯ اِنْ تُقْرِضُوا
महफ़ूज़ हो जाएं वही फ़लाह पाने वाले हैं (16) अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ
दोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुमको बख़्श देगा,

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

और अल्लाह क़द्रदान है, बुर्दबार है (17) ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

ज़बरदस्त है, हकीम है (18)

सूरह तलाक़ मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (12) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (99) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (65) नम्बर पर है और सूरह इंसान के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1060) हुरूफ़ हैं — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ — इसमें (249) कलिमात हैं

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ

ऐ प्यारे नबी! जब तुम लोग औरतों को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत पर

لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ

तलाक़ दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है,

لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ

उन औरतों को उनके घरों से न निकालो और न वे ख़ुद निकलें

اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ

मगर यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की

اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ

हदें हैं, और जो शख़्स अल्लाह की हदों से तजावुज़ करेगा तो उसने अपने ऊपर

نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ

ज़ुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक़ के बाद कोई नई सूरत

ذٰلِكَ اَمْرًا ﴿١﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ

पैदा कर दे (1) फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुँच जाएं तो उनको या तो मारूफ़ के

بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا

मुताबिक़ रख लो या मारूफ़ के मुताबिक़ उनको छोड़ दो, और अपने में से

ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ

दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो,

ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ

यह उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ

ईमान रखता हो, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके लिए राह

مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

निकालेगा (2) और उसको वहाँ से रिज़्क़ देगा जहाँ उसका गुमान भी न गया हो,

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी हो जाएगा, बेशक अल्लाह अपना काम

بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾

पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक अंदाज़ा ठहरा रखा है (3)

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ से मायूस हो चुकी हैं अगर तुमको

ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ

शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और इसी तरह उनकी भी जिनको

يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ

हैज़ नहीं आया, और हामिला औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा

حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ

हो जाना है, और जो शख़्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी

يُسْرًا ﴿۴﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ

कर देगा (4) यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो शख़्स

يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ

अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसको बड़ा

اَجْرًا ﴿۵﴾ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ

अज्र देगा (5) तुम उन औरतों को अपनी वुसअत के मुताबिक़ रहने का मकान दो जहाँ तुम

وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ

रहते हो और उनको तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ़ न पहुँचाओ,

وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى

और अगर वे हमल वालियाँ हों तो उनपर ख़र्च करो यहाँ तक कि उनका

يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ

वज़्-ए-हमल हो जाए, फिर अगर वह तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत

اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ

उन्हें दो, और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ, और अगर

تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ؕ ﴿٦﴾ لِيُنْفِقْ

तुम आपस में ज़िद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी (6) चाहिए कि वुसअत वाला

ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ

अपनी वुसअत के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिसकी आमदनी कम हो

فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا

उसको चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसको दिया है उसमें से ख़र्च करे, अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता

مَآ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿٧﴾ ع

मगर उतना ही जितना उसको दिया है, अल्लाह सख़्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देगा (7)

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ

और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब के हुक्म से और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी की

فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا

पस हमने उनका सख़्त हिसाब किया, और हमने उनको हौलनाक

نُّكْرًا ﴿٨﴾ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا

सज़ा दी (8) पस उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनका अंजाम बिल-आख़िर

خُسْرًا ﴿٩﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ

ख़सारे ही का हुआ (9) अल्लाह ने उनके लिए एक सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है,

فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ

पस अल्लाह से डरो ऐ अक़्ल वालो जो कि ईमान लाए हो,

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾ لا رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا

अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीहत उतारी है (10) एक रसूल जो तुमको

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ

अल्लाह की खुली खुली आयतें पढ़कर सुनाता है; ताकि उन लोगों को

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ

तारीकियों से रोशनी की तरफ़ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ

नेक अमल किया और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक

صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

अमल किया उसको वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ

बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसको

اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ

बहुत अच्छी रोज़ी दी (11) अल्लाह ही है जिसने बनाए सात

سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ

आसमान और उन्हीं की तरह ज़मीन भी, उनके अंदर

الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

उसका हुक्म उतरता है; ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ

क़ादिर है और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज़ का

شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾ ع

इहाता कर रखा है (12)

सूरह तहरीम मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (12) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (107) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (66) नम्बर पर है और सूरह हुजुरात के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1060) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (247) कलिमात हैं

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ

ऐ प्यारे नबी! आप क्यों उस चीज़ को हराम करते हो जो अल्लाह ने आपके लिए हलाल की है

تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

अपनी बीवियों की रिज़ामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ① قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ

मेहरबान है 1 अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों का खोलना मुक़र्रर कर दिया है,

وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ②

और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला, हिकमत वाला है 2

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ

और जब (प्यारे) नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपाकर कही

فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ

तो जब उसने उसको बता दिया और अल्लाह ने नबी को इससे आगाह कर दिया तो नबी ने

بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ

कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसको यह बात बताई

قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ

तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी, नबी ने कहा कि मुझको बताया जानने वाले ने,

الْخَبِيْرُ ③ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ

बाख़बर ने 3 अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ रुजू करो तो तुम्हारे दिल

قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ

झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़ाबले में कार्रवाइयाँ करोगी तो उसका रफ़ीक़

مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

अल्लाह है और जिब्राईल और सालेह अहले-ईमान और उनके अलावा फ़रिश्ते

بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ④ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ

उसके मददगार हैं 4 अगर वह (पैग़म्बर) तुम्हें तलाक़ देदें तो बहुत जल्द

اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ

उन्हें उनका रब तुम्हारे बदले तुमसे बेहतर बीवियाँ इनायत फ़रमाएगा जो इस्लाम वालियाँ,

مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ

ईमान वालियाँ, अल्लाह के हुज़ूर झुकने वालियाँ, तौबा करने वालियाँ, इबादत बजा लाने वालियाँ, रोज़े रखने वालियाँ होंगी,

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

बेवा और कुँवारियाँ (5) ऐ ईमान वालो!

قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ

तुम अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इंसान हैं

وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

और पत्थर, जिसपर सख़्त दिल मज़बूत फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं,

لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا

जिन्हें जो हुक्म अल्लाह तआला देता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते; बल्कि जो हुक्म दिया जाए

يُؤْمَرُوْنَ ۝٦ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا

बजा लाते हैं (6) ऐ काफ़िरो! आज तुम उज़्र और बहाना

الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧ ع

मत करो, तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारे करतूत का बदला दिया जा रहा है (7)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के आगे सच्ची तौबा

نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ

करो, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह मुआफ़

سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

कर दे और तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ

बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ

रुसवा नहीं करेगा, उनकी रोशनी उनके आगे और उनके

اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا

दाएं तरफ़ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारी रोशनी को

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

कामिल कर दीजिए और हमारी मग़फ़िरत फ़रमाइए, बेशक आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं (8)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ

ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती

عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٩﴾

कीजिए और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बुरा ठिकाना है (9)

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ

अल्लाह काफ़िरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह (अलै०) की बीवी की और लूत (अलै०) की

وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا

बीवी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के

صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ

निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके

شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ﴿١٠﴾

कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ (10)

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फ़िरऔन की बीवी की,

اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे प्यारे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दीजिए

وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ

और मुझको फ़िरऔन और उसके अमल से बचा लीजिए और मुझको ज़ालिम

الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ

क़ौम से निजात दीजिए (11) और इमरान की बेटी मरयम (अलै०)

الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ

जिसने अपनी इस्मत की हिफ़ाज़त की, फिर हमने उसमें अपनी रूह

رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ

फूँक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक़ की, और वह

مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾ ع

फ़रमाँबरदारों में से थी (12)

सूरह मुल्क मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (30) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (77) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (67) नम्बर पर है और सूरह तूर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1313) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (330) कलिमात हैं

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

बाबरकत है वह ज़ात जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर

قَدِيْرُ ۙ ① الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ

क़ादिर है (1) जिसने मौत और ज़िंदगी पैदा की; ताकि वह तुम्हें आज़माए

اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ ② الَّذِیْ

कि तुम में से कौन अच्छे अमल वाला है, और वह ज़बरदस्त है, बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला है (2) जिसने

خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ

बनाए सात आसमान ऊपर तले, आप रहमान के बनाने में कोई ख़लल

مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③

नहीं देखोगे, फिर निगाह डालकर देख लीजिए कहीं आपको कोई ख़लल नज़र आता है (3)

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ

फिर बार बार निगाह डाल कर देखिए, निगाह नाकाम थक कर

خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ④ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

तुम्हारी तरफ़ वापस आजाएगी (4) और हमने क़रीब के आसमानों को चिराग़ों से

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

सजाया है और हमने उनको शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया है और हमने उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब

عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑤ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ

तैयार कर रखा है (5) और जिन लोगों ने अपने रब का इनकार किया उनके लिए जहन्नम का

جَهَنَّمَ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑥ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا

अज़ाब है और वह बुरा ठिकाना है (6) जब वे उसमें डाले जाएंगे तो जहन्नम का शोर

لَهَا شَهِيْقًا وَّهِیَ تَفُوْرُ ۙ ⑦ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۭ

सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी (7) मालूम होगा कि वह ग़ुस्से में फट पड़ेगी,

كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

जब कभी उसमें कोई जमाअत डाली जाएगी तो जहन्नम के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उनसे पूछेंगे: क्या तुम्हारे पास

نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا

कोई डराने वाला नहीं आया था? (8) वे कहेंगे कि हाँ! हमारे पास डराने वाला आया था फिर हमने उसको झुठला दिया

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ

और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में

ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا

पड़े हुए हो (9) और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम

كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ

दोज़ख़ वालों में से न होते (10) पस वे अपने गुनाहों का इक़रार करेंगे,

فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ

पस लानत हो दोज़ख़ वालों पर (11) जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا

डरते हैं उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है (12) और तुम अपनी बात

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾

छुपा कर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को ख़ूब जानता है (13)

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ

क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबीं है, ख़बर रखने वाला है (14) वही अल्लाह

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا

जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को चलने के क़ाबिल बना दिया फिर तुम उसके रास्तों में चलो

وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۭ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ

और अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ, और उसी की तरफ़ ज़िंदा होकर उठना है (15) क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो गए

فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ

जो आसमान में है कि वह तुमको ज़मीन में धंसा दे फिर वह

تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ ۙ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ

लरज़ने लगे (16) या क्या तुम आसमान वाले की इस बात से बेख़ौफ़ हो बैठे कि वह तुमपर पत्थरों की

حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

बारिश बरसा दे? फिर तुम्हें पता चलेगा कि मेरा डराना कैसा था (17) और उनसे पहले जो लोग थे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا

उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया था, फिर (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा था? (18) क्या वे परिंदों को

اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ

अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उनको समेट भी लेते हैं, रहमान के सिवा

اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا

कोई नहीं जो उनको थामे हुए हो? बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है (19) भला ऐसा कौन है

الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ

जो तुम्हारा लश्कर बने (और) जो तुम्हारी मदद करे रहमान के सिवा

اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾ ۚ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ

काफ़िर तो सिर्फ़ धोखे में हैं (20) आख़िर कौन है जो तुमको

يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ

रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले; बल्कि वह सरकशी पर और बिदकने पर

وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى

अड़ गए हैं (21) क्या जो शख़्स औंधे मुँह चल रहा है वह ज़्यादा सही राह पाने वाला है

اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ

या वह शख़्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है (22) कह दीजिए कि वही है

الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ

और दिल बनाए, तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो (23) कह दीजिए कि वही है जिसने

ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

तुमको ज़मीन मैं फैलाया और तुम उसकी तरफ़ इकट्ठा किए जाओगे (24) और वे कहते हैं

مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ

कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो (25) कह दीजिए

اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ص وَاِنَّمَآ اَنَا۠ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾

कि यह इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, और में सिर्फ़ एक खुला हुआ डराने वाला हूँ (26)

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

पस जब वह उसके क़रीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इनकार किया,

وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ

और कहा जाएगा कि यही है वह चीज़ जिसको तुम मांगा करते थे (27) (ऐ प्यारे नबी! उनसे) कह दीजिए कि

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا لا

ज़रा यह बताओ कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमा दे

فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ

तो (दोनों सूरतों में) काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा? (28) कह दीजिए कि वह

الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ج فَسَتَعْلَمُوْنَ

रहमान है हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया, पस बहुत जल्द तुम जान लोगे

مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

कि खुली हुई गुमराही में कौन है (29) कह दें कि बताओ अगर तुम्हारा पानी

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾ ع

नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ़ पानी ले आए? (30)

सूरह क़लम मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत (17 से 33 और 48 से 50 तक) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (52) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (2) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (68) नम्बर पर है और सूरह अलक़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1256) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (300) कलिमात हैं

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ لا مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

नून, क़सम है क़लम की और जो कुछ लोग लिखते हैं (1) आप अपने रब के फ़ज़्ल से

بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ ج وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ ج

दीवाने नहीं हो (2) और बेशक आपके लिए अज्र है कभी ख़तम ना होने वाला (3)

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ لا

और यक़ीनन आप अख़्लाक़ के अअ़ला दर्जे पर हो (4) पस बहुत जल्द ही आप देखोगे और वह भी देखेंगे (5)

منزل ٧

ع ٢ ٤

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

कि तुम में से किस को जुनून था (6) बेशक आपका रब ही ख़ूब जानता है जो उसकी राह से

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۪ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ

भटका हुआ है और वह राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है (7) पस आप उन

الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَا

झुठलाने वालों का कहना न मानो (8) वे चाहते हैं कि आप नरम पड़ जाओ तो वे भी नरम पड़ जाएं (9) और आप

تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ﴿١١﴾

ऐसे शख़्स का कहना न मानें जो बहुत क़समें खाने वाला हो, बेवक़अत हो (10) तअ़ना देने वाला हो, चुग़ली लगाते फिरता हो (11)

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ

भलाई से रोकने वाला, ज़्यादती करने वाला, बदअमल हो (12) बदमिज़ाज़ हो, और इसके अलावा निचले नसब

زَنِيْمٍ ﴿١٣﴾ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٤﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ

वाला भी (13) सिर्फ़ इस वजह से कि वह बड़े माल और औलाद वाला है (14) जब उसको हमारी आयतें

اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَى

पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगलों की बे सनद बातें हैं (15) जल्द ही हम उसकी नाक पर

الْخُرْطُوْمِ ﴿١٦﴾ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ

दाग़ लगाएंगे (16) हमने उनको आज़माईश में डाला है जिस तरह हमने बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था,

اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ﴿١٧﴾ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿١٨﴾

जबकि उन्होंने क़सम खाई थी कि वह सुबह सवेरे ज़रूर उसके फल तोड़ लेंगे (17) और उन्होंने इंशा अल्लाह नहीं कहा (18)

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿١٩﴾

पस उस बाग़ पर आपके रब की तरफ़ से एक फिरने वाला फिर गया और वे सो रहे थे (19)

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾

फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फ़सल (20) पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा (21)

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

कि अपने खेत पर सुबह सवेरे चलो अगर तुम को फल तोड़ना है (22)

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا

फिर वह चल पड़े और वे आपस में चुपके चुपके कह रहे थे (23) कि आज कोई मोहताज

الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

तुम्हारे बाग़ में न आने पाए (24) और वह अपने को न देने पर क़ादिर समझकर चले (25)

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर जब उन्होंने उस बाग़ को देखा तो कहने लगे कि हम ज़रूर रास्ता भटक गए हैं (26) बल्कि हम

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ

महरूम हो गए (27) उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा: मैंने तुमसे नहीं कहा था

لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا

कि तुम लोग तस्बीह क्यों नहीं करते (28) उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है, बेशक हम

ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

ज़ालिम थे (29) फिर एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर एक दूसरे को मलामत करने लगे (30)

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ

उन्होंने कहा: अफ़सोस है हम पर, बेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे (31) शायद हमारा रब हमको इससे

يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

अच्छा बाग़ इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ़ रूजू होते हैं (32)

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا

इसी तरह आता है अज़ाब, और आख़िरत का अज़ाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग

يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ

जानते (33) बेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के

النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

बाग़ हैं (34) क्या हम फ़रमाँबरदारों को नाफ़रमानों के बराबर कर देंगे (35)

مَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ

तुमको क्या हुआ, तुम कैसा फ़ैसला करते हो (36) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें

تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَكُمْ

तुम पढ़ते हो (37) बेशक इसमें तुम्हारे लिए वह है जिसको तुम पसंद करते हो (38) क्या तुम्हारे लिए

اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

हमारे ऊपर क़समें हैं क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है

لَمَا تَحۡكُمُوۡنَ ۚ‏ ﴿۳۹﴾ سَلۡهُمۡ اَيُّهُمۡ بِذٰلِكَ زَعِيۡمٌ ۚۛ‏ ﴿۴۰﴾

जो तुम फैसला करो (39) उनसे पूछिए कि उनमें से कौन उसका ज़िम्मेदार है (40)

اَمۡ لَهُمۡ شُرَكَآءُ ۚۛ فَلۡيَاۡتُوۡا بِشُرَكَآٮِٕهِمۡ اِنۡ كَانُوۡا

क्या उनके कुछ शरीक हैं तो वे अपने शरीकों को लाएं अगर वे

صٰدِقِيۡنَ‏ ﴿۴۱﴾ يَوۡمَ يُكۡشَفُ عَنۡ سَاقٍ وَّيُدۡعَوۡنَ

सच्चे हैं (41) जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और उनको सज्दे के लिए

اِلَى السُّجُوۡدِ فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَۙ‏ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً اَبۡصَارُهُمۡ

बुलाया जाएगा तो ये सज्दा नहीं कर सकेंगे (42) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी

تَرۡهَقُهُمۡ ذِلَّةٌ ‌ؕ وَقَدۡ كَانُوۡا يُدۡعَوۡنَ اِلَى السُّجُوۡدِ

(इस हाल में कि) उनपर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे

وَهُمۡ سٰلِمُوۡنَ‏ ﴿۴۳﴾ فَذَرۡنِىۡ وَمَنۡ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا

जबकि वे सही सालिम थे (43) लिहाज़ा (ऐ नबी) जो लोग इस कलाम को झुठला रहे हैं उन्हें मुझ पर

الۡحَدِيۡثِ‌ؕ سَنَسۡتَدۡرِجُهُمۡ مِّنۡ حَيۡثُ لَا يَعۡلَمُوۡنَۙ‏ ﴿۴۴﴾

छोड़ दीजिए, हम उन्हें इस तरह धीरे-धीरे (तबाही की तरफ़) ले जाएंगे कि उन्हें पता भी नहीं चलेगा (44)

وَاُمۡلِىۡ لَهُمۡ‌ؕ اِنَّ كَيۡدِىۡ مَتِيۡنٌ‏ ﴿۴۵﴾ اَمۡ تَسۡـَٔـلُهُمۡ اَجۡرًا

और मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ, यक़ीन रखो! मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है (45) क्या आप उनसे मुआवज़ा माँगते हो

فَهُمۡ مِّنۡ مَّغۡرَمٍ مُّثۡقَلُوۡنَ‌ۚ‏ ﴿۴۶﴾ اَمۡ عِنۡدَهُمُ الۡغَيۡبُ

कि वे उसके तावान से दबे जा रहे हैं (46) या उनके पास ग़ैब है

فَهُمۡ يَكۡتُبُوۡنَ‏ ﴿۴۷﴾ فَاصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنۡ

पस वे लिख रहे हैं (47) पस अपने रब के फ़ैसले तक सब्र कीजिए और मछली वाले की तरह

كَصَاحِبِ الۡحُوۡتِ‌ۘ اِذۡ نَادٰى وَهُوَ مَكۡظُوۡمٌ ؕ‏ ﴿۴۸﴾ لَوۡلَاۤ

न बन जाइए, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था (48) अगर उसके

اَنۡ تَدٰرَكَهٗ نِعۡمَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالۡعَرَآءِ وَهُوَ

परवरदिगार के फ़ज़्ल ने उसे संभाल न लिया होता तो उसे बुरी हालत के साथ उसी खुले मैदान में

مَذۡمُوۡمٌ‏ ﴿۴۹﴾ فَاجۡتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيۡنَ‏ ﴿۵۰﴾

फैंक दिया जाता (49) फिर उसके रब ने उसको नवाज़ा, पस उसको नेकों में शामिल कर दिया (50)

مع ۵ منزل ۷ وقف لازم

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ

और ये मुनकिर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह आपको देखते हैं

لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾

गोया अपनी निगाहों से आपको फिसला देंगे, और कहते हैं कि यह ज़रूर दीवाना है (51)

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

हालाँकि यह क़ुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत ही नसीहत है (52)

सूरह हाक्क़ा मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई, इसमें (52) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (78) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (69) नम्बर पर है और सूरह मुल्क के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1433) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (256) कलिमात हैं

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾

सचमुच आने वाली है (1) क्या है सचमुच आने वाली (2) और अपको मालूम भी है कि सचमुच आने वाली क्या चीज़ है (3)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ

क़ौमे-समूद और क़ौमे-आद ने खड़खड़ाने वाली (हक़ीक़त) को झुठलाया (4) फिर क़ौमे-समूद,

فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ

तो वह हलाक की गई ज़ोर की आवाज़ से (5) और आद, तो वह एक तेज़ व तुंद हवा से हलाक

صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ

किए गए (6) उसको अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उनपर लगातार

اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ

मुसल्लत रखा, पस आप देखते हो कि वहाँ वे इस तरह गिरे हुए पड़े हैं गोया कि वे

اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ

खजूरों के खोखले तने हों (7) तो क्या आपको उनमें कोई बचा हुआ

بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ

नज़र आता है (8) और फ़िरऔन और उनसे पहले वालों और उल्टी हुई बस्तियों ने

بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

जुर्म किया (9) पस उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने उनको

رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾

बहुत सख़्त पकड़ा (10) और जब पानी हद से गुज़र गया तो हमने तुमको कश्ती में सवार कराया (11)

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

ताकि हम उसको तुम्हारे लिए यादगार बना दें और याद रखने वाले कान उसको याद रखें (12)

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ

पस जब सूर में यकबारगी फूँक मारी जाएगी (13) और ज़मीन

الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा (14)

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ

तो उस दिन एक वाक़े होने वाली चीज़ वाक़े हो जाएगी (15) और आसमान फट जाएगा तो वह

يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى أَرْجَآئِهَا ط وَيَحْمِلُ

उस रोज़ बिल्कुल बोदा और कमज़ोर हो जाएगा (16) और फ़रिश्ते भी उसके किनारों पर होंगे, और आपके रब के

عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ

अर्श को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे (17) उस दिन

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ

तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा न होगी (18) पस जिस शख़्स को उसका

كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

आमाल नामा उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा कि लो मेरा आमाल नामा पढ़ो (19)

إِنِّيْ ظَنَنْتُ أَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ

मैंने गुमान कर रखा था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है (20) पस वह एक पसंदीदा

رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

ऐश में होगा (21) ऊँचे बाग़ में (22) जिसके मेवे झुके पड़े होंगे (23)

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ

खाओ और पियो मज़े के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे दिनों में

الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ

किए हैं (24) और जिस शख़्स का आमाल नामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा,

منزل ٧

فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۚ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ مَا

तो वह कहेगा: काश मेरा आमाल नामा मुझे न दिया जाता (25) और मैं न जानता कि मेरा

حِسَابِيَهْ ۚ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ﴿٢٧﴾ مَآ

हिसाब क्या है (26) ऐ काश कि वह मौत ही ख़ातमा करने वाली होती (27) मेरा माल

اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۚ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ﴿٢٩﴾

मेरे काम न आया (28) मेरा सारा ज़ोर मुझ से जाता रहा (29)

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِيْ

उस शख़्स को पकड़ो फिर उसको तौक़ पहनाओ (30) फिर उसको जहन्नम में दाखिल कर दो (31) फिर ऐसी

سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۗ﴿٣٢﴾

ज़ंजीर में जकड़ो जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है (32)

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ

यह शख़्स ख़ुदाऐ-अज़ीम पर ईमान न रखता था (33) और वह ग़रीब को

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۗ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا

खाना खिलाने पर नहीं उभारता था (34) पस आज यहाँ उसका कोई

حَمِيْمٌ ۙ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗٓ

हमदर्द नहीं (35) और न खाना है सिवाए दोज़ख़ियों के लहू और पीप के (36) जिसको गुनाहगारों के

اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ۧ﴿٣٧﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ﴿٣٨﴾

सिवा कोई न खाएगा (37) अब मैं क़सम खाता हूँ उसकी भी जिसे तुम देखते हो (38)

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۙ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۚ ۙ﴿٤٠﴾

और जिनको तुम नहीं देखते हो (39) बेशक यह एक बाइज़्ज़त रसूल का कलाम है (40)

وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿٤١﴾

और वह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो (41)

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۗ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ

और यह किसी काहिन का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ग़ौर करते हो (42) ख़ुदा वंदे-आलम की

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ

तरफ़ से उतारा हुआ है (43) और अगर वह कोई बात घड़ कर हमारे

الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ

ऊपर लगाता (44) तो हम उसका दायाँ हाथ पकड़ते (45) फिर हम

لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ

उसकी रगे-दिल काट देत (46) फिर तुम में से कोई इससे

عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

हमको रोकने वाला न होता (47) और बेशक यह याद दहानी है डरने वालों के लिए (48)

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ

और हमें ख़ूब मालूम है कि तुम में कुछ लोग झुठलाने वाले भी हैं (49) और वे

لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾

मुनकिरों के लिए पछतावा है (50) और यह यक़ीनी हक़ है (51)

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾ ع

पस आप अपने रब्बे-अज़ीम के नाम की तस्बीह कीजिए (52)

ع ١٥

منزل ٧

सूरह मआरिज मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (44) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (79) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (70) नम्बर पर है और सूरह हाक़्क़ा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (224) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (929) हुरूफ़ हैं

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ

एक सवाल करने वाले ने सवाल किया ऐसे अज़ाब का जो वाक़े होने वाला है (1) काफ़िरों के लिए जिसे

لَهٗ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ

कोई टाल न सकेगा (2) अल्लाह की तरफ़ से, जो सीढ़ियों का मालिक है (3) फ़रिश्ते और रूह

الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ

सीढ़ियों से चढ़कर उसके पास जाते हैं, (अज़ाब वाक़े होगा) ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार

خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾

पचास हज़ार बरस है (4) तो आप काफ़िरों की बातों को होसले के साथ बरदाश्त करते रहिए (5)

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ﴿٦﴾ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ

बेशक ये उसको दूर समझ रहे हैं (6) और हम उसे क़रीब देख रहे हैं (7) जिस दिन

تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ﴿٨﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ﴿٩﴾

आसमान पिघले हुए तांबे के मानिंद हो जाएगा (8) और पहाड़ ऊन की तरह हो जाएंगे (9)

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ﴿١٠﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ

और कोई दोस्त किसी दोस्त को पूछेगा भी नहीं (10) हालाँकि वे उन्हें दिखाए जाएंगे, मुजरिम

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىٕذٍۢ بِبَنِيْهِ ۙ﴿١١﴾

चाहेगा कि काश! वे इस दिन के अज़ाब से बचने के लिए फ़िदये में दे दे अपने बेटों को (11)

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ﴿١٢﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ۙ﴿١٣﴾

और अपनी बीवी को और अपने भाई को (12) और अपने उस कुनबे को जिसमें वह रहता था (13)

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ﴿١٤﴾ كَلَّا ؕ

और उन तमाम को जो ज़मीन में हैं सबको फ़िदये में दे दे फिर वह अपने को बचाले (14) लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं होगा,

اِنَّهَا لَظٰى ۙ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۚۖ﴿١٦﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ

वह भड़कती हुई आग है (15) खाल उधेड़ डालने वाली (16) उन लोगों को अपनी तरफ़ बुलाएगी जिन्होंने दीने-हक़ से ऐराज़ किया

وَتَوَلّٰى ۙ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ

और मुँह फेर लिया (17) और माल जमा किया और बंद कर रखा (18) कुछ शक नहीं कि इंसान कम होसला

هَلُوْعًا ۙ﴿١٩﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۙ﴿٢٠﴾ وَّاِذَا مَسَّهُ

पैदा हुआ है (19) जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है (20) और जब उसके पास ख़ुशहाली आती है

الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۙ﴿٢١﴾ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿٢٢﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى

तो बहुत बख़ील बन जाता है (21) मगर वे नमाज़ी ऐसे नहीं हैं (22) जो अपनी नमाज़ की

صَلَاتِهِمْ دَآىِٕمُوْنَ ۙ﴿٢٣﴾ وَالَّذِيْنَ فِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ

हमेशा पाबंदी करते हैं (23) और जिन के माल व दोलत में एक मुतअय्यन

مَّعْلُوْمٌ ۙ﴿٢٤﴾ لِّلسَّآىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۙ﴿٢٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ

हक़ है (24) माँगने वालों का और न माँगने वालों का (25) और जो रोज़े-जज़ा को

بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ

सच समझते हैं (26) और जो अपने परवरदिगार के अज़ाब का ख़ौफ़

مُّشْفِقُوْنَ ۚ﴿٢٧﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾

रखते हैं (27) बेशक उनके परवरदिगार का अज़ाब है ही ऐसा कि उससे बेख़ौफ़ न हुआ जाए (28)

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝۲۹ اِلَّا عَلٰٓى

और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं (29) मगर अपनी

اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ

बीवियों या लौंडियों से कि उनके पास जाने पर उन्हें कुछ

مَلُوْمِيْنَ ۝۳۰ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

मलामत नहीं (30) अलबत्ता जो लोग उनके अलावा कोई और तरीक़ा इख़्तियार करना चाहें तो वे हद से गुज़रे हुए

الْعٰدُوْنَ ۝۳۱ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

लोग हैं (31) और जो अपनी अमानतों और अहद का पास रखने

رٰعُوْنَ ۝۳۲ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝۳۳

वाले हैं (32) और जो अपनी शहादतों पर क़ायम रहते हैं (33)

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝۳۴ اُولٰٓئِكَ فِيْ

और जो अपनी नमाज़ की ख़बर रखते हैं (34) यही लोग जन्नतों में

جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝۳۵ فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ

इज़्ज़त व इकराम से होंगे (35) तो उन काफ़िरों को क्या हुआ है कि आपकी तरफ़

مُهْطِعِيْنَ ۝۳۶ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ۝۳۷

दोड़े चले आते हैं (36) और दाएं बाएं से गिरोह गिरोह होकर जमा होते जाते हैं (37)

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۝۳۸

क्या उनमें से हर शख़्स यह तवक़्क़ुअ रखता है कि नेमत के बाग़ मैं दाख़िल किया जाएगा? (38)

كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝۳۹ فَلَآ اُقْسِمُ

हरगिज़ नहीं! हमने उनको उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं (39) हमें मशरिक़ों

بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝۴۰ عَلٰٓى

और मग़रिबों के मालिक की क़सम कि हम ताक़त रखते हैं (40) यानी इस बात पर

اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝۴۱

क़ादिर हैं कि उनसे बेहतर लोग बदल लाएं और हम आजिज़ नहीं हैं (41)

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ

तो ऐ पैग़म्बर! उनको बातिल में पड़े रहने और खेल खेलने दें यहाँ तक कि जिस दिन का उनसे वादा किया जाता है

الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ۝۴۲ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ

वह उनके सामने आ मौजूद हो (42) जिस दिन ये जल्दी जल्दी क़बरों से

سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝۴۳ خَاشِعَةً

निकलेंगे जैसे अपने बुतों की तरफ़ दोड़े जा रहे हों (43) उनकी आँखें

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ

झुक रही होंगी और ज़िल्लत उनपर छा रही होगी, यही वह दिन है जिसका उनसे

كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝۴۴

वादा किया जाता था (44)

सूरह नूह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (28) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (71) नम्बर पर है और तिलावत के ऐतबार से भी (71) नम्बर पर है और सूरह नह्ल के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (999) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (224) कलिमात हैं

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ

बेशक हमने नूह (अलै०) को उनकी क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा था कि एक दर्दनाक अज़ाब के

قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱ قَالَ يٰقَوْمِ

आने से पहले अपनी क़ौम को इत्तिला कर दो (1) नूह (अलै०) ने कहाः ऐ मेरी क़ौम!

اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۲ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ

मैं तुमको एक साफ़ इत्तिला देने आया हूँ (2) यह कि सिर्फ़ एक अल्लाह की बंदगी करो, उसकी नाफ़रमानी से बचो

وَاَطِيْعُوْنِ ۝۳ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ

और मेरा कहा मान जाओ (3) तब वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और एक मुक़र्रर वक़्त की

اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ

तुमको मोहलत देगा, बेशक अल्लाह की तरफ़ से जब मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो फिर ढील नहीं मिलती,

لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۴ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ

काश तुम यह बात समझ लेते (4) नूह (अलै०) ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! मैं अपनी क़ौम को रात और दिन

لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝۵ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىْۤ اِلَّا فِرَارًا ۝۶

बराबर दावत देता रहा (5) मगर ये लोग तो मेरी दावत से बिदक कर और ज़्यादा भागने लगे (6)

وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ

और मैंने जब कभी उनको दावत दी उनके भले के लिए कि आप उनकी मग़फ़िरत फ़रमा दें लेकिन उन्होंने

فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا

अपने कानों में उंगलियाँ ठूंस लीं और कपड़ों से अपने बदन को ढाँक लिया और अपनी ज़िद पर अड़े रहे और बड़ा तकब्बुर लिए

اسْتِكْبَارًا ۚ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّيْٓ

अकड़ बैठ (7) फिर भी मैंने उनको और ज़्यादा खुल कर दावत पेश की (8) फिर उसके बाद मैंने

اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ﴿٩﴾ فَقُلْتُ

खुल्लम खुल्ला उनके सामने अपनी दावत का ऐलान कर दिया और अकेले में चुपके से भी समझाने की कोशिश की (9) चुनाँचे मैंने कहा

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ

कि अपने परवरदिगार से मग़फ़िरत माँगो, यक़ीन जानो कि वह बहुत बख़्शने वाला है (10) वह तुम पर आसमान से पानी की

عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿١١﴾ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ

मूसलाधार बारिश बरसाएगा (11) और तुम्हारी इमदाद करेगा मालों और बेटों के ज़रिए

وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۭ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ

और तुम्हारे लिए बाग़ात बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें बनाएगा (12) तुमको क्या हो गया है

لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ﴿١٣﴾ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾

कि तुम अल्लाह के लिए वक़ार और अज़मत का ऐतिक़ाद नहीं रखते (13) और उसने तुमको पैदा फ़रमया तरह तरह से (14)

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿١٥﴾

क्या तुमने यह ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह ने कैसे बना दिए ऊपर तले सात आसमान (15)

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

और चाँद को उनमें नूर फैलाने वाला और सूरज को रोशन चिराग़ बना दिया (16)

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۙ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ

और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से बेहतरीन तरीक़े पर उगाया है (17) फिर ज़मीन के अंदर तुम्हें

فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ

लौटा देगा और फिर तुमको एक ख़ास अंदाज़ से बाहर निकालेगा (18) और अल्लाह ने ही तुम्हारे लिए ज़मीन को

الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۧ﴿٢٠﴾

एक फ़र्श बना दिया है (19) ताकि तुम उसके कुशादा और खुले रास्तों में चल फिर सको (20)

منزل ٧

ع ٢٠

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ

नूह (अलै०) ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरी बात नहीं मानी और ऐसों के कहने में

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوْا

आए कि उनके माल और औलाद में नुक़सान के सिवा उनके कुछ हाथ न आएगा (21) और उन्होंने बड़े फ़रेब

مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ

और साज़िश का जाल बिछा दिया (22) और (अपने आदमियों से) कहा है कि अपने माबूदों को हरगिज़ मत छोड़ना,

وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ

न वद् को और सुवाअ को किसी सूरत में छोड़ना, और न यग़ूस व यऊक़ और नस्र को

وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

छोड़ना (23) और उन्होंने बहुत से लोगों को बहका दिया, और अब आप इन गुमराहों की

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا

गुमराही में ही इज़ाफ़ा कीजिए (24) ये लोग अपनी ख़ताओं और गुनाहों के सबब पानी में डुबा-डुबा कर मारे गए

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ

फिर आग में दाख़िल कर दिए गए, और अब अल्लाह के मुक़ाबले में किसी को भी अपना

اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى

मददगार नहीं पा रहे हैं (25) और नूह (अलै०) ने अर्ज़ किया कि ऐ रब! आप ज़मीन पर

الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ اِنَّكَ اِنْ

काफ़िरों से बसा हुआ एक घर भी बाक़ी न रहने दें (26) अगर आप उनको यहाँ

تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

रहने देंगे तो यह आपके बंदों को फिर गुमराह करेंगे और उनसे जो औलाद होगी वह भी बदकार और पक्की

كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

काफ़िर ही होगी (27) ऐ मेरे रब! मेरी मग़फ़िरत फ़रमाइए और मेरे माँ-बाप की मग़फ़िरत फ़रमाइए और जो मेरे घर

بَيْتِیَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ

में ईमान लाकर दाख़िल हुआ ऐसे सब ईमान वाले मर्दों की और ईमान वाली औरतों की मग़फ़िरत फ़रमाइए, और ज़ालिमों की

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

तबाही और बरबादी को ज़्यादा बढ़ा दीजिए (28)

सूरह जिन्न मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (28) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (40) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (72) नम्बर पर है और सूरह आराफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (870) हुरूफ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

इसमें (285) कलिमात हैं

قُلۡ اُوۡحِىَ اِلَىَّ اَنَّهُ اسۡتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الۡجِنِّ فَقَالُوۡۤا

कह दीजिए कि मुझे वह्य की गई है कि जिन्नात की एक जमाअत ने ग़ौर से क़ुरआन सुना तो उन्होंने कहा

اِنَّا سَمِعۡنَا قُرۡاٰنًا عَجَبًا ۙ‏ ﴿۱﴾ يَّهۡدِىۡۤ اِلَى الرُّشۡدِ

कि हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है (1) जो हिदायत की राह बताता है

فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنۡ نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ‏ ﴿۲﴾ وَّاَنَّهٗ

तो हम उसपर ईमान लाए, और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे (2) और यह कि

تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ‏ ﴿۳﴾ وَّاَنَّهٗ

हमारे रब की शान बहुत बुलंद है, उसने न कोई बीवी बनाई है और न औलाद (3) और यह कि

كَانَ يَقُوۡلُ سَفِيۡهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ‏ ﴿۴﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ

हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफ़े-हक़ बातें कहता था (4) और हमने गुमान किया था

اَنۡ لَّنۡ تَقُوۡلَ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ‏ ﴿۵﴾

कि इंसान और जिन अल्लाह की शान में कभी झूठ बात न कहेंगे (5)

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الۡاِنۡسِ يَعُوۡذُوۡنَ بِرِجَالٍ

और यह कि इंसानों में से कुछ लोग जिन्नात के कुछ लोगों की पनाह

مِّنَ الۡجِنِّ فَزَادُوۡهُمۡ رَهَقًا ۙ‏ ﴿۶﴾ وَّاَنَّهُمۡ ظَنُّوۡا كَمَا

लिया करते थे, इस तरह उन लोगों ने जिन्नात को और सर पर चढ़ा दिया था (6) और यह कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा

ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ‏ ﴿۷﴾ وَّاَنَّا لَمَسۡنَا

तुम्हारा गुमान था कि अल्लाह किसी को न उठाएगा (7) और हमने आसमान का

السَّمَآءَ فَوَجَدۡنٰهَا مُلِئَتۡ حَرَسًا شَدِيۡدًا وَّشُهُبًا ۙ‏ ﴿۸﴾

जायज़ा लिया तो हमने पाया कि वह सख़्त पेहरे दारों और शोलों से भरा हुआ है (8)

وَّاَنَّا كُنَّا نَقۡعُدُ مِنۡهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمۡعِ ؕ فَمَنۡ

और हम उसके बअज़ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे, पस अब जो कोई

يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿٩﴾ وَّاَنَّا

सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है (9) और हम

لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ

नहीं जानते कि यह ज़मीन वालों के लिए कोई बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ

رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿١٠﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ

भलाई का इरादा किया है (10) और यह कि हम में से बअज़ नेक हैं और बअज़

ذٰلِكَ ۭ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿١١﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ

और तरह के, हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं (11) और यह कि हमने समझ लिया कि हम ज़मीन में

اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿١٢﴾ وَّاَنَّا

अल्लाह को हरा नहीं सकते और न भाग कर उसको हरा सकते हैं (12) और यह कि हमने

لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ

जब हिदायत की बात सुनी तो हम उसपर ईमान लाए, पस जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाएगा

فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿١٣﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ

तो उसको न किसी कमी का अंदेशा होगा और न ज़्यादती का (13) और यह कि हम में से कुछ मुसलमान हो गए हैं

وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا

और हम में से (अब भी) कुछ ज़ालिम हैं; चुनाँचे जो इस्लाम ला चुके हैं उन्होंने हिदायत का रास्ता

رَشَدًا ﴿١٤﴾ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ﴿١٥﴾

ढूंड लिया है (14) और रहे वे लोग जो ज़ालिम हैं तो वे जहन्नम का ईंधन हैं (15)

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً

और (मुझे वह्य की गई है कि) ये लोग अगर रास्ते पर क़ायम हो जाते तो हम उनको ख़ूब पानी से

غَدَقًا ۙ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ

सेराब करते (16) ताकि उसमें उनको आज़माएं, और जो शख़्स अपने रब की याद से

رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ﴿١٧﴾ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ

मुँह मोड़ेगा तो वह उसको सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेगा (17) और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं,

فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۙ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ

पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो (18) और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसको पुकारने

يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ

के लिए खड़ा हुआ तो लोग उसपर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए (19) कह दीजिए कि मैं सिर्फ़

اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ

अपने रब को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता (20) कह दीजिए कि मैं

لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ

तुम लोगों के लिए न किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूँ और न किसी भलाई का (21) कह दीजिए कि मुझको

لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ

अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता और न मैं उसके सिवा कोई पनाह

دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ

पा सकता हूँ (22) बस अल्लाह ही की तरफ़ से पहुँचा देना और उसके पैग़ामों की अदाइगी है, और जो शख़्स

يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे

فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ

हमेशा रहेंगे (23) यहाँ तक कि जब वे देखेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान लेंगे

مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلْ اِنْ

कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और कौन तादाद में कम हैं (24) कह दीजिए कि मैं

اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ

नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरे रब ने उसके लिए लम्बी मुद्दत

رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ

मुक़र्रर कर रखी है (25) ग़ैब का जानने वाला वही है, वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

नहीं करता (26) सिवाए उस रसूल के जिसको उसने पसंद किया हो तो वह

يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

उसके आगे और पीछे मुहाफ़िज़ लगा देता है (27)

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ

ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुँचा दिए हैं और वह उनके माहौल का

بِمَا لَدَيۡهِمۡ وَاَحۡصٰى كُلَّ شَىۡءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

इहाता किए हुए है और उसने हर चीज़ को गिन रखा है (28)

सूरह मुज़्ज़म्मिल मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई लेकिन आयत (10, 11, 20) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (20) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (3) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (73) नम्बर पर है और सूरह क़लम के बाद नाज़िल हुई।

इसमें (285) कलिमात हैं | بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ | इसमें (838) हुरूफ़ हैं

يٰۤاَيُّهَا الۡمُزَّمِّلُ ۙ﴿١﴾ قُمِ الَّيۡلَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۙ﴿٢﴾ نِّصۡفَهٗۤ

ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले (1) रात को क़ियाम किया करें मगर थोड़ी सी रात (2) यानी निस्फ़ रात

اَوِ انۡقُصۡ مِنۡهُ قَلِيۡلًا ۙ﴿٣﴾ اَوۡ زِدۡ عَلَيۡهِ وَرَتِّلِ

या उससे कुछ कम (3) या उससे कुछ ज़्यादा और क़ुरआन को

الۡقُرۡاٰنَ تَرۡتِيۡلًا ؕ﴿٤﴾ اِنَّا سَنُلۡقِىۡ عَلَيۡكَ قَوۡلًا ثَقِيۡلًا ﴿٥﴾

ठहर-ठहर कर पढ़ा करें (4) हम जल्द ही आप पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे (5)

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيۡلِ هِىَ اَشَدُّ وَطۡاً وَّاَقۡوَمُ قِيۡلًا ؕ﴿٦﴾

यक़ीनन रात के वक़्त उठना ही ऐसा अमल है जिससे नफ़्स अच्छी तरह कुचला जाता है और बात भी बेहतर तरीक़े पर कही जाती है (6)

اِنَّ لَكَ فِى النَّهَارِ سَبۡحًا طَوِيۡلًا ؕ﴿٧﴾ وَاذۡكُرِ اسۡمَ رَبِّكَ

बेशक दिन में आपको और बहुत से काम होते हैं (7) तो अपने रब के नामों का ज़िक्र किया कीजिए

وَتَبَتَّلۡ اِلَيۡهِ تَبۡتِيۡلًا ؕ﴿٨﴾ رَبُّ الۡمَشۡرِقِ وَالۡمَغۡرِبِ

और हर तरफ़ से बेतअल्लुक़ होकर उसी की तरफ़ मुतवज्जह हो जाइए (8) वही मशरिक़ व मग़रिब का मालिक है,

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذۡهُ وَكِيۡلًا ﴿٩﴾ وَاصۡبِرۡ عَلٰى

उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो उसी को अपना वकील बना लीजिए (9) और जो जो दिल तोड़ने वाली बातें

مَا يَقُوۡلُوۡنَ وَاهۡجُرۡهُمۡ هَجۡرًا جَمِيۡلًا ﴿١٠﴾ وَذَرۡنِىۡ

वे कहते हैं उनको होसले से बरदाश्त करते रहिए और उनसे अच्छे अंदाज़ के साथ अलग हो जाइए (10) और मुझपर छोड़ दीजिए

وَالۡمُكَذِّبِيۡنَ اُولِى النَّعۡمَةِ وَمَهِّلۡهُمۡ قَلِيۡلًا ﴿١١﴾ اِنَّ لَدَيۡنَاۤ

उन झुठलाने वाले मालदारों को, और उनको थोड़ी सी मोहलत दे दीजिए (11) बेशक हमारे पास

اَنۡكَالًا وَّجَحِيۡمًا ۙ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا

बेड़ियाँ हैं और भड़कती हुई आग है (12) और गले में अटकने वाला खाना और दर्दनाक

اَلِيْمًا ۝۱۳ قف يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ

अज़ाब है (13) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लर्ज़ उठेंगे और पहाड़

الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝۱۴ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ

फिसलती हुई रेत का टीला बन जाएंगे (14) (ऐ मक्के वालो) हमने तुम्हारे पास एक रसूल

رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ

तुमपर गवाह बनाकर भेजा, जिस तरह हमने एक रसूल (मूसा को) फ़िरऔन की

احتیاط

رَسُوْلًا ۝۱۵ ط فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا

तरफ़ भेजा था (15) पस फ़िरऔन ने (हमारे) रसूल का कहा न माना तो हमने उसको एक बड़े

وَّبِيْلًا ۝۱۶ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا

वबाल में पकड़ लिया (16) अगर तुम कुफ़्र करोगे तो तुम किस तरह उस दिन से बचोगे

يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ۝۱۷ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ط

जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा (17) जिसमें आसमान फट जाएगा,

منزل ۷

كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝۱۸ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ

अल्लाह का वादा पूरा होकर रहेगा (18) यह क़ुरआन तो एक नसीहत है, तो जो शख़्स

ع ۱۹ / ۱۴

شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝۱۹ ع اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ

चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार करे (19) बेशक आपका रब ख़ूब जानता है कि आप

تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ

और आपके साथ के लोग (कभी तो) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात

وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ط وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ

और (कभी) एक तिहाई रात क़ियाम करते हैं, और अल्लाह तो रात और दिन का अंदाज़ा

وَالنَّهَارَ ط عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

रखता है, उसने मालूम कर लिया कि तुम उसको निबाह न सकोगे तो उसने तुम पर मेहरबानी की

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ط عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

पस जितना आसानी से हो सके उतना क़ुरआन पढ़ लिया करो, उसने जान लिया कि

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ

तुम में बअज़ बीमार हैं और बअज़ रोज़ी की तलाश में

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ

मुल्क में सफ़र करते हैं और बअज़ अल्लाह की राह में

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا

लड़ते हैं तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो, और नमाज़ की

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ

पाबंदी रखो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को क़र्ज़े-हसना देते रहो

وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ

और जो नेक अमल तुम अपने लिए आगे भेज दोगे तो उसके सिले में अल्लाह के हाँ

اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ

बेहतर और बड़ा बदला पाओगे, और अल्लाह से बख़्शिश माँगते रहो

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع

बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (20)

ع ٢ — منزل ٧

सूरह मुद्दस्सिर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (56) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (4) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (74) नम्बर पर है और सूरह मुज़्ज़म्मिल के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1010) हुरूफ़ हैं — بسم الله الرحمن الرحيم — इसमें (255) कलिमात हैं

يٰاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ۙ قُمْ فَاَنْذِرْ ﴿٢﴾ۙ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ۙ

ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले! (1) खड़े हो जाइए और आगाह कर दीजिए (2) और रब ही की बड़ाइयाँ बयान कीजिए (3)

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿٤﴾ۙ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ۙ وَلَا تَمْنُنْ

और अपने कपड़ों को पाक रखिए (4) नापाकी को छोड़ दीजिए (5) और एहसान करके ज़्यादा लेने की

تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾ۙ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾ۭ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ﴿٨﴾ۙ

ख़्वाहिश न कीजिए (6) और अपने रब की राह में सब्र कीजिए (7) पस जबकि सूर में फूँक मारी जाएगी (8)

فَذٰلِكَ يَوْمَىِٕذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ﴿٩﴾ۙ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ

तो वह दिन बड़ा सख़्त दिन होगा (9) (जो) काफ़िरों पर आसान

يَسِيْرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿١١﴾ۙ وَّجَعَلْتُ

न होगा (10) उस शख़्स का मामला मुझपर छोड़ दें जिसे मैंने अकेला पैदा किया (11) और उसे

لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿١٢﴾ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ﴿١٣﴾ وَّمَهَّدْتُّ

ऐसा माल दिया जो दूर तक फैला पड़ा है (12) और बेटे दिए जो सामने मौजूद रहते हैं (13) और मैंने उसे बहुत कुछ

لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿١٤﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ

कुशादगी दे रखी है (14) फिर भी उसकी चाहत है कि मैं उसे और ज़्यादा दूँ (15) नहीं नहीं, वह

كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿١٦﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿١٧﴾ اِنَّهٗ

हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ है (16) जल्द ही मैं उसे एक सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊँगा (17) उसका हाल

فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ

तो यह है कि उसने सोचकर एक बात बनाई (18) ख़ुदा की मार हो उस पर कि कैसी बात बनाई (19) दोबारा ख़ुदा की मार हो उसपर

قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ

कि कैसी बात बनाई (20) फिर उसने नज़र दोड़ाई (21) फिर उसने मुँह बनाया और फिर उसने मुँह बिगाड़ा (22) फिर पीछे हट गया

وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ اِنْ

और ग़ुरूर किया (23) और कहने लगा कि यह तो सिर्फ़ जादू है जो नक़्ल किया जाता है (24) सिवाए

هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَآ

इंसानी कलाम के कुछ भी नहीं (25) मैं जल्द ही उसे दोज़ख़ में डालूंगा (26) और आपको

اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ

क्या ख़बर कि दोज़ख़ क्या चीज़ है (27) न वह बाक़ी रखती है और न छोड़ती है (28) खाल को

لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ

झुलसा देती है (29) और उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते मुक़र्रर) हैं (30) हमने दोज़ख़ के दारोगे

النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا

सिर्फ़ फ़रिश्ते रखे हैं, और हमने उनकी तादाद सिर्फ़ काफ़िरों की

فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا

आज़माईश के लिए मुक़र्रर की है; ताकि अहले-किताब यक़ीन

الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ

कर लें और अहले-ईमान के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाए और अहले किताब

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ

और अहले-ईमान शक ना करें, और जिन के दिलों में

فِیۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡكٰفِرُوۡنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ

बीमारी है वे और काफ़िर कहेंगे कि इस बयान से अल्लाह तआला की

بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنۡ يَّشَآءُ

मुराद क्या है? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है

وَيَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعۡلَمُ جُنُوۡدَ رَبِّكَ اِلَّا

और जिसे चाहता है हिदायत देता है, और आपके रब के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं

هُوَ ؕ وَمَا هِىَ اِلَّا ذِكۡرٰى لِلۡبَشَرِ ﴿۳۱﴾ كَلَّا وَالۡقَمَرِ ﴿۳۲﴾

जानता, और यह महज़ एक नसीहत है इंसानों के लिए (31) सच कहता हूँ कि क़सम है चाँद की (32)

وَالَّيۡلِ اِذۡ اَدۡبَرَ ﴿۳۳﴾ وَالصُّبۡحِ اِذَاۤ اَسۡفَرَ ﴿۳۴﴾ اِنَّهَا لَاِحۡدَى

और रात की जब वह पीछे हटे (33) और सुबह की जब कि रोशन हो जाए (34) कि यक़ीनन वह (जहन्नम) बड़ी चीज़ों में से

الۡكُبَرِ ﴿۳۵﴾ نَذِيۡرًا لِّلۡبَشَرِ ﴿۳۶﴾ لِمَنۡ شَآءَ مِنۡكُمۡ اَنۡ

एक है (35) बनी आदम को डराने वाली (36) तुम में से हर उस शख़्स को जो

يَّتَقَدَّمَ اَوۡ يَتَاَخَّرَ ﴿۳۷﴾ كُلُّ نَفۡسٍۢ بِمَا كَسَبَتۡ رَهِيۡنَةٌ ﴿۳۸﴾

आगे बढ़ना या पीछे हटना चाहे (37) हर शख़्स रोका जाएगा उन आमाल की वजह से जो उसने किए (38)

اِلَّاۤ اَصۡحٰبَ الۡيَمِيۡنِ ﴿۳۹﴾ فِىۡ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۴۰﴾ عَنِ

मगर दाएं हाथ वाले (39) जो जन्नतों में होंगे, एक दूसरे को पूछ रहे होंगे (40) मुजरिमों के

الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمۡ فِىۡ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوۡا لَمۡ نَكُ

बारे में (41) कि तुम्हें दोज़ख़ में किस चीज़ ने डाला (42) वे जवाब देंगे कि

مِنَ الۡمُصَلِّيۡنَ ﴿۴۳﴾ وَلَمۡ نَكُ نُطۡعِمُ الۡمِسۡكِيۡنَ ﴿۴۴﴾

हम नमाज़ी न थे (43) और न हम मिस्कीन को खाना खिलाते थे (44)

وَكُنَّا نَخُوۡضُ مَعَ الۡخَآئِضِيۡنَ ﴿۴۵﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ

और हम बहस करने वालों का साथ देकर बहस व मुबाहिसे में मशग़ूल रहा करते थे (45) और बदले के दिन को

بِيَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿۴۶﴾ حَتّٰۤى اَتٰٮنَا الۡيَقِيۡنُ ﴿۴۷﴾ فَمَا

झुठलाते थे (46) यहाँ तक कि हमें मौत आ गई (47) पस उन्हें

تَنۡفَعُهُمۡ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيۡنَ ﴿۴۸﴾ فَمَا لَهُمۡ عَنِ

सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश नफ़ा न देगी (48) उन्हें क्या हो गया है

التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

कि नसीहत से मुँह मोड़ रहे हैं (49) गोया कि वे बिदके हुए गधे हैं (50)

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ

जो शेर से भागे हों (51) बल्कि उनमें से हर शख़्स चाहता है कि

اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ

उसे खुली हुई किताबें दी जाएं (52) ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता; बल्कि ये क़ियामत से

الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ ؕ كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ ؕ

बेख़ौफ़ हैं (53) सच्ची बात तो यह है कि यह (क़ुरआन) एक नसीहत है (54) अब जो चाहे उसे याद कर ले (55)

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى

और वह नसीहत हासिल नहीं कर सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही तक़्वे का अहल है

وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

और बख़्शने का अहल है (56)

सूरह क़ियामह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (40) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (31) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (75) नम्बर पर है और सूरह क़ारिअ़ह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (692) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (199) कलिमात हैं

لَاۤ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَاۤ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ

मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की (1) और क़सम खाता हूँ मलामत करने वाले

اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ ؕ

नफ़्स की (2) क्या इंसान समझता है कि हम उसकी हड्डियाँ हरगिज़ जमा नहीं कर पाएंगे (3)

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيْدُ

क्यों नहीं! जबकि हम इसपर भी क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों के पोर-पोर को ठीक-ठीक बना दें (4) बल्कि इंसान तो

الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ﴿٥﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ﴿٦﴾ ؕ

चाहता है कि आइंदा भी फ़िस्क़ व फ़ुजूर के काम करे (5) वह पूछता है कि क़ियामत का दिन कब है (6)

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ

फिर जब आँखें फटी की फटी रह जाएंगी (7) और चाँद बेनूर हो जाएगा (8) और जमा कर दिए जाएंगे

وَالْقَمَرُ ۙ﴿٩﴾ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ﴿١٠﴾

सूरज और चाँद (9) इंसान उस दिन कहेगा कि किधर भागूँ (10)

كَلَّا لَا وَزَرَ ۗ﴿١١﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِ الْمُسْتَقَرُّ ۗ﴿١٢﴾

हरगिज़ नहीं! (वहाँ) कोई पनाहगाह नहीं (11) उस दिन आपके रब के सामने जा ठहरना होगा (12)

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۗ﴿١٣﴾ بَلِ

उस दिन इंसान को बता दिया जाएगा जो उसने आगे भेजा और पीछे छोड़ा (13) बल्कि

الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿١٤﴾ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۗ﴿١٥﴾

इंसान ख़ुद अपने नफ़्स पर ख़ूब शाहिद है (14) अगर्चे वह अपनी (कितनी ही) मअज़िरतें पेश करे (15)

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۗ﴿١٦﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ

आप इस (क़ुरआन) को जल्दी याद करने के लिए अपनी ज़बान को हरकत न दें (16) यक़ीनन इसका जमा करना और (आपसे) इसका

وَقُرْاٰنَهٗ ۚ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۚ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ

पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है (17) फिर जब हम उसे पढ़वा चुकें तो आप उसके पढ़ने का इत्तिबा करें (18) फिर यक़ीनन उसकी

عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۗ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ

वज़ाहत हमारे ज़िम्मे है (19) हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम दुनिया को पसंद करते हो (20) और तुम आख़िरत को

الْاٰخِرَةَ ۗ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ﴿٢٢﴾ اِلٰى رَبِّهَا

छोड़ देते हो (21) उस दिन कई चेहरे तरो-ताज़ा होंगे (22) अपने रब की तरफ़

نَاظِرَةٌ ۚ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۙ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ اَنْ

देखते होंगे (23) और उस दिन कई चेहरे उदास होंगे (24) वे समझेंगे कि उनसे

يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۗ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ﴿٢٦﴾

कमर तोड़ मुआमला किया जाएगा (25) हरगिज़ नहीं! जब जान हलक़ तक आ पहुँचेगी (26)

وَقِيْلَ مَنْ ٜ رَاقٍ ۙ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ

और कहा जाएगा: कौन है झाड़ फूँक करने वाला? (27) और वह समझेगा कि यह जुदाई का वक़्त है (28) और पिंडली

السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ نِ الْمَسَاقُ ۚ﴿٣٠﴾ ع

पिंडली से लिपट जाएगी (29) उस दिन आपके रब की तरफ़ चलना होगा (30)

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ﴿٣٢﴾

न तो उसने तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी (31) बल्कि उसने हक़ को झुठलाया और मुँह मोड़ा (32)

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهۡلِهٖ يَتَمَطّٰى ؕ﴿۳۳﴾ اَوۡلٰى لَكَ فَاَوۡلٰى ۙ﴿۳۴﴾ ثُمَّ

फिर गया अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ (33) तेरे लिए हलाकत पर हलाकत है (34) फिर

اَوۡلٰى لَكَ فَاَوۡلٰى ؕ﴿۳۵﴾ اَيَحۡسَبُ الۡاِنۡسَانُ اَنۡ يُّتۡرَكَ سُدًى ؕ﴿۳۶﴾

तेरे लिए हलाकत पर हलाकत है (35) क्या इंसान समझता है कि उसे यूँ ही बेकार (बिला हिसाब व किताब) छोड़ दिया जाएगा? (36)

اَلَمۡ يَكُ نُطۡفَةً مِّنۡ مَّنِىٍّ يُّمۡنٰى ۙ﴿۳۷﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً

क्या वह मनी का एक नुतफ़ा नहीं था जो (रिहम में) टपकाया जाता है (37) फिर जमा हुआ ख़ून था,

فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۙ﴿۳۸﴾ فَجَعَلَ مِنۡهُ الزَّوۡجَيۡنِ الذَّكَرَ

फिर अल्लाह ने (उसे) बनाया फिर दुरुस्त किया (38) फिर उससे नर और मादा का

وَالۡاُنۡثٰى ؕ﴿۳۹﴾ اَلَيۡسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنۡ يُّحۡـىِۦَ الۡمَوۡتٰى ﴿۴۰﴾

जोड़ा बनाया (39) क्या वह (अल्लाह) इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे (40)

सूरह दहर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (31) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (98) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (76) नम्बर पर है और सूरह रहमान के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (1054) हुरूफ़ हैं	بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ	इसमें (240) कलिमात हैं

هَلۡ اَتٰى عَلَى الۡاِنۡسَانِ حِيۡنٌ مِّنَ الدَّهۡرِ لَمۡ يَكُنۡ

यक़ीनन गुज़रा है इंसान पर एक वक़्त ज़माने में जबकि यह कोई

شَيۡـًٔـا مَّذۡكُوۡرًا ﴿۱﴾ اِنَّا خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ نُّطۡفَةٍ

क़ाबिले-ज़िक्र चीज़ न था (1) बेशक हमने इंसान को मिले जुले

اَمۡشَاجٍ ۖ نَّبۡتَلِيۡهِ فَجَعَلۡنٰهُ سَمِيۡعًۢا بَصِيۡرًا ﴿۲﴾ اِنَّا هَدَيۡنٰهُ

नुतफ़े से इम्तिहान के लिए पैदा किया और उसको सुनता देखता बनाया (2) हमने उसे राह

السَّبِيۡلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوۡرًا ﴿۳﴾ اِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا

दिखाई अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या चाहे नाशुक्रा (3) यक़ीनन हमने

لِلۡكٰفِرِيۡنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغۡلٰلًا وَّسَعِيۡرًا ﴿۴﴾ اِنَّ الۡاَبۡرَارَ

काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और शोलों वाली आग तैयार कर रखी है (4) बेशक नेक लोग

يَشۡرَبُوۡنَ مِنۡ كَاۡسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوۡرًا ۚ﴿۵﴾ عَيۡنًا يَّشۡرَبُ

ऐसे जाम से पिएंगे जिसमें काफ़ूर मिला हुआ होगा (5) जो एक चश्मा है जिससे

بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝٦ يُوْفُوْنَ

अल्लाह के बंदे पिएंगे, उसकी नहरें निकाल ले जाएंगे (जिधर चाहें) 6 जो नज़र

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٧

पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों तरफ़ फैल जाने वाली है 7

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا

और अल्लाह की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं मिस्कीन और यतीम

وَّاَسِيْرًا ۝٨ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ

और क़ैदी को 8 हम तो तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ामंदी के लिए खिलाते हैं न तुम से

جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝٩ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا

बदला चाहते हैं और न शुक्रिया चाहते हैं 9 बेशक हम अपने परवरदिगार से उस दिन का ख़ौफ़ करते हैं

عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝١٠ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

जो उदासी और सख़्ती वाला होगा 10 पस उन्हें अल्लाह ने उस दिन की बुराई से बचा लिया

وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝١١ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا

और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी पहुँचाई 11 और उन्हें उनके सब्र के बदले जन्नत

جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝١٢ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ

और रेशमी लिबास अता फ़रमाए 12 वे वहाँ तख़्तों पर तकिए लगाए हुए बैठेंगे,

لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝١٣ وَدَانِيَةً

न वहाँ सूरज की गरमी देखेंगे और न जाड़े की सख़्ती 13 उन जन्नतों के साए

عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝١٤

उन पर झुके हुए होंगे और उनके (मेवे और) गुच्छे नीचे लटकाए हुए होंगे 14

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ

और उनपर चाँदी के बर्तनों और उन जामों का दौर कराया जाएगा

كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝١٥ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا

जो शीशे के होंगे 15 शीशे भी चाँदी के जिनको (साक़ी ने) अंदाज़े से

تَقْدِيْرًا ۝١٦ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

नाप रखा होगा 16 और उन्हें वहाँ वह जाम पिलाए जाएंगे जिनमें

زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾

अदरक मिली हुई होगी (17) जन्नत की एक नहर से जिसका नाम सलसबील है (18)

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ

और उनपर लड़के चक्कर लगाएंगे जो लड़के ही रहेंगे, जब आप उनको देखोगे

حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ

तो आप उन्हें बिखरे मोती गुमान करोगे (19) और तुम वहाँ जहाँ कहीं भी नज़र डालोगे

نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ

तो सरासर नेमतें और अज़ीमुश्शान सलतनत ही देखोगे (20) उनके जिसमों पर सब्ज़ बारीक और मोटे

خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ

रेशमी कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंगनों का ज़ेवर पहनाया जाएगा

وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ

और उन्हें उनका रब पाक साफ़ शराब पिलाएगा (21) (कहा जाएगा कि) यह है तुम्हारे आमाल का

جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا

बदला और तुम्हारी कोशिश की क़दर की गई (22) (ऐ नबी!) हमने ही आप पर

عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا

क़ुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया है (23) पस आप अपने रब के हुक्म पर क़ायम रहिए और उनमें से

تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ

किसी गुनहगार या नाशुक्रे का कहा न मानें (24) और अपने रब के नाम का

بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَّمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ

सुबह व शाम ज़िक्र किया करें (25) और रात के कुछ वक़्त उसके सामने सज्दे करें और बहुत रात तक

لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ

उसकी तस्बीह किया करें (26) बेशक ये लोग जल्दी मिलने वाली (दुनिया) को चाहते हैं

وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ

और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं (27) हमने उन्हें पैदा किया

وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ

और हमने उनके जोड़ और बंधन मज़बूत किए, और हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे औरों को

تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ

बदल लाएं (28) यक़ीनन यह तो एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की

اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ

राह लेले (29) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह ही

اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ

चाहे, बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिकमत वाला है (30) जिसे चाहे

مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ

अपनी रहमत में दाख़िल कर ले, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब

عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾ ع

तैयार कर रखा है (31)

सूरह मुर्सलात मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई मगर आयत नम्बर (48) मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (50) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (33) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (77) नम्बर पर है और सूरह हु-मज़ह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (816) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (180) कलिमात हैं

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾

उन हवाओं की क़सम जो नफ़ा के लिए भेजी जाती हैं (1) फिर उन हवाओं की क़सम जो तेज़ चलने वाली हैं (2)

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾

और उन हवाओं की क़सम जो बादलों को फैलाने वाली हैं (3) फिर उन हवाओं की क़सम जो बादलों को अलग अलग करने वाली हैं (4)

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ اِنَّمَا

फिर उन हवाओं की क़सम जो अल्लाह की याद दिल में डालने वाली हैं (5) उज़्र के लिए या डराने के लिए (6) तुम्हें

تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾

जिससे डराया जा रहा है वह अलबत्ता ज़रूर वाक़े होने वाला है (7) जब तारों की चमक जाती रहेगी (8)

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾

और जब आसमान फट जाएगा (9) और जब पहाड़ उड़े उड़े फिरेंगे (10)

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَىِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾

और जब पैग़म्बरों के जमा होने का वक़्त आ जाएगा (11) भला इन उमूर में ताख़ीर किस दिन के लिए की गई (12)

لِيَوۡمِ الۡفَصۡلِ ﴿١٣﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰكَ مَا يَوۡمُ الۡفَصۡلِ ﴿١٤﴾

फ़ैसले के दिन के लिए (13) और आपको क्या ख़बर कि फ़ैसले का दिन क्या है (14)

وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿١٥﴾ اَلَمۡ نُهۡلِكِ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿١٦﴾

उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है (15) क्या हमने पहले लोगों को हलाक नहीं कर डाला? (16)

ثُمَّ نُتۡبِعُهُمُ الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿١٧﴾ كَذٰلِكَ نَفۡعَلُ

फिर हम इन पिछलों को भी उनके पीछे भेज देते हैं (17) हम गुनहगारों के साथ ऐसा ही

بِالۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿١٨﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿١٩﴾ اَلَمۡ

करते हैं (18) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (19) क्या हमने

نَخۡلُقۡكُّمۡ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلۡنٰهُ فِىۡ قَرَارٍ

तुमको हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया? (20) फिर हमने उसको महफ़ूज़ ठहरने की

مَّكِيۡنٍ ﴿٢١﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرۡنَا ۖ فَنِعۡمَ

जगह में रखा (21) एक मुक़र्रर वक़्त तक (22) फिर हमने अंदाज़ा मुक़र्रर किया और हम क्या ही ख़ूब अंदाज़ा

الۡقٰدِرُوۡنَ ﴿٢٣﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمۡ

मुक़र्रर करने वाले हैं (23) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (24) क्या हमने

نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ اَحۡيَآءً وَّاَمۡوَاتًا ﴿٢٦﴾

ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25) यानी ज़िंदों और मुर्दों को (26)

وَّجَعَلۡنَا فِيۡهَا رَوَاسِىَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسۡقَيۡنٰكُمۡ مَّآءً

और हमने उसपर ऊँचे पहाड़ रख दिए और हमने तुम लोगों को

فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٢٨﴾ اِنۡطَلِقُوۡۤا

मीठा पानी पिलाया (27) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (28) जिस चीज़ को तुम

اِلٰى مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تُكَذِّبُوۡنَ ﴿٢٩﴾ اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى

झुठलाया करते थे अब उसकी तरफ़ चलो (29) यानी उस साए की तरफ़

ظِلٍّ ذِىۡ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيۡلٍ وَّلَا يُغۡنِىۡ

चलो जिसकी तीन शाख़ें हैं (30) जिसमें न तो (ठंडक वाला) साया है और न वह आग की

مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ اِنَّهَا تَرۡمِىۡ بِشَرَرٍ كَالۡقَصۡرِ ﴿٣٢﴾

लपट से बचा सकता है (31) उससे आग की इतनी बड़ी बड़ी चिंगारियाँ उड़ती हैं जैसे महल (32)

كَأَنَّهُ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

गोया ज़र्द रंग के ऊँट हैं (33) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (34)

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

यह वह दिन है कि वे बोल नहीं सकेंगे (35) और न उनको इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र कर सकें (36)

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (37) यही फ़ैसले का दिन है

جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ

जिसमें हमने तुमको और पहले लोगों को जमा किया है (38) अगर तुमको कोई दाव आता हो

فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ اِنَّ

तो मुझसे कर चलो (39) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (40) बेशक

الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا

परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे (41) और मेवों में जो उनको

يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَا كُنْتُمْ

पसंदीदा होंगे (42) जो अमल तुम करते रहे थे उनके बदले में मज़े से

تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

खाओ और पियो (43) इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देंगे (44)

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا

उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (45) (ऐ झुठलाने वालो) तुम किसी क़दर खालो और फ़ायदे उठा लो,

اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾

तुम तो बेशक गुनहगार हो (46) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है (47)

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ

और जब उनसे कहा जाता है कि ख़ुदा के आगे झुको तो झुकते नहीं (48) उस दिन

يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ

झुठलाने वालों की ख़राबी है (49) अब इसके बाद यह कौन सी बात पर

يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

ईमान लाएंगे? (50)

सूरह नबा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (40) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (80) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (78) नम्बर पर है और सूरह मआरिज के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (173) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (970) हुरूफ़ हैं

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ

किस बात की पूछताछ और सवाल कर रहे हैं (1) उस बड़ी ज़बरदस्त ख़बर के बारे में (2) जिसके बारे में ये लोग

مُخْتَلِفُوْنَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं (3) ख़बरदार! उन्हें जल्द पता लग जाएगा (4) दोबारा ख़बरदार उन्हें जल्द पता लग जाएगा (5) क्या हमने

الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿٨﴾

ज़मीन को एक बिछौना नहीं बनाया (6) और (ज़मीन में) हमने पहाड़ों के लंगर डाल दिए (7) और हमने तुमको जोड़े-जोड़े बनाया (8)

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾ وَّجَعَلْنَا

और हमने तुम्हारे लिए नींद को आराम का सबब बनाया (9) और हमने रात को लिबास बनाया (10) और तुम्हारे लिए दिन को

النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾ وَّجَعَلْنَا

रोज़ी कमाने का ज़रिया बनाया (11) और हमने तुम पर सात मज़बूत आसमान बना दिए (12) और तुम्हारे लिए हमने

سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾

भरपूर रोशनी वाला चिराग़ बना दिया (13) और हमने ही भरे हुए बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया (14)

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ

ताकि उससे ग़ल्ला और दूसरी सब्ज़ियाँ भी उगाएं (15) और घने बाग़ात भी (16) बेशक फ़ैसले के दिन का

كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

वक़्त तय हो चुका है (17) यह वह दिन होगा कि सूर में फूँक मारी जाएगी और तुम फ़ौज-की-फ़ौज निकल आओगे (18)

وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ

और आसमान खोल दिया जएगा तो उसके दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे (19) और चलाए जाएंगे पहाड़ तो वह

سَرَابًا ﴿٢٠﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾

हो जाएंगे चमकती रेत (20) बेशक दोज़ख़ ताक में है (21) शर फैलाने वालों का वही ठिकाना है (22)

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

जहन्नम में ये लोग बे-मुद्दत पड़े ही रहेंगे (23) उनको ठंडी चीज़ का ज़ायक़ा और प्यास बुझाने को कोई चीज़ कभी नहीं मिलेगी (24)

إِلَّا حَمِيمًا وَّغَسَّاقًا ۝٢٥ جَزَآءً وِّفَاقًا ۝٢٦ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ

हाँ मगर गरम-गरम पानी और बहती पीप (जितनी चाहें पी लें) (25) उनको यह बदला पूरा-पूरा मिलेगा (26) उनको अपने हिसाब की उम्मीद

حِسَابًا ۝٢٧ وَّكَذَّبُوا بِآيٰتِنَا كِذَّابًا ۝٢٨ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنٰهُ

नहीं थी (27) और हमारी आयात को झूठ साबित करने में बड़ा ज़ोर लगाते थे (28) और हमने हर चीज़ को घेर कर शुमार करके किताब

كِتٰبًا ۝٢٩ فَذُوقُوا فَلَنْ نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝٣٠ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ

में लिख दिया था (29) बस अब चखते रहो, हम इस अज़ाब को बढ़ाते ही रहेंगे (30) बेशक परहेज़गार ही

مَفَازًا ۝٣١ حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا ۝٣٢ وَّكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝٣٣ وَّكَأْسًا

कामयाब होंगे (31) घने फलदार बाग़ात और अंगूर (32) और नौजवान हम उम्र औरतें (33) और लबालब भरे

دِهَاقًا ۝٣٤ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ۝٣٥ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

जाम हैं (34) वहाँ ख़िलाफ़े-अदब और झूठी बात कभी नहीं सुनेंगे (35) आपके रब की तरफ़ से पूरे हिसाब से जज़ा अता की

حِسَابًا ۝٣٦ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ

जाएगी (36) आसमानों और ज़मीन का और उनके दरमियान की सब चीज़ों का वही रब है, रहमान आलीशान ऐसा कि किसी को उससे

مِنْهُ خِطَابًا ۝٣٧ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ

बात करने की जुर्रत नहीं हो सकती (37) जिस दिन जिब्रईल और तमाम फ़रिश्ते सफ़ बाँधे खड़े होंगे, कोई बोल न सकेगा मगर

إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝٣٨ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ

जिसको रहमान इजाज़त अता फ़रमाए और वह बात भी ठीक कहे (38) उस दिन का आना सच है, अब जो चाहे

شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَآبًا ۝٣٩ إِنَّآ أَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ

अपने रब के यहाँ अपना ठिकाना बना ले (39) बेशक हमने तुमको क़रीब आने वाले अज़ाब से ख़बरदार कर दिया है, जिस दिन आदमी

الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنْتُ تُرٰبًا ۝٤٠

देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा था और काफ़िर कहेगा कि हाय मेरी कम्बख़्ती! काश मैं मिट्टी हो गया होता (40)

सूरह नाज़िआत मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (46) आयतें और (2) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (81) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (79) नम्बर पर है और सूरह नबा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (753) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (197) कलिमात हैं

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝١ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٢ وَّالسّٰبِحٰتِ

उन फ़रिश्तों की क़सम जो सख़्ती से जान निकालने वाले हैं (1) और उनकी जो सहूलत से जान निकालने वाले हैं (2) और उनकी जो तैर कर आने

سَبۡحًا ۙ﴿۳﴾ فَالسّٰبِقٰتِ سَبۡقًا ۙ﴿۴﴾ فَالۡمُدَبِّرٰتِ اَمۡرًا ۘ﴿۵﴾ يَوۡمَ

वाले हैं (3) फिर उनकी जो दोड़कर आने वाले हैं (4) फिर उनकी जो उमूर की तदबीर करने वाले हैं (5) जिस दिन हिला देने

تَرۡجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾ تَتۡبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾ قُلُوۡبٌ

वाली हिला डालेगी (6) उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी (7) कितने दिल

يَّوۡمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾ اَبۡصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۹﴾ يَقُوۡلُوۡنَ ءَاِنَّا

उस दिन धड़कते होंगे (8) उनकी आँखें झुक रही होंगी (9) वह कहते हैं कि क्या हम

لَمَرۡدُوۡدُوۡنَ فِى الۡحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾

पहली वाली हालत में फिर वापस होंगे? (10) क्या जब हम बोसीदा हड्डियाँ हो जाएंगे? (11)

قَالُوۡا تِلۡكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿۱۲﴾ فَاِنَّمَا هِىَ زَجۡرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿۱۳﴾

उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी (12) वह तो बस एक डाँट होगी (13)

فَاِذَا هُمۡ بِالسَّاهِرَةِ ؕ﴿۱۴﴾ هَلۡ اَتٰٮكَ حَدِيۡثُ مُوۡسٰى ۘ﴿۱۵﴾

फिर यकायक वह मैदान में मौजूद होंगे (14) क्या आपको मूसा (अलै०) की बात पहुँची है? (15)

اِذۡ نَادٰٮهُ رَبُّهٗ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ۚ﴿۱۶﴾ اِذۡهَبۡ اِلٰى

जबकि उसके रब ने उसको तुवा की मुक़द्दस वादी में पुकारा (16) कि फ़िरऔन के पास

فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ﴿۱۷﴾ فَقُلۡ هَلۡ لَّكَ اِلٰٓى اَنۡ تَزَكّٰى ۙ﴿۱۸﴾

जाओ वह सरकश हो गया है (17) फिर उससे कहो कि क्या तुझको इस बात की ख़्वाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए (18)

وَاَهۡدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخۡشٰى ۚ﴿۱۹﴾ فَاَرٰٮهُ الۡاٰيَةَ الۡكُبۡرٰى ۖ﴿۲۰﴾

और मैं तुझको तेरे रब की राह दिखाऊँ फिर तू डरे (19) पस मूसा (अलै०) ने उसको बड़ी निशानी दिखाई (20)

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ﴿۲۱﴾ ثُمَّ اَدۡبَرَ يَسۡعٰى ۖ﴿۲۲﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۖ﴿۲۳﴾

फिर उसने झुठलाया और न माना (21) फिर वह पलटा कोशिश करते हुए (22) फिर उसने जमा किया फिर उसने आवाज़ लगाई (23)

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الۡاَعۡلٰى ۖ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الۡاٰخِرَةِ

पस उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ (24) पस अल्लाह ने उसको आख़िरत और दुनिया के

وَالۡاُوۡلٰى ؕ﴿۲۵﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ؕ﴿۲۶﴾

अज़ाब में पकड़ा (25) बेशक इसमें नसीहत है हर उस शख़्स के लिए जो डरे (26)

ءَاَنۡتُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰٮهَا ۛ﴿۲۷﴾ رَفَعَ سَمۡكَهَا

क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसको बनाया (27) उसकी छत को बुलंद किया

وقف لازم وقف لازم وقف لازم وقف لازم

منزل ٧ ع ١٢

فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَالْاَرْضَ بَعْدَ

फिर उसको दुरुस्त बनाया (28) और उसकी रात को अंधेरी बनाया है और उसके दिन की धूप बाहर निकाल दी (29) और ज़मीन को

ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَالْجِبَالَ

उसके बाद फैलाया (30) उससे उसका पानी और चारा निकाला (31) और पहाड़ों को

اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ

क़ायम कर दिया (32) सामाने-हयात के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए (33) फिर जब वह बड़ा हंगामा

الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ

आएगा (34) जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा (35) और देखने वालों के सामने दोज़ख़ ज़ाहिर

لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَاِنَّ

कर दी जाएगी (36) पस जिसने सरकशी की (37) और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी (38) तो यक़ीनन

الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى

दोज़ख़ उसका ठिकाना होगा (39) और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ़्स को

النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ

ख़्वाहिश से रोका (40) तो जन्नत उसका ठिकाना होगा (41) वे आपसे क़ियामत के

عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾

बारे में पूछते हैं कि वह कब वाक़े होगी (42) आपको क्या काम उसके ज़िक्र से (43)

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾

यह मुआमला आपके रब के हवाले है (44) आप तो बस डराने वाले हो उस शख़्स को जो डरे (45)

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

जिस दिन ये उसको देख लेंगे उस दिन उन्हें मालूम होगा जैसे वे एक शाम या एक सुबह से ज़्यादा नहीं रहे (46)

सूरह अ-ब-स मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (42) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (24) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (80) नम्बर पर है और सूरह नज्म के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (533) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (130) कलिमात हैं

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

(प्यारे नबी ने) मुँह बनाया और रुख़ फेर लिया (1) यह कि उनके पास एक नाबीना आया (2) और आपको क्या ख़बर शायद वह पाकीज़गी

منزل ٧

احتياط

ع ٢

يَزَّكّٰىٓ ۙ﴿٣﴾ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ؕ﴿٤﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۙ﴿٥﴾

हासिल करता (3) या नसीहत क़बूल करता तो यह नसीहत उसको मुफ़ीद होती (4) तो जो शख़्स (दीन से) बेपरवाई करता है (5)

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ؕ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ؕ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ

तो आप उसकी फ़िक्र में पड़ जाते हो (6) हालाँकि आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि वह न दुरुस्त हो (7) जो आपके पास दौड़ता हुआ

يَسْعٰى ۙ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشٰى ۙ﴿٩﴾ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۚ﴿١٠﴾ كَلَّآ اِنَّهَا

आया (8) और वह डरता भी है (9) तो आप उससे बेरुख़ी करते हैं (10) हरगिज़ ऐसा न कीजिए, क़ुरआन तो महज़

وقف لازم

تَذْكِرَةٌ ۚ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ﴿١٢﴾ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ﴿١٣﴾ مَّرْفُوْعَةٍ

एक नसीहत है (11) लिहाज़ा जो चाहे उसको क़बूल करे (12) क़ाबिले-अदब वर्क़ों में लिखा हुआ (13) बुलंद मुक़ाम पर रखे हुए

مُّطَهَّرَةٍ ۙ﴿١٤﴾ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۙ﴿١٥﴾ كِرَامٍ ۢ بَرَرَةٍ ؕ﴿١٦﴾ قُتِلَ الْاِنْسَانُ

और पाक हैं (14) ऐसे लिखने वालों के हाथों में (15) जो बाइज़्ज़त फ़रमाँबरदार हैं (16) ख़ुदा की मार हो इंसान पर

مَآ اَكْفَرَهٗ ؕ﴿١٧﴾ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ؕ﴿١٨﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ

वह कैसा नाशुक्रा है (17) ख़ुदा ने उसको किस चीज़ से बनाया है (18) नुतफ़े से

منزل ٧

خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۙ﴿٢٠﴾ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۙ﴿٢١﴾

उसको बनाया फिर उसका अंदाज़ा मुक़र्रर किया (19) फिर उसके लिए रास्ता आसान कर दिया (20) फिर उसको मौत दी फिर क़ब्र में दफ़न कर दिया (21)

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ؕ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ؕ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ

फिर जब वह चाहेगा तो उसे दोबारा ज़िंदा करेगा (22) हरगिज़ नहीं, ख़ुदा ने जो हुक्म दिया उसने उस पर अमल न किया (23) इंसान को चाहिए

الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۙ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا

कि अपने खाने की तरफ़ नज़र करे (24) कि हमने ऊपर से ख़ूब पानी बरसाया (25) फिर हमने अजीब तरीक़े से

الْاَرْضَ شَقًّا ۙ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۙ﴿٢٧﴾ وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۙ﴿٢٨﴾

ज़मीन को फाड़ा (26) फिर हमने उसमें अनाज उगाया (27) और अंगूर और तरकारी (28)

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۙ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۙ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۙ﴿٣١﴾

और ज़ैतून और खजूरें (29) और गुंजान बाग़ात (30) और मेवे और चारा पैदा किया (31)

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ؕ﴿٣٢﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۫﴿٣٣﴾

तुम्हारे अपने और तुम्हारे चौपायों के लिए फ़ायदे की ख़ातिर (32) फिर जब शोर वाली क़ियामत आ जाएगी (33)

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۙ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۙ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

उस दिन आदमी भागेगा दूर अपने भाई से (34) और अपनी माँ और अपने बाप से (35) और अपनी बीवी

وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

और अपने बेटों से (36) उनमें से हर शख़्स उस रोज़ एक ही फ़िक्र में होगा जो उसको दूसरी तरफ़ मुतवज्जह न होने देगी (37)

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾

उस रोज़ बहुत-से चेहरे चमक रहे होंगे (38) हंसते ख़ुशियाँ मनाते (39)

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

और बहुत से चेहरे उस दिन ऐसे होंगे जिन पर गर्द ही गर्द नज़र आएगी (40) (और) उन पर सियाही चढ़ रही होगी (41)

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

यही लोग काफ़िर और बदकार हैं (42)

ع ٥

सूरह तक्वीर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (29) आयतें और (1) रुकूअ हैं, नाज़िल होने के ऐतबार से (7) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (81) नम्बर पर है और सूरह मसद के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (530) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (104) कलिमात हैं

منزل ٧

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

जब सूरज लपेट लिया जाएगा (1) और जब सितारे बेनूर हो जाएंगे (2) और जब पहाड़ चलाए

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾

जाएंगे (3) और जब दस माह की हामिला ऊँटनियाँ छोड़ दी जाएंगी (4) और जब वहशी जानवर इकट्ठे किए जाएंगे (5)

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾ وَاِذَا

और जब समुंदर भड़काए जाएंगे (6) और जब जानें (जिस्मों) से मिला दी जाएंगी (7) और जब

الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

ज़िंदा दफ़न की गई लड़की से पूछा जाएगा (8) कि किस गुनाह की वजह से वह क़त्ल की गई (9) और जब नामा-ए-आमाल खोल दिए

نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

जाएंगे (10) और जब आसमान की खाल उतार ली जाएगी (11) और जब जहन्नम भड़काई जाएगी (12)

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

और जब जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी (13) तो उस दिन हर शख़्स जान लेगा जो कुछ लेकर आया होगा (14)

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ اِذَا

मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले (15) फिर चलने-फिरने वाले छुपने वाले सितारों की (16) और रात की जब

عَسۡعَسَ ﴿١٧﴾ وَالصُّبۡحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوۡلُ رَسُوۡلٍ

जाने लगे (17) और सुबह की जब चमकने लगे (18) यक़ीनन यह एक बुज़ुर्ग रसूल का

كَرِيۡمٍ ﴿١٩﴾ ذِىۡ قُوَّةٍ عِنۡدَ ذِى الۡعَرۡشِ مَكِيۡنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ

कहा हुआ है (19) जो क़ुव्वत वाला है, अर्श वाले (अल्लाह) के नज़दीक बुलंद मर्तबा है (20) जिसकी इताअत की जाती है,

ثَمَّ اَمِيۡنٍ ﴿٢١﴾ وَمَا صَاحِبُكُمۡ بِمَجۡنُوۡنٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدۡ رَاٰهُ

अमीन है (21) और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है (22) उसने उस (फ़रिश्ते) को आसमान के खुले

بِالۡاُفُقِ الۡمُبِيۡنِ ﴿٢٣﴾ وَمَا هُوَ عَلَى الۡغَيۡبِ بِضَنِيۡنٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ

किनारे पर देखा भी है (23) और यह ग़ैब की बातों को बताने पर बख़ील भी नहीं (24) और यह क़ुरआन

بِقَوۡلِ شَيۡطٰنٍ رَّجِيۡمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَيۡنَ تَذۡهَبُوۡنَ ﴿٢٦﴾ اِنۡ هُوَ اِلَّا

शैतान मरदूद का कलाम नहीं (25) फिर तुम कहाँ जा रहे हो (26) यह तो तमाम

ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢٧﴾ لِمَنۡ شَآءَ مِنۡكُمۡ اَنۡ يَّسۡتَقِيۡمَ ﴿٢٨﴾

जहान वालों के लिए नसीहत-नामा है (27) (ख़ासतौर पर) उसके लिए जो तुम में से सीधी राह पर चलना चाहे (28)

وَمَا تَشَآءُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٢٩﴾

और तुम बग़ैर परवरदिगारे आलम के चाहे कुछ नहीं चाह सकते (29)

सूरह इन्फ़ितार मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (19) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने और तिलावत के ऐतबार से (82) नम्बर पर है और सूरह नाज़िआत के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (327) हुरूफ़ हैं — بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ — इसमें (80) कलिमात हैं

اِذَا السَّمَآءُ انۡفَطَرَتۡ ﴿١﴾ وَاِذَا الۡكَوَاكِبُ انۡتَثَرَتۡ ﴿٢﴾ وَاِذَا الۡبِحَارُ

जब आसमान फट जाएगा (1) और जब सितारे झड़ जाएंगे (2) और जब समुंदर

فُجِّرَتۡ ﴿٣﴾ وَاِذَا الۡقُبُوۡرُ بُعۡثِرَتۡ ﴿٤﴾ عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ

बहा दिए जाएंगे (3) और जब क़ब्रें उखेड़ दी जाएंगी (4) तो हर शख़्स को उसका अगला-पिछला किया-धरा सब

وَاَخَّرَتۡ ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الۡكَرِيۡمِ ﴿٦﴾

मालूम हो जाएगा (5) ऐ इंसान! तुझे किस चीज़ ने अपने रब्बे-करीम के बारे में धोखे में डाल रखा है (6)

الَّذِىۡ خَلَقَكَ فَسَوّٰٮكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِىۡۤ اَىِّ صُوۡرَةٍ مَّا شَآءَ

जिसने तुझे पैदा किया फिर तुझे दुरुस्त किया और तुझे मोतदिल बनाया (7) उसने जिस सूरत में चाहा

رَكَّبَكَ ۝٨ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝٩ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ

तुझे जोड़ दिया (8) हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम लोग जज़ा व सज़ा को झुठलाते हो (9) हालाँकि तुम पर निगराँ (फ़रिश्ते)

لَحٰفِظِينَ ۝١٠ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝١١ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝١٢

मुक़र्रर हैं (10) मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले (11) वे जानते हैं जो तुम करते हो (12)

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝١٣ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝١٤

यक़ीनन नेक लोग ज़रूर नेमतों में होंगे (13) और यक़ीनन बदकार लोग ज़रूर दोज़ख़ में होंगे (14)

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝١٥ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝١٦ وَمَا

वे रोज़े-जज़ा को उसमें दाख़िल होंगे (15) और वे उससे ग़ायब (दूर) न हो सकेंगे (16) और आपको

أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝١٧ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝١٨

क्या ख़बर कि रोज़े-जज़ा क्या है (17) फिर आपको क्या ख़बर कि रोज़े-जज़ा क्या है (18)

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ۝١٩ ع

उस दिन कोई शख़्स किसी के लिए कुछ भी इख़्तियार न रखेगा, और उस दिन हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का होगा (19)

ع

منزل ٧

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई, यह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल होने वाली सूरतों में आख़िरी सूरत है, इसमें (36) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (86) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (83) नम्बर पर है और सूरह अन्कबूत के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (730) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ	इसमें (169) कलिमात हैं

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝١ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ

बड़ी ख़राबी है नापतौल में कमी करने वालों की (1) कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं

يَسْتَوْفُونَ ۝٢ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝٣

तो पूरा-पूरा लेते हैं (2) और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं (3)

أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝٤ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٥

क्या उन्हें अपने मरने के बाद जी उठने का ख़्याल नहीं (4) उस अज़ीम दिन के लिए (5)

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝٦ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ

जिस दिन सब लोग रब्बुल-आलमीन के सामने खड़े होंगे (6) हरगिज़ नहीं! यक़ीनन बदकारों का

الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝٧ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝٨ كِتَابٌ

नामा-ए-आमाल सिज्जीन में है (7) और आपको क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है (8) (यह तो) लिखी हुई

مَّرْقُوْمٌ ۝٩ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ

किताब है (9) उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी ख़राबी है (10) जो जज़ा व सज़ा के दिन को झुठलाते

الدِّيْنِ ۝١١ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ اِذَا تُتْلٰى

रहे (11) उसे सिर्फ़ वही झुठलाता है जो हद से आगे निकल जाने वाला (और) गुनहगार होता है (12) जब उसके सामने

عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣ كَلَّا بَلْ سكتة رَانَ

हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह कह देता है कि ये अगलों के अफ़साने हैं (13) यूँ नहीं; बल्कि उनके

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٤ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ

दिलों पर उनके आमाल की वजह से ज़ंग (चढ़ गया) है (14) हरगिज़ नहीं यक़ीनन ये लोग अपने रब से

يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝١٥ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝١٦ ثُمَّ

उस दिन हिजाब में होंगे (15) फिर ये लोग यक़ीनन जहन्नम में झोंके जाएंगे (16) फिर

يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝١٧ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ

कह दिया जाएगा कि यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे (17) हरगिज़ नहीं! बेशक नेक लोगों का

الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝١٨ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝١٩ كِتٰبٌ

नामा-ए-आमाल इल्लिय्यीन में है (18) और आप क्या समझते हो कि इल्लिय्यीन क्या है (19) (वह तो) लिखी हुई

مَّرْقُوْمٌ ۝٢٠ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝٢١ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝٢٢

किताब है (20) मुक़र्रब (फ़रिश्ते) उसका मुशाहदा करते हैं (21) यक़ीनन नेक लोग (बड़ी) नेमतों में होंगे (22)

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝٢٣ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ

तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे (23) आप उनके चेहरों से ही नेमतों की तरो-ताज़गी

النَّعِيْمِ ۝٢٤ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝٢٥ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ط وَفِيْ

पहचान लोगे (24) उन्हें पिलाई जाएगी ख़ालिस शराब जिस पर मुहर लगी होगी (25) जिस पर मुश्क की मुहर होगी, और सबक़त

ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝٢٦ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝٢٧

ले जाने वालों को इसी में सबक़त करनी चाहिए (26) और उस शराब में तस्नीम (चश्मा) का पानी मिला हुआ होगा (27)

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝٢٨ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ

(यानी) वह चश्मा जिसका पानी मुक़र्रब लोग पिएंगे (28) गुनहगार लोग ईमानदारों की

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝٢٩ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ۝٣٠

हंसी उड़ाया करते थे (29) और उनके पास से गुज़रते हुए आँख के इशारे करते थे (30)

*یہاں پر سکتہ واجب ہے

منزل ٧

وَإِذَا انْقَلَبُوْٓا إِلٰٓى أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوْٓا

और जब अपने घर वालों की तरफ़ लौटते तो दिल्लगियाँ करते थे (31) और जब उन्हें देखते तो कहते:

إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ أُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ

यक़ीनन ये लोग गुमराह (बेराह) हैं (32) हालाँकि वह उन पर मुहाफ़िज़ बनाकर नहीं भेजे गए (33) पस आज

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْأَرَآئِكِ

ईमान वाले उन काफ़िरों पर हंसेंगे (34) तख़्तों पर बैठे

يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

देख रहे होंगे (35) कि काफ़िर लोगों को वाक़ई उन कामों का बदला मिल गया जो वे किया करते थे (36)

सूरह इन्शिक़ाक़ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (25) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (83) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (84) नम्बर पर है और सूरह इन्फ़ितार के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (430) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (107) कलिमात हैं

إِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا

जब आसमान फट जाएगा (1) और अपने परवरदिगार का फ़रमान बजा लाएगा और उसे वाजिब भी यही है (2) और जब ज़मीन

الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذِنَتْ

हमवार कर दी जाएगी (3) और जो कुछ उसमें है उसे निकाल कर बाहर डाल देगी और बिलकुल ख़ाली हो जाएगी (4) और अपने

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰٓأَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلٰى رَبِّكَ

परवरदिगार के इरशाद की तामील करेगी और उसको लाज़िम भी यही है (5) ऐ इंसान! यक़ीनन तेरे रब की तरफ़ पहुँचने के लिए

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾

तुझे ख़ूब मेहनत करनी है फिर तू उससे मिलने वाला है (6) तो जिसका नामा-ए-आमाल उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा (7) उस

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ إِلٰٓى أَهْلِهٖ

से हिसाब आसान लिया जाएगा। (8) और वह अपने घर वालों में ख़ुश-ख़ुश

مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ

आएगा (9) और जिसका नामा-ए-आमाल उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा (10) तो वह

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ أَهْلِهٖ

मौत को पुकारेगा (11) और दोज़ख़ में दाख़िल होगा (12) यह अपने अहल व अयाल में मस्त

مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ

रहता था (13) और ख़्याल करता था कि अल्लाह की तरफ़ फिरकर न जाएगा (14) हाँ हाँ! उसका परवरदिगार

كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا

उसको देख रहा था (15) हमें शाम की सुर्ख़ी की क़सम (16) और रात की और जिन चीज़ों को वे इकट्ठा कर लेती है

وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾

उनकी (17) और चाँद की जब कामिल हो जाए (18) कि तुम सब एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल की तरफ़ चढ़ते जाओगे (19)

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ

तो उन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते हैं (20) और जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है

لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾ (السجدة) بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ

तो वे सज्दा नहीं करते (21) बल्कि काफ़िर झुठलाते हैं (22) और अल्लाह उन बातों को

اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ اِلَّا

जो ये अपने दिलों में छुपाते हैं ख़ूब जानता है (23) तो उनको दुःख देने वाले अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए (24) हाँ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उनके लिए बेइंतिहा अज्र है (25)

सूरह बुरूज मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (22) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (27) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (85) नम्बर पर है और सूरह शम्स के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (109) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (465) हुरूफ़ हैं

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ

बुर्जों वाले आसमान की क़सम (1) और उस दिन की क़सम जिसका वादा पक्का है (2) और हाज़िर होने वाले की

وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ

और उसकी जिसके पास लोग हाज़िर हों (3) ख़ंदक़ वालों पर अल्लाह की मार पड़ी (4) उन्होंने ख़ंदक़ खोद कर उसमें

الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

आग भड़काई (5) जब वे उसके पास बैठे हुए थे (6) और मोमिनों के साथ जो कुछ ज़ुल्म कर रहे थे

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا

वह उनकी आँखों के सामने हो रहा था (7) वे ईमान वालों में कोई ऐब नहीं पा सके मगर यह बात उन्हें बुरी लगी कि वे अल्लाह पर

بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ईमान ले आए जो हर तरह से ग़ालिब है, तारीफ़ का मुस्तहिक़ है (8) आसमानों और ज़मीन की सलतनत और बादशाही अकेले अल्लाह के

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

लिए है, और वाक़ई अल्लाह हर चीज़ पर आप ही गवाह मौजूद है (9) ईमान वालों और ईमान वालियों को सताने के बाद

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ

जिन्होंने तौबा नहीं की उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और बहुत ही तेज़ जलन का अज़ाब उनको

الْحَرِيْقِ ۝١٠ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

भुगतना होगा (10) बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उनके लिए

جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١ ؕ اِنَّ

ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, यह बहुत ही बड़ी कामयाबी है (11) बेशक

بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢ ؕ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣ ۚ وَهُوَ

आपके परवरदिगार की पकड़ भी बहुत सख़्त है (12) यक़ीनन पहली बार भी उसने पैदा किया और दोबारा भी वही पैदा करेगा (13) और वह

الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤ ۙ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥ ۙ فَعَّالٌ لِّمَا

बहुत बख़्शने वाला, बहुत मुहब्बत करने वाला है (14) अर्श का मालिक है, बुज़ुर्गी वाला है (15) जो कुछ इरादा करता है

يُرِيْدُ ۝١٦ ؕ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۝١٧ ۙ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝١٨ ؕ

कर गुज़रता है (16) क्या आपके पास उन बड़े लश्करों का हाल पहुँचा (17) फ़िरऔन और समूद के लश्कर (18)

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ تَكْذِيْبٍ ۝١٩ ۙ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ

बल्कि ये मुन्किर झुठलाने में बड़ा ज़ोर दिखा रहे हैं (19) उन्हें मालूम करा दीजिए कि अल्लाह ने हर तरफ़ से उन पर अज़ाब का

مُّحِيْطٌ ۝٢٠ ۚ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝٢١ ۙ فِىْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢ ع

घेरा डाल दिया है (20) बल्कि यह तो वह क़ुरआन है जो बड़ी शान वाला है (21) जैसा लौहे-महफ़ूज़ में था वैसा ही यहाँ आया है (22)

सूरह तारिक़ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (17) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (36) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (86) नम्बर पर है और सूरह बलद के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (239) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (61) कलिमात हैं

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١ ۙ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢ ۙ النَّجْمُ

क़सम है आसमान की और रात में नमूदार होने वाले की (1) और आप क्या जानो कि वह रात में नमूदार होने वाला क्या है (2) चमकता

منزل ٧

الثَّاقِبُ ۙ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ؕ﴿٤﴾ فَلْيَنْظُرِ

हुआ तारा (3) कोई जान ऐसी नहीं जिसके ऊपर निगहबान न हो (4) तो इंसान को

الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ؕ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ﴿٦﴾ يَّخْرُجُ مِنْ

देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है (5) वह एक उछलते हुए पानी से पैदा किया गया है (6) जो निकलता है पीठ

بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ؕ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ؕ﴿٨﴾

और सीने के दरमियान से (7) बेशक वह उसके दोबारा पैदा करने पर क़ादिर है (8)

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۙ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ؕ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ

जिस दिन छुपी बातें परखी जाएंगी (9) उस वक़्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार (10) बारिश वाले

ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ

आसमान की क़सम! (11) और फूट निकलने वाली ज़मीन की (12) बेशक यह दो टूक

فَصْلٌ ۙ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ؕ﴿١٤﴾ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ﴿١٥﴾

बात है (13) और यह हंसी की बात नहीं (14) वह तदबीर करने में लगे हुए हैं (15)

وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۚۖ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ع﴿١٧﴾

और मैं भी तदबीर करने में लगा हुआ हूँ (16) फिर काफ़िरों को मोहलत दे दीजिए, उनको थोड़ी-सी मोहलत दे दीजिए (17)

ع ١٧ منزل ٧

सूरह अऊला मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (19) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (8) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (87) नम्बर पर है और सूरह तक्वीर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (291) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (72) कलिमात हैं

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۖ﴿٢﴾ وَالَّذِيْ

अपने रब के नाम की पाकी बयान करते रहिए जो बहुत आलीशान है (1) जिसने बनाया फिर दुरुस्त किया (2) और जिसने

قَدَّرَ فَهَدٰى ۖ﴿٣﴾ وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۖ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً

तजवीज़ किया फिर राह बता दी (3) और जिसने (ज़मीन से) चारा उगाया (4) फिर उसको सियाह (रंग का)

اَحْوٰى ؕ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ

कूड़ा कर दिया (5) हम आपको पढ़ा देंगे फिर आप न भूलेंगे (6) मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह

يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ؕ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚۖ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ

जानता है हर खुले और छुपे को (7) और हम आपके लिए आसानी का सामान कर देंगे (8) तो आप नसीहत करते रहिए,

اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۙ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ﴿١٠﴾

अगर नसीहत करना मुफ़ीद हो (9) जल्द ही नसीहत मानेगा जो अल्लाह से डरता है (10)

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ﴿١١﴾ الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ﴿١٢﴾

और जो बदनसीब होगा वह उससे मुँह मोड़ता रहेगा (11) जो बड़ी आग में दाख़िल होगा (12)

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۗ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿١٤﴾

फिर वह उसमें न तो मरेगा और न ही जिएगा (13) बामुराद हुआ वह शख़्स जो पाक हुआ (14)

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۗ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۖ﴿١٦﴾

और वह अपने रब का नाम लेता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा (15) (ऐ मुन्किरो!) तुम तो दुनिया की ज़िंदगी को मुक़द्दम रखते हो (16)

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۗ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ

हालाँकि आख़िरत कहीं बेहतर और पाएदार है (17) यही बात पहले सहीफ़ों में

الْاُوْلٰى ۙ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۧ﴿١٩﴾

लिखी गई है (18) (यानी) इब्राहीम और मूसा (अलै०) के सहीफ़ों में (19)

ع ١٩/١٢

منزل ٧

सूरह ग़ाशियह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (26) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (68) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (88) नम्बर पर है और सूरह ज़ारियात के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (381) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (92) कलिमात हैं

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۗ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۙ﴿٢﴾

क्या आपको भी छुपा लेने वाली (क़ियामत) की ख़बर पहुँची है (1) उस दिन बहुत-से चेहरे ज़लील होंगे (2)

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۙ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ﴿٤﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ

(और) मेहनत करने वाले थके होंगे (3) वह दहकती हुई आग में जाएंगे (4) और निहायत गरम चश्मे का पानी उनको

اٰنِيَةٍ ۗ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ

पिलाया जाएगा (5) उनके लिए सिवाए काँटेदार दरख़्तों के और कुछ खाना न होगा (6) जो न मोटा करेगा

وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۗ﴿٧﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ﴿٨﴾

और न भूख मिटाएगा (7) बहुत से चेहरे उस दिन तरो-ताज़ा (और आसूदा हाल) होंगे (8)

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ﴿٩﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا

अपनी कोशिश पर ख़ुश होंगे (9) आलीशान जन्नत में होंगे (10) जहाँ कोई बेहूदा बात

لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾

नहीं सुनेंगे (11) जहाँ बहता हुआ चश्मा होगा (12) (और) उसमें ऊँचे-ऊँचे तख़्त होंगे (13)

وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ

और तरतीब से प्याले रखे हुए होंगे (14) और एक क़तार में लगे हुए तकिये होंगे (15) और मख़मली मस्नदें

مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾ أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾

फैली पड़ी होंगी (16) क्या ये ऊँटों को नहीं देखते कि वे किस तरह पैदा किए गए हैं? (17)

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ

और आसमान को कि किस तरह ऊँचा किया गया है? (18) और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह गाड़ दिए

نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ إِنَّمَا

गए हैं? (19) और ज़मीन की तरफ़ कि किस तरह बिछाई गई है? (20) पस आप नसीहत कर दिया करें, आप सिर्फ़

أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾ إِلَّا مَن

नसीहत करने वाले हैं (21) आप कुछ उन पर मुसल्लत नहीं हैं (22) मगर वह जिसने

تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

मुँह फेरा और कुफ़्र किया (23) उसे अल्लाह बहुत बड़ा अज़ाब देगा (24)

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٦﴾

बेशक हमारी तरफ़ उनका लौटना है (25) फिर बेशक हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना (26)

सूरह फ़ज्र मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (30) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (10) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (89) नम्बर पर है और सूरह लैल के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (597) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

इसमें (139) कलिमात हैं

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا

क़सम है फ़ज्र के वक़्त की (1) और दस रातों की (2) और जुफ़्त और ताक़ की (3) और रात की जब वह

يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ﴿٥﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ

चल खड़ी हो (4) एक अक़्ल वाले (को यक़ीन दिलाने) के लिए ये क़समें काफ़ी हैं कि नहीं? (5) क्या आपने नहीं देखा

فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ

कि आपके रब ने आद के साथ कैसा सुलूक किया था? (6) इरम जो ऊँचे सतूनों वाले थे (7) जिनके मानिंद कोई क़ौम मुल्कों

مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

में पैदा नहीं की गई (8) और समूद के साथ जो वादी में चट्टानें तराशते थे (9)

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ (10) वह जिन्होंने शहरों में सरकशी की (11)

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ

और उनमें बहुत ज़्यादा फ़साद फैलाया (12) तब आपके रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा

عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا

बरसाया (13) बेशक आपका रब (मुजरिमों की) घात में है (14) लेकिन इंसान जो है, जब उसका

مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

रब उसे आज़माए और उसे इज़्ज़त और नेमत दे, तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त बख़्शी (15)

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي

मगर जब वह उसे आज़माए और उसका रिज़्क़ उस पर तंग कर दे तो वह कहता है कि मेरे रब ने

أَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحَاضُّونَ

मुझे ज़लील कर दिया (16) हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते (17) और बाहम मिस्कीन को

عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَمًّا ﴿١٩﴾

खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देते (18) और तुम मीरास का सारा माल समेट कर खा जाते हो (19)

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا

और तुम माल से जी भरकर प्यार करते हो (20) हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन ख़ूब कूट-कूट कर रेज़ा-रेज़ा कर दी

دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ

जाएगी (21) और आपका रब और फ़रिश्ते सफ़-दर-सफ़ आएंगे (22) और उस दिन जहन्नम (सामने) लाई

بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

जाएगी, उस दिन इंसान (अपने करतूत) याद करेगा, और यह याद करना उसके लिए क्योंकर (मुफ़ीद) होगा (23)

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ

वह कहेगा: काश! मैंने अपनी इस ज़िंदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता (24) चुनाँचे उस दिन उस जैसा अज़ाब देने वाला

عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا

और कोई न होगा (25) और उस जैसा जकड़ने वाला भी और कोई नहीं होगा (26) ऐ

النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِيٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

मुतमइन रूह! (27) तू अपने रब की तरफ़ चल इस हाल में कि तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी (28)

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

फिर तू मेरे बंदों में दाख़िल हो जा (29) और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा (30)

सूरह बलद मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (20) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (35) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (90) नम्बर पर है और सूरह क़ाफ़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (320) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (82) कलिमात हैं

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

मैं इस शहर की क़सम खाता हूँ (1) और आप इस शहर में मुक़ीम हैं (2)

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾

और (क़सम है) इंसानी बाप और औलाद की (3) यक़ीनन हमने इंसान को (बड़ी) मशक़्क़त में पैदा किया है (4)

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا

क्या वह यह समझता है कि उसपर किसी का बस नहीं चलेगा? (5) कहता (फिरता) है कि मैंने तो बहुत कुछ माल

لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ

ख़र्च कर डाला (6) क्या (यूँ) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं (7) क्या हमने उसकी दो आँखें

عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾

नहीं बनाई (8) और एक ज़ुबान और दो होंठ नहीं दिए? (9) और हमने दिखा दिए उसको दोनों रास्ते (10)

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

फिर उससे न हो सका कि घाटी में दाख़िल होता (11) और आपको क्या पता कि वह घाटी क्या है (12)

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا

किसी की गर्दन (ग़ुलाम, लौंडी) को आज़ाद करना (13) या भूख वाले दिन में खाना खिलाना (14) किसी यतीम

ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ

रिश्तेदार को (15) या ख़ाकसार मिस्कीन को (16) फिर उन लोगों में से हो जाता

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

जो ईमान लाते हैं और एक-दूसरे को सब्र की और रहम करने की वसीयत करते हैं (17)

أُولَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلۡمَيۡمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِـَٔايَٰتِنَا

यही लोग हैं दाएं बाज़ू वाले (ख़ुशबख़्ती वाले) (18) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया

هُمۡ أَصۡحَٰبُ ٱلۡمَشۡـَٔمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيۡهِمۡ نَارٞ مُّؤۡصَدَةُۢ ﴿٢٠﴾

ये कमबख़्ती वाले हैं (19) उन ही पर आग होगी जो चारों तरफ़ से घेरी हुई होगी (20)

सूरह शम्स मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (15) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (26) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (91) नम्बर पर है और सूरह क़द्र के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (247) हुरूफ़ हैं	بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ	इसमें (54) कलिमात हैं

وَٱلشَّمۡسِ وَضُحَىٰهَا ﴿١﴾ وَٱلۡقَمَرِ إِذَا تَلَىٰهَا ﴿٢﴾ وَٱلنَّهَارِ

सूरज की क़सम और उसकी रोशनी की (1) और चाँद की जब उसके पीछे निकले (2) और दिन की

إِذَا جَلَّىٰهَا ﴿٣﴾ وَٱلَّيۡلِ إِذَا يَغۡشَىٰهَا ﴿٤﴾ وَٱلسَّمَآءِ وَمَا

जब उसे चमका दे (3) और रात की जब उसे छुपा ले (4) और आसमान की और उस ज़ात की

بَنَىٰهَا ﴿٥﴾ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا طَحَىٰهَا ﴿٦﴾ وَنَفۡسٖ وَمَا

जिसने उसे बनाया (5) और ज़मीन की और जिसने उसे फैलाया (6) और इंसान की और उसकी जिसने

سَوَّىٰهَا ﴿٧﴾ فَأَلۡهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقۡوَىٰهَا ﴿٨﴾ قَدۡ أَفۡلَحَ

उसके अअ्ज़ा को बराबर किया (7) फिर उसको बदकारी से बचने और परहेज़गारी करने की समझ दी (8) कि जिसने अपने नफ़्स

مَن زَكَّىٰهَا ﴿٩﴾ وَقَدۡ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ﴿١٠﴾ كَذَّبَتۡ

यानी रूह को पाक रखा वह मुराद को पहुँचा (9) और जिसने उसे ख़ाक में मिलाया वह ख़सारे में रहा (10) क़ौमे-समूद ने

ثَمُودُ بِطَغۡوَىٰهَآ ﴿١١﴾ إِذِ ٱنۢبَعَثَ أَشۡقَىٰهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمۡ

अपनी सरकशी के सबब पैग़म्बर को झुठलाया (11) जब उनमें से एक निहायत बदबख़्त उठा (12) तो अल्लाह के पैग़म्बर (सालेह अलै०) ने

رَسُولُ ٱللَّهِ نَاقَةَ ٱللَّهِ وَسُقۡيَٰهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوهُ

उनसे कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने की बारी से डरो (13) मगर उन्होंने पैग़म्बर को झुठलाया

فَعَقَرُوهَا فَدَمۡدَمَ عَلَيۡهِمۡ رَبُّهُم بِذَنۢبِهِمۡ

और ऊँटनी के पैर काट दिए तो अल्लाह ने उनके गुनाह के सबब उन पर अज़ाब नाज़िल किया और सबको

فَسَوَّىٰهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقۡبَٰهَا ﴿١٥﴾

हलाक करके बराबर कर दिया (14) और उसको उनके बदला लेने का कुछ भी डर नहीं (15)

सूरह लैल मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (21) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (9) नम्बर पर है और तिलावत के ऐतबार से (92) नम्बर पर है और सूरह अअ़्ला के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (310) हुरूफ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (71) कलिमात हैं

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ

रात की क़सम जब वह छा जाए (1) और दिन की क़सम जब चमक उठे (2) और जिसने नर

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۝٣ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنْ

और मादा को पैदा किया (3) बेशक तुम सब की कोशिश अलग अलग क़िस्म की है (4) फिर जिसने

اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ

अल्लाह के लिए दिया और बचकर चला (5) और भली बात को सच माना (6) फिर तो हम उसको सहूलत

لِلْيُسْرٰى ۝٧ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ

और आसानी कर देंगे (7) और जिसने बख़ीली की और लापरवाही की (8) और नेक बात को

بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ

झुठलाता रहा (9) फिर तो हम उसको धीरे से तंगी में धकेल देंगे (10) और जब वह तबाही के गढ़े में गिरेगा

مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا

तो उसका माल उसके कुछ काम न आएगा (11) बेशक हिदायत की राह बता देना हमारे ज़िम्मे रहा (12) और आख़िरत भी हमारी

لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَآ

और दुनिया भी हमारी है (13) फिर मैंने तुम्हें भड़कती हुई आग से डराया (14) बड़ा बदबख़्त होगा

اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦ وَسَيُجَنَّبُهَا

जो उसमें जा पड़ेगा (15) जिसने सच्ची बात को झुठलाया और हक़ से मुँह फेरा (16) और जो अल्लाह से बहुत डरने वाला होगा

الْاَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨ وَمَا لِاَحَدٍ

वह उस आग से बचा लिया जाएगा (17) वह अपना माल अल्लाह की राह में देता है; ताकि गुनाहों से पाक हो जाए (18) हालाँकि उस पर

عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝١٩ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ

किसी का कोई एहसान नहीं था जिसका बदला दिया जाता (19) मगर अपने बुलंद और अअ़्ला रब की रिज़ामंदी

رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝٢٠ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝٢١

चाहने के लिए ही देता है (20) यक़ीन रखो! ऐसा शख़्स अन्क़रीब ख़ुश हो जाएगा (21)

सूरह ज़ुहा मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (11) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (11) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (93) नम्बर पर है और सूरह फ़ज्र के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (172) हुरूफ़ हैं | بسم الله الرحمن الرحيم | इसमें (40) कलिमात हैं

وَالضُّحٰى ۙ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ﴿۳﴾

क़सम है रोज़े-रोशन की (1) और रात की जब वह छा जाए (2) आपके रब ने आपको न छोड़ा और न वह बेज़ार हुआ (3)

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

और यक़ीनन आख़िरत आपके लिए दुनिया से बेहतर है (4) और जल्द ही अल्लाह आपको देगा फिर आप

فَتَرْضٰى ؕ﴿۵﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۖ﴿۶﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

राज़ी हो जाओगे (5) क्या अल्लाह ने आपको यतीम नहीं पाया फिर ठिकाना दिया (6) और आपको बेख़बर पाया

فَهَدٰى ۖ﴿۷﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ﴿۸﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ

फिर उसने राह दिखाई (7) और आपको मुफ़लिस पाया फिर आपको ग़नी कर दिया (8) इसलिए आप किसी यतीम पर

فَلَا تَقْهَرْ ؕ﴿۹﴾ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ؕ﴿۱۰﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ؑ﴿۱۱﴾

सख़्ती न कीजिए (9) और किसी सवाल करने वाले को न झिड़कए (10) और अलबत्ता अपने रब की नेमत बयान कीजिए (11)

सूरह शर्ह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (8) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (12) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (94) नम्बर पर है और सूरह ज़ुहा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (103) हुरूफ़ हैं | بسم الله الرحمن الرحيم | इसमें (27) कलिमात हैं

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿۲﴾

(ऐ प्यारे नबी) क्या हमने आपका सीना कुशादा नहीं किया? (1) और हमने आप पर से बोझ भी उतार दिया (2)

الَّذِيْۤ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ

जिसने आपकी कमर को तोड़ रखा था (3) और हमने आपका ज़िक्र बुलंद किया (4) बिलाशुबह

مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا

हर मुश्किल के साथ आसानी भी होती है (5) और बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी भी होती है (6) तो जब

فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿۷﴾ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ؑ﴿۸﴾

फ़ारिग़ हो जाया करो तो (इबादत में) मेहनत किया करो (7) और अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो (8)

सूरह तीन मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (8) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (28) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (95) नम्बर पर है और सूरह बुरूज के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (34) कलिमात हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (105) हुरूफ़ हैं

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۙ﴿۱﴾ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿۲﴾ وَهٰذَا الْبَلَدِ

क़सम है इंजीर की और ज़ैतून की (1) और तूरे-सीनीन की (2) और इस अमन वाले

الْاَمِيْنِ ۙ﴿۳﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ﴿۴﴾

शहर की (3) यक़ीनन हमने इंसान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया (4)

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया (5) लेकिन जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ؕ﴿۶﴾ فَمَا يُكَذِّبُكَ

और (फिर) नेक अमल किए तो उनके लिए ऐसा अज्र है जो कभी ख़त्म न होगा (6) पस तुझे अब रोज़े-जज़ा के

بَعْدُ بِالدِّيْنِ ؕ﴿۷﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸﴾

झुठलाने पर कौन-सी चीज़ आमादा करती है? (7) क्या अल्लाह (सब) हाकिमों का हाकिम नहीं है? (8)

सूरह अलक़ मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, यह सूरह मक्का मुकर्रमह में बऐतबार नुज़ूले-क़ुरआन के पहली सूरह है, इसमें (19) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (1) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (96) नम्बर पर है।

इसमें (92) कलिमात हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (280) हुरूफ़ हैं

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ

अपने रब के नाम से पढ़िए जिसने पैदा किया (1) उसने इंसान को जमे हुए ख़ून से

عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾

पैदा किया (2) पढ़िए और आपका रब बड़ा करीम है (3) वह ज़ात जिसने क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया (4)

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۙ﴿۶﴾

उसने इंसान को वह इल्म सिखाया जो वह नहीं जानता था (5) सचमुच इंसान तो यक़ीनन आपे से बाहर हो जाता है (6)

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ؕ﴿۷﴾ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ؕ﴿۸﴾ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ

इस बिना पर कि वह ख़ुद को बेपरवा समझता है (7) बेशक आपके रब ही की तरफ़ वापसी है (8) क्या आपने उसे देखा

يَنْهٰى ۙ﴿٩﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ﴿١٠﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى

जो मना करता है (9) एक बंदे को जब वह नमाज़ पढ़ता है (10) भला देख तो अगर वह (बंदा)

الْهُدٰٓى ۙ﴿١١﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ﴿١٢﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿١٣﴾

हिदायत पर हो (11) या तक़्वे का हुक्म देता हो (12) भला देख तो अगर वह (हक़ को) झुठलाता और (उससे) मुँह मोड़ता हो (13)

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًا

क्या वह यह नहीं जानता कि बेशक अल्लाह देख रहा है (14) हरगिज़ नहीं! अगर वह बाज़ न आया तो हम उसे पेशानी के बालों से पकड़ कर

بِالنَّاصِيَةِ ۙ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ﴿١٧﴾

ज़रूर घसीटेंगे (15) पेशानी जो झूठी और ख़ताकार है (16) चुनाँचे उसे चाहिए कि वह अपनी मजलिस वालों को बुला ले (17)

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ﴿١٨﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩﴿١٩﴾ ع السجدة

हम अज़ाब के फ़रिश्तों को बुला लेंगे (18) हरगिज़ नहीं! उसकी इताअत न करें और सज्दा करें और अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करें (19)

सूरह क़द्र मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (5) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (25) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (97) नम्बर पर है और सूरह अ-ब-स के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (112) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (30) कलिमात हैं

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ؕ﴿٢﴾

यक़ीनन हमने इसे शबे-क़द्र में नाज़िल फ़रमाया (1) और आपको क्या मालूम कि शबे-क़द्र क्या है (2)

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ۬ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۚ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ

शबे-क़द्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है (3) उस (में हर काम) के सर-अंजाम देने को अपने रब के हुक्म से

فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ۛ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾ ع

फ़रिश्ते और रूह (जिब्रईल) उतरते हैं (4) यह रात सरासर सलामती की होती है और फ़ज्र के तुलू होने तक (रहती है) (5)

सूरह बय्यिनह मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (8) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (100) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (98) नम्बर पर है और सूरह तलाक़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (399) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (94) कलिमात हैं

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

जो लोग काफ़िर हैं यानी अहले-किबात और मुशरिक वे कुफ़्र से बाज़ रहने वाले न थे जब तक

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢

उनके पास खुली दलील न आती (1) यानी अल्लाह के पैग़म्बर जो पाक औराक़ पढ़ते हैं (2)

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

जिनमें मज़बूत किताबें हैं (3) और अहले-किताब जो मुतफ़र्रिक़ व मुख़्तलिफ़ हुए दलीलें वाज़ेह

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا

आने के बाद हुए हैं (4) और उनको हुक्म तो यही हुआ था

لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا

कि इख़्लासे-अमल के साथ अल्लाह की इबादत करें यक्सू होकर और नमाज़

الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ

पढ़ें और ज़कात दें और यही सच्चा दीन है (5) बेशक जो लोग

كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

काफ़िर हैं यानी अहले-किताब और मुशरिक वे दोज़ख़ की आग में पड़ेंगे और हमेशा उसमें

فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

रहेंगे, ये लोग सारी मख़्लूक़ में सबसे बुरे हैं (6) जो लोग ईमान लाए हैं और उन्होंने

الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

नेक अमल किए हैं वे बेशक सारी मख़्लूक़ में सबसे बेहतर हैं (7) उनके परवरदिगार के पास उनका ईनाम

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ

वे हमेशा रहने वाली जन्नतें हैं जिनके नीचे से नहरें बहती हैं, वे वहाँ हमेशा रहेंगे,

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

अल्लाह उनसे ख़ुश होगा और वे उससे ख़ुश होंगे, यह सब उसके लिए है जो अपने परवरदिगार का ख़ौफ़ दिल में रखता हो (8)

सूरह ज़िलज़ाल मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (8) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (93) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (99) नम्बर पर है और सूरह निसा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (139) हुरूफ़ हैं | بسم الله الرحمن الرحيم | इसमें (35) कलिमात हैं

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ

जब ज़मीन बड़े ज़ोर के ज़लज़ले से हिला दी जाएगी (1) और ज़मीन अपने अंदर के सारे बोझ

اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ

बाहर निकाल फेंकेगी (2) और इंसान कहेगा कि उसको क्या हो गया है (3) उस दिन वह अपनी ख़बरें

اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ

बयान करेगी (4) इसलिए कि तुम्हारा रब ज़मीन को बयान करने का हुक्म देगा (5) उस रोज़ लोग मुख़्तलिफ़ टोलियों में

اَشْتَاتًا ۙ۬ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

वापस होंगे; ताकि उनके आमाल उन्हें दिखा दिए जाएं (6) चुनाँचे जिसने ज़र्रा बराबर कोई अच्छाई

خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۧ﴿۸﴾

की होगी वह उसे देख लेगा (7) और जिसने ज़र्रा बराबर कोई बुराई की होगी वह उसे देख लेगा (8)

ع ٨ / ٢٤

सूरह आदियात मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (11) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (14) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (100) नम्बर पर है और सूरह अस्र के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (163) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (40) कलिमात हैं

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ

क़सम है उन घोड़ों की जो हाँप-हाँप कर दौड़ते हैं (1) फिर जो (अपनी टापों से) चिंगारियाँ उड़ाते हैं (2) फिर सुबह के

صُبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿۵﴾

वक़्त हमला करते हैं (3) फिर उस मौक़े पर ग़ुबार उड़ाते हैं (4) फिर उसी वक़्त किसी जमघटे के बीचों-बीच जा घुसते हैं (5)

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى

कि इंसान अपने परवरदिगार का बड़ा नाशुक्रा है (6) और वह ख़ुद इस बात का

ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿۷﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ؕ﴿۸﴾

गवाह है (7) और हक़ीक़त यह है कि वह माल की मुहब्बत में बहुत पक्का है (8)

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۙ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ

भला क्या वह वक़्त उसे मालूम नहीं जब क़ब्रों में जो कुछ है उसे बाहर बखेर दिया जाएगा (9) और सीनों में जो कुछ है

مَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ﴿۱۰﴾ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ

उसे ज़ाहिर कर दिया जाएगा (10) यक़ीनन उनका परवरदिगार उस दिन उन (की जो हालत होगी उस) से

لَّخَبِيْرٌ ۧ﴿۱۱﴾

पूरी तरह बाख़बर होगा (11)

ع ١١ / ٢٥

منزل ٧

सूरह क़ारिअ़ह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (11) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (30) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (101) नम्बर पर है और सूरह क़ुरैश के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (36) कलिमात हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (152) हुरूफ़ हैं

اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ﴿٣﴾

वह खड़खड़ाने वाली चीज़ (1) वह खड़खड़ाने वाली चीज़ क्या है (2) और आप क्या जानो कि वह खड़खड़ाने वाली चीज़ क्या है (3)

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿٤﴾ وَتَكُوْنُ

जिस दिन इंसान बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएंगे (4) और पहाड़

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿٦﴾

धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे (5) पस जिसके आमाल वज़न में भारी होंगे (6)

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿٨﴾

वह दिल-पसंद ऐश में होगा (7) और जिसके आमाल वज़न में हलके होंगे (8)

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ﴿٩﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ؕ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ع﴿١١﴾

तो उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा (9) और आप क्या जानते हैं वह क्या चीज़ है (10) एक दहकती हुई आग है (11)

सूरह तकासुर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (8) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (16) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (102) नम्बर पर है और सूरह कौसर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (28) कलिमात हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इसमें (120) हुरूफ़ हैं

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿١﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ

ज़्यादती की चाहत ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया (1) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे (2) हरगिज़ नहीं! तुम जल्द

تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

मालूम कर लोगे (3) हरगिज़ नहीं! फिर तुम्हें जल्द इल्म हो जाएगा (4) हरगिज़ नहीं! अगर तुम यक़ीनी तौर पर

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا

जान लोगे (5) तो बेशक तुम जहन्नम को ज़रूर देख लोगे (6) फिर तुम उसे यक़ीन की आँख से

عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ﴿٧﴾ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ع﴿٨﴾

ज़रूर देख लोगे (7) फिर उस दिन तुमसे ज़रूर-बिज़्ज़रूर नेमतों का सवाल होगा (8)

منزل ٧

सूरह अस्र मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (3) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (13) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (103) नम्बर पर है और सूरह शर्ह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (14) कलिमात हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (68) हुरूफ़ हैं

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ज़माने की क़सम! (1) बेशक इंसान ख़सारे में है (2) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

और उन्होंने नेक अमल किए और एक-दूसरे को हक़ की तलक़ीन की, और एक-दूसरे को सब्र की तलक़ीन की (3)

सूरह हु-मज़ह मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (9) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (32) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (104) नम्बर पर है और सूरह क़ियामह के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (30) कलिमात हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (130) हुरूफ़ हैं

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ يَحْسَبُ

बड़ी ख़राबी है हर ऐसे शख़्स की जो ऐब टटोलने वाला ग़ीबत करने वाला हो (1) जो माल जमा करता जाए और गिनता जाए (2) वह समझता

اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَآ

है कि उसका माल उसे हमेशा ज़िंदा रखेगा (3) हरगिज़ नहीं! यह तो ज़रूर तोड़-फोड़ कर देने वाली आग में फेंक दिया जाएगा (4) और

اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِيْ تَطَّلِعُ

आपको क्या मालूम कि तोड़फोड़ देने वाली आग क्या होगी? (5) वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग होगी (6) जो दिलों पर चढ़ती

عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

चली जाएगी (7) वह उन पर हर तरफ़ से बंद की हुई होगी (8) बड़े-बड़े सुतूनों में (9)

सूरह फ़ील मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (5) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (19) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (105) नम्बर पर है और सूरह काफ़िरून के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (20) कलिमात हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (96) हुरूफ़ हैं

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ يَجْعَلْ

क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? (1) क्या उसने उनका

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ﴿٢﴾ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ﴿٣﴾

मक्र नाकाम नहीं कर दिया? (2) और उन पर झुंड के झुंड परिंदे भेजे (3)

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿٥﴾

जो उन पर कंकर की पथरियाँ फेंकते थे (4) फिर अल्लाह ने उनको खाए हुए भूसे की तरह बना दिया (5)

सूरह क़ुरैश मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (4) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (29) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (106) नम्बर पर है और सूरह तीन के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (73) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (17) कलिमात हैं

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ﴿١﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ﴿٢﴾

क़ुरैश की उलफ़त की वजह से (1) उनके सर्दी और गर्मी के सफ़र से उलफ़त की वजह से (2)

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ﴿٣﴾ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ

फिर उन्हें चाहिए कि उस घर के मालिक की इबादत करें (3) जिसने उन्हें भूख़ में खाना

جُوْعٍ ۙ۬ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿٤﴾

दिया और जिसने उन्हें ख़ौफ़ से अमन दिया (4)

सूरह माऊन की शुरू की तीन आयतें मक्का मुकर्रमह में और बाक़ी की आयतें मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (7) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (17) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (107) नम्बर पर है और सूरह तकासुर के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (125) हुरूफ़ हैं	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	इसमें (25) कलिमात हैं

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ؕ﴿١﴾ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ

क्या आपने उसे देखा जो जज़ा व सज़ा को झुठलाता है (1) वही तो है जो यतीम को

الْيَتِيْمَ ۙ﴿٢﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ

धक्के देता है (2) और मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देता (3) फिर बड़ी ख़राबी है

لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿٤﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿٥﴾

उन नमाज़ पढ़ने वालों की (4) जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं (5)

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ﴿٧﴾

जो दिखावा करते हैं (6) और दूसरों को मामूली चीज़ देने से भी इंकार करते हैं (7)

सूरह कौसर मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (3) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (15) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (108) नम्बर पर है और सूरह आदियात के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (42) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (10) कलिमात हैं

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿٢﴾

बेशक हमने आपको कौसर दे दिया (1) पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी कीजिए (2)

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿٣﴾

बेशक आपका दुश्मन ही बे-नाम व निशान है (3)

सूरह काफ़िरून मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (6) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (18) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (109) नम्बर पर है और सूरह माऊन के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (94) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (26) कलिमात हैं

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿١﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢﴾

आप कह दीजिए कि ऐ काफ़िरो! (1) न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम इबादत करते हो (2)

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ﴿٤﴾

और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ (3) और न मैं इबादत करूँगा जिसकी तुम इबादत करते हो (4)

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾

और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत कर रहा हूँ (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन (6)

सूरह नस्र हज्जतुल-विदा के मोक़े से मिना में नाज़िल हुई, इसमें (3) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (114) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (110) नम्बर पर है और यह क़ुरआन में नाज़िल होने वाली सबसे आख़िरी सूरत है जो सूरह तौबा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (77) हुरूफ़ हैं | بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ | इसमें (17) कलिमात हैं

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ

(ऐ प्यारे नबी!) जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ जाएगी (1) और आप लोगों को देखेंगे

يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ

कि वे अल्लाह के दीन में गिरोह-दर-गिरोह दाख़िल हो रहे हैं (2) तो आप अपने रब की हम्द के साथ

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝۳

तस्बीह कीजिए और उससे बख़्शिश माँगिए, बेशक वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है (3)

सूरह लहब मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (5) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (6) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (111) नम्बर पर है और सूरह फ़ातिहा के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (70) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (20) कलिमात हैं

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝۱ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएं और वह ख़ुद हलाक हो जाए (1) न तो उसका माल उसके काम आया और न

كَسَبَ ۝۲ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝۳ وَّامْرَاَتُهٗ ۚ

उसकी कमाई (2) वह जल्द ही भड़कने वाली आग में जाएगा (3) और उसकी बीवी भी (जाएगी)

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝۴ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝۵

जो लकड़ियाँ उठाने वाली है (4) उसकी गर्दन में मज़बूत बटी हुई रस्सी होगी (5)

सूरह इख़्लास मक्का मुकर्रमह में नाज़िल हुई, इसमें (4) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (22) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (112) नम्बर पर है और सूरह नास के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (47) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (15) कलिमात हैं

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝۱ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝۲ لَمْ يَلِدْ ۙ

कह दीजिए कि वह ज़ात पाक है जिसका नाम अल्लाह है, एक है (1) वह माबूदे-बरहक़ बेनियाज़ है (2) न किसी का बाप है

وَلَمْ يُوْلَدْ ۝۳ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝۴

और न किसी का बेटा (3) और न उसके बराबर कोई है (4)

सूरह फ़लक़ मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (5) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (20) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (113) नम्बर पर है और सूरह फ़ील के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (74) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمن الرحيم	इसमें (23) कलिमात हैं

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲

कह दीजिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह माँगता हूँ (1) उसकी मख़्लूक़ के शर से (2)

मंज़िल ७

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

और अंधेरी रात के शर से जब वह आ जाए (3) और गिरहों में दम करने वालियों

فِى الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

के शर से (4) और हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करे (5)

सूरह नास मदीना मुनव्वरह में नाज़िल हुई, इसमें (6) आयतें और (1) रुकूअ है, नाज़िल होने के ऐतबार से (21) नम्बर पर है लेकिन तिलावत के ऐतबार से (114) नम्बर पर है और सूरह फ़लक़ के बाद नाज़िल हुई है।

इसमें (79) हुरूफ़ हैं	بسم الله الرحمٰن الرحيم	इसमें (20) कलिमात हैं

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ

कह दीजिए कि मैं पनाह माँगता हूँ लोगों के रब की (1) लोगों के बादशाह की (2) लोगों के

النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِىْ

माबूद की (3) उसके शर से जो वस्वसा डाले (और) छुप जाए (4) जो

يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है (5) जिन्नात में से और इंसान में से (6)

صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِيْمُ

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ

ऐ हमारे (प्यारे) परवरदिगार! हमें न पकड़ें अगर हम भूल जाएं या ग़लती कर जाएं, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डालिए

اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا

जिस तरह आपने बोझ डाला था हमसे अगले लोगों पर, ऐ हमारे (प्यारे) रब! हमसे वह न उठवाइए

لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰنَا

जिसकी ताक़त हमको नहीं है, और दरगुज़र फ़रमाइए हमसे, और हमको बख़्श दीजिए और हम पर रहम फ़रमाइए, आप ही हमारे कारसाज़ हैं,

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ

पस इनकार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कीजिए। ऐ हमारे रब! क़बूल कर हमसे, यक़ीनन तू ही

الْعَلِيْمُ ○ وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○

जानने वाला है। और हमको माफ़ फ़रमा, तू ही माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।